गंगा-पुस्तकमाला का सोलहवाँ पुष्प

इँगलैंड का इतिहास

प्रणेता

प्राणनाथ विद्यालंकार

जिससे होता चित्त में स्वाधीनता-विकास,
पढ़िए-सुनिए धन्य वह देशोन्नति-इतिहास।

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

प्रकाशक और विक्रेता

लखनऊ

द्वितीय संशोधित और संवर्द्धित संस्करण

सजिल्द १॥)] १६८९ [सादी १)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

द्वितीय संस्करण की भूमिका

गंगा-पुस्तकमाला द्वारा प्रकाशित 'इँगलैंड का इतिहास' पाठकों के लिये कितना उपयोगी सिद्ध हुआ है, यह इसी से जान पड़ता है कि आज उसका द्वितीय संस्करण आपके हाथों में है और हमें विश्वास है कि इस बार इसे इतने अच्छे रूप में प्रकाशित देखकर पाठकों को हर्ष होगा। इतिहास की पुस्तकें प्रायः एकांगीन विषयक होने के कारण बहुधा कम रोचक होती एवं बिकती हैं, फिर भी पुस्तक की उपयोगिता ने इसके द्वितीय संस्करण का जो हमें अवसर दिया है, उसके लिये हम भिन्न-भिन्न प्रांतीय शिक्षा-विभागों की पाठ्य-पुस्तक-निर्धारिणी कमेटियों को धन्यवाद देते हैं। मध्यप्रांत और विहार की कमेटियों ने तो हमें, इसी पुस्तक को अपने-अपने प्रांत में पाठ्य-पुस्तक नियत करके, विशेष उत्साहित किया है। सच पूछा जाय तो भिन्न-भिन्न प्रांतीय शिक्षा-विभागों और उनके गुणग्राही ख्यातनामा सदस्यों की प्रेरणा ने ही हमें पुस्तक को इस रूप में प्रकाशित करने का अवसर दिया है।

इसी लिये इस संस्करण में कुछ ख़ास विशेषताएँ पाठकों—

विशेषतः विद्यार्थियों—को मिलेंगी। काग़ज़ चिकना लगाया गया है। साथ ही विद्यार्थियों के सुबीते के लिये सुंदर मोटे टाइप में पुस्तक छपवाई गई है। प्रथम संस्करण में प्रसिद्ध-प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुषों के चित्र एवं महत्त्व-पूर्ण घटनाओं के मानचित्र नहीं दिए गए थे। इस संस्करण में उनका भी समावेश कर दिया गया है। आकार भी बदल दिया गया है। सहूलियत के लिये पुस्तक तीन भागों में विभक्त कर दी गई है। पुनः हिंदी-माध्यम का ख़याल करके हिंदी के साथ-साथ अँगरेज़ी में भी नाम आदि दे दिए गए हैं। इन विशेषताओं के साथ शुद्ध छपाई का ख़ास तौर से ख़याल रक्खा गया है और ख़ास विशेषता इस संस्करण की यह है कि मध्यप्रांत के सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ हितकारिणी-हाई स्कूल के प्रिंसपल स्वर्गीय राय साहब पं० रघुवरप्रसादजी द्विवेदी बी० ए० ने इसका, विद्यार्थियों की दृष्टि से, संशोधन कर इसे अधिक उपयोगी बना दिया है। प्रयाग-विश्वविद्यालय के इतिहास के प्रोफ़ेसर डॉ० वेणीप्रसाद ने भी इसे एक बार देखने की कृपा की है और अपनी सम्मति से लाभ उठाने का हमें मौक़ा दिया है। इस प्रकार हमने इस संस्करण को विद्यार्थियों के लिये अधिक-से-अधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की है। आशा है, इतिहास के शिक्षकों की दृष्टि में भी हमारा इतिहास अन्य सब इतिहास-पुस्तकों से, प्रत्येक बात का ख़याल करके, पठन-पाठन

के उपयुक्त जँचेगा और वे इसके प्रचार में सहायक होकर हमें इसका इससे भी सुंदर संस्करण निकालने का अवसर देंगे।

संपादक

निवेदन

[प्रथम संस्करण से]

कैसे दुर्भाग्य की बात है कि राष्ट्र-भाषा हिंदी में इँगलैंड-जैसे स्वतंत्रता-प्रिय देश का—वर्तमान संसार की प्रधान शक्ति का—एक अच्छा-सा इतिहास भी अभी तक नहीं लिखा गया! इँगलैंड-जैसे उन्नत देश का इतिहास हम पराधीन भारत-निवासियों के लिये कितना शिक्षाप्रद, कितना उपकारक और कितना सच्चा मार्ग-दर्शक हो सकता है, यह कहना अनावश्यक है। लेकिन तो भी हम भारतवासी शासन-पद्धति में इँगलैंड को अपना आदर्श नहीं समझ सकते—ऐसा समझना हमारा भारी भ्रम है, क्योंकि भारतवर्ष राष्ट्रात्मक देश है और इँगलैंड एकात्मक। शासन-पद्धति तो हम स्विज़रलैंड, अमेरिका और फ्रांस से कुछ-कुछ सीख सकते हैं। परंतु शासन-पद्धति का उदय स्वतंत्रता प्राप्त होने पर ही हो सकता है। अब प्रश्न यह है कि वह कौन-सी स्वतंत्रता है, जिसकी प्राप्ति में जनता को यत्नशील होना चाहिए—संपूर्ण जातियों को अथक परिश्रम करना चाहिए? इसका उत्तर है '**आर्थिक स्वतंत्रता**'। आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करके सब प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है और इस रहस्य का उद्‌घाटन यदि कोई देश कर सकता है, तो वह एक-मात्र इँगलैंड ही है।

दासता की विकट बेड़ियों में जकड़ी हुई—परदेशियों के प्रबल पैरों से कुचली हुई—जातियों के लिये इस 'आर्थिक सफलता'-रूपी हथियार का आविष्कार-कर्ता एक-मात्र इँगलैंड ही है। अतः स्वतंत्रता-

प्रिय आर्य-जाति के लिये यह 'इँगलैंड का इतिहास' बहुत कुछ लाभदायक हो सकता है। अँगरेज़ी की अनेक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पुस्तकों को पढ़कर, उनके सहारे, इस ग्रंथ-रत्न की रचना की गई है। भारत-वासियों के उपयोग की दृष्टि से तो इसके जोड़ का इँगलैंड का इतिहास हिंदी-भाषा में नहीं मिल सकता। निस्संदेह यह ग्रंथ हिंदी-साहित्य के गौरव को बढ़ानेवाला है।

हमारी बड़ी इच्छा थी कि हम इतिहास का यह संस्करण सर्वांग-सुंदर और सचित्र निकालें। परंतु कई अनिवार्य कारणों से इस बार हम वैसा नहीं कर सके। एक बार छपना शुरू होकर बीच में कुछ समय के लिये बंद हो गया था। अर्से के बाद फिर छपना शुरू हुआ और अब यह पुस्तक प्रकाशित की जाती है। अगर हिंदी-भाषा-भाषियों ने उपयोगिता का ख़याल करके इस पुस्तक का आदर किया, तो हम शीघ्र ही इसका सचित्र संस्करण उनकी सेवा में लेकर उपस्थित होंगे।

प्रिय पाठकों को यह जानकर और भी प्रसन्नता होगी कि इस उत्कृष्ट और अपूर्व ग्रंथ को हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग ने अपनी मध्यमा-परीक्षा के कोर्स में नियत किया है। कॉलेज के विद्यार्थियों के लिये भी यह ग्रंथ बहुत ही उपयोगी होगा।

लखनऊ
१। ११। २२ संपादक

प्रथम खंड

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

द्वितीय अध्याय

प्रथम परिच्छेद

तृतीय अध्याय

पंचम परिच्छेद

षष्ठ परिच्छेद

चतुर्थ अध्याय

इँगलैंड का इतिहास

प्रथम अध्याय

नार्मन-विजय से पूर्व तक ब्रिटेन का इतिहास

प्रथम परिच्छेद

ब्रिटेन (Britain) में आंग्लों (Anglo-Saxons) का आगमन [प्रारंभ से ९६७ तक]

(१) कैल्टिक (Celtic)-ब्रिटेन का आरंभिक इतिहास

ईसा के जन्म से पहले इँगलैंड की वास्तविक अवस्था क्या थी, इसका कोई प्रामाणिक इतिहास नहीं मिलता। भू-गर्भ तथा शब्द-शास्त्र आदि शास्त्रों के वेत्ता बतलाते हैं कि ब्रिटेन का द्वीप चिरकाल से जन-समाज का निवास-स्थान था। गुफाओं और नदियों में पत्थरों के ऐसे-ऐसे हथियार मिले हैं, जिनको देखकर आश्चर्य होता है। पत्थरों के सदृश ही हड्डियों के हथियार तथा उन पर घोड़े आदि की तसवीरें बनी हुई मिली हैं। जिस युग के ब्रिटिश-जन-समाज में उल्लिखित प्रकार के अस्त्रादि का प्रयोग होता था, उसको आंग्ल-

इतिहासज्ञ लोग 'प्राचीन-प्रस्तर-युग' (Old Stone Age) के नाम से पुकारते हैं। इसके अनंतर आंग्ल-इतिहास में 'नव-प्रस्तर-युग' (New Stone Age) का प्रारंभ होता है। इस युग के लोगों की सभ्यता तथा आकृति स्पेन के प्राचीन लोगों से बहुत कुछ मिलती थी। अतः आंग्ल-इतिहासज्ञ इन्हें 'ईबे-रियंज' नाम भी देते हैं। ईबेरियंज पर 'केल्ट-जाति' के दो संघों ने भिन्न-भिन्न समयों में आक्रमण किया, और वे ब्रिटेन में आकर बस गए। प्रथम संघ के लोगों को 'गायडेलिक' या 'गेलिक' (Gaelic) और द्वितीय संघ के लोगों को 'ब्रिथानिक' नाम से पुकारा जाता है। ब्रिथानिक ही ब्रिटन (Breton) के पूर्वज हैं। इन्होंने पूर्ववर्ती जातियों को पहाड़ी प्रदेशों में भगा दिया और स्वयं इँगलैंड के दक्षिण तथा पूर्व में बस गए। इनके समय में इँगलैंड ने सभ्यता में अच्छी उन्नति की। कैल्टिक लोग उत्तमोत्तम वस्त्र पहनते और सोने व काँच के आभूषण धारण करते थे। पत्थरों के स्थान पर ये पीतल आदि धातुओं के अस्त्र-शस्त्र व्यवहार में लाते थे। इस जाति के मनुष्यों का स्वभाव झगड़ालू था। अपने नेता को छोड़कर अन्य किसी जाति के नेता के आधिपत्य में रहना इनको स्वीकृत न था। ये रथों पर चढ़कर, कवच तथा अन्य अस्त्र-शस्त्रों को धारण करके युद्ध करते थे। इनके पुरोहितों का नाम 'ड्रायिड'

(Druid) था, जो बहुत कुछ भारतीय ब्राह्मणों के समान होते थे।

'ड्रुयिड' लोगों के पास कुछ पुस्तकें थीं, जिनमें प्राचीन इतिहास तथा नियम आदि का उल्लेख विशेष रूप से था। परंतु अन्य ब्रिटेनों के पास इस तरह की पुस्तकें आदि कुछ भी न थीं। फ़्रांस के दक्षिण में 'मैसीलिया' नाम का एक यूनानी उपनिवेश था, जो आजकल मार्सिलीज़ (Marseillies) के नाम से पुकारा जाता है। इस उपनिवेश के एक प्रसिद्ध गणितज्ञ 'पीथियस' (Pytheas) ने पहले-पहल (सन् ईस्वी से ३३० वर्ष पूर्व) ब्रिटेन में प्रवेश किया और उसके विषय में बहुत कुछ लिखा। शोक है कि उसकी ब्रिटेन-संबंधी वह पुस्तक सर्वथा लुप्त है। उस पुस्तक से अन्य ऐतिहासिकों ने जो इधर-उधर उद्धृत किया है, और उससे जो कुछ पता लगा है, वह हम ऊपर लिख चुके हैं।

पीथियस की यात्रा के बाद ही मध्य-सागरस्थ यूनानी उपनिवेशों का ब्रिटेन से व्यापार प्रारंभ हो गया। बहुत-से 'गाल लोग' (फ़्रांसीसियों के पूर्वज Gauls) ब्रिटेन में जा बसे, और उन्होंने वहाँ की सभ्यता के बढ़ाने में बहुत बड़ा भाग लिया। ब्रिटेन से टीन, अंबर, जस्ता तथा मोती आदि यूनान में बिकने के लिये जाने लगे। यह व्यापार इतना बढ़ गया कि ब्रिटेन में

स्वर्ण की मुद्राएँ तक बनाई जाने लगीं। पीथियस की यात्रा के ३०० वर्ष बाद तक ब्रिटेन यूनानी सभ्यता ग्रहण करता चला गया। इसके उपरांत ब्रिटेन का भाग्य रोमन (Roman) लोगों के हाथ में चला गया, जिसका इतिहास इस प्रकार है—

(२) रोमन-ब्रिटेन

(५५ बी० सी० से ४४६ ए० डी० तक)

ईसा के जन्म से एक शताब्दी पहले रोम ने मध्यसागर (Mediterranian Sea) के सब तटस्थ प्रदेशों को जीत लिया। इस विजय का अंतिम स्थान सन् ईस्वी से पूर्व ५८ से ५० तक 'गाल' (Gaul) नाम का प्रदेश रहा। संसार-प्रसिद्ध योद्धा जूलियस सीज़र (Julius Caesar) ने गाल को पूर्ण रूप से जीता और रोमन-झंडे को इँगलिश-चैनल तक पहुँचा दिया।

रोमनों के शत्रु गाल लोगों ने ब्रिटेन में शरण ली और रोमनों का गाल में ठहरना कठिन कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि सन् ईस्वी से ५५ वर्ष पूर्व सीज़र ने ब्रिटेन पर आक्रमण कर दिया। किंतु सेना के कम होने से सीज़र ब्रिटेन को पूर्ण रूप से विजय नहीं कर सका, और कुछ ही समय बाद पुनः गाल-देश को लौट आया। ईस्वी से पूर्व सन् ५४ में एक बड़ी सेना के साथ सीज़र ने ब्रिटेन पर फिर चढ़ाई की।

ब्रिटेन के राजा 'कैसीवैलानस' (Cassivellaunus) ने सीज़र को ब्रिटेन-विजय करने से रोकना चाहा; परंतु अपने ही देश की दूसरी जाति के नेता 'ट्रिनावंटस' (Trinovantes) को सीज़र से मिलते हुए देखकर वह घबरा गया, और स्वयं सीज़र का मित्र बन गया। कुछ ब्रिटिश-संघों ने रोमनों को कर देना स्वीकार किया, और जमानत के तौर पर बहुत कुछ दिया। इसके बाद सीज़र अपने प्रदेश को लौट गया। उसने ब्रिटेन पर फिर आक्रमण नहीं किया। सीज़र के ब्रिटेन-विजय के ६० वर्षों तक रोमन सेनाएँ ब्रिटेन में नहीं दिखलाई दीं। ट्रिनावंटस जीवन पर्यंत रोमनों का मित्र बना रहा; परंतु उसके उत्तराधिकारियों ने उसकी उस नीति को नहीं पकड़ा। 'सम्राट् कुनोबैलिनस' (Cunobelinus) के समय में ब्रिटेन की शक्ति बहुत बढ़ी। सम्राट् ने रोमन-विधि से स्वर्ण-मुद्राएँ बनवाईं और उनको अपने देश में प्रचलित किया। रोमनों के साथ भी उसने शत्रुता का व्यवहार करना प्रारंभ कर दिया। इस पर उसके एक भाई ने उनसे मिलना चाहा; परंतु वह ऐसा बुरा काम करने से पहले ही मर गया। सम्राट् के पुत्र 'कैरक्टकस' (Caractacus) ने पूर्ण रूप से अपने पिता का अनुसरण किया, और रोमनों को काफ़ी तौर से तंग किया। इन सब घटनाओं की सूचना रोमन-सम्राट् 'क्लॉडियस'

(Claudius) को मिली। सन् ४३ में क्लॉडियस ने 'आलस-प्लॉटि-यस' (Allus Plautius) को एक प्रबल सेना के साथ ब्रिटेन-विजय के लिये रवाना किया। यह हंबर (Humber) तथा सेवर्न (Severne)-नदियों के मध्य का संपूर्ण प्रदेश जीतकर सन् ४७ में रोम लौट गया। इसके अनंतर 'आस्टोरियस स्कापुला' (Ostorius Scapula) ने वेल्स (Wales) तथा यार्कशायर का कुछ प्रदेश जीता, और पूरे तौर से कैरेक्टेकस (Caractacus) का दमन किया। इसने ब्रिटिश-जनता को अधीन रखने के लिये देवा, विरोको-नियम तथा इसकासिलूरम पर बहुत बड़ी सेना रक्खी।

'स्यूटोनियस पॉलिनस' (Suetonuis Paullinus)-नामक रोमन-गवर्नर (ईस्वी से पूर्व सन् ६२-५६) ने ब्रिटेन के पहाड़ी प्रदेशों को जीता, और 'सोना' तथा 'आंग्लसी' (Anglesey) नाम के द्वीपों को अपने अधीन किया। इसी बीच में मृत राजा 'प्रसुटेगस' (Prasutagos) की विधवा रानी 'बोडीशिया' (Boadicia) से रोमन शासकों ने घृणित तथा अत्याचार-पूर्ण व्यवहार किए। इसका परिणाम यह हुआ कि बोडीशिया ने ब्रिटेन की स्वतंत्रता के लिये अंतिम प्रयत्न किया; और जब वह पूरे तौर पर सफल न हो सकी, तो उसने विष खाकर आत्म-हत्या कर ली।

पालिनस के बाद 'जूलियस अग्रिकोला' (Julius Agricola)

(ईस्वी से पूर्व सन् ८५ से ७८ तक) ब्रिटेन का शासन करने लगा। उसने 'यार्क' नगर को एक 'छावनी' का रूप दिया। यार्क से आगे बढ़कर उसने स्कॉटलैंड का कुछ भाग भी जीता, और फ़र्थ ऑफ़ फ़ोर्थ (Firth of Forth) से क्लाइड (Clyde) तक संपूर्ण भूमि में क़िलों की एक क़तार इसलिये बनवाई कि ब्रिटेन के उत्तरीय प्रदेश में रोमन-आधिपत्य स्थिर रहे। परंतु उसके अनंतर उत्तरीय प्रदेश रोमनों के हाथ में नहीं रहा। सम्राट् 'हेड्रियन' (Emperor Hadrian) ने टीन की खाड़ी से साल्वे की खाड़ी (Salway firth) तक एक नवीन दुर्ग-श्रेणी बनवाई, जो कि चिरकाल तक रोमन-शासन की स्थिरता बनाए रही।

(३) ब्रिटेन की सभ्यता में रोम का भाग

ब्रिटेन को अपने अधीन करके रोम ने उसे सभ्य बनाने का यत्न किया। स्थान-स्थान पर पक्की सड़कें बनाईं। मुख्य-मुख्य सड़कों के किनारे बड़े-बड़े नगर स्थापित हो गए। जंगल काटकर और दलदलों को सुखाकर उस भूमि पर खेती की गई। इसका परिणाम यह हुआ कि ब्रिटेन से सारे योरप में अन्न जाने लगा। रोमन व्यापारियों से ब्रिटिश-जनता ने लाटिन (Latin) भाषा ग्रहण की। ब्रिटिश-भूमिपतियों की लाटिन-भाषा सीखने में विशेष प्रवृत्ति हो गई।

चौथी सदी में रोम में ईसाई-मत फैल गया; परंतु ब्रिटेन में

वह चौथी सदी से पहले ही फैल चुका था। दृष्टांत-स्वरूप निम्न-लिखित संतों के नाम दिए जाते हैं, जिन्होंने ब्रिटेन में ईसाई मत फैलाया—

(१) सेंट अल्बान (St. Alban)

(२) सेंट पैट्रिक (St. Patrick)

(३) सेंट निनियन (St. Ninian)

'डायोक्लीशियन' (Diocletian) और 'कांस्टैंटाइन' (Constantine) ने ब्रिटिश-द्वीप के शासन में काफ़ी सुधार किए; परंतु इन सुधारों से भी ब्रिटेन चिरकाल तक रोम के आधिपत्य में न रहा। इसका कारण रोम का स्वयं अशक्त होना था। 'पिक्ट्स' तथा 'स्कॉट्स' नाम की जातियों ने ब्रिटेन पर आक्रमण करना आरंभ किया। इन जातियों के आक्रमणों से ब्रिटेन को बचाने के लिये रोमन शासकों ने हेड्रियन की दुर्ग-श्रेणी (Hadrian Wall) आदि बहुत-से नवीन दुर्ग बनाए।

४१० ईस्वी में रोम पर 'अलारिक दि गोथ' (Alaric the Goth) ने आक्रमण किया। इसका परिणाम यह हुआ कि रोम के ब्रिटेन से सारे संबंध टूट गए, और उसने ब्रिटेन की रक्षा करने से अपना हाथ खींच लिया। पिक्ट्स तथा स्कॉट्स लोगों ने ब्रिटेन पर आक्रमण किया और वे स्थान-स्थान पर बस गए। इन असभ्य जातियों ने ब्रिटेन से रोमन-सभ्यता को उठा

दिया, और उसको पुनः असभ्य अवस्था में लाने का यत्न किया। पाँचवीं सदी के मध्य-भाग तक ये लोग ब्रिटेन में बसते रहे। इसके अनंतर ब्रिटेन पर एक और जाति ने आक्रमण किया, जिसका इतिहास इस प्रकार है—

(४) आंग्ल-जाति का दक्षिणीय ब्रिटेन पर आक्रमण

ईस्वी सन् ४४९—६०७

पाँचवीं सदी के बाद जर्मनी के किनारे से एक ही जाति के बहुत-से असभ्य लोग भिन्न-भिन्न समयों में इँगलैंड में आकर बसे। ये 'जूट्स' 'सैक्सन', और 'एँग्लेन'-नामक तीन भागों में विभक्त थे। इन असभ्यों का स्वभाव तथा आचार अति विचित्र था। इनमें स्वतंत्रता के भाव अत्यंत अधिक थे। किसी के सम्मुख सिर झुकाना इनको पसंद न था। अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर ये लोग इधर-उधर स्वच्छंद विचरते रहते थे। किसी प्रबल राज्य के न होने से प्रत्येक व्यक्ति को अपने अस्त्र-शस्त्रों से ही अपनी रक्षा करनी पड़ती थी। इनमें अपराधों का न्याय एक विचित्र ढंग से होता था। प्रत्येक स्वतंत्र पुरुष के अंग का मूल्य दूसरे का वही अंग होता था। यदि कोई किसी की आँखों को नष्ट कर दे, तो उसे भी वही दंड मिलता था, जिससे सदा के लिये उसे अपनी आँखों से हाथ धोना पड़ता था। सारांश यह कि अपराधी को अपराध के अनुसार ही उचित दंड

मिलता था। समयांतर में इसमें परिवर्तन किए गए, और मनुष्य के प्रत्येक अंग का मूल्य राज्य की ओर से निश्चित कर दिया गया, जो अपराधी के परिवार को देना पड़ता था। यह इसीलिये कि व्यक्ति के अपराध की जवाबदेही परिवार पर थी। आंग्ल-न्याय की उत्पत्ति भी इसी स्थान से है। इन असभ्यों में पारिवारिक शक्ति इतनी अधिक थी कि परिवार के क़सम खाते ही अपराधी अपराध से मुक्त कर दिया जाता था।

इन असभ्यों का धर्म, मूर्ति-पूजा-प्रधान होने के कारण, रोमन-ब्रिटेन से सर्वथा भिन्न था। ये लोग ओडेन (Woden), थॉर (Thor) आदि जर्मन-देवतों के उपासक थे। रोमन-साम्राज्य तथा रोमन-संस्था से इन्हें कुछ भी प्रेम न था। यही कारण है कि इन्होंने ब्रिटेन से रोमन-सभ्यता की जड़ पूर्ण रूप से उखाड़ डालने का प्रयत्न किया। ऊपर लिखा जा चुका है कि ब्रिटेन में इन लोगों का आगमन जर्मनी के तट से हुआ था। ईसा के जन्म से ५ शताब्दी पहले 'स्लीस्विक'-प्रांत में 'आंग्लन' या 'इँगलैंड' नाम का एक प्रदेश था। स्लीस्विक-प्रांत ही बाल्टिक-सागर को उत्तरी सागर से पृथक् करता है। आजकल इस प्रांत का जो सौंदर्य है, वह पहले न था। प्राचीन काल में उत्तमोत्तम चरागाहों, टिंबरों, कुटीरों तथा छोटे-छोटे नगरों के स्थान पर जंगल तथा बालू के ढेर थे।

स्थान-स्थान पर दलदल-ही-दलदल दिखाई देता था। इसी स्लीस्विक-प्रांत में आंग्लों के पूर्वजों का निवास था। उत्तर में 'जूट्स' तथा दक्षिण में 'सैक्सन' (Saxons) नाम की जातियाँ रहती थीं। इन जातियों का यह स्वभाव था कि ये लोग परस्पर मिलकर नहीं रहते थे; एक परिवार दूसरे परिवार से सदा लड़ता-झगड़ता रहता था। परंतु किसी विदेशी शत्रु से युद्ध करते समय ये लोग परस्पर मिल जाते और शत्रु के पराजित होते ही फिर परस्पर लड़ना प्रारंभ कर देते थे।

अभी इँगलैंड में रोम का ही राज्य था कि इन्होंने उस पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। 'हंबर' से 'वेट्'-द्वीप तक स्थान-स्थान पर रोमन-शासकों ने, इनसे ब्रिटेन को बचाने के लिये, दुर्ग बनाए, और वे चिरकाल तक ब्रिटेन को इन भयंकर शत्रुओं से बचाते रहे। इनकी भयंकरता का अनुमान इसी से करना चाहिए कि ये लोग अपनी-अपनी नावों से ब्रिटेन के किनारे उतरते थे, और ब्रिटिश-जनता को लूटते हुए, उनके बालकों, स्त्रियों तथा पुरुषों को ज़बर्दस्ती पकड़कर बेचने के लिये ले जाते थे। ब्रिटेन से रोमन-राज्य के हटते ही ब्रिटन लोगों पर विपत्ति के पहाड़ फट पड़े! रोमन-परतंत्रता से दुर्बल तथा शक्ति-हीन ब्रिटन (Bretons) आत्मरक्षा में सर्वथा असमर्थ थे। पारस्परिक कलह से असभ्यों का ब्रिटेन में आना बहुत ही

सुगम हो गया। ब्रिटन एक ओर पिक्ट्स तथा स्कॉट्स के अत्याचारों से पीड़ित थे, और दूसरी ओर जूट, सैक्सन आदि असभ्यों के संघ से भी दिन-रात कष्ट उठा रहे थे। इन यातनाओं से बचने के लिये ब्रिटिश राजा 'वार्टिजन'(Vartigern) ने 'हैंजिस्ट' तथा 'हार्सा'-नामक दो जूट के नेताओं से पिक्ट् तथा स्कॉट् आक्रमणकारियों के विरुद्ध सहायता ली (सन् ४४६ ईस्वी)। इन्होंने ब्रिटिश-राजा को पूरे तौर से सहायता दी, और केंट(Keut)के प्रांत में सदा के लिये बस गए। हैंजिस्ट के पुत्र 'एरिक्' ने केंट के पूर्व तथा पश्चिम में दो जूट-उपनिवेशों की स्थापना की। हॉर्सा के युद्ध में मारे जाने से आंग्ल-इतिहास में उसके परिवार का कोई भाग न रहा।

सन् ४७७ ईस्वी में 'सैक्सनों' ने भी ब्रिटेन में प्रवेश किया, और वे 'रेगनम' (Regnum)-नामक रोमन-नगर के समीप बस गए। इनके नेता 'सिसा' ने 'शिचैस्टर'-नामक नगर को अपना नाम दिया, और आक्रमण करके 'पिवेंसी' (Pevensey) का प्रसिद्ध नगर हस्तगत कर लिया। इसकी क्रूरता इसी से स्पष्ट है कि इसने पिवेंसी में संपूर्ण ब्रिटिश-जाति का क़त्ल किया। सन् ५२० में राजा 'आर्थर' (Arthur) ने पश्चिमी सैक्सनों को ऐसी शिकस्त दी कि वे चिरकाल तक अन्य प्रदेशों को न जीत सके।

यही कारण है कि ६० वर्षों के लंबे समय में ये केवल निम्न-लिखित प्रदेशों में ही अपने उपनिवेश बसा सके—

(१) वैसैक्स Wessex (वेस्ट सैक्सन)
(२) ससैक्स Sussex (साउथ ,,)
(३) ऐसैक्स Essex (ईस्ट ,,)
(४) मिडिलसैक्स Middlesex (मिडिल ,,)

सैक्सन के समान ही स्लेस्विक (Sleswick) के आंग्लों ने भी ब्रिटेन पर आक्रमण किया। आंग्लों ने प्रथम आक्रमण में 'डेरा' (Deira) में और द्वितीय आक्रमण (५४७ ईस्वी) में 'बर्नीशिया' प्रदेश में अपने उपनिवेश बसाए। ६०३ ई० में बर्नीशिया तथा डेरा (Deira) परस्पर मिल गए। आंग्लों ने केल्टिक जाति को वेल्स के पार्वतीय प्रदेश में भगा दिया। आंग्लों ने तृतीय आक्रमण के द्वारा 'ईस्ट-ऐंग्लिया'-नामक प्रदेश में अपने उपनिवेश बसाए। इनके बाद जो आंग्ल स्लैस्विग-प्रदेश से आए, वे इँगलैंड के मध्य में बस गए। इस प्रकार पहाड़ी प्रदेशों को छोड़कर सारे ब्रिटेन में जूट, सैक्सन तथा आंग्ल बस गए। छठी शताब्दी के बाद ब्रिटेन सप्तराज्यों में चिरकाल तक बटा रहा। प्रत्येक राज्य की सीमा समय-समय पर जुदी-जुदी हो जाती थी; कभी कोई राज्य बड़ा हो जाता था, और कभी कोई। सप्तराज्यों (The Heptarity) के नाम निम्न-लिखित हैं—

सप्तराज्य

राज्य-प्रदेश	जाति
(१) केंट	जूट
(२) ससैक्स	सैक्सन
(३) वेसैक्स	
(४) एसैक्स	
(५) नार्थंब्रिया	आंग्ल
(६) ऐंग्लिया	
(७) मर्सिया	

इन सप्तराज्यों का इतिहास लिखने के पहले यह लिखना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है कि इन जातियों की राजनीतिक अवस्था कैसी थी। रोमन-राज्य के हटते ही ब्रिटेन की अवस्था दिन-पर-दिन अवनत होने लगी। जो नगर बड़ी-बड़ी पक्की रोमन-सड़कों के किनारे थे, उनमें जन-संख्या बहुत ही थोड़ी थी। स्थान-स्थान पर ग्राम बसे हुए थे। ग्रामों में सबसे बड़ा मकान अर्ल (Earl) लोगों का होता था। अर्लों को भारतीय ग्रामों के चौधरियों, पटेलों या ज़मींदार की उपमा दी जा सकती है। अर्ल से नीचे की श्रेणी में चर्ल (Churl) गिने जाते थे। इनकी अपनी-अपनी भूमियाँ होती थीं, और ये अपने ही मकान में रहते थे। इनके सिवा

'लेट्स' श्रेणी के लोग भी स्वतंत्र लोगों में गिने जाते थे। चौथी श्रेणी 'दासों' (Serf or Villain) की थी। इनका क्रय-विक्रय साधारण चीज़ों की तरह किया जाता था।

गावों का प्रबंध एक 'जन-सभा' के द्वारा किया जाता था। यही ग्रामीणों के झगड़ों का न्याय करती थी। इन असभ्यों में 'दैवी न्याय' (Ordeal) का बहुत अधिक प्रचार था। गाँव की सीमा पार करते समय नए आदमी को सिंगी (Horn) बजानी पड़ती थी। यदि कोई भूल से ऐसा न करे, तो वह मार डाला जाता था। सारे राज्य की एक सभा थी, जो 'विट्नेजिमाट' (Witenagemort) अर्थात 'विटेन' (Witan) या बुद्धिमानों की सभा के नाम से पुकारी जाती थी। ग्राम तथा नगरों के प्रतिनिधि इसके सभ्य होते थे। नियम-निर्माण तथा युद्ध की घोषणा का कार्य यही सभा करती थी। सभा की आज्ञा के बिना राजा कोई भी नया कार्य नहीं कर सकता था। राजा को यह अधिकार न था कि वह अपना उत्तराधिकारी नियत कर सके। एक राजा की मृत्यु पर सभा के ही द्वारा दूसरा राजा चुना जाता था। प्रायः राजा लोग किसी एक परिवार से ही चुने जाते थे। इसका मुख्य कारण यह था कि वे असभ्य अपने धार्मिक देवता से किसी एक परिवार की उत्पत्ति मानते थे।

द्वितीय परिच्छेद

सप्तराज्यों का इतिहास

(१) साम्राज्य की ओर प्रवृत्ति

स्लैस्विग-प्रदेश (Sleswig) की जातियों से किस तरह सारा ब्रिटेन सात राज्यों में विभक्त हो गया था, इसका उल्लेख किया जा चुका है। प्रत्येक राज्य दूसरे राज्य को जीतकर अपनी शक्ति बढ़ाने का यत्न करता था। इसका परिणाम यह होता था कि कभी कोई राज्य बहुत ही बड़ा और कभी कोई बहुत ही छोटा हो जाता था। उस असभ्य-काल में इस प्रकार की घटनाएँ प्रायः प्रति वर्ष हुआ करती थीं। बड़े-बड़े राजों के समय में प्रत्येक राज्य की सभ्यता बहुत कुछ उन्नत हो जाती थी। दृष्टांत स्वरूप नार्थंब्रिया ने राजा 'एथल्फ़िथ' (Ethelfrith) के समय में और मर्सिया ने 'पेंडा' (Penda) के समय में बड़ी उन्नति की। भिन्न-भिन्न राजों ने जूटों के उपनिवेश की सीमाओं को भी काफ़ी तौर से अधिक बढ़ाने का यत्न किया। सप्तराज्यों के प्रत्येक राज्य का, संक्षेप में, कुछ इतिहास लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है, अतः अब उसी पर कुछ लिखा जायगा।

(क) नार्थम्ब्रिया

(५९३--६१७)

बर्नीसिया के राजा ने हंबर-नदी से ऊपर का सारा प्रदेश जीता। यह आंग्ल-इतिहास में 'एथेल्फ्रिथ' (Ethelfrith) के नाम से प्रसिद्ध है। इसने दक्षिणी प्रदेश की जाति को डेरा पर हराया और उसके राजा को देश से निकालकर अपनी शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ा ली। यहीं पर बस न करके उसने वेल्स-निवासियों को चेस्टर पर पराजित करके पार्वतीय प्रदेशों में ढकेल दिया। इसका समय ५९३ से ६१७ ईस्वी है।

(ख) वेसैक्स

(५६०--५९३)

एथेल्फ्रिथ के समान ही वेसैक्स के राजा 'कालिन' (Ceawlin) ने अपने राज्य को बहुत बढ़ाया। इसने निम्न-लिखित प्रदेश जीते—

(१) जूट लोगों से वाइट (Wight) का उपनिवेश जीत लिया।

(२) सैक्सनों से सरे (Surrey) का प्रदेश छीन लिया।

(३) विल्टशायर (Wiltshire), बर्कशायर (Berkshire) तथा डॉर्सेटशायर (Dorsetshire) को अपने राज्य में मिला लिया।

(४) मिडलैंड का कुछ प्रदेश जीता।

(५) डर्हम (Durham) पर विजय प्राप्त करके सॉमर्सेट (Somerset) का कुछ भाग और संपूर्ण ग्लास्टर (Gloucestor) अपने अधीन किया।

(ग) मर्सिया
(६२६-६५५)

नार्थंब्रिया तथा वेसैक्स के समुत्थान के एक शताब्दी बाद मर्सिया ने अपूर्व शक्ति प्राप्त की । पेंडा के राज्य-काल से पहले तक मर्सिया का राज्य बहुत ही छोटा तथा अल्प-शक्ति समझा जाता था । पेंडा ने प्रबल प्रयत्न से मिडलैंड के संपूर्ण राजों को नीचा दिखाया और उनसे नार्थंब्रिया तथा वेसैक्स के बहुत से प्रदेश जीतकर मार्सिया में मिला दिए। इसका परिणाम यह हुआ कि मार्सिया की सीमा बहुत विस्तृत हो गई।

(घ) अवशिष्ट राज्य

मार्सिया, वेसैक्स तथा नार्थंब्रिया के साथ-साथ ऐंग्लिया, एसैक्स, केंट तथाससैक्स के छोटे-छोटे राज्य भी सदा विद्यमान रहे। भिन्न-भिन्न शक्तिशाली राजों के उत्पन्न हो जाने से केंट तथा ईस्ट-ऐंग्लिया के राज्य नष्ट होने से बचते रहे। वेसैक्स के प्रबल राजा कालिन की मृत्यु पर केंट के राजा 'एथेल्बर्ट' (Ethelbert) ने शक्ति प्राप्त की। इसने फ्रांस के एक

राजा की कन्या 'बर्था' (Bertha) से विवाह किया। बर्था ईसाई-मतावलंबिनी थी। इसने इँगलैंड में फिर ईसाई-मत का प्रचार किया। एथेल्बर्ट की मृत्यु पर ईस्ट-ऐंग्लिया के राजा रेड्वाल्ड (Redwald) ने केंट का राज्य, सन् ६१६ में, प्राप्त किया। बर्था ने ब्रिटेन में ईसाई-मत का पुनरुद्धार किस तरह किया, इस पर अब कुछ शब्द लिखे जायँगे।

(२) ईसाई-मत का प्रचार

स्लैस्विग-प्रदेश की जातियों के आक्रमण से पहले कैल्टिक ब्रिटेन ईसाई-मतावलंबी था, इसका उल्लेख किया जा चुका है। विदेशियों के आक्रमण से पीड़ित होकर कैल्टिक-जाति ने पर्वतों की शरण ली और ईसाई-मत को अंत तक न छोड़ा। वेल्स (Wales) में उन्होंने ईसाई-मत की बहुत उन्नति की। इन्हीं दिनों में वेल्स में बड़े-बड़े संतों (Saints) ने जन्म लिया, जिनके नाम ये हैं—

(१) सेंट डेविड (St. David)

(२) सेंट डेनियल (St. Daniel)

(३) सेंट डिव्रिग (St. Dyvrig)

(४) सेंट केंटिजर्न (St. Kentigern)

'कोलंबा' (Columba) ने आयर्लैंड में ईसाई-मत के प्रचार में बड़ा भाग लिया। स्कॉटलैंड के ईसाई-मत-प्रचार में भी

इसका बड़ा भारी भाग है। यह सब होते हुए भी शेष इँगलैंड मूर्ति-पूजक ही था।

बर्था के साथ एथेल्बर्ट के विवाह करने से शेष इँगलैंड में भी ईसाई-मत के प्रचार की आशा हो गई। एथेल्बर्ट ने बर्था के लिये 'कैंटरबरी' (Canterbury) में एक चर्च बनवा दिया। इन्हीं दिनों रोम में 'ग्रैगरी प्रथम'(Gregory)-नामक रोमन पोप शासन करता था। यह बड़े ही उच्च विचार का आदमी था। चिरकाल से इसकी इच्छा थी कि ब्रिटेन में फिर ईसाई-मत का प्रचार करे। इस उद्देश की पूर्ति के लिये पोप ने संत 'अगस्टाइन'(Augustine)को बहुत-से ईसाई भिक्षुओं के साथ ब्रिटेन में धर्म-प्रचार के लिये भेजा। एथेल्बर्ट ने इनका स्वागत किया और धर्म-प्रचार में इन्हें पूर्ण स्वतंत्रता दी। इन संतों तथा भिक्षुओं के पवित्र आचरणों को देखकर एथेल्बर्ट ने भी ईसाई-मत में प्रवेश किया। इस प्रकार 'कैंटरबरी' ईसाई-मत का केंद्र हो गया। लंदन तथा रॉकेस्टर(Rochester)आदि नगरों में भी ईसाई-मत फैल गया और वहाँ चर्च आदि बनाए गए। परंतु मर्सिया के पुराने राजा पेंडा को ईसाई-मत पसंद न था। एथेल्बर्ट की मृत्यु होने पर उसने मूर्ति-पूजा के प्रचार का यत्न करना आरंभ किया। एथेल्बर्ट की एक कन्या 'एथेल्बर्गा' का विवाह नार्थंब्रिया के राजा 'ऐडविन' (Edwin) से हुआ था। ६२७ में

स्त्री का प्रभाव पड़ने से—उसके कहने-सुनने से—एडविन ने ईसाई-मत ग्रहण किया और यार्क-नगर को कैंटरबरी के ही समान ईसाई-मत का केंद्र बनाया। पेंडा की एडविन से भयंकर शत्रुता थी। पेंडा ने बड़ी चतुरता से वेल्स के राजा 'कैडवालन' (Cadwallon) को अपने साथ मिलाकर एडविन पर चढ़ाई की और युद्ध में उसको मार डाला। एक वर्ष तक कैडवालन और पेंडा ने नार्थंब्रिया पर भयंकर अत्याचार किए और ईसाई-मत को जड़ से उखाड़ डालने का प्रयत्न किया। एक वर्ष के बाद ही एथेल्फ्रिथ के पुत्र ऑस्वाल्ड (Oswald) ने नार्थंब्रिया को स्वतंत्र कर दिया और कैडवालन को युद्ध में हराया। कैडवालन की मृत्यु होने पर ऑस्वाल्ड ने कैंब्रिया (Cambria)-प्रदेश को वेल्स से पृथक करके नार्थंब्रिया में मिला दिया। ऑस्वाल्ड ईसाई-मत के स्कॉटिश संप्रदाय का था। इसने नार्थंब्रिया में ईसाई-मत का प्रचार करना चाहा, परंतु उसे पेंडा ने मॉसफ़ील्ड (Mossfield) की लड़ाई में मार डाला। पेंडा ने नार्थंब्रिया को नष्ट करना चाहा; परंतु ऑस्वाल्ड के भाई ऑस्विन (Oswin) ने उसको ऐसा नहीं करने दिया। ऑस्विन ने विनवुड (Winwood) के युद्ध (६५५ ई०) में पेंडा को मार डाला।

पेंडा ही ईसाई-मत का मुख्य कंटक था। पेंडा की मृत्यु के

बाद ब्रिटेन में ईसाई-मत बहुत शीघ्रता के साथ फैलने लगा। यह एक आश्चर्य की बात है कि पेंडा-जैसे मूर्ति-पूजक का पुत्र दृढ़ ईसाई था। नार्थंब्रिया के पादरियों ने पेंडा की मृत्यु होने पर मर्सिया में ईसाई-मत का प्रचार किया। मर्सिया में ईसाई-मत का केंद्र 'लिचफ़ील्ड' (Lichfield) बनाया गया। मर्सिया में 'चैद' (Chad) नाम के ईसाई-मत-प्रचारक का नाम अति प्रसिद्ध है।

स्कॉटलैंड तथा रोम के ईसाई-मत में बहुत अंतर था। इसका परिणाम यह होता था कि दोनों धर्मों के पादरी अपनी-अपनी बातों को ही सर्वथा सत्य बतलाते थे। इस धर्म-भेद को मिटाने के लिये ऑस्विन ने ब्रिटेन तथा इँगलैंड के मुख्य-मुख्य पादरियों को एकत्र करके एक 'धर्म-सभा' (सन् ६६४ ईस्वी) जोड़ी, जो इँगलैंड के इतिहास में 'ह्विटबी की परिषद्' (Synod of Whitby) के नाम से प्रसिद्ध है। बहुत विवाद के बाद ऑस्विन ने रोमन चर्च के पक्ष में अपनी सम्मति दी। इँगलैंड के लिये यह बहुत ही अच्छी घटना हुई; क्योंकि इस निर्णय के द्वारा इँगलैंड का संबंध रोम के साथ बहुत ही घनिष्ठ हो गया और इँगलैंड रोम की सभ्यता से अपने को समुन्नत करने में समर्थ हो सका।

सन् ६६४ की धर्म-सभा के निर्णय के बाद थियोडोर

(Theodore)-नामक एक यूनानी, कैंटरबरी का आर्च-बिशप (Archbishop—महान् धर्माध्यक्ष) होकर, रोम से इँगलैंड आया। इसने ऑस्विन के साथ घनिष्ठ मित्रता रक्खी और उसकी मृत्यु होने पर उसके पुत्र 'एगफ़्रिथ' (Egfrith) के साथ भी अच्छा संबंध बनाए रक्खा। अपनी मृत्यु से पहले ही आर्च-बिशप ने समुचित रीति पर आंग्ल-चर्चों का संगठन कर दिया। प्रत्येक आंग्ल-बिशप को बाध्य किया कि वह कैंटरबरी के आर्च-बिशप को अपना शिरोमणि समझे और उसी के कहने के अनुसार चले। इसने बालकों की शिक्षा के लिये स्थान-स्थान पर पाठ-शालाएँ खोलीं और इस बात पर तीव्र दृष्टि रक्खी कि प्रत्येक बिशप अपना काम पूर्ण रीति से करता है या नहीं। बिशपों की शक्ति बढ़ाने के लिये थियोडोर ने उनको धर्म-सभा में पूरे तौर पर भाग लेने के लिये आज्ञा दी। धर्म-सभा के निर्माण तथा चर्चों के संगठन द्वारा थियोडोर ने इँगलैंड को एक जाति के रूप में परिवर्तित करने का यत्न किया।

सन् ६९० में थियोडोर की मृत्यु हो गई। इसकी मृत्यु के अनंतर भी चिरकाल तक आंग्ल-चर्च पूर्ण रीति से उन्नति करता रहा। आठवीं सदी में इँगलैंड ने बहुत-से पादरियों को प्रचार के लिये जर्मनी भेजा।

'ह्विटबी' के एक विहार (Monastery) में हिल्डा (Hilda) नाम के एक प्रसिद्ध कवि ने जन्म लिया और 'टाइन'-नदी के किनारे स्थित एक मठ में 'बीड' (Bede) का जन्म हुआ, जो कि 'आंग्लों का धार्मिक इतिहास' (Ecclesiastical History of the English People) का प्रसिद्ध लेखक है। एग्बर्ट (Egbert) नाम के प्रसिद्ध बिशप ने यार्क-नगर को भी कैंटरबरी के समान 'आर्च-बिशपरिक' बनाने का यत्न किया और अपने यत्न में पूर्ण रूप से सफल हुआ। यार्क ने भी शीघ्र ही विद्यापीठ का रूप धारण किया। यही कारण था कि प्रसिद्ध विद्वान् 'आल्किन' को 'चार्ल्स दि ग्रेट' ने अपनी पाठशालाओं के संचालन के लिये फ्रांस निमंत्रित किया।

(३) डेन लोगों के (Danish) आक्रमण से पहले तक इंगलैंड की राजनीतिक अवस्था

आठवीं सदी में नार्थंब्रिया ने धार्मिक उन्नति तो यथेष्ट की, परंतु उसकी राजनीतिक अवस्था सर्वथा शोकजनक हो गई। ऑस्विन के पुत्र एगफ़िथ ने पिक्टों को जीतने का यत्न किया, परंतु पराजित हुआ और नेक्टेंसमियर (Nectansmere) के प्रसिद्ध युद्ध में मारा गया। उसका कोई उत्तराधिकारी इतना भी शक्तिशाली नहीं हुआ कि अपने राज्य तक का शासन कर सके।

नार्थंब्रिया के अधःपतन के अनंतर मर्सिया ने प्रबलता प्राप्त की। 'एथेल्बाल्ड' नाम का मर्सिया का राजा इतना शक्तिशाली तथा विजयी था कि उसने अपने को दक्षिणी इँगलैंड का राजा कहना शुरू कर दिया। इसका उत्तराधिकारी 'ऑफ़ा दि माइटी' (Offa, the Mighty) बहुत ही वीर तथा बलवान् था। ऑफ़ा ने नार्थंब्रिया का बहुत-सा भाग जीतकर मर्सिया के साथ मिला लिया। उसने पश्चिमी सैक्सनों के संपूर्ण प्रदेशों पर आधिपत्य प्राप्त करके उनको भी अपने ही राज्य का एक भाग बना लिया। मर्सिया तथा वेल्स को इसने एक खाई के द्वारा पृथक् कर दिया। यह खाड़ी 'ऑफ़ाज़ डाइक' के नाम से आंग्ल-इतिहास में प्रसिद्ध है। विदेशी राजों के साथ भी ऑफ़ा ने मित्रता की। फ़ांस का प्रसिद्ध सम्राट् 'चार्ल्स दि ग्रेट' ऑफ़ा का परम मित्र था। ऑफ़ा ने आंग्ल-चर्च को पूर्ण सहायता दी और स्वयं 'सेंट अल्बान का मठ' बनवाया। ऑफ़ा ने लिचफ़ील्ड को आर्च-बिशपरिक बनाने का यत्न किया; परंतु उसकी यह इच्छा चिरकाल तक पूरी न हो सकी। यदि लिचफ़ील्ड आर्च-बिशपरिक बन जाता, तो इँगलैंड का धर्म-संबंधी संगठन सर्वथा टूट जाता। ऑफ़ा का उत्तराधिकारी 'सिनुल्फ़' (Cenulf, ७९६–८२१) शक्ति-हीन था। कैंटरबरी से तंग आकर इसने

लिचफ़ील्ड को आर्च-बिशपरिक से सर्वथा हटा दिया। सिनुल्फ़ की मृत्यु होने पर मार्सिया की स्थिति छिन्न-भिन्न हो गई। एकसत्ताक शासन-पद्धति (Absolute Rule) का सबसे बड़ा दूषण यही है कि उसमें राजा के अनुसार ही राज्य की दशा रहती है। परंतु उचित तो यह है कि राज्य के अनुसार राजा की अवस्था हो।

प्रजा-सत्ताक शासन-पद्धति (Representative Govt.) के द्वारा इँगलैंड ने किस प्रकार राजा की दशाओं में परिवर्तन होने को रोका, इसका आगे चलकर सविस्तर वर्णन किया जायगा। मार्सिया के अधःपतन के अनंतर वेसैक्स का समुत्थान हुआ और साथ ही इँगलैंड पर डेन लोगों ने (Danes) आक्रमण करना प्रारंभ किया। इस संपूर्ण इतिवृत्त को अगले परिच्छेद में लिखने का यत्न किया जायगा।

तृतीय परिच्छेद

पश्चिमी सैक्सनों और डेनों का आक्रमण

(१) पश्चिमी सैक्सनों का समुत्थान

मर्सिया के समुत्थान के कारण पश्चिमी सैक्सनों की उन्नति कुछ समय के लिये रुक गई थी। 'ऑफ़ा दि ग्रेट' की मृत्यु होने पर वेसैक्स ने पुनः शक्ति प्राप्त करने का यत्न किया।

मर्सिया के समुत्थान के दिनों में ही वेसैक्स ने पश्चिमी वेल्स के कुछ प्रदेशों को अपने हस्तगत कर लिया। ऑफ़ा दि माइटी ने वेसैक्स के राजा एग्बर्ट पर आक्रमण किया और उसे युद्ध में पराजित करके उसे फ़्रांस भगा दिया। किंतु उसके मरते ही सन् ८०० में 'एग्बर्ट' ने पुनः वेसैक्स का राज्य प्राप्त किया। विदेश में रहने से एग्बर्ट यथेष्ट अनुभवी तथा राजनीति-निपुण हो गया था। इसने राज्य प्राप्त करते ही पश्चिमी वेल्स पर आक्रमण किया और तामूर तक संपूर्ण डेवनशायर को अपने हस्तगत किया। मर्सिया का राजा सिनुल्फ़ सन् ८२१ में मर गया। अतएव एग्बर्ट ने मर्सिया पर आक्रमण कर दिया और एलंडून पर (सन् ८२५) मर्सियावालों को पराजित किया।

इसका परिणाम यह हुआ कि मर्सिया एग्बर्ट के आधिपत्य मे आ गया। केंट, ससैक्स तथा एसैक्स भी जीते गए, और ये सब वेसैक्स के ही प्रांत बना दिए गए। ईस्ट-ऐंग्लिया ने मर्सिया से क्रुद्ध होकर वेसैक्स से मित्रता कर ली।

ऊपर-लिखी इन सब विजयो को प्राप्त करते हुए भी एग्बर्ट को मृत्यु-पर्यंत शांति नही प्राप्त हुई। यद्यपि ब्रिटेन मे उसका कोई भी प्रबल शत्रु न था, तो भी उनकी कमी न थी। डेन्मार्क के किनारे से एक नवीन जाति ने इँगलैंड पर आक्रमण करना प्रारंभ किया। इँगलैंड-वासी इस जाति को 'डेन', या 'ईस्टमैन' और फ्रेंच 'नॉर्थमैन' के नाम से पुकारते थे। डेनो के मुख्य निवास-स्थान 'डेन्मार्क', 'नार्वे' तथा 'स्केंडिनेविया' (Scandinavia) थे। डेन लोग चार्ल्स दि ग्रेट के राज्य करने के कारण फ्रांस मे न बढ़ सके। अत उन्होंने इँगलैंड पर आक्रमण करना प्रारंभ किया। 'कार्निश वाल्श' (Cornish Walsh) वेसैक्स से भयभीत होकर डेनो से मिल गए, परंतु वीर एग्बर्ट ने दोनो ही जातियो को 'हैंगिस्ट्स डाउन' (Hengist's Down) की लड़ाई मे पराजित किया।

इस प्रसिद्ध युद्ध के दो वर्ष बाद वीर एग्बर्ट मर गया (सन् ८३६)। इसके बाद इसका पुत्र 'एथेल्वुल्फ'(Ethelwolf) राज्यासन पर बैठा। इसने १६ वर्ष तक डेनो के आक्रमणो

से इँगलैड को बचाया और सन ८७८ मे मृत्यु को प्राप्त हुआ। एथेल्वुल्फ के चार पुत्र थे—

(१) एथेल्वाल्ड (Ethelwald)

(२) एथेल्बर्ट (Ethelbert)

(३) एथेल्रेड (Ethelred)

(४) एल्फ्रेड (Alfred)

एथेल्वुल्फ के पहले तीनो पुत्र कुछ वर्षो तक राज्य करके मर गए और एल्फ्रेड पर संपूर्ण राज्य का भार आ पडा।

(२) डेनो का भिन्न-भिन्न प्रदेशो को बसाना

डेन-जाति के साहस को देखकर आश्चर्य होता है। अपने राजा के आधिपत्य से पीड़ित होकर स्वतंत्रता-प्रिय डेनो ने नार्वे-देश को परित्याग करने की इच्छा से इधर-उधर भ्रमण करना प्रारंभ किया। सबसे पहले इन्होने 'आइसलैड' (Iceland) मे एक उपनिवेश बसाया। इसके अनंतर कुछ साहसी डेनो ने 'ग्रीनलैड' (Greenland) मे भी पदार्पण किया और उसमे भी अपना एक उपनिवेश स्थापित किया।

इन्होने ब्रिटेन और आयर्लैंड को बसाते हुए स्कॉट-लैड के निम्न-लिखित द्वीपो को भी बसाया—

(१) हेब्रिडीज़ (Hebrides)

(२) फ़ेरो आइलैंड (Faroe Island)

(३) आर्कनी (Orkney)

(४) शेटलैंड (Shetland)

ऊपर-लिखे उपनिवेशों से ही स्पष्ट हो गया होगा कि डेन कितने साहसी थे। विचित्रता तो यह है कि इन्होंने शीघ्र ही 'पूर्व-ऐंग्लिया', 'दक्षिणी नार्थंब्रिया' तथा 'उत्तरीय मर्सिया' को भी अपने अधीन कर लिया। 'वेसैक्स' को जीतने के लिये भी कमर कसी, परंतु चिरकाल तक सफल न हो सके। सन् ८९९ तक एल्फ़्रेड वीरता-पूर्वक वेसैक्स पर राज्य करता रहा। सन् ८७१ में एल्फ़्रेड को डेनों से ९ सम्मुख-युद्ध करने पड़े। अंतिम युद्ध में डेन 'रीडिंग'-नामक स्थान में चले गए। एल्फ़्रेड ने उनको इस वीरता से पराजित किया कि उन्होंने बड़ी ख़ुशी से संधि कर ली और कुछ वर्षों तक एल्फ़्रेड से किसी प्रकार की छेड़-छाड़ न की। सन् ८७८ के जनवरी महीने में 'गुथरम' (Guthrum)-नामक वीर-नेता के साथ डेनों ने वेसैक्स पर पुनः आक्रमण किया। इँगलैंड में शीत-ऋतु में युद्ध नहीं किए जाते थे, अतः एल्फ़्रेड युद्ध के लिये तैयार नहीं था। इसका परिणाम यह हुआ कि एल्फ़्रेड गुथरम से पराजित होकर दलदल के बीच 'ऐथलने' (Athelney)-नामक द्वीप में भाग गया और अपने देश की स्वतंत्रता के

उपाय सोचने लगा। एल्फ्रेड ने अपने देश को किस प्रकार स्वतंत्र किया, इसी पर अब कुछ शब्द लिखे जायँगे।

(३) एल्फ्रेड का वेसैक्स पर आधिपत्य

एल्फ्रेड ने एथलने में एक दुर्ग बनाया और वहीं से वह मौके-बे-मौके सहसा डेनों पर आक्रमण कर देता था। कुछ समय बाद एक प्रबल सेना द्वारा उसने गुथरम को 'विल्ट-शायर' में, 'एडिंग्टन'-नामक स्थान पर, बहुत बुरी तरह पराजित किया। डेन लोग घबराकर 'चिपेन्हम' (Chippenham) में जमा हुए, परंतु उसने वहाँ पर भी उनको ठहरने न दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि गुथरम ने बड़ी खुशी से संधि कर ली। संधि के अनुसार गुथरम को ईसाई बनना पड़ा, और उसको इँगलैंड का कुछ भाग सदा के लिये छोड़ना पड़ा। आंग्ल-इतिहास में यह संधि 'वेडमोर'(Wedmore) की संधि के नाम से प्रसिद्ध है।

वेडमोर की संधि के ७ वर्ष बाद गुथरम के साथ एल्फ्रेड का पुनः युद्ध हुआ, परंतु इस युद्ध में भी गुथरम को ही नीचा देखना पड़ा। सन् ८८६ के पुनः युद्ध में गुथरम पराजित हुआ और उसको 'एल्फ्रेड-गुथरम' नाम की संधि (Alfred and Guthrum's Peace) करनी पड़ी। इसके अनुसार एल्फ्रेड का राज्य लंदन, बेडफोर्ड तथा चेस्टर तक विस्तृत हो गया।

एल्फ्रेड ने मर्सिया का शासन एथेल्रेड के हाथ में दिया और साथ ही उससे अपनी कन्या एथेल्फ्रेड का विवाह भी कर दिया।

डेनो के आधिपत्य में जो आंग्ल-प्रदेश थे, वे 'डेनला' (Danelaw) के नाम से पुकारे जाते थे ; क्योंकि उनका शासन डेनो के कानून के अनुसार होता था। इँगलैंड के सौभाग्य से डेनो की भाषा तथा रस्म-रिवाज़ आंग्लो से सर्वथा भिन्न न थे। इसका परिणाम यह हुआ कि वे शीघ्र ही आंग्ल-जाति से मिल और गुथरम की देखा-देखी ईसाई भी बन गए। डेनो के आंग्लो से मिल जाने से आंग्लो की शक्ति तथा साहस पहले की अपेक्षा दूना हो गया। डेनो में एका न था। यही कारण है कि डेनला के प्रदेशो पर भिन्न-भिन्न कई मांडलिक राजा थे। इन छोटे-छोटे अल्प-शक्तिशाली राजो पर प्रभुत्व प्राप्त करना एल्फ्रेड के लिये बहुत ही सहज था। आंग्ल-क्रानिकल (Anglo-Saxon Chronicle) में लिखा है कि 'डेनला को छोड़कर समस्त आंग्ल-प्रदेशो पर एल्फ्रेड का ही आधिपत्य था।'

एल्फ्रेड बहुत ही दूरदर्शी, बुद्धिमान् तथा आत्म-संयमी था। इसने आंग्लो की सामाजिक तथा राजनीतिक अवस्था में बहुत-से सुधार किए, जो इस प्रकार है—

(क) राजनीतिक सुधार (Political Reform)

एल्फ्रेड ने भावी आक्रमणो मे आंग्लों को सुरक्षित रखने के लिये नौ-सेना तथा स्थल-सेना का सर्वदा, स्थायी रूप से, तैयार रहना आवश्यक समझा। इस उद्देश की पूर्ति के लिये उसने स्थल-सेना को दो भागो मे विभक्त किया—एक भाग छ महीने सेना के स्वरूप मे देश की रक्षा के लिये सदा तैयार रहता, और दूसरा अपने-अपने खेतो तथा नगरो की रक्षा का काम करता प्रत्येक छमाही मे दोनो ही भाग एक-दूसरे का कार्य बदल लेते थे।

बर्बर समुद्री डाकुओ का समुद्र-मार्ग से आना रोकने के लिये एल्फ्रेड ने एक नौ-सेना बनाई। शनै:-शनै इसकी उन्नति होती रही। एल्फ्रेड के उत्तराधिकारी के समय मे नौकाओ की सख्या सौ तक पहुँच गई। इस तरह सेना-सबंधी सुधारो के बाद उसका ध्यान राज्य-सबधी सुधारो की ओर गया।

देश मे प्रचलित ग्राम्य पंचायतो (Hundred-moot) तथा माडलिक न्यायालयो (Shire-moot) को एल्फ्रेड ने बहुत ही अधिक शक्ति दे दी। भूमि-पतियो तथा कृषको को इन न्यायालयो का न्याय मानने को बाध्य किया। जब कभी कोई न्यायाधीश अन्याय करता, तो एल्फ्रेड स्वय उसे बुलाता और कुल मामले की तहकीकात करता था। एल्फ्रेड का

कथन था कि 'दुखिया तथा दरिद्र का राजा को छोड़कर और कोई वास्तविक सहायक नहीं होता।'

(ख) शिक्षा-सुधार (Educational Reform)

एल्फ्रेड ने आंग्लो की शिक्षा के लिये जो प्रबल प्रयत्न किया, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। शिक्षा की अवनति देखकर उसे बहुत ही शोक होता था। डेन लोगो ने प्राचीन शिक्षालयो को नष्ट कर दिया था। नार्थम्ब्रिया में बीड तथा एग्बर्ट के काल की कुछ थोड़ी-सी पाठशालाएँ अवशिष्ट रह गई थी। इन शोक-जनक अवस्थाओ को देखकर एल्फ्रेड ने प्रत्येक स्वतंत्र पुरुष को आंग्ल-भाषा सीखने के लिये बाध्य किया। भूमि-पतियो के लिये उसने एक विद्यालय खोला जिसका निरीक्षण वह स्वयं करता था। उसने बड़े-बड़े विद्वान विदेशो से बुलाए और शिक्षा की उन्नति में कोई बात उठा न रक्खी।

उपरि-लिखित कार्यों से ही एल्फ्रेड के दैविक जीवन का अनुमान किया जा सकता है। रुग्ण होते हुए भी उसने देश-संबंधी कार्यों में कभी प्रमाद नहीं किया। वह सत्यवादी तथा धर्मात्मा था। उसकी महानुभावता तथा उदारता सर्वत्र विख्यात थी। उसमे न्यायशीलता तथा दरिद्रो के प्रति प्रीति कूट-कूटकर भरी हुई थी। ९०१ मे संपूर्ण प्रजा को रुलाते

हुए वह स्वर्गवासी हुआ। एल्फ्रेड का महत्त्व देखकर आग्ल-इतिहासज्ञ उसको 'एल्फ्रेड दि ग्रेट' नाम से पुकारते है। सच तो यह है कि जब तक आग्ल-जाति जीती-जागती है, तब तक एल्फ्रेड का नाम अमर है।

(४) एल्फ्रेड के उत्तराधिकारियो (Successors) का शासन

(क) ज्येष्ठ एडवर्ड (९०१-९२५)

एल्फ्रेड की मृत्यु होने पर उसका पुत्र एडवर्ड वेसेक्स के सिहासन पर बैठा। यह 'एडवर्ड दि एल्डर' (Edward the Elder) नाम से आंग्ल-इतिहास मे प्रसिद्ध है। यह शाति-प्रिय न होकर युद्ध-प्रिय था। एल्फ्रेड के सदृश ही वीर होते हुए इसने इँगलैंड मे एक-सत्ताक राज्य स्थापित करने का प्रबल प्रयास किया। एल्फ्रेड की कन्या एथेलफ्लेडा (Ethelfleda) पूरी क्षत्राणी थी। इसने संपूर्ण डेनला को अपने हाथ मे किया, किंतु शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हुई।

बहन के मरने पर एडवर्ड ने मर्सिया का कोई दूसरा शासक नियत नहीं किया। वह स्वयं ही वहाँ का शासन करने लगा। ईस्ट-ऐंग्लिया पर आक्रमण करके उसे भी उसने अपने ही राज्य मे मिला लिया। ९२३ मे मैंचेस्टर को जीतकर एडवर्ड ने नार्थंब्रिया-विजय का भी श्रीगणेश कर दिया। एडवर्ड की वीरता तथा शक्ति देखकर वेल्स के राजा

'हॉवेल दि गुड' (Howell the good) ने स्वयं ही उसकी अधीनता मान ली। ९२५ मे एडवर्ड की मृत्यु हो गई। यह पहला ही राजा था, जो अपने को ऐंग्लो-सैक्सनो का राजा समझता था और जिसने इॅंगलैड मे एक-सत्ताक राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया।

(ख) एथेल्स्टन (९२५-९४०)

एडवर्ड की मृत्यु होने पर उसका पुत्र 'एथेल्स्टन' राज्यासन पर बैठा। यह अपने को ब्रिटेन का सम्राट् (Emperor) समझता था, क्योकि सब ब्रिटिश-राजे उसकी अधीनता स्वीकार करते थे। इसकी शक्ति का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि विदेशी शासक उसकी बहनो से विवाह करने के लिये सदा उत्सुक रहते थे। सम्राट् ओटो की धर्मपत्नी एथेल्स्टन की बहन 'एडिथ' ही थी। चार्ल्स दि सिंपिल को भी इसकी एक बहन ब्याही थी। सारांश यह कि एथेल्स्टन की शक्ति विदेशी राष्ट्रो तक विख्यात थी। 'बर्नानबरा' के प्रसिद्ध युद्ध मे एथेल्स्टन ने स्कॉटलैड, डेन तथा वेल्सवालो की सम्मिलित सेना को पराजित किया और ऐसी श्रेष्ठ कीर्ति प्राप्त की, जो चिरकाल तक आंग्ल-गीतो द्वारा गाई जाती रही। ९४० मे इसकी मृत्यु हो गई और इसका छोटा भाई एडमंड राज्यासन पर बैठा।

(ग) एडमंड (९४०-९४६)

एडमंड (Edmund) के राज्य-काल मे मार्सिया तथा डेरा के डेनो ने विद्रोह किया। परंतु इसने सहज मे ही उस विद्रोह को शात कर दिया। इसने स्कॉटलैंड के राजा मैलकम (Malcolm) को कंबरलैंड देकर अपने साथ मिला लिया और उससे यह प्रण करा लिया कि जल-सेना और स्थल-सेना से सदा सहायता करता रहेगा। ९४६ मे यह मार डाला गया। इसके एडवी तथा एड्गर नाम के दो पुत्र थे। परंतु ये अल्प-वयस्क थे। इसलिये इनके स्थान पर एडमंड का छोटा भाई 'एड्रेड' (Edred) राज्य-सिहासन पर बिठाया गया।

(घ) एड्रेड (९४६-९५५)

'एड्रेड' अपने पूर्वजो के समान शक्तिशाली तथा वीर न था। अत इसने अपूर्व दूर-दर्शिता से संपूर्ण राज्य-कार्य 'डंस्टन' (Dunstan) को सौप दिया। डंस्टन इँगलैंड मे सबसे योग्य व्यक्ति समझा जाता था। उसने ९५४ मे नार्थंब्रिया को जीत लिया। एड्रेड को अपने राज्य-विस्तार का इतना अभिमान था कि वह अपने को 'ब्रिटेन का सम्राट' तथा 'सीज़र' के नाम से पुकारता था। इसके समय मे ही डेन तथा आग्ल परस्पर बहुत कुछ मिल गए थे—उनमे पहले

की तरह भेद-भाव नहीं रहा था। ६५५ में एड्रेड की मृत्यु होने पर एडमंड का पुत्र 'एडवी' (Edwy) राजगद्दी पर बैठा।

(ङ) एडवी (६५५-६५६)

एड्वी स्वच्छंद प्रकृति का था। राज्य पाते ही उसकी डंस्टन से लड़ाई हो गई। इस पर उसने उसे राज्य से बहिष्कृत कर दिया और नार्थंब्रिया तथा मर्सिया पर कठोरता से शासन करने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि नार्थंब्रिया तथा मर्सिया ने विद्रोह करके एड्वी को राज्य-च्युत कर दिया और उसके भाई एड्गर (Edgar) को राज्य करने के लिये बुलाया।

(च) शांति-प्रिय एड्गर (६५६-६७५)

एड्गर राज्य प्राप्त करते ही डंस्टन का परम मित्र हो गया। इसने डंस्टन को संपूर्ण राज्य-कार्य सौंप दिया और उसे कैंटबरी का बिशप बनाया। एड्वी वेसैक्स पर शासन करता रहा। किंतु शीघ्र ही एड्वी की मृत्यु होने पर संपूर्ण इँगलैंड पुन: एक ही राजा की अधीनता में आ गया। जनता ने एड्गर को 'शांति-प्रिय'(The Peaceful) की उपाधि दी। इसका कारण यह था कि उसने मृत्यु-पर्यंत बिना युद्ध के, शांति के साथ, संपूर्ण देश पर शासन किया। एड्गर ने देश को युद्ध से सुरक्षित रखने के लिये स्कॉटलैंड के राजा

को 'एडिनबरा' का नगर दे दिया, यद्यपि इस नगर पर वास्तविक अधिकार उसी का था।

एड्गर प्रजा-प्रिय राजा था। एक बार की घटना है कि प्रेम-वश चेस्टर पर छ मांडालिक राजाओं ने बहुत प्रसन्नता से उसकी नौका को स्वयं ही खेया। आश्चर्य की बात है कि आयर्लैंड के अदम्य डेन राजा भी उसकी अधीनता स्वीकार करते थे। एड्गर को 'ब्रिटेन का एंपरर' या 'अगस्टस' के नाम से पुकारा जाता है।

एड्गर न्याय-परायण तथा कठोर शासक था। उसे विदेशियों से बहुत प्रेम था। डंस्टन अति उत्साही तथा धर्मात्मा था। उन दिनों आंग्ल-चर्च की दशा बहुत अवनत थी। डंस्टन ने इसके सुधार का यत्न किया और बिशपों तथा पादरियों को 'संत बेनेडिक्ट' (St Benedict) के नियमों के अनुसार चलने के लिये बाध्य किया। ये नियम धार्मिक नेताओं के लिये दरिद्रता (Poverty), ब्रह्मचर्य (Celebacy) तथा आज्ञा-पालन अत्यंत आवश्यक बतलाते थे। ९७५ में एड्गर की मृत्यु हो गई और उसकी मृत्यु के साथ राज्य की पुरातन महत्ता भी लुप्त होने लगी।

(छ) एडवर्ड (९७५-९७९)

एड्गर के एडवर्ड तथा एथेल्रेड नाम के दो पुत्र थे।

दोनो पुत्रो मे राज्य के बटवारे के बारे मे झगड़ा उठ खड़ा हुआ। डस्टन के प्रभाव मे एडवर्ड को राज्य मिला। ६७८ मे एडवर्ड को किसी ने खंजर से मार डाला। इसकी मृत्यु होने पर प्रमादी एथेल्रेड द्वितीय राज्य पर बैठा।

एथेल्रेड के राज-पद पर आते ही डंस्टन ने राजनीतिक कार्यो से अपना हाथ खीच लिया और धार्मिक सुधारो मे ही अपना अंतिम जीवन व्यतीत करने का यत्न किया। डस्टन ने आंग्ल-इतिहास मे जो महान् कार्य किया है, वह बिल्कुल प्रत्यत्त है। उसने एल्फ्रेड की नीति को पूर्ण किया और देश की एकता मे कोई बात उठा न रक्खी।

(ज) एथेल्रेड (६७८-१०१६)

'एथेल्रेड' का स्वभाव कलह-प्रिय था। शक्की होने के कारण वह शासन-कार्य के सर्वथा अयोग्य था। इन दुर्गुणो के साथ-साथ उसमे प्रमाद भी बेहद था। इसी से तत्कालीन आंग्ल-जनता घृणा के मारे उसे 'प्रमादी' (The Unready अर्थात् किसी की सलाह—Rede—न सुनने-वाला) नाम से पुकारती थी। इसके राज्य-काल मे साम्राज्य की एकता छिन्न-भिन्न हो गई और डेन लोग इँगलैंड के चारो ओर पुन. मँडलाने लगे।

उसने उनके आक्रमणो को वीरता से न रोककर रुपयो

के सहारे रोकने का यत्न किया और इसीलिये जनता पर डेनगेल्ड (Danegeld) नाम का कर लगाया। रुपयों के लोभ से डेन-संघ एथेल्रेड को प्रत्येक वर्ष इँगलैंड पर आक्रमण करने की धमकियाँ देने लगा। इन धमकियों का प्रतिकार करने के उद्देश से एथेल्रेड ने नार्मडी (Normandy) के शासक की बहन एमा (Emma) से विवाह करके अपनी शक्ति बढ़ा ली, किंतु मूर्खता से संत ब्राइस (St Brice) के महोत्सव (Feast) के दिन (१३ नवंबर, १००२ को) डेन लोगों की हत्या करवा दी।

हत्या-कांड का समाचार शीघ्र ही डेन्मार्क पहुँचा। इस घटना से क्रुद्ध होकर डेन-सम्राट् 'स्वेन' (Sweyn) ने इँगलैंड पर आक्रमण कर दिया। डेन-लोगों ने १० वर्षों तक इँगलैंड को क्रमशः जीता, परंतु प्रमादी एथेल्रेड का प्रमाद अंत तक न छूटा। १०१३ में स्वेन ने इँगलैंड का बहुत प्रदेश जीत लिया। इस घटना के बाद एथेल्रेड देश को छोड़कर नार्मडी भाग गया। इसका परिणाम यह हुआ कि डेन-सैनिकों ने स्वेन के पुत्र नूट (Cnut) को इँगलैंड का राजा उद्घोषित किया।

(५) इँगलैंड में डेन-राज्य

(क) नूट (Cnut) (१०१७-१०३५)

नूट वीर योद्धा, नीति-निपुण तथा अत्यंत दूरदर्शी था।

बहुत-से आग्लो ने मूर्खता से पुन एथेल्रेड को नार्मडी से बुला लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि नूट तथा उसमे १०१६ तक लगातार युद्ध होता रहा। १०१६ मे, एथेल्रड की मृत्यु होने पर, उसके वीर पुत्र 'एडमड आयरनसाइड' (Edmund Ironside) ने नूट से युद्ध जारी रक्खा। छ: प्रसिद्ध-प्रसिद्ध सम्मुख-युद्धो के अनतर भी कोई पक्ष प्रबल नही हुआ। युद्ध से तंग आकर दोनो ही वीरो ने आल्नी (Alney) पर संधि कर ली। संधि के अनुसार वेसेक्स का राज्य एडमड को मिला कुछ ही समय बाद एडमंड का स्वर्ग-वास हो गया। वेसेक्स के कुलीन सर्दारो ने युद्ध से भयभीत होकर नूट को ही अपना शासक चुना।

नूट ने इँगलैंड का राज्य प्राप्त करते ही डेन-सेना को डेन्मार्क भेज दिया और आग्लो पर अधिक विश्वास करने लगा। उसने एथेल्रेड की विधवा एमा के साथ विवाह कर लिया और एड्गर के नियमो के अनुसार ही देश का शासन करना प्रारंभ किया। प्रसिद्ध है, उसके समय मे इॅगलैड की समृद्धि बेहद बढ़ी। नूट इॅगलैड के उत्तम-से-उत्तम राजो मे एक समझा जाता है। उसने इॅगलैड को चार प्रांतो मे विभक्त किया—

(१) नार्थंब्रिया (२) मर्सिया

(३) ईस्ट-ऐंग्लिया (४) वेसेक्स

उसने अपनी मृत्यु के पूर्व भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को उपरि-लिखित चारों प्रांतों का अधिपति नियत किया। वेसेक्स के शासक 'गॉडविन' (Godwin) पर उसकी विशेष कृपा थी। नूट ने गॉडविन का विवाह एक राजवंशी डेन-कन्या के साथ किया। १०३५ में नूट की मृत्यु हो गई और उसके दो पुत्रों में से किसे राज्य मिले, इस पर विवाद प्रारंभ हुआ।

(ख) हेरल्ड तथा हार्डाकेन्यूट (१०३५-१०४२)

नूट का पुत्र 'हार्डीकेन्यूट' (Hardicanute) एमा से उत्पन्न हुआ था। गॉडविन उसी को इँगलैंड का राजा बनाना चाहता था। परंतु हार्डीकेन्यूट के डेन्मार्क में होने से हेरल्ड अपने भाई के प्रतिनिधि की तरह इँगलैंड का शासक नियत किया गया। १०३७ में, हार्डीकेन्यूट के देश में सर्वथा ही अनुपस्थित रहने से, हेरल्ड ही राजा चुन लिया गया। हेरल्ड ने राज्य प्राप्त करते ही एमा को देश से बाहर निकाल दिया। परंतु उसके लिये इसका फल बहुत ही बुरा हुआ। हार्डीकेन्यूट ने अपनी माता का अपमान सुनकर इँगलैंड पर आक्रमण करने का इरादा किया। आंग्ल-जनता ने यह सुनते ही उसे ही अपना राजा चुन लिया। उसने अपने भाई के शव के साथ निंदनीय व्यवहार और हेरल्ड के पक्षपातियों

पर अत्याचार किया। दैवी घटना से १०४२ मे अचानक उसकी मृत्यु हो गई। एमा तथा गॉडविन ने एथेल्रेड के पुत्र धर्मात्मा एडवर्ड (Edward the Confessor) को, १०४२ मे, राजा बनाया। एडवर्ड के राज्याभिषेक की खबर सुनकर आंग्ल-प्रजा को अपार प्रसन्नता हुई, क्योकि कुछ समय के विप्लव के बाद पुन एल्फ्रेड के वंशज को ही इॅगलैड का राज्य मिल रहा था। आंग्ल-प्रजा एल्फ्रेड के वंशजो को ही अपना राजा बनाना चाहती थी।

चतुर्थ परिच्छेद

एडवर्ड और हेरल्ड का राज्य और इँगलैंड पर नार्मन लोगों का आक्रमण

(१) धर्मात्मा एडवर्ड (१०४२-१०६६)

एडवर्ड ३५ वर्ष की आयु में इँगलैंड का राजा बना। संपूर्ण आयु विदेश में व्यतीत होने के कारण इस पर आंग्ल-जाति का कुछ भी चिह्न न था। एडवर्ड भाषा, रुचि, संगति तथा स्वभाव आदि में पूर्णतया विदेशी था। प्रेमी, साधु-स्वभाव तथा पवित्राचारी होने के कारण आंग्ल-प्रजा इसे धर्मात्मा एडवर्ड के नाम से पुकारने लगी। अल्प-शक्ति होने के कारण इसकी सपूर्ण राज्य-शक्ति भिन्न-भिन्न अर्लों के ही हाथ में चली गई। गॉडविन ने एडवर्ड को राज्य दिलाया था, अत वह एडवर्ड का विशेष कृपा-पात्र था। एडवर्ड ने गॉडविन की पुत्री एडिथ (Edith) के साथ विवाह किया।

राज्य-कार्य में गॉडविन के मुख्य सहायक प्रायः उसके दोनों पुत्र हेरल्ड (Harold) तथा टॉस्टिग (Tostig) ही थे। धीरे-धीरे एडवर्ड का जी गॉडविन से फिरता गया। उसने मुख्य-मुख्य स्थानों पर क्रमश नार्मनों को नियत करना

आरंभ किया *। आंग्लो की अपेक्षा नार्मनो की सभ्यता उच्च थी। एडवर्ड के समय मे नार्मडी का राजा विलियम था। एडवर्ड विलियम पर बहुत विश्वास रखता था।

गॉडविन ने बहुत-सी सेना एकत्र करके एडवर्ड के नार्मन दर्बारियो को देश से निकालना चाहा, परंतु कृतकार्य न हो सका। इसका परिणाम यह हुआ कि उसे स्वयं ही इँगलैड से निकलना पड़ा। इसी बीच मे नार्मडी का राजा विलियम इँगलैड आया। एडवर्ड ने उसका बहुत स्वागत किया और किवदंती है कि उसने विलियम को यह वचन भी दिया कि मेरे मरने के बाद इँगलैड का राजा तू ही बनेगा।

१०५२ मे गॉडविन तथा हेरल्ड ने इँगलैड पर आक्रमण किया। एडवर्ड उनका आक्रमण रोकने में सर्वथा असमर्थ था। अतः उसने उनसे संधि कर ली और उनके राज्य उन्हें सौप दिए। गॉडविन ने राज्य में शक्ति प्राप्त करते ही देश से संपूर्ण विदेशियो को निकाल दिया। कुछ ही समय बाद गॉडविन मर गया और उसके स्थान पर हेरल्ड वेसेक्स का अर्ल बना। हेरल्ड वीर तथा नीति-निपुण था। धीरे-धीरे

* जो डेन फ्रास मे जा बसे थे, वे नार्थमेन या नार्मन कहलाते थे और जिस प्रांत पर उनका अधिकार हो गया था, वह नार्मडी कहलाने लगा था।

इसने अपने भाइयों को दो भिन्न-भिन्न प्रांतों का अर्ल बना दिया। १०६४ मे हेरल्ड ने वेल्स को जीता और उसका शासन भी अपने ही हाथ मे ले लिया।

हेरल्ड का भाई टॉस्टिग शासन के अयोग्य था। नार्थब्रियावालो ने उसको अर्ल-पद से पृथक् करके मॉरकार (Morcai) को अपना अर्ल चुना। इस घटना से हेरल्ड की शक्ति को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। इन्हीं दिनो एडवर्ड ने वेस्ट-मिन्स्टर (Westminster) का प्रसिद्ध विहार बनाया। स्वास्थ्य के ठीक न होने के कारण १०६६ की ५ जनवरी को एडवर्ड का स्वर्ग-वास हो गया और हेरल्ड इँगलैंड का राजा चुना गया। राजा बनने के पूर्व ही हेरल्ड जहाज़ के टूट जाने से नार्मंडी मे विलियम के हाथ मे पड़कर कैद हो गया था। विलियम ने हेरल्ड से वचन ले लिया था कि वह उसे ही इँगलैंड का राजा बनाएगा। एडवर्ड की मृत्यु होने पर हेरल्ड के विलियम के स्थान पर स्वयं ही राजा बनने से जो घटनाएँ घटित हुई, उनका उल्लेख आगे किया जाता है।

(७) हेरल्ड का शासन (१०६६ की ५ जनवरी से १४ ऑक्टोबर तक)

एडवर्ड की मृत्यु होने पर एडमंड आयरनसाइड के पोते एड्गर दि एथ्लिंग (Edgar the Atheling) का आंग्ल-

राज्य पर वास्तविक अधिकार था। परन्तु हेरल्ड को शक्ति मे अधिक देखकर उसी को इँगलैंड का राजा बना दिया गया। हेरल्ड के भाइयो को उसकी वृद्धि असह्य हुई। नार्मंडी के राजा विलियम ने भी हेरल्ड को उसके असत्याचरण के लिये धमकी दी, क्योकि पहले वह विलियम को आंग्ल-राजा बनाने का वचन दे चुका था, किंतु अंत को वह स्वय राजा बन गया।

इन्ही दिनो नार्वे के राजा 'हेरल्ड हार्ड्रेडा' (Harold Hardrada) की सहायता से टॉस्टिग ने बलपूर्वक नार्थाब्रिया का राज्य प्राप्त करने का यत्न किया। इन दोनो ने मॉरकार तथा उसके भाई एडविन को फुलफोर्ड पर हराया। इस समाचार को सुनकर हेरल्ड ने सेना-सहित यार्क की ओर प्रस्थान किया और स्टैफोर्ड-ब्रिज (Stamford Bridge) पर दोनो ही को परास्त कर दिया। टॉस्टिग तथा हार्ड्रेडा युद्ध मे मारे गए। विजय के तीन दिन बाद ही हेरल्ड को सूचना मिली कि नार्मंडी के विलियम ने पिवेंसी (Pevensey) पर अपने जहाजो से उतरकर इँगलैंड पर आक्रमण कर दिया है। हेरल्ड ने विना किसी प्रकार की विशेष तैयारी के विलियम से युद्ध करने के लिये शीघ्र ही प्रस्थान किया। हेरल्ड हेस्टिंग्ज़ के प्रसिद्ध युद्ध मे १४ ऑक्टोबर को मारा गया और

इँगलैंड पर विलियम का आधिपत्य हो गया। वेस्ट-मिस्टर के विहार मे, २५ दिसबर, १०६६ को, आंग्ल-प्रजा ने विलियम का राज्याभिषेक किया और उसके इँगलैंड के राजा होने की घोषणा कर दी।

(३) नार्मन-विजय (Norman Conquest)
से पूर्व आंग्ल-सभ्यता

१—सामाजिक अवस्था

नार्मन-विजय से पूर्व इँगलैंड योरपियन महाद्वीप से सर्वथा पृथक था। विदेशी व्यापार तो दूर रहा, स्वदेशी व्यापार की सत्ता भी बहुत ही कम थी। जनता विशेषतः खेती करती थी। जन-संख्या २० लाख से अधिक न थी।

समृद्धि तथा वैभव की दृष्टि से आंग्ल-जनता तीन भागो मे विभक्त थी। बड़े-बड़े ताल्लुकेदारो को थेन (Thane), मध्यम भूमि-पतियो तथा स्वतंत्र पुरुषो को चर्ल (Churl) और दासो को थ्यू (Theow) नाम से पुकारा जाता था। व्यापार तथा व्यवसाय के न होने से नगरो की संख्या बहुत ही कम थी। इसमे कुछ भी संदेह नहीं कि डेनो के आगमन से स्थान-स्थान पर आंग्ल-नगरो की नीव पड़ गई थी। कुछ नगरो का व्यापार-व्यवसाय के कारण और कुछ नगरो का छावनी के कारण समुत्थान हो गया था। रोमन-सड़को के

किनारे भी बहुत-से छोटे-छोटे नगर बन गए थे। दृष्टांत के तौर पर लदन, चेस्टर, यार्क तथा लिंकन आदि नगरों का समुत्थान रोमन-सड़क से ही हुआ है।

ताल्लुकेदारों तक के गृह लकड़ी ही के थे, क्योंकि आंग्ल-जनता को पत्थर के मकान बनाने का ज्ञान न था। भोजन पकाने में किसी प्रकार की विशेष चतुरता न थी। अमीर-गरीब का भोजन एक ही-सा अस्वादिष्ट होता था। ताल्लुकेदार लोग विदेशी रेशमी तथा सूती वस्त्रों का इस्तेमाल करते थे। उन्हें चाँदी के बर्तन रखने का बहुत शौक था। एडवर्ड का वेस्ट-मिस्टर का विहार बनवाना आंग्लों के लिये अतिशय लाभप्रद सिद्ध हुआ। इससे आंग्लों ने नार्मनों से कुछ-कुछ गृह-निर्माण की कला सीख ली।

एल्फ्रेड ने आंग्ल-साहित्य की उन्नति में जो प्रयास किया, वह भी भुलाया नहीं जा सकता। आंग्ल-क्रॉनिकल का लिखा जाना इसी समय से प्रारंभ हुआ था। साहित्य के प्रति जनता में यथेष्ट प्रेम था। संतों के किस्से-कहानियाँ, धार्मिक पुस्तकों के अनुवाद आदि ही मुख्य कार्य थे, जिनमें विद्वानों की लेखनी चलती थी। आंग्ल-भाषा में बहुत-से डेन-भाषा के शब्द घुस आए थे। इससे आंग्ल-भाषा की यथेष्ट समृद्धि हुई।

२—राजनीतिक अवस्था

(क) राजा

राज्य की संपूर्ण शक्ति उसी के हाथ मे थी। उसकी आय बहुत थोड़ी होती थी। नूट मे पहले तक इँगलैंड के राजो के पास स्थायी सेना न होती थी। मुख्य-मुख्य धार्मिक उत्सवो पर राज्य के बडे-बड़े भूमि-पति और पादरी एकत्र होते और राजा को राज्य-कार्य के बारे मे सलाह देते थे। इस धर्म-सभा का प्राचीन नाम विटनेजिमट था। यही सभा एक राजा की मृत्यु पर दूसरा राजा चुनती थी। नवीन-नवीन नियमो का निर्माण करना भी इसी के हाथ मे था।

(ख) शासन-विभाग

राजा का मुख्य अधिकारी एल्डर्मैन होता था। नूट के राज्य-काल के बाद एल्डर्मैन (Ealdorman, Alderman or Elderman) ही 'अर्ल' के नाम से पुकारा जाने लगा। प्रत्येक मडल पर एक अर्ल का शासन होता था। अक्सर राजा एक ही अर्ल को बहुत-से मडल सुपुर्द कर देता था। ऐसी दशा मे उस अर्ल को प्रत्येक मंडल के शासन के लिये शेरिफ (Shire-reeve or Sheriff) नियत करना पड़ता था। नार्मन-काल से यही शेरिफ मंडल का मुख्य शासक

रह जायगा और अर्ल मुख्य सेनापति का रूप धारण कर लेगे ।

जनता प्रति दस पुरुषो मे विभक्त थी । प्रत्येक प्रकार के व्यक्तिगत अपराध के वे दस पुरुष उत्तरदायी होते थे । यह होते हुए भी इँगलैड मे चोर-डाकुओ की कुछ कमी न थी। प्रत्येक जंगल तथा दलदल मे ये लोग बहुसख्या मे छिपे रहते थे ।

(ग) नियम तथा न्याय-विभाग

प्राचीन काल मे, इँगलैड मे, राज्य-नियमो की सख्या बहुत कम थी । एल्फ्रेड-जैसे स्मृतिकार भी नियम-संग्रह के सिवा कोई विशेष नियम नही बनाते थे । प्रत्येक अपराध के लिये जुर्माना नियत था। घातक को मृत पुरुष के परिवार को जुर्माने मे रुपया (Blood Money) देना पड़ता था । संपूर्ण आंग्ल-प्रदेश भिन्न-भिन्न मडलो(जिलो या शायरो)मे और प्रत्येक मंडल सौ-सौ भागो मे विभक्त था। डेनिश जिलो मे ऐसे प्रत्येक भाग को 'वेपंटेकस' के नाम से पुकारा जाता था ।

मंडल तथा वेपंटेकस के पृथक्-पृथक् न्यायालय होते थे । न्यायालयो मे चार बड़े-बड़े पुरुषो का उपस्थित होना आवश्यक होता था । स्वेच्छानुसार अन्य भूमि-पति आदि भी न्यायालय मे उपस्थित हो सकते थे। वेपंटेकस के न्यायालयो

की अपीले मंडल के न्यायालय सुनते थे । अपराधो का निर्णय साक्षी तथा दैवी विधि (Ordeal) से किया जाता था । साक्षी-विधि (Compurgation) मे साक्षियो के शपथ खाने पर अपराधी अपराध से मुक्त हो जाता था । दैवी विधि मे जलती आग, गरम लोहे आदि से अपराधी को दग्ध करने का यत्न किया जाता था । जो दग्ध होने से बच जाता था, वह निरपराध समझा जाता था ।

इन दोनो विधियो के अतिरिक्त अक्सर द्वंद्व-युद्ध (Duel) द्वारा भी अपराधी का निर्णय किया जाता था । युद्ध मे जो विजयी होता था, वही निरपराध समझा जाता था ।

(घ) चर्च (Church)

आंग्ल-शासन-पद्धति मे चर्च की शक्ति यथेष्ट अधिक थी । पादरियो (The clergy) के बहुत योग्य तथा विद्वान् होने के कारण चर्च की स्थिति राज्य से अत्यंत उच्च थी । डंस्टन पादरी था और राज्य-कार्य भी चलाता था । आगे ११वी सदी मे प्राय: पादरी ही देश के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ होगे । विटनेजिमट मे राजा को बहुत-सी सलाहे पादरी लोग ही देते थे । प्रत्येक आर्च-बिशप पोप से 'पैलियम' लेने के लिये रोम जाता था । इससे इँगलैड चर्च द्वारा विदेशी राष्ट्रो से भी कुछ-कुछ संबद्ध था ।

एडवर्ड और हेरल्ड का राज्य
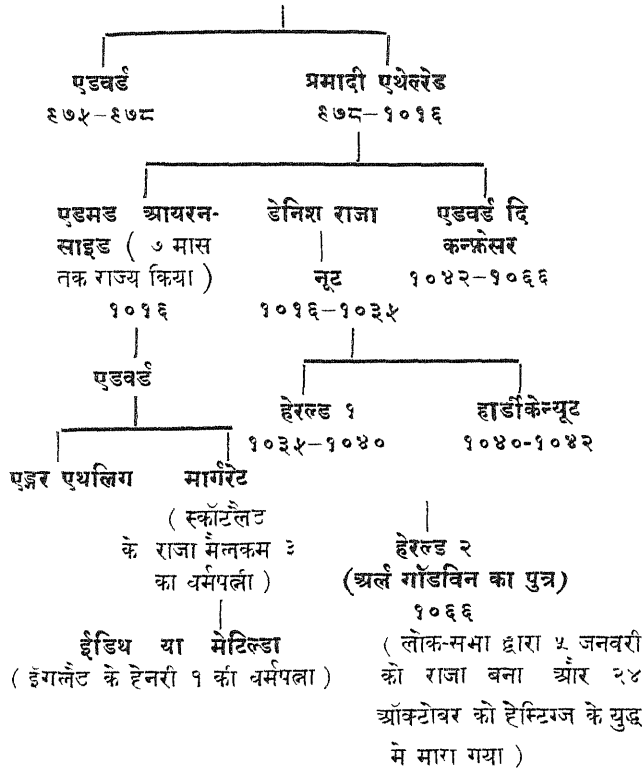
द्वितीय अध्याय

नार्मन और एंजविन (Angevin) राजा

प्रथम परिच्छेद

विजयी विलियम प्रथम (१०६६-१०८७)

(१) नार्मडी तथा नार्मन लोग

रॉल्फ (Rolf) नाम के नेता के आधिपत्य मे डेनिश-जाति ने सीन-नदी के मुहाने के आसपास के प्रदेशो को जीता। फ्रांसीसी डेनिश-जाति को नार्थमैन या नार्मन कहते थे। चार्ल्स दि सिंपिल (फ्रेंच-राजा) ने एक संधि के द्वारा सीन के पार्श्ववर्ती प्रदेशो पर नार्मनो का मांडलिक राज्य मान लिया। गुथरम के समान राल्फ भी ईसाई बन गया। फ्रेंच-राजा ने अपनी कन्या के साथ उसका विवाह कर दिया। राल्फ की मृत्यु के बाद विलियम लांग्स्वर्ड (William Longsword) नार्मडी का ड्यूक बना। यह मूर्ति-पूजक था। अतः नार्मन लोग चिर-काल तक ईसाई-मत के अनुयायी नही हुए। विलियम की मृत्यु होने पर उसके पुत्र निर्भय रिचर्ड (Richard the Fearless) ने नार्मडी का राज्य प्राप्त किया। इसके समय मे नार्मन लोग

कट्टर ईसाई बन गए। प्रत्येक स्थान पर बड़े-बड़े विहार बनाए जाने लगे। वीर हरलोइन (Herlonin) ने वक-नामक पार्वतीय नद के तट पर 'वक' का प्रसिद्ध विहार बनाया। लंबार्ड-निवासी विद्वान् लैंफ्रैंक (Lanfranc) वक का संचालक तथा महंत नियत किया गया। उसकी विद्वत्ता के कारण, कुछ ही वर्षों में, वक एक प्रसिद्ध शिक्षणालय बन गया। लैंफ्रैंक के नीचे एन्सेल्म (Anselm)-नामक एक अन्य इटैलियन धर्मात्मा विद्वान था। वही लैंफ्रैंक का उत्तराधिकारी नियत किया गया। योरप में दर्शन-शास्त्र का उदय इसी से माना जाता है। यही प्रथम व्यक्ति था, जिसने योरप में तर्क द्वारा ईश्वर को सिद्ध किया।

१—विलियम विजेता (William the Conqueror)
(१०६६-१०८७)

नार्मंडी के ड्यूक रॉबर्ट की मृत्यु के अनंतर विलियम को अल्पायु में ही राज्य-भार सँभालना पड़ा। उसे अल्प-वय देखकर उद्दंड नार्मनों ने समझा कि अब स्वतंत्रता के लिये हमें स्वर्ण-सुयोग मिल गया। परंतु विलियम की वीरता तथा नीति-निपुणता ने उन उपद्रवियों की एक न चलने दी। नार्मन उसे देखकर ही भयभीत होने लगे। आंग्ल-क्रॉनिकल में लिखा है कि "विलियम की भयंकरता का अनुमान इसी से लगाया जा

सकता है कि किसी भी दरबारी में उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य करने का साहस न था।"

नार्मंडी की वृद्धि से ऑजो (Anjou)-प्रदेशियों को भय हुआ। उन्होंने बहुत बुद्धिमत्ता के साथ फ्रांस के राजा को नार्मंडी के विरुद्ध कर दिया। फ्रांस के राजा ने नार्मंडी-विजय के लिये एक प्रबल सेना भेजी, परंतु विलियम ने मार्ग में ही उसे तहस-नहस कर दिया। आश्चर्य की बात है कि फ्रांस के राजा ने कई बार बड़ी-बड़ी सेनाएँ नार्मंडी जीतने के लिये भेजीं, परंतु विलियम के आगे किसी की दाल नहीं गली। विलियम ने ब्रिटनी (Brettany) को अपने अधीन किया और अंजो-प्रांत-वासियों की शरारतों से अपने को सुरक्षित रक्खा।

२—विलियम तथा नार्मंडी

विलियम ने नार्मंडी में व्यापार-व्यवसाय की वृद्धि का बहुत प्रयत्न किया। नार्मन बैरन (Norman Barons) विलियम के इस उच्च कार्य के विरुद्ध थे। वे लोग विलियम की विजयों को देख-देखकर भयभीत थे, अतः उसे कुछ हानि पहुँचाने में सर्वथा असमर्थ थे। पादरियों का आचार सुधारने में विजयी विलियम ने जो कष्ट उठाए, वे स्मरणीय हैं। विलियम ने फ्लैंडर्स (Flanders) की राजपुत्री मेटिल्डा (Matilda) से विवाह किया। इस कारण पोप उससे रुष्ट हो गया। बक के संचालक लैंफ्रैंक ने पोप का पक्ष

लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि विजयी विलियम ने क्रुद्ध होकर लैफ़ैक से नार्मडी छोड चले जाने के लिये कहा। लैफ़ैक लॅगड़ी घोड़ी पर चढकर धीरे-धीरे इटली की ओर रवाना हुआ। विजयी विलियम ने क्रुद्ध होकर उससे कहा कि शीघ्र ही नार्मडी से चले जाओ। लैफ़ैक ने उत्तर दिया—"मुझे एक उत्तम घोडा दे दो, मै शीघ्र ही चला जाऊँ।" इस उत्तर पर और लॅगड़े टट्टू को देखकर विलियम को हॅसी आ गई और उसने लैफ़ैक को अपना मंत्री बना लिया। इन्ही दिनो मे एमा (Emma) से एथेल्रेड ने विवाह किया और विजयी विलियम के हृदय मे आंग्लराज्य-विजय की आशा उत्पन्न हुई। एडवर्ड के आग्ल-राज्यासन पर बैठते ही विलियम ने उसका उत्तराधिकारी बनने के लिये जो प्रयत्न किए, उनका उल्लेख किया ही जा चुका है।

(२) इॅगलेड तथा विजयी विलियम

राज्याभिषेक के अनंतर कई साल तक विलियम इँगलैंड मे शातिपूर्वक राज्य करता रहा। विलियम के साथ युद्ध करने मे जिन आग्लो ने हेरल्ड का साथ दिया था, उनकी भूमियॉ छीन ली गई। यह सब होते हुए भी विजयी विलियम ने आंग्ल नियमो के अनुसार ही शासन करने का प्रण किया।

विलियम प्रकृति का स्वेच्छाचारी था। वचन देकर भी उसने

आंग्ल-नियम तोड़े और जनता पर मनमाना शासन किया। १०६७ में उसे नार्मंडी जाना पड़ा। तब उसने अपने स्थान पर बिशप ओडो को आंग्ल-शासन के लिये नियत किया। ओडो ने आंग्लों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया और उनकी जमीनें छीनने तथा उन पर दुर्ग बनाने के लिये नार्मनों को प्रोत्साहित किया। टेम्स-नदी के उत्तरी प्रदेशों ने विलियम की अधीनता स्वयं ही स्वीकार कर ली थी। ओडो के स्वेच्छाचार तथा अत्याचार से पीड़ित होकर उन्होंने विद्रोह करना शुरू कर दिया।

१—विद्रोह

ओडो के अत्याचार से सपूर्ण उत्तरी इँगलैंड में विद्रोह हो गया। अतः उसे शांत करने के लिये विजयी विलियम नार्मंडी से शीघ्र ही इँगलैंड आ गया। १०७१ तक उसे किसी भी प्रकार शांति न मिली। स्थान-स्थान पर विद्रोह होते ही रहे। यदि आंग्ल परस्पर मिलकर प्रयत्न करते, तो इन विद्रोहों को शांत करना उसके लिये असंभव हो जाता। ऐक्याभाव के कारण कोई भी विद्रोह सफल न हुआ और विलियम के स्वेच्छाचार ने पूर्ण रूप धारण किया। जिन-जिन ज़मीनों को विजयी विलियम क्रमशः जीतता था, उन पर दुर्ग बनाता और उनमें नार्मन सेना रखता

जाता था। यह इसीलिये कि आग्ल पुन॰ विद्रोह न कर सके—

(१) १०६८ मे वेसेक्स के लोगो ने विद्रोह किया और हेरल्ड के पुत्रो को अपने शासन के लिये बुला लिया। विलियम ने एक्सटर (Exeter) नगर सहसा हस्तगत कर लिया और वेसेक्स का विद्रोह दमन किया। एडविन तथा मॉरकार ने भी कई बार विद्रोह किया, परंतु पारस्परिक असघटन के कारण कभी कृतकार्य न हो सके।

(२) स्कॉटलैंड के राजा मेल्कम केनमोर (Malcolm Canmore) की सहायता की आशा से एड्गर एथलिंग ने नार्मनो के विरुद्ध विद्रोह किया, परंतु सहायता न पाकर विलियम से पराजित हुआ। विलियम ने दया करके उसे उसका राज्य सौप दिया।

(३) १०७१ मे हर्वर्ड(Hereward) के नेतृत्व मे आग्लो ने पुन. विद्रोह किया। इस विद्रोह मे एडविन तथा मॉरकार पुन सम्मिलित हो गए। विजयी विलियम ने इस सम्मिलित प्रयत्न को भी निष्फल कर दिया और मॉरकार तथा हर्वर्ड को क्षमा-प्रदान किया। एडविन इसी विद्रोह मे मारा गया। अंत काल तक हर्वर्ड विलियम का विश्वास-पात्र बना रहा।

(४) १०७५ मे रॉजर (Roger) तथा रॉल्फ (Rolf)

ने विलियम के विरुद्ध षड्यंत्र रचा और साथ ही उन्होंने इस षड्यंत्र में वल्थियाफ (Waltheof) नाम के आंग्ल-अर्ल को भी सम्मिलित करने का यत्न किया। षड्यंत्र का मुख्य उद्देश्य विलियम को तख्त से उतारकर इँगलैंड को परस्पर तीन भागों में बाँट लेना था। वल्थियाफ की स्त्री विजेता की भतीजी जूडिथ थी। जूडिथ को इस षड्यंत्र का पता लग गया। उसने संपूर्ण घटना से विजेता विलियम को सूचित कर दिया। विलिमय ने रॉजर को जन्म-भर के लिये बंदी-घर में डाल दिया और वल्थियाफ को मृत्यु-दंड दिया। रॉल्फ योरप भाग गया था, अतः विलियम के हाथ न लगा।

(५) नार्मन बैरन स्वेच्छाचारी थे, इस कारण उनको विलियम का आधिपत्य पसंद न था। १०७७ में विलियम के बड़े पुत्र रॉबर्ट ने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया। रॉबर्ट को इँगलैंड तथा नार्मंडी के नार्मन बैरनों ने यथेष्ट सहायता पहुँचाई। विलियम ने बड़े परिश्रम से विद्रोह शांत किया। रॉबर्ट को क्षमा-प्रदान करके विलियम ने नार्मनों पर से अपना विश्वास हटा लिया और आंग्लों पर विश्वास करना प्रारंभ किया।

विजेता को विजय स्थापित करने में जिन-जिन विद्रोहों का दमन करना पड़ा, उनका उल्लेख किया जा चुका। अब इस विषय पर प्रकाश डालने का यत्न किया जायगा कि उसने

इँगलैंड में किस प्रकार राज्य का प्रबंध किया और आंग्ल-सभ्यता बढ़ाने के लिये किन-किन साधनों का आश्रय लिया।

२—राज्य-प्रबंध

विजयी विलियम ने योरप की तरह इँगलैंड में भी फ्यूडेलिज्म (Feudalism) नाम का भूमि-प्रबंध प्रचलित कर दिया। फ्यूडेलिज्म के अनुसार संपूर्ण आंग्ल-भूमि पर विलियम का आधिपत्य तथा स्वामित्व स्थापित हो गया। प्रत्येक भूमि-पति उसका वैसल (Vassal) या सामंत हो गया। राजा से भूमियाँ लेते समय भूमि-पतियों (Barons) को शपथ (Oath of allegiance) लेनी पड़ती थी कि 'हे राजन, मैं तुम्हारा सदा साथ दूँगा और कभी विश्वासघात न करूँगा।' इस शपथ के साथ उन्हें यह प्रण करना पड़ता था कि युद्ध के समय हम इतने सैनिक तथा इतना सामान देंगे। बड़े-बड़े भूमि-पति जब अपनी भूमि कृषकों को देते थे, तो वे भी उनसे वैसी ही शपथें तथा वचन लेते थे। विलियम के राज्य-काल के अंत में नार्मन ही इँगलैंड में बैरन के पद पर थे। आंग्ल-जनता तो उनके अधीन हो ही चुकी थी।

बैरनों के विश्वासघातों से क्रुद्ध होकर विजेता ने अपने अंतिम दिनों में क्रमशः आंग्लों को अपना विश्वास-पात्र

बनाना प्रारंभ कर दिया । यही कारण है कि हर्वर्ड क्रमश बढ़ता ही चला गया और अंत को एक प्रबल सेनापति बन गया । विलियम ने आग्लो पर अधिक कर लगाए और अधिक-से-अधिक रुपया प्राप्त करने का यत्न किया। आग्ल-क्रॉनिकल का कथन है कि "राजा तथा उसके दरबारी चॉदी और सोने के बड़े लोभी है । उन्हे धन जमा करने की हर समय चिता रहती है। राजा धन जमा करने का ओहदा उसी को दे देता है, जो उसे अधिक-से-अधिक धन बटोर देने का वचन दे।" साथ ही क्रॉनिकल का यह भी कथन है कि "विलियम कठोर तथा तेजस्वी था। उसकी इच्छा के विरुद्ध चलने का किसी भी मनुष्य को साहस न था। देश मे उसने जो नियम तथा शाति स्थापित की, वह कभी भुलाई नही जा सकती। वह वास्तव मे बड़ा बुद्धिमान् तथा महापुरुष था।"

विजयी विलियम ने सन् १०८६ मे, साल्सबरी-मैदान मे, एक बड़ा दरबार किया और उसमे सपूर्ण छोटे तथा बड़े भूमिपतियो से राजभक्ति का प्रण लिया । उसने बड़े-बड़े भूमिपतियो को दूर-दूर के मंडलो का शासन-कार्य दिया और साथ ही इस बात का विशेष ध्यान रक्खा कि किसी बैरन के स्वामित्व मे बहुत-से समीपस्थ तथा संघटित मंडल न आ जायँ,

जिसमे उसकी शक्ति अपरिमित बढ़ जाय। देश को विदेशियो के आक्रमणो से सुरक्षित रखने के लिये उसने सीमा-प्रांत के लॉर्डो को अधिक शक्ति दे दी। आग्ल-इतिहास मे ये लॉर्ड 'पैले-टाइन (Palatine) लॉर्ड' के नाम से प्रसिद्ध है।

विलियम को शिकार का बहुत शौक था। इसके लिये उसने भिन्न-भिन्न प्रांतो मे बहुत-से सरकारी बंद जंगल बनवाए। इनसे आंग्ल-जनता को कई सदियो तक बहुत कष्ट उठाना पड़ा, क्योकि जंगलात के नियम बहुत कठोर थे। यदि कोई किसान किसी सरकारी जगल के पशु को मार डालता था, तो उसे प्राण-दंड तक दे दिया जाता था, उसे अंग-हीन बना देना तो राजा के लिये साधारण-सी बात थी।

सन् १०८६ मे इँगलैंड की संपत्ति का पता लगाने के लिये विलियम ने एक 'गणना-विभाग' स्थापित किया। गणना-विभाग के राज-कर्मचारियो ने प्रत्येक प्रांत मे निम्न-लिखित बातो की जाँच की—

(क) प्रत्येक मंडल मे कितनी भूमि है ?

(ख) प्रत्येक मंडल मे राजा की कौन-कौन-सी भूमि है ?

(ग) प्रत्येक मडल मे कितने पशु है ?

(घ) राजा को कितना कर लेना चाहिए ?

अन्वेषण या गणना-विभाग ने अपना कार्य बहुत अच्छी

एंजविन राज्य
उत्तर सागर
बिस्के की
खाड़ी
स्पेन
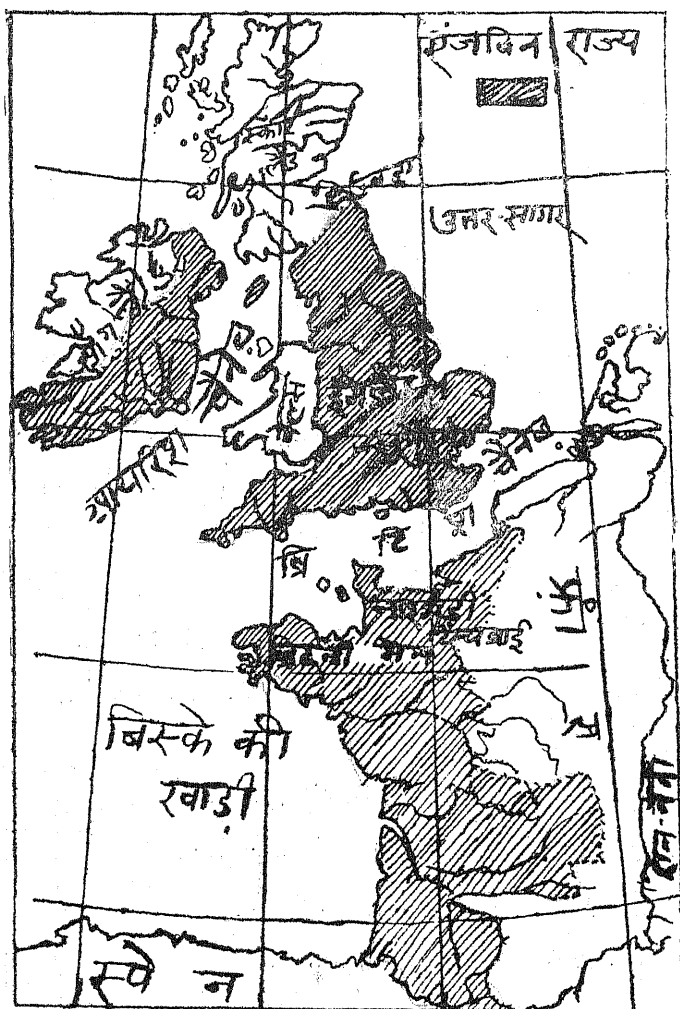
तरह किया। गणना हो जाने पर आंग्लो पर बहुत अधिक कर हो गए। यही कारण है कि चिरकाल तक 'गणना-पुस्तक' को आग्ल-जनता घृणा की दृष्टि से देखती रही। जो हो, आग्ल-इतिहास-निर्माण मे गणना-पुस्तक ने जो सहायता पहुँचाई है, वह कभी भुलाई नही जा सकती। इस पुस्तक को अँगरेज़ी मे Domesday Book कहते है।

३—राज्य तथा चर्च

विजयी विलियम के आगमन से इँगलैड मे राज्य के सदृश ही धर्म मे भी क्रांति आ गई। पोप के प्रेम-पात्र तथा भक्त होने के कारण विलियम ने आंग्ल-चर्च का भी योरोपियन चर्च की ही तरह संगठन कर दिया। इससे आग्ल-चर्च पर भी पोप की प्रधानता स्थापित हो गई। विजेता ने लैफ्रैक को कैटर्बरी का आर्च-बिशप नियत किया। आर्च-बिशप तथा विलियम ने मिलकर सपूर्ण आग्ल-विहारो तथा मठो पर नार्मनो का ही प्रभुत्व जमा दिया। नार्मन पादरी नगरो मे रहने के अभ्यस्त थे, अत. उन्होने अपने-अपने मठो तथा विहारो के समीपस्थ नगरो मे रहना प्रारंभ कर दिया। नार्मनो के इँगलैड आने से आग्लो ने भी योरप के सदृश सभ्यता तथा शिक्षा मे उन्नति करना शुरू किया।

बर्गडी के एक विहार के भिक्षुओ (Monks) ने 'चर्च-राज्य'

का सिद्धांत आविष्कृत किया। रोम का पोप ग्रेगरी सप्तम (Gregory VII) उन सिद्धांतो का अनन्य भक्त था और योरप मे उन सिद्धांतो का बहुत शीघ्र प्रचार करना चाहता था। विषय को स्पष्ट करने के लिये चर्च-राज्य के सिद्धात यहाँ लिखे जाते है—

(क) चर्च के कार्यो मे राष्ट्र का कुछ भी हाथ न हो।

(ख) चर्च स्वयं ही अपना शासन तथा न्याय करे।

(ग) चर्च ही चर्च-संबंधी नियमो का निर्माण करे। राष्ट्र इसमे कुछ भी हस्तक्षेप न करे।

(घ) भिक्षुओ की तरह पादरी लोग (Clergy) भी विवाह न करे।

(ङ) राजा लोग पादरियो का न्याय न करे।

(च) पोप के कथन पर चलना संपूर्ण पादरियो का कर्तव्य है।

इन सिद्धांतो को राजा लोग कब मानने लगे। सम्राट् हेनरी चतुर्थ ने इनका बहुत विरोध किया। ५० वर्ष तक पोप तथा योरपियन सम्राटो मे झगड़ा चलता रहा। योरपियन इतिहास मे यह झगड़ा 'अधिकार-युद्ध' (Investiture Contest) के नाम से प्रसिद्ध है।

विलियम तथा लैंफ्रैंक पोप ग्रेगरी सप्तम के पक्ष मे थे। राष्ट्रीय

राज्य से चर्च को पृथक् करने के लिये विलियम ने बहुत-से नियम पास किए। इन नियमो के अनुसार चर्च के न्यायालय राजकीय न्यायालयो से पृथक् कर दिए गए और यह नियम बना दिया गया कि पादरियो का न्याय चर्च के ही न्यायालय करे। राजकीय न्यायालय पादरियो के मामले मे हस्तक्षेप न करे। लैफ़्रैंक ने देश मे पोप के नियम प्रचलित करने के लिये एक धर्म-सभा जोड़ी और पादरियो को विवाह करने से रोका। इसी समय से, इँगलैंड मे, राष्ट्रीय राज्य से चर्च-राज्य पृथक् हो गया और आंग्ल-प्रजा पर पोप का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

विलियम चर्च की बढ़ती हुई शक्ति से, पहले से ही, सावधान था। अत उसने अन्यान्य चर्च-संबंधी नियमो के साथ यह नियम भी जोड़ दिया कि राजा की आज्ञा के बिना कोई भी पादरी किसी भी पोप के कहने पर नही चल सकता। विलियम अपनी आज्ञा के बिना किसी भी चर्च-सभा को चर्च-संबंधी नियम नही बनाने देता था। जब ग्रेगरी सप्तम ने विलियम से रोमन-चर्च के लिये रुपया माँगा, तो उसने इस आधार पर नही दिया कि किसी भी आंग्ल-राजा ने पहले ऐसा नही किया है, फिर मै क्यो दूँ?

रॉबर्ट को, विलियम के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये,

फ्रांसीसी राजा फिलिप ने ही उत्साहित किया था, अत. १०८७ मे विलियम तथा फिलिप मे युद्ध छिड़ गया। विलियम ने नार्मंडी से आगे बढ़कर मैंटीज़ (Mantes)-नामक नगर को हथिया लिया और उसमे आग लगा दी । जलते हुए नगर को देखने के लिये वह आगे बढ़ा ही था कि उसके घोड़े ने घबराकर उसे गिरा दिया । घोड़े से गिरते ही उसे सांघातिक आघात पहुँचा और सन् १०८७ की ६ सितंबर को उसकी मृत्यु हो गई । विलियम के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार है—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१०६६	विलियम प्रथम का राज्यारोहण
१०६७-१०७१	आंग्ल-विद्रोह
१०७१	हर्वर्ड का विद्रोह
१०७४	रॉल्फ तथा रॉजर का षड्यंत्र
१०८५	गणना-पुस्तक (Domesday Book) का निर्माण
१०८७	विलियम प्रथम की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

विलियम रूफ़स (Rufus) द्वितीय (१०८७-११००)

विजेता विलियम की स्त्री मेटिल्डा के रॉबर्ट, विलियम तथा हेनरी-नामक तीन पुत्र थे। रॉबर्ट पिता के विरुद्ध विद्रोह कर चुका था और निर्बल होने के कारण आंग्ल-शासन के लिये सर्वथा अयोग्य था। विलियम ने इँगलैंड को अपने बाहु-बल से जीता था, अत वह इँगलैंड का राज्य अपने जिस पुत्र को चाहता, दे सकता था। परंतु नार्मंडी के बारे मे यह बात न थी। विलियम ने नार्मंडी अपने पूर्वजो से प्राप्त की थी। अत॰ उस पर रॉबर्ट का ही स्वत्व था।

अपनी मृत्यु से पूर्व विजेता ने अपने द्वितीय पुत्र विलियम रूफ़स को आंग्ल-प्रदेश का राजा स्वीकार किया और उसे लैंफ्रैंक के नाम पत्र देकर इँगलैंड भेजा। पत्र मे लिखा था कि 'मेरी मृत्यु के बाद इँगलैंड का राज्य विलियम रूफ़स को ही दिया जाय।'

आर्च-बिशप लैंफ्रैंक विजेता का अनन्य भक्त था। पत्र पाते ही उसने विलियम रूफ़स को इँगलैंड का राजा बना दिया। राज्य प्राप्त करते ही रूफ़स ने विजेता के बहुत-से कैदियो को कारागार से मुक्ति दी, जिनमे मॉरकार तथा ओडो भी थे।

वेस्ट-मिस्टर ऐबे मे (२८ सितंबर, १०८७ को) विलियम रूफस का राज्याभिषेक हुआ और किसी भी आंग्ल ने इस विषय मे कुछ विरोध का भाव प्रकट नहीं किया। रूफस आंग्ल-इतिहास मे विलियम द्वितीय के नाम से पुकारा जाता है। यह शरीर से हृष्ट-पुष्ट था। रक्त वर्ण होने के कारण आंग्ल-प्रजा इसे रूफस या रेड किंग(Red king) के नाम से पुकारती थी। यह दृढ़ाभिलाषी, अध-स्वार्थी तथा भयंकर स्वेच्छाचारी था। धर्म तथा दया तो जानता ही न था। न्याय तथा कर्तव्य-परायणता उसे छू भी नहीं गई थी।

(१) विद्रोह

बैरन लोग पूर्ण स्वार्थी थे। राजा का शक्तिशाली होना उन्हे बिल्कुल पसंद न था। विलियम रूफस को शक्तिशाली तथा स्वेच्छाचारी देखकर उन्होंने रॉबर्ट को शासक बनाना चाहा, क्योंकि रॉबर्ट शक्तिशाली तथा स्वेच्छाचारी न था। १०८८ मे बैरनो ने रॉबर्ट के पक्ष मे विद्रोह कर दिया। प्रमाद तथा आलस्य से रॉबर्ट ने विद्रोहियो को कुछ भी सहायता न पहुँचाई। तो भी ओडो की सहायता से विद्रोह ने भयंकर रूप धारण कर लिया।

इस विपत्ति से भयभीत होकर रूफस ने आंग्लो का सहारा लिया और उन्हे वचन दिया कि वह उन पर अनुचित कर नहीं

लगावेगा और जगलात के नियमों की कठोरता को भी कम कर देगा। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत-से आंग्ल रूफस के चारों ओर जमा हो गए। आंग्लों से सहायता प्राप्त करके उसने बिशप ओडो को रॉचेस्टर के किले मे घेर लिया। बहुत समय के घेरे के बाद किला फतह हुआ और बिशप ओडो को देशनिकाले का दंड दिया गया। कुछ वर्ष राज्य मे शांति रही। अंत मे सन् १०९५ मे नार्दबरलैंड के अर्ल माउब्रे (Mowbray) ने राजा के विरुद्ध शस्त्र उठाने का साहस किया। राजा के ससैन्य आने पर माउब्रे बांबर्ग (Bomburgh) नाम के किले मे जा घुसा।

इस दुर्ग को सर करना राजा के लिये असंभव था। यह समझकर रूफस ने उसके समीप ही एक और दुर्ग बनाया और उसमे अपनी सेना रखकर पीछे लौट गया। जब माउब्रे ने दुर्ग से निकल भागने का साहस किया, तो कैद होकर राजा के आगे उपस्थित किया गया। राजा ने उसे जन्म-भर के लिये बंदीगृह मे डाल दिया और उसकी सब रियासत जब्त कर ली।

लैंफ्रैंक के जीवन-काल तक विलियम उद्दंड तथा पूर्ण स्वेच्छाचारी न हो सका। १०८९ मे उसकी मृत्यु होने पर विलियम ने रेनुल्फ फ्लैंबर्ड को अपना मंत्री या जस्टीशियर (Justiciar—प्रधान अधिकारी) बनाया।

(२) विलियम के अत्याचार

रेनुल्फ अति चतुर था। इसने अपनी संपूर्ण चतुरता प्रजा से रुपए ऐंठने मे खर्च की। जिन भिन्न-भिन्न विधियो से वह प्रजा से रुपए लेता था, वे ये है—

(क) रिलीफ—जब कोई लॉर्ड मर जाता था, तो उसके पुत्र को जायदाद प्राप्त करने के पहले राजा को बहुत-सा रुपया 'रिलीफ' के तौर पर देना पड़ता था।

(ख) एड—भिन्न-भिन्न आवश्यक अवसरो पर प्रजा से सहायतार्थ रुपया लिया जाता था, जो 'एड' (aid) के नाम से पुकारा जाता था।

(ग) गार्जियन—छोटी उमर के भूमि-पतियो से 'संरक्षण-कर' लिया जाता था, क्योकि उनका संरक्षक राजा होता था।

(घ) विवाह-कर—प्रत्येक भूमि-पति को विवाह करने से पूर्व राजा को 'विवाह-कर' देना पड़ता था।

उपरि-लिखित करो से रूफस तथा रेनुल्फ ने बैरनो की शक्ति को चनकाचूर कर दिया। रियासतो को उजाडकर और जंगलो को कटवाकर उन्होने आंग्ल-प्रजा को भी बहुत कष्ट पहुँचाया। धर्म का मज़ाक उड़ाना और मठो तथा विहारो को लूटना तो उनके लिये साधारण-सी बात थी। जब कोई पादरी मर जाता था, तो उसकी जगह वे किसी को नियत नही

करते थे और उसकी जायदाद से खूब आय प्राप्त करने का यत्न करते थे। यही दशा किसी भूमि-पति की मृत्यु होने पर उसकी ज़मीनो की भी की जाती थी।

यह विचित्र बात है कि लैफ्रैंक की मृत्यु होने पर उन्होंने किसी भी व्यक्ति को आर्च-बिशप नियत नही किया। लैफ्रैंक की जायदाद, जहाँ तक लूट सके, लूटी। १०९३ मे रूफस बहुत भयंकर रोग से ग्रस्त हुआ और उसे अपनी मृत्यु समीप दिखाई देने लगी। यह देखकर उसका धैर्य जाता रहा और उसे अपने पुराने कर्मो पर घोर पश्चात्ताप हुआ। इन दिनो वक के विहार का स्वामी एन्सेल्म था। रूफस ने एन्सेल्म को आर्च-बिशप नियत किया, परंतु उसने यह पद स्वीकार नही किया। मगर जब रूफस ने उससे वारंवार अनुरोध किया, तो उसने स्वीकार कर लिया। इसके बाद राजा अच्छा हो गया और अपना सारा पश्चात्ताप भूल गया, जिससे आर्च-बिशप से उसकी खूब खटकी।

(३) विलियम तथा चर्च

विलियम विजेता ने चर्च को शक्तिशाली कर दिया था। एन्सेल्म के आर्च-बिशप बनते ही चर्च ने और भी अधिक शक्ति प्राप्त करना प्रारंभ कर दिया। विलियम रूफस फिज़ूल-ख़र्च तथा विषयी था। उसके दुराचारो को ठीक करने के

उद्देश से आर्च-बिशप ने एक धर्म-सभा जोड़ी और भिन्न-भिन्न मठो तथा विहारो पर पादरियों को नियत करने के लिये उसे बाध्य किया। इस घटना से एन्सेल्म पर रूफस की क्रोधाग्नि भभक उठी। इन्ही दिनो योरप मे 'अधिकार-युद्ध' (Investiture Contest) शुरू हुआ। अर्बन (Urban) तथा क्लिमेंट (Clement) नाम के दो पोपो मे भयंकर कलह थी। कुछ योरपियन सम्राट् अर्बन को पोप मानते थे और कुछ क्लिमेंट को। १०९५ मे, 'राकिंघेम' नगर मे, 'किसको पोप मनाना चाहिए?' इस बात के निर्णय के लिये एक बड़ी धर्म-सभा हुई। रूफ़स ने क्रुद्ध होकर एन्सेल्म को डरा दिया कि यदि तुमने पोप का कहना माना, तो मै तुम्हे पद-च्युत कर दूँगा।

१०९५ के अनंतर आर्च-बिशप तथा राजा का संबंध दिन-पर-दिन बिगड़ता ही गया। एन्सेल्म ने रूफस को रुपए की सहायता देना बंद कर दिया और वेल्स-युद्ध मे यथेष्ट सेना भी नही भेजी। इसका परिणाम यह हुआ कि रूफस ने आर्च-बिशप के अपराध का निर्णय अपने न्यायालय मे करना चाहा, परंतु उसने यह स्वीकार नही किया और पोप के पास रोम चला गया।

पैलेस्टाइन (Palestine) मे ईसाई-यात्रियो पर तुर्क लोग

अत्याचार किया करते थे। इन अत्याचारों को दूर करने के लिये १०६५ मे अर्बन द्वितीय ने संपूर्ण योरप को तुर्कों के साथ युद्ध करने के लिये उत्तेजित किया। यह पवित्र युद्ध आंग्ल-इतिहास में 'क्रूजेड' (Crusade) नाम से पुकारा जाता है। इस प्रथम क्रूजेड मे योरपियन योद्धाओं को अपूर्व सफलता प्राप्त हुई। पैलेस्टाइन से तुर्क निकाल दिए गए और गॉडफ्रे (Godfrey) वहाँ का शासक नियत किया गया।

(४) विलियम तथा विदेशी युद्ध

संपूर्ण आंग्ल-प्रदेश का शासक होते ही विलियम ने स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया और १०६२ मे 'कंबरलैंड' को जीता। १०६३ मे स्कॉच-राजा मेल्कम केन्मोर (Malcolm Canmore) ने, बदला लेने के लिये, इँगलैंड पर आक्रमण किया, परतु अल्निवक (Alnwick) पर मारा गया।

वेल्स की विजय मे सीमा-प्रांत के लॉर्डों ने बड़ा भारी भाग लिया। रूफस के स्वेच्छाचार-पूर्ण, शक्तिशाली राज्य मे राजा बनना असंभव समझकर उन्होंने वेल्स के बहुत-से भागों को जीता और वहाँ स्वेच्छा-पूर्ण शासन करना प्रारंभ किया। इन सीमा-प्रांत के लॉर्डों मे पेंब्रोक (Pembroke), ब्रेकेन (Braken) तथा मांटगोमरी (Montgomery) के लॉर्ड अत्यंत शक्तिशाली तथा स्वेच्छाचारी थे।

विलियम का बड़ा भाई रॉबर्ट मन का दुर्बल तथा शरीर से भी शक्ति-हीन था। उसने आवश्यक धन प्राप्त करके नार्मडी के कुछ प्रदेश अपने छोटे भाई हेनरी को दे दिए। रूफस के आ-क्रमण के भय से उसे भी रॉबर्ट ने नार्मडी का कुछ भाग दे दिया। १०९५ मे क्रूजेड पर जाने की इच्छा से रॉबर्ट ने अपना सपूर्ण राज्य रूफस के हाथ बेच डाला। रूफस ने नार्मंडी प्राप्त करते ही फ्रांस की विजय का निश्चय किया और लिमैस (Le Mans) का प्रदेश हस्तगत भी कर लिया। ११०० सन् की २ अगस्त को, न्यू फॉरेस्ट मे शिकार खेलते समय, किसी ने विलियम रूफस को मार डाला। उसके राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार है—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१०८७	विलियम द्वितीय का राज्यारोहण
१०८८	बैरनो का विद्रोह
१०८९	लैफ़्रैंक की मृत्यु
१०९३	एन्सेल्म का आर्च-बिशप होना
१०९५	प्रथम क्रूजेड
१०९५	एन्सेल्म को देश-निकाला
११००	विलियम द्वितीय की मृत्यु

तृतीय परिच्छेद

हेनरी प्रथम (११००-११३५)

विलियम रूफस का छोटा भाई हेनरी था। रूफस के मरते ही वह विंचेस्टर की ओर गया और राज्य-कोष हस्तगत करके कुछ लॉर्डो द्वारा उसने अपने को इँगलैंड का राजा कहलवा दिया। ११०० की ५ अगस्त को उसका राज्याभिषेक किया गया। राज्याभिषेक के समय हेनरी ने एक स्वतंत्रता-पत्र पढ़ा, जिसके अनुसार उसने बैरनो को अधिक राज्य-कर न लेने का वचन और प्रजा को अत्याचारो से सुरक्षित रखने का भरोसा दिया। जंगलात के कठोर नियमो के विषय मे स्वतंत्रता-पत्र मे कुछ भी नहीं लिखा था।

प्रजा को प्रसन्न करने के उद्देश से उसने रेनुल्फ को लंदन-टावर (The Tower of London) मे कैद कर दिया और एन्सेल्म को फिर इँगलैंड बुला लिया। यही नहीं, उसने आंग्ल-प्रजा को प्रसन्न करने के लिये मेलकम केल्मोर की कन्या एडिथ (Edith) से, जो एल्फ्रेड-वंशी थी, विवाह कर लिया और उसका अँगरेज़ी नाम मेटिल्डा (Matilda) रक्खा।

(१) विद्रोह

हेनरी के राज्यारोहण के कुछ ही सप्ताह बाद रॉबर्ट क्रूजेड से लौटा और नार्मडी का शासन करने लगा। रेनुल्फ लंदन-टावर से भागकर रॉबर्ट के पास पहुँचा और उसने उसे इँगलैंड-विजय के लिये उत्तेजित करते हुए कहा कि नार्मन बैरन इस विजय के काम मे तुझे पूर्ण सहायता देगे। ११०१ मे रॉबर्ट ने इँगलैंड पर आक्रमण किया, परंतु कृतकार्य न हो सका। हेनरी ने कुछ रुपए पेंशन के तौर पर देना स्वीकार करके अपने भाई से पीछा छुड़ाया। रॉबर्ट की सहायता से वंचित नार्मन बैरनो पर हेनरी की क्रोधाग्नि भभक उठी। बैरनो का नेता क्रूर तथा स्वेच्छाचारी बैलीम (Belleme) का लॉर्ड रॉबर्ट था। ११०२ मे हेनरी ने उससे झगड़ा किया और उसके सब प्रदेश छीन लिए। रॉबर्ट इँगलैंड छोड़कर नार्मडी भागा। इस अत्याचारी के अधःपतन पर आंग्ल-जनता को अपार प्रसन्नता हुई।

(२) हेनरी प्रथम तथा चर्च

एन्सेल्म ने इँगलैंड लौटकर बैरनो के विरुद्ध हेनरी को पूर्ण सहायता पहुँचाई। आर्च-बिशप का हेनरी से भी सिद्धांतो के मामले मे झगड़ा उठ खड़ा हुआ। एन्सेल्म ने एक धर्म-सभा मे यह प्रण किया कि वह आयंदा राजा के हाथ से किसी प्रकार का पद नहीं लेगा। इसी कारण उसने नवीन राजा हेनरी

को कर के तौर पर कुछ भी नहीं दिया। हेनरी भी अपने सिद्धांत तथा अधिकार पर पूर्ववत् ही दृढ रहा। ११०३ में सारे झगडे के निर्णय के लिये एन्सेल्म पोप के पास रोम चला गया। ११०७ में चिट्ठियों के द्वारा कुल झगडा समाप्त हो गया और आर्च-बिशप इंगलैंड लौट आया। निर्णय के अनुसार पादरियों पर पूर्ववत् हेनरी का प्रभुत्व बना रहा. वह सब पादरियों से राज्य-कर भी ले सकता था। हेनरी ने अपने अधिकार केवल आर्च-बिशप के मामले ही में छोड़ दिए। आर्च-बिशप तथा हेनरी में जो निर्णय ४ वर्ष की चिट्ठी-पत्रियों से शांतिपूर्वक हो गया, उसी को, ५० वर्ष के लगातार युद्ध के बाद, कांकॉर्डेट ऑफ वार्म्स (Concordat of Worms) की संधि के अनुसार योरप ने स्वीकार किया।

(३) राज्य-प्रबंध

हेनरी ने, इंगलैंड में, अपने पिता के ही समान स्वेच्छा-पूर्ण शासन किया। इसने 'रॉजर' नाम के एक राजनीतिज्ञ, राज-भक्त विद्वान् को अपना जस्टीशियर नियत किया, जो बहुत-से व्यक्तियों को क्लॉर्क के तौर पर नियत करके राज्य का शासन बड़ी योग्यता से करने लगा। राजकीय न्यायालय का कार्य पहले से बढ़ा दिया गया। प्रत्येक मंडल में राजकीय न्यायालय की ओर से न्यायाधीश भेजे जाते थे, जो आंग्ल-

प्रजा की प्रार्थनाओं को सुनते और यथोचित न्याय करते थे। इससे आंग्ल-प्रजा को बहुत सुख मिला। वह हेनरी को 'न्याय-केसरी'(Lion of Justice) नाम से पुकारने लगी।

न्यायालय-सुधार के सिवा हेनरी ने राज्य-कोष का प्रबंध भी बहुत ही उत्तम विधि से किया। बहुत-से व्यक्ति कोषाध्यक्ष के नीचे नियत किए गए। वे राज्य-कर इकट्ठा करते और हिसाब-किताब करके संपूर्ण कर राज्य-कोष में जमा कर देते थे। ११२० में जहाज के टूट जाने से हेनरी का इकलौता पुत्र डूब गया। पुत्र की मृत्यु से हेनरी को जो धक्का पहुँचा, उसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसके बाद वह मृत्यु-पर्यंत कभी नहीं हँसा।

(४) हेनरी तथा विदेशी युद्ध

रॉबर्ट की अक्षमता से नार्मंडी का राज्य क्रमश उसके आधिपत्य से निकलता जाता था। हेनरी ने दो युद्धों द्वारा नार्मंडी का बहुत-सा प्रदेश जीत लिया। ११०६ के टेंचेब्राई (Tenchebrai) के प्रसिद्ध युद्ध में हेनरी ने रॉबर्ट को कैद कर लिया। इसी युद्ध में रॉबर्ट के साथी एड्गर दि एथलिंग तथा बैलीम का रॉबर्ट भी उसके हाथ आ गए, परंतु उसने दोनों को छोड़ दिया। इसके अनंतर हेनरी इँगलैंड तथा नार्मंडी का शासक हो गया।

स्कॉटलैंड के राजा के साथ हेनरी का संबंध बहुत ही अच्छा रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत-से नार्मन बैरन स्कॉटलैंड के राजा के कृपा-पात्र हो गए और बहुत-से स्कॉच-प्रदेशो के स्वामी बन गए। इससे स्कॉटलैंड मे भी नार्मन-सभ्यता बहुत शीघ्र फैल गई।

रूफस के समय मे सीमा-प्रांत के लार्डो ने जो वेल्स को जीतना शुरू किया था, वह हेनरी के समय मे बहुत कुछ पूर्ण हो गया। हेनरी ने अपने कामज पुत्र रॉबर्ट को ग्लैमरगान की रानी से व्याहकर उसे वहाँ का शासक बना दिया। रॉबर्ट एक अति प्रसिद्ध योद्धा और साहित्य तथा विद्या का प्रेमी था। उसकी आज्ञा के अनुसार मन्मथ के जिओफे (Geoffrey of Monmouth) ने ब्रिटेन का एक इतिहास (History of Britain) लिखा, जिसकी प्रसिद्धि शीघ्र ही सपूर्ण योरप मे हो गई।

रॉबर्ट के पुत्र विलियम क्लिटो ने लूइस छठे से सहायता प्राप्त करके हेनरी से नार्मडी का प्रदेश छीनना चाहा, परंतु किसी भी युद्ध मे कृतकार्य न हो सका। अंत को उसकी मृत्यु होने पर हेनरी नार्मडी के मामले मे भी निश्चित हो गया।

हेनरी के कोई पुत्र न था। अत. उसने अपनी विधवा कन्या को ही इंगलैंड तथा नार्मडी की रानी बनाना चाहा। उन दिनो स्त्रियो का रानी होना किसी को भी पसंद न था,

जैसा कि मुसलमानी भारत का हाल था। अत नार्मन बैरन हेनरी के इस प्रस्ताव के विरुद्ध थे।

एक-एक करके संपूर्ण नार्मन बैरनो से हेनरी ने अपनी कन्या को रानी बनाना स्वीकार करा लिया। परंतु दैवी घटना से मेटिल्डा (हेनरी की विधवा कन्या) का प्रेम ऑजू के शासक जिआफे (Geoffrey of Anjou) से हो गया। हेनरी ने उसका विवाह जिआफे से कर दिया। मेटिल्डा के जिआफे से एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम हेनरी था।

११३५ मे हेनरी प्रथम की मृत्यु हो गई। वह रीडिंग ऐबे मे दफन किया गया। इँगलैंड के श्रेष्ठ सम्राटो मे हेनरी भी एक है। आंग्ल-प्रजा उसका मान करती और उससे डरती थी। आंग्ल-क्रॉनिक्लर का कथन है कि "वह एक उत्तम मनुष्य था। उसका आतंक सर्वत्र छाया हुआ था। उसने पशु तथा मनुष्यो के लिये इँगलैंड मे शांति स्थापित की। उसको बुरा कहने का किसी भी मनुष्य को साहस न था।" हेनरी प्रथम के राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार है—

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
११००	हेनरी प्रथम का राज्यारोहण
११०२	बैलीम के रॉबर्ट का अधःपतन
११०६	टेंचेब्राई की लड़ाई

११०७	हेनरी तथा एन्सेल्म का निर्णय
११२०	हेनरी के एक-मात्र पुत्र का जहाज के टूट जाने से मरना
११३५	हेनरी की मृत्यु

चतुर्थ परिच्छेद

स्टीवन (Stephen, ११३५-११५४)

स्टीवन हेनरी प्रथम का सबधी था। हेनरी ने उसे शासन करने के लिये बहुत-से मंडल दिए थे और उसकी शक्ति भी यथेष्ट बढ़ा दी थी। वह फ्रांस तथा ऑजू के बीच के देश 'लायर' (Loire) का शासक था। उसकी माता एडेला (Adela) विजेता विलियम की पुत्री थी। हेनरी प्रथम ने बूलो (Boulogne)-प्रदेश की उत्तराधिकारिणी मेटिल्डा के साथ उसका विवाह कर दिया और उसके भाई हेनरी को विंचेस्टर का बिशप बना दिया था।

स्टीवन हेनरी के जीवन-काल तक उसका विश्वास-पात्र बना रहा। हेनरी के विशेष अनुरोध पर उसने मेटिल्डा को आंग्ल-रानी बनाने का वचन दिया था। किंतु हेनरी के मरते ही उसके सब प्रण काफूर हो गए, उसने स्वय इँगलैंड का राजा बनने का प्रयत्न किया। आंग्ल-बैरनो ने उसका स्वागत किया। जस्टीशियर रॉजर (Roger) ने भी स्टीवन का कोई विरोध नहीं किया। सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि कैटबरी के आर्च-बिशप कार्बील के

विलियम (William of corbeil) ने बड़ी प्रसन्नता से उसका राज्याभिषेक किया।

राज्याभिषेक के समय हेनरी प्रथम की तरह स्टीवन ने भी एक 'स्वतन्त्रता-पत्र' निकाला। इस स्वतन्त्रता-पत्र द्वारा उसने सब ओर से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया। स्वतन्त्रता-पत्र में निम्न-लिखित बातें मुख्य थीं—

(१) सब प्रकार के अन्याय-युक्त तथा अधिक राज्य-कर दूर करने का प्रयत्न किया जायगा।

(२) अच्छे-अच्छे प्राचीन नियम तथा रीति-रिवाज प्रचलित रखने का यथासाध्य प्रयत्न किया जायगा।

(३) हेनरी प्रथम ने जिन नवीन जंगलों को बना रक्खा था, उन्हें नष्ट करके बसा दिया जायगा।

आरंभ में स्वीटन को सभी ने अपना राजा स्वीकार किया। नार्मंडी के बैरन आँजू-निवासियों के शत्रु थे, अत: उन्हें मेटिल्डा तथा उसके पुत्र का राज्य बिल्कुल पसंद न था। कुछ आंग्ल-बैरनों ने स्वीटन को शक्तिशाली तथा वीर देखकर विद्रोह किया, परंतु कृतकार्य न हो सके। स्कॉच-राजा डेविड (David) ने अपने को मेटिल्डा का पक्षपाती प्रकट करके इँगलैंड पर आक्रमण और आंग्ल-प्रजा को बहुत पीड़ित किया। प्रजा के कष्ट तथा यातनाएँ देखकर

यार्क के आर्च-बिशप थर्स्टन (Thurston) ने एक प्रबल सेना एकत्र की। एक गाड़ी पर यार्क के तीन सन्तों की झंडियाँ तथा राजकीय झंडा रखकर आंग्ल-सेना ने, नार्थेलर्टन (Northallerton) नाम के स्थान पर, स्कॉच-सेना से एक भयंकर युद्ध किया। युद्ध में स्कॉच-सेना हारी। इस युद्ध को आंग्ल-इतिहास में 'पताका-युद्ध' (Battle of the Standard) कहते हैं।

जस्टीशियर रॉजर की शक्ति अपरिमित थी। रॉजर का पुत्र चांसलर था और उसके दो संबंधी एली तथा लिंकन (Lincoln)-नामक स्थानों के बिशप थे। इस अपरिमित शक्ति को देखकर स्टीवन को भय हुआ। ११३८ में स्टीवन ने रॉजर को आज्ञा दी कि वह अपने संपूर्ण दुर्गों को गिरा दे। इसका परिणाम यह हुआ कि दोनों में परस्पर भयंकर वैमनस्य हो गया।

(१) भ्रातृ-युद्ध

ग्लॉस्टर का अर्ल रॉबर्ट मेटिल्डा का पक्षपाती था। रॉजर के अपमान के कुछ ही सप्ताह बाद उसने इँगलैंड में प्रवेश किया। उसके साथ ही रानी मेटिल्डा भी सेना-सहित इँगलैंड आ पहुँची। इसका परिणाम यह हुआ कि स्टीवन और मेटिल्डा में भयंकर लड़ाई हुई, जो स्टीवन के राज्य-

काल के अंत में समाप्त हुई। दोनों ही पक्ष इतने सबल न थे कि एक दूसरे को सदा के लिये पराजित कर सकते। स्टीवन की सेना में मुख्य रूप में फ्लेमिश (Flemish) लोग थे। आंग्लों से पूर्ण सहायता लेने का उसने यत्न ही नहीं किया।

मेटिल्डा की दशा स्टीवन से भी बुरी थी। इसका कारण यह था कि मेटिल्डा के सहायक बैरन थे, जो अपना ही स्वार्थ देखते थे। उनका स्वार्थ इसी में था कि दोनों पक्षों में निरंतर लड़ाई होती रहे और एक से दूसरा प्रबल न हो सके। इस भ्रातृ-युद्ध से बैरनों ने जो स्वेच्छाचारिता तथा शक्ति प्राप्त की और प्रजा पर जो-जो अत्याचार किए, उनका वर्णन आंग्ल-क्रॉनिक्लर इस प्रकार करता है—

"भ्रातृ-युद्ध से लाभ तथा शक्ति प्राप्त करके प्रत्येक बैरन ने अपने-अपने दुर्ग बना लिए। इसका परिणाम यह हुआ कि संपूर्ण आंग्ल-भूमि दुर्गों से व्याप्त दिखाई देने लगी। दुर्गों के बन चुकने पर बैरनों ने उन्हें अत्याचारी, क्रूर तथा पापिष्ठ पुरुषों से भर दिया। प्रत्येक संपत्तिशाली, समृद्ध पुरुष कैद कर लिया जाता और प्रत्येक प्रकार के कष्टों तथा यातनाओं द्वारा उससे संपत्ति छीनने का यत्न किया जाता। ग्रामों पर भारी-से-भारी कर लगाए गए। जब दरिद्र

ग्रामीण कर देने मे असमर्थ हो जाते थे, तो ग्रामो मे आग लगा दी जाती थी। नाज महँगा हो गया। जनता को मक्खन तथा मांस देखने तक को न मिलता था। दरिद्र मनुष्य भूखो मरने लगे। जो एक समय समृद्ध गिने जाते थे, वे भिखमगो की श्रेणियो मे दिखाई देने लगे। बैरन लोगो ने चर्चों तथा पादरियो को भी लूटने से न छोडा। कष्ट से पीड़ित होकर लोग कहने लग गए थे कि ईसा और उसके संत सब सो रहे है।"

आंग्ल-क्रॉनिक्लर के सदृश ही एक और लेखक का कथन है कि "भ्रातृ-युद्ध के समय इँगलैंड मे उतने ही स्वेच्छाचारी राजा हो गए थे, जितने कि लॉर्ड थे।" सच पूछो तो राजा या उसकी सरकार के निर्बल पड़ जाने पर अराजकता छा जाती और सबल निर्बलो को पीसने लगते है। इसी से प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि अराजकता कभी न फैलने दे।

बहुत-से लोभी बैरनो ने स्टीवन या मेटिल्डा का पक्ष लेते हुए अपने स्वार्थ सिद्ध करने का यत्न किया। इन लोभी बैरनो का अगुआ मैंडेविल का जिआफ़े (Geoffrey of Mandeville) था। उसने धूर्तता से धीरे-धीरे बहुत-से मंडल प्राप्त कर लिए और अंत को एसेक्स का अर्ल बन गया। उसकी धूर्तताओ से क्रुद्ध होकर स्टीवन ने उसे नष्ट करने के लिये

एक प्रबल प्रयत्न किया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्टीवन के क्रोध से भयभीत होकर जिआफ्रे जंगलों में भागा और अपने ही एक साथी के हाथों मारा गया।

(२) लिंकन का युद्ध और वैलिंगफोर्ड की संधि

स्टीवन और मेटिल्डा का युद्ध चिरकाल तक चलता रहा, परन्तु देश को इससे लाभ नहीं, हानि ही हानि पहुँची। स्टीवन के सहायक लंदन-निवासी तथा दक्षिणी इँगलैंड के समृद्धिशाली लोग थे। मेटिल्डा के सहायक बैरन लोग थे। अंत को ११४१ में, लिंकन-नगर का घेरा डालने पर, स्टीवन मेटिल्डा का कैदी हो गया। इस विपत्ति में स्टीवन के बहुत-से साथियों ने उसका साथ छोड़ दिया। अधिक क्या, उसके सगे भाई हेनरी ने भी उसी को दोषी ठहराया।

स्टीवन को कैद करके मेटिल्डा ने राज्य करने के विचार से लंदन की ओर प्रस्थान किया। उसके अभिमानी तथा रूखे स्वभाव से क्रुद्ध होकर लंदन-निवासियों ने उसे अपने नगर से बाहर निकाल दिया। इसी समय स्टीवन का भाई हेनरी फिर मेटिल्डा का विरोधी हो गया। विंचेस्टर (Winchester) की प्रसिद्ध लड़ाई में मेटिल्डा का प्रसिद्ध पक्ष-पोषक रॉबर्ट कैद हो गया। ११४८ में मेटिल्डा का वीर भाई भी मर गया। इससे उसका पक्ष बहुत कुछ निर्बल हो गया।

११५३ मे मेटिल्डा का बड़ा पुत्र हेनरी द्वितीय बड़ी भारी सेना के साथ इँगलैंड आया। उसने २० वर्ष की आयु मे ही नार्मडी का शासन करना प्रारंभ कर दिया था। पिता की मृत्यु होने पर ऑजू का प्रदेश और अपनी स्त्री की ओर से सपूर्ण फ्रांस का प्रदेश उसे ही मिलना था। ऐसे प्रबल शत्रु से भयभीत होकर स्टीवन ने उससे 'वैलिंगफोर्ड' (Wallingford) की प्रसिद्ध संधि कर ली। इस संधि के अनुसार इँगलैंड का उत्तराधिकारी हेनरी द्वितीय ही माना गया। संधि हो जाने के अनंतर हेनरी इँगलैंड मे ही रहा और स्टीवन को राज्य-कार्य मे यथेष्ट सहायता पहुँचाता रहा। ११५४ मे स्टीवन की मृत्यु हो गई और हेनरी द्वितीय इँगलैंड का राजा बना। स्टीवन के राज्यकाल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार है—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
११३५	स्टीवन का राज्यारोहण
११३८	पताका-युद्ध
११४१	लिंकन की लड़ाई
११५३	वैलिंगफोर्ड की संधि
११५४	स्टीवन की मृत्यु

पंचम परिच्छेद

हेनरी द्वितीय (११५४-११८९)

यह दृढ-प्रकृति, कार्य-परायण तथा बहुत परिश्रमी था। इसका सारा समय राज्य-कार्य तथा भिन्न-भिन्न समितियो के अधिवेशनो मे ही बीता। लोक-प्रथा मे इसे कुछ भी विश्वास न था। राज्य और शासन मे जितनी नई-नई जॉचे इसने की, उतनी कदाचित ही किसी पूर्ववर्ती आंग्ल-राजा ने की हो। शूरवीर योद्धा होने के साथ ही यह राजनीतिज्ञ और सुवक्ता भी था। इसने बहुत ही उत्तम शिक्षा प्राप्त की थी और इसे शिकार तथा स्वाध्याय मे बहुत ही रुचि थी। इसने सर्वप्रियता प्राप्त करने का कोई भी उपाय नहीं किया। इसे शान-शौकत तथा चमक-दमक से कुछ विशेष प्रेम न था। विचारशील तथा दूरदर्शी होकर भी कभी-कभी यह क्रोध के वशीभूत होकर अपने आपे से बाहर हो जाता था और समीपवर्तियो के लिये भयंकर रूप धारण कर लेता था।

राज्य-सिंहासन पर बैठते ही हेनरी ने देश मे शाति स्थापित करने का यत्न किया। स्टीवन ने जो फ्लेमिश-सेना युद्ध

के लिये रक्खी थी, उसे बर्खास्त कर दिया। इसने बैरनो को यह आज्ञा दी कि स्टीवन के समय मे राजा की आज्ञा के बिना जो-जो नवीन दुर्ग बनाए गए है, उन्हे गिरा दे। इस आज्ञा पर कुछ बैरनो ने राजा का विरोध किया, पर कृतकार्य न हो सके। हेनरी ने उनके विद्रोहो को शीघ्र ही शांत कर दिया।

डेविड की मृत्यु के बाद 'मलकम चतुर्थ' स्कॉटलैड का राजा बना। हेनरी ने उत्तरीय आंग्ल-प्रदेशो के लिये राज्य-कर देने को उसे विवश किया। यही नहीं, उसने वेल्स पर भी धावा किया, पर कृतकार्य न हुआ। वेल्स के राजकुमार ओवेन को उसकी अपरिमित शक्ति का पूर्ण ज्ञान था, अत उसने हेनरी से संधि कर ली। इस संधि के द्वारा ओवेन ने ग्वीनड-प्रदेश की स्वतंत्रता सुरक्षित रक्खी। तो भी सीमा-प्रातीय लॉर्डो ने वेल्स का बहुत-सा भाग हस्तगत कर लिया।

(१) हेनरी द्वितीय तथा चर्च

हेनरी को निम्न-लिखित व्यक्तियो ने राज्य-कार्य मे यथेष्ट सहायता पहुँचाई—

(१) लूसी-प्रांतस्थ रिचर्ड

(२) लीस्टर का अर्ल रॉबर्ट (Robert, Earl of Leicester)

(३) एली (Ely) का बिशप नाइजेल (Nigel)

(४) टॉमस बेकेट (Thomas Becket)

इनमें से रिचर्ड और रॉबर्ट जस्टीशियर, नाइजेल कोषाध्यक्ष और बेकेट चांसलर था। बेकेट एक व्यापारी का पुत्र था। उसकी राज-भक्ति तथा कर्मण्यता देखकर हेनरी ने उसे कैंटर्बरी का आर्च-बिशप बना दिया। इस कार्य में हेनरी का उद्देश बेकेट द्वारा चर्च पर प्रभुत्व पाना ही था। जो हो, उसने बेकेट को आर्च-बिशप बनाकर बड़ी भारी भूल की, क्योंकि वह एक विचित्र प्रकृति का आदमी था। जिस कार्य में लगता, उसे अपना ही काम समझकर उसी में अपनी संपूर्ण शक्ति लगा देता। चांसलर-पद पर बेकेट ने राजा की अपूर्व सेवा की थी और अब आर्च-बिशप के पद पर उसने चर्च की शक्ति बढ़ाना ही अपना मुख्य उद्देश बना लिया।

इस घटना से हेनरी को बहुत निराशा हुई, क्योंकि वह चर्च की बढ़ती हुई शक्ति को सदा के लिये रोकना चाहता था। उसने बेकेट को आर्च-बिशप बनाकर यह समझा था कि अपने ही आदमी के आर्च-बिशप हो जाने से चर्च की शक्ति बहुत कुछ कम की जा सकेगी। बेकेट ने हेनरी को पूरी तौर पर निराश करके चर्च के धार्मिक सुधारों के लिये अपने को एक

स्तभ बना लिया। उसने चांसलर-पद त्याग करते ही भिक्षुओं की तरह साधारण वेश मे रहना प्रारंभ कर दिया और एन्सेलम को अपना आदर्श मानकर प्रत्येक काम करना चाहा।

इन सब बातो का यह परिणाम हुआ कि हेनरी और बेकेट मे भयकर कलह हो गई। बेकेट ने राजा पर यह दोष लगाया कि उसने चर्च की सपत्ति जप्त कर ली है और राज्य-कर लगाने की विधि बदल दी है। चर्च के साधारण क्लार्कों के अपराधो के निर्णय मे यह झगडा और भी अधिक बढ गया।

विजेता विलियम ने, लैंफैंक की सहायता से, राजकीय न्यायालयों से चर्च के न्यायालयों को पृथक कर दिया था, इसका उल्लेख किया जा चुका है। स्टीवन की अराजकता के समय मे, राजकीय न्यायालयो के विच्छिन्न हो जाने से, देश मे एक-मात्र चर्च के ही न्यायालय रह गए थे। निरतर कार्य करने से इनकी शक्ति पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई थी। ये जनता मे भी सर्व-प्रिय हो गए थे। चर्च की शक्ति-वृद्धि इसी से जानी जा सकती है कि पादरियो से संयुक्त प्रत्येक व्यक्ति का न्याय चर्च के न्यायालय ही करते और जो कोई लैटिन के अक्षर बाँच सकता, वही क्लॉर्को (विद्वानो) मे गिन लिया जाता था।

हेनरी चर्च की शक्ति-वृद्धि के सर्वथा विरुद्ध था। इसे वह अपने अधिकारो पर हस्तक्षेप समझता था। अत: उसने बहुत-से क्लार्कों का निर्णय अपने ही न्यायालय द्वारा किया। बेकेट ने राजा के इस कार्य को राज्य-नियम-विरुद्ध ठहराया। इन सब झगड़ो को मिटाने के लिये हेनरी ने वेस्ट-मिस्टर मे एक धर्म-सभा जोडी और पादरियो से प्रार्थना की कि वे विजेता विलियम के नियमो पर चलने का प्रयत्न करे। पादरियो ने हेनरी का प्रस्ताव स्वीकार किया और साथ ही यह भी कहा कि "चर्च के अधिकारो के विषय मे वे कभी ढील न करेगे।" ११६४ की जनवरी मे क्लैरंडन की धर्म-सभा मे संपूर्ण (चर्च तथा राज्य-संबंधी) प्राचीन नियमो को हेनरी ने उपस्थित किया। इन नियमो को आग्ल-इतिहास मे 'क्लैरेडन के धर्म-नियम' (Constitutions of Clarendon) नाम से पुकारा जाता है।

क्लैरेडन के धर्म-नियमो मे मुख्यत १६ धाराएँ थीं, जो राजा तथा चर्च के सबध मे निम्न-लिखित बाते प्रकट करती थी—

(क) चर्च से सबध रखनेवाले किसी भी पुरुष का न्याय राजकीय न्यायालय मे नहीं होगा।

(ख) यदि कोई व्यक्ति राजकीय न्यायालय मे अपने

को चर्च का सेवक प्रकट करेगा, तो उसका निर्णय चर्च-न्यायालय मे होगा। उसके अपराधी सिद्ध होने पर चर्च उसे अपने यहाँ से पृथक् कर देगा। यह इसीलिये कि राजकीय न्यायालयो द्वारा उसे कठोर दंड दिया जा सके।

(ग) चर्च केवल धर्म-संबंधी कार्यों मे ही हस्तक्षेप करे।

(घ) क्लेरेडन की नियम-धाराओं मे विजेता विलियम के बहुत-से संदेहास्पद नियम ठीक किए गए।

(ङ) एन्सेल्म तथा हेनरी प्रथम के बीच का समझौता फिर से दृढ़ किया गया और बिशपो को अन्य भूमिपतियो की तरह राजा के अधीन ही माना गया।

(च) राजा की आज्ञा बिना रोम को किसी भी प्रकार की प्रार्थना भेजना राज्य-नियम के विरुद्ध ठहराया गया।

(छ) प्रिलेट्स (Prelates) अर्थात् धर्माधिकारियो का चुनाव राजा के सामने राज-प्रासाद मे ही होना निश्चित किया गया।

कुछ समय की शांति के बाद बेकेट ने कहा कि "ये नियम चर्च की स्वतंत्रता मे बाधक है, अत. मुझे स्वीकार नहीं।" इस

कथन पर हेनरी द्वितीय के क्रोध की सीमा न रही और उसने बेकेट के सत्यानाश का दृढ़ निश्चय किया। उसने राजदरबारियों को बेकेट के विरुद्ध अभियोग खड़ा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कुछ ही समय बाद उसने बेकेट पर यह दोष लगाया कि उसने चासलर-पद पर राजकीय धन उड़ाया और अपने कामों में खर्च किया है और उसे अपने अपराध का निर्णय कराने के लिये राजकीय न्यायालय में बुलाया। परंतु बेकेट ने यह स्वीकार नहीं किया और कहा कि चर्च-न्यायालयों की इसीलिये तो विशेष आवश्यकता है कि पादरियों को राजा के अत्याचारों से बचाया जाय। ११६४ के ऑक्टोबर में नार्थंपटन (Northampton) में जो सभा हुई, उसमें बेकेट ने राजा की अधीनता स्वीकार नहीं की और पूर्ववत् ही अपनी बात पर दृढ़ रहा। इस पर जस्टीशियर ने उसे देश-द्रोही कहा। इस घटना के बाद ही बेकेट फ़ांस चला गया। क्रोध में आकर हेनरी ने बेकेट के सब संबंधियों को देश-निकाला दे दिया।

बेकेट ६ वर्षों तक विदेश में ही रहा और राजा से पत्रों द्वारा विवाद करता रहा। उसने एलेगजेंडर (Alexander) तृतीय-नामक पोप से सहायता माँगी। परंतु पोप ने उचित सहायता न दी। इसका कारण यही था कि उन दिनों पोप

की सम्राट फ़्रेडरिक बारबरोसा (Frederick Barbarossa) से लड़ाई थी। फिर पोप हेनरी द्वितीय-जैसे शक्तिशाली राजा से भी बिगाड़ नही करना चाहता था। इधर हेनरी की नीति भी पोप से झगड़ा करने की न थी। अत वह भी धीरे-धीरे शिथिल हो रहा था। ११७० मे बेकेट तथा हेनरी फ़्रास मे मिले। मिलते ही दोनो मे सुलह हो गई। बेकेट के विदेश मे रहने से बहुत-से काम हेनरी यार्क के आर्चबिशप से करवा लेता था, यहाँ तक कि हेनरी के पुत्र का यौवराज्याभिषेक भी यार्क के आर्चबिशप ने ही कर दिया था, यद्यपि यह अधिकार विशेषतया कैटर्बरी के आर्चबिशप को ही था।

११७० की १ दिसंबर को बेकेट सपरिवार इँगलैड आया और आते ही उसने यार्क के आर्चबिशप रॉजर (Roger) को धर्म से बहिष्कृत (excommunicated) कर दिया। अब हेनरी के क्रोध की सीमा न रही। क्रोध मे ही उसने ये शब्द कह दिए—"क्या मेरा नमक खानेवालो मे से कोई भी ऐसा नही है, जो इस दुष्ट पादरी से मेरा पिड छुड़ावे।" ये शब्द सुनते ही चार नाइट (Knight) कैटर्बरी की ओर रवाना हो गए।

कैटर्बरी के क्राइस्ट-चर्च मे चारो नाइट बेकेट को मारने के लिये घुसे। आर्चबिशप बेकेट के सेवको ने गिरजे के

दरवाज़े बंद करने चाहे, पर उसने ऐसा न करने दिया। चर्च में घुसते ही नाइटों ने कहा कि "देश-द्रोही कहाँ है?" बेकेट ने पीछे मुड़कर उत्तर दिया कि "यहाँ हूँ, देश-द्रोही नहीं, बल्कि ईश्वर का पुरोहित।" नाइटों ने तलवार खींचकर उसे मार डाला। मरते समय बेकेट ने ये शब्द कहे कि "ईसा के नाम पर और चर्च* की रक्षा के लिये मैं मृत्यु स्वीकार करता हूँ।"

घातक नाइटों ने हेनरी द्वितीय के लिये बहुत ही बुरा काम किया। बेकेट यार्क-संबंधी झगड़े के कारण मारा गया, परंतु जनता ने उसे चर्च के कारण ही मारा गया समझा। इसी से उन्होंने उसे शहीद मानकर अपने प्राचीन संतों में एक उच्च स्थान दिया। उसकी धर्म-परायणता और भक्ति की कहानियाँ सर्वत्र फैल गईं। संपूर्ण जनता को इस बात पर विश्वास हो गया कि बेकेट का मृत शरीर बहुत-से अपूर्व चमत्कार दिखलाता है। यात्रियों के संघ-के-संघ बेकेट की समाधि पर चढ़ावा चढ़ाने तथा दर्शनों के लिये आने लगे। हेनरी को स्वयं आर्चबिशप की समाधि पर जाना पड़ा और वहाँ जाकर उसने अपने पाप

---

* Church-शब्द का अर्थ कभी तो गिरजाघर होता है, और कभी देश-भर का ईसाई-संघ।

का प्रायश्चित्त किया, अर्थात् शरीर पर कोड़े लगवाए। बेकेट की मृत्यु से चर्च की शक्ति बहुत बढ़ गई। हेनरी को अपनी पुरानी इच्छाएँ छोड़नी पड़ी। वह जो कुछ कर सका, वह यही था कि प्रत्येक अपराधी राज्य के न्यायालय मे उपस्थित किया जाता था। यदि अपराधी यह सिद्ध कर दे कि वह पादरी है, तो उसे चर्च-न्यायालय के सुपुर्द कर दिया जाता था। आश्चर्य की बात है कि एक-मात्र लैटिन के अक्षर पढ़ देने से ही कोई भी आदमी अपने को पादरी सिद्ध कर सकता था।

(३) हेनरी द्वितीय तथा राज्य-नियम

चर्च-संबंधी झमेलो के कारण हेनरी बहुत-से राज्य-सबंधी सुधार नहीं कर सका । इँगलैंड की अवस्था हेनरी प्रथम की तरह ही बनाकर वह संतुष्ट हो गया। उसने बहुत-से नए-नए राज्य-नियम बनाए, जो इँगलैंड के इतिहास मे बहुत प्रसिद्ध है। आंग्लो तथा नार्मनो को मिलाने मे उसने बड़ा भाग लिया। प्राचीन तथा नवीन न्यायालयो के संघटन मे उसने पर्याप्त ध्यान दिया। इसके समय मे आंग्ल और नार्मन मिलकर एक ही आंग्ल-जाति मे परिवर्तित होने लगे । फ़्रांसीसी-भाषा-भाषी नार्मन भी आंग्ल-भाषा बोलने का प्रयत्न करने लगे।

अभी लिखा जा चुका है कि हेनरी आंग्ल-नियम-निर्माताओ

(English Lawgivers) मे से एक समझा जाता है। उसने निम्न-लिखित नवीन राज्य-नियम बनाए—

(क) **क्लैरेंडन-राज्य-नियम** (Assize of Clarendon)—हेनरी प्रथम के समय से न्यायालयो का सुधार किया जा रहा था। क्लैरेडन-राज्य-नियमो के अनुसार हेनरी द्वितीय ने उस सुधार को पूर्ण किया। इसके अनुसार राजकीय न्यायालय का सघटन इस प्रकार हो गया—

(१) राजा के न्यायाधीश प्रति वर्ष प्रत्येक मंडल मे भ्रमण किया करे, और अपराधियो के अपराध का निर्णय करे।

(२) राजा के न्यायाधीश के पहुँचते ही मांडलिक न्यायालय बहुत-से भूमि-पतियो की एक उपसमिति बनावे। उपसमिति के सभ्य ही मंडलांतर्गत अपराधियो का न्यायाधीश को पता दे।

इस उपसमिति का द्वितीय नाम 'साक्षी-उपसमिति' या ज्यूरी भी है, क्योंकि इसके सभ्य इस बात की शपथ खाते थे कि हम किसी भी निरपराध व्यक्ति को अपराधी न कहेगे। वर्तमान-कालीन ग्रैड ज्यूरी (Grand Jury) का आरंभ इसी उप-समिति से समझना चाहिए। दस वर्ष बाद क्लैरेडन-राज्य-नियमो के स्थान पर 'नार्थैपटन-

राज्य-नियम' (Assize of Northampton) बनाए गए, जिनके अनुसार प्रत्येक अपराध पर पहले से अधिक कठोर दण्ड निश्चित कर दिए गए।

(ख) **महान् राज्य-नियम** (Grand Assize)—इस राज्य-नियम के निर्माण की तिथि निश्चित नहीं है। नार्मन-विजय के बाद अपराधों का निर्णय प्राय द्वंद्व-युद्ध द्वारा किया जाता था। इस निर्णय का आधार यह था कि परमात्मा न्यायकर्ता है। जो अपराधी होगा, वही द्वंद्व-युद्ध मे मारा जायगा। इस न्याय-विधि के दूषण स्पष्ट ही है। महान् राज्य-नियम द्वारा अपराधियो को यह अधिकार मिला कि वे द्वंद्व-युद्ध के स्थान पर अपने अभियोगो का निर्णय साक्षी-उपसमिति द्वारा करवा सकते है। दुर्बल तथा नि शक्त पुरुषो की रक्षा करने मे इस राज्य-नियम की जो उपयोगिता है, वह इसकी सर्व-प्रियता से स्पष्ट ही है।

(ग) **सैनिक राज्य-नियम** (Assize of Arms)—हेनरी ने इसके द्वारा प्राचीन जातीय सेना का बहुत कुछ सुधार किया। इस राज्य-नियम की धाराएँ ये थी—

(१) प्रत्येक स्वतंत्र पुरुष को, अपनी-अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार, उचित अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित रहना चाहिए।

(२) जो स्वतंत्र पुरुष युद्ध मे जाना स्वीकार न करे, वह 'युद्ध-कर' (Scutage) के तौर पर राजा को कर दे। इस कर से प्राप्त धन द्वारा हेनरी द्वितीय विदेशी सैनिको की स्थायी सेना रखता था, जो विदेशो मे युद्ध का काम करती थी। इँगलैंड की रक्षा वह प्राय जातीय सेना से ही करता था।

(घ) **जंगल-राज्य-नियम** (Assize of Woodstock)—हेनरी को शिकार का बहुत शौक था। वह जगलो पर एक-मात्र अपना ही स्वत्व समझता था। जंगल-राज्य-नियम बहुत कठोर थे। किंतु उनसे भी आंग्ल-जनता को कुछ-कुछ आश्वासन ही मिला, क्योंकि इससे पूर्व जंगलो के मामले मे राजा का स्वेच्छाचार-पूर्ण शासन था और अपने को निरपराध सिद्ध करने मे प्रजा को कोई भी साधन प्राप्त न था।

हेनरी ने जंगलो के लिये एक अलग ही न्यायालय बनाया। यह भी राजकीय न्यायालय की तरह काम करता था। अंतर केवल यह था कि इसकी शक्ति जंगलो तक ही परिमित थी।

(३) हेनरी द्वितीय और विदेशी युद्ध

(क) वेल्स और स्कॉटलैंड

विजेता विलियम की तरह हेनरी ने भी संपूर्ण ब्रिटेन पर

प्रभुत्व प्राप्त करने का प्रयत्न किया। सीमा-प्रांत के लॉर्डों ने वेल्स के बहुत-से प्रदेश जीते, तो भी ग्वीनैड (Gwynedd) के राजों ने अपनी स्वतंत्रता की बहुत कुछ रक्षा की। हेनरी ने तीन बार उनके प्रदेशों पर आक्रमण किया, परंतु एक बार भी सफल न हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि चिरकाल तक उत्तरी वेल्स एक स्वतंत्र राष्ट्र रहा। धर्म की दृष्टि से वेल्स तथा इँगलैंड परस्पर एक थे, क्योंकि आंग्लो की ही तरह वेल्श (Welsh) पादरी भी कैंटबरी के आर्च-बिशप का प्रभुत्व स्वीकार करते थे। ११८८ में आल्डिन ने वेल्स के प्रत्येक मंडल में नवीन क्रूजेड का प्रचार किया। हेनरी ने स्कॉटलैंड को नीचा दिखाने में अपूर्व सफलता प्राप्त की। ११७३ में हेनरी के विरुद्ध नार्मन-बैरनों को स्कॉटलैंड के राजा ने सहायता पहुँचाई। दैवी घटना से स्कॉटलैंड का राजा आल्न्विक में हेनरी के हाथ कैद हो गया। उसने कैद से छुटकारा पाने के लिये 'फैले की संधि' पर हस्ताक्षर कर दिए। इस संधि के अनुसार वह आंग्ल-राजा का वैसल हो गया, और एडिन्बरा आंग्ल-छावनी बन गई।

(ख) आयर्लैंड

हेनरी द्वितीय का राज्य इसलिये भी प्रसिद्ध है कि नार्मन-शक्ति का आयर्लैंड में प्रवेश तथा विस्तार हुआ। आयर्लैंड में

बहुत-से मांडालिक राजा थे, जो परस्पर युद्ध करते रहते थे। (सामुद्रिक नगर डॉनिश जनता के प्रभुत्व मे थे।) इस पारस्परिक कलह से नार्मन लोगो ने पूर्ण लाभ उठाने का यत्न किया। दक्षिणी वेल्स के सीमा-प्रांतीय नार्मन-लॉर्डो ने आयर्लैंड-विजय का श्रीगणेश किया। ११६६ मे लिस्टर (Leinster) का राजा डर्मट (Dermot) अपने शत्रु से पराजित होकर वेल्स भाग आया। इसने नार्मन-लॉर्डो से सहायता माँगी। नार्मन-लॉर्ड तो यह पहले से ही चाहते थे। क्लेयर के रिचर्ड (Richard of Clare) के नेतृत्व मे बहुत-से नार्मन-लॉर्डो ने आयर्लैंड पर आक्रमण किया और डर्मट को पुन लिस्टर का राजा बना दिया। इस उपकार के बदले डर्मट ने रिचर्ड से अपनी कन्या का विवाह कर दिया। डर्मट की मृत्यु होने पर रिचर्ड ही उसके राज्य का राजा बन गया। इसी तरह और बहुत-से नार्मन-लॉर्डो ने आयर्लैंड के भिन्न-भिन्न मंडलो का राज्य प्राप्त कर लिया और वहाँ भी नार्मन-सभ्यता का प्रचार किया।

११७१ मे हेनरी ने आयर्लैंड पर आक्रमण किया, और शीघ्र ही सपूर्ण प्रदेश जीतकर अपने को आयर्लैंड का भी स्वामी (Lord of Ireland) बना लिया। डब्लिन मे उसने आयर्लैंड के शासन के लिये एक गवर्नर नियत किया। अँगरेज़

व्यापारियो ने आयरिश नगरों मे व्यापार करना प्रारंभ कर दिया। हेनरी ने बडी बुद्धिमत्ता से आयरिश चर्च का सगठन आंग्ल-चर्च से कर दिया। इँगलैंड के इतिहास मे हेनरी द्वितीय ही वह राजा है, जिसने सर्वप्रथम संपूर्ण ब्रिटिश-द्वीपो पर शासन किया।

(ग) योरपियन युद्ध

समीपवर्ती राजो को हेनरी की अपरिमित शक्ति सह्य न थी। उसका मुख्य शत्रु तूलूस (Toulouse) का शासक था। ११५६ मे हेनरी ने उसके विरुद्ध युद्ध करना प्रारंभ किया और उसका मद मर्दित करके उसे अपने अधीन कर लिया। तूलूस का सर्वनाश ही हो जाता, यदि फ्रांस का राजा लूइस सप्तम उसे सहायता न पहुँचाता। हेनरी लूइस से युद्ध करने मे झिझकता था। फ्रांस से मित्रता करने के विचार से उसने अपने बड़े पुत्र का विवाह फ्रांस-राजकुमारी से कर दिया। लूइस ने बड़ी चतुरता से हेनरी के पुत्रों को उसी के विरुद्ध कर दिया। स्कॉटलैंड के राजा तथा नार्मंडी और इँगलैंड के बैरनो ने इनका साथ दिया। इस प्रकार ११७३ और ११७४ मे ट्वीड से लेकर पिरिनीज पर्वत-श्रेणी तक सब प्रदेशो मे भयंकर युद्ध हुए, जिनमे हेनरी ही सर्वत्र विजयी हुआ। इस सफलता का मुख्य कारण अँगरेजो की राज-भक्ति ही थी।

(घ) हेनरी द्वितीय का साम्राज्य

हेनरी द्वितीय का शासन बहुत-से योरपीय प्रदेशो पर भी था। उसे किस प्रदेश का शासन किस प्रकार मिला, यह नीचे दिया जाता है—

प्रदेश	किस प्रकार मिला
(क) आँजो तथा तूरेन (Touraine)	पिता से मिला
(ख) नार्मंडी तथा मेन (Maine)	माता से मिला
(ग) एक्विटेन (Aquitaine)	इलीनर-नामक अपनी स्त्री से मिला
(घ) इँगलैंड	वैलिंगफोर्ड की संधि से प्राप्त हुआ
(ङ) स्कॉटलैंड	अल्निवक के युद्ध और फैले की प्रसिद्ध संधि से अधीन किया
(च) आयर्लैंड	सेना द्वारा विजय किया

इस सूची से स्पष्ट है कि हेनरी ने बहुत-से प्रदेश विवाह तथा माता-पिता द्वारा प्राप्त किए। एक्विटेन का प्रदेश बहुत विस्तृत था। संपूर्ण दक्षिण-पश्चिमी फ्रांस इस प्रदेश मे सम्मिलित था। आयर्लैंड तथा स्कॉटलैंड पर हेनरी ने कैसे

प्रभुत्व प्राप्त किया, इसका उल्लेख पहले किया ही जा चुका है।

(४) हेनरी द्वितीय का परिवार

हेनरी की धर्मपत्नी इलीनर (Eleanor) अति उद्दंड प्रकृति की थी। अपने पति लूइस सप्तम को उसने इसीलिये छोड़ दिया था कि उससे उसकी बनती न थी। हेनरी से भी उसकी चिरकाल तक न निभी। यही कारण था कि उसने अपने पुत्रों को अपने पूर्व पति से मिलाकर हेनरी को कष्ट पहुँचाने का पूर्ण प्रयत्न किया, परंतु कृतकार्य न हो सकी।

हेनरी प्रेमी स्वभाव का था। उसने अपने चारो पुत्रों को राज्य-कार्य मे पूर्ण भाग दिया। प्रथम पुत्र हेनरी को युवराज बनाया और द्वितीय पुत्र रिचर्ड को एक्विटेन का शासक नियत किया। जिआफ़्रे तथा जॉन, उसके तृतीय और चतुर्थ पुत्र, भी भिन्न-भिन्न समयो मे भिन्न-भिन्न प्रदेशो के शासक रहे। इनमे से हेनरी तथा जिआफ़्रे की मृत्यु उसके जीवन-काल मे ही हो गई। रिचर्ड और जॉन ही रह गए। ११८९ मे रिचर्ड ने हेनरी द्वितीय के साथ विद्रोह किया और अपने छोटे भाई जॉन को भी अपने साथ मिला लिया।

जॉन को हेनरी बहुत प्यार करता था। उसके विद्रोही हो जाने से उसे बहुत चोट पहुँची और वह मर गया। हेनरी

की मृत्यु एक ऐतिहासिक घटना है। 'विजित राजा पर शर्म-शर्म'—ये शब्द कहते हुए हेनरी परलोक सिधारा। उसके राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
११५४	हेनरी द्वितीय का राज्यारोहण
११५६	तूलूस का युद्ध
११६४	क्लेरेंडन-धर्म-नियम
११६६	क्लेरेंडन-राज्य-नियम
११७०	संत टॉमस बेकेट की मृत्यु
११७१	आयर्लैंड-विजय
११७४	विद्रोह-दमन
११८१	सैनिक-राज्य-नियम
११८४	जगल-राज्य-नियम
११८६	हेनरी द्वितीय की मृत्यु

सिंहराज रिचर्ड तथा जॉन लैकलैंड (११८९-११९९)

(१) सिंहराज रिचर्ड (Richard Cœur de Lion)

हेनरी द्वितीय की मृत्यु के बाद रिचर्ड उसके संपूर्ण साम्राज्य का अधिपति बना। पितृ-द्रोही होने पर भी वह दुष्ट-प्रकृति न था। किंवदंती है कि पिता की मृत्यु का समाचार सुनते ही वह बहुत रोया। माता के प्रदेश पर बचपन से ही शासन करने से वह अतिशय वीर तथा साहसी हो गया था। वह लैटिन का अपूर्व विद्वान्, कविता का प्रेमी और स्वयं भी एक उत्तम कवि था। दक्षिणी फ्रांस का सबसे बड़ा कवि 'बर्ट्रेंड डि वार्न' (Bertrand de Warne) इसका परम मित्र था। इसमें राज्य करने की शक्ति थी, परंतु इस ओर इसका ध्यान ही न था। दस वर्षों के राज्य में केवल दो ही बार इसने इँगलैंड में दर्शन दिए।

रिचर्ड के राज्य-सिंहासन पर आने के समय संपूर्ण योरप 'तृतीय क्रूजेड' से गूँज रहा था, क्योंकि प्रसिद्ध वीर सुल्तान सालेदीन (Saladin) ने ११८७ में ईसाइयों पर अपूर्व विजय प्राप्त की और जरूस्सलम (Jerusalam) हस्तगत

कर लिया। सम्राट फ्रेडरिक बारबरोसा और फ्रेंच-युवराज फिलिप आगस्टस इस क्रुजेड में जाने के लिये तैयार हुए। सिहराज रिचर्ड ने भी क्रुजेड पर जाने का निश्चय किया और धन लेने के लिये इँगलैंड आया। आते ही उसने उच्च-से-उच्च राज्य-पद नीलाम कर दिए। 'विलियम लांगकैंप (William Longchamp)-नामक एक विदेशी ने बहुत-सा रुपया देकर चासलर तथा जस्टीशियर का पद खरीद लिया। स्कॉटलैंड के राजा ने बहुत-से रुपए के बदले में फैले की संधि रद करवा दी। इन सब तरीकों से रुपया एकत्र कर वह क्रुजेड पर चला गया।

'अक्र' (Acre)-नामक स्थान की विजय के बाद रिचर्ड ने जरुस्सलम की विजय के लिये प्रस्थान किया, परंतु फ्रांसीसियों तथा ॲगरेजों के पारस्परिक कलह के कारण वह जरुस्सलम की विजय में सर्वथा असमर्थ हो गया और मुसलमानों से संधि करके इँगलैंड की ओर रवाना हुआ। फिलिप आगस्टस से शत्रुता के कारण फ्रांस का मार्ग निष्कंटक न था। अत उसने गुप्त वेश में ऑस्ट्रिया के मार्ग से लौटना चाहा, परंतु कैद होकर सम्राट हेनरी षष्ठ के पास पहुँचा। हेनरी षष्ठ ने १० लाख पौंड तथा आजीवन पराधीनता की शर्त पर उसे कैद से छोड़ दिया।

रिचर्ड की पाँच वर्ष की अनुपस्थिति में इंगलैंड में अराजकता फैल गई। लागकैंप शासन करने में असमर्थ था, अतः चांसलर तथा जस्टीशियर-पद से हटा दिया गया और 'काउटेंसेस का वाल्टर' (Walter of Coutances) उसके स्थान पर नियत किया गया। 'ह्यूबर्ट वाल्टर' (Hubert Walter) शासन-कार्य में बहुत चतुर था। क्रूजेड से लौटकर द्वितीय बार रिचर्ड ने इंगलैंड में पदार्पण किया और बहुत-सा रुपया एकत्र करके फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। ह्यूबर्ट वाल्टर समय-समय पर राजा को धन तथा सैनिकों से यथेष्ट सहायता पहुँचाता रहता था। रूएन (Rowen) तथा नार्मंडी-प्रदेश को फ्रांसीसी आक्रमण से सुरक्षित रखने के लिये उसने 'चेतियो गैलर्ड' (Chateau Gailliard)-नामक प्रसिद्ध दुर्ग बनाया, जो योरप के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है।

रिचर्ड 'कैले' (Calais)-नामक दुर्ग का घेरा डालते समय एक बाण के द्वारा, ११९९ में, घायल हुआ। उसकी मृत्यु से पहले ही किला फतह किया गया और वह सैनिक रिचर्ड के सामने उपस्थित किया गया, जिसने उसे मारा था। मृत्यु-शय्या पर पड़े-पड़े ही उस वीर ने सैनिक से पूछा कि "मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था, जो तूने मुझे मारा ?" इस पर सैनिक ने उत्तर दिया कि "तूने मेरे पिता तथा दो भाइयों को

हत्या की है। तुझे मारकर अब मै सतुष्ट हूँ। जो तेरी इच्छा हो कर।" यह उत्तर सुनते ही रिचर्ड ने आज्ञा दी कि इस मनुष्य को सर्वथा छोड दो और इसे किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाओ। ११९९ की ६ एप्रिल को बीर रिचर्ड परलोक सिधारा। बैरनो ने राजा की मृत्यु होने के बाद ही उस सैनिक को भी मार डाला, जिसने राजा को घायल किया था।

(२) जान लैकलैंड

रिचर्ड की मृत्यु होते ही जॉन इॅगलैंड पहुॅचा और उसने अपने आपको राजा चुनवाया। राज्य पर वास्तविक अधिकार जिआफ्रे (Geoffiey) के पुत्र आर्थर (Aithur) का था। आर्थर के अल्प-वयस्क होने से जाति-सभा ने जॉन को ही अपना राजा स्वीकार किया।

जॉन ने पिता से जो विद्रोह किया था, उसका उल्लेख किया ही जा चुका है। पिता ने जब उसे आयलैंड का शासक नियत करके भेजा, तो वह अपनी मूर्खता और अभिमान के कारण उस कार्य मे सर्वथा असमर्थ सिद्ध हुआ। उसमे स्वार्थ की मात्रा आवश्यकता से अधिक थी। इसी कारण उसने पिता का सपूर्ण साम्राज्य धीरे-धीरे खो दिया। धोखे-बाज़ी, क्रूरता तथा मूर्खता मे उसने सब ॲगरेज़ सम्राटो को मात कर दिया। कुछ समय तक उसका राज्य शांतिपूर्वक

चलता रहा। परतु जब उसकी माता इलीनर, चासलर ह्यूबर्ट वाल्टर और जस्टीशियर जिआफ्रे फिट्ज़ पीटर (Fitz Peter) की क्रमश मृत्यु हो गई, तब सपूर्ण साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और देश मे अराजकता फैल गई। उसकी माता के मरते ही नार्मडी फ्रांस के हाथ मे चला गया। वाल्टर की मृत्यु होने पर चर्च के साथ उसका झगड़ा खड़ा हो गया और फिट्ज़ पीटर का स्वर्गवास होने पर आंग्ल-बैरनो से उसकी लडाई हो गई, जिसमे उसने अपनी स्वतंत्रता खो दी।

१—जॉन और विदेशी युद्ध

फ्रास-राजा के द्वारा इलीनर ने बहुत ही अधिक परिश्रम से आंजो-प्रदेश का उत्तराधिकारी जॉन को नियत करवाया। जॉन ने मूर्खता से अपनी पहली स्त्री ग्लास्टर (Gloucester) की शासिका इज़ाबेला (Isabella) को त्याग दिया और अगोलीम की शासिका इजाबेला से विवाह कर लिया। उसकी सगाई पहले से ही लामार्च के शासक के साथ हो चुकी थी। इस अपराध का निर्णय करने के लिये १२०२ मे फ्रांसीसी राजा फिलिप ने जॉन को अपने न्यायालय मे उपस्थित होने के लिये बुलाया, क्योकि नार्मडी पर अधिकार रखने से जॉन फ्रांसीसी राजा का सामंत था, परंतु जॉन नही गया। इस उद्दंडता पर क्रुद्ध होकर फ्रेच राज-दरबारियो ने

उसे संपूर्ण फ्रेंच-प्रदेशो के शासकत्व से हटा दिया ।

फिलिप ने नार्मडी पर आक्रमण किया और आर्थर को आजो तथा एक्विटेन का शासक नियत किया। आर्थर ने बड़ी वीरता से जॉन के विरुद्ध युद्ध किया, परंतु मिरेबो (Mirebeau) के किले मे पकडा जाकर अपने चाचा की आज्ञा से १२०३ मे मरवा डाला गया। इस घटना के एक वर्ष बाद ही इलीनर (Eleanor) भी मर गई और जॉन का राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा ।

(क) नार्मडी और आजो का खोना

फिलिप द्वितीय ने अपनी संपूर्ण शक्ति नार्मडी-विजय मे लगा दी, परंतु जॉन ने इसकी कुछ भी चिता न की। अपने शत्रु की सफलताओ को सुनकर उसने कहा कि "फिलिप को बढने दो। वह जो कुछ जीतेगा, उसे मै एक ही दिन मे छीन लूँगा।" कुछ ही दिनो बाद फिलिप द्वितीय ने 'चेतियो गैलर्ड' (Château gaillard) को भी हस्तगत कर लिया। १२०४ की जून मे रूएन को जीतते ही सपूर्ण नार्मडी फ्रांस के हाथ मे चली गई। दूसरे ही वर्ष पाइशो (Poitou) तथा आंजो का प्रदेश भी फ्रांस ने अपने हाथ मे ले लिया। इस प्रकार जॉन के शासन से फ्रांस के प्राय संपूर्ण प्रदेश निकल गए। केवल एक बच रहा।

(ख) लारोश तथा बोवाइन्स के युद्ध (१२१४)

जॉन ने अपने राज्य के अंतिम दिनो मे पिता के फ्रेंच प्रदेशो को जीतने का कुछ-कुछ यत्न किया, परंतु सफलता न मिल सकी। १२१३ मे पाइशो (Poitou) और आंजो की विजय के लिये उसने एक प्रबल प्रयत्न किया। उसका भांजा ऑटो (Otto) जर्मनी का सम्राट् था। ऑटो का पोप से झगड़ा था। जॉन भी पोप के पक्ष मे न था। अत मामा और भांजे दोनो ही पोप के विरुद्ध मिल गए। फ्रांस पोप के पक्ष मे था, अत फ्रांस और पोप एक साथ हो गए। दोनों पक्षो का एक भयंकर युद्ध हुआ, जिसमे जॉन और ऑटो पराजित हुए। बोवाइन्स (Bouvines) पर ऑटो को और लारोश पर जॉन को नीचा देखना पड़ा। जॉन के लिये इस प्रकार पराजित होना एक हतक की बात थी। परंतु इँगलैंड के लिये तो नार्मंडी का फ्रांस के पास चला जाना अच्छा ही हुआ। इसी से नार्मनो ने इँगलैंड को अपना देश समझा और राजा बनने की जगह आग्ल-राजा की शक्ति को परिमित करना अपना उद्देश बना लिया।

२—जॉन और चर्च

१२०५ मे ह्यूबर्ट वाल्टर का स्वर्गवास हो गया। यह कैटर्बरी का आर्चबिशप था। इसकी मृत्यु होने पर

क्राइस्ट-चर्च के भिक्षुओं ने 'रेजिनेल्ड' (Reginald)-नामक व्यक्ति को गुप्त रूप से आर्चबिशप चुना और उसे पोप से पैलियम ले आने के लिये शीघ्र ही रोम चले जाने को कहा। इस उच्च पद को प्राप्त करने के पहले ही रेजिनेल्ड ने संपूर्ण गुप्त मंत्रणा किसी पर प्रकट कर दी। जॉन को इस बात का पता लगते ही बुरा लगा और उसने अपने एक मंत्री 'जॉन डि ग्रे' (Johnde Grey) को आर्चबिशप नियत करने के लिये पादरियों को विवश किया। जब इस घटना का पोप को पता लगा, तो उसने 'स्टीवन लैंगटन' (Stephen Langton) नाम के एक आंग्ल-विद्वान् को आर्चबिशप नियत करके भेजा। परंतु जॉन ने उसे अपने देश में घुसने नहीं दिया और आर्चबिशप भी नहीं माना।

इसका परिणाम यह हुआ कि पोप और जॉन का परस्पर झगड़ा हो गया। पोप ने जॉन को धर्म-बहिष्कृत (Interdict) कर दिया। इसके द्वारा आंग्ल-देश में संपूर्ण पूजा-पाठ बंद कर दिया गया। बपतिस्मा (Baptism), विवाह, मृतक्रिया आदि प्रत्येक प्रकार के संस्कार का किया जाना रोक दिया गया। परंतु जॉन 'धर्म-बहिष्कृत' किए जाने का दंड पाकर भी टस से मस न हुआ। उसने आंग्ल-पादरियों को पोप के विरुद्ध चलने के लिये विवश किया। लाचार होकर

पोप ने जॉन को 'कर्म-बहिष्कृत' (Excommunicated) किया, जिससे धर्म के मामले मे जॉन का प्रत्येक प्रकार का हस्तक्षेप रोक दिया गया। परंतु जॉन को इसकी भी क्या परवा थी। अंत मे पोप ने फ्रांसीसी राजा फिलिप को इँगलैंड जीतने के लिये उद्यत किया। यह देखते ही जॉन डर गया और उसने लैंगटन को आर्चबिशप मान लिया। पोप भी अति चतुर व्यक्ति था। उसने इस स्वर्ण-सुयोग से पूर्ण लाभ उठाया और जॉन को अपना वैसल (Vassal, सामंत) बनने के लिये विवश किया। १२१३ मे डोवर पर उसने पोप के प्रतिनिधि पांडल्फ (Pandulf) से आंग्ल-राज्य लिया और अधीनता-सूचक कर के तौर पर पोप को १०० मार्कस देना स्वीकार किया। जॉन का पोप की अधीनता स्वीकार करना बे-मतलब न था। इसमे भी उसने पूर्ण धूर्तता से काम लिया। पोप का प्रतिनिधि होने से आंग्लो पर उसने उच्छृंखलता से राज्य करना प्रारंभ किया और फ्रांस पर भी आक्रमण करने की तैयारियाँ करने लगा। इँगलैंड को पोप के अधीन कर देने से आंग्ल-प्रजा का उसे कुछ भी भय न रहा और फ्रांस के आक्रमण से भी वह निश्चित हो गया। जो हो, जॉन की इस धूर्तता से इँगलैंड को, भविष्य मे, यथेष्ट हानि पहुँची।

३—जान और महास्वतन्त्रता-पत्र

जॉन की स्वेच्छाचारिता और लोभ से संपूर्ण आंग्ल-प्रजा पीड़ित थी। फ्रांसीसी प्रदेश के इंगलैंड से पृथक हो जाने से नार्मन बैरन इंगलैंड को ही अपना घर समझने लगे और राजा की शक्ति को परिमित करने का अवसर देखने लगे। जॉन फ्रांसीसी प्रदेशों की विजय की धुन में था। इधर अँगरेज़ तथा नार्मन बैरनों ने लैंगटन से मिलकर एक 'महास्वतन्त्रता-पत्र' तैयार किया। १२१४ में जब जॉन फ़्रांस से पराजित होकर इंगलैंड लौटा, तो बैरनों ने उसके विरुद्ध हथियार उठा लिए और उसे महास्वतंत्रता-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिये विवश किया। १२१५ की १५ जून को, 'रन्नीमीड'(Runnimede)पर, जॉन ने उस महा-स्वतन्त्रता-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। जॉन औवल नंबर का बदमाश था। उसने हस्ताक्षर करके भी महास्वतन्त्रता-पत्र की किसी भी धारा पर चलने का प्रयत्न नहीं किया। यही नहीं, उसने पोप को बहकाया कि महास्वतंत्रता-पत्र से उसकी शक्ति को बड़ा भारी धक्का पहुँचता है। परिणाम यह हुआ कि पोप ने महास्वतंत्रता-पत्र को अनुचित और नियम-विरुद्ध ठहराया। जॉन ने विदेशियों की एक बड़ी भारी सेना एकत्र की और नार्मन बैरनों के विरुद्ध युद्ध

करना प्रारंभ कर दिया। इँगलैंड के सौभाग्य से १६ ऑक्टोबर, सन् १२१६ को जॉन की मृत्यु हो गई और आंग्ल-प्रजा को इस अत्याचारी से छुटकारा मिल गया।

महास्वतंत्रता-पत्र (Magna Carta or the Great Charter) की एक प्रति आंग्ल-अजायब-घर मे अब तक विद्यमान है। प्रत्येक आंग्ल इस स्वतंत्रता-पत्र को पूज्य दृष्टि से देखता है। महास्वतंत्रता-पत्र की धाराएँ प्राय हेनरी प्रथम के स्वतंत्रता-पत्र की ही धाराएँ है। न्याय के संबध मे महास्वतत्रता-पत्र मे लिखा है कि किसी भी स्वतत्र पुरुप को बदी, देश से निकाला या नष्ट न किया जायगा। जाति के नियमो के अनुसार प्रत्येक स्वतंत्र पुरुष का न्याय किया जायगा। न्यायाधीशो को वर्ष मे चार बार पत्येक प्रांत मे घूमना होगा। न्यायालय-संबंधी अनुचित तथा अधिक फीस आगे से नहीं ली जायगी। दुर्गों के सिपाही स लेकर किसी उच्च अधिकारी तक को न्याय करने का अधिकार न होगा।

पुलिस की शक्ति पर भी महास्वतंत्रता-पत्र ने यथेष्ट प्रति-बंध लगाए। यदि कोई पुलिस का कर्मचारी किसी स्वतंत्र पुरुप को तंग करेगा, तो उस पर उसके पद के अनुसार जुर्माना किया जायगा। पुलिस के ही सदृश सैनिको की शक्ति

को भी आर्थिक दृष्टि से कम करने का प्रयत्न किया गया। साथ ही उन्हे विवाह तथा दायाद-संबंधी मामलो मे स्वतंत्रता दी गई। महास्वतंत्रता-पत्र मे राजा की आर्थिक शक्ति को बहुत अधिक परिमित कर दिया गया। इस संबंध मे उसकी कुछ धाराएँ यहाँ लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है—

(१) लंदन तथा अन्य नगरो को अपनी प्राचीन स्वतत्रताएँ प्राप्त होगी।

(२) व्यापारियो के पदार्थ सुरक्षित रहेगे और उन पर अनुचित रूप से अधिक कर न लगाया जायगा।

(३) सारे इँगलैड मे एक ही तौल तथा नाप होगी।

(४) किसी भी नगर या स्वतंत्र पुरुष को पुल बॉधने के लिये, बेगार मे पकड़कर, विवश नहीं किया जायगा।

(५) किसी भी व्यक्ति का कोई भी पदार्थ, राजा भी, उसकी आज्ञा के विना नहीं ले सकेगा।

(६) नए जंगलो को पुन कटवा दिया जायगा।

(७) जगल से बाहर रहनेवालो को 'जगल-न्यायालय' के सम्मुख उपस्थित नही किया जायगा।

'जॉन' को महास्वतंत्रता-पत्र की धाराओ के अनुसार

चलाने के लिये २५ लॉर्डों की एक उपसमिति नियत की गई। महास्वतन्त्रता-पत्र की सहस्रो प्रतियाँ सारे इँगलैंड मे बाँटी गई। महास्वतन्त्रता-पत्र की एक मुख्य धारा यह थी कि **'जनता की स्वीकृति के बिना राजा किसी भी प्रकार का कर या आर्थिक सहायता नहीं ले सकता।'** सन् १८५८ मे महारानी विक्टोरिया ने भारतवासियो के लिये जो घोषणा-पत्र निकाला था, जिसमे हम लोगो को राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि की स्वतंत्रता देने के वचन दिए थे, उसे लोग इस देश का महास्वतंत्रता-पत्र (The Magna Carta or the Great Charter of India) कहा करते है।

रिचर्ड तथा जॉन के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार है—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
११८९	सिहराज रिचर्ड का राज्याधिरोहण
११८९-११९२	रिचर्ड का क्रूज़ेड पर जाना
११९४	रिचर्ड का कैद से छूटकर इँगलैंड आना
११९९	रिचर्ड प्रथम की मृत्यु
११९९	जॉन लैकलैंड का राज्याधिरोहण
१२०४	नार्मडी का खोना

१२०८	इँगलैंड का पोप द्वारा धर्म-बहिष्कृत किया जाना (Being placed under an interdict)
१२१३	जॉन का पोप की अधीनता स्वीकार करना
१२१५	महास्वतन्त्रता-पत्र
१२१६	जॉन की मृत्यु

सप्तम परिच्छेद

नार्मन ब्रिटेन की सभ्यता

(१) नार्मन-विजय के लाभ

नार्मन-विजय को सारे देश के ऐक्य की नीव कहना कोई अत्युक्ति नही, क्योकि इसी विजय से देश की शक्ति बढ़ी, एकता की स्थापना हुई और भिन्नता की दीवारे टूट गई। नार्मन लोगो ने यदि सारे ब्रिटिश-द्वीपो को जीता न होता, तो इस देश का इतिहास दूसरी ही तरह का होता।

नार्मनो द्वारा फ्यूडल-विधि की स्थापना से योरप की साधारण सभ्यता ब्रिटेन मे भी फैल गई। नए विचारो और सामयिक हलचलो मे इँगलैड ने पूर्ण भाग लिया। वह कई एक मे अग्रणी भी हो गया। विदेशो मे भी यहाँ के राजा की धाक बैठ गई और ऐसी ही फ्यूडल-संस्थाएँ और देशो मे भी स्थापित हो गईं। इँगलैड ने धर्म-युद्धो और अंतर्जातीय मामलो (Inter-national Matters) मे पूरा भाग लेना प्रारंभ कर दिया। कार्य-जगत् की अपेक्षा विचार-जगत् मे सहानुभूति का यह संबंध अत्यधिक था। विस्तृत रूप से यह धार्मिकावस्था के शीर्षक मे लिखा जायगा।

(२) राजनीतिक अवस्था

(क) राजा, महासभा और राज्याधिकारी

'विट्नेजिमाट' नाम की जातीय सभा का स्थान 'महा-सभा' ने ले लिया। यह नियन्त्रण और शक्ति मे उसी के समान थी। इसकी रचना, १२वी शताब्दी मे, राजा की अध्यक्षता मे टेनेट लोगो (The tenants, किसानो) द्वारा, हुई थी। नए नियम और असाधारण कर इसी के द्वारा नियत होते थे, परतु जातीय सभा की तरह इसका भी शक्तिशाली राजो की इच्छाओ को रद्द या उसका विरोध कर सकना असंभव था। क्यूरिया रेजिस (Curia Regis) और ऐक्स-चेकर (Exchequer)-विभाग के अधिकारियो को राजा ही नियत करता था। दोनो मे राजा का प्रधान मंत्री मुख्य स्थान पाता था। निम्न-लिखित राज्याधिकारी हुआ करते थे—

(१) जस्टीशियर (Justiciar) राजा की उपस्थिति मे प्रधान मत्री का और अनुपस्थिति मे राजा का कार्य करता था।

(२) चांसलर-पद पर दो व्यक्ति होते थे, जो मुख्य मत्री समझे जाते थे।

(३) आर्थिक मामलो (Financial matters) का निर्णय तथा नियंत्रण कोषाध्यक्ष करता था। [ये पद प्राय. पढ़े-लिखे धार्मिक लोगो को ही दिए जाते थे। ये लोग इन्हे

अपने वशो मे नहीं चला सकते थे अर्थात् पिता के मरने पर पुत्र ही उस पद पर नियत किया जाय, यह बात नहीं थी]

(४) मार्शल और (५) कास्टेबिल अर्थात् सेनापति और नायक के पदो पर लॉर्ड नियत किए जाते थे । [ये पद वशपरपरागत (Hereditory) थे]

(ख) स्थानीय शासन

भिन्न-भिन्न ज़िलो के स्थानीय न्यायालय अब तक विद्यमान थे। हेनरी द्वितीय की सर्किट(Circuit,दौड़)और साक्षी(Jury)-विधि ने इनका राज्य से सबध जोड दिया था। शासको ने इन्हे धन और जन-सम्मति प्राप्त करने का अच्छा साधन समझ रक्खा था। इनके प्रतिनिधि वर्ष मे दो बार वेस्टमिस्टर मे एक्सचेकर के पास धन और उसका हिसाब देने जाया करते थे। ये ही अपने प्रांतो मे राजा के प्रतिनिधि थे और स्थानीय शासको (Local Bodies) से व्यवहार करते थे।

(ग) ग्राम और उनका शासन

नोबिल या अमीर लोगो की भूमियाँ ग्राम-मंडलो(Manors)मे विभक्त थीं और ये सब एक ही प्रकार की थीं। प्रत्येक कृषि-मंडल (Manor) का स्वामी लॉर्ड कहा जाता था। वह अपनी सारी भूमि का नियंत्रण करता था और वहाँ के निवासियो का अपने न्यायालय मे न्याय भी। अपराधो की परीक्षा

गए थे, पर राजनीतिक मामलों में ये राजा के संदेह-पात्र थे, और पारस्परिक कलह में फँसे रहते थे।

जनता निम्न-लिखित श्रेणियों में बँटी हुई थी—

(१) भिन्न-भिन्न मंडलों के वंशपरंपरागत शासक अर्ल लोग संख्या में थोड़ और शक्ति में सबसे बड़े एवं स्वेच्छाचारी होते थे।

(२) बड़े-बड़े ताल्लुकेदार बड़े बैरन (Greater Barons) कहलाते थे। ये महासभा के सभ्य होते थे। १३वीं शताब्दी के प्रारंभ में ये १०० से ज्यादा नहीं थे। आंग्ल-राजा इन्हें महासभा के अधिवेशन में विशेष पत्र (Special Writ) द्वारा बुलाता था। छोटे-छोटे ताल्लुकेदार लोग छोटे बैरन (Lesser Barons) कहलाते थे।

(३) छोटे बैरन प्रांतीय शासकों के पास भेजे गए साधारण पत्र (General Writ) पाकर महासभा के अधिवेशन में जाते थे। धीरे-धीरे ये लोग नाइट (Knight) के रूप में बदल गए।

(४) शुरू-शुरू में नाइट लोगों की एक विशेष श्रेणी थी, जो धर्म-युद्धों में जाती थी।

नाइट लोग शस्त्रास्त्र से सज्जित रहते और अश्वारोहण में चतुर होते थे। नाइट-पद की प्राप्ति राजा तक के लिये गौरव और अभिमान का कारण समझी जाती थी।

१३वी शताब्दी मे 'नाइट' शब्द का प्रयोग निकृष्ट बैरनो या छोटे-छोटे भूमि-पतियो के लिये ही रह गया ।

(ख) निवास के ढंग

अब तक लोगो का जीवन सरल और कठोर था । ऐशो-आराम के सामान राजा और नोबिल लोगो से भी दूर थे । घर लकडियो के थे । किले अंधकार से आच्छादित और मैले से भरे रहते थे । एक ही मकान मे पकाना, खाना-पीना, सोना आदि सब काम होते थे । कोई आनंद के साधन न थे ।

(ग) भोजन और वेश

नार्मन लोगो ने और बातो के साथ-साथ भोजन-विधि को भी अत्युत्तम बनाया । मदिरा-पान कम किया । अच्छे-अच्छे शानदार वस्त्रो और बूटो का पहनना शुरू किया । नार्मन लोग दाढ़ी-मूछ मुड़वाकर रहते थे । विवाहित स्त्री-पुरुष सिर नंगा रखते थे, केवल वर्षा और आँधी के दिनो मे टोपी सिर पर रख लेते थे । धनी लोग पक्षियो के सुंदर-सुंदर बालो का भी प्रयोग करते थे ।

(४) आर्थिक अवस्था

(क) व्यापार

नार्मनों की विजय से नगरो की स्थापना और व्यापार-वृद्धि भी हुई । कई नगर व्यापार और कला-कौशल के केंद्र

हो गए। व्यापारियों के संघो (Merchant Guilds) की स्थापना हो गई। व्यापार का एकाधिकार भी प्रारंभ हो गया। नार्मन लोग सैनिक कार्यों की तरह व्यापार मे भी कुशल थे। धर्मात्मा एडवर्ड के समय मे इन्होंने लदन मे आकर व्यापार से ही उच्च स्थिति बना ली थी। उदाहरणार्थ संत टॉमस बेकेट का पिता, जो नार्मन था, व्यापार ही से इतना उच्च हुआ कि उसके पुत्र का नाम इतिहास मे अमर हो गया।

यहूदी लोगों ने भी बड़े-बड़े नगरो मे रहना प्रारभ कर दिया था। ये महाजनी का काम किया करते थे। क्रिश्चियन लोगो का धार्मिक नियम उन्हे धन को ब्याज पर देने से रोकता था, अतः इन लोगो का इस कार्य मे क्रियात्मक एकाधिकार (Practical Monopoly) था। ये लोग अधमर्णो (जो प्रायः क्रिश्चियन होते थे) को बहुत तंग करते थे। ब्याज की मात्रा अधिक कर रक्खी थी, अतः क्रिश्चियन भी इन्हे अत्यधिक तंग करते और अक्सर बड़ी क्रूरता से मार डालते थे। ये लोग विशेष प्रकार के वस्त्र पहनते और नगर के विशेष भाग मे रहते थे। राजा को ये खूब ऋण देते थे, अतः राजा की विशेष कृपा के पात्र थे। धीरे-धीरे इन्होने भी नियम, न्यायालय और रीति-रिवाजो मे भाग लेना शुरू किया। ये बहुत धनी थे, और पत्थरों के घरो मे रहते थे।

(ख) नगर

नगरों मे लंदन टेम्स-नदी के तट पर सबसे बड़ा नगर था। इसने महात्मा एडवर्ड के समय से राजधानी का रूप ग्रहण किया। स्वतंत्रता-पत्रो (Charters) से इसके निवासियो ने विशेष स्वतत्रता प्राप्त की, और हेनरी प्रथम के स्वतंत्रता-पत्र से इसे अत्यधिक स्वतत्रता मिली। यहाँ के निवासी राजनीतिक मामलो मे अच्छा भाग लेते थे। स्टीवन और मेटिल्डा के पारस्परिक कलह मे स्टीवन की सहायता और महास्वतंत्रता-पत्र पर हस्ताक्षर करवाते समय जॉन का विरोध ध्यान देने योग्य है। दूसरी श्रेणी का नगर यार्क था, जो उत्तरीय प्रांतो की राजधानी था। तीसरा एग्ज़टर (Exetor) था, जो पश्चिम का मुख्य नगर था। ब्रिस्टल (Bristol) लंदन से उतरकर दूसरे नंबर का बंदरगाह था। नॉरिच (Norwich) कला-कौशल के लिये मुख्य नगर था। पूर्व-दक्षिण के ५ बंदर "सिंके पोर्टस" (Cinque Ports) कहलाते थे। वे युद्ध क समय अपने जहाजो द्वारा राजा की सहायता किया करते थे। इनमे मुख्य "डोवर" (Dover) था, जो यात्रियो के लिये योरप आने-जाने का मुख्य बंदरगाह था।

(५) शिक्षा

बारहवीं शताब्दी मे राज्य मे अनेक सुधार हुए। धर्म

और सभ्यता मे अच्छी उन्नति हुई। स्वाध्याय और शिक्षा का जीवन भी इसी समय समुन्नत हुआ। 'लैफ्रैंक' और 'एन्सेल्म'-जैसे विद्वानो ने विद्यार्थियो के झुंड-के-झुंड इकट्ठा करके पढ़ाना और उनमे विद्या-प्रेम पैदा करना प्रारंभ किया। धीरे-धीरे जगह-जगह विद्यापीठो और विश्वविद्यालयो की स्थापना शुरू हो गई। पूर्व मे 'पेरिस' का प्रसिद्ध विश्व-विद्यालय था, जिसके शिष्य स्थान-स्थान पर सारे योरप में जाया करते थे। हेनरी द्वितीय के समय 'ऑक्सफोर्ड' (Oxford) मे इसी नाम का विश्वविद्यालय स्थापित हुआ, जो आंग्लो का अपना पहला और मुख्य विद्यापीठ था। १३ वी शताब्दी तक विद्यापीठो का पूर्ण सुधार हो गया और इन्होंने विद्या और विचार के जगत् मे यथेष्ट भाग लिया। ग्लॉस्टर के रॉबर्ट ने, जैसा कि लिखा जा चुका है, ऐतिहासिक शिक्षा के लिये बहुत कुछ किया। पादरियो, राजनीतिज्ञो और विद्यार्थियो की भाषा लैटिन (Latin) ही थी। यही शिक्षा का माध्यम थी, जैसे कि हमारे यहाँ कॉलेजो मे ॲगरेज़ी है। मन्मथ के जिआफ़्रे ने अपनी एक पुस्तक इसी भाषा मे लिखी। इस प्रकार अनेक पुस्तके लैटिन मे ही इस समय प्रकाशित हुई।

"आंग्लो मे जातीयता का उदय कैसे हुआ", अब इसी पर, अगले अध्याय मे, कुछ विचार करेगे।

(६) नार्मन और एन्जविन अर्थात् आंजो के राजा

(२)
हेनरी तृतीय
१२१६-१२७२
(२)
रिचर्ड
(कार्नवाल का अर्ल)
(२)
इलीनर
(मांटफ़ोर्ट के साइमन की स्त्री)
कन्या
एडवर्ड प्रथम
१२७२-१३०७
एडमंड
(लेकास्टर का अर्ल)
एडवर्ड द्वितीय
१३०७-१३२७
एडवर्ड तृतीय
१३२७-१३७७
एडवर्ड-दि-ब्लैक प्रिंस [मृ. १३७६]
विलियम (ऑफ़ हैट फ़ील्ड)
लायोनेल (क्लेयरंस का ड्यूक)
जॉन आफ़् गेंट (लेकास्टर का ड्यूक)
टॉमस (ग्लास्टर का ड्यूक) १३६७
एडमंड (यार्क का ड्यूक)
रिचर्ड द्वितीय
१३७७-१३९९
हेनरी चतुर्थ
१३९९-१४१३
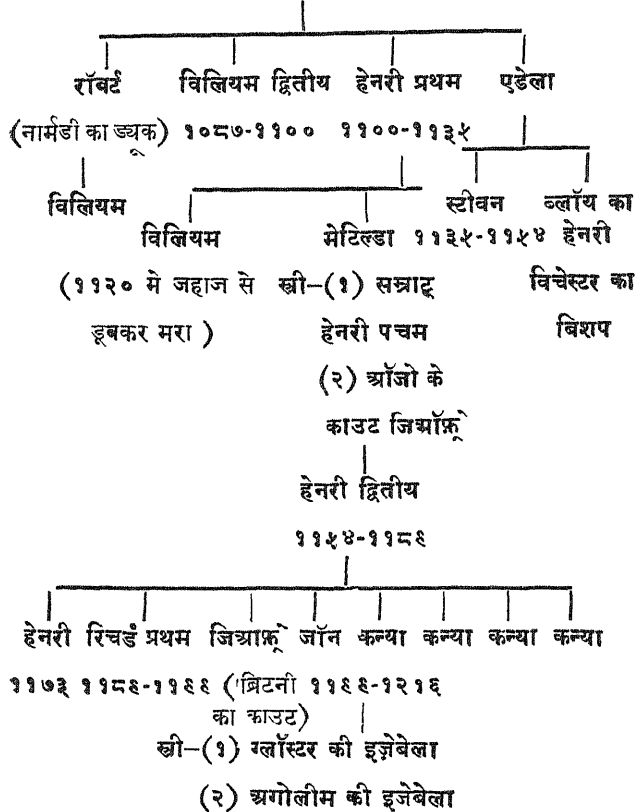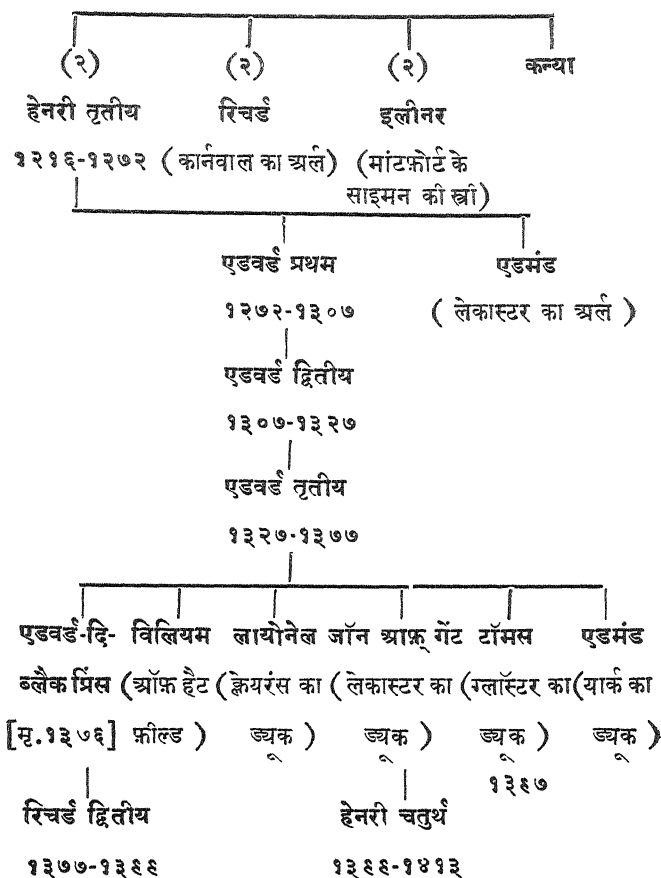
तृतीय अध्याय

अँगरेज़ों में जातीयता का उदय

(१२१६-१३६६)

प्रथम परिच्छेद

हेनरी तृतीय (१२१६-१२७२)

जॉन का बड़ा पुत्र ६ ही वर्ष का था कि राजा के मित्रों ने उसे हेनरी तृतीय के नाम से इँगलैंड का राजा उद्घोषित कर दिया। हेनरी के बालक होने के कारण, उसके स्थान पर पेंब्रोक (Pembroke) के अर्ल विलियम मार्शल (William Marshall, Earl of Pembroke) ने इँगलैंड तथा आयर-लैंड का शासन करना प्रारंभ किया। उसके दूर-दर्शिता-पूर्ण कार्य से बाल-राजा के मित्रों की संख्या क्रमशः बढ़ती गई। बैरनों के विद्रोह शांत करने के लिय हेनरी तृतीय के नाम से 'महास्वतंत्रता-पत्र' निकालकर पेंब्रोक ने बहुत ही उत्तम कार्य किया, क्योंकि इससे लूइस को धूर्तता करने का अवसर न मिला। १२१७ में पेंब्रोक ने लूइस को लिंकन पर, एक सम्मुख-युद्ध में, बुरी तरह पराजित किया, और इसी समय 'ह्यबर्ट-डि-बर्ग' (Hubert de Burgh)

ने उसके जहाज़ी बेड़े को डोवर की लड़ाई में नष्ट कर दिया। परिणाम यह हुआ कि उसने विलियम मार्शल से 'लैंबेथ' की संधि (Peace of Lambeth) कर ली। इसके अनुसार उसने इँगलैंड का पीछा छोड़ दिया। लूइस के इँगलैंड छोड़ते ही 'महास्वतंत्रता-पत्र' पुनः एक नवीन रूप में निकाला गया। इसमें जंगल के नियमों की कठोरताएँ बहुत कुछ कम कर दी गईं।

१२१६ में दूरदर्शी विलियम मार्शल की मृत्यु हो गई। इसके बाद कैंटर्बरी के आर्चबिशप लैंगटन और ह्यूबर्ट-डि-बर्ग ने ही राज्य-कार्य चलाना प्रारंभ किया। पोप के प्रतिनिधि पेंडुल्फ (Pendulf) के हस्तक्षेपों से तंग आकर आर्चबिशप ने उसे रोम बुला लेने के लिये पोप को विवश किया। इन्हीं दिनों फ़ाल्क्स (Falkes) तथा रोचिज़ (Roches)-नामक जॉन के विदेशी मित्रों ने राज्य-कार्य में विघ्न डालना चाहा, परंतु उन्हें ह्यूबर्ट-डि-बर्ग ने दबा दिया।

१२२७ में पोप ने हेनरी तृतीय को स्वयं ही राज्य-कार्य चलाने के लिये आज्ञा दे दी। १२२८ में लैंगटन की मृत्यु हो गई। १२३२ में पीटर-डि-रोचिज़ (Peter-de-Roches) ने हेनरी को अपने वश में कर लिया और ह्यूबर्ट को पद-च्युत करवाकर स्वयं उसका स्थान ले लिया। इन दिनों

कैंटबेरी का आर्चबिशप 'एडमंड रिच' था। इसने हेनरी तृतीय को समझाया कि तू पीटर-डि-रोचिज़ को इँगलैंड से निकाल दे। आर्चबिशप की बात उसकी समझ में आ गई और उसने रोचिज़ को निकाल दिया।

हेनरी तृतीय स्वभाव का प्रमादी तथा अकर्मण्य था। इसी कारण वह सफलता-पूर्वक राज्य न कर सका। इसमें संदेह नहीं, वह धर्मात्मा तथा कोमल-हृदय था। विद्या तथा पुस्तकों से उसे प्रेम था। अपने आंग्ल होने का उसे अभिमान था। इसीलिये उसने अपने बड़े पुत्र का नाम एडवर्ड रक्खा था। बैरन लोगों पर उसका बिलकुल विश्वास न था, अतः उसने विदेशियों द्वारा ही इँगलैंड का शासन करना चाहा। १२३४ से १२५८ तक इँगलैंड में विदेशियों के झुंड-के-झुंड आते गए और सब उच्च पद क्रमशः उन्हीं के हाथ में चले गए।

(१) हेनरी तृतीय तथा विदेशी

१२३६ में हेनरी ने प्रोवेंस (Provence) के शासक की कन्या 'इलीनर' के साथ विवाह कर लिया। लूइस नवम की स्त्री मार्गरेट इसकी बहन थी और 'सेवाय' (Savoy) का शासक इसका नाना था। सेवाय तथा प्रोवेंस के छोटे-छोटे ताल्लुक़ेदारों ने इलीनर के कारण इँगलैंड आना प्रारंभ किया

और हेनरी की कृपा से वे अपने को मालामाल करने लगे। इन्हीं विदेशियों में से मांटफ़ोर्ट के साइमन ने, राजा की कृपा से, लीस्टर के अर्ल का पद प्राप्त किया और उसकी बहन इलीनर से विवाह भी कर लिया।

इन्हीं दिनों पोप ने भी इँगलैंड को लूटने का पूरा प्रयत्न किया। इनोसेंट तृतीय (Innocent III) के उत्तराधिकारी ने इँगलैंड पर अपने और अधिक अधिकार प्रकट किए। उसने अच्छे-अच्छे गिरजाघरों का स्वामित्व फ़्रांसीसी तथा इटैलियन पुरोहितों को दे दिया। ये लोग धर्म का काम तो कुछ नहीं करते थे ; हाँ, गिरजाघरों की संपत्ति से धन इकट्ठा करके अपने को समृद्ध बनाते थे। पोप तथा सम्राट् फ़्रेडरिक द्वितीय के युद्धों के कारण इँगलैंड पर पहले से अधिक कर लगाए गए। पोप ने 'ओटो'-नामक इटैलियन को अपना प्रतिनिधि (Legate) बनाकर भेजा। ओटो के व्यवहार से अँगरेज़ क्रुद्ध थे। १२३८ में ऑक्सफ़ोर्ड के विद्वानों से उसका झगड़ा हो गया। परिणाम यह हुआ कि उसे इटली लौट जाना पड़ा।

आर्चबिशप एडमंड ने प्रजा को राजा और पोप के अत्याचारों तथा लूटों से बचाना चाहा। परंतु जब वह यह कठिन कार्य न कर सका, तो निराश होकर विदेश चला गया और वहीं मर गया। उसके साधु-स्वभाव के प्रभाव से लोग उसे

'संत एडमंड' नाम से पुकारने लगे। उसका नाम सर्वत्र विख्यात हो गया।

१२४२ में हेनरी ने अपने पिता के खोए हुए राज्यों को फ्रांस से जीतना चाहा, परंतु टैलिबर्ग (Taillebourgh) के युद्ध में पराजित होकर इँगलैंड लौट आया। १२४८ में गैस्कनी (Gascony) के उद्दंड ताल्लुक़ेदारों का नियंत्रण करने के लिये उसने साइमन को भेजा। गैस्कनी पहुँचते ही साइमन ने दृढ़ता से शासन किया और सारे राज्य में पूर्ण शांति स्थापित कर दी। उसकी दृढ़ता से क्रुद्ध होकर कुछ गैस्कनों ने हेनरी से उसकी शिकायत की, अतएव हेनरी ने उसे इँगलैंड बुला लिया। इस घटना से साइमन हेनरी का विरोधी हो गया और अन्य असंतुष्ट आंग्ल-बैरनों के साथ मिल गया। इन्हीं दिनों पोप ने हेनरी को धोखा दिया कि यदि तुम मुझे बहुत-सा रुपया दे दो, तो मैं सिसली का प्रदेश जीतकर तुम्हारे पुत्र 'एडमंड' को ही वहाँ का राजा बना दूँ। बेचारा हेनरी पोप की चालाकी नहीं समझा और धोखे में आ गया। परिणाम यह हुआ कि रुपया लेकर पोप ने अपना तो काम निकाला और उसे अंत तक चकमा ही देता रहा।

(२) जनता की उन्नति

हेनरी तथा पोप के कार्यों से आंग्ल-जनता को जो कष्ट

पहुँचे थे, उनका उल्लेख किया ही जा चुका है। हेनरी का कुप्रबंध जनता को इसलिये भी असह्य था कि वह राजनीतिक विषयों में दिन-दिन अवनति कर रही थी। हाँ, धार्मिक विषयों में उसकी उन्नति हो रही थी। इन्हीं दिनों 'मेंडिकैंट' भिक्षुओं (Mendicant Friars) का उदय हुआ था, जिनके डॉमिनिकेन (Dominican Friars) तथा फ्रांसिस्केन (Franciscan Friars)-नामक दो संघों ने योरप में बहुत ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त की थी। १२२१ से १२२४ तक इन भिक्षुओं ने इँगलैंड मे भी पदार्पण किया और वहाँ एक नवीन धार्मिक जान डाल दी। आश्चर्य की बात यह है कि इँगलैंड में विश्वविद्यालयों का प्रारंभ भी इसी समय से हो जाता और मध्य-कालीन कला-कौशल पूर्णता प्राप्त करता है। इन दिनों व्यापार-व्यवसाय और नगर-क़स्बों की वृद्धि से इँगलैंड दिन-दिन समृद्ध होता जा रहा था। जातीयता का भाव (National Spirit) भी उसमें अंकुरित हो गया था। १२५८ में अर्ल साइमन के नेतृत्व में बैरनों ने राजा तथा उसके मित्रों की शक्ति नष्ट कर दी।

(क) "पागल" पार्लिमेंट (१२५८)

१२५८ में राजा को धन की अत्यंत अधिक आवश्यकता हुई। अतः उसने वेस्ट-मिंस्टर में पार्लिमेंट का अधिवेशन

किया और बैरनों से रुपया माँगा ; परंतु उन्होंने नहीं दिया। कुछ मास बाद, जून में, पुनः पार्लिमेंट का अधिवेशन किया गया। इसमें सब बैरन सशस्त्र और ससैन्य आए थे, क्योंकि उन्हें वेल्स में युद्ध करने के लिये जाना था। राजा के मित्रों ने ऑक्सफ़ोर्ड की इस पार्लिमेंट को 'पागल पार्लिमेंट' का नाम दिया, क्योंकि इसने राजा के अधिकारों को पद-दलित और उसके मित्रों की शक्ति को सर्वथा नष्ट कर दिया था। पागल पार्लिमेंट ने २४ व्यक्तियों की एक उपसमिति को यह कार्य सौंपा कि वह 'आगे इँगलैंड का राज्य कैसे चलाया जाय', इस पर अपनी सम्मति प्रकट करे। कुछ ही दिनों बाद उपसमिति की सम्मति आई, जिसके अनुसार पंद्रह व्यक्तियों की एक स्थिर उपसभा (Standing Sub-committee) नियत की गई, जो राजा को प्रबंध के मामले में सदा ही सलाह दिया करे। सब विदेशियों को देशनिकाला दे दिया गया। सारी पार्लिमेंट ने १२ व्यक्तियों को अपना प्रतिनिधि चुना, जो वर्ष में तीन बार 'स्थिर उपसमिति' के साथ संपूर्ण राजकीय प्रश्नों पर विचार किया करे।

१२५९ में इँगलैंड ने फ़्रांस से संधि कर ली। यह संधि 'पेरिस की संधि' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार राजा के संपूर्ण फ़्रेंच प्रदेश लूइस ने ले लिए और गैस्कनी तथा इँग-

लिश चैनेल (English Channel) के कुछ द्वीप हेनरी को दे दिए।

(ख) बैरन-युद्ध (१२६३)

पागल पार्लिमेंट द्वारा नियत की गई १५ व्यक्तियों की उपसमिति ने राज्य-कार्य अच्छी तरह नहीं चलाया। इससे जनता में भयंकर असंतोष फैल गया। लीस्टर के अर्ल साइमन ने असंतुष्ट दल का नेतृत्व ग्रहण किया, परंतु ग्लॉस्टर के अर्ल रिचर्ड ने उसका साथ नहीं दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि बैरनों के दो हिस्से हो गए। हेनरी तथा उसके पुत्र एडवर्ड ने इस झगड़े से पूर्ण लाभ उठाया, और अपने को जनता का नेता बना लिया। कुछ समय तक एडवर्ड तथा साइमन साथ मिलकर काम करते रहे; परंतु अंत में दोनों की नहीं बनी, और एडवर्ड साइमन का जानी दुश्मन हो गया। हेनरी ने १५ व्यक्तियों की उपसमिति तोड़ दी और स्वच्छंदता-पूर्वक शासन करने लगा। इससे संपूर्ण बैरन साइमन से मिल गए और राजा से युद्ध करने के लिये तैयारियाँ करने लगे। राजा तथा बैरन शक्ति में बराबर थे, अतः चिरकाल तक लड़ाई होती रही। १२६३ के दिसंबर में दोनों ही दलों ने संपूर्ण निर्णय फ़्रांस के राजा लूइस पर छोड़ दिया। उसने हेनरी के पक्ष में ही अपना निर्णय दिया। साइमन को यह कब

स्वीकृत हो सकता था ? उसने फ़ौरन् हेनरी के विरुद्ध लड़ाई ठान दी। आरंभ में राजा ने बड़ी सफलता प्राप्त की और केंट तथा ससेक्स जीतकर वह ल्यूज़ (Lewes) नाम के स्थान पर जा पहुँचा। साइमन ने अपूर्व चतुरता से हेनरी और एडवर्ड, दोनों को वहाँ क़ैद कर लिया और उन्हें नए ढंग पर राज्य करने के लिये विवश किया। ६ व्यक्तियों की एक उपसमिति बनाई गई। राजा के स्थान पर वास्तव में यह उपसमिति ही इँगलैंड का शासन करने लगी। इन्हीं दिनों रानी इलीनर (Eleanor) तथा वेल्स के सीमाप्रांतीय लॉर्डों ने फ़्रांस में सेना एकत्र की और इँगलैंड पर आक्रमण करने का अवसर देखने लगे।

(ग) साइमन की पार्लिमेंट (१२६५)

रानी तथा सीमाप्रांतीय लॉर्डों के आक्रमण से देश को सुरक्षित रखने के लिये साइमन ने आंग्ल-जनता को अपनी ओर मिला लेना आवश्यक समझा। १२६५ में उसने लोक-सभा (House of Commons) का सबसे प्रथम अधिवेशन किया। इसमें संपूर्ण जनता के प्रतिनिधि उपस्थित थे। आंग्ल-इतिहास में साइमन की यह पार्लिमेंट बहुत विख्यात है। अँगरेज़ साइमन को बहुत पूज्य दृष्टि से देखते हैं,

क्योंकि यही पहला व्यक्ति है, जिसने उन्हें स्वतंत्रता तथा शक्ति का मार्ग दिखाया। किंतु पार्लिमेंट से सहायता मिलने पर भी साइमन की शक्ति नहीं बढ़ी। इसका कारण यह था कि बैरन लोग स्वार्थी थे और उन्हें साइमन की नीति पसंद नहीं थी। ग्लॉस्टर के अर्ल ने सबसे पहले उसका विरोध किया और ग्लैमरगान में उसके विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया। साइमन ग्लैमरगान की ओर शीघ्र ही सेना-सहित चल पड़ा और अपने साथ हेनरी तथा एडवर्ड को भी लेता गया। अवसर पाकर एडवर्ड उसकी क़ैद से भाग गया और ग्लॉस्टर के अर्ल से मिल गया।

ईवशैम (Evesham)-नामक स्थान पर साइमन तथा एडवर्ड का भयंकर युद्ध हुआ। साइमन के पास सेना बहुत थोड़ी थी, अतः वह युद्ध में परास्त हुआ और मारा गया। एडवर्ड ने अपने पिता को साइमन की क़ैद से छुड़ा लिया। वेल्स का राजा साइमन का साथी था। उसको शांत करने के लिये एडवर्ड ने उससे 'श्रूज़बरी' (Shrewsbury) की संधि कर ली और शासन करने के लिये उसे वेल्स के बहुत-से प्रदेश दिए। थोड़े समय बाद ही एडवर्ड क्रूज़ेड पर चला गया और वृद्ध हेनरी अकेला ही इँगलैंड का शासन करता रहा। १२७२ के नवंबर में वृद्ध राजा की मृत्यु हो गई और

वह वेस्टमिंस्टर के गिरजाघर में दफ़नाया गया। हेनरी तृतीय के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१२१६	हेनरी तृतीय का राज्याधिरोहण
१२१७	लिंकन का युद्ध
१२१९	विलियम मार्शल की मृत्यु
१२३२	ह्यूबर्ट-डि-बर्ग का अधःपतन
१२४८	साइमन गैस्कनी का शासक नियत किया गया
१२५८	पागल पार्लिमेंट और ऑक्सफ़ोर्ड के नियम
१२५९	पेरिस की संधि
१२६४	ल्यूज़ का युद्ध
१२६५	साइमन की पार्लिमेंट
१२६५	ईवशैम का युद्ध
१२६७	श्रूज़बरी की संधि
१२७२	हेनरी तृतीय की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

एडवर्ड प्रथम (१२७२-१३०७)

एडवर्ड प्रथम ३३ वर्ष की आयु में राज्यासन पर बैठा। इसने बैरन-युद्ध में पिता की जिस प्रकार सहायता की थी, उसका उल्लेख किया जा चुका है। यह दृढ़-प्रकृति, साहसी, कर्मण्य तथा स्वेच्छाचारी था। इसमें शक्ति प्राप्त करने की बहुत प्रबल इच्छा थी। अतः इसने प्रजा के प्रति बहुत अधिक सहानुभूति प्रकट की और उसकी सहायता से बैरनों पर पूरे तौर पर स्वेच्छाचारी शासन किया। यह मिजाज़ का गरम था और क्रोध में आकर अक्सर क्रूर-से-क्रूर कर्म कर बैठता था। आंग्ल-इतिहास में इसका राज्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अँगरेज़-इतिहासज्ञ इसको स्कॉटलैंड का प्रथम विजेता तथा प्रसिद्ध नियम-निर्माता (Law-giver) की उपाधि से सुशोभित करते हैं।

(१) एडवर्ड प्रथम और विदेशी युद्ध (Foreign wars)

(क) वेल्स का प्रथम युद्ध

वेल्स के राजों ने एडवर्ड प्रथम को राज्य पर आते ही कष्ट पहुँचाया। 'ल्यूलिन' (Llewelyn)-नामक वैल्श (Welsh)

राजा ने अपने-आपको 'साइमन' का शिष्य प्रकट किया और १२७५ में साइमन की कन्या से विवाह करने के लिये उद्योग करने लगा। दैवी घटना से साइमन की कन्या वेल्स जाते समय एडवर्ड के मित्रों के हाथ पड़ गई और उन्होंने उसको लंदन भेज दिया। १२७७ में एडवर्ड ने उत्तरीय वेल्स पर एक भयंकर आक्रमण किया और वैल्श राजा को 'कांवे की संधि' (Treaty of Conway) की शर्तों को स्वीकृत करने पर बाध्य किया। इस संधि के अनुसार उससे संपूर्ण वैल्श प्रांत छीन लिए गए, जो उसने श्रूजवरी के युद्ध में जीते थे।

जीते हुए प्रांतों पर एडवर्ड तथा उसके प्रतिनिधियों का शासन बहुत कठोर हुआ। इससे वैल्श प्रजा में भयंकर असंतोष फैला और वह विद्रोह करने को तैयार हो गई। ल्यूलिन (Llewelyn) तथा उसके भाई डेविड ने इन विद्रोहियों को पूर्ण सहायता पहुँचाई। इसका परिणाम यह हुआ कि १२८२ में एक बड़ी सेना के साथ एडवर्ड ने वेल्स पर आक्रमण किया और युद्ध में डेविड तथा ल्यूलिन को पराजित किया। ल्यूलिन युद्ध में ही मारा गया और डेविड पकड़ा जाकर फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

ल्यूलिन के मारे जाने पर जब वैल्श लोग बहुत खिन्न

हुए, तो एडवर्ड प्रथम ने अपने सद्योत्पन्न कुमार को दोनों हाथों में उठाकर कहा कि लो, यह तुम्हारा कुमार है, जो अँगरेज़ी का एक शब्द भी नहीं बोल सकता।

१२८४ में एडवर्ड प्रथम ने वेल्स के शासन के लिये बहुत-से राज्य-नियम बनाए। इसने संपूर्ण वेल्स को पाँच मंडलों में विभक्त कर दिया।

स्नोडन (Snowdon) के मंडल को पूर्ण रूप से वश में रखने के लिये एडवर्ड ने उसके चारों ओर बहुत-से दुर्ग बनाए और दुर्गों के बाहर आंग्ल-उपनिवेश स्थापित किया, जिससे वेल्स-निवासी फिर कभी विद्रोह न कर सकें। इन संपूर्ण वैल्श प्रदेशों का शासक उसने अपने पुत्र, वेल्स के कुमार, एडवर्ड को निश्चित किया। एडवर्ड के इस कार्य से वैल्श अपना दुःख भूलकर शांत हो गए। तभी से आंग्ल-राजों का ज्येष्ठ पुत्र आज तक वेल्स का कुमार (Prince of Wales) कहलाता है।

(ख) स्कॉटलैंड-विजय—और आदर्श पार्लिमेंट

१२८६ में स्कॉटलैंड के राजा 'ऐलेग्ज़ेंडर तृतीय (Alexander III) की मृत्यु हो गई। यह निस्संतान मरा। इसके एक कन्या थी, परंतु वह भी मर चुकी थी। उस कन्या से नार्वे के राजा के द्वारा 'मार्गरेट' (Margaret)-नामक एक

कन्या उत्पन्न हुई थी, परंतु नाना की मृत्यु के समय वह अभी अल्प-वयस्क थी। स्कॉच-सरदारों ने मार्गरेट ही को अपनी रानी प्रसिद्ध कर दिया।

एडवर्ड प्रथम स्कॉटलैंड की संपूर्ण घटनावली को बहुत ध्यान से देख रहा था। मार्गरेट के रानी प्रसिद्ध होते ही एडवर्ड ने स्कॉच-सरदारों से रानी का विवाह अपने पुत्र के साथ कर देने के लिये कहा। उन्होंने बहुत प्रसन्नता से एडवर्ड का प्रस्ताव मान लिया। स्कॉटलैंड के दुर्भाग्य से, नार्वे से स्कॉटलैंड आते समय, मार्गरेट मार्ग ही में मर गई। उसकी मृत्यु का समाचार पहुँचते ही स्कॉच-सरदारों में उत्तराधिकार का झगड़ा प्रारंभ हो गया।

इस झगड़े का निर्णय स्कॉच-सरदारों ने एडवर्ड पर छोड़ा। एडवर्ड ने मार्गरेट का उत्तराधिकारी जॉन बैलियल (John Baliol) को घोषित किया। बैलियल ने एडवर्ड को अधीनता-सूचक कर दिया (Did homage) और वह स्कॉटलैंड के सिंहासन पर बैठा।

स्कॉटलैंड के बहुत-से झगड़ों को तय करने के लिये एडवर्ड ने अभियुक्तों को इँगलैंड में ही बुलाना प्रारंभ किया। इस बात से क्रुद्ध होकर स्कॉच-सरदारों ने सबसे पहले 'जॉन बैलियल' पर ही अपना हाथ साफ़ किया और उसको १२

लॉर्डों की एक उपसमिति के द्वारा शासन करने के लिये विवश किया। इस उपसमिति ने एडवर्ड के साथ अपने सारे संबंध तोड़ दिए और फ्रांस के साथ मित्रता करनी प्रारंभ की। इन्हीं दिनों फ्रांस तथा इँगलैंड के संबंध खिंच रहे थे, जिसके निम्न-लिखित कारण थे—

(१) एडवर्ड का गैस्कनी पर पहले से ही राज्य था; अपनी स्त्री इलीनर (Eleanor) के द्वारा उसको पोंथियों का राज्य भी प्राप्त हो गया। इस प्रकार एडवर्ड की शक्ति फ्रांस में क्रमशः बढ़ रही थी, जो फ्रांस के राजा फ़िलिप पंचम को सह्य नहीं थी।

(२) इन्हीं दिनों फ्रांसीसी तथा अँगरेज़-मल्लाहों में झगड़ा हो गया। फ्रांसीसी मल्लाहों ने शरारत करके एक मरे कुत्ते तथा आंग्ल-मल्लाह को एक ही स्थान पर लटका रक्खा था, और यह दिखाते फिरते थे कि कुत्तों तथा आंग्लों में कोई अंतर नहीं है।

(३) १२६३ में अँगरेज़-मल्लाहों ने फ्रांसीसी मल्लाहों पर आक्रमण कर दिया और उनको क्रूरता से मारा। एडवर्ड ने फ़िलिप से मिलकर इस झगड़े को तय करना चाहा; परंतु जब झगड़ा तय न हुआ, तो उसने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध प्रारंभ कर दिया।

फ़्रांस ने एडवर्ड के आक्रमणों से अपने को सुरक्षित करने के लिये स्कॉटलैंड को सहायता पहुँचाई और स्कॉच-सरदारों को इँगलैंड पर आक्रमण करने के लिये प्रेरित किया। ऐसी विपत्ति के समय एडवर्ड ने आंग्ल-प्रजा से सहायता लेने का निश्चय किया। अतः उसने १२९५ में पादरियों, नागरिकों तथा बैरनों के प्रतिनिधियों को बुलाया और उनसे युद्धार्थ धन माँगा। आंग्ल-इतिहास में यह पार्लिमेंट 'आदर्श पार्लिमेंट' (Model Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि इसमें कुल जनता के प्रतिनिधि उपस्थित थे। आदर्श पार्लिमेंट ने एडवर्ड को बहुत-सा धन दिया।

१२९६ में एडवर्ड ने स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया। जॉन बैलियल ने शीघ्र ही उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। इस पर उसने संपूर्ण स्कॉच-भूमिपतियों से अधीनता-सूचक कर लिया और स्कॉटलैंड के 'पवित्र पत्थर' (Sacred Stone) को इँगलैंड में पहुँचा दिया। इसी पवित्र पत्थर पर बैठकर स्कॉटलैंड के राजों का राजतिलक हुआ करता था। आज भी इँगलैंड का राजसिंहासन इसी पत्थर के ऊपर रक्खा जाता है और इँगलैंड के राजा, जो स्कॉटलैंड के भी राजा होते हैं, अभिषिक्त किए जाते हैं। इन्हीं दिनों एडवर्ड के साथ चर्च तथा बैरनों ने शत्रु का काम किया। कैंटबरी के आर्चबिशप,

'रॉबर्ट विंचलसी' (Robert Winchelsey) ने उसको अधिक कर देना बंद कर दिया और १२९७ की साल्सबरी की पार्लिमेंट में नार्फ़ोक और हर्फ़ोर्ड (Herrford) के अर्लों ने गैस्कनी में लड़ने के लिये जाने से इनकार कर दिया और जब एडवर्ड ने उनको फाँसी की धमकी दी, तो उन्होंने विंचलसी (Winchelsey) के साथ मिलकर एक बड़ी भारी सेना एकत्र की। एडवर्ड के फ़्रांस जाते ही इन दोनों अर्लों ने लंदन में प्रवेश किया और स्वतंत्रता-पत्र में अन्य बहुत-सी बातें जोड़कर उस पर एडवर्ड के प्रतिनिधि से हस्ताक्षर करवाए और उसको फ़्रांस भेज दिया। लाचार होकर एडवर्ड ने उस पर हस्ताक्षर कर दिए।

स्कॉटलैंड को एक बार पराजित करके भी उसे पूर्ण शांति नहीं मिली, क्योंकि सर विलियम वालेस (Sir William Wallace) के नेतृत्व में स्कॉच-सरदारों ने आंग्लों के विरुद्ध पुनः विद्रोह कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि एडवर्ड को फ़्रांस छोड़कर पुनः स्कॉटलैंड पर आक्रमण करने के लिये ससैन्य प्रस्थान करना पड़ा। उसने वालेस को फ़ाल्कर्क के प्रसिद्ध युद्ध में हराया। वालेस हारकर फ़्रांस भाग गया। यह देख उसने समझ लिया कि वह फ़्रांस तथा स्कॉटलैंड के साथ नहीं लड़ सकता। अतः उसने १२९९ में फ़्रांस के

साथ संधि कर ली और फ़िलिप की बहन 'मार्गरेट के साथ विवाह भी कर लिया।

१३०३ में फ़िलिप ने पोप बॉनिफ़ेस (Boniface) को पराजित किया। इसके अनंतर एक गैस्कनी-निवासी क्लिमेंट (Clement) पंचम के नाम से पोप बना। पोप बनने के अनंतर भी यह फ्रांस में ही रहा और इसने एडवर्ड के साथ भी झगड़ा नहीं किया। एडवर्ड ने ऐसा अच्छा अवसर पाकर आर्च-बिशप विंचलसी को देश-निकाला दे दिया और इस प्रकार बैरनों के साथ मिलने का उससे पूरा बदला लिया। उसने आर्च-बिशप के सदृश ही बैरनों को भी नीचा दिखाने का यत्न किया, परंतु १३०० में उसको स्वयं ही नीचा देखना पड़ा। १३०० में बैरनों ने उससे जो स्वतंत्रता-पत्र लिया, वह 'आर्टिकुली सुपरकार्टस' (Articule Super Cartus) कहलाता है। इसमें उसका जंगलों पर प्रभुत्व बहुत कुछ कम करने का यत्न किया गया।

१३०३ में एडवर्ड ने संपूर्ण बल से स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया और १३०४ में स्टरलिंग (Stirling) के प्रसिद्ध नगर को हस्तगत कर लिया। इस आक्रमण में वालेस आंग्लों के हाथ क़ैद हो गया और १३०५ में लंदन के अंदर मरवा डाला गया। स्कॉच-जनता में वालेस का वही मान है, जो राणा

प्रताप का आर्य-जनता में । अपने देश की स्वतंत्रता के लिये उसने जो कुछ भी किया, वह प्रशंसनीय है ।

एडवर्ड ने अभी स्कॉटलैंड के शासन के विषय में विचार करना प्रारंभ ही किया था कि रॉबर्ट ब्रूस (Robert Bruce) के नेतृत्व में स्कॉटलैंड ने पुनः विद्रोह कर दिया । १३०७ में उसने, ७० वर्ष की उमर में, पुनः स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया, परंतु मार्ग में ही मर गया । इसकी मृत्यु से स्कॉटलैंड बहुत काल के लिये स्वतंत्र हो गया ।

(२) एडवर्ड प्रथम और राज्य-नियम

आंग्ल-इतिहास में एडवर्ड प्रथम नियम-निर्माता और योग्य शासक प्रसिद्ध है । राज्य-प्रबंध को उत्तम बनाने के लिये उसने समय-समय पर जो-जो नियम बनाए, वे इस प्रकार हैं—

(१) वेस्ट-मिंस्टर का प्रथम नियम (१२७५)—

इस नियम के अनुसार आंग्ल-जनता को पार्लिमेंट के सभ्यों के चुनाव के विषय में बहुत स्वतंत्रता दी गई । इसी के एक भाग में राजा को ऊन तथा अन्य व्यापारिक पदार्थों पर कर लगाने का अधिकार दिया गया ।

(२) ग्लॉस्टर का नियम (१२७८)—इस नियम के अनुसार बैरनों के न्यायालयों की जाँच की गई । प्रत्येक

बैरन से 'न्याय करने का अधिकार-पत्र' माँगा गया, और जिनके पास अधिकार-पत्र नहीं निकले, उनको न्याय करने से मना कर दिया गया। इस नियम से बैरनों की क्रोधाग्नि भभक उठी; किंतु एडवर्ड के शक्तिशाली तथा प्रबल राज्य में शांत रहने के सिवा वे कर ही क्या सकते थे? एडवर्ड ने भी इस नियम का पूरा उपयोग नहीं किया।

(३) **मार्टमैन का नियम** (१२७९)—यह नियम केवल इस उद्देश से पास किया गया कि चर्चों को दान में भूमि न दी जाय। इस नियम के द्वारा एडवर्ड का मुख्य उद्देश चर्च की शक्ति तथा संपत्ति को कम करना ही था। कैंटर्बरी के आर्च-बिशप ने इस नियम का पूर्ण विरोध किया, परंतु विरोध में कृतकार्य नहीं हो सका।

(४) **वेस्ट-मिंस्टर का द्वितीय नियम** (१२८५)—यह नियम भूमि के दान-प्रतिदान को उचित रीति पर लाने के लिये बनाया गया था। यह इसी नियम का परिणाम है कि आंग्ल-लॉर्डों में सारी भौमिक संपत्ति सब पुत्रों में बराबर-बराबर बँटने की जगह एक-मात्र बड़े पुत्र को ही मिलती है।

(५) **विंचेस्टर का नियम** (१२८५)—इस नियम के अनुसार सौ-सौ पुरुषों के प्रत्येक संघ पर, वैयक्तिक अपराध, षड्यंत्र, गुप्त मंत्रणा, विद्रोह आदि बुराइयों के रोकने

तथा पता लगाने का उत्तरदायित्व रक्खा गया। जातीय सेना के लिये सैनिक तैयार करना भी इसी संघ का काम था।

(६) **वेस्टमिंस्टर का तृतीय नियम (१२९०)**—इस नियम के अनुसार आंग्ल-भूमिपतियों को भूमि के क्रय-विक्रय में स्वतंत्रता दी गई। भूमि के क्रेता का राजा के साथ वही संबंध हो जाता था, जो पहले विक्रेता का राजा के साथ था। इस नियम का अंतिम परिणाम यह हुआ कि बैरन लोगों की शक्ति कम हो गई।

इन नियमों के साथ-साथ एडवर्ड ने शासन पर भी तीव्र दृष्टि रक्खी। १२८६ से १२८९ तक वह विदेश में रहा। अतः उसके पीछे न्यायाधीशों ने बहुत रिश्वत ली। विदेश से लौटने पर उसने न्यायाधीशों के इस तरह घूस लेने का अन्वेषण किया और चार को छोड़कर सब पर जुर्माना किया।

यहूदी लोगों से आंग्ल-प्रजा पीड़ित थी, क्योंकि ये लोग अधिक सूद पर रुपया उधार देकर ग़रीबों को सताते थे। एडवर्ड ने इनको इँगलैंड से निकाल दिया। एडवर्ड के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१२७२	एडवर्ड प्रथम का राज्याधिरोहण

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१२७७	प्रथम वैल्श-युद्ध
१२७६	मार्टमैन का नियम
१२८२-१२८३	उत्तरीय वेल्स की विजय
१२८५	वेस्ट-मिस्टर का द्वितीय नियम और विंचेस्टर का नियम
१२६०	वेस्ट-मिंस्टर का तृतीय नियम
१२६२	जॉन बैलियल का स्कॉटलैंड का राजा बनना
१२६५	आदर्श पार्लिमेंट
१२६६	स्कॉटलैंड की प्रथम विजय
१२६८	फाल्कर्क की लड़ाई
१३०३-१३०४	स्कॉटलैंड की द्वितीय विजय
१३०६	रॉबर्ट ब्रूस का विद्रोह
१३०७	एडवर्ड प्रथम की मृत्यु

तृतीय परिच्छेद

एडवर्ड द्वितीय (१३०७-१३२७)

एडवर्ड द्वितीय २३ वर्ष की आयु में इँगलैंड के सिंहासन पर बैठा। पिता की तरह ही आकृति में सुंदर तथा अच्छे डील-डौल का होने पर भी यह बहुत प्रमादी तथा तुच्छ-प्रकृति का था। अपने कृपा-पात्रों (Favourites) के वशीभूत होकर ही इसने अपना सारा राज्य नष्ट कर दिया। एडवर्ड द्वितीय का इतिहास उसके मित्रों का इतिहास है। बचपन में ही इसकी मित्रता 'पियर्स गैवस्टन' (Piers Gaveston) नाम के एक गैस्कनी-निवासी से हो गई थी। एडवर्ड प्रथम ने इस गैवस्टन को बुरी संगति में पड़ते देखकर इँगलैंड से निकाल दिया था; किंतु एडवर्ड द्वितीय ने राज्य पर बैठते ही उसे विदेश से फिर बुला लिया और उस पर अनुग्रह-पर-अनुग्रह करना शुरू किया, यहाँ तक कि ग्लास्टर के अर्ल की बहन से उसका विवाह करके उसे कार्नवॉल का अर्ल बना दिया। गैवस्टन में कटु-भाषण का सबसे बड़ा दोष था। उसकी कटुवाणी तथा अभिमान से क्रुद्ध होकर आंग्ल-बैरनों ने, १३०८ की पार्लिमेंट में, उसको देश-निकाले का दंड दे दिया। एडवर्ड ने उसके

दंड को हलका किया और उसको आयर्लैंड का शासक बनाकर भेज दिया। १३०९ में एडवर्ड ने राज्य में बहुत-से सुधार किए। इन सुधारों से प्रसन्न होकर पार्लिमेंट ने 'गैवस्टन' का उसके पास रहना स्वीकृत कर लिया। १३१० में गैवस्टन से क्रुद्ध होकर बैरनों ने २१ लॉर्डों की सभा के द्वारा ही शासन करने के लिये एडवर्ड को विवश किया और गैवस्टन को जीवन-भर के लिये देश-निकाला दे दिया। १३१२ में एडवर्ड ने उसको फिर बुला लिया। यह बात सुनते ही बैरन लोगों ने सेना एकत्र कर ली और 'स्कारबरों' के दुर्ग में उसको क़ैद कर लिया; लेकिन फिर अभय-दान देकर छोड़ दिया। वारिक का अर्ल उसका जानी दुश्मन था, अतः उसने मौक़ा पाकर उसको मरवा डाला।

(१) स्कॉटलैंड से युद्ध

स्कॉटलैंड के राजा, राबर्ट ब्रूस पर एडवर्ड प्रथम ने आक्रमण किया था, यह पहले ही लिखा जा चुका है। एडवर्ड प्रथम की मृत्यु होने पर ब्रूस की शक्ति बहुत बढ़ गई। उसने संपूर्ण स्कॉटलैंड को जीत लिया। एडवर्ड प्रथम ने स्कॉटलैंड को वशीभूत करने के लिये जो दुर्ग बनाए थे, उनको भी उसने शीघ्र ही हस्तगत कर लिया। कोई दुर्ग बचा था, तो केवल स्टरलिंग का। बहुत बड़ी तैयारी के साथ ब्रूस ने स्टरलिंग के दुर्ग को घेर लिया

और दुर्ग-वासियों को इतना पीड़ित किया कि उन्होंने २४ जून, १३१४ को दुर्ग के फाटक खोल देने का निश्चय कर लिया।

एडवर्ड द्वितीय ने स्टरलिंग के दुर्ग को सुरक्षित करने के लिये सेना एकत्र की। अत्यंत आलस्य तथा प्रमाद के साथ वह २३ जून को दुर्ग के समीप पहुँचा। ब्रूस ने उससे बड़ी चतुरता के साथ युद्ध किया और आंग्लों को पूरी तरह हराया। आंग्ल-इतिहास में यह "बैनकबर्न (Bannockburn) का युद्ध" के नाम से प्रसिद्ध है।

(२) ह्यू डिस्पंसर्ज़ (Hugh Despensers)

बैनकबर्न के लज्जा-प्रद युद्ध के बाद एडवर्ड की शक्ति और भी कम हो गई। विंचलसी के आर्च-बिशप की मृत्यु होने पर अर्ल टॉमस का समुत्थान हुआ। यह बहुत स्वार्थी, लोभी तथा अयोग्य था। स्कॉच लोगों के आक्रमण से उत्तरीय आंग्ल प्रजा पीड़ित थी, पर इसने उनकी रक्षा के लिये कुछ भी यत्न नहीं किया। इन कारणों से अर्ल टॉमस प्रजा को अप्रिय हो उठा और एडवर्ड ने फिर सिर उठाया। 'गैवस्टन' की मृत्यु होने के बाद ह्यू डिस्पंसर्ज़ ने एडवर्ड की कृपा प्राप्त करने का यत्न किया। किंतु १३२१ में पार्लिमेंट के द्वारा ह्यू डिस्पंसर्ज़ को भी बैरन लोगों ने देश-निकाला दे दिया।

इस बात को सुनते ही एडवर्ड ने क्रुद्ध होकर सेना एकत्र

की और अर्ल टॉमस को वरों-ब्रिज (Battle of Borough-bridge) के युद्ध में परास्त करके मरवा डाला तथा डिस्पंसर्ज़ को इँगलैंड बुला लिया। १३२६ के बाद, उसी के द्वारा, वह आंग्ल-प्रजा का शासन करने लगा। डिस्पंसर्ज़ अभिमानी, लोभी तथा अति स्वार्थी था। उसने मूर्खता से रानी इज़ेबेला तथा अन्य बहुत-से व्यक्तियों का अपमान किया।

अपमान से क्रुद्ध होकर इज़ेबेला ने फ़्रांस से सहायता माँगी; पर जब वहाँ से उसको सहायता नहीं मिली, तब उसने हेनाल्ट-प्रदेश से सहायता लेने का यत्न किया। हेनाल्ट-राज-कुमारी फ़िलिप्पा के साथ अपने पुत्र एडवर्ड तृतीय का विवाह करके इज़ेबेला ने एक बड़ी सेना के साथ इँगलैंड पर आक्रमण कर दिया।

मुख्य-मुख्य आंग्ल-बैरनों तथा लंदन-निवासियों ने एडवर्ड द्वितीय का साथ छोड़ दिया। वे रानी इज़ेबेला के पक्ष में हो गए। डिस्पंसर्ज़ क़ैद होकर मारा गया। एडवर्ड द्वितीय भी निस्सहाय होकर इज़ेबेला के हाथ क़ैद हो गया। १३२७ में, वेस्ट-मिंस्टर में, पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ और एड-वर्ड तृतीय इँगलैंड का राजा बनाया गया। एक वर्ष के बाद ही एडवर्ड द्वितीय की किसी ने हत्या कर डाली।

एडवर्ड द्वितीय के समय की मुख्य ऐतिहासिक घटना १३२२

की पार्लिमेंट है। अर्ल टॉमस की मृत्यु हो जाने पर यार्क में इस पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ था। इसमें यह प्रस्ताव पास हुआ था कि "आगे से कोई राज्य-नियम तब तक 'नियम' न समझा जायगा, जब तक उसमें लार्ड-सभा के साथ लोक-सभा की भी स्वीकृति न हो।" 'लोक-सभा' की शक्ति का स्रोत इसी पार्लिमेंट में है। इसी समय से 'लोक-सभा' की सम्मति का कुछ मूल्य हुआ। एडवर्ड द्वितीय के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१३०७	एडवर्ड द्वितीय का राज्याधिरोहण
१३१२	गैवस्टन की मृत्यु
१३१४	बैनकबर्न का युद्ध
१३२२	बरों-ब्रिज का युद्ध
१३२६	इज़ेबेला का इँगलैंड पर आक्रमण
१३२७	एडवर्ड द्वितीय सिंहासन से च्युत किया गया

चतुर्थ परिच्छेद

एडवर्ड तृतीय (१३२७-१३७७)

१४ वर्ष की ही अवस्था में एडवर्ड तृतीय इँगलैंड के राज्य-सिंहासन पर बैठा। तीन वर्ष तक इज़ेबेला तथा मार्टिमर उसके नाम पर शासन करते रहे। लॉर्ड-सभा का सभापति लेंकास्टर का हेनरी था। मार्टिमर ने उसको राज्य-कार्य में भाग लेने का कुछ भी अवसर नहीं दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि वह इसके अधःपतन के उपाय सोचने लगा।

इन्हीं दिनों स्कॉटलैंड तथा फ्रांस से इँगलैंड को बहुत अधिक कष्ट मिला। आंग्ल-राज्य की दुर्बलताओं से लाभ उठाने की इच्छा से राबर्ट ब्रूस ने इँगलैंड के उत्तरीय प्रदेशों को खूब लूटा। १३२८ में नार्थेंपटन की संधि के द्वारा राबर्ट ब्रूस शांत कर दिया गया। आंग्लों के लिये यह अतिशय लज्जा-प्रद संधि थी, क्योंकि इसके द्वारा राबर्ट ब्रूस न केवल स्कॉटलैंड का राजा माना गया, बल्कि एडवर्ड की छोटी बहन से उसका विवाह भी कर दिया गया। इसी प्रकार की लज्जा-प्रद संधि फ्रांस के साथ भी (Treaty of Paris. 1327) की गई, जिसके अनुसार बोर्डो तथा

बयोन के मंडलों को छोड़कर संपूर्ण आंग्ल-प्रदेश फ़्रांस को दे दिए गए।

१३२८ में चार्ल्स चतुर्थ की मृत्यु हो गई। फ़्रांस में इसके उत्तराधिकारित्व का झगड़ा खड़ा हुआ। इज़ेबेला चार्ल्स की बहन थी, अतः वह एडवर्ड तृतीय को फ़्रांस का राजा बनाना चाहती थी। परंतु फ़्रांसीसियों ने ऐसा न करके 'वैलाय'-प्रदेश के शासक फ़िलिप को फ़्रांस का राजा बना दिया और फ़िलिप षष्ठ के नाम से उसको उद्घोषित किया। विषय स्पष्ट करने के लिये फ़्रांस का राज-वंश-वृत्त नीचे दिया जाता है—

ह्यू कैपे
९८७-९९६
|
राबर्ट
९९६-१०३१
|
हेनरी प्रथम
१०३१-१०६०
|
फ़िलिप प्रथम
१०६०-११०८
|
लूइस सप्तम
११३७-११८०
|
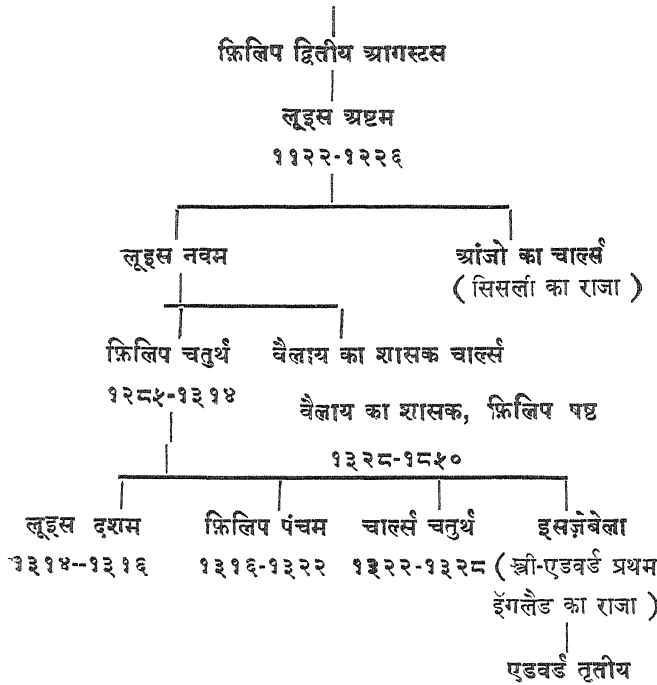
इन सब ऊपर-लिखी असफलताओं का फल मार्टिमर तथा इज़ेबेला के लिये बहुत ही बुरा हुआ। १३३० में लेंकास्टर के हेनरी तथा एडवर्ड तृतीय ने एक षड्यंत्र रचा और बड़ी चतुरता से नाटिंघैम (Notingham) के क़िले में बहुत से सैनिकों को पहुँचा दिया। इन्होंने मार्टिमर को शीघ्र ही पकड़कर फाँसी पर चढ़ा दिया और इज़ेबेला को संपूर्ण राज-कार्य से अलग कर दिया।

एडवर्ड तृतीय एडवर्ड प्रथम के सदृश कोई महापुरुष न था। इँगलैंड के इतिहास में अपनी कर्मण्यता के कारण ही इसने एक उच्च स्थान प्राप्त किया। इसके जीवन का उद्देश कीर्ति प्राप्त करना था; परंतु इसमें भी वह पूर्ण रूप से सफल न हो सका।

(१) एडवर्ड तृतीय तथा विदेशी युद्ध

(क) स्कॉटलैंड तथा हेलीडन हिल (Halidon Hill) की लड़ाई

एडवर्ड तृतीय नार्थैंपटन की संधि के अत्यंत विरुद्ध था। वह इस संधि को मटियामेट करने का अवसर ही देख रहा था कि दैवी घटना से १३२९ में रॉबर्ट ब्रूस का स्वर्गवास हो गया, और उसका अल्प-वयस्क पुत्र डेविड स्कॉटलैंड की गद्दी पर बैठा। राजा को बालक समझकर रॉबर्ट ब्रूस के शत्रुओं ने स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया और डेविड के साथियों पर विजय प्राप्त करके एडवर्ड बैलियल को राजा बनाया। बैलियल ने एडवर्ड तृतीय से कहा यदि तू मुझे स्कॉटलैंड का राजा मान ले, तो मैं तुझे वारिक (Warwick) का नगर दे दूँगा। एडवर्ड ने यह स्वीकार कर लिया। चार महीने के बाद ही डेविड के साथियों ने प्रबलता प्राप्त करके बैलियल को इँगलैंड भगा दिया। एडवर्ड तृतीय ने बैलियल को राजा बनाने के बहाने से स्कॉटलैंड पर आक्रमण किया

और १३३३ में हेलीडन हिल के युद्ध द्वारा बारिक-नगर हस्तगत करके चुपचाप बैठ गया।

(ख) शत-वार्षिक युद्ध
(The Hundred years' War)

एक तो स्कॉटलैंड का राजा डेविड फ़्रांस ही में रहता था, और दूसरे फ़िलिप चतुर्थ ने गैस्कनी का बहुत-सा प्रदेश फ़्रांस-राज्य में मिला लिया था। इन दो कारणों से एडवर्ड तृतीय ने फ़्रांस से जो युद्ध प्रारंभ किया, वह शत-वार्षिक युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। ऊपर-लिखे दो कारणों के अतिरिक्त इस युद्ध के अन्य भी बहुत-से गौण कारण हैं—

(१) फ़्लैंडर्ज़ (Flanders) में इँगलैंड तथा फ़्रांस के स्वार्थ सर्वथा भिन्न-भिन्न थे। उत्तरीय योरप में फ़्लैंडर्ज़ एक मुख्य व्यावसायिक प्रदेश था। इसके घेंट, ब्रूजेज़ (Bruges) तथा वाईप्रे (Vipies) आदि मुख्य-मुख्य नगरों का ग्राहक इँगलैंड ही था। इन नगरों से ऊन के कपड़े बनकर इँगलैंड में बिकने जाते थे, और इँगलैंड से इनमें कच्चा ऊन आता था। इन नगरों की शक्ति बहुत अधिक थी। ये अपने काउंट तथा फ़्रांस के राजा के नाम-मात्र को अधीन थे। फ़्लेमिश (Flemish) नगरों के शासक ने फ़िलिप से नागरिकों की स्वेच्छाचारिता की शिकायत की। इसका

परिणाम यह हुआ कि फ़्लेमिश नगरों ने एडवर्ड तृतीय से संधि कर ली और फ़्रांस के विरुद्ध युद्ध करने पर तुल गए।

(२) बवेरिया (Bavaria) का सम्राट् लूइस एडवर्ड का साला था। पोप से इसकी लड़ाई थी। १३८८ में एडवर्ड तथा लुइस के बीच संधि हो गई, और दोनों ने फ़्रांस को नीचा दिखाने का प्रण किया।

(३) इन ऊपर-लिखे राजनीतिक कारणों के साथ-साथ शत-वार्षिक युद्ध का एक व्यापारिक कारण भी था। आंग्ल तथा फ़्रांसीसी मल्लाह १२९३ की तरह बराबर एक दूसरे से लड़ते रहते थे। इनके झगड़े ने जातीय झगड़े का रूप धारण कर लिया था।

यह युद्ध इसलिये शत-वार्षिक नहीं कहाया कि यह बराबर १०० वर्ष चला हो, बल्कि इसलिये कि यह समय-समय पर कई बार होकर कहीं १०० वर्ष में समाप्त हुआ था।

(ग) शत-वार्षिक युद्ध का प्रारंभ

(१) इस लंबे युद्ध का प्रारंभ १३३७ में हुआ, परंतु १३३९ तक इसने कोई बड़ा रूप नहीं धारण किया। १३३९ में एडवर्ड एक भारी सेना के साथ नेदरलैंड पहुँचा और अपने फ़्लेमिश साथियों की सेना के साथ उसने फ़्रांस के उत्तरीय प्रदेशों पर आक्रमण करना प्रारंभ किया। किंतु जर्मन सैनिकों

की अकर्मण्यता तथा फ़िलिप के सम्मुख-युद्ध में न आने से इस युद्ध का कुछ भी अंतिम परिणाम न निकला।

(२) १३४० में फ़्रांस ने अपने जहाज़ी बेड़े के साथ इँगलैंड पर आक्रमण करना चाहा, परंतु स्ल्यूज़ (Sluys) के सामुद्रिक युद्ध में उसके सब जहाज़ नष्ट हो गए और वह सदा के लिये इँगलैंड पर आक्रमण करने में असमर्थ हो गया। इस सामुद्रिक विजय के बाद एडवर्ड ने अपने को समुद्राधिपति के नाम से पुकारना प्रारंभ कर दिया।

(३) १३४० के पूर्व ही एडवर्ड ने फ़्रांस के साथ एक क्षणिक संधि (Truce) की, क्योंकि उसके पास युद्ध को और जारी रखने के लिये धन न था। इसी समय मांटफ़ोर्ट तथा बैलाय के चार्ल्स में ब्रिटनी के उत्तराधिकार का झगड़ा उठ खड़ा हुआ। फ़िलिप चार्ल्स के पक्ष में था। अतः एडवर्ड ने मांटफ़ोर्ट का पक्ष लिया और १३४५ में फिर फ़्रांस के साथ युद्ध प्रारंभ कर दिया।

(४) १३४६ में युद्ध का रूप कुछ प्रकट हुआ। एडवर्ड अपने पुत्र ब्लैक प्रिंस * (Black Prince) को साथ लेकर नार्मंडी पहुँचा। नार्मंडी को भयंकर ढंग से लूटकर एडवर्ड

---

* काला कवच धारण करने के कारण युवराज ब्लैक प्रिंस (कृष्णवर्ण कुमार) कहलाता था।

की सेनाएँ सेन (Seine)-नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ती हुई पेरिस तक जा पहुँचीं। राजधानी की रक्षा के लिये फ़िलिप ने एक बड़ी भारी सेना एकत्र की और एडवर्ड से युद्ध करने को तैयार हुआ। सम्मुख युद्ध में प्रवृत्त होना अनुचित समझकर एडवर्ड ने पीछे हटना प्रारंभ किया। फ़्रांसीसियों ने उसका भयंकर रूप से पीछा किया और उसको क्रेसी (Crecy)-नगर के निकट सम्मुख युद्ध के लिये विवश किया। इस युद्ध में फ़्रांसीसी सेनापतियों की शीघ्रता तथा मूर्खता से एडवर्ड विजयी रहा। शीघ्र ही इँगलैंड न लौटकर एडवर्ड ने 'कैले'(Calais) के प्रसिद्ध व्यापारिक नगर पर घेरा डाला (Beseiged)। एक वर्ष के घेरे के बाद कैले-निवासियों ने दुर्भिक्ष से पीड़ित होकर फाटक खोल दिए और एडवर्ड की अधीनता स्वीकार कर ली।

इन्हीं दिनों लेंकास्टर के हेनरी ने गैस्कनी में विजय प्राप्त की और स्कॉटलैंड का राजा डेविड आंग्ल-प्रदेशों पर आक्रमण करता हुआ डरहेम के समीप नेविल्स क्रॉस (Nevills Cross)की प्रसिद्ध लड़ाई में आंग्लों के हाथ क़ैद हो गया। १३४७ में लॉरोश' डिरेन' के युद्ध में वैलाय का 'चार्ल्स' भी क़ैद होकर एडवर्ड के सामने उपास्थित किया गया।
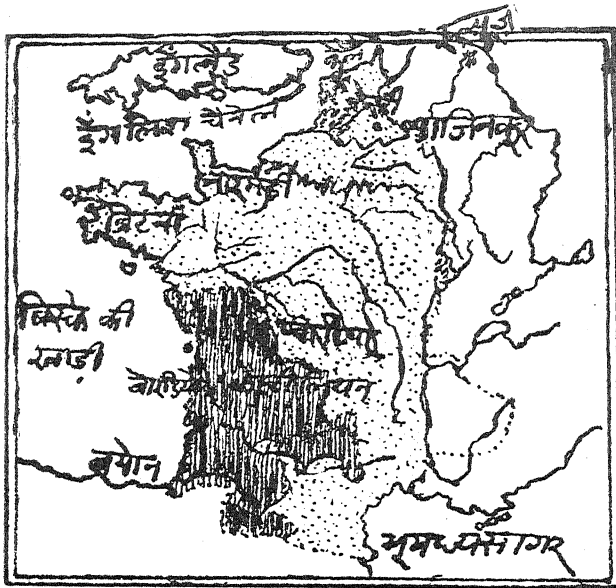
ब्रिटनी की संधि

१३४८ से १३४९ तक इँगलैंड में प्लेग (Black Death) का प्रकोप रहा। इससे इँगलैंड का संपूर्ण इतिहास ही बदल गया। किंवदंती है कि इस प्लेग से एक-तिहाई आंग्ल मृत्यु को प्राप्त हुए। किंतु प्लेग की विपत्ति को देखते हुए भी एडवर्ड की युद्ध-पिपासा सर्वथा नहीं बुझी।

(५) १३५५ में उसने ब्लैक प्रिंस को गैस्कनी भेजा। वह बड़ी चतुरता से गैरोन (Garonne)-घाटी को जीतकर मध्य-सागर के तट तक पहुँच गया।

ब्लैक प्रिंस को इँगलैंड लौट जाने से रोकने के लिये फ़्रांस के राजा ने उस पर पीछे से आक्रमण किया। एडवर्ड भी ब्लैक प्रिंस के साथ था। यदि ये दोनों ही फ़्रांसीसियों के हाथ में पड़ जाते, तो आंग्लों को बहुत हानि पहुँचती। एडवर्ड ने बड़ी चतुरता से एक पर्वत पर अपनी सेना को स्थापित किया और फ़्रांसीसियों से युद्ध करने के लिये तैयार हुआ। युद्ध शुरू होते ही उसने सेना के एक भाग को एक लंबे तथा गुप्त मार्ग के द्वारा फ़्रांसीसियों के पीछे पहुँच जाने की आज्ञा दी। इसका परिणाम यह हुआ कि फ़्रांसीसी सेना चारों ओर से घिरकर परास्त हो गई, और फ़्रांस का राजा 'जॉन' स्वयं आंग्लों के हाथ क़ैद हो गया।

(६) इन ऊपर-लिखी विजयों से प्रसन्न होकर एडवर्ड इँगलैंड पहुँचा और एक बड़ी सेना के साथ फ़्रांस-विजय के लिये फिर प्रस्तुत हुआ। इस बार भी विजय-लक्ष्मी उसी के साथ रही और वह पेरिस तक बिना किसी प्रकार की रुकावट के पहुँच गया। १३६० के मे में फ़्रांसीसियों ने एडवर्ड से संधि के लिये बातचीत शुरू की और ऑक्टोबर तक एक संधि भी कर ली, जो आंग्ल-इतिहास में 'कैले' की संधि के नाम से प्रसिद्ध है। इस संधि के अनुसार

१—एडवर्ड ने फ़्रांस-राज्य पर अपना स्वत्व छोड़ दिया।

२—राजा जॉन क़ैदख़ाने से मुक्त कर दिया गया।

३—एडवर्ड को निम्न-लिखित फ़्रांसीसी प्रदेश मिले—

(क) कैले

(ख) पोंथियो

(ग) संपूर्ण एक्विटेन

(घ) पोईशियो

(ङ) लिमाउसिन (Limousein)

४—फ़्रांस ने एडवर्ड को बहुत-सा रुपया देना स्वीकार किया।

इस उत्तम संधि को सुनकर आंग्ल-जनता अत्यंत प्रसन्न हुई। राजा जॉन ने फ़्रांस पहुँचते ही अपनी प्रजा को अति दीन अवस्था में देखा, अतः उसने उन पर कर लगाना उचित नहीं समझा। परंतु कर लगाए बिना आंग्लों को वह उतना बेशुमार रुपया नहीं दे सकता था, जितना उसने कैले की संधि में देना स्वीकार किया था। सत्य-परायण जॉन ने प्रण-पालन तथा संधि की शर्तों को पूरा करने में अपने को असमर्थ देखकर इँगलैंड को प्रस्थान किया और वह आंग्लों की क़ैद में ही परलोकवासी हुआ।

(७) कैस्टाइल (Castille)-प्रदेश का राजा क्रूर पीटर (Peter, the Cruel) था। प्रजा ने उसके अत्याचारों से पीड़ित होकर विद्रोह किया और उसको राज्य से च्युत करके

उसके भाई हेनरी को गद्दी पर बिठाया। हेनरी अपनी अस्थि-रता तथा निःशक्तता को पूर्णरूप से समझता था, अतः उसने चॉर्ल्स पंचम से सहायता माँगी। इधर पीटर ने ब्लैक प्रिंस का सहारा लिया। १३६७ की तीसरी एप्रिल को 'नेजरा' नाम के ग्राम में हेनरी तथा पीटर में लड़ाई हुई। ब्लैक प्रिंस की सहायता से पीटर ने विजय प्राप्त की और कैस्टाइल के सिंहासन पर बलात् आरूढ़ हुआ। १३६८ में हेनरी ने स्पेन से लौटकर पीटर से फिर युद्ध किया और पीटर को मारकर कैस्टाइल का राजा बन गया।

(८) क्रूर पीटर को सहायता देने के बाद ब्लैक प्रिंस का भाग्य फिरा। एक तो उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया और दूसरे उसकी प्रजा भी उससे 'अधिक कर' लगाने के कारण रुष्ट हो गई। एक्विटेन की प्रजा ने अधिक कर-विषयक शिका-यत फ़्रांस के राजा के पास पहुँचाई। इसका परिणाम यह हुआ कि उसको फ़्रांसीसी राज-दरबार में उपस्थित होना पड़ा।

रोगी होने पर भी वीरता उसमें पूर्ववत् ही थी। जब चॉर्ल्स पंचम ने प्रजा की शिकायतों का उससे उत्तर माँगा, तो उसने उसका उत्तर तलवार तथा ६० हज़ार सैनिकों के द्वारा देने का प्रण किया। एडवर्ड ने अपने को फ़्रांस का राजा उद्घोषित किया, और फ़्रांस तथा इँगलैंड में फिर युद्ध प्रारंभ हो गया।

इस बार फ्रांस ने आंग्लों से सम्मुख युद्ध न करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। १३७३ में ब्लैक प्रिंस के भाई 'जॉन' ने फ्रांस पर आक्रमण किया और दूर तक फ्रांस-राज्य में घुस गया। परंतु जब उससे किसी ने भी युद्ध न किया, तो वह इँगलैंड की ओर लौटा। मार्ग में उसके सैनिक भूख तथा ठंढ से बहुत ही पीड़ित हुए। बहुत-से काल के ग्रास भी हो गए। कैस्टाइल की सहायता से फ्रांसीसियों ने आंग्ल-सामुद्रिक सेना को परास्त किया और आंग्लों का फ्रांस पर आक्रमण करना सर्वदा के लिये रोक दिया। कुछ वर्षों के निरंतर युद्ध के अनंतर फ्रांसीसियों ने अपने संपूर्ण प्रदेश आंग्लों से छीन लिए। १३६० के बाद आंग्लों के पास जो फ्रांसीसी नगर बचे, वे निम्न-लिखित थे—

(क) कैले (Calais) (ग) ब्रेस्ट (Brest)
(ख) शर्बर्ग (Cherbourg) (घ) बयोन (Bayonne)
(ङ) बोर्डो

(२) एडवर्ड तृतीय तथा चर्च

शत-वार्षिक युद्ध का प्रारंभ होने पर आंग्लों तथा फ्रांसीसियों की पारस्परिक घृणा ने भयंकर रूप धारण कर लिया। दोनों ही जातियाँ एक दूसरे की सामाजिक अवस्था को घृणा से देखने लगीं। पोप के फ्रांसीसियों का साथ देने से आंग्लों

में पोप के प्रति भी अश्रद्धा हो गई। एडवर्ड तृतीय-जैसे शक्तिशाली राजा को पोप की शक्ति पहले ही से पसंद न थी। १३५१ में एक नियम पास किया गया, जिसके अनुसार आंग्लों ने पोप की शक्ति से अपने को मुक्त करने का यत्न किया। १३५३ में 'प्रिमुनायर का नियम' (Statute of Praemunire)-नामक राज्य-नियम बनाया गया। इसके द्वारा स्वजातीय अभियोगों तथा प्रार्थनाओं को विदेश में ले जाना निषिद्ध ठहराया गया। इस नियम का मुख्य उद्देश यही था कि आंग्लों के लिये पोप मुख्य न्यायाधीश न रहे। इसके साथ ही एडवर्ड ने पोप को 'अधीनता-कर' देना भी बंद कर दिया, जिसे वह 'जॉन लैक्लैंड' के समय से ले रहा था। १३६६ में पार्लिमेंट ने यह नियम पास किया कि जनता की स्वीकृति के विना जॉन या अन्य कोई आंग्ल-राजा इँगलैंड को किसी दूसरे के अधीन नहीं कर सकता।

इन्हीं दिनों ऑक्सफ़ोर्ड के एक महोपाध्याय 'जॉन वाइक्लिफ़' (John Wycliffe) ने एक नए ही सिद्धांत का आविष्कार किया और पोप तथा पादरियों की संपत्ति तथा राजनीतिक शक्ति के विरुद्ध लेख और व्याख्यान देना प्रारंभ किया। इँगलैंड में पोप की शक्ति के शीघ्र ही नष्ट हो जाने का एक यह भी मुख्य कारण था।

(३) इँगलैंड की सामाजिक तथा राजनीतिक अवस्था

१३४८ तथा १३४९ में इँगलैंड में जो प्लेग का कोप हुआ था, उसका उल्लेख किया जा चुका है। १३६२ तथा १३६९ में प्लेग ने फिर ज़ोर पकड़ा और बहुत-से आंग्ल काल-कवलित हुए। मृत्यु की अधिकता का इसी से अनुमान हो सकता है कि इँगलैंड में मज़दूर ढूँढ़े नहीं मिलते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि हर तरह की मज़दूरी की दर बढ़ गई और पदार्थों का मूल्य भी चढ़ गया।

मज़दूरी का बढ़ना लॉर्डों को अभीष्ट न था। अतः उन्होंने १३५१ की पार्लिमेंट में 'श्रम-नियम' (Statute of labourers) पास कराया और 'भृति-वृद्धि' (Increase of wages) को नियम-विरुद्ध ठहराकर मज़दूरों को पहले की मज़दूरी पर ही काम करने के लिये बाध्य किया। इससे संपूर्ण आंग्ल-कृषकों तथा श्रमियों में बहुत ही असंतोष फैला। इस असंतोष का ही यह परिणाम हुआ कि १३८१ में 'कृषक-विद्रोह' हो गया। एडवर्ड के समय में पार्लिमेंट के बहुत ज्यादा अधिवेशन हुए। पार्लिमेंट ने जो अधिकार माँगे, वे सब उसको एडवर्ड ने इस शर्त पर दे दिए कि वह फ्रांस में युद्ध करने के लिये रुपए देती रहे। फ्रांसीसी युद्ध की समाप्ति होते-होते जॉन और ब्लैक प्रिंस में परस्पर झगड़ा हो गया और वह पार्लिमेंट तक

पहुँचा। जॉन ने लॉर्डों का और ब्लैक प्रिंस ने साधारण जनता का पक्ष लिया। १३७६ में जो पार्लिमेंट बैठी, वह 'गुड पार्लिमेंट' के नाम से पुकारी जाती है। गुड पार्लिमेंट में ब्लैक प्रिंस का नेतृत्व प्राप्त करके आंग्ल-प्रजा ने बहुत ही अधिक शक्ति प्राप्त की और राजा के बहुत-से दरबारियों पर लॉर्ड-सभा में अभियोग चलाया, तथा उनको यथोचित दंड भी दिलवाया। इस प्रकार के उत्तम कार्य करते-करते ब्लैक प्रिंस की मृत्यु हो गई और राज-पक्षपातियों ने गुड पार्लिमेंट के संपूर्ण नियमों को फिर बदल दिया।

जॉन वाइक्लिफ़ के विचारों से पादरी-मंडल अत्यंत रुष्ट था। उसने वाइक्लिफ़ पर अभियोग चलाया, जिसका निर्णय सेंट पाल के गिरजाघर में किया जाना निश्चित हुआ। वाइक्लिफ़ के पक्षपाती बहुत-से राज-दरबारी थे। अतः पादरी-मंडल उसको अधिक हानि पहुँचाने में सर्वथा असमर्थ था। स्मरण रहे कि वाइक्लिफ़ ने बाइबिल का अनुवाद मातृ-भाषा में करके उसी प्रकार के धर्म-सुधार की जड़ जमानी चाही थी, जैसा भविष्य में लूथर ने किया और सफलता भी प्राप्त की। वाइक्लिफ़ के अनुयायी लालर्ड (Lollards) कुछ न कर सके। कारण यह कि आंग्ल-जाति तब तक अशिक्षित थी, उस समय पादरियों का बड़ा ज़ोर था। उनके बल को

तोड़ना सहज बात न थी। लूथर के समय में विद्योन्नति हो जाने से लोगों को पोप की धूर्तता का पता लग चुका था। इसी से उन लोगों को लूथर की शिक्षा पर शीघ्र विश्वास हो गया। अस्तु, सेंट पाल के गिरजाघर में वाइक्लिफ़ तथा पादरियों में भयंकर कलह उत्पन्न हो गई। यह कलह अभी समाप्त ही हुई थी कि १३७७ की २१ जून को एडवर्ड तृतीय परलोक सिधारा। मृत्यु के समय उसके सब दरबारियों ने उसका साथ छोड़ दिया था। एलिक्पैरर्कर्ज़ ने तो उसके हाथ की अँगूठी ही चुरा ली थी। एडवर्ड तृतीय के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१३२७	एडवर्ड तृतीय का राज्याधिरोहण
१३२८	नार्थैंपटन की संधि
१३३०	मार्टिमर का अधःपतन
१३३३	हेलीडन हिल का युद्ध
१३३७	शत-वार्षिक युद्ध का प्रारंभ
१३४०	स्ल्यूज़ की लड़ाई
१३४६	क्रेसी तथा नेविल्स क्रास की लड़ाइयाँ
१३४८	प्लेग
१३५३	प्रिमूनायर का नियम

१३६०	कैले की संधि
१३६७	नेजरा की लड़ाई
१३६६	शत-वार्षिक युद्ध का पुनः प्रारंभ.
१३७६	गुड पार्लिमेंट
१३७७	एडवर्ड तृतीय की मृत्यु

पंचम परिच्छेद

रिचर्ड द्वितीय (१३७७-१३९९)

ब्लैक प्रिंस की मृत्यु हो चुकी थी। अतः एडवर्ड तृतीय के बाद उसका पुत्र रिचर्ड राज-सिंहासन पर बैठा। रिचर्ड द्वितीय की आयु केवल १० ही वर्ष की थी, इसलिये उसके संरक्षण के लिये उसका काका, लेंकास्टर का ड्यूक जॉन ऑफ़ गांट (John of Gaunt) नियत किया गया। जॉन ने जनता पर बहुत अधिक कर लगाए, परंतु उन करों के द्वारा जनता को जो शांति तथा सुख मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। अमीर लोग परस्पर लड़ते रहते थे, उन्हें देश की रक्षा का कुछ भी ध्यान नहीं था। फ़्रांसीसियों ने समुद्र-तटस्थ आंग्ल-जनता को भयंकर रूप से लूटना शुरू किया; और यदि उनके राजा चार्ल्स पंचम की मृत्यु न हो जाती, तो यह उपद्रव बहुत वर्षों तक जारी रहता। चार्ल्स का पुत्र रिचर्ड के ही सदृश अल्प-वयस्क था। अतः फ्रांस में भी इँगलैंड के ही सदृश अराजकता फैल गई। फ़्रांसीसी इँगलैंड को सताने में सर्वथा असमर्थ हो गए।

(१) कृषक-विद्रोह (१३८१)

रिचर्ड के राज्य के चार वर्ष बाद ही इँगलैंड में श्रमियों, शिल्पियों तथा कृषकों का असंतोष बेहद बढ़ गया। इसका परिणाम यह हुआ कि १३८३ में कृषक-विद्रोह (Peasant Revolt) उठ खड़ा हुआ। कृषक-विद्रोह के बहुत-से कारण थे, जिनमें से कुछ नीचे दिए जाते हैं—

(क) प्लेग से बहुत-से आंग्ल काल के ग्रास हो गए थे, अतः श्रमियों की संख्या न्यून हो गई थी। इससे भृति (wages) तथा मूल्य का बढ़ना स्वाभाविक ही था। राज्य में लॉर्डों की शक्ति होने के कारण श्रमियों का कुछ भी ध्यान न करते हुए 'श्रम-नियम' (Statute of labourers) पास कर दिया गया था।

(ख) 'श्रम-नियम' की कठोरताओं से क्रुद्ध होकर आंग्ल-श्रमियों ने इस नियम को हटाने का दृढ़ निश्चय कर लिया। स्वतंत्र पुरुषों की अपेक्षा अर्द्ध-दासों (Serfs or Vill-eins) में बहुत अधिक असंतोष था। स्वतंत्र श्रमियों के न मिलने के कारण भिन्न-भिन्न लॉर्डों ने अर्द्ध-दासों पर ही अत्या-चार करना प्रारंभ किया और उनसे अपेक्षा-कृत अधिक काम लेने लगे।

(ग) अर्द्ध-दास अपने अन्य भाइयों को अधिक भृति के

द्वारा बहुत-सा रुपया कमाते देखकर लॉर्डों की सेवा से बचना चाहते थे। परंतु लॉर्डों को यह कब सह्य हो सकता था? उन्होंने राज्य-नियमों के द्वारा उनको अपने कार्य के लिये बाध्य किया।

(घ) इन्हीं दिनों वाइक्लिफ़ के अनुयायी लॉलर्ड (Lollards अर्थात् भजन गानेवाले) कुल इँगलैंड में भ्रमण कर रहे और आंग्ल-जनता को बड़े-बड़े भूमि-पतियों तथा पादरियों के विरुद्ध उभाड़ने का यत्न कर रहे थे। इनका कथन था कि "जब आदम फिरता था और उसकी स्त्री ईव चरखा कातती थी, तब जेंटिलमैन था ही कौन ? (When Adam delved and Eve span, who was, then, a gentleman ?) अत: इन भूमि-पतियों तथा पादरियों की संपत्ति तथा राजनीतिक शक्ति ईश्वरीय इच्छा के विरुद्ध है।"

इन कारणों से इँगलैंड में कृषक-विद्रोह हो गया।

जॉन के कुप्रबंध तथा वैयक्तिक कर (Poll-tax) की अधिकता से कैंट के उद्दंड तथा स्वेच्छाचारी पुरुषों ने 'वाट टाइलर' (Wat-Tyler) के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। विद्रोहियों ने लंदन की ओर प्रस्थान किया। इसी समय इँगलैंड के अन्य प्रदेशों में भी विद्रोह हो गया, और वहाँ के विद्रोहियों ने भी लंदन की ओर ही चलना प्रारंभ किया। इन विद्रोहियों ने शीघ्र ही राजधानी को

हस्तगत कर लिया और राजा के बहुत-से मंत्रियों की हत्या कर डाली। यही नहीं, उन्होंने जॉन के महल में भी आग लगा दी और कहा कि हम नहीं जानते, 'जॉन' कौन होता है।

इस भयंकर समय में रिचर्ड केवल १६ वर्ष का था। इसने अपूर्व साहस और धैर्य के साथ 'माइल-एंड' (Mile End) पर विद्रोहियों से मिलने का निश्चय किया। विद्रोहियों से मिलते ही इसने उनको 'स्वतंत्रता-पत्र' देने का प्रण किया और उनको अपने-अपने घर लौट जाने को कहा। परंतु कैंट के लोगों ने अपनी शरारतें नहीं छोड़ीं। अतः रिचर्ड अपने मंत्रि-दल के साथ पुनः 'टाइलर' से मिलने गया। टाइलर ने राजा के साथ बहुत ही योग्यता से बातचीत की और उससे बहुत-सी बातें माँगीं, जिन्हें राजा ने स्वीकृत कर लीं। इसी समय एक राज-दरबारी कह उठा कि टाइलर तो कैंट में एक प्रसिद्ध चोर था, और अब इतनी बढ़-चढ़कर बातें करने लगा है। यह सुनते ही टाइलर ख़ंजर लेकर उस राज-दरबारी पर टूट पड़ा, परंतु स्वयं ही मारा गया। यह देखकर कैंट के कृषकों ने राजा पर बाण तानने को हाथ उठाया ही था कि रिचर्ड उनके बीच में जा कूदा और कहने लगा—"अब तुम्हारा नेता मैं हूँ। जो चाहते हो, माँगो। मैं तुम्हें देने को तैयार हूँ।" इतने ही

में विद्रोहियों को राजसैनिकों ने घेर लिया और उनको हथि-यार रख देने को विवश किया। इसके अनंतर विद्रोहियों पर भीषण अत्याचार किए गए। उनको जो स्वतंत्रता-पत्र राजा ने दिया था, वह भी 'बलात् लिया गया है' कहकर फाड़ डाला गया।

(२) स्वेच्छाचारी बनने के लिये राजा का यत्न

रिचर्ड द्वितीय स्वेच्छाचारी, बदला लेनेवाला तथा जल्द-बाज़ था। अमीरों और लॉर्डों पर इसको विश्वास नहीं था, अतः इसने ऑक्सफ़ोर्ड तथा सफ़क (Suffolk) के अर्लों के हाथ में संपूर्ण राज्य-शक्ति दे दी। १३८६ में पार्लिमेंट ने दोनों 'अर्लों' पर अभियोग चलाया और सफ़क को क़ैद कर लिया। कुछ ही समय बाद रिचर्ड ने सफ़क को बंदी-गृह से मुक्त कर दिया और न्यायाधीशों से कहा—"बतलाओ, पार्लिमेंट द्वारा नियत की गई ११ मनुष्यों की उपसमिति नियमानुसार है या नहीं?" न्यायाधीशों ने उपसमिति को नियम-विरुद्ध ठहराया। इस पर ग्लॉस्टर के ड्यूक तथा अन्य लार्डों ने सेना एकत्र की और बैरन लोगों की सहायता से उसने 'रैड्कॉट ब्रिज' (Radcot Bridge) पर रिचर्ड को परा-जित किया। इस विजय के अनंतर, १३८८ में, जो पार्लि-मेंट बैठी, उसको 'निर्दय पार्लिमेंट' (Merciless Parlia-

ment) के नाम से पुकारते हैं, क्योंकि निर्दय पार्लिमेंट में राजा के मित्रों के प्रति 'देश-द्रोह' का अभियोग चलाया गया। ५ लॉर्डों की उपसमिति में अभियुक्तों का निर्णय हुआ और उनको प्राण-दंड दिया गया। निर्दय पार्लिमेंट के इन क्रूर कर्मों को रिचर्ड हृदय थामकर देखता रहा और उसने उन पाँचों लॉर्डों से बदला लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

१३८९ में उसने लॉर्डों की प्रबंधकारिणी उप-समिति को सदा के लिये बर्ख़ास्त कर दिया और ग्लॉस्टर के ड्यूक से कहा कि भविष्य में मैं स्वयं ही अपनी प्रजा का शासन करूँगा, क्योंकि अब मेरी आयु काफ़ी अधिक हो गई है। इस बार रिचर्ड ने बड़ी चतुरता और धीरज से काम लिया और अपने बहिष्कृत मित्रों को इँगलैंड नहीं बुलाया। उसने विंचस्टर के बिशप विलियम ऑव वाइकहम (William of Wykeham) को तथा अन्य बहुत-से सुयोग्य व्यक्तियों को राज्य के उच्च-उच्च पदों पर नियत किया। इसी समय 'जॉन' (John of Gaunt) स्पेन से लौट आया और उसने रिचर्ड को उचित सलाह देनी प्रारंभ की। प्रथम स्त्री के मर जाने पर, १३९६ में, रिचर्ड ने फ़्रांसीसियों के राजा चार्ल्स षष्ठ की कन्या से विवाह किया और फ़्रांस से २८ वर्ष के लिये संधि कर ली।

१३९७ में रिचर्ड ने उन लॉर्डों से बदला लेने का उपाय

सोचा, जिन्होंने उसको 'निर्दय पार्लिमेंट' में अपमानित किया था। 'ग्लॉस्टर का ड्यूक राजा के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहा है'— इस किंवदंती के फैलते ही रिचर्ड ने बड़ी चालाकी से निम्न-लिखित व्यक्तियों को क़ैद कर लिया—

(१) ग्लॉस्टर का ड्यूक

(२) वारिक का अर्ल

(३) ऐरंडेल

१३९७ के सितंबर-महीने में पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ और इन लॉर्डों पर राजा के मित्रों ने अभियोग चलाया। परिणाम यह हुआ कि उन्हें मृत्यु-दंड मिला और उनकी संपत्ति राजा के मित्रों में बाँट दी गई। पार्लिमेंट ने राजा को जीवन-भर के लिये पेंशन के तौर पर कुछ रुपया देना पास कर दिया। कुछ दिनों बाद हर्फ़ोर्ड तथा नार्फ़क् के अर्लों में परस्पर झगड़ा हो गया और रिचर्ड ने दोनों को ही देश-निकाला दे दिया। इस प्रकार सब लॉर्डों की शक्ति को चकना-चूर करके उसने स्वेच्छाचार-पूर्ण राज्य करना प्रारंभ किया।

१३९९ में अपनी शक्ति को और अपने को सर्वथा स्थिर समझकर वह आयर्लैंड गया। इसी समय हर्फ़ोर्ड के अर्ल हेनरी ने एक छोटी-सी सेना के साथ इँगलैंड में प्रवेश किया। राजा के स्वेच्छाचारित्व से पीड़ित सब उत्तरीय लॉर्डों ने

उसका साथ दिया। यार्क के ड्यूक तथा नार्थंबलैंड के हेनरी पर्सी (Percy) ने भी रिचर्ड का साथ छोड़ दिया। इस विद्रोही दल ने शीघ्र ही ब्रिस्टल को अपने हस्तगत कर लिया। रिचर्ड ने आयर्लैंड से लौटकर विद्रोहियों को दमन करने के लिये सेना एकत्र करने का यत्न किया, परंतु वह कृतकार्य नहीं हो सका। लाचार होकर उसने अपने-आपको विद्रोहियों के सिपुर्द कर दिया। वह लंदन तक क़ैदी बनाकर लाया गया। पार्लिमेंट ने उसे राज्य-च्युत कर दिया तथा लैंकास्टर के ड्यूक हेनरी को इँगलैंड का राजा बनाया। रिचर्ड द्वितीय के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१३७७	रिचर्ड द्वितीय का राज्याधिरोहण
१३८१	कृषक-विद्रोह
१३८८	निर्दय पार्लिमेंट
१३९६	फ़्रांस के साथ संधि
१३९७	रिचर्ड का लॉर्डों से बदला लेना
१३९९	रिचर्ड द्वितीय का राज्य-च्युत किया जाना

षष्ठ परिच्छेद

तेरहवीं और चौदहवीं सदी में ब्रिटेन की सभ्यता

(१) राजनीतिक अवस्था

(क) राजा की शक्ति

तेरहवीं सदी के प्रारंभ में आंग्ल-राजों की शक्ति अपरिमित थी। जॉन के अधःपतन के अनंतर आंग्लों की राजनीतिक अवस्था में एक प्रबल आक्रांति उपस्थित हो जाती है। सारी चौदहवीं सदी में एडवर्ड प्रथम तथा हेनरी तृतीय की शासन-पद्धति-संबंधी धाराओं के अनुसार राजों को शासन करने के लिये बाध्य किया गया। इस परीक्षण का परिणाम यह हुआ कि इँगलैंड परिमित एकसत्ताक राष्ट्र (Limited Monarchy) में परिवार्तित हो गया। शासन-पद्धति में जाति के सम्मिलित होने से आंग्लों में जातीयता का भी प्रादुर्भाव हुआ। यह महान् कार्य अभी-अभी लॉर्डों के द्वारा हुआ। उन्हीं लोगों ने राजा को निरंकुश नहीं होने दिया। उन दिनों साधारण जनता के कोई अधिकार न थे। धर्म, साहित्य तथा व्यापार-व्यवसाय में भी क्रमशः उन्नति होने लगी।

इँगलैंड की उन्नति क्रमशः हुई है। यही कारण है कि चौदहवीं सदी तक आंग्ल-राजा से नियम-निर्माण-संबंधी अधिकार ही अमीरों ने छीने थे। शासन के कार्य में राजा स्वतंत्र था। मंत्रियों का चुनना उसी के अधिकार में था। दुर्बल राजों के समय में लॉर्डों ने शासन का अधिकार भी राजा से छीना और १५ लॉर्डों की उपसमिति (१२५८) के द्वारा शासन-कार्य चलाने का प्रयत्न किया; परंतु स्वार्थ, वैमनस्य तथा पारस्परिक कलह के कारण वे कृतकार्य नहीं हो सके। एडवर्ड प्रथम के सुधारों के अनंतर आंग्ल-प्रजा ने लॉर्डों की शक्ति लेनी शुरू की लेकिन उसका वास्तविक रूप चिरकाल तक प्रत्यक्ष नहीं हुआ।

(ख) आंग्ल-प्रजा की शक्ति

हेनरी तृतीय के समय में भूमि-पतियों की महासमिति का नाम ही पार्लिमेंट था। साइमन के अनंतर इस महा-समिति ने कुछ शक्ति प्राप्त की और इसमें भूमि-पतियों के साथ-साथ भिन्न-भिन्न मंडलों तथा नगरों के प्रतिनिधि भी उपस्थित होने लगे। एडवर्ड प्रथम के राज्य में पार्लिमेंट की शक्ति पहले की अपेक्षा बढ़ गई। पार्लिमेंट ने लॉर्ड, पादरी तथा साधारण जनों के प्रतिनिधियों की महासमिति का रूप ग्रहण किया और १३२२ के अनंतर इसने राजा के संपूर्ण निया-

मक अधिकारों को अपने हाथ में ले लिया। एडवर्ड तृतीय के बाद, व्यय अधिक होने के कारण, छोटे-छोटे पादरियों तथा साधारण जनों ने अपने प्रतिनिधि पार्लिमेंट में भेजने बंद कर दिए। उनका स्थान धीरे-धीरे बड़े-बड़े पादरियों ने ले लिया और इस प्रकार लॉर्ड-सभा को जन्म दिया।

(ग) लॉर्ड-सभा

लॉर्ड-सभा के सभ्य मुख्यतः पादरी तथा बड़े-बड़े भूमि-पति ही थे। भूमि-पतियों की संख्या कम होने के कारण मध्य-काल तक लॉर्ड-सभा में पादरियों की संख्या ही अधिक थी। एडवर्ड तृतीय ने ड्यूक, मार्किस तथा वाइ-काउंट के पदों को बढ़ाकर भूमि-पतियों की संख्या में कुछ-कुछ वृद्धि की; परंतु इससे कोई विशेष अंतर नहीं हुआ।

(घ) लोक-सभा

लोक-सभा में निम्न-लिखित स्थानों से प्रतिनिधि आते थे—

(१) प्रत्येक मंडल की शासक-सभा के द्वारा चुने जाकर दो नाइटस

(२) प्रत्येक नगर के दो प्रतिनिधि

चेशायर तथा डर्हेम के सीमाप्रांतीय मंडलों का कोई भी

प्रतिनिधि लोक-सभा में नहीं आता था। वेल्स का भी कोई प्रतिनिधि लोक-सभा में नहीं था।

लोक-सभा में किस-किस स्थान से प्रतिनिधि आवें, इसका निर्णय राजा ही करता था। रेल न होने के कारण लोक-सभा के सभ्यों का अधिक व्यय होता था। इस व्यय से बचने के लिये बहुत-से नगर अपने प्रतिनिधि भेजते ही न थे। लोक-सभा के सभ्य, अपनी शक्ति को बढ़ाने के उद्देश से, बहुत-से ऐसे स्थानों को भी सभ्य भेजने का अधिकार दे देते थे, जहाँ पर कोई बड़ी बस्ती नहीं होती थी। लोक-सभा के नेता प्रायः नाइट्स ही होते थे, क्योंकि ये धनाढ्य होते थे। अतः ये अपना समय राजनीतिक विषयों में स्वेच्छा-पूर्वक दिया करते थे। मध्य-काल (Mediæval or Middle ages) तक लोक-सभा की अपेक्षा विशेषतः लॉर्ड-सभा ही राजनीतिक सुधार करती थी।

(ङ) पार्लिमेंट की शक्ति

पार्लिमेंट की शक्ति काफ़ी अधिक थी। पार्लिमेंट के सभ्यों की प्रार्थना पर ही राजा कोई नया नियम बना सकता था। पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना कोई भी प्रस्ताव नियम नहीं बन सकता था। लोक-सभा प्रायः आर्थिक विषयों में ही हस्तक्षेप करती थी। इसका कारण यह था

कि राज्य-कोष में धन प्रायः जनता की ओर से ही आता था। १४वीं सदी के आरंभ से ही, पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना, राजा जनता पर किसी प्रकार का भी कर नहीं लगा सकता था। लोक-सभा के सभ्य राजा के किसी भी मित्र पर अभियोग चला सकते थे। उनके अभियोगों का निर्णय करने के लिये लॉर्ड-सभा मुख्य न्यायालय का रूप धारण कर लेती थी। इस दशा में लॉर्ड-सभा का निर्णय अंतिम निर्णय होता था, जिसके सम्मुख राजा तक को सिर झुकाना पड़ता था।

(च) प्रिवी-काउंसिल (Privy Council)

प्रिवी-काउंसिल को हम राजा की 'मित्र-सभा' का भी नाम दे सकते हैं। राजा के दरबारी, बड़े-बड़े लॉर्ड तथा बड़े-बड़े बिशप ही मुख्यतः इसके सभ्य होते थे। इसकी सलाह से ही राजा संपूर्ण शासन-कार्य करता था।

अक्सर प्रिवी-काउंसिल स्वेच्छाचारिणी हो जाती थी और पार्लिमेंट के अधिकारों का भी (Legislation, justice and administration) पूरी तरह अपलाप कर देती थी। नियम-निर्माण, न्याय तथा शासन-संबंधी, तीनों ही शक्तियों को यह समय-समय पर काम में लाती थी। दुर्बल राजा के समय में इस सभा पर कलह के पर्वत आ टूटते थे।

गुलाब-युद्ध (War of Roses) में प्रिवी-कांउसिल का जो कुछ भाग होगा, उसका उल्लेख वहीं पर किया जायगा।

(छ) न्यायालय

एडवर्ड प्रथम के समय से ही आंग्ल-न्यायालयों ने नवीन रूप धारण किया। उस समय इँगलैंड में तीन प्रकार के न्यायालय प्रचलित थे—

(१) राजकीय न्यायालय (Kings Bench)

(२) आर्थिक न्यायालय (Court of Exchequer)

(३) साधारण न्यायालय (Court of Common Pleas)

धन-संबंधी अभियोगों का निर्णय आर्थिक न्यायालय में ही होता था। राजकीय न्यायालय ही इँगलैंड में सबसे मुख्य न्यायालय था। राजनीतिक अभियोगों का निर्णय एक-मात्र यही न्यायालय करता था। समयांतर में आर्थिक न्याया-लय ने 'संतुलन न्यायालय' का रूप धारण कर लिया। नियमों की व्याख्या तथा भाव-संबंधी संपूर्ण विवादों का निर्णय इसी न्यायालय में किया जाने लगा। चौदहवीं सदी में वकीलों के पेशे में लोगों को बहुत अधिक आमदनी होती थी। लंदन में बहुत-से नए-नए विद्यालय खोले गए, जिनमें एक-मात्र आंग्ल-राज्य-नियम ही पढ़ाए जाते थे। ऊपर-लिखे तीन

न्यायालयों के अतिरिक्त चर्च के निजी न्यायालय भी थे, जिनकी शक्ति भी थोड़ी न थी।

(२) धार्मिक अवस्था

१२वीं सदी के विचारों का परिणाम १३वीं सदी में फलीभूत हुआ। पोप तथा चर्च की शक्ति अपरिमित हो गई। संपूर्ण ईसाई-संसार का धार्मिक राजा पोप समझा जाने लगा। राजनीतिक विषयों में पोप के निरंतर हस्तक्षेप करने से बहुत-से देश असंतुष्ट भी हुए; परंतु उसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का किसी को भी साहस न हुआ। परंतु जब पोप तथा चर्च की बुराइयाँ दिन-पर-दिन भयंकर रूप धारण करने लगीं, तो असीसी (Assisi)-निवासी संत 'फ्रांसिस' ने एक नवीन संप्रदाय प्रचलित किया, जो पोप तथा चर्च की शक्ति एवं समृद्धि के सर्वथा विरुद्ध था। संत फ्रांसिस ने भगवान बुद्ध के सदृश अपने पिता की संपत्ति पर लात मारी और एक भिक्षु के रूप में प्रचार करना प्रारंभ किया। शीघ्र ही बहुत-से लोगों ने इसका साथ दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि संपूर्ण योरप में इसकी प्रसिद्धि फैल गई और इसके साथियों को लोगों ने फ्रांसिस्केन (Franciscan or Grey Friar) या ग्रे फ्रायर्स के नाम से पुकारना प्रारंभ किया। दरिद्रता में ही अपना जीवन व्यतीत

करने के कारण इन्हें 'मेंडिकेंट फ़्रायर' (Mendicant Friar) का नाम भी दिया जाने लगा। इनकी देखादेखी सत डॉमिनिक (St. Dominic) ने अपना एक नया पंथ चलाया, जो आंग्ल-इतिहास में डॉमिनिकेन या ब्लैक फ़्रायर्स (Dominican or Black Friars) के नाम से प्रसिद्ध है।

१२२१ में डॉमिनिकेन तथा १२२४ में फ़्रांसिस्केन-भिक्षु इँगलैंड में पहुँचे। लंदन तथा ऑक्सफ़ोर्ड को केंद्र बनाकर ये शीघ्र ही संपूर्ण इँगलैंड में फैल गए और अपने मत का प्रचार करने लगे। ग़रीब-अमीर, सभी आंग्लों ने इनका साथ दिया। हेनरी तृतीय, एडवर्ड प्रथम, साइमन आदि इनके प्रबल पक्ष-पोषक थे। 'धर्म-परिवर्तन' के समय तक यही लोग दरिद्र आंग्लों में मुख्य प्रचारक का काम करते रहे।

१३वीं सदी के प्रारंभ से ही योरप की जनता सार्वभौम भ्रातृभाव से पृथक् होने लगी। भिन्न-भिन्न देशों में जातीयता (Nationality) का भाव उदय हो गया। १३वीं सदी से पूर्व तक आंग्ल तथा फ़्रांसीसियों में कोई विशेष भेद-भाव नहीं था। यह स्वस्थ दशा १४वीं सदी में नहीं रही। फ़्रांसीसी तथा आंग्ल एक दूसरे के जानी दुश्मन हो गए। शत-वार्षिक युद्ध का भी बहुत कुछ कारण यह जातीय द्वेष ही था। फ़्रांसीसियों के प्रति भयंकर घृणा तथा द्वेष से प्रेरित

होकर आंग्लों ने अपनी ही भाषा को उन्नत करना शुरू किया और धीरे-धीरे संपूर्ण स्थानों में फ्रांसीसी भाषा का प्रयोग छोड़ते गए।

(३) साहित्यिक अवस्था

१३वीं सदी तक आंग्लों की साहित्यिक अवस्था कुछ भी संतोषप्रद न थी। शत-वार्षिक युद्ध के समय में ही आंग्ल-भाषा ने क्रमशः उन्नति की ओर पैर बढ़ाया। १३४० से १४०० तक जिऑफ़्रे चॉसर (Geoffray Chaucer) ने आंग्ल-भाषा को समृद्ध करने में बड़ा प्रयास किया। उसने 'मध्य-इँगलैंड' (Midland Dealect) की भाषा में अपनी पुस्तकें लिखी थीं। १६वीं सदी की (Modern—वर्तमान-कालीन) आंग्ल-भाषा ने चॉसर की लेख-शैली पर ही अपनी उन्नति की। वाइक्लिफ़ ने पादरियों को नीचा दिखाने के लिये 'बाइबिल' के कुछ भागों का आंग्ल-भाषा में अनुवाद किया। इसकी भाषा ने आगे चलकर गद्य-लेखकों को जो सहायता पहुँचाई, वह कभी भुलाई नहीं जा सकती।

योरप-निवासियों ने क्रूज़ेड के समय में बारूद तथा तोप बनाने की विद्या भी एशियावालों से ही सीखी और उसकी उन्नति का दिन-दिन प्रयत्न करने लगे।

चतुर्थ अध्याय

लेंकास्टर और यार्क-वंश

प्रथम परिच्छेद

लेंकास्टर-वंश का राज्य

सन् १४०० इँगलैंड के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है, क्योंकि इसके बाद लगभग ८० वर्ष तक आंग्ल-लॉर्डों तथा बैरनों में इस बात पर झगड़ा रहा कि आंग्ल-राज्य का वास्तविक उत्तराधिकारी कौन है। इस भयंकर भ्रातृ-युद्ध में कुलीनों के सैकड़ों परिवार नष्ट हो गए। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रतिबंधक शक्ति के निःशक्त हो जाने से ट्यूडर राजे क्रमशः स्वेच्छाचारी हो गए और इँगलैंड के इतिहास ने एक नवीन रूप धारण किया।

(१) हेनरी चतुर्थ (१३९९-१४१३)

हेनरी चतुर्थ आंग्ल-राज्य का वास्तविक अधिकारी न था। पार्लिमेंट ने देश में शांति स्थिर रखने तथा नियमपूर्वक शासन करने के योग्य उसे समझा और इसीलिये उसे आंग्ल-राजा उद्घोषित कर दिया। हेनरी चतुर्थ को जब एक बार रुपए की आवश्यकता हुई, तो पार्लिमेंट ने उसे इस शर्त

पर रुपया देना स्वीकृत किया कि पहले वह आंग्ल-प्रजा के कष्टों को दूर कर दे। लेंकास्टर-वंश के राज्य-काल में आंग्ल-जनता की शक्ति अनंत बढ़ गई और कर तथा धन-संबंधी विषयों का पास करना या न करना लोक-सभा के ही हाथ में हो गया। हेनरी चतुर्थ अंध-विश्वासी था और एक बार कॅज़ड पर भी जा चुका था। वाइक्लिफ़ के मतानुयायी लॉलर्डों के कार्य उसे पसंद न थे। १४०१ में आर्च-बिशप 'एरंडेल' (Arundale) ने चर्च के विरुद्ध नवीन सिद्धांतों के प्रचार करनेवाले व्यक्तियों को जीते-जी आग में जला देने का प्रस्ताव पास किया। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत-से लॉलर्ड वृथा ही आग में जला दिए गए।

रिचर्ड के पक्षपाती चिरकाल से हेनरी चतुर्थ के अधःपतन के उपाय सोच रहे थे। जब हेनरी ने उनकी संपत्ति तथा दुर्ग छीन लिए, तो उन्होंने एक टूर्नामेंट (Tournament) में हेनरी को मारकर रिचर्ड को राज्यासन पर बैठाने का षडयंत्र रचा। किंतु दैवी घटना से षड्यंत्र का भेद खुल गया और विद्रोहियों को इँगलैंड छोड़कर भागना पड़ा। भावी विपत्तियों से बचने के उद्देश से, कुछ ही दिनों बाद, हेनरी ने यह प्रसिद्ध कर दिया कि रिचर्ड की मृत्यु हो गई है।

किंतु रिचर्ड की मृत्यु प्रसिद्ध करके भी हेनरी को शांति

से राज्य करने का अवसर नहीं मिला । वेल्स में रिचर्ड का दल शक्तिशाली था । वेल्स के राजा ओवेन (Owen) और सीमा-प्रांतीय लॉर्ड ग्रे (Grey) में, एक मंडल के स्वामित्व के विषय में, झगड़ा हो गया। ओवेन ने ग्रे पर आक्रमण किया और उसको क़ैद करके अपने पार्वतीय प्रदेश स्नोडन (Snowdon) में ले गया। संपूर्ण वेल्स की प्रजा ने ओवेन का साथ दिया। इससे उसकी शक्ति पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई। उसने हेनरी तथा सीमा-प्रांतीय लॉर्डों के बहुत-से दुर्ग जीत लिए। यही नहीं, उसने 'पिलेथ' पर सर एडमंड मार्टिमर को भी पराजित करके क़ैद कर लिया और हेनरी को भी दो बार बुरी तरह से परास्त किया। तृतीय बार आक्रमण करने के अनंतर भी जब हेनरी ओवेन को न जीत सका, तो सर एडमंड मार्टिमर (Sir Edmund Martimer) ने ओवेन से संधि कर ली और उसकी कन्या से विवाह भी कर लिया। संधि की मुख्य शर्त यह थी कि हेनरी को राज्य-च्युत करके रिचर्ड या उसके वंश के किसी व्यक्ति को आंग्ल-गद्दी पर बैठाया जाय और ओवेन को सदा के लिये वेल्स का राजा माना जाय।

स्कॉटलैंड ने भी हेनरी को काफ़ी कष्ट पहुँचाया। १४०२ में स्कॉच-सेनाओं ने इँगलैंड पर आक्रमण किया। हेनरी पर्सी ने

'हंब्लटन'-नामक स्थान पर स्कॉच-सेनाओं को पराजित किया और बहुत-से स्कॉच-नोबलों को क़ैद कर लिया। हेनरी पर्सी हेनरी चतुर्थ से असंतुष्ट था, अतः उसने स्कॉच-नोबलों को छोड़ दिया और एडमंड मार्टिमर से मित्रता करके ओवेन को सहायता पहुँचाने के लिये वेल्स की ओर रवाना हुआ। हेनरी चतुर्थ भी संपूर्ण घटनाओं को तीक्ष्ण दृष्टि से देख रहा था। उसने बुद्धिमत्ता से श्रूज़बरी का नगर हस्तगत कर लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि हेनरी पर्सी को उससे अकेले ही युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध में हेनरी पर्सी पराजित हुआ और साथ ही मर भी गया। हेनरी की इस विजय का ओवेन पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा। उसने हेनरी को दिन-पर-दिन सताना प्रारंभ किया और फ़्रांस से मित्रता करके उसने अपनी शक्ति पूर्वापेक्षा दुगनी कर ली। हेनरी ने उस पर चतुर्थ आक्रमण किया, परंतु पहले के सदृश ही पराजित हुआ। अंत को इस विपत्ति से उसके पुत्र ने उसका उद्धार किया। उसने वेल्स को टुकड़े-टुकड़े करके जीतना प्रारंभ किया और वह ओवेन को धीरे-धीरे स्नोडन की ओर ढकेलता गया।

१४०६ में स्कॉटलैंड का राजा जेम्स, शिक्षा प्राप्त करने के लिये, फ़्रांस जा रहा था कि मार्ग में ही आंग्ल-मल्लाहों ने उसको क़ैद कर लिया। इन्हीं दिनों फ़्रांस का राजा चार्ल्स षष्ठ पागल हो

कासिल को क़ैद करके जीते-जी जला देने की आज्ञा दी। अपनी मृत्यु से पूर्व ही वह क़ैदखाने से भाग गया ; परंतु १४१७ में पकड़ा जाकर देश-द्रोह के अपराध में फाँसी पर चढ़ा दिया गया। उसकी मृत्यु के अनंतर इँगलैंड में लॉलर्डों का संप्रदाय सर्वदा के लिये नष्ट हो गया।

हेनरी पंचम स्वभावतः वीर क्षत्रिय था। एडवर्ड तृतीय के सदृश नवीन विजय प्राप्त करने की उसकी प्रबल इच्छा थी। पार्लिमेंट से आज्ञा लेकर उसने अपने-आपको फ़्रांस का राजा उद्‌घोषित किया। पार्लिमेंट ने विदेशी भिक्षुओं के गिरजाघरों तथा विहारों के विरुद्ध एक राज्य-नियम बनाया और उनको नष्ट कर देने तथा उनकी संपत्ति ज़बरदस्ती छीन लेने के लिये राजा को आज्ञा दी। इस नियम के बनाने का मुख्य कारण यह था कि विदेशी भिक्षु आंग्ल-धन को विदेश में भेजते थे, जो आंग्लों के ही विरुद्ध युद्ध करने में लगाया जाता था। जो कुछ हो, इस नियम से यह बहुत अच्छी तरह मालूम होता है कि अपने धर्म-मंदिरों की ओर से आंग्लों की श्रद्धा कितनी हट चुकी थी।

१४०७ के भयंकर लेग से आक्रांत होने पर भी आंग्ल-जनता की उन्नति नहीं रुकी। इँगलैंड में अर्द्ध-दासता क्रमशः नष्ट हो रही थी और श्रमियों की दशा पूर्वापेक्षा बहुत अच्छी थी। आंग्ल-जनता कपड़ों पर बहुत अधिक रुपया ख़र्च करने

लगी। अतः इसे रोकने के लिये राज्य-नियम बनाए गए। व्यापार-व्यवसाय की उन्नति के लिये बाल्टिक-सागर के बहुत-से नगरों—फ़्लैंडर्ज़ तथा वेनिस (Venice) आदि—से आंग्ल-राज्य ने नई-नई संधियाँ कीं। न्यू कासिल के कोयले का व्यापार ख़ूब चमक उठा। मुद्रा के भ्रष्टीकरण पर भी मुद्रा का संचलन कम नहीं हुआ। लंदन के बहुत-से व्यापारियों के पास ख़ूब धन हो गया। नए-नए संघों (Guilds) ने श्रमियों तथा शिल्पियों की पूर्ण रक्षा करनी प्रारंभ कर दी। सारांश यह कि हेनरी पंचम के काल में इँगलैंड बहुत तेज़ी के साथ उन्नति करता रहा। इसी समय इँगलैंड तथा फ़्रांस के बीच शत-वार्षिक युद्ध पुनः प्रारंभ हो गया। इसके मुख्य कारण निम्न-लिखित हैं—

(१) पादरी लोग लॉलर्डों की ओर से जनता को हटाकर युद्ध की ओर प्रवृत्त करना चाहते थे।

(२) पार्लिमेंट को इच्छा थी कि किसी प्रकार राजा का ध्यान चर्च की संपत्ति लूटने की ओर से हटे।

(३) आंग्ल-व्यापारी अपना व्यापार-व्यवसाय बढ़ाना चाहते थे; उनके इस कार्य में फ़्रांसीसी जनता बाधक थी।

(४) हेनरी पंचम युद्ध के द्वारा अपनी कीर्ति बढ़ाना चाहता था।

१४१५ के एप्रिल में हेनरी ने अपने को फ़्रांस का राजा

उद्घोषित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि फ़्रांस से इँगलैंड का युद्ध छिड़ गया। १४ तारीख़ को हाल्फ़ोर्ट में पहुँचकर हेनरी ने नार्मंडी को विजय करना प्रारंभ किया। कैले की ओर सेना-सहित जाते हुए 'आजिन कूर' (Agin Court) पर उसका फ़्रांसीसियों के ६० हज़ार सैनिकों से सामना हो गया। उसके पास सिर्फ़ ६ हज़ार सैनिक थे। जो हो, उसने अपूर्व युद्ध-कौशल से फ़्रांसीसियों को भयंकर पराजय दी। इस युद्ध में ११ हज़ार फ़्रांसीसी मारे गए। 'आजिन कूर' (Agin Court) का युद्ध आंग्ल-इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है।

रोग के कारण आंग्ल-सेना के नष्ट हो जाने से हेनरी इँगलैंड लौट आया और दो वर्ष की तैयारी के अनंतर, १४१७ में, उसने पुनः फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया। इस बार उसने संपूर्ण नार्मंडी को हस्तगत कर लिया। रूएन (Rouen) के प्रसिद्ध दुर्ग को भी उसने ६ मास के घेरे के बाद क़ाबू में कर लिया। रूएन के बाद 'पांटाइज़' को जीतकर हेनरी ने पेरिस पर आक्रमण करने का यत्न किया। इसी समय सौभाग्य-लक्ष्मी ने भी उसका पूरा साथ दिया।

'बर्गंडी' का ड्यूक चार्ल्स से मिलने गया हुआ था। वहाँ उसको आर्लीज़ के मित्रों ने धोखेबाज़ी से मार डाला। इसका परिणाम यह हुआ कि बर्गंडी के लोगों ने क्रोध

में आकर आंग्लों से मित्रता कर ली। विचित्र बात यह है कि चार्ल्स की धर्म-पत्नी 'इज़ेबेला' ने अपने पति से रुष्ट होकर अपनी कन्या, कैथराइन (Catherine) का हेनरी से विवाह कर दिया। ट्रॉइज़ (Troyes) की संधि के अनुसार, १४२० की २१ मई को, हेनरी फ्रांस का रक्षक तथा उत्तराधिकारी नियुक्त हुआ। १४२१ की ६ दिसंबर को फ्रेंच राजकुमारी से 'हेनरी'-नामक एक बालक उत्पन्न हुआ। हेनरी पंचम का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। अतः १४२२ की ३१ अगस्त को वह परलोक सिधारा। दैवी घटना से उसकी मृत्यु के दो मास बाद ही अभागे चार्ल्स षष्ठ ने भी इस लोक से प्रस्थान कर दिया। इस प्रकार दस मास का बालक हेनरी षष्ठ के नाम से फ्रांस तथा इँगलैंड का राजा बना। हेनरी पंचम के राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१४१३	हेनरी पंचम का राज्याधिरोहण
१४१४	ओल्ड कासिल का समुत्थान
१४१५	आजिन कूर की लड़ाई
१४१६	रूएन की विजय
१४२०	ट्रॉइज़ की संधि
१४२२	हेनरी पंचम की मृत्यु

(३) हेनरी षष्ठ (१४२२-१४६१)

हेनरी पंचम की मृत्यु के समय इँगलैंड की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई थी। पार्लिमेंट, पादरी तथा आंग्ल-जनता ने हेनरी को फ्रांस-विजय में बहुत ज़्यादा सहायता दी थी। इस विजय के ख़र्चों का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि आंग्लों से रुपया प्राप्त करते हुए भी हेनरी पर बहुत ऋण था। उसने अपनी मृत्यु के समय बैडफोर्ड (Bedford) के ड्यूक को आंग्ल-राज्य का संरक्षक नियुक्त किया और उसको बर्गंडी (Burgundy) के शासक से मित्रता बनाए रखने की सलाह दी। फ्रांस-राज्य का प्रबंध भी बैडफ़ोर्ड के ही हाथ में था। अतः उसकी अनुपस्थिति में ग्लॉस्टर के ड्यूक को आंग्ल-शासन का कार्य मिला।

हेनरी की मृत्यु के एक वर्ष बाद ही ग्लॉस्टर का बर्गंडी के शासक से झगड़ा हो गया। परंतु बैडफोर्ड ने सारा मामला बहुत ही बुद्धिमानी से शांत कर दिया। उसने फ्रांस में भी अपना कार्य बहुत ही अच्छी तरह किया। ५ वर्ष के अथक परिश्रम के अनंतर उसने लॉयर (Loire) के उत्तर का संपूर्ण फ़ांस हस्तगत कर लिया। आर्लीं ज़ (Orleans) के घेरे के लिये वह अभी आगे बढ़ना ही चाहता था कि ए

अपूर्व आश्चर्यमय घटना घटित हो गई, जिससे उसकी सारी जीतों पर पानी फिर गया।

कैंपग्ना तथा लोरेन (Lorraine) के सीमा-प्रदेश पर 'डामरेमी'-नामक एक ग्राम था। इसमें एक मज़दूर रहता था, जिसके एक १८ वर्ष की नौजवान 'ज़ीनडार्क या जोन ऑफ़ आर्क' (Joan of Arc) नाम की कन्या थी। डामरेमी में यह किंवदंती थी कि इसी ग्राम की एक कन्या किसी समय शत्रुओं से फ्रांस का उद्धार करेगी। जो कुछ हो, ज़ीनडार्क (Joan Darc) को किसी प्रकार यह विश्वास हो गया कि ईश्वर ने मुझे ही फ्रांस को स्वतंत्र करने के लिये भेजा है। उसने ग्राम के पुरोहित तथा चौधरी को इस बात पर विवश किया कि वे उसे राजा के पास पहुँचा दें। वहाँ पहुँचकर राजा से भी उसने सारी बातें निर्भय होकर कहीं। आख़िर राजा ने उसे १० हज़ार की सेना देकर आंग्लों से लड़ने के लिये भेज दिया। आश्चर्य की बात है कि उसने आर्लीं ज़ पर आंग्लों तथा बर्गंडियनों को बुरी तरह पराजित किया और रीम्ज़ (Rheims) तक संपूर्ण फ्रांस को शत्रु-विहीन कर दिया। १४२९ की १७ जुलाई को उसने अपने ही सम्मुख चार्ल्स सप्तम को फ्रांस का राजा बनाया और उससे अपने ग्राम को लौट जाने की आज्ञा माँगी। उसने कहा—"मेरा कार्य पूरा हो गया है; अब मुझमें शत्रुओं से लड़ने की शक्ति

नहीं है।" मूर्खता से चार्ल्स ने उसको युद्ध करने के लिये प्रेरित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि १४३० में उसे आंग्लों ने पकड़ लिया और भुतनी कहकर जला दिया। जला तो दिया, पर शीघ्र ही सैनिकों को विचित्र संदेह हुआ कि यह भुतनी नहीं, सच्ची साध्वी थी और वे बहुत पछताए। बहुतेरों को विश्वास हो गया कि इस अधर्म का परिणाम अच्छा न होगा, और ऐसा हुआ भी। फ्रांस-देश अँगरेज़ों के हाथ से निकल गया। कहते हैं, उसके पकड़े जाने में फ्रांसीसियों का भी हाथ था। इनके बड़े-बड़े सरदर ज़ीनडार्क की सफलता देख उससे ईर्षा करते थे, जिससे उन्होंने ऐसा छल किया।

फ्रांस के राज्य को अपने हाथ से फिसलता हुआ देखकर बोफ़र्ट ने हेनरी का पेरिस में राज्याभिषेक-संस्कार किया। इसके दो वर्ष बाद ही वह मर गया और बर्गंडी सदा के लिये फ्रांस से मिल गया। यॉर्क के ड्यूक रिचर्ड ने फ्रांस में युद्ध जारी रक्खा, परंतु उसका कुछ भी फल नहीं निकला। धीरे-धीरे चार्ल्स ने सारा फ्रांस अपने हाथ में कर लिया। १४५३ में शत-वार्षिक युद्ध समाप्त हो गया और एकमात्र 'कैले' ही आंग्लों के हाथ में रह गया।

ग्लॉस्टर का ड्यूक आंग्लों में सर्व-प्रिय था; परंतु वह राज-नीतिज्ञ नहीं था। चांसलर बोफ़र्ट से उसका झगड़ा हो गया। शांति रखने के उद्देश से बोफ़र्ट विदेश चला गया। १४२९ में

हेनरी के राज्य पर बैठते ही ग्लॉस्टर का अधःपतन हुआ और बोफ़र्ट को शक्ति मिली। १४४७ तक बोफ़र्ट बहुत अच्छी तरह काम करता रहा।

इधर पार्लिमेंट दिन-पर-दिन शक्ति खोती गई और राष्ट्र की संपूर्ण शक्ति राजा की गुप्त सभा (Privy Council) के हाथ में चली गई। इसका मुख्य कारण यह था कि प्रतिनिधियों का चुनाव स्वतंत्र भूमि-पतियों तथा गिने-चुने मांडलिक शासकों में से ही किया जाता था। ये लोग प्रायः राजा के ही पक्षपाती होते हैं। १४२५ में पार्लिमेंट के अंदर सशस्त्र जाना बंद कर दिया गया। इस पर सभ्य लोग 'बैट्स' ले-लेकर पहुँचे। इसीलिये इस पार्लिमेंट को 'बैट्सरी पार्लिमेंट' के नाम से पुकारते हैं। १४३७ में हेनरी ने आंग्ल-शासक सभा का स्वयं ही चुनाव किया और इस प्रकार वह स्वेच्छाचार-पूर्ण शासन करने लगा।

हेनरी का शरीर तथा मन दुर्बल था। संपूर्ण राज्य-काल में वह किसी-न-किसी व्यक्ति के प्रभाव में ही रहा। चार्ल्स षष्ठ के वंश से उसका संबंध था। अतः चार्ल्स के ही सदृश उस पर कभी-कभी पागलपन चढ़ आता था। उसने ईटन-स्कूल, किंग्ज़-कॉलेज तथा केंब्रिज की उन्नति में बहुत अधिक प्रयत्न किया।

१४४५ में मार्गरैट के साथ उसका विवाह हुआ। मार्गरैट

बहुत ही चालाक स्त्री थी। उसने हेनरी को अपनी इच्छा के अनुसार चलाना प्रारंभ किया। सफ़क का ड्यूक तथा सॉमर-सैट का अर्ल मार्गरैट के कृपा-पात्र थे। ग्लॉस्टर ने फ़्रांस-विजय के लिये यत्न किया, परंतु उसने उसको ऐसा नहीं करने दिया। इसका कारण यह था कि वह स्वयं फ़्रांस की रहनेवाली थी। उसको यह कब सह्य हो सकता था कि आंग्ल फ़्रांस पर विजय प्राप्त करें। १४४७ में ग्लॉस्टर पर देश-द्रोह का अपराध लगाया गया और दंड मिलने से पहले ही किसी ने उसको मार डाला। इसकी मृत्यु होने पर संपूर्ण इँगलैंड का शासन सफ़क के हाथ में चला गया। परंतु १४५० में उसको भी इस अपराध पर देश-निकाला दे दिया गया कि वह फ़्रांस से एक घृणित संधि करना चाहता था।

अधिक कर के लगने से, विदेशियों के प्रबंध से और फ़्रांस के साथ अनुचित संधि हो जाने से असंतुष्ट होकर 'जैक केड' (Jack Cade) के नेतृत्व में आंग्ल-जनता ने विद्रोह कर दिया। २० हज़ार की सेना के साथ 'जैक केड' लंदन पहुँचा। उसने राजा से प्रार्थना की कि विदेशियों को आंग्ल-भूमि से निकाल दो और पार्लिमेंट के सभ्यों के चुनाव में जनता को स्वतंत्रता दो।

'जैक केड' के साथियों ने मूर्खता से राजा के मंत्रियों को मार

डाला और लंदन के बहुत-से नागरिकों को भी लूट लिया। इसका फल यह हुआ कि लंदन-निवासियों ने 'जैक केड' पर आक्रमण किया और उसको लंदन-ब्रिज पर पराजित किया। विद्रोह को शीघ्र ही शांत करने के उद्देश से हेनरी ने विद्रोहियों को क्षमा-दान दिया तथा उनको अपने-अपने घर लौट जाने के लिये विवश किया। 'जैक केड' को यह पसंद नहीं था। अतः उसने ससेक्स में एक नवीन विद्रोह करवाना चाहा, परंतु उसको कैंट के किसी आदमी ने मार डाला। उसकी मृत्यु हो जाने पर विद्रोह शीघ्र ही शांत हो गया।

इन्हीं दिनों यार्क का ड्यूक 'रिचर्ड' अपने आयरिश राज्य से लंदन आया। यह एडवर्ड तृतीय के वंश का था। इसने राजा के विदेशी मित्रों को देश से निकालने का यत्न किया। परंतु राजा को यह अभीष्ट न था। अन्य विदेशी मित्रों को देश से बाहर निकालना तो दूर रहा, इसके विपरीत उसने सॉमरसैट को राज्य-कार्य सौंप दिया। रिचर्ड ने सॉमरसैट को राज्य-कार्य से हटा देने के लिये हेनरी से कहा; परंतु जब उसने नहीं माना, तो रिचर्ड ने, १४५२ में, सेना एकत्र कर ली। इस पर हेनरी ने सॉमरसैट को क़ैद कर दिया और रिचर्ड को राज्य में मुख्य स्थान दे दिया। दैवयोग से, १४५३ में, हेनरी पागल हो गया। उसके पागल होते ही मार्गरैट ने राज्य-कार्य

अपने हाथ में ले लिया और रिचर्ड को संपूर्ण राज्य-कार्यों से हटा दिया। इसी वर्ष राजा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इससे रिचर्ड की राजा बनने की भावी आशा पर सदा के लिये पानी फिर गया। १४५४ में पार्लिमेंट ने मार्गरैट को नीचा दिखाया और उसकी इच्छा के विरुद्ध रिचर्ड को आंग्ल-राज्य का रक्षक नियत किया। वर्ष समाप्त होते-होते ही हेनरी का पागलपन जाता रहा। स्वस्थ होते ही उसने रिचर्ड को संपूर्ण राज्य-कार्यों से पृथक् कर दिया और उसका स्थान सॉमरसैट को फिर दे दिया।

इस अपमान से क्रुद्ध होकर रिचर्ड ने हथियार उठा लिए और 'सेंट ऐल्बन' (St. Alban) की प्रसिद्ध लड़ाई में उसने अपने विरोधियों को बुरी तरह से पराजित किया। सॉमरसैट तो युद्ध में ही मारा गया और हेनरी रिचर्ड के हाथ क़ैद हो गया। सेंट ऐल्बन (St. Alban) की लड़ाई आंग्ल-इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है, क्योंकि 'गुलाब-युद्ध' (Wars of the Roses) का प्रारंभ इसी युद्ध से माना जाता है। लेंकास्टर तथा यार्क-घरानों का युद्ध ३० वर्ष तक रहा। इसको गुलाबों (Roses) का युद्ध इस-लिये कहते हैं कि लेंकास्टर-दलवालों का लाल और यार्क-दल-वालों का सफ़ेद गुलाब चिह्न था। बहुतों का मत है कि शुरू-शुरू में इनका चिह्न 'गुलाब' नहीं था। अतः इस युद्ध को 'गुलाब-युद्ध'

का नाम देना वृथा है। जो कुछ हो, यह नाम अब इतना अधिक प्रचलित हो चुका है कि इसको छोड़ना सर्वथा कठिन है।

'सेंट ऐल्बन' की लड़ाई के अनंतर राज्य की संपूर्ण शक्ति रिचर्ड के हाथ में चली गई। १४५५ में राजा के पागल हो जाने पर रिचर्ड ही संपूर्ण आंग्ल-राज्य का रक्षक चुना गया। रानी मार्गरैट को यह पसंद नहीं था। राजा का स्वास्थ्य ठीक होते ही उसने 'ऐटेंडर का बिल'(Bill of Attainder)-नामक नियम पास करवाया, और उसके अनुसार रिचर्ड के मित्रों पर देश-द्रोह का अपराध लगाकर उन्हें फाँसी पर चढ़वा दिया। दैवयोग से रिचर्ड स्वयं आयर्लैंड में था। मित्रों की मृत्यु की ख़बर सुनकर, १४६० में, वह ससैन्य इँगलैंड पहुँचा। उसने नार्थैंपटन की लड़ाई में राजा को क़ैद कर लिया। इस पर मार्गरैट स्कॉटलैंड भाग गई। उसने वहाँ सेना एकत्र की और 'वेकफील्ड' (Wakefield) के युद्ध में रिचर्ड को पराजित किया। रिचर्ड युद्ध में ही मारा गया। रिचर्ड की मृत्यु पर उसका पुत्र एडवर्ड एक बड़ी भारी सेना लेकर लंदन की ओर रवाना हुआ। इन्हीं दिनों वारिक के अर्ल ने हेनरी षष्ठ को क़ैद कर लिया और एडवर्ड को एडवर्ड चतुर्थ (Edward IV) के नाम से इँगलैंड का राजा उद्घोषित कर दिया।

हेनरी षष्ठ की स्त्री वीरांगना थी। उसने इँगलैंड के उत्तर में एक भयंकर सेना एकत्र की। इसका परिणाम यह हुआ कि 'टाउटन-फ़ील्ड'(Towton field) पर लेंकास्टर तथा यार्क-वंश की भयंकर लड़ाई हुई। यार्क-वंश ने लेंकास्टर-वंश पर विजय प्राप्त की। १४६१ की २८ जून को वेस्टमिंस्टर में एडवर्ड का राज्याभिषेक-संस्कार हुआ और इँगलैंड में यार्क-वंश का राज्य प्रारंभ हो गया। हेनरी षष्ठ के राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१४२२	हेनरी षष्ठ का राज्याधिरोहण
१४२९	आर्लींज्ञ की स्वतंत्रता
१४३१	जीनडार्क की मृत्यु
१४३२	हेनरी का पेरिस में राज्याभिषेक
१४४७	हेनरी बोफ़र्ट तथा ग्लॉस्टर की मृत्यु
१४५०	'जैक केड' का विद्रोह
१४५५	सेंट ऐल्बन की लड़ाई
१४६०	वेकफ़ील्ड की लड़ाई
१४६१	हेनरी षष्ठ का राज्य-च्युत होना

द्वितीय परिच्छेद

यार्क-वंश का राज्य

(१) एडवर्ड चतुर्थ (१४६१-१४८३)

राज्य-सिंहासन पर बैठने के दस वर्ष बाद तक एडवर्ड को कुछ भी शांति नहीं मिली। मार्गरैट ने वीरता से अपने पति तथा पुत्र के लिये आंग्ल-राज्य को प्राप्त करने का यत्न किया। फ्रांस तथा स्कॉटलैंड से सहायता लेते हुए भी वह हैज्लेमूर (Hedgelemoor) के युद्ध में (१४६४) पराजित हुई। अपने पुत्र के साथ वह फ्लेंडर्ज़ भाग गई और हेनरी पकड़ा जाकर क़ैद कर लिया गया। इस युद्ध के अनंतर एडवर्ड ने वारिक के अर्ल की इच्छा के विरुद्ध 'एलिज़बैथ वुडविल' (Elizabeth-Woodville) के साथ विवाह कर लिया। इस पर वारिक ने क्रुद्ध होकर अपनी कन्या का विवाह मार्गरैट के पुत्र के साथ कर दिया और एडवर्ड चतुर्थ को राज्य-च्युत करने का यत्न करने लगा। १४६९ में लेंकास्टर-वंशियों ने विद्रोह कर दिया और 'एजकोट' (Edgecote) की लड़ाई में एडवर्ड को पराजित करके उसे क़ैद भी कर लिया। वारिक के भाई आर्च-बिशप नैविल (Archbishop of Neville) ने मूर्खता से एडवर्ड को

दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि बंदी-गृह से मुक्त होते ही उसने अपने विरुद्ध दलवालों को 'देश-द्रोही' ठहराया। परंतु इस कार्य से उसको कुछ भी शांति नहीं मिली। वारिक की सहायता प्राप्त करके मार्गरैट इँगलैंड आई। उससे युद्ध करने को असमर्थ देखकर एडवर्ड चतुर्थ फ्लैंडर्ज़ भाग गया। छः मास के बाद एक बड़ी सेना के साथ वह पुनः इँगलैंड पहुँचा। ट्यूक्सबरी (Tewkesbury) पर एक भयंकर युद्ध हुआ। इसमें हेनरी तथा मार्गरैट एडवर्ड के हाथ क़ैद हो गए। वारिक तथा मार्गरैट के पुत्र की मृत्यु हो गई। एडवर्ड ने हेनरी की मृत्यु का भी समाचार एक ही पत्त में सुनाया। १४७५ में बहुत-सा रुपया देखकर रीन ने अपनी पुत्री मार्गरैट को एडवर्ड की क़ैद से छुड़ा लिया।

ट्यूक्सबरी के युद्ध के अनंतर नृपति-निर्माता (King-maker) वारिक के अर्ल के मर जाने तथा अन्य बड़े-बड़े लार्डों के नष्ट हो जाने पर इँगलैंड में शांति स्थापित हो गई। गुलाब-युद्ध के समय नोबलों तथा अर्लों की मृत्यु से उनकी शक्ति सर्वथा कम हो गई और फ़्यूडेल राज्य-प्रबंध की जड़ उखड़ गई। परंतु साधारण प्रजा की यह दशा नहीं थी। छोटे-छोटे भूमि-पति, व्यापारी तथा व्यवसायी दिन-पर-दिन ख़ूब उन्नति कर रहे थे। उनमें धनाढ्यों की संख्या क्रमशः बढ़ रही थी। यही कारण है कि उल्लिखित युद्धों के अनंतर जब एडवर्ड ने देश में शांति स्थापित कर दी,

तो उसको डाली के रूप में खूब रुपया मिला। १४७९ में इँग-लैंड में पुनः प्लेग हुआ, परंतु इससे देश की समृद्धि नहीं रुकी। एडवर्ड ने पार्लिमेंट से पेंशन के तौर पर राज्यारंभ में ही कुछ धन-राशि प्राप्त कर ली थी, अतः उसने पार्लिमेंट के बहुत ही कम अधिवेशन किए। इन्हीं दिनों विलियम 'कैक्सटन' (William Caxton) ने कई वर्ष जर्मनी में रहकर छापेख़ाने का काम सीखा और १४७६ में सबसे पहले इँगलैंड में छापाख़ाना खुला। इस कार्य में राजा की ओर से भी उसको पर्याप्त सहायता मिली। उस समय राजा को क्या मालूम था कि एक दिन यही छापाख़ाना बड़े-बड़े राजों का सिर नीचा करेगा और देश में राजकीय शक्ति के समान ही एक बड़ी शक्ति बन बैठेगा। १४८३ की ९वीं एप्रिल को एडवर्ड का देहांत हो गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१४६१	एडवर्ड का राज्याधिरोहण
१४६४	हैक्लेमूर की लड़ाई
१४७१	ट्यूक्सबरी की लड़ाई
१४७६	कैक्सटन का छापाख़ाना
१४८३	एडवर्ड की मृत्यु

(२) एडवर्ड पंचम (१४८३, एप्रिल-जून)

एडवर्ड चतुर्थ का सबसे बड़ा पुत्र केवल तेरह वर्ष का

ही था। बालक की संरक्षकता (Regency) उसकी माता स्वयं अपने ही हाथ में रखना चाहती थी। लेकिन यार्क-वंशी 'रिचर्ड' पार्लिमेंट को प्रभावित करके स्वयं उसका संरक्षक बन गया। संरक्षक बनते ही उसका मन मैला हो गया और इसने अपने को आंग्ल-राजा बनाने का यत्न किया। जब लॉर्ड हेस्टिंग्ज़ ने उसका विरोध किया, तो बड़ी धूर्तता से उसने उसको फाँसी पर चढ़ा दिया। इस घटना के ९ दिन बाद ही 'सेंट पाल-क्रॉस' के एक उपदेशक ने जनता को यह सूचना दी कि एलिज़बेथ वुडविल एडवर्ड चतुर्थ की वास्तविक स्त्री नहीं थी, इसलिये उसका पुत्र कामज होने से राज्याधिकारी नहीं हो सकता। इस धूर्तता में उस उपदेशक की बात को बकिंघेम के ड्यूक ने पुष्ट किया। २५ जून को बहुत-से लॉर्डों तथा साधारण जनता ने रिचर्ड को ही इँगलैंड का राजा बना दिया।

(३) रिचर्ड तृतीय (१४८३–१४८५)

राज्य पर बैठने के कुछ ही दिन बाद रिचर्ड ने एडवर्ड पंचम और उसके छोटे भाई को मरवा डाला। जनता को उससे इस भयंकर कर्म की स्वप्न में भी आशा नहीं थी। जो कुछ भी हो, इस दुष्कर्म का रिचर्ड को भी अच्छा फल नहीं मिला। दो वर्ष के क्षणिक राज्य में उसने देश का अच्छी

तरह प्रबंध किया। बालकों के मरवाने से उसका चित्त हर समय विक्षिप्त रहता था। बकिंघेम के ड्यूक ने रिचर्ड का साथ छोड़ दिया। हेनरी ट्यूडर को इँगलैंड का राजा बनाने के लिये यत्न करने लगा। बुद्धिमत्ता से हेनरी ट्यूडर ने एडवर्ड चतुर्थ की कन्या, एलिज़बेथ से विवाह करने का प्रण कर लिया। निम्न-लिखित तीन लड़ाइयों के अनंतर हेनरी ने रिचर्ड को परास्त किया—

(१) पहली लड़ाई १४८३ में हुई, परंतु हेनरी सफल नहीं हुआ। रिचर्ड ने बकिंघेम के ड्यूक को क़ैद करके फाँसी पर चढ़ा दिया।

(२) १४८४ की दूसरी लड़ाई में रिचर्ड का पुत्र मारा गया।

(३) तीसरी लड़ाई में रिचर्ड के साथी हेनरी से मिल गए। परिणाम यह हुआ कि बास्वर्थफ़ील्ड (Bosworth Field) के युद्ध में रिचर्ड स्वर्गवासी हो गया और हेनरी ट्यूडर हेनरी सप्तम के नाम से इँगलैंड के राज्य-सिंहासन पर बैठा।

रिचर्ड तृतीय की मृत्यु के अनंतर इँगलैंड ने 'मध्य-काल' (Middle ages) से नवीन काल (Modern times) में प्रवेश करना प्रारंभ किया। आगे 'एलिज़बेथ ट्यूडर' के समय

में इँगलैंड ने एक महाशक्ति का रूप धारण किया। सारांश यह कि गुलाब-युद्ध के अनंतर इँगलैंड ने एक नवीन रूप प्राप्त किया। अतः ट्यूडर-काल का इतिहास पूर्वापेक्षा कुछ अधिक विस्तृत लिखा जायगा।

तृतीय परिच्छेद

पंद्रहवीं सदी में ब्रिटेन की सभ्यता

(१) राजनीतिक अवस्था

पंद्रहवीं सदी में आंग्ल-शासन-पद्धति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। लेंकास्टर-वंश के राज्य-काल में तो पार्लिमेंट ने बहुत अधिक शक्ति प्राप्त कर ली थी, परंतु समय के परिपक्व न होने से उसकी वह शक्ति स्थिर नहीं रही। मध्य-काल में पार्लिमेंट की शक्ति नोबुल लोगों (The Nobles) के हाथ में थी। ये लोग दिन-रात परस्पर लड़ते रहते थे। अतः पार्लिमेंट की शक्ति का स्थिर रहना भी असंभव था। गुलाब-युद्ध में नोबुल लोग निःशक्त हो गए। साधारण जनों के पास पहले ही शक्ति अधिक नहीं थी। परिणाम यह हुआ कि ट्यूडर-काल में आंग्ल-जनता के निःशक्त होने से राजा लोग स्वेच्छाचारी हो गए और उन्होंने पार्लिमेंट को अपनी इच्छाएँ पूर्ण करने का एक साधन बना लिया। जन-राष्ट्र के सदृश ही चर्च-राष्ट्र भी पूर्ववत् शक्तिशाली नहीं रहा। लॉलार्डों ने चर्च-राष्ट्र को जो धक्का पहुँचाया था, उसका वर्णन किया जा चुका है। उनके नष्ट हो जाने पर

भी उसकी पूर्व-स्थिति नहीं रही। तेरहवीं सदी में चर्च के मुखिया ही राष्ट्र में भी मुखिया होते थे, परंतु पंद्रहवीं सदी में यह बात नहीं रही। इससे चर्च की शक्ति को बहुत धक्का पहुँचा, क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर चर्च के अधिकारियों को राष्ट्राधिकारियों का मुँह ताकना पड़ता था, यही नहीं, चर्च की बुराइयों ने भी चर्च की शक्ति को बहुत कुछ नष्ट किया। उनकी बुराइयों का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि स्वयं उन्हीं के आदमी उनके विरुद्ध थे। विद्या-वृद्धि ने भी चर्च के प्रभुत्व को नष्ट किया। गुलाब-युद्ध के समय इँगलैंड में काफ़ी विश्वविद्यालय विद्यमान थे। दृष्टांत-स्वरूप—

(१) ऑक्सफ़ोर्ड-विश्वविद्यालय—इसमें सबसे मुख्य 'न्यू कॉलेज' गिना जाता था।

(२) केंब्रिज-विश्वविद्यालय—इसमें 'किंग्ज़-कॉलेज' का मुख्य स्थान था।

(३) विंचेस्टर-स्कूल तथा ईटन-स्कूल।

इन विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के खोलने में विशेषतः पादरियों का ही हाथ था। इस विद्या-वृद्धि का परिणाम चर्च की शक्ति के लिये कुछ भी अच्छा नहीं हुआ। ट्यूडर-काल में, 'धर्म-परिवर्तन' Reformation में, बड़ा भाग इन्हीं विद्या-

लयों के विद्वानों का था। सारांश यह कि पंद्रहवीं सदी में चर्च तथा जन-राष्ट्र, दोनों ही निःशक्त हो गए। परिणाम यह हुआ कि ट्यूडर-काल में इँगलैंड ने नवीन युग मे प्रवेश किया।

(२) आर्थिक अवस्था

गुलाब-युद्ध-जैसे भयंकर काल में भी आंग्ल-जनता निरंतर उन्नति करती चली गई। नोबुल लोगों के पारस्परिक कलह का प्रभाव उस पर कुछ भी नहीं पड़ा। क्रय-विक्रय तथा व्यापार पूर्ववत् ही उन्नत होता गया। अर्द्ध-दासता का इँगलैंड से सदा के लिये लोप हो गया था और प्रत्येक स्थान पर स्वतंत्र श्रमी ही काम करते दिखाई पड़ते थे। नेदरलैंड में अधिक ऊन पहुँचने से आंग्लों में ऊन का व्यापार दिन-पर-दिन बढ़ रहा था। जनता को कृषि की अपेक्षा भेड़ों के पालने में अधिक लाभ था। एडवर्ड चतुर्थ के उत्तम शासन में आंग्लों का व्यापार-व्यवसाय बहुत अधिक उन्नत हुआ। जन-संख्या भी बहुत बढ़ गई।

नगरों में संघों (Guilds) द्वारा व्यावसायिक पदार्थ उत्पन्न किए जाते थे। संघ के प्रत्येक सभ्य को पर्याप्त अधिकार थे। लाभ में उनको पूर्ण रूप से भाग मिलता था। पदार्थों की क़ीमतें संघ द्वारा ही निश्चित होने के कारण बहुत कुछ स्थिर थीं। शुरू-शुरू में उत्तरीय जर्मनी के हंस-नगरों के

ही हाथ में आंग्ल-व्यापार-व्यवसाय का एकाधिकार (Monopoly) था। एडवर्ड तृतीय के समुद्र पर विजय प्राप्त करने से आंग्लों ने भी व्यापार-व्यवसाय में अपना हाथ दिया। दिन-पर-दिन अधिक संख्या में जहाज़ बनाए जाने लगे और नई-नई संधियों द्वारा आंग्ल-व्यापार-व्यवसाय उन्नत होने लगा। बहुत-से व्यापारियों ने स्कैंडिनेविया (Scandinavia = Sweden and Norway) में व्यावसायिक कार्य करना प्रारंभ किया और हंस-नगरों को व्यापार-व्यवसाय में बुरी तरह से नीचा दिखाया। लंदन की समृद्धि के विषय में तो कहना ही क्या है! सैकड़ों व्यापारिक जहाज़ों से लंदन हर रोज़ घिरा रहता था। आयलैंड तथा आइसलैंड के व्यापार से 'ब्रिस्टल'-नामक नगर ने प्रसिद्धि प्राप्त की। 'कैले'-नामक नगर इँगलैंड के हाथ में था। इसके द्वारा ही संपूर्ण आंग्ल-ऊन नेदरलैंड जाता था; और जब आंग्ल-राजा फ़्रांस पर आक्रमण करते थे, तो वह पहले-पहल कैले में ही ससैन्य उतरते थे।

व्यापार-व्यवसाय की उन्नति के साथ-साथ आंग्लों के मकान भी पूर्वापेक्षा कुछ उत्तम हो गए थे। चर्च, विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों के गृह देखने ही योग्य थे। यही नहीं, गृहों के ही सदृश अस्त्र-शस्त्रों ने भी नवीन रूप धारण किया। जनता में उत्तम-उत्तम बंदूकें रखने का शौक़ बहुत अधिक था। तोपों

का प्रचार भी दिन-पर-दिन बढ़ता जाता था। फ्रांस ने तोपों के ही सहारे आंग्लों को, 'कैस्टिलन' की लड़ाई में, पराजित किया था।

(३) साहित्यिक अवस्था

चॉसर के अनंतर चिर-काल तक आंग्लों में कोई बड़ा कवि नहीं हुआ। गुलाब-युद्ध के समय में आंग्लों में धार्मिक नाटकों (Maralities and Miracle plays) का अधिक प्रचार हुआ। प्रत्येक रविवार को नगरों में नाटक खेले जाते थे। सारी जनता बड़े शौक़ से नाटक देखती थी। इन दिनों गद्य-साहित्य की अच्छी उन्नति हुई। प्रत्येक लेखक विशेषतः राजों के जीवन-चरित तथा इँगलैंड का इतिहास ही, अपने-अपने ढंग पर, लिखता था। कई लॉर्डों ने अपने यहाँ बहुत-से लेखक नियुक्त कर रक्खे थे, जो दिन-रात लिखने का ही काम किया करते थे। ग्लॉस्टर का ड्यूक हंफ़्रे (Humphrey) आंग्ल-साहित्य की उन्नति में विशेषतर प्रसिद्ध है। पर्सी ने भी ऐसे ही कार्यों में बहुत-सा रुपया ख़र्च किया था। विद्या-वृद्धि तथा पुस्तकों की माँग बढ़ जाने के कारण बहुत-से व्यक्तियों ने पुस्तकों के उतारने में ही अपना जीवन दे दिया था। परंतु इस कार्य में परिश्रम तथा समय बहुत लगता था। लकड़ी के अक्षरों से छापने में भी किसी प्रकार की सुगमता नहीं थी। मेंज-नगर-निवासी 'गेटनबर्ग'-नामक

एक जर्मन ने संसार का बहुत ही अधिक उपकार किया। इसने संसार में सबसे पहले धात्वीय टाइप का आविष्कार किया। यह आविष्कार शीघ्र ही सारे योरप में फैल गया। १४५५ में लैटिन-बाइबिल छपी। छपते ही उसकी सहस्रों प्रतियाँ बिक गईं।

एडवर्ड चतुर्थ के समय में 'विलियम कैक्सटन' ने योरप में रहकर धात्वीय टाइप का काम सीखा। उसने १४७७ में वेस्ट-मिंस्टर के नीचे अपना मुद्रण-यंत्रालय खोला और उसमें बहुत-सी पुस्तकें छापकर आंग्लों का बहुत बड़ा उपकार किया। गुलाब-युद्ध का समय संपूर्ण योरप के लिये आविष्कार, विद्या-वृद्धि तथा उन्नति का युग था। इँगलैंड ने भी इन कार्यों में कुछ-कुछ भाग लेना प्रारंभ कर दिया था।

लैंकास्टर तथा यार्क-वंश

I　　　　　　　　　　II

एन मार्टिमर............विवाहित............एडमंड
(कैंब्रिज का अर्ल)

रिचर्ड (यार्क का ड्यूक)

एडवर्ड चतुर्थ	जार्ज	रिचर्ड तृतीय
१४६१-१४८३	(क्लैयरेस का ड्यूक)	१४८३-१४८५

एलिज़बेथ	एडवर्ड पंचम	रिचर्ड
(हेनरी सप्तम की स्त्री)	एप्रिल से जून तक (१४८३)	(यार्क का ड्यूक)

इँगलैंड का इतिहास

संपादक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
(सुधा-संपादक)

गंगा-पुस्तकमाला का सत्रहवाँ पुष्प

इँगलैंड का इतिहास

प्रणेता

प्राणनाथ विद्यालंकार

जिससे होता चित्त में स्वाधीनता-विकास,

पढ़िए-सुनिए धन्य वह देशोन्नति-इतिहास ।

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

द्वितीय संशोधित और संवर्द्धित संस्करण

सजिल्द १॥)] १९२८ [सादी १)

द्वितीय संस्करण की भूमिका

गंगा-पुस्तकमाला द्वारा प्रकाशित 'इँगलैंड का इतिहास' पाठकों के लिये कितना उपयोगी सिद्ध हुआ है, यह इसी से ज्ञान पड़ता है कि आज इसका द्वितीय संस्करण आपके हाथों में है और हमें विश्वास है कि इस बार इसे इतने अच्छे रूप में प्रकाशित देखकर पाठकों को हर्ष होगा। इतिहास की पुस्तकें प्रायः एकांगीन विषयक होने के कारण बहुधा कम रोचक होती एवं बिकती हैं, फिर भी पुस्तक की उपयोगिता ने इसके द्वितीय संस्करण का जो हमें अवसर दिया है, उसके लिये हम भिन्न-भिन्न प्रांतीय शिक्षा-विभागों की पाठ्य-पुस्तक-निर्धारिणी कमेटियों को धन्यवाद देते हैं। मध्यप्रांत और बिहार की कमेटियों ने तो हमें, इसी पुस्तक को अपने-अपने प्रांत में पाठ्य-पुस्तक नियत करके, विशेष उत्साहित किया है। सच पूछा जाय, तो भिन्न-भिन्न प्रांतीय शिक्षा-विभागों और उनके गुणग्राही ख्यातनामा सदस्यों की प्रेरणा ने ही हमें पुस्तक को इस रूप में प्रकाशित करने का अवसर दिया है।

इसीलिये इस संस्करण में कुछ खास विशेषताएँ पाठकों—

विशेषतः विद्यार्थियों—को मिलेंगी। कागज़ चिकना लगाया गया है। साथ ही विद्यार्थियों के सुबोते के लिये सुंदर मोटे टाइप में पुस्तक छपवाई गई है। प्रथम संस्करण में प्रसिद्ध-प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुषों के चित्र एवं महत्त्व-पूर्ण घटनाओं के मानचित्र नहीं दिये गए थे। इस संस्करण में उनका भी समावेश कर दिया गया है। आकार भी बदल दिया गया है। सहूलियत के लिये पुस्तक तीन भागों में विभक्त कर दी गई है। पुनः हिंदी-माध्यम का ख़याल करके हिंदी के साथ-साथ अँगरेज़ी में भी नाम आदि दे दिए गए हैं। इन विशेषताओं के साथ शुद्ध छपाई का ख़ास तौर से ख़याल रक्खा गया है और ख़ास विशेषता इस संस्करण की यह है कि मध्यप्रांत के सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ, हितकारिणी-हाई स्कूल के प्रिंसिपल स्वर्गीय राय साहब पं० रघुबरप्रसादजी द्विवेदी बी० ए० ने इसका, विद्यार्थियों की दृष्टि से, संशोधन कर इसे अधिक उपयोगी बना दिया है। प्रयाग-विश्वविद्यालय के इतिहास के प्रोफ़ेसर डॉ० बेणीप्रसाद ने भी इसे एक बार देखने की कृपा की है और अपनी सम्मति से लाभ उठाने का हमें मौक़ा दिया है। इस प्रकार हमने इस संस्करण को विद्यार्थियों के लिये अधिक-से-अधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की है।

एक बात और। प्रथम संस्करण में केवल १९०१ तक का इतिहास दिया गया था। किंतु इस संस्करण में पुस्तक प्रारंभ-

डट कर दी गई है। इसके लिये हम स्व० पं० रघुबरप्रसादजी द्विवेदी को धन्यवाद देते हैं। १९०१ के आगे का भाग उन्हीं का लिखा हुआ है और उन्हीं की प्रेरणा से जोड़ा गया है। पुनश्च केवल ट्यूडर-काल से आरंभ करके जो पाठक पुस्तक को पढ़ते, उन्हें इतिहास की शृंखला टूटी हुई-सी जान पड़ती। इसी सुबीते के लिए द्विवेदीजी ने ट्यूडर-काल से पूर्व तक के इतिहास को संक्षेप में लिख देने की कृपा की है। यह अंश भी 'भौगोलिक प्रस्तावना' के नाम से इसमें जोड़ दिया गया है। आशा है, इतिहास के शिक्षकों की दृष्टि में भी हमारा इतिहास अन्य सब इतिहास-पुस्तकों से, प्रत्येक बात का ख़याल करके, पठन-पाठन के उपयुक्त जँचेगा और वे इसके प्रचार में सहायक होकर हमें इसका इससे भी सुंदर संस्करण निकालने का अवसर देंगे।

संपादक

वक्तव्य

[प्रथम संस्करण से]

प्रिय पाठक,

इँगलैंड के इतिहास का यह दूसरा भाग भी आज सेवा में उपस्थित किया जाता है। इसमें संदेह नहीं कि यह भाग प्रकाशित होने में बड़ी देर हो गई है—और इसके लिये उलाहने भी हमारे पास कम नहीं आए; परंतु इसमें हमारा कुछ विशेष दोष नहीं। इस इतिहास के संशोधन और संपादन में बहुत अधिक समय हमको लगाना पड़ा है, और फिर भी हमारे मन के माफ़िक़ सर्वांगसुंदर, सर्वथा शुद्ध संस्करण नहीं प्रकाशित हो सका। आशा है, इस बार जो कुछ छोटी-मोटी त्रुटियाँ रह भी गई हैं, वे अगले संस्करण में बिलकुल न रह जायँगी। एक और त्रुटि यह रह गई है कि इसका छपना बीच-बीच में अनिश्चित समय तक स्थगित रखने के लिये विवश होने के कारण कुछ शब्द, भिन्न-भिन्न स्थलों पर, भिन्न-भिन्न रूप में छप गए हैं। यह अनिच्छा-कृत अल्प त्रुटि भी आगे सुधार दी जायगी। इन त्रुटियों का उल्लेख हमने इसलिये स्वयं कर दिया है कि समालोचक सज्जनों को व्यर्थ इनके वर्णन में अपना अमूल्य समय नष्ट न करना पड़े।

इन क्षुद्र-क्षुद्र त्रुटियों के रह जाने पर भी इस इतिहास की उपयोगिता अथवा असाधारणता अणु-मात्र भी कम नहीं होती। हिंदी-संसार में इसके प्रथम भाग का यथेष्ट आदर और प्रचार हो चुका है और यही इसकी उत्तमता अथवा उपयोगिता का प्रबल प्रमाण है।

प्रथम भाग साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग की मध्यमा-परीक्षा के कोर्स में स्वीकृत हो चुका है। आशा है, यह दूसरा भाग भी हिंदी-साहित्य में अपना उचित स्थान ग्रहण करेगा। हिंदी-साहित्य में ऐसे इतिहास आदि के सर्वांग-पूर्ण संपूर्ण सुलिखित ग्रंथों का अभी अभाव ही है, जिन्हें उच्च कक्षाओं के लिये पाठ्य-ग्रंथ बनाया जा सके। इसी अभाव की आंशिक पूर्ति करने के लिये हमने यह इतिहास प्रकाशित किया है। यदि इसका यथेष्ट आदर और प्रचार होगा, तो उससे उत्साहित होकर हम अन्य इसी कोटि के ग्रंथ लिखाकर प्रकाशित करने के लिये उद्योग करेंगे। इस पुस्तक में काग़ज़ अच्छा लगाया गया है, छपाई और शुद्धता पर भी यथेष्ट ध्यान दिया गया है, जिसके देखते मूल्य अधिक नहीं रक्खा गया है।

१।६।२९ } संपादक

भौगोलिक प्रस्तावना

अथवा

ट्यूडर-काल के पूर्व इँगलैंड

(प्रथम खंड का संक्षेप)

भौगोलिक प्रस्तावना

अथवा

ट्यूडर-काल के पूर्व इँगलैंड

आंग्लद्वीप-निवासियों पर उन द्वीपों की भौगोलिक परिस्थिति का प्रभाव पड़ने से ही उनके चरित्र में कई विशेषताएँ पाई जाती हैं, जो ऐसे द्वीप-निवासियों में ही संभव हैं। इसमें संदेह नहीं कि मनुष्य-जाति के चरित्र-गठन के अनेक कारणों में से देश की भौगोलिक परिस्थिति भी प्रधान होती है। यदि इँगलैंड एक द्वीप न होकर किसी महाद्वीप का एक देश होता और चारों ओर दूसरे देशों से घिरा होता, तो समुद्र पर उसका इतना आधिपत्य न जमता, अर्थात् नाविक-विद्या में आंग्ल-जाति इतनी प्रवीण न होती। चारों ओर समुद्र होने से ही इँगलैंड-निवासियों में यह गुण जन्म-सिद्ध है। यदि आंग्ल-जाति किसी अति उष्ण या अति शीत-प्रधान देश में रहती होती, तो उसमें इतनी कर्मण्यता, इतना अध्यवसाय और इतना उत्साह न होता; और तब उसका इतिहास ही दूसरा हो जाता। आईसलैंड (Iceland), मेडागास्कर (Madagasker) आदि भी

तो द्वीप हैं; पर उनके निवासियों में ये गुण क्यों नहीं आए ? इसका कारण वहाँ की अधिक शीतलता या अधिक उष्णता है। इसी से इँगलैंड-निवासी अँगरेज़ों की प्रकृति, उनका चरित्र आदि बातें भली भाँति समझने के लिये हमें इँगलैंड का भौगोलिक ज्ञान पहले ही प्राप्त कर लेना चाहिए। तभी हम उस देश के इतिहास की अनेक घटनाओं को भली भाँति समझ सकेंगे।

इँगलैंड एक द्वीप-देश है। पहले वह योरप महाद्वीप से जुड़ा हुआ था, पर अब न-जाने कितने काल से वह समुद्र से घिरा हुआ स्वतंत्र द्वीप बन गया है। केवल इसी एक कारण से इँगलैंड पर विदेशी विजेताओं के उतने अधिक धावे नहीं हुए, जिससे उसे अपनी रक्षा की इतनी अधिक चिंता नहीं रही। अन्य देशों से दूर रहने के कारण न तो उसे किसी से झगड़ा करने की आवश्यकता हुई और न दूसरों ने उस पर आक्रमण करने की हिम्मत की। इँगलैंड की जल-सेना को हराए बिना इँगलैंड पर धावा करना दुस्साध्य होगा। फ्रांस के १४वें लूई और योरप-विजेता नेपोलियन तथा स्पेन के फिलिप द्वितीय ने इँगलैंड पर आक्रमण करने का बहुत प्रयत्न किया; पर अँगरेज़ों की जल-सेना के कारण ही किसी को सफलता नहीं मिल पाई। युद्धों से इँगलैंड जितना

बचा है, और कोई देश शायद ही बचा हो। क्यों ? इसी लिये कि वह एक द्वीप है। साथ ही जब कभी उसे युद्ध करना पड़ा, तो अपनी जल-सेना के बल पर विजय उसी ने पाई।

एकांत होने से इँगलैंड को उपर्युक्त लाभ तो हुए; पर योरप के बहुत समीप होने के कारण दूसरे योरपीय देशों से उसका संबंध भी बराबर रहा, जिससे वह कूप-मंडूक बनकर किसी से पिछड़ा भी नहीं। साथ ही उसने नेपोलियन-जैसे विजेता के दाँत खट्टे किए, जो योरप के किसी और देश से नहीं बन पड़ा। वह स्वयं स्वतंत्र रहा और उसने अन्य देशों की स्वतंत्रता की भी रक्षा की। गत महायुद्ध के समय उसी ने बेलजियम, फ्रांस आदि देशों को सहायता देकर जर्मनों की दासता से बचाया।

यदि जर्मन लोग फ्रांस के समान इँगलैंड को भी अपने अधिकार में कर लेते, तो क्या युद्ध का फल यह होता, जो अंत में हुआ ? जर्मनों ने इँगलैंड पर आक्रमण करने के लिये कोई प्रयत्न उठा नहीं रक्खा; पर उसके द्वीप होने से उनकी सारी चेष्टाएँ व्यर्थ गई। जर्मनों की प्रबल नौ-सेना भी कुछ न कर सकी। प्रश्न हो सकता है कि आयर्लैंड भी तो इँगलैंड के समान एक द्वीप है, फिर वह उसके समान अपनी श्रीवृद्धि क्यों नहीं कर सका और इँगलैंड का आधिपत्य उस पर क्यों

हो गया ? उत्तर यह है कि केवल द्वीप में रहने से किसी जाति का उत्कर्ष नहीं बढ़ जाता। इसके लिये कई दूसरे ऐसे गुण भी तो चाहिए, जैसे अँगरेज़-जाति में पाए जाते हैं।

इँगलैंड का बहुत-सा भाग पहाड़ी होने से खेती-पाती के लायक़ नहीं है। हाँ, दक्षिण-पूर्वी देशों में खेती हो सकती है। यही कारण है कि इँगलैंड में भोज्यान्नों की कमी केवल वहीं की फ़सल से पूरी नहीं हो सकती। इसी से उसे भोजन-सामग्री अन्य देशों से लानी पड़ती है, अर्थात् व्यापार करना उसके लिये बहुत ही आवश्यक है। इँगलैंड के विस्तीर्ण व्यापार की जड़ यही एक प्राकृतिक कारण है।

इँगलैंड का समुद्र-तट हिंदुस्थान या आफ़्रिका के समुद्र-तट के समान सीधा नहीं, बहुत छिन्न-भिन्न है, अर्थात् उसमें छोटी-बड़ी खाड़ियाँ बहुत पाई जाती हैं, जिससे जहाज़ों के ठहरने के लिये अनेक बंदरगाह बन गए हैं। यह बात व्यापार के लिये बहुत उपयोगी है। देश की चौड़ाई कम होने से उसका अधिकांश समुद्र से बहुत दूर नहीं पड़ता। इससे भी माल ढोने की कठिनाई बहुत कम हो जाती है। इन्हीं सब प्राकृतिक सुविधाओं के कारण इँगलैंड के व्यापार ने इतनी अधिक उन्नति की है, जिसकी बराबरी अन्य देश बहुत परिश्रम करने पर भी अनायास नहीं कर सकते।

इंगलैंड उद्योग-धंधों अर्थात् कल-कारखानों में भी बहुत बढ़ा-चढ़ा है। इसका संबंध भी इँगलैंड की प्राकृतिक स्थिति से है। इस देश में लोहे और कोयले की खदानें समीप-समीप होने से कल-कारखाने स्थापित करना सहज है। ये धातुएँ भी यहाँ अधिक परिमाण में हैं।

यह सब तो है; पर यदि आंग्ल-जाति में कई मानसिक और शारीरिक गुण न होते, तो क्या वह इतनी समृद्धिशालिनी बन सकती? फिर, प्रश्न यह है कि इस जाति में ये सब गुण हैं क्यों? क्या इनका संबंध भी किसी भौगोलिक कारण से है? हाँ, वह कारण इँगलैंड की आब-हवा है। यह ऐसी अच्छी है कि वहाँ काम करनेवाले जल्द नहीं थकते। गरमी तो बहुत कम होती ही है और कटिबंध के अनुसार सर्दी भी इतनी अधिक नहीं पड़ती। रूस आदि देशों के जो भाग इँगलैंड के समान ही शीत-कटिबंध में विद्यमान हैं, उनमें वर्ष के ६ महीने इतने ठंडे होते हैं कि उन दिनों कोई काम नहीं हो सकता। इँगलैंड का यह हाल नहीं है। यहाँ काम बराबर चलता रहता है, न गरमी से ही रुकता है, न सर्दी से।

प्राचीन और माध्यमिक काल

प्राचीन इँगलैंड

इटली की प्रसिद्ध रोमन जाति के एक बड़े सेनापति जूलियस-सीज़र (Julius Cæsar) ने

जब गाल (वर्तमान फ्रांस)-देश जीता, तो उसे संदेह हुआ कि हो-नं-हो, समुद्र में कहीं समीप ही कोई दूसरा देश है, जिसके निवासी गाल-जाति को सहायता पहुँचाया करते हैं। सन् ईस्वी से ५५ वर्ष पूर्व वह इस देश का पता लगाने के लिये सेना-सहित नौकाओं पर चढ़कर आगे बढ़ा। थोड़े ही समय में उसे ब्रिटेन (Britain)-नाम का द्वीप मिला। इस द्वीप में केल्ट (Celt) लोगों की कई जातियाँ बसी हुई थीं। ये सब ब्रिटन (Breton) कहलाती थीं। इनको जीतकर जूलियस सीज़र अपने देश को लौट गया। ब्रिटन लोग फिर स्वतंत्र होकर रहने लगे। पर रोमन लोगों को इस देश का पता लग जाने से, सन् ईस्वी से ४३ वर्ष पूर्व उन लोगों ने ब्रिटेन को जीतकर रोमन साम्राज्य का एक प्रांत बना लिया। समय पाकर ब्रिटन लोग शिक्षा, रीति-रिवाज़ तथा चाल-ढाल में ख़ासे रोमन बन गए। इन लोगों ने रोमन सभ्यता में तो अच्छी उन्नति की; पर ये लड़ना बिलकुल भूल गए।

सन् ४१० में रोमन लोगों को ब्रिटेन छोड़ देना पड़ा। उत्तर की असभ्य जातियों ने इन्हें कई बार हराया और साम्राज्य के कई भागों में अपना अधिकार जमा लिया। इन लोगों ने जब इटली पर ही चढ़ाई कर दी, तो उसकी रक्षा के लिये रोमनों ने अपनी सेना ब्रिटेन से बुला ली।

रोमन अधिकारियों तथा सैनिकों के चले जाने पर सभ्य ब्रिटनों की बड़ी दुर्गति होने लगी। ये लोग लड़ना तो भूल ही गए थे, इसलिये स्कॉटलैंड के निवासी पिक्ट (Pict) और स्कॉट (Scot) आ-आकर इन्हें लूटने और सताने लगे। साथ ही, उत्तरीय जर्मनी में रहनेवाली जातियों के कुछ असभ्य नौकाओं द्वारा जर्मन-समुद्र को पार कर ब्रिटेन के तटस्थ स्थानों को लूटने लगे। ये लोग ऐंगिल (Angles), जूट (Jutes) और सैक्सन (Saxsons) कहलाते थे। ब्रिटन लोगों ने स्कॉटलैंड से आनेवाले शत्रुओं को रोकने के लिये इन लोगों के सरदार हैंजिस्ट और हॉर्सा (Hengist and Horsa) को राज़ी किया। इन सरदारों ने उत्तरीय जातियों के हमले तो बंद करा दिए, पर ब्रिटेन से ये फिर नहीं लौटे। १०० वर्ष के भीतर जूट लोगों ने केंट (Kent), सैक्सनों ने एसैक्स (Essex), ससैक्स (Sussex) और वेसैक्स (Wessex), और ऐंगिलों ने नार्थंब्रिया (Northumbria), ऐंग्लिया (Anglea) और मर्सिया (Mercia) पर अपना अधिकार कर लिया। इन जातियों ने बेचारे ब्रिटनों को मार भगाया और वे वेल्स (Wales) के पहाड़ों में जा बसे।

७वीं शताब्दी के आरंभ होते-होते ब्रिटेन में ७ राजा हो गए और इस नृपति-समूह का नाम हेप्टार्की (Hept-

archy) पड़ा। ये जर्मन जातियाँ सभ्यता में बहुत पिछड़ी हुई थीं और ओडन (Woden), थॉर (Thor) आदि देवी-देवतों को पूजती थीं। इनमें दासों (Slaves) का क्रय-विक्रय बहुत होता था। ऐसी गिरी हुई दशा में भी इनके राजा देश के बुद्धिमानों की एक सभा विट्नेजिमाट (Witenagemort) की सलाह से काम करते थे। इस सभा की आज्ञा पाए विना राजा किसी दूसरे राजा से युद्ध या संधि नहीं कर सकता था। यही सभा वर्तमान पार्लिमेंट सभा की जननी है।

सन् ५८४ में इन जातियों में ईसाई-धर्म का प्रचार शुरू हुआ और थोड़े ही समय के भीतर मार्सिया को छोड़कर सारा देश ईसाई हो गया। इस मत के ग्रहण करने से ये लोग, रोमन पादरियों के उपदेश से, अपनी बर्बरता छोड़ते गए और धीरे-धीरे इनमें धार्मिक भाव प्रबल होने से इनके आचरण भी सुधरते गए। एक रोमन पादरी ने इन्हें 'एंगिल' कह दिया, जिससे ये सब इसी नाम से प्रसिद्ध हुए और ब्रिटेन, इनका देश होने से, 'एंगिललैंड' (Angle's land) और पीछे से इँगलैंड कहलाया।

धीरे-धीरे इन राज्यों के तीन बने और अंतमें समूचे देश पर एक ही राजा राज्य करने लगा।

डेनमार्क और नार्वे के किनारे के लोग अब भी पुराना धर्म

डेन जाति के आक्रमण

मानते और असभ्य थे; पर वे नाविक-विद्या में कुशल तथा वीर योद्धा होते थे। इतिहास में इन लोगों को डेन (Dane) कहा है। इन डेनों के दल-के-दल नौकाओं में आ-आकर इँगलैंड के तटस्थ स्थानों पर आक्रमण करने लगे। इसी प्रकार इन्होंने फ्रांस के उत्तरीय भागों में भी बड़ा ऊधम मचाया। फ्रांस के लोग इन्हें नार्थमैन (Northman) या नार्मन (Norman) कहते थे। उस समय वेसैक्स का राजा एग्बर्ट (Egbert) सारे इँगलैंड पर राज्य करता था। इसने डेनों से कई लड़ाइयाँ लड़ीं, पर इन लोगों के हमले वैसे ही होते गए। राजा एल्फ़्रेड (Alfred) ने भी बहुत लड़ाई करने के बाद, सन् ८७८ में उनसे वेडमोर (Wedmore) की संधि कर देश का उत्तरीय भाग उनको दे दिया। उसने यह बड़ी बुद्धिमानी का काम किया, क्योंकि दो-ही-तीन पुश्तों में एल्फ़्रेड के एक वंशज के हाथ में सारा इँगलैंड फिर से आ गया और डेन लोग ईसाई हो आंग्ल-जाति में मिल गए।

एल्फ़्रेड महान् (Alfred, the Great)

वेसैक्स के राजे में एल्फ़्रेड सबसे उत्तम राजा कहलाता है और इसी से उसकी पदवी "दि ग्रेट" या महान् है। यह इसलिये

कि वह अपनी प्रजा का सच्चा हितेच्छु था और उसकी उन्नति में सदा लगा रहता था। उसने शिक्षा-प्रचार में बड़ा उद्योग किया; लैटिन-भाषा के कई ग्रंथों का अनुवाद करके या कराकर उनका प्रचार अपने देश में किया। वह बड़ा पराक्रमी और दूरदर्शी था। डेनों से संधि कर उसने अपने देश को बचा लिया। समाज, सेना तथा शासन-नीति में भी उसने कई सुधार किए।

निदान एडवर्ड दि कॉनफ़ेसर (Edward, the Confessor) नाम के एक आंग्ल-राजा के समय में इँगलैंड में बड़ी अशांति फैली और झगड़े बढ़े। एडवर्ड निस्संतान था, इसलिये उसने गॉडविन के अर्ल (The Earl of Godwin) को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। एडवर्ड की मृत्यु सन् १०६६ में हुई और गॉडविन का बेटा हैरल्ड (Harold) इँगलैंड का राजा हुआ। पर वह शांति-पूर्वक राज्यन कर सका। उत्तरीय इँगलैंड पर उसके भाई टॉस्टिग (Tostig) की सहायता के लिये नार्वे का राजा चढ़ आया। हैरल्ड ने स्टैंफ़ोर्ड ब्रिज (Stamford Bridge) की लड़ाई में उसे हराया ही था कि दक्षिण में नार्मंडी के ड्यूक विलियम की चढ़ाई की ख़बर मिली। हैरल्ड अपनी सेना ले दक्षिण की ओर दौड़ा और सिनलैक या हेस्टिंग्ज (Senlac or Hastings) की लड़ाई में मारा गया। खेत

ड्यूक विलियम के हाथ रहा। निदान इँगलैंड पर फिर से एक विदेशी विजेता राज्य करने लगा।

ड्यूक विलियम ने इँगलैंड पर राज्य करना आरंभ कर दिया। उसने आंग्लों से ज़मीन छीनकर अपने साथ नार्मंडी से आए हुए नार्मन सरदारों को दी। उसने आंग्ल-ज़मींदारों पर यह अपराध लगाया कि ये लोग मुझसे लड़े। एडवर्ड के मरने पर मेरा ही हक़ था, हैरल्ड का नहीं; पर इन लोगों ने एक बाग़ी का साथ दिया, इसलिये इनको यह दंड दिया गया। विलियम ने जो सबसे बढ़कर कार्य किया, वह समाज-व्यवस्था का कार्य था। उसने इँगलैंड में फ्यूडेल सिस्टम (Feudal System) का प्रचार किया। यह एक प्रकार का भूमि का प्रबंध था। इसके अनुसार राजा ही भूमि का स्वामी (Leige lord) समझा जाता था और वह देश की ज़मीन जिन ज़मींदारों के बीच में बाँट देता था, वे उसके वैसल(Vassals)या अधीन भूमिपति कहलाते थे। इन भूमिपतियों को शपथ-पूर्वक वचन देना पड़ता था कि हम सदा राजभक्त रहेंगे, युद्ध के अवसर पर रसद-समेत इतने सिपाही लेकर, इतने दिनों के लिये उपस्थित होंगे और राज-सेना में मिलकर लड़ेंगें। इन्हें भूमिकर नहीं देना पड़ता था। ये लोग भी अपने हिस्से की ज़मीन नाइट (Knights) या ठाकुरों को बाँटकर प्रत्येक से वैसी

पोप नियुक्ति करने लगा और पादरियों के मामले तय करने के लिये अलग अदालतें स्थापित हो गईं। फल यह हुआ कि धार्मिक बातों (Church) पर राजा का अधिकार बहुत कम हो गया, जिससे आगे बड़े-बड़े अनर्थ हुए। विलियम ने यह सब इस-लिये होने दिया कि धार्मिक विषयों में भूमिपति (Barons) अपना सिक्का न जमाने पावें। उसने अपना अधिकार रक्षित रखने के लिये यह नियम रक्खा कि पादरी लोग उसकी सम्मति लिए विना पोप की आज्ञाओं का पालन न करें और न पादरियों की सभा उसकी अनुमति पाए विना कोई नया नियम ही बना सके। पर आगे उसके इन नियमों से राजा के अधिकारों की रक्षा होने के बदले राजा और धर्माध्यक्षों के बीच तनातनी रहने लगी और कई बार बड़े-बड़े झगड़े भी हुए।

नार्मन-विजय से इँगलैंड को कुछ समय के लिये हानि तो हुई ही, पर साथ-ही-साथ लाभ भी हुआ। नार्मन लोग सभ्यता और शिक्षा में आंग्लों की अपेक्षा अधिक बढ़े-चढ़े थे, इसलिये उनके समय में बड़े-बड़े नए नगर बने और पुराने नगरों की उन्नति हुई। व्यापार की भी उन्नति हुई और व्यापारियों के संघ(Merchant guilds) भी स्थापित हुए। भिन्न-भिन्न देशों से आकर यहूदी महाजन भी यहाँ बस गए

और व्यापारियों को पूँजी मिलने का सुबीता हो गया। ये यहूदी बड़े सूदख़ोर होते थे, इसलिये प्रजागण इन्हें घृणा की दृष्टि से देखने लगे। इन थोड़ी-सी बातों से स्पष्ट है कि नार्मन-विजय से इँगलैंड को अंत में लाभ ही हुआ, ख़ासकर जब आंग्ल और नार्मन जातियाँ समय पाकर एक हो गईं। आंग्ल, डेन, नार्मन आदि के सम्मिश्रण से अंत में जो एक आंग्ल-जाति बनी, उसमें इन सबके गुण एकत्र पाए जाने लगे।

स्टीवन ११३४-११५४

विलियम के बाद उसके घराने के जो शासक हुए, उनमें स्टीवन (Stephen) के राजत्व-काल में भूमिपति बैरनों का ज़ोर बहुत बढ़ गया और वे साधारण जनता पर बड़ा अत्याचार करने लगे। राजा भी उनका कुछ नहीं कर सकता था। वे अपने दुर्गम क़िलों से निकलकर अपने प्रतिद्वंद्वी बैरन का इलाका लूटते और अपने क़िले में जा बैठते थे। साधारण जनता पर बड़ा अत्याचार होता था, उसका तो कोई हक़ ही नहीं था।

हेनरी द्वितीय (११५४-११८९)

स्टीवन के मरने पर हेनरी द्वितीय इँगलैंड का राजा हुआ। इसका पिता फ़्रांस के आंजो-प्रांत (Anjou) का था, इसलिये हेनरी द्वितीय और उसके वंशज एंजविन राजा' (Angevin) कहलाए।

राजा हेनरी द्वितीय बड़ा पराक्रमी राजा हुआ। उसने

पहले तो बैरनों के ११०० क़िले नष्ट कर मानो उनके दाँत और नख तोड़ डाले। फ्रांस के कई प्रांतों और आयर्लैंड, स्कॉटलैंड तथा वेल्स पर भी अपना अधिकार जमा लिया। इन कार्यों से प्रजा हेनरी को बहुत मानने और शांति-पूर्वक सुख से रहने लगी।

हेनरी ने देखा कि पादरियों के न्यायालयों को फाँसी देने का अधिकार न होने से हत्यारे पादरी भी प्राणदंड से बच जाते हैं। इसलिये उसने यह नियम बना दिया कि प्राणदंड का अपराध करनेवाले पादरियों के मुकदमे पादरियों की अदालत में नहीं, राजकीय अदालतों में दायर हुआ करें। उस समय इँगलैंड का महाधर्माध्यक्ष (Arch Bishop) टॉमस बेकेट नाम का एक पादरी था। उसने इस नए नियम के विरुद्ध घोर आपत्ति की। उसके इस विरोध से व्याकुल हो हेनरी के मुँह से मारे क्रोध के यह उद्गार निकला कि "क्या कोई ऐसा राजभक्त नहीं है, जो इस दुष्ट पादरी से मेरा पिंड छुड़ावे ?" कदाचित् ये निरे उद्गार ही थे, बेकेट की हत्या वह नहीं चाहता था; पर ४ राज-भक्त नाइटों ने जाकर उसका काम ही तमाम कर दिया।

अब तो हेनरी को उलटे लेने के देने पड़ गए। गिरजाघर की पवित्र वेदी पर महाधर्माध्यक्ष की हत्या होने से सारे देश में

हाहाकार छा गया। राजा भी बड़ा धार्मिक था, उसे भी बड़ी ग्लानि हुई; और यद्यपि उसने यह हत्या नहीं की थी, फिर भी उसे घोर प्रायश्चित करना ही पड़ा। वह कई दिनों तक बेकेट की समाधि पर भूखा-प्यासा पड़ा रहा और अंत में अपने शरीर पर इतने कोड़े लगवाए कि छल-छल खून बहने लगा। राजा का बनाया हुआ राज्य-नियम भी जारी न हो सका। इस एक घटना से स्पष्ट विदित होता है कि उन दिनों पादरियों का कैसा जोर था।

इन्हीं दिनों पैलेस्टाइन (Palestine) पर तुर्कों का राज्य हो जाने से योरप के ईसाइयों को ईसा की समाधि के पवित्र तीर्थ जरुस्सलम की यात्रा करना कठिन हो गया। इस पर सभी ईसाई देशों से ईसाइयों के बड़े-बड़े जत्थे मुसलमानों से लड़ने को जाने लगे। ये लड़ाइयाँ 'क्रुज़ेड्स' (Crusades) कहलाती थीं। स्मरण रहे, जिस तरह चंद्रकला (Crescent) मुसलमानी धर्म का चिह्न है, उसी तरह 'क्रूस' (Cross) ईसाइयों का धर्म-संकेत है। इसीलिये ये युद्ध 'क्रूस' के अर्थात् ईसाइयों के धर्म-युद्ध कहलाते हैं।

इँगलैंड का राजा रिचर्ड प्रथम (Richard I) बड़ा बहादुर था और इस लड़ाई में भाग लेने के लिये पैलेस्टाइन गया था। उसकी अनुपस्थिति में बैरनों का जोर फिर से बढ़ गया। सन्

११९९ में उसका भाई जॉन (John) राजा चुना गया। इसने राज्य पर अधिकार पाते ही बड़ा अत्याचार शुरू किया, यहाँ तक कि पादरियों को भी सताकर ईसाइयों के जगद्गुरु पोप (Pope) को भी असंतुष्ट कर दिया। हार जाने से फ्रांस का अँगरेज़ी राज्य भी उसके हाथ से निकल गया। सारांश यह कि जॉन बहुत अधम राजा निकला। थोड़े ही समय के भीतर सभी दर्जे के लोग उससे असंतुष्ट हो गए।

महास्वतंत्रता-पत्र (Magna Carta) १२१५ ई०

निदान महा-धर्माध्यक्ष (Arch Bishop) स्टीवन लैंगटन (Stephen Langton) की सलाह से भूमि-पति बैरनों ने एक सभा करके राजा के अधिकारों को नियंत्रित कर देना चाहा और एक नियमावली तैयार करके यह निश्चय किया कि राजा जॉन से इस पर हस्ताक्षर कराकर उससे प्रतिज्ञा कराई जाय कि वह इसी नियमावली के अनुसार शासन करे। इस नियमावली का नाम इँगलैंड के इतिहास में मेगनाकार्टा (Magna Carta) है, जिसका अर्थ ग्रेट चार्टर (The Great Charter) अर्थात् बड़ी सनद होता है। इस सनद में दो बड़ी शर्तें रक्खी गई थीं, जिनमें से एक यह थी कि राजा ने जिन भूमि-पतियों को भूमि दी है, उनसे कुछ निश्चित विषयों को छोड़ शेष प्रसंगों पर उनकी

सम्मति के विना कर आदि लगाकर धन न ले और दूसरी यह कि वह अपनी प्रजा के जान-माल को मनमानी हानि न पहुँचा सके अर्थात् क़ानूनी कारखाई किए विना वह किसी को गिरफ़्तार या क़ैद न करे और न किसी की जायदाद ही ज़ब्त कर सके। ऐसी सब कारखाई न्यायालयों द्वारा की जाय, अर्थात् किसी को वारंट निकालकर गिरफ़्तार करने और अपराध साबित होने पर दंड देने का अधिकार न्यायाधीश को रहे, न कि राजा को।

यह बड़ी सनद अँगरेज़ों की स्वतंत्रता और क़ानून की जड़ है। आगे उनकी स्वतंत्रता के संबंध में जो-जो राज्य-नियम बनाए गए, वे सब इसी सनद के आधार पर बने। इसके सिद्धांतों को स्वीकार कर लेने से इँगलैंड का राजा निरंकुश न रह सका। न तो उसके हाथ में मनमाना कर लगाना रहा और न किसी से चिढ़कर उसे दंड देना।

उन दिनों में पोप तथा पादरियों का कितना चलता था, यह तो कुछ-कुछ हेनरी द्वितीय और बेकेट के झगड़े का परिणाम देखकर मालूम हो गया होगा। जॉन का हाल और भी बुरा हुआ। स्टीवन लैंगटन (Stephen Langton) को पोप ने इँगलैंड का आर्चबिशप या प्रधान धर्माध्यक्ष बनाया। जॉन को यह नियुक्ति पसंद न आई और उसने लंगटन को इँगलैंड में न

घुसने दिया तथा पादरियों को लूटना आरंभ कर दिया। पोप ने पादरियों को आज्ञा दी कि तुम विवाह, मृत्यु, बपतिस्मा आदि संस्कारों के साथ जो धार्मिक कृत्य किए जाते हैं, उन्हें करना छोड़ दो। ऐसा होने से प्रजा में बड़ी खलबली पड़ गई। लोग समझे कि इन धार्मिक संस्कारों के न होने से हम सब नरक-गामी होंगे। इस प्रकार स्वर्ग का द्वार बंद होते देख बेचारे धर्म-भीरु अँगरेज़ घबरा गए; पर जॉन को इसकी परवा ही क्या! वह उन आदमियों का सर्वस्व छीनने और उनके गिरजे बंद करने लगा, जो पोप की आज्ञा मानकर हड़ताल कर बैठे थे और धार्मिक संस्कार नहीं कराते थे। जॉन की यह धृष्टता देख पोप ने अपना एक बहुत ही भयं-कर अस्त्र चलाया, अर्थात् ईसाई-समाज (Church) से ही जॉन के बहिष्कार की आज्ञा निकाल दी। जिस आदमी का बहिष्कार (Ex-communication) पोप इस तरह कर दिया करता था, उससे कोई भी श्रद्धालु ईसाई किसी प्रकार का सरोकार नहीं रखता था, न कोई उसकी नौकरी करता, न उसके कोई चीज़ बेचता, न उसके यहाँ का मुर्दा उठाता और न उसके पास उठता-बैठता था। निदान ऐसे बहिष्कृत मनुष्य का जीना तक कठिन हो जाता था।

जॉन था राजा, उसने अपने बहिष्कार की भी परवा न

की। तब तो उसने अपना अंतिम अस्त्र छोड़ा, अर्थात् फ्रांस के राजा फ़िलिप द्वितीय (Philip II) को आज्ञा दी कि तुम एक ऐसे नास्तिक राजा का राज्य छीनकर अपने अधिकार में कर लो। अब जॉन से कुछ करते-धरते न बना, उसने अपना राज-मुकुट पोप के प्रतिनिधि के चरणों पर रखकर बड़ी दीनता से निवेदन किया कि मैं अपना राज्य पोप को देता हूँ और यदि उसकी कृपा हुई, तो उसका दास बनकर राज्य करूँगा।

इस वृत्तांत के यहाँ लिखने का अभिप्राय यही है कि पाठक जान लें कि उन दिनों में पोप और उसके पादरियों का कितना ज़ोर था, उनके सामने बड़े-बड़े राजे मस्तक झुकाते थे, क्योंकि उनसे भिड़कर पार पाना कठिन था।

हेनरी तृतीय

जॉन के पुत्र हेनरी तृतीय के समय में इँगलैंड को एक बड़ा लाभ हुआ, अर्थात् वहाँ पार्लिमेंट सभा की स्थापना हुई। वैसे तो बैरनों की सभा आगे भी थी और कुछ दिनों से उसको पार्लिमेंट कहने लगे थे। बड़ी सनद की धारा के अनुसार राजा को कर आदि लगाकर रुपया वसूल करने के पूर्व इस सभा की अनुमति लेनी पड़ती थी। हेनरी को बार-बार रुपए की ज़रूरत पड़ती थी, इसलिये वह इस सभा का बार-बार आमंत्रण करता था। इससे बैरन लोग असंतुष्ट

हो गए और सन् १२६४ में हेनरी को क़ैद कर लिया। इस समय बैरनों का नेता अर्ल साइमन डि मांटफ़ोर्ट (Simon de Montfort) था। सन् १२६५ में उसने एक सभा बैठाई। इसमें आगे के समान केवल बैरन लोग और बड़े-बड़े पादरी ही नहीं, बल्कि प्रत्येक नगर और काउंटी (County) या ज़िले के तथा छोटे-छोटे ज़मीदारों (Knights) की ओर से भी दो-दो प्रतिनिधि बुलाए गए। इस तरह समस्त जनता के प्रतिनिधियों को इस सभा में बैठने का अधिकार मिल गया। यह सभा "साइमन की पार्लिमेंट" कहलाती है। यही वर्तमान पार्लिमेंट-सभा की जननी है, इसलिये अँगरेज़ी इतिहास में इसका बड़ा महत्त्व है।

एडवर्ड प्रथम

हेनरी तृतीय के पुत्र एडवर्ड प्रथम ने उद्योग कर अर्ल साइमन को युद्ध में परास्त किया और वह मारा भी गया। पर उसने साइमन की नीति का अनुसरण कर पार्लिमेंट-सभा को वैसा ही रहने दिया। साथ ही पार्लिमेंट के दो भाग भी कर दिए, जो लॉर्ड और कामंस (The House of Lords & the House of Commons) कहलाए। लार्ड्-सभा में बैरन और बड़े-बड़े पादरी तथा कामंस-सभा में नगरों और ज़िलों (Counties) के प्रतिनिधि बैठने लगे। ऐसी बड़ी पार्लिमेंट का अधिवेशन

पहली बार सन् १२९५ में हुआ। इसके सम्मुख राजा ने शपथ-पूर्वक प्रतिज्ञा की कि पार्लिमेंट की अनुमति लिए विना किसी प्रकार का कर न लगाया जायगा। पार्लिमेंट का अधिकार आगे यहाँ तक बढ़ा कि उसने एडवर्ड द्वितीय को अयोग्य देख पदच्युत कर दिया। इसी राजा की अयोग्यता के कारण स्कॉटलैंड अँगरेज़ों से युद्ध करके उनके एडवर्ड द्वितीय के हाथ से निकल गया।

एडवर्ड तृतीय

एडवर्ड तृतीय के समय में इँगलैंड और फ्रांस के बीच शत-वार्षिक युद्ध का आरंभ हुआ। यह युद्ध शत-वार्षिक इसलिये कहलाया कि यह समय-समय पर होता हुआ कहीं सौ वर्ष में समाप्त हुआ, लगातार सौ वर्ष नहीं चला। पहले तो अँगरेज़ों की विजय-पर-विजय हुई और फ्रांस का बहुतसा भाग उन लोगों ने जीत लिया; पर अंत में कैले (Calais) नगर के सिवा उनके हाथ में कुछ न बच रहा।

काली मृत्यु या प्लेग (The Black Death) और किसान-मज़दूरों का विद्रोह (The Peasants' revolt)

सन् १३४८ में इँगलैंड एक भयंकर महामारी का शिकार बना, जिससे उसकी जन-संख्या केवल आधी रह गई। इसका परिणाम यह हुआ कि मज़दूर कम हो जाने से मज़दूरी की दर बढ़ गई। उन दिनों में बेचारे मज़दूरों के कोई हक़ तो थे नहीं। पार्लिमेंट में

ज़मींदारों का ज़ोर था, इसलिये मज़दूरों का क़ानून (Statute of Labourers) बनाकर यह नियम कर दिया गया कि मज़दूरी की दर बढ़ न सकेगी, आगे के समान रहेगी। इस ज़बरदस्ती का फल यह हुआ कि किसान और मज़दूरों ने बग़ावत (Peasants' revolt) कर दी। पर वे कर ही क्या सकते थे, बुरी तरह कुचले गए।

गुलाब-युद्ध (The Wars of the Roses)

१४५५-१४८६ पार्लिमेंट ने रिचर्ड द्वितीय (Richard) की अयोग्यता के कारण उसे राज-सिंहासन से उतार एडवर्ड तृतीय के तीसरे पुत्र जॉन ऑफ़ गांट (John of Gaunt) के वंश के हेनरी चतुर्थ को राजा बनाया। उसके बाद हेनरी पंचम और हेनरी षष्ठ ने राज्य किया। ये राजा लेंकास्टर-वंश के राजा कहलाते थे, क्योंकि जॉन ऑफ़ गांट को लेंकास्टर के ड्यूक की पदवी थी। हेनरी चतुर्थ को पार्लिमेंट ने राजा बनाया था, इसलिये उसका ज़ोर इन लेंकास्टर-वंशी राजों पर बहुत था। इन राजों का पैदायशी हक़ तो था नहीं, क्योंकि ये लोग एडवर्ड तृतीय के तीसरे लड़के के वंशज थे। उसका प्रथम पुत्र ब्लैक प्रिंस (Black Prince) मर गया था और द्वितीय पुत्र के एक लड़की थी, इसलिये तृतीय पुत्र के वंशजों को गद्दी मिली थी। पीछे से

द्वितीय पुत्र के वंश में, कन्या से, यार्क का ड्यूक हुआ। यह अपने को सच्चा हक़दार समझता था। निदान इँगलैंड की जनता, शत-वार्षिक युद्ध में कैले को छोड़ फ्रांस से जीता हुआ सब देश खो बैठने से, लेंकास्टर-वंश के हेनरी षष्ठ से बहुत अप्रसन्न हो गई और बहुत-से वैरनों ने यार्क के ड्यूक का पक्ष ग्रहण किया। अंत में इन दोनों पक्षों के बीच घरू-युद्ध (Civil War) छिड़ गया। इसी का नाम इतिहास में गुलाब-युद्ध (Wars of Roses) पड़ा है। ऐसा नाम पड़ने का कारण यह है कि यार्क के ड्यूक का चिह्न सफ़ेद गुलाब और लेंकास्टर-वंश का लाल गुलाब था।

इस युद्ध से एक बड़ा लाभ यह हुआ कि इँगलैंड के भूमि-पति वैरन, जो दोनों पक्षों में मिलकर लड़े थे, अधिकांश कट मरे और जो बचे, वे बहुत निर्बल पड़ गए। कहना चाहिए कि विजेता विलियम की चलाई हुई भूमि-पतियों की प्रणाली (Feudal system) की कमर टूट गई। इस युद्ध के साथ-साथ माध्यमिक काल (The Middle Ages) का अंत हो गया और सन् १४८५ में आधुनिक काल (The Modern Times) का आरंभ हुआ, मानो अँधेरी रात बीतकर सूर्य की लालिमा पूर्व में दिखाई देने लगी। विलियम कैक्स्टन ने एडवर्ड चतुर्थ के राजत्व-काल में, सन् १४७६ में, लंदन-नगर में अपना

छापाखाना खोला और इस तरह विद्योन्नति का मार्ग विशद कर दिया। माध्यमिक काल का दूसरा नाम "अंधकारमय काल" (The Dark Ages) भी पड़ा है, क्योंकि उस काल में जनता विद्यांधकार में पड़ी हुई थी, जिससे पादरियों तथा भूमि-पतियों को मनमाना करने का अवसर प्राप्त था। आधुनिक काल में उत्तरोत्तर जागृति होती गई और निरंकुशता तथा अंधविश्वास के दिनों का धीरे-धीरे लोप हो गया।

द्वितीय खंड

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

द्वितीय परिच्छेद

तृतीय परिच्छेद

चतुर्थ परिच्छेद

पंचम परिच्छेद

षष्ठ परिच्छेद

सप्तम परिच्छेद

अष्टम परिच्छेद

द्वितीय अध्याय

द्वितीय परिच्छेद

तृतीय परिच्छेद

सप्तम परिच्छेद

अष्टम परिच्छेद

(१) हेनरी सप्तम तथा विद्रोह

लेंकास्टर तथा यार्क-वंश की कलह एक दिन में तो समाप्त हो ही नहीं सकती थी। हेनरी ने राज्य पर आते ही लेंकास्टर-दल के लोगों को उच्च-उच्च राज्य-पद दिए और यार्क-वंशियों को कई विश्वास-योग्य स्थानों से हटा दिया। इससे उनका विद्रोह करने पर सन्नद्ध हो जाना स्वाभाविक ही था। लॉर्ड लावेल तथा स्टफ्फोर्ड ने १४८६ में विद्रोह किया, परंतु वे कृतकार्य न हो सके।

(क) लैंबर्ट सिम्नल का विद्रोह (Rebellion of Lambert Simnel) (१४८७)

इँगलैंड से बाहर यार्क-दल की शक्ति बहुत अधिक थी। एडवर्ड चतुर्थ की बहन मार्गरैट का नार्थंबरलैंड (Northumberland) में बहुत प्रभाव था। इसने हेनरी सप्तम (Henry VII) के विरुद्ध एक षड्यंत्र रचने का प्रयत्न किया। इस कार्य में किल्डयर के अर्ल ने इसका साथ दिया। किल्डेयर हेनरी से बहुत रुष्ट था, क्योंकि हेनरी ने उसको आयर्लैंड के शासकत्व से हटाकर 'जस्पर ट्यूडर' (Jasper Tuor) को वहाँ का शासक नियुक्त कर दिया था। इन विद्रोहियों की सहायता प्राप्त करके, १४८७ में, एक द्वादश-वर्षीय बालक आयलैंड पहुचा। बालक

के साथ एक पादरी था, जो यह बतलाता फिरता था कि यह बालक ही वारिक (Warwick) का अर्ल 'एडवर्ड' है; यह लंदन-टावर से भाग आया है। परिणाम यह हुआ कि 'फ़िटज़ेरल्डज़' (Fitzgeralds) ने उसका डब्लिन में राज्याभिषेक-संस्कार किया, और उसको इँगलैंड का राजा उद्घोषित कर दिया। किंतु वास्तव में वह बालक एडवर्ड नहीं था। किंवदंती है कि वह आॅक्सफ़ोर्ड के घर बनानेवाले लैंबर्ट सिम्नल (Lambert Simnel) का पुत्र था। जो कुछ हो, हेनरी ने असली एडवर्ड को लंदन-टावर से निकालकर जनता को दिखला दिया, तथा एक बड़ी सेना के साथ लैंबर्ट सिम्नल को स्टोक के युद्ध (Battle of Stolke) में पराजित किया और उसको क़ैद करके अपना रसोइया बना लिया। हेनरी ने अपने को निःशक्त देखकर किल्डेयर के अर्ल का अपराध भी क्षमा कर दिया।

(ख) पर्किन वार्बिक (Perkin War beck) का विद्रोह (१४९२)

हेनरी के शत्रुओं ने उसको कष्ट पहुँचाने के लिये एक और षडयंत्र रचा। मार्गरैट ने तूरनाई-निवासी एक युवक को बहकाया और कहा कि तू आयलैंड जाकर अपने को एडवर्ड चतुर्थ का कनिष्ठ पुत्र 'रिचर्ड' (Richard) प्रकट कर। मैं तेरी सहायता करूँगी और तुझको इँगलैंड का राजा बना दूँगी।

उसका वास्तविक नाम पार्किन वार्बिक(Perkin Warbeck) था। उसने इस बुद्धिमत्ता से सारा काम किया कि आंग्ल-जनता उसको चिरकाल तक रिचर्ड ही समझती रही। पार्किन वार्बिक ने सात वर्ष तक हेनरी को अनंत कष्ट पहुँचाया। सबसे पहले उसने किल्डेयर तथा फ़िट्ज़े-रल्डज़ से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया; परंतु जब उनसे उसको कोरा जवाब मिल गया, तो वह फ़्रांस के राजा के समीप गया।

चार्ल्स अष्टम ने उसको इँगलैंड का राजा मान लिया और 'ईटाले' की संधि (Treaty of Itapley) से पहले तक उसको सहायता देता रहा। सर विलियम स्टैनले (Stanley) ने भी उसको गुप्त रूप से सहायता पहुँचाई। स्टैनले की गुप्त कार्रवाई हेनरी को मालूम हो गई। इस पर स्टैनले को प्राण-दंड दे दिया गया। पार्किन ने कैंट (Kent) तथा आयर्लैंड से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया, परंतु सब ओर से निराश होकर अंत को उसने स्कॉटलैंड के बादशाह जेम्स चतुर्थ से भी सहायता की याचना की। जेम्स ने उसको सहायता देने का प्रण किया और उसके साथ अपनी भतीजी का विवाह भी कर दिया। इस ख़बर को सुनते ही हेनरी के क्रोध की सीमा न रही।

उसने जेम्स को स्कॉटलैंड पर आक्रमण करने की धमकी दी। इस पर जेम्स ने भी उसका साथ छोड़ दिया। इन्हीं दिनों कार्नवाल (Cornwal) की आंग्ल-प्रजा अधिक करों के कारण हेनरी से रुष्ट थी। 'पार्किन' ने कार्नवाल पहुँचकर हेनरी के विरुद्ध युद्ध ठान दिया। टांटन (Taunton)-नामक स्थान पर, शाही सेना द्वारा चारों ओर से घिर जाने पर पार्किन ने हथियार रख दिए। फिर वह लंदन-टावर में क़ैद कर दिया गया। कुछ ही दिनों बाद हेनरी ने पर्किन तथा लैंबर्ट सिम्नल को इस अपराध पर फाँसी दे दी कि ये दोनों षड्यंत्र रचकर लंदन-टावर को ही अपने हस्तगत करने का यत्न कर रहे हैं।

(२) हेनरी सप्तम की विदेशी नीति

(क) ईटाप्ले की संधि (Treaty of Itapley)

राज्य प्राप्त करने में हेनरी को बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। स्कॉटलैंड तथा फ़्रांस की शत्रुता के कारण उसका राज्य पूर्ववत् अस्थिर ही बना रहा। फ़्रांस से अपने को बचाने के लिये उसने ब्रिटनी (Brittany) के शासक के साथ मित्रता कर ली। सन् १४८८ में ब्रिटनी का शासक मर गया और उसकी कन्या एन (Anne) उसके राज्य की शासिका बनी। फ़्रांस के राजा चार्ल्स अष्टम (Charles VIII)

ने एन से विवाह करने का यत्न किया, परंतु हेनरी तथा योरप के अन्य राजों ने उसके इस कार्य में विघ्न डालना चाहा। सब विघ्नों को पार करते हुए चार्ल्स ने एन के साथ विवाह कर ही लिया। इस पर हेनरी ने फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स ने उससे युद्ध न करके उसके साथ ईटाले की संधि कर ली, और उसको बहुत-सा धन भी दिया। इस संधि से हेनरी के मित्र हेनरी से रुष्ट हो गए।

(ख) व्यापार की निकृष्ट तथा उत्कृष्ट संधि

पार्किन वार्बिक को ईटाले की संधि द्वारा फ़्रांस से निकलवाकर, हेनरी ने उसको फ़्लैंडर्ज़ (Flanders) से भी निकालने का प्रयत्न किया। 'मैक्सामिलियन' (Maxmilian) से उसने प्रार्थना की कि पार्किन को अपने देश से निकाल दो; परंतु मैक्समिलियन ने जब उसकी यह बात न मानी, तो उसने इँगलैंड का फ़्लैंडर्ज़ के साथ संपूर्ण व्यापार बंद कर दिया। परिणाम यह हुआ कि हेनरी का कहना उसको मानना पड़ा। १४९६ की 'उत्कृष्ट संधि' (Magnus Intercursus) के अनुसार फ़्लैंडर्ज़ तथा इँगलैंड में व्यापार प्रारंभ हो गया और दोनों ही देशों ने एक-दूसरे के शत्रुओं को सहायता न देने का प्रण किया।

इस संधि के दस वर्ष बाद १५०६ में मैक्समिलियन के पुत्र फ़िलिप का जहाज़ एक आंग्ल-बंदरगाह में आ लगा। हेनरी

ने उसका बहुत अच्छी तरह सम्मान किया, परंतु उसको अपने देश लौट जाने की आज्ञा नहीं दी। लाचार होकर उसको हेनरी के कथनानुसार व्यापार की कुछ शर्तों पर हस्ताक्षर करना पड़ा। इन शर्तों से फ़्लैंडर्ज़ को बहुत हानि हुई और आंग्लों को बहुत ही लाभ पहुँचा। आंग्ल-इतिहास में यह संधि 'निकृष्ट संधि' के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि फ़्लैंडर्ज़-निवासी इस संधि को इसी नाम से पुकारते थे।

(ग) योरप में राष्ट्रीय शक्ति-संतुलन (Balance of Power)

हेनरी सप्तम के समय से ही योरपियन राजों ने योरप में राष्ट्रीय शक्ति संतुलन की नीति का अवलंबन किया। इसका मुख्य कारण यही था कि उस समय योरप में कोई युद्ध नहीं हो रहे थे। प्रत्येक राजा एक-दूसरे की शक्ति-वृद्धि को तीव्र दृष्टि से देख रहा था। ब्रिटनी की विजय के अनंतर फ़्रांस के राजा चार्ल्स अष्टम ने इटली पर आक्रमण किया और १४९४ में अपने को नेपल्ज़ (Naples) का राजा बना लिया। अन्य योरपियन राजे भी चुप नहीं बैठे थे। उन्होंने फ़्रांस के विरुद्ध इटली को सहायता पहुँचाई। परिणाम यह हुआ कि इटली शीघ्र ही फ़्रांस के क़ब्ज़े से निकल गया। चार्ल्स के अनंतर स्पेन के राजा फ़र्दिनंद (Ferdinand) ने 'कैस्टाइल' (Castile) की रानी से विवाह कर लिया और संपूर्ण स्पेन एकछत्र के नीचे हो गया।

हेनरी सप्तम ने फ़र्दिनंद से मित्रता कर ली, क्योंकि उसको फ़्रांस से सर्वदा भय रहता था। अरागान (Aragon) की रानी कैथराइन (Catherine) से अपने पुत्र आर्थर का विवाह करके उसने स्पेन से इँगलैंड का संबंध और भी अधिक घनिष्ठ कर दिया। विवाह के कुछ ही समय बाद आर्थर की मृत्यु हो गई। इस पर उसने अपने द्वितीय पुत्र हेनरी के साथ कैथराइन का विवाह कर दिया।

स्कॉटलैंड के राजा जेम्स को फ़्रांस से न मिलने देना ही हेनरी सप्तम का उद्देश था। इस उद्देश की पूर्ति के लिये उसने अपनी बड़ी पुत्री मार्गरैट का जेम्स के साथ विवाह कर दिया। आगे चलकर इसी वंश का एक राजा स्कॉटलैंड तथा इँगलैंड, दोनों पर ही अकेला राज्य करेगा और आंग्ल-जाति की एकता-वृद्धि में बड़ा भारी भाग लेगा।

(३) हेनरी सप्तम की गृह-नीति (Home Policy)

हेनरी सप्तम ने देश में शांति स्थापित करने का जो निरंतर प्रयत्न किया, वह सर्वथा प्रशंसनीय था। पार्लिमेंट के नियमों के अनुसार ही उसने देश में शासन किया और १४९५ में यह नियम पास किया कि आंग्ल-राज्य-सिंहासन पर बैठे हुए राजा की आज्ञा का पालन करनेवाला कोई भी व्यक्ति देश-द्रोही नहीं

कहलावेगा, चाहे वह राजा राज्य का वास्तविक अधिकारी न हो।

कैंटर्बरी के आर्च-बिशप, (The Arch-Bishop of Canterbury) 'मार्टन' (Marton) ने हेनरी को धनाभाव की चिंता कभी नहीं होने दी। इसने नियम-भंग किए विना ही बीसों तरीक़ों से प्रजा से रुपया प्राप्त किया। इसकी मृत्यु के अनंतर एडमंड डड्ले (Edmund Dudley) तथा रिचर्ड एंपसन (Richard Ampson) ने इसकी कमी को पूरा कर दिया और कृपण-से-कृपण व्यक्तियों की जेबों से राजा के लिये रुपया निकल गया।

लॉर्डों के पास बहुत-से नौकर रहते थे, जो समय-कुसमय सैनिक का काम भी दे देते थे। ये नौकर आंग्ल-प्रजा को सताते थे। उन पर अभियोग चलाना प्रजा के लिये निरर्थक था, क्योंकि लॉर्ड लोग उनका पक्ष लेकर न्यायाधीशों के द्वारा उनको छुड़ा देते थे। इस दूषण को दूर करने के लिये हेनरी ने एक नवीन न्यायालय बनाया, जिसमें बड़े-बड़े योग्य व्यक्तियों को न्यायाधीश नियत किया।

हेनरी ने आयर्लैंड में पॉयनिङ् (Poyning) को भेजकर आयर्लैंड की स्वतंत्रता नष्ट करने में बड़ा भारी भाग लिया। पॉयनिङ् ने वहाँ आंग्ल-नियम प्रचलित कर दिए

और आयरिश पार्लिमेंट को आंग्ल-पार्लिमेंट के अधीन कर दिया। १५०६ में हेनरी का स्वर्गवास हो गया। उसके शासनकाल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१४८५	हेनरी सप्तम का राज्याधिरोहण
१४८७	लैंबर्ट सिम्नल का विद्रोह
१४६२	ईटाले की संधि, पर्किन वार्बिक का विद्रोह
१४६४	पॉयनिङ् के राज्य-नियम
१४६६	व्यापार की उत्कृष्ट संधि
१४६६	पर्किन तथा सिम्नल को फाँसी
१५०३	मार्गरैट के साथ जेम्स का विवाह
१५०६	हेनरी सप्तम की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

हेनरी सप्तम के समय में इँगलैंड की दशा

(१) राजनीतिक दशा

हेनरी सप्तम के समय से इँगलैंड के इतिहास में एक नवीन काल (New Era) प्रारंभ होता है। अतः यह आवश्यक प्रतीत होता है कि उसके समय में पार्लिमेंट की क्या नीति थी, इसको स्पष्ट कर दिया जाय। हेनरी सप्तम को राज्य प्राप्त करते ही निम्न-लिखित पाँच प्रण करने पड़े—

(१) मैं पार्लिमेंट के सभ्यों (बड़े-बड़े लॉर्ड, और पादरी—Bishops—ग्राम, नगर तथा मंडल और और साधारण जनों के प्रतिनिधि) की अनुमति के विना आंग्ल-प्रजा पर किसी प्रकार का भी राज्य-कर नहीं लगाऊँगा।

(२) पार्लिमेंट की स्वीकृति के विना कोई भी नवीन राज्य-नियम नहीं बनाऊँगा।

(३) वारंट के विना किसी भी आंग्ल को क़ैद नहीं करूँगा और साथ ही क़ैद में पड़े हुए व्यक्ति के अपराध का शीघ्र ही निर्णय करूँगा।

(४) राजकीय न्यायालय में ही फ़ौजदारी मुक़दमों का

निर्णय होना चाहिए। यदि कार्य-वशात् वहाँ पर ऐसा न किया जा सके, तो उस मुक़द्दमे का निर्णय १२ साक्षियों के द्वारा वहीं पर किया जाना चाहिए, जहाँ अपराधी ने अपराध किया हो।

(५) राज्याधिकारियों पर न्यायालय में अभियोग चलाया जा सकता है। उनके छुड़ाने में राजा को किसी प्रकार का भी प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

इन शर्तों पर चलने का प्रण करके भी हेनरी ने प्रजा से ख़ूब रुपया वसूल किया। किंवदंती है कि वह राज-कोष में १८,००,००० पौंड धन छोड़कर मरा था। हेनरी सप्तम ने बुद्धिमत्ता से राज्य-नियमों पर चलते हुए भी स्वेच्छा-चारित्व को प्राप्त किया। पादरियों की शक्ति नष्ट करने के लिये उसने यह नियम बनाया कि 'सर्व-प्रकाशित पापमय जीवनवाले पादरियों पर अभियोग चलाया जा सकता है। अपराध के सिद्ध होने पर बड़ा पादरी उसको क़ैद तक दे सकता है।'

(२) सामाजिक अवस्था

बहुत-से ऐतिहासिकों का मत है कि हेनरी सप्तम के समय में इँगलैंड की संपत्ति पहले की अपेक्षा बढ़ रही थी, और वह दिन-पर-दिन समृद्ध हो रहा था। तो भी इँगलैंड

की जन-संख्या संतोषप्रद नहीं थी। 'वैनीशियन' (Venitian) ने लिखा है—"डोवर से ऑक्सफ़ोर्ड तक जाते हुए संपूर्ण प्रदेश निर्जन प्रतीत होता है, कहीं पर भी जनता की कोई भी घनी बस्ती दृष्टिगोचर नहीं होती। दक्षिण के ही सदृश इँगलैंड के उत्तर की भी अवस्था है। संपूर्ण इँगलैंड में ४० लाख से अधिक मनुष्य नहीं हैं।" बहुत-से राज्य-नियमों के देखने से भी वैनीशियन का कथन सत्य प्रतीत होता है। 'आइल ऑफ़ वाइट' (Isle of Wight) में जहाँ पहले २०० मनुष्य रहते थे, हेनरी सप्तम के समय में केवल दो या
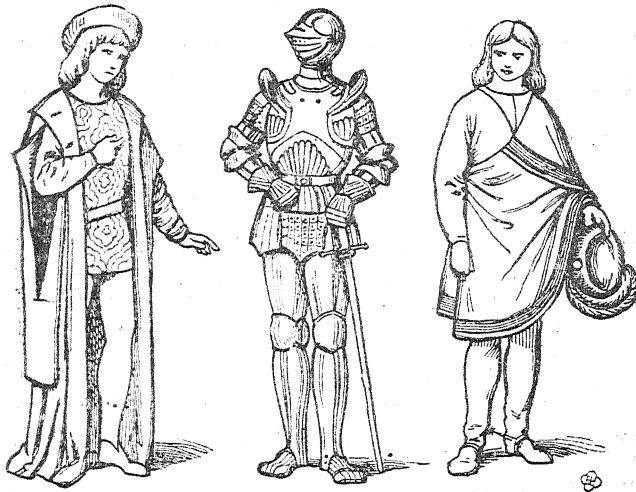
हेनरी सप्तम के शासन-काल की मुल्की और जंगी पोशाक

तीन गड़रिए ही झोपड़ी डाले दिखाई पड़ते थे। जन-संख्या

की इस भयंकर कमी का मुख्य कारण इँगलैंड में कृषि का नाश हो जाना ही कहा जा सकता है। ऊन का व्यापार बढ़ने से उसका मूल्य पूर्व की अपेक्षा अधिक हो गया था। क्यों? आंग्ल-जनता को कृषि की अपेक्षा ऊन उत्पन्न करने में अधिक लाभ था। परिणाम यह हुआ कि कृषि की भूमि चरागाहों में परिवर्तित हो गई और कृषकों ने गड़रियों का रूप धारण कर लिया। सर टी०मोर (Sir T. More) ने अपने आलंकारिक शब्दों में इसी घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है—

"हे परमात्मन्, मैं आपकी शपथ खाकर कहता हूँ, कि आपकी भोलीभाली, नम्र, मिताशी भेड़ें आजकल बहुत अधिक खानेवाली हो गई हैं। उन्होंने इँगलैंड के बहुत-से मनुष्यों को—खेत, मकान तथा नगरों को—चर डाला है।"

इसमें संदेह करना भी वृथा है कि ऊन के व्यापार से आंग्ल-जनता खूब समृद्ध हो गई थी। चाँदी प्राप्त करने की इच्छा उसमें दिन-पर-दिन बढ़ती जाती थी। एक यात्री का कथन है—

"इँगलैंड में ऐसा एक भठियारा भी न होगा (चाहे वह कितना ही दरिद्र तथा दुरवस्था में क्यों न हो), जिसके गृह में चाँदी की थाली तथा प्याले विद्यमान न हों। इसका मुख्य कारण यह है कि आंग्ल-जनता उसको किसी भी हैसियत

का नहीं समझती, जिसके गृह में चाँदी के बर्तन न हों,......
लंदन में सबसे अधिक दर्शनीय वस्तु चाँदी की राशि है।"

हेनरी के समय में व्याज पर उधार रुपया लेकर व्यापार-व्यवसाय करना आंग्लों के लिये साधारण-सी बात थी। साथ ही उन दिनों आंग्लों का यह विश्वास था कि "समृद्ध तथा धनाढ्य बनने का एक यही मार्ग है कि दूसरे देशों से सोना-चाँदी प्राप्त किया जाय और अपने देश से बाहर न जाने दिया जाय।" इस विश्वास की भयंकरता का अनुमान इसी से कर लेना चाहिए कि आंग्ल-राज्य अक्सर अपने अधिकारियों द्वारा विदेशियों की संपत्ति लुटवा लेता था। एक बार ईरास-मस- (Erasmus)-जैसे विद्वान् के साथ भी ऐसा ही क्रूर व्यवहार किया गया था। क्यों ?

हेनरी के समय में राज्य ही बहुत प्रकार के माल का मूल्य नियत करता था और ऐसा होते हुए भी वह अधिक होता था। कई पदार्थों का उत्पत्ति-व्यय (Cost of production) १६ पेंस होते हुए भी उनकी बिक्री का मूल्य ३ शिलिंग तक था। ५० वर्ष तक राज्य ने मजदूरों की 'भृति' (मजदूरी—Wages) नियत करने का भी प्रयत्न किया, परंतु यह नियम चल नहीं सका। १४६५ में इस प्रकार के प्रयत्न करना राज्य ने छोड़ दिया। हेनरी के समय में राज्य-नियम बहुत ही

कठोर थे। मोर का कथन है कि "साधारण-से-साधारण अपराध पर श्रमियों के साथ दासों के सदृश ही व्यवहार किया जाता था। उनको क़ैद में डालकर कष्ट देना तो साधारण-सी बात थी।"

ट्यूडर-काल तक आंग्लों का आचार बहुत निकृष्ट था। ईरासमस का कथन है कि "आंग्लों-जैसे चोर तथा डाकू कदाचित् ही किसी देश में हों, क्योंकि इँगलैंड में इस बात का बाज़ार सदा गर्म रहता है। भयंकर-से-भयंकर अपराधों की संख्या बहुत है।" ईरासमस के सदृश ही एक दूसरे यात्री का कथन है कि "संसार में शायद ही ऐसा कोई देश होगा, जिसमें इतने चोर तथा लुटेरे हों, जितने कि इँगलैंड मे हैं।" हेनरी सप्तम के काल में शराब, पाँसे तथा ताशों का घर-घर प्रचार था। लोगों में भारी अज्ञानता फैली हुई थी। विद्वत्ता का सबसे मुख्य चिह्न बाइबिल की एक पंक्ति का बाँच लेना था।

सदाचार के सदृश ही स्वच्छता से भी आंग्ल-जनता दूर भागती थी। १६वीं सदी के स्वेदक रोग (Sweating Sickness) तथा १७वीं सदी के प्लेग का बहुत कुछ संबंध आंग्लों की अस्वच्छता के साथ ही था। घर उनके इस प्रकार बने हुए थे कि उनमें वायु का प्रवेश सर्वथा असंभव था।

ईरासमस ने लिखा है कि "आंग्ल अपने गृहों में एक भी खिड़की नहीं रखते। जब मैं ३० वर्ष से कुछ कम आयु का था, तब मैं यदि किसी आंग्ल के गृह में सोता था, तो मुझे ज्वर आ जाता था।" राटर्डम का कथन है कि "इँगलैंड में मकानों के फ़र्श कच्ची ज़मीन के और छतें फूस की हैं। समय-समय पर इन मकानों पर फूस की नई छतें भी डाली जाती हैं, परंतु पुरानी छतों को हटाया नहीं जाता; और यह दशा प्राय: २० वर्ष तक चली जाती है।" गृहों के सदृश ही आंग्लों के भोजन के विषय में उल्लिखित यात्री का कथन है कि "बहुत ही अच्छा होता, यदि ये लोग इतनी अधिक शराब न पीते और नमक डालकर सुखाए हुए पुराने मांस की जगह ताज़ा मांस ही खाते।"

हेनरी सप्तम के समय में, आंग्लों में, वर्तमान काल के सदृश ही महभोजों का प्रचार था। वैनीशियन ने अपनी पुस्तक में एक सहभोज का वर्णन किया है, जिसमें एक सहस्र मनुष्य समुपस्थित थे। साथ ही वह कहता है कि इस सहभोज में आंग्लों का शांति तथा नियम से बैठना प्रशंसा के योग्य था। इतने बड़े-बड़े सहभोजों का मुख्य कारण आंग्लों का यह विश्वास था कि किसी मनुष्य का सबसे अधिक मान इसी में है कि उसको सहभोज दे दिया जाय।

आंग्लों के जाति तथा मातृ-भूमि के प्रति प्रेम के विषय में ईरासमस ने लिखा है—"आंग्ल अपनी जाति तथा मातृ-भूमि के परम भक्त थे। उनको अपने देश की प्रत्येक वस्तु प्रिय थी।" इसी प्रकार वैनीशियन की सम्मति में—"आंग्ल समझते हैं कि संसार में उनके सिवा और कोई मनुष्य ही नहीं रहते और इँगलैंड के सिवा अन्य कोई देश ही नहीं है। और, जब कभी आंग्ल किसी सुंदर आकृतिवाले विदेशी को देखते हैं, तो कहते हैं कि यह तो आंग्ल मालूम पड़ता है।"

(३) विद्या का पुनर्जीवन (Rennaissance)

ट्यूडर-काल योरपीय संसार के लिये बहुत प्रसिद्ध काल है। 'पृथ्वी गोल है'—इसका ज्ञान प्राप्त होते ही योरपीय जनता में भयंकर आक्रांति उत्पन्न हो गई। नवीन-नवीन देशों का ज्ञान प्राप्त किया गया, जिसमें से कुछ के नाम ये हैं—

(१) केप ऑफ़ गुड-होप

(२) कोलंबस ने अमेरिका का ज्ञान प्राप्त किया।

(३) पुर्तगालवालों ने भारतवर्ष को ढूँढ़ निकाला।

(४) 'सिवैस्टियन कैवट, (Sebastian Cabot) ने आइसबर्ग तक अपने जहाज़ पहुँचाए।

इस प्रकार संसार के भिन्न-भिन्न देशों तथा धर्मों के ज्ञान से योरप में हलचल मच गई। भिन्न-भिन्न सामुद्रिक यात्रियों

के वृत्तांत की पुस्तकें प्रत्येक मनुष्य के हाथ में दिखाई देने लगीं। इन्हीं दिनों तुर्कों ने कांस्टैंटिनोल (Constantinople) पर आक्रमण किया और उसको अपने हस्तगत कर लिया। यूनानी विद्वान् कांस्टैंटिनोल से भागकर इटली तथा संपूर्ण योरप में फैल गए। इटली ने उनका पूर्ण स्वागत किया। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिनों में फ़्लॉरंस (Florence) ने विद्यापीठ का रूप धारण कर लिया। अभी तक ईसाई पादरी यूनान और इटली के मूर्ति-पूजक साहित्य को पढ़ना व्यर्थ ही नहीं, पाप समझते थे। योरप में और कोई दूसरा साहित्य तो था नहीं, इसलिये ईसाई मत फैलने के बाद विद्यान्धकार छा गया था। अब फिर ग्रीक-साहित्य की ओर लोगों की रुचि हुई और इस परिवर्तन का नाम 'विद्या का पुनर्जीवन' पड़ा। होमर (Homer) की कविता, सोफ़ाक्लीज़ (Sophocles) के नाटक, अरस्तु (Aristltoe) और प्लेटो (Plato) के दर्शन पुनःजीवित हो गए। फ़्लारंस की संपूर्ण शक्ति विद्या-वृद्धि में लग गई। यूनान की प्राचीन पुस्तकें और स्मारकों के क्रय-विक्रय ने फ़्लारंस में पूर्ण प्रबलता प्राप्त की। योरपीय विद्या-प्रेमी अल्प्स (Alpes) के शिखर को पार करके यूनानी भाषा पढ़ने के लिये फ़्लारंस में एकत्र होने लगे। 'ग्रासिन'-नामक आंग्ल भी फ़्लारंस में पढ़ने गया। वहाँ से पढ़कर लौटते ही

उसने ऑक्सफ़ोर्ड में उपाध्याय का पद ग्रहण किया। इन्हीं दिनों ऑक्सफ़ोर्ड के एक-छात्र, 'लिनैक्लिन' ने फ़्लारेंस से विद्या प्राप्त करके 'गैलन' की आयुर्वेद की पुस्तक का आंग्ल-भाषा में अनुवाद किया।

कोलट (Collet) ने भी अन्य आंग्लों के ही सदृश यूनानी (Greek) तथा लैटिन (Latin)-भाषा का अध्ययन किया। यह उच्च धार्मिक मनुष्य था। अतः इसने यूनानी-भाषा के सहारे ईसाइयों की धार्मिक पुस्तकों के रहस्य का उद्भेदन किया और पादरियों के भ्रामिक विश्वासों को दूर करने का प्रयत्न करने लगा। कोलट (Collet) के सदृश ही ईरासमस (Erasmus)-नामक विद्वान् भी ईसाई-धर्म के अनुशीलन में दत्तचित्त था। विद्वत्ता में यह लूथर (Luther) से दूसरे नंबर का गिना जाता है। यह कोलट को अपना गुरु समझता था, जो ऑक्सफ़ोर्ड-विश्वविद्यालय में ग्रीक का अध्यापक था।

विद्या की यह उन्नति ऑक्सफ़ोर्ड की चहार-दिवारी तक ही परिमित थी, ऐसा कहना साहस-मात्र है। संपूर्ण योरप में मुद्रणालयों की संख्या दिन-पर-दिन बढ़ रही थी। १५वीं सदी के अंतिम तीस वर्षों में कई पुस्तकों के अनेक संस्करण (Edition) निकल चुके थे। योरपीय जनता की

आँखें दिन-प्रति-दिन खुलती जाती थीं। उनको कार्य करने के लिये एक विस्तृत क्षेत्र दिखलाई देने लगा। शीघ्र ही विज्ञान, दर्शन, साहित्य तथा राजनीति में योरपीय जनता ने उन्नति करनी प्रारंभ कर दी।

इँगलैंड के विद्या-प्रचार में पादरियों ने जो भाग लिया, वह सर्वथा सराहनीय था। विंचस्टर के बिशप 'लैंग्टन' (Langton) ने तथा कैंटर्बरी के आर्च-बिशप वारहम (Warham) ने आंग्लों का विद्या के प्रति प्रेम बढ़ाया और उनको विदेश जाकर शिक्षा प्राप्त करने के लिये उत्साहित किया।

किंतु हेनरी सप्तम के समय में राज्य की सहायता प्राप्त न होने के कारण इँगलैंड में विद्या-विस्तार की गति अति प्रबल नहीं हो सकी। एंपसन और डड्ले के अत्याचारों तथा रुपया चूसने के कार्य ने भी आंग्लों में विद्या-वृद्धि को बहुत रोका। सारांश यह कि हेनरी सप्तम के काल में 'विद्योन्नति' अंकुरावस्था में ही थी, जिसका विकास राजा की विशेष सहायता न होने के कारण सर्वथा रुका हुआ था *।

---

* Historians' History of the World, Vol. XIX—England, (1485-1642). Chapt. I.

तृतीय परिच्छेद

हेनरी अष्टम तथा (Wolsey) वूल्ज़े (१५०६-१५२६)

अठारह वर्ष की आयु में हेनरी अष्टम राज्य-सिंहासन पर बैठा। ईसाई-साम्राज्य (Christ iandom)-भर में हेनरी सुंदरता में एक ही था। वह टेनिस तथा शिकार खेलने में भी बहुत चतुर था, बहुत-सी भाषाएँ जानता था और विद्या का बहुत ही प्रेमी था। प्रसन्न-चित्त तथा हास्य-प्रिय होने के कारण वह धनी और निर्धनी, सभी का समान-रूप से प्रेम-पात्र था। उसके अंग-अंग से राजसी भाव टपकता था। वह अपनी इच्छाएँ पूर्ण करने में दृढ़-निश्चय था, बात-की-बात में दूसरों को परख लेता था। इसने अपने मंत्रियों को बड़ी सावधानी के साथ नियुक्त किया था और उनसे काम भी पूरा-पूरा लेता था। अपने जीवन के अंतिम दिनों में वह कठोर-प्रकृति तथा क्रूर हो गया था।

राज्य-सिंहासन पर बैठते ही इसने अपने पिता के भूतपूर्व मंत्री एंपसन तथा डड्ले को क़ैद में डाल दिया। ऐसा करने का मुख्य कारण हेनरी ने उनका प्रजा से रुपया चूसना

ही प्रकट किया। हेनरी के इस कार्य से प्रजा उससे बहुत प्रसन्न हो गई। एंपसन तथा डड्ले के अतिरिक्त अन्य सब उच्च राज्याधिकारी अपने-अपने पदों पर ही स्थिर रहे। हेनरी के सौभाग्य से उसको वूल्ज़े-नामक एक बहुत योग्य व्यक्ति चांसलर (Chanceller) के पद के लिये मिल गया। चांसलर नियुक्त होने से पहले यह यार्क का आर्च-बिशप (Arch Bishop of York) था। नीति-निपुण तथा अत्यंत परिश्रमी होने के कारण इसने इँगलैंड की उन्नति में बड़ा भारी भाग लिया। हेनरी अष्टम का आरंभिक इतिहास वास्तव में वूल्ज़े (Wolsey) का ही इति-हास है।

(१) हेनरी अष्टम तथा योरपीय शक्ति-संतुलन

हेनरी सप्तम के काल में योरपीय राजनीति में इँगलैंड का बहुत प्रवेश नहीं था। वूल्ज़े ने अपनी अपूर्व नीति से योर-पीय राजनीति में इँगलैंड को जो उच्च पद दिलाया, उसका उल्लेख आगे किया जायगा। हेनरी के राज्य-सिंहासन पर बैठते ही, 'वेनिस' (Venice) को नष्ट करने के उद्देश से, उत्तरीय इटली का राजा लूइस और नेपल्ज़ का राजा फर्दि-नंद परस्पर मिल गए। सम्राट् मैक्समिलियन ने इन दोनों राजों का साथ दिया। इस प्रकार संपूर्ण योरप की मुख्य-

मुख्य शक्तियाँ वेनिस के अधःपतन के लिये प्रयत्न करने लगीं। वेनिस के राजनीतिज्ञ भी शांत नहीं थे। उन्होंने कई वर्षों के लगातार परिश्रम के अनंतर, १५११ में, कैंब्रे (Pact of Cambrey) के संघठन को तोड़ दिया; फर्दिनंद, मैक्सामिलियन तथा पोप को अपने साथ मिला लिया तथा इस संघटन को 'पवित्र संघटन' (Holy League) का नाम दिया। वीनस के राजनीतिज्ञों की चतुरता से फ़्रांस निःसहाय हो गया। फ़्रांस को नीचा दिखाने के लिये इँगलैंड ने भी 'पवित्र संघटन' का ही साथ दिया। वूल्ज़े ने अथक श्रम से सेना तथा रुपया एकत्र किया और वह फ़्रांस पर आक्रमण करने का अवसर देखने लगा।

१५१२ में संपूर्ण योरप युद्ध की रंगभूमि हो गया। हेनरी ने भी स्पेन के उत्तर में फ़्रांस के प्रदेश को जीतने के लिये 'मार्किस डॉरसेट' (Marquise of Dorset) के आधिपत्य में सेना भेजी, परंतु उसका कुछ भी फल न निकला। १५१३ में वूल्ज़े तथा हेनरी आंग्ल-सेना लेकर स्वयं ही फ़्रांस गए। इन्होंने एड़ी के युद्ध (Battle of the Spurs) में फ़्रांसीसी सेना को पराजित किया और थिरान तथा तूर्नाई (Tourney) के नगर अपने हस्तगत कर लिए। इसी समय फर्दिनंद, नाबर तथा पोप के

संघटन ने मीलान (Milan)-नगर को फ़्रांस से छीन लिया।
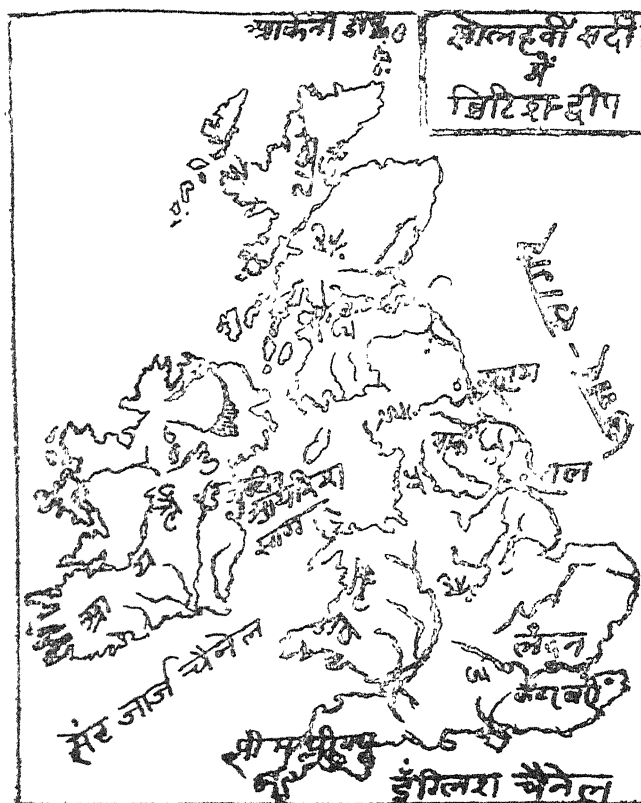
सोलहवीं सदी में ब्रिटिश-द्वीप

आंग्लों से अपना पीछा छुड़ाने के लिये फ़्रांस ने स्कॉटलैंड को भड़का दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि हेनरी अष्टम का साला होते हुए भी जेम्स चतुर्थ ने इँगलैंड पर आक्रमण कर दिया और बहुत-से आंग्ल-दुर्गों को हस्तगत कर लिया। इस विपद्काल में सरे के अर्ल (Earl of Surrey) ने एक आंग्ल-सेना के साथ स्कॉटलैंड के राजा को आगे बढ़ने से रोकना चाहा। 'फ़्लॉडन-क्षेत्र' (Flodden Field) पर एक भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें जेम्स चतुर्थ ससैन्य मारा गया। इस महान् वीरतामय कार्य के लिये हेनरी ने सरे को नार्फ़ाक का ड्यूक (Duke of Norfolk) बना दिया।

फ़्लॉडन-क्षेत्र के युद्ध के अनंतर स्कॉटलैंड का शासन मार्गरैट ट्यूडर (Margaret Tudor) करती रही। इसने हेनरी अष्टम के साथ मित्रता का व्यवहार रक्खा। इन्हीं दिनों पोप जूलियस (Pope Julius II) द्वितीय स्वर्ग-वासी हो गया था। और 'लियो दशम' पोप बन गया था। यह युद्ध के विशेष पक्ष में न था। फ़्रांस का राजा लूइस (Louis) द्वादश वृद्ध था। यह अपने अंतिम दिन शांति ही में काटना चाहता था। परिणाम यह हुआ कि १५१४ में इँगलैंड ने फ़्रांस से संधि कर ली। हेनरी ने अपनी छोटी बहन मेरी का विवाह लूइस से कर दिया।

सात वर्ष तक योरप तथा इँगलैंड में शांति रही। इसके अनंतर सम्राट् 'चार्ल्स' (Charles) ने योरप में अनंत शक्ति प्राप्त कर ली। स्पेन (Spain), नीदरलैंड (Netherlands) तथा जर्मनी (Germany) आदि के राज्य इसी के एकछत्र शासन में आ गए।

जर्मनी स्पेन

फर्दिनंद(Ferdinand) + इज़बेला (Isabella)
(कैस्टाइल की शासिक)

मैक्समिलियन + स्त्री मेरी (बंर्गडी कीडचेड— Deeches of Burguny)

आर्च डयूक फिलिप (Arch Philip) + स्त्री जौना (Joana) कैथराइन (Catherine)

चार्ल्स पंचम (Charles V) (हेनरी अष्टम की स्त्री)

चार्ल्स पंचम (Charles V) को मैक्समिलियन की मृत्यु होने पर जर्मनी और फर्दिनंद की मृत्यु होने पर स्पेन प्राप्त हुए नीदरलैंड का प्रदेश उसका था ही। फ़्रांस का राजा फ़्रांसिस प्रथम इस प्रबल सम्राट् के विरुद्ध इँगलैंड की सहायता प्राप्त करना चाहता था। चार्ल्स पंचम भी हेनरी से मित्रता का व्यवहार रखने का इच्छुक था। नीति-निपुण वूल्ज़े ने दोनों ही राजों को खूब छकाया। फ़्रांसिस ने हेनरी का (Bolougne) के

समीप खूब स्वागत किया। जिस स्थान पर स्वागत किया गया था, वह अपनी चमक-दमक के कारण 'स्वर्ण-वस्त्रीय-क्षेत्र' के नाम से पुकारा जाता है।

यारपीय शक्ति-संतुलन की नीति चिरकाल तक नहीं चल सकी। वूल्जे की इच्छा न होते हुए भी हेनरी ने लोभ-वश चार्ल्स का साथ दे दिया और फ़ांस को लूटने का अवसर देखने लगा। १५२१ से १५२६ तक चार्ल्स तथा फ़ांसिस के बीच भयंकर युद्ध होता रहा। १५२५ में फ़ांसीसी अश्वारोही अल्प्स को पार करके मीलान-विजय के लिये रवाना हुए। अभी मीलान की विजय पूर्ण नहीं हुई थी कि फ़ांसिस 'पविया' (Pavia) में चार्ल्स के हाथ क़ैद हो गया। इस घटना के होते ही वूल्जे ने हेनरी को चार्ल्स के विरुद्ध हो जाने की सलाह दी, क्योंकि यदि वह ऐसा न करता, तो चार्ल्स अधिक प्रबल हो जाने के कारण इँगलैंड पर भी आक्रमण कर सकता था। यह शक्ति-संतुलन-नीति के विरुद्ध था, क्योंकि इस नीति का उद्देश्य तो यही था कि फ़्रांस या स्पेन परस्पर अधिक प्रबल न होने पावे और इँगलैंड पर आक्रमण करने के योग्य बन बैठे। सारांश यह कि इँगलैंड इनमें से जिस देश को दूसरे से निर्बल पड़ते देखता, उसी को सहायता देकर शक्ति में दूसरे के बराबर कर देता

था। हेनरी ने वूल्ज़े का कहना मान लिया और फ़्रांस से मित्रता कर ली। १५२६ में चार्ल्स ने फ़्रांसिस को क़ैद से मुक्त कर दिया। इटली के राजों ने तथा पोप ने फ़्रांसिस का साथ दिया और पवित्र संघटन के सदृश ही एक दूसरा संघटन बनाया।

चार्ल्स की शक्ति भी अपरिमित थी। इन सब संघटनों के होते हुए भी उसने रोम पर विजय प्राप्त की और पोप को क़ैद कर लिया। इस घटना से संपूर्ण योरप में तहलक़ा मच गया। परंतु कोई कर ही क्या सकता था? १५२९ में फ़्रांसिस ने चार्ल्स को इटली का स्वामी मान लिया और कैंब्रे की संधि के द्वारा (Treatyof Cambray) युद्ध बंद कर दिया।

(२) इँगलैंड की आंतरिक अवस्था

हेनरी अष्टम के स्वेच्छाचारित्व तथा वूल्ज़े के महत्त्व से बहुत-से नोबुल रुष्ट थे। इन असंतोषियों का मुखिया बाकिंघम का (Duke of Buckingham) ड्यूक एडवर्ड था। यह मूर्ख, स्वार्थी तथा अभिमानी था। राजा के विषय में इसके मन में जो कुछ आता, बक देता था। १५२१ में हेनरी ने इसे सहसा पकड़वा लिया और देश-द्रोह का अपराध लगाकर फाँसी पर चढ़ा दिया। इस

घटना से नोबुल लोगों में हेनरी का आतंक छा गया। किसी को भी उसके विरुद्ध चूँ करने का साहस न हुआ। फ्रांसीसी युद्ध में धन अधिक व्यय हो जाने के कारण, राज-कोष धन-शून्य हो गया था। १५१२ की पार्लिमेंट ने उसको यथेष्ट धन दे दिया। इसका कारण यह था कि लोक-सभा को बने अभी थोड़े ही दिन हुए थे, अतः वह राजा के पक्ष में ही थी। १५२२ तथा १५२३ में राजा को और अधिक रुपयों की आवश्यकता हुई, परंतु इस बार पार्लिमेंट ने उसको यथेष्ट रुपया नहीं दिया। इससे क्रुद्ध होकर उसने अगले छः वर्ष तक पार्लिमेंट का अधिवेशन ही नहीं किया।

धन की अधिक आवश्यकता के कारण हेनरी तथा वूल्जे ने १५२५ में प्रत्येक आंग्ल से उसकी आय का $\frac{1}{6}$ भाग ऋण के तौर पर लेना प्रारंभ किया। इस प्रकार के ऋणों को रिचर्ड तृतीय के काल में ही नियम-विरुद्ध ठहरा दिया गया था। हेनरी ने अपनी धूर्तता संपूर्ण दोष वूल्जे पर ही थोप दिया। इससे नोबुल लोगों के सदृश ही प्रजा भी वूल्जे से रुष्ट हो गई।

(क) विद्योद्धार

योरप में ईसाई मत फैलने के पूर्व यूनान, इटली, जर्मनी आदि

सभी देशों में देवी-देवतों का पूजन होता था और यूनान तथा रोम (इटली) के ग्रीक और लैटिन-साहित्य के उत्तमोत्तम ग्रंथों में इन्हीं देवी-देवतों की चर्चा थी। जब योरप में ईसाई-धर्म का प्रचार हुआ, तो इन ग्रंथों का पढ़ना धर्म-विरुद्ध समझा जाने लगा। पादरियों ने अपना प्रभाव जमाने के लिये सर्वसाधारण को मूर्ख रखना ही उचित समझा। लोग बाइबिल भी नहीं पढ़ने पाते थे। इस ज़माने में विद्या का लोप हो जाने से वह अंधकार का समय (Dark ages) कहलाया।

कई शताब्दियों तक यही हाल रहा और पोप-लीला का खूब ज़ोर बढ़ा। पर यूनान के कुछ विद्वान् ग्रीक-साहित्य का परिशीलन करते ही रहे। उन दिनों यूनान पूर्वी रूमी साम्राज्य का एक भाग था। पीछे से ८ वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने पूर्वी रूमी साम्राज्य की राजधानी कुस्तुंतुनियाँ (Constanti) nople) को जीत लिया, तो यूनानी लोग भी उनकी प्रजा बन गए। इसके पश्चात् यूनानी विद्वान भागकर फ्लारेंस (Flore-nce) आदि इटली के प्रांतों में जा बसे, उनकी संगति से उन प्रांतों में प्राचीन यूनानी-साहित्य का पठन-पाठन फिर से चल निकला। इसी का नाम विद्योद्धार (Rennaisance or Revival of Learning) हुआ। योरप के अन्य देशों के विद्या-प्रेमियों ने इटली जा-जाकर

ग्रीक-साहित्य का अध्ययन किया। साथ ही इटली के प्राचीन लैटिन-साहित्य का अध्ययन भी होने लगा। इँगलैंड से काले (Collet) ने जाकर ग्रीक-भाषा और साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया। हालैंड का ईरासमस (Erasmus) ग्रीक-साहित्य सीखकर इँगलैंड आया और कैंब्रिज-विश्वविद्यालय में उस साहित्य का अध्यापक नियुक्त किया गया। उसी से सर-टामस मोर(Sir Thomas More)ने, जो हेनरी अष्टम के काल में उच्च राज-कर्मचारी था, ग्रीक-भाषा और साहित्य सीखा। इसी प्रकार योरप के देश-देश में ग्रीक विद्वान् दिखाई देने लगे।

(ख) धर्मोद्धार

स्मरण रहे कि बाइबिल सबसे पहले इब्रानी-भाषा में लिखी गई थी और पीछे-से उसका अनुवाद ग्रीक में हुआ था। इसी से इँगलैंड आदि देशों की जनता बाइबिल नहीं पढ़ सकती थी। पादरी लोग अपने यजमानों को मनमाना धर्म, जिससे उन्हें लाभ था, सिखाते थे। पादरियों के सिखाए हुए धर्म का बाइबिल में कहीं पता न था। ईसामसीह ने कहीं उपदेश नहीं दिया था कि स्वर्ग के द्वार की कुंजी पोप और उनके पादरियों के हाथ में है, और जो लोग उन्हें दान-दक्षिणा देंगे, वही मरने पर स्वर्ग में प्रवेश कर सकेंगे। पर अपना धर्म-ग्रंथ बाइबिल न पढ़ सकने से लोग यह नहीं जान सकते थे। पादरी लोग

जैसा सिखाते, उसी को वे धर्म मान बैठे थे। इसी से ये लोग अपने अनुयायियों को न तो बाइबिल का अनुवाद मातृ-भाषा में करने देते और न उसे पढ़ने ही देते थे।

अब जिन लोगों ने ग्रीक-भाषा और साहित्य का अध्ययन किया, उन्हें ग्रीक-बाइबिल का पढ़ना सहज हो गया। देश-देश में विद्वानों ने छिपे-छिपे बाइबिल का अच्छा अध्ययन किया। इन लोगों को मालूम हुआ कि ईसाई जनता जिन बातों को धर्म समझे बैठी है, वे बाइबिल में कहीं नहीं हैं। इस तरह वे पोप और पादरियों की धूर्त लीला तो समझ गए; पर उनको इतना साहस न हुआ कि इसका भंडा-फोड़ करें।

निदान उस समय के पोप ने रोम में एक विशाल धर्म-भवन (गिरजा) बनवाने की ठानी और उसका सारा ख़र्च श्रद्धालु ईसाइयों से वसूल करना चाहा। पोप ने कई पादरी देश-देश भेजे। ये लोग जनता को समझाते कि तुम जितना धन दोगे, उतने ही पुण्य के भागी होगे। इन लोगों ने रसीदें तैयार कीं और उन्हें खुल्लमखुल्ला बेचने लगे। लोग अपने पाप-मोचन की आशा से इन्हें ख़रीदने भी लगे। ये ही पादरी जर्मनी के उस ग्राम में पहुँचे, जहाँ मार्टिन लूथर नाम का एक पादरी रहता था। उससे इन लोगों ने इस कार्य में

सहायता माँगी। लूथर ने बाइबिल अच्छी तरह पढ़ी थी। वह इसे निरी धूर्तता समझता था। इसलिये उसने सत्य के लिये पोप का विरोध उठाया। जर्मनी के कई राजों ने उसका समर्थन किया और इस प्रकार एक नया पोप-विरोधी संप्रदाय खड़ा हो गया। धीरे-धीरे यह अन्य देशों में भी बढ़ता गया और प्रोटेस्टेंट (Protestant) अर्थात् विरोध करनेवाला कहलाया, क्योंकि पुराना मत रोमन कैथलिक कहलाता था और उसके माननेवाले कैथलिक (Catholic) कहलाते थे।

इस प्रकार योरप में विद्योद्धार होने के कारण ही धर्मोद्धार (Reformation) होना संभव हुआ।

हेनरी अष्टम को अपनी विद्या का अभिमान था। उसने लैटिन में, पोप के पक्ष मे, एक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक को देखकर पोप ने हेनरी को धर्म-रक्षक (Defender of the Faith) की उपाधि दी। योरप के अन्य देशों में जिस शीघ्रता से धार्मिक परिवर्तन हो रहा था, इँगलैंड ने उसमें भाग नहीं लिया। इँगलैंड तो पूर्ववत् धीरे-धीरे उन्नति करता हुआ चिरकाल में अपने-आप ही प्रोटेस्टेंट मत में परिवर्तित हो गया।

(ग) कैथराइन का तलाक़ और वूल्ज़े का अधःपतन

'कैथराइन' हेनरी से पाँच वर्ष बड़ी थी। इसकी सब संतानें

मर चुकी थीं, केवल 'मेरी' (Mary) नाम की एक कन्या ही बची थी। हेनरी को पुत्र की इच्छा थी। अतः वह कैथराइन को तलाक़ देकर 'एन बोलीन' (Anne Boleyn) से विवाह करना चाहता था। मध्य-काल में यौरपीय देशों में तलाक़ की विधि प्रचलित नहीं थी। १५२७ में हेनरी ने पोप क्लिमेंट सप्तम (Clement VII) से प्रार्थना की कि तुम मुझको कैथराइन के तलाक़ की आज्ञा दे दो। पोप ने इस कार्य में टालमटोल करनी प्रारंभ की। अंत को हेनरी ने तंग आकर 'एन बोलीन' से विवाह कर लेने का दृढ़ निश्चय कर किया। वूल्ज़े इस विवाह का विरोधी था, अतः हेनरी ने उसको चांसलर-पद से हटा दिया और उसकी बहुत-सी संपत्ति भी छीन ली। वूल्ज़े ने राजा को वचन दिया कि मैं यार्क में रहते हुए शांति से अपने अंतिम दिन व्यतीत करना चाहता हूँ। यार्क में पहुँचकर उसने अपना प्रण तोड़ दिया और चांसलर बनने का पुनः प्रयत्न किया। इससे हेनरी ने उस पर 'देश-द्रोह' का दोष लगाया और उसको लंदन में उपस्थित होने की आज्ञा दी। लंदन को जाते हुए स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण, १५३० के नवंबर में, लीस्टर (Leicester) के गिरजा-घर में, वूल्ज़े का देहांत हो गया और उसके देहांत के साथ ही हेनरी के शासन-काल का अर्द्धभाग भी समाप्त हो गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५०६	हेनरी अष्टम का राज्याधिरोहण (Accession of Henry VIII)
१५११	पवित्र संघटन (The Holy League)
१५१३	एड़ी तथा फ़्लॉडन-क्षेत्र की लड़ाइयाँ (The battles of Spurs and Flodden)
१५१५	युटोपिया-नामक ग्रंथ का मुद्रण
१५१७	जर्मनी में धार्मिक परिवर्तन का आरंभ (The Reformation in Germany)
१५१६	चार्ल्स पंचम सम्राट् बना (Charles V as Emperor)
१५२१-१५२५	फ़्रांस से युद्ध (The French War)
१५२५	बार्किंघम का अधःपतन (Fall of Bukingham)
१५२५	पेविया (Pavia) की लड़ाई
१५२७	कैथराइन को तलाक़ देने के लिये हेनरी का पोप से पूछना
१५२६	वूल्जे का अधःपतन

चतुर्थ परिच्छेद

हेनरी अष्टम और धर्म-सुधार

वूल्ज़े के देहांत के अनंतर भी हेनरी के सिर पर कैथराइन के तलाक़ का भूत पूर्ववत् ही चढ़ा रहा। पोप को अपने पक्ष में करने के लिये उसने फ्रांस के राजा फ्रांसिस से मित्रता करने का प्रयत्न किया। परंतु जब इस कार्य में वह सफल न हुआ, तो उसने योरपीय चर्चों से तलाक़ के औचित्य तथा अनौचित्य का निर्णय करवाया। जर्मनी के चर्चों ने हेनरी के विरुद्ध सम्मति दी और पोप ने भी उसका पक्ष नहीं लिया। इस कठिन दशा में उसने आंग्ल-पार्लिमेंट तथा चर्च की धार्मिक सभा का अधिवेशन किया। उसने दोनों ही सभाओं में परस्पर कलह करवाना चाहा, परंतु इस कार्य में भी वह निष्फल-प्रयत्न हुआ।

(१) हेनरी का स्वेछाचारित्व

टॉमस क्रॉवल (Thomas Cromwell) एक लुहार का पुत्र था। इसने अपने बाहुबल से बड़ी उन्नति कर ली और अंत तक वूल्ज़े का साथ दिया। अतः संपूर्ण आंग्ल-जनता इसको विश्वास-पात्र और स्वामि-भक्त सेवक समझती थी। एक दिन एकांत में बातें करते हुए हेनरी को इसने सलाह दी

कि आप स्वयं शक्ति प्राप्त कीजिए और कैथराइन को तलाक़ दे दीजिए। क्रांवल की यह बात हेनरी की समझ में आ गई। इसके अनंतर इसी को लक्ष्य बनाकर हेनरी ने कार्य प्रारंभ किया। उसने पार्लिमेंट में बहुत-से नियम पास करवाकर अपने को स्वेच्छाचारी बना लिया। एक ही पार्लिमेंट १५२६ से १५३६ तक लगातार बैठती रही। पार्लिमेंट की प्रथम बैठक के समय इँगलैंड पुराना था और अंतिम बैठक के समय नवीन हो गया। यह महान् क्रांति कैसे आ गई, अब इसी का उल्लेख किया जायगा।

आरंभ में हेनरी ने 'प्रिमुनायर' के नियम की ओर पार्लिमेंट का ध्यान खींचा और पादरियों से कहा कि तुमने वूल्जे को पोप का प्रतिनिधि मानकर एडवर्ड तृतीय के राज्य-नियम को भंग किया है। इस पर पादरी लोग डर गए और उन्होंने उसको बहुत-सा रुपया जुर्माने के तौर पर दिया। इससे संतुष्ट न होकर हेनरी ने अपने को आंग्ल-चर्च का मुखिया (Supreme head of the English Church) नियुक्त करवाया।

आंग्ल-चर्च का स्वामी बनते ही उसने पोप को धमकाना शुरू किया और उसके विरुद्ध बहुत-से नियम पास करवाए। उसने १५३२ में, राज्य-नियम के द्वारा, पादरियों की प्रथम आय को पोप के स्थान पर स्वयं लेना आरंभ किया। यही

नहीं, १५३३ में अपील-नियम (Act of Appeals) के द्वारा उसने संपूर्ण आंग्ल-अभियोगों का पोप के पास निर्णयार्थ भेजना 'देश-द्रोह' ठहराया। इसी प्रकार १५३४ में मुख्यत्व-नियम (Act of Supremacy) के अनुसार पोप को मुखिया मानना भी देश-द्रोह में सम्मिलित हो गया। यह स्पष्ट ही है कि इन नियमों को पास करवाकर हेनरी कैसा स्वेच्छाचारी हो गया।

एन बोलीन टॉमस हावर्ड कार्डिनल वूल्ज़े

वूल्ज़े की मृत्यु के अनंतर आर्च-बिशप के पद पर टॉमस क्रैनमर (Thomas Cranmer) नियुक्त किया गया। यह बहुत विद्वान् था। हठी न होने के कारण यह प्रायः अपनी

सम्मति बदल देता और दूसरे के कहने के अनुसार चलने लगता था। पोप से अपनी इच्छा पूर्ण होते न देखकर हेनरी ने 'एन बोलीन' से चुपचाप विवाह कर लिया, कैथराइन को तलाक़ दे दी और आर्च-बिशप को इस बात पर विवश किया कि वह कैथराइन के तलाक़ को चर्च-सभा (Church-Council) द्वारा नियमानुकूल ठहरा दे। चर्च-सभा को भी कैथराइन के तलाक़ को उचित ठहराना पड़ा, क्योंकि ऐसा न करने से उसके पास बचने का और उपाय ही कौन-सा था? यह सारा मामला पोप के पास ले जाना असंभव था और जो ऐसा करता भी, उसको अपील-नियम के अनुसार फाँसी पर चढ़ना पड़ता। वास्तविक बात तो यह थी कि हेनरी ने अपनी चतुराई से आंग्ल-चर्च को रोम से सर्वदा के लिये पृथक् कर दिया और पोप की शक्ति स्वयं प्राप्त करके वह स्वेच्छाचारी बन गया।

(२) हेनरी का धर्म-परिवर्तन

हेनरी के ऊपर-लिखे स्वेच्छा-पूर्ण कार्यों से कुछ आंग्ल-विद्वान् असंतुष्ट थे। जान फ़िशर (John Fisher) तथा सर टॉमस मोर (Sir Thomas More) इन असंतोषियों के प्रधान थे। १५३३ के अंत में एन बोलीन के 'एलिज़बेथ' (Elizabeth)-नामक एक कन्या उत्पन्न हुई।

इस कन्या को आंग्ल-रानी बनाने के उद्देश से हेनरी ने, १५३४ में, 'उत्तराधिकारित्व-नियम' (Act of Succession) पास करवाया और एलिज़बेथ को राज्य-नियम द्वारा आंग्ल-चर्च का मुखिया तथा आंग्ल-राज्य की वास्तविक अधिकारिणी नियुक्त किया। यही नहीं, उसने एक नवीन राज-द्रोह-नियम (Treason Act) पास किया, जिसके अनुसार राजा तथा उसकी उपाधियों का अपलाप करनेवाले को मृत्यु-दंड दिया जा सकता था। मोर तथा फ़िशर (More and Fisher) ने इन नियमों का विरोध किया। परिणाम यह हुआ कि इन दोनों को ही फाँसी पर चढ़ना पड़ा।

हेनरी को रुपयों की आवश्यकता थी, गिरजाघरों की संपत्ति लूटकर उसने रुपया प्राप्त करने का यत्न किया। इस उद्देश की पूर्ति के लिये उसने टॉमस क्रांवल को अपना विकर जेनरल (Vicar General) नियुक्त किया। उन दिनों आंग्ल-विहारों में बहुत-सी बुराइयाँ विद्यमान थीं। भिक्षु तथा भिक्षुनियों के अविवाहित रहने के कारण व्यभिचार की कमी नहीं थी। १५३५ में क्रांवल ने इन विहारों (Abbeys and Nunneries) की आंतरिक अवस्था का पता लगाने के लिये बहुत-से राज्याधिकारी भेजे। उनकी सारी सूचनाएँ १५३६ की पार्लिमेंट में पेश की गईं। इस पर पार्लिमेंट ने २०० पाउंड

से न्यून वार्षिक आयवाले विहारों को तोड़ देने का क़ानून पास कर दिया। साथ ही उसने यह भी स्वीकृत किया कि टूटे हुए विहारों की संपत्ति राजा की ही संपत्ति समझी जाय।

छोटे-छोटे विहारों का नाश होते देख आंग्ल-जनता में असंतोष फैल गया। लिंकनशायर तथा यार्कशायर में विद्रोह हो गया। इसका कारण यह था कि इन विहारों से ग़रीब जनता को लाभ था, उसका उदर-पोषण होता था। इस विद्रोह को आंग्ल-इतिहास में 'पिल्ग्रिमेज ऑफ ग्रेस' (The Pilgrimage of Grace) के नाम से पुकारते हैं। हेनरी ने नार्फ़ाक के ड्यूक को विद्रोह शांत करने के लिये भेजा। उसने विद्रोहियों को समझा-बुझाकर शांत किया और उनको वचन दिया कि तुम्हारी प्रार्थनाओं को राजा मान लेगा। ड्यूक के चले जाने पर अपनी इच्छाएँ पूर्ण होते न देखकर विद्रोहियों ने पुनः विद्रोह कर दिया। हेनरी ने सेना भेजकर विद्रोह शांत किया और विद्रोहियों के नेताओं को मरवा डाला। उत्तर में पुनः विद्रोह न हो, इस उद्देश से उत्तरीय प्रांतों के निरीक्षणार्थ उसने 'उत्तरीय समिति' (Council of North) नाम की एक समिति स्थापित कर दी कि वह विद्रोहों को शांत करती रहे।

उत्तरीय विद्रोह के अनंतर हेनरी ने बड़े-बड़े विहारों तथा

गिरजाघरों को भी तोड़ना प्रारंभ किया। इस कार्य में उसने बहुत-से उपायों का सहारा लिया। कभी-कभी वह किसी पादरी पर उत्तरीय विद्रोह में सम्मिलित होने का दोष लगाता और उसके विहार को तोड़ देता था। कभी-कभी कुछ विहारों की संपत्ति इस अपराध पर भी लूट लेता था कि वे धूर्तता करके जनता के रुपए लूटते हैं।

धार्मिक विषयों में राजा की श्रद्धा न देखकर क्रैनमर तथा क्रांबल ने प्रोटेस्टेंटधर्मावलंबियों को ही शनैः-शनैः संपूर्ण चर्चों का मुखिया बनाना प्रारंभ किया। उन्होंने 'नवीन बाइबिल' को चर्चों में प्रचलित करने के लिये हेनरी से आज्ञा निकलवा दी। इन सब सुधारों के कारण जनता में भयंकर असंतोष फैल गया। १५३९ की पार्लिमेंट में हेनरी ने यह अधिकार प्राप्त कर लिया कि उसकी आज्ञाएँ भी राज्य-नियम ही समझी जायँ। उसने उसी पार्लिमेंट से धर्म-संबंधी छः धाराएँ * (The Statute of Six Articles) पास करवाईं, जिनका मानना संपूर्ण

बाद ही वह मर गई। पुत्रोत्पत्ति से पूर्व ही, मेरी के ही सदृश, एलिज़बेथ भी कामज (दोगली) ठहरा दी गई थी। हेनरी के पोप-विरोध के कारण चार्ल्स तथा फ्रांसिस (Francis), पोप की सहायता से, इँगलैंड पर आक्रमण करना चाहते थे। उसको इस महासंघटन से बचाने के लिये क्रांबल

जनता के लिये आवश्यक था । ये धाराएँ प्रोटेस्टेंट-मत के विरुद्ध थीं । परिणाम यह हुआ कि प्रोटेस्टेंटों से कैदखाने भर गए । लैटिमर ने अपने को बिशप-पद से हटा लिया । भावी भयंकर विपत्ति आती देखकर क्रैनमर ने भी अपने परिवार को जर्मनी भेज दिया ।

हेनरी की इस गंगा-जमुनी नीति में जो विरोध देख पड़ता है, वह वास्तव में विरोध नहीं है । हेनरी ने पुराने कैथलिक-मत का त्याग नहीं किया था । उसकी लड़ाई केवल पोप से थी, क्योंकि उसने कैथराइन को तलाक़ देने में उसकी सहायता नहीं की थी । कैथराइन सम्राट् चार्ल्स पंचम की बुवा थी । उस कठिन काल में चार्ल्स, पोप का प्रधान समर्थक और योरप में प्रतापी सम्राट् था । यदि पोप हेनरी का कहना मानता, तो चार्ल्स से बुराई लेता । इसी कारण पोप इस विषय में टालमटोल करता गया । यह हेनरी को असह्य हो गया और उसने पोप से लड़ाई ठान दी । और विद्रोहियों के नेताओं को मरवा डाला । उत्तर में पुनः विद्रोह न हो, इस उद्देश से उत्तरीय प्रांतों के निरीक्षणार्थ उसने 'उत्तरीय समिति' (Council of North) नाम की एक समिति स्थापित कर दी कि वह विद्रोहों को शांत करती रहे ।

उत्तरीय विद्रोह के अनंतर हेनरी ने बड़े-बड़े विहारों तथा

इँगलैंड पर जो पोप का धार्मिक अधिकार था, उसे छीनकर वह स्वतंत्र बन बैठा और उसने धर्मोद्धार-समर्थक जो-जो कार्य किए, वह इसलिये नहीं कि वह प्रोटेस्टेंट था। वह था तो कैथलिक, पर पोप को नीचा दिखाने के लिये उसने ऊपर-लिखे धर्म-परिवर्तन किए थे। इसी से उसकी नीति दुरंगी मालूम पड़ती है। प्रोटेस्टेंटों पर अत्याचार करना वह उचित समझता था, क्योंकि उसका मत वही पुराना कैथलिक मत था।

(३) हेनरी के विवाह तथा राज्य-प्रबंध

(क) विवाह

एन बोलीन के भी एक कन्या के अतिरिक्त कोई पुत्र नहीं हुआ। हेनरी को पुत्र की इच्छा थी ही। १५३६ में हेनरी ने एन बोलीन पर व्यभिचार का दोष लगाया और शीघ्र ही उसको फाँसी पर चढ़ा दिया। उसके अगले ही दिन उसने लेडी जेन सेमर (Seymour) से विवाह कर लिया। रानी जेन के १५३७ में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। परंतु पुत्र की उत्पत्ति के बाद ही वह मर गई। पुत्रोत्पत्ति से पूर्व ही, मेरी के ही सदृश, एलिज़बेथ भी कामज (दोगली) ठहरा दी गई थी। हेनरी के पोप-विरोध के कारण चार्ल्स तथा फ्रांसिस (Francis), पोप की सहायता से, इँगलैंड पर आक्रमण करना चाहते थे। उसको इस महासंघटन से बचाने के लिये क्रांवल

(Cromwel) ने जर्मन राजकुमारों से मित्रता कर लेने की सलाह दी और एक जर्मन राजकुमारी 'एन' (Anne) से उसका विवाह भी करा दिया। एन बदसूरत थी और आंग्ल-भाषा नहीं समझती थी। अतः इस विवाह से हेनरी असंतुष्ट हो गया। उसने क्रांबल को फाँसी पर चढ़ा दिया और क्रांबल की फाँसी के पूर्व ही कैथराइन हावर्ड (Haward) से विवाह भी कर लिया। १५४२ में इसके भी अधःपतन की बारी आई और 'कैथराइन पार' (Catharine Parr) को हेनरी से विवाह करने का अवसर मिला। यह अतिशय बुद्धिमती थी। राजनीतिक मामलों में इसने हस्तक्षेप नहीं किया और इसीलिये हेनरी के जीवन-पर्यंत इसका अधःपतन नहीं हुआ।

(ख) राज्य-प्रबंध

जब तक स्कॉटलैंड का शासन उसकी बहन मार्गरैट के हाथ में रहा, तब तक हेनरी को उस ओर से कोई भय नहीं रहा। कुछ वर्षों के अनंतर उसका पुत्र जेम्स पंचम युवावस्था को प्राप्त करके राज्य-सिंहासन पर बैठा। यह फ़्रांसीसियों का मित्र था। अतः इसने इँगलैंड पर आक्रमण किया, परंतु १५४२ में 'साल्वेमास' (Solwaymass) की लड़ाई में मारा गया। जेम्स के 'मेरी' (Mary) नाम की एक कन्या थी। हेनरी

अष्टम ने मेरी का विवाह अपने पुत्र से करना चाहा और उसके लिये वह युक्तियाँ सोचने लगा।

स्कॉटलैंड के विद्वेष के समय फ़्रांस ने भी उसको बहुत कष्ट दिया। १५४४ में उसने चार्ल्स पंचम से मित्रता करके फ़्रांस पर आक्रमण कर दिया और 'बोलोन' (Bolougne) छीन लिया। इसके छुड़ाने के लिये फ़्रांस ने बहुत ही यत्न किया, परंतु कृतकार्य नहीं हो सका।

हेनरी के राज्य-काल में आयर्लैंड पर भिन्न-भिन्न नार्मन-बैरनों (Norman Barons) का प्रभुत्व था। ये लोग आंग्ल-राजा को अपनी शक्ति तथा राज्य देने में सहमत नहीं थे। जब हेनरी ने इनके अधिकार छीनने का यत्न किया, तो इन्होंने १५३५ में विद्रोह कर दिया। उसने विद्रोह को शीघ्र ही शांत कर दिया और आंग्ल-राजा को ही अपना राजा मानने के लिये बैरनों को विवश किया। इस कार्य के अनंतर उसने अपने नाम के साथ 'आयर्लैंड का राजा' (King of Ireland), ये शब्द भी जोड़ना प्रारंभ कर दिया। किंतु वेल्स (Wales) के मामले में वह आयर्लैंड की अपेक्षा अधिकतर सफल नहीं हुआ। उसने वेल्स के शासन के लिये 'वेल्स-सभा' (Council of Wales)-नामक समिति नियत की और उत्तम प्रबंध करने के उद्देश से उस प्रदेश को १३

मंडलों में विभक्त कर दिया । आजकल अन्य आंग्ल-प्रदेशों के सदृश ही वेल्स के भी प्रतिनिधि आंग्ल-पार्लिमेंट में आते हैं ।

हेनरी का स्वास्थ्य कुछ समय से दिन-पर-दिन अधिक खराब हो रहा था । १५४७ में उसका देहांत हो गया । उसके राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ इस प्रकार हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५२६	धर्म-सुधार-संबंधी पार्लिमेंट के अधिवेशन का प्रारंभ
१५३३	अपील-नियम (Act of Appeals)
१५३४	मुख्यत्व-नियम (Act of Supremacy)
१५३५	फ़िशर तथा मोर की हत्या
१५३६	छोटे-छोटे गिरजाघरों तथा विहारों (Monasteries) का नाश
१५३६	बड़े-बड़े गिरजाघरों का नाश तथा छः धाराओं का नियम (The Statute of the 6 Articles)
१५४०	क्रांवल की हत्या
१५४२	साल्वेमास की लड़ाई
१५४४	बोलोन (Bolougne) की विजय
१५४७	हेनरी अष्टम की मृत्यु

पञ्चम परिच्छेद

एडवर्ड षष्ठ (१५४७–१५५३)

हेनरी अष्टम का लड़का एडवर्ड षष्ठ दस ही वर्ष का था, जब उसके पिता की मृत्यु हो गई। छोटी उम्र के कारण वह राज्य-कार्य सँभालने के अयोग्य था। हेनरी अपने मरने से पहले ही एक 'संरक्षक-सभा' (Council of Regency) बना गया था। उसने संरक्षक-सभा में प्राचीन तथा नवीन धर्म के अनुयायियों को समान संख्या में रक्खा था। यह इसीलिये कि कोई दल प्रबल होकर दूसरे दल पर अत्याचार न कर सके। हेनरी के मरने के बाद संरक्षक-सभा का नेता सॉमर्सेट का ड्यूक (Duke of Somerset) हर्टफ़ोर्ड (Hertford) बना। यह धार्मिक संशोधनों के पक्ष में था। इसका प्रबंध बहुत उत्तम नहीं था। इसी कारण कुछ मामलों में इंगलैंड को नीचा देखना पड़ा।

(१) सॉमर्सेट का राज्य-प्रबंध

सॉमर्सेट स्वभाव का अतीव दयालु तथा बोलचाल में मीठा था। उसकी वीरता में भी किसी को कुछ संदेह न था। वह नवीन धर्म का प्रचार बहुत अधिक चाहता था। हेनरी

अष्टम के समान वह शांतिप्रिय था। उसको विदेशी राष्ट्रों से युद्ध करना नापसंद था। यह होते हुए भी उसमें कुछ दोष थे। वह निर्बल-हृदय, हठी और अदूरदर्शी था। उसको इस बात का कुछ भी विवेक न था कि कौन-सा काम हो सकता है, और कौन-सा नहीं। यही कारण है कि तीन ही वर्ष के बाद उसको संरक्षक-सभा से हटना पड़ा। १५५२ में वह मार भी डाला गया।

एडवर्ड षष्ठ

स्कॉटलैंड का आक्रमण (१५४७—) हेनरी अष्टम

मरने से पूर्व ही फ़्रांस तथा स्कॉटलैंड से संधि कर चुका था। किंतु कुछ घटनाओं के कारण सॉमर्सेट् को स्कॉटलैंड से लड़ना पड़ा। स्कॉच-रानी मेरी के संरक्षकों में से एक ने स्कॉच-प्रोटेस्टेंटों पर भयंकर अत्याचार किया। इससे स्कॉच लोगों ने विद्रोह कर दिया। विद्रोहियों को कैथलिक (Catholic) संरक्षक ने बुरी तरह से पराजित किया। इस पर उन्होंने सॉमर्सेट् से सहायता माँगी। सॉमर्सेट् एडवर्ड षष्ठ का विवाह स्कॉट लोगों की रानी मेरी से करना चाहता था। यह इसीलिये कि दोनों ही देश एक दूसरे से मिल जायँ।

इस उद्देश से सॉमर्सेट् ने स्कॉटलैंड पर चढ़ाई की और पिंकी (Pinkie)-नामक स्थान पर स्कॉच-सेनाओं को बुरी तरह से पराजित किया। स्कॉटलैंड को उसने खूब लूटा और प्रजा को भी कष्ट पहुँचाया। इससे स्कॉच-जनता उससे बहुत ही अधिक नाराज़ हो गई।

पिंकी के संग्राम के बाद ही सॉमर्सेट् को कुछ एक कारणों से इँगलैंड को लौटना पड़ा। स्कॉच-जनता ने आंग्लों को तंग करने और चिढ़ाने के लिये अपनी रानी मेरी का विवाह फ़्रांस के राजकुमार से तय कर लिया और उसे वहीं भेज भी दिया। वहीं पर उसकी शिक्षा हुई। वह कैथलिक धर्म की अनन्य भक्त हो गई।

फ्रांसीसियों ने स्कॉच् लोगों का साथ दिया। उन्होंने बोलोन पर आक्रमण कर दिया। आंग्ल-सेनाओं ने बड़ी मुश्किल से बोलोन की रक्षा की। सॉमर्सेट के अधःपतन के अनंतर एक संधि द्वारा इँगलैंड ने फ्रांसीसियों को बोलोन लौटा दिया।

(२) सॉमर्सेट के धार्मिक सुधार

सॉमर्सेट ने नए धर्म के फैलाने का बहुत ही अधिक यत्न किया। वह इसको इँगलैंड का जातीय धर्म बनाना चाहता था। कैथलिक-धर्मावलंबी लैटिन-भाषा द्वारा प्रार्थना आदि धर्म-कार्य करते थे, जैसे हिंदू संस्कृत द्वारा करते हैं। लोक-सभा के अधिवेशन से पूर्व ही आंग्ल-भाषा के द्वारा राजकीय चर्च में प्रार्थना की जाने लगी। सारे देश में राज-कर्मचारी भेजे गए। इन्होंने गिरजों की मूर्तियाँ तोड़ डालीं। सारी-की-सारी खिड़कियों के वे शीशे तोड़ डाले गए, जिन पर संतों-महंतों की तसवीरें बनी हुई थीं। गार्डिनर तथा बानर (Gardiner and Bonner)-नामक बिशपों (Bishops) ने इस बात का विरोध किया। उन्होंने कहा कि ऐसा करने के लिये लोक-सभा की आज्ञा की ज़रूरत है। इस पर वे क़ैद कर लिए गए। नवीन लोक-सभा से सॉमर्सेट ने कई बातें पास करवा लीं—

(१) हेनरी अष्टम ने नवीनप्र टेस्टेंट (Protestant)-धर्म के विरुद्ध जो राज्य-नियम बनाए थे, उनको रद करवादिया।

(२) छः धाराओं का राज्य-नियम हटा दिया।

(३) उन मठों तथा विहारों को भी गिरा दिया, जिनको हेनरी अष्टम ने नहीं गिराया था।

(४) गिरजों की अंध रीति-रस्में भी हटाई गईं। पादरियों को विवाह करने की आज्ञा दे दी गई। पुराने मतानुसार ख़ास-ख़ास दिनों में मांस खाना बंद था, सो यह नियम भी हटा दिया गया।

(५) एडवर्ड की प्रथम प्रार्थना-पुस्तक (Prayer-book) १५४६ में प्रचलित की गई। सब गिरजों में यही एक पुस्तक पढ़ी जाने लगी। इससे पहले गिरजों में भिन्न-भिन्न प्रार्थनाएँ होती थीं। क्रैनमर ने ही इस पुस्तक को तैयार किया था। इस काम में उसकी सफलता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसकी पुस्तक को सभी किरानियों ने मंज़ूर कर लिया। उसकी भाषा बहुत ही मधुर है। इस पुस्तक को सभी गिरजों में समान-रूप से प्रचलित करने के लिये 'समानता का नियम' (Act of Uniformity) पास किया गया। जिन-जिन पादरियों ने इस नियम को न माना, वे क़ैद कर लिए गए।

ऊपर-लिखे धार्मिक परिवर्तनों से आंग्ल-जनता नाराज़ हो गई, क्योंकि सुधारों की भी कोई हद होती है। सॉमर्सेट ने इसी हद को पार कर दिया। इसका फल उसके लिये अच्छा न हुआ। साधारण आंग्ल-जनता नवीन सुधारों के बहुत पक्ष में नहीं थी। डेवनूशायर (Devonshire) के एक गाँव में जब आंग्ल-भाषा की प्रार्थना-पुस्तक चर्च में पढ़ी गई, तो लोगों ने पुस्तक को लैटिन-भाषा में पढ़ने के लिये पादरियों को बाधित किया। ठीक ऐसे ही समय में सॉमर्सेट ने मूर्खता से गिरजों की कुछ जायदाद अपने निजी काम में लगाई। साथ ही एक श्मशान-भूमि को उजाड़कर और उसकी हड्डियाँ निकलवाकर दूर फिकवा दीं और वहाँ पर उसने एक महल बनवाया। इस पर दो प्रांतों के लोगों ने विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह बड़ी कठिनाई से शांत किया जा सका।

१५४६ में नार्फ़ाक (Norfolk) में विद्रोह हो गया। इस विद्रोह का कर्ता-धर्ता राबर्ट केट (Robert Ket)-नामक एक रंगसाज़ था। इस विद्रोह के बहुत-से कारण थे, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(१) ज़मींदारों ने ऊन के व्यापार में अधिक लाभ देखकर खेतों को चरागाह बना दिया और मुख्य रूप से

भेड़ों को ही पालना शुरू कर दिया। ग़रीब किसान तथा असामी भूख के मारे इधर-उधर बेकार फिर रहे थे।

(२) मोर की 'युटोपिया' (Utopia)-नामक पुस्तक से आंग्लों की आँखें खुल गई थीं। वे लोग ज़मींदारों की बुराइयाँ देखने और उनके प्रतिकार का उपाय सोचने लगे।

(३) सॉमर्सेट् ने बहुत धार्मिक संशोधन कर दिए थे। वारिक (Warwick) के समीप, ओक-वृक्ष के नीचे, रावर्ट कैट ने अपना दरबार लगाया। उस दरबार में धार्मिक संशोधन पर विचार किया गया और राज्य से प्रार्थना की गई कि हमारी इच्छा पूरी की जाय। बहुत दिनों तक रावर्ट कैट के साथी नियम-पूर्वक डेरा डाले पड़े रहे। निदान जब राज्य ने उचित उत्तर न दिया, तो वारिक को उसने फ़तह कर लिया। शाही फ़ौज ने उसको हराना चाहा, परंतु वह आप ही बुरी तरह से हारी। इस पर कुप्रसिद्ध डडले (Dudley) के लड़के, डडले ने जर्मन तथा इटैलियन सिपाहियों के सहारे कैट को परास्त किया। कैट क़ैद करके मरवा डाला गया। इस विजय से डडले आंग्ल-जनता का प्रियपात्र बन गया और सॉमर्सेट् का स्थान लेने का यत्न करने लगा।

सॉमर्सेट् का भाई टॉमस सेमर (Seymour) लोभी, मूर्ख

और जल्दबाज़ था। वह सामुद्रिक सेनापति था। इस पद से संतुष्ट न होकर उसने अपने भाई के विरुद्ध गुप्त मंत्रणा शुरू कर दी। इस गुप्त मंत्रणा का भेद लोक-सभा पर खुल गया। लोक-सभा ने उसको क़ैद करके मरवा डाला। आंग्ल-जनता में डड्ले ने यह संवाद फैला दिया कि इस हत्या में सॉमर्सेट का ही मुख्य भाग है। इस बात के साथ-साथ निम्न-लिखित और बातें भी थीं, जिससे सॉमर्सेट को संरक्षक-समिति से हटना पड़ा—

(१) सॉमर्सेट प्रजा का पक्ष लेता था, अतः ज़मींदार और ताल्लुक़ेदार लोग उससे बहुत अप्रसन्न थे।

(२) उसने धार्मिक संशोधनों में अति कर दी। लोग अभी इतने अधिक संशोधनों के लिये तैयार न थे।

(३) उसने हेनरी अष्टम के बनाए हुए ताल्लुक़ेदारों के अधिकारों को कम कर दिया।

(४) स्कॉच-रानी मेरी फ़्रांस में रहने लगी। एडवर्ड का उसके साथ का विवाह न तय हो सका। इस पर आंग्ल-जनता सॉमर्सेट से नाराज़ हो गई।

(५) वह ताल्लुक़ेदार लोगों की कुछ भी परवा न करता था। उनसे उसका व्यवहार भी अच्छा न था। शक्ति प्राप्त करके वह अभिमानी हो गया था।

(६) चर्चों, मठों और कॉलेजों के गिरवाने से पादरी लोग सॉमर्सेट से बहुत ही जल-भुन गए थे ।

(७) वह फ़्रांस के साथ इँगलैंड की मित्रता न करा सका ।

इन ऊपर-लिखे कारणों से चतुर डड्ले को सॉमर्सेट् को नीचा दिखाने का मौक़ा मिल गया । उसने संरक्षक-समिति के सभ्यों को अपने पक्ष में कर लिया और सॉमर्सेट् को प्रधान-पद से हटवाकर वह आप संरक्षक-समिति का प्रधान बन गया ।

(३) डड्ले का राज्य-प्रबंध तथा धार्मिक संशोधन

सॉमर्सेट् को संरक्षक-सभा ने लंदन-टावर (Tower of London) में क़ैद कर दिया । यह एक क़िला था, जिसमें बड़े-बड़े लोग क़ैद किए जाते थे । तीन महीने के बाद लोक-सभा ने उसको क़ैद से छोड़ दिया और संरक्षक-समिति का सभ्य भी बना दिया । इस पर डड्ले ने उसको १५५२ में मरवा डाला ।

डडले ने फ्रांस को बोलोन (Bolougne) का शहर देकर संधि कर ली । उसकी इच्छा थी कि फ़्रांसीसी राजपुत्री का विवाह एडवर्ड के साथ हो जाय । परंतु उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हुई ।

पुराने धर्मवालों का ख़याल था कि डड्ले उनके पक्ष में होगा । गार्डिनर तथा बॉनर ने प्रार्थना की कि हम क़ैद से

छोड़ दिए जायँ, परंतु डडले ने उनकी प्रार्थना पर कान तक न दिया। उसका खयाल था कि नवीन धर्म का पक्ष न लेने से नए लॉर्ड उसका साथ छोड़ देंगे। यही कारण है कि १५४६ की लोक-सभा में उसने सबसे पहला राज्य-नियम (क़ानून) यही बनवाया कि गिरजों की मूर्तियाँ तोड़ दी जायँ। पादरी हीद, ड तथा अन्य कई एक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पादरी क़ैद कर लिए गए, क्योंकि ये लोग पुराने धर्म को मानते थे।

गिरजों की जायदाद को लूटने का काम पहले ही की तरह जारी रहा। बहुत-से पुराने पादरी हटा दिए गए और उनके स्थान पर नए रक्खे गए। ऑक्सफ़ोर्ड तथा कैंब्रिज के कॉलेजों के तोड़ देने की भी धमकी दी गई।

राजपुत्री मेरी को आज्ञा दी गई कि वह रोमन-कैथलिक मत के अनुसार पूजा-पाठ न करे। इस पर उसने उत्तर दिया कि जब तक मेरा भाई नाबालिग़ है, तब तक मैं किसी की भी आज्ञा को न मानूँगी। स्पेन के सम्राट चार्ल्स ने मेरी का पक्ष लिया। आंग्ल-दूत को नए ढंग से पूजा-पाठ करने से रोका और इँगलैंड पर हमला करने की तैयारी करने लगा।

इँगलैंड में नवीन धर्मावलंबियों का ही ज़ोर था। क्रैनमर (Cranmer), रिडले (Rideley), डडले आदि लोग नवीन धर्म फैलाने को ही उत्सुक थे। उन्होंने प्रथम प्रार्थना-

पुस्तक का संशोधन करके द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक को तैयार किया। १५५२ में लोक-सभा ने द्वितीय पुस्तक को स्वीकृत कर लिया। जो प्रोटेस्टेंट इसके विरुद्ध थे, वे दबाए गए। इसी वर्ष एक और 'नवीन समानता-नियम' (Act of Uniformity) पास किया गया, जिसके अनुसार उन मनुष्यों को दंड मिलने लगा, जो द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक का विरोध करते थे।

क्रैनमर ने ४२ नियम बनाए, जिनका मानना सब प्रोटेस्टेंटों के लिये अनिवार्य था। १५५३ में, इन ४२ नियमों पर चलना सब आंग्लों के लिये आवश्यक ठहराया गया। इन नियमों का आधार लूथर (Luther) के विचार थे।

(४) राज्य के लिये नार्थंबर्लैंड का प्रयत्न

डडले अर्ल ऑफ़ वारिक तो पहले से ही था। अब संरक्षक-समिति का प्रधान बनने से वह ड्यूक ऑफ़ नार्थंबर्लैंड (Duke of Northumberland) भी बना दिया गया। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि हेनरी अष्टम के दो लड़कियाँ थीं—(१) मेरी और (२) एलिज़बेथ। हेनरी की वसीयत के अनुसार एडवर्ड षष्ठ के निःसंतान ही मर जाने पर क्रमशः मेरी तथा एलिज़बेथ को इँगलैंड का राज्य मिलना चाहिए था और एलिज़बेथ के बाद

हेनरी की बहन मार्गरेट की लड़की मेरी स्टुवर्ट (Mary Stuart) और उसके न होने पर लेडी जेन ग्रे (Lady Jane Grey) इँगलैंड के राज्य की उत्तराधिकारिणी थीं।

एडवर्ड के बाद डडले अपनी पुत्र-वधू लेडी जेन ग्रे को राज्य पर बिठाना चाहता था। इसने एडवर्ड से कहा कि यदि तुम्हारे पिता ने अपनी इच्छा से वसीयत की है, तो एक वसीयत तुम भी कर सकते हो। मेरी कैथलिक है, उसका इँगलैंड की रानी बनना ठीक नहीं। अतः लेडी जेन ग्रे को ही तुम्हारे बाद आंग्ल-राज्य-सिंहासन पर बैठना चाहिए।

चतुर डडले ने संरक्षक-सभा के प्रत्येक सभ्य को तथा क्रैनमर को अपनी सम्मति के अनुकूल कर लिया। वह लोक-सभा से भी यही बात मनवा लेता, परंतु छठी जुलाई को एडवर्ड का शरीरांत तपेदिक़ की बीमारी से हो गया। दो दिन तक उसकी मृत्यु छिपाई गई। १० तारीख़ को लेडी जेन ग्रे इँगलैंड की रानी घोषित कर दी गई।

एडवर्ड के समय में योरपीय राष्ट्र नए-नए देशों का पता लगाने की फ़िक्र में थे। उनकी देखा-देखी विलोबी (Willoughby)-नामक एक आंग्ल ने भी रूस तक के सामुद्रिक मार्ग का पता लगाया। इसका वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५४७	एडवर्ड का राज्याधिरोहण, पिंकी की लड़ाई
१५४६	प्रथम प्रार्थना-पुस्तक, डेवन्शायर तथा नार्फ़ाक का विद्रोह
१५५२	द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक, सॉमर्सेट् का क़त्ल
१५५३	एडवर्ड षष्ठ की मृत्यु

षष्ठ परिच्छेद

मेरी (१५५३-१५५८)

सफ़क (Suffolk) तथा नार्थंबलैंड की चालाकी से एडवर्ड ने अपनी मृत्यु से पूर्व ही लेडी जेन ग्रे को इँगलैंड की रानी के तौर पर मान लिया था; पर आंग्ल-जनता इस बात के लिये तैयार न थी। जेन ग्रे बहुत ही पढ़ी-लिखी थी। वह यूनानी, लातीनी तथा इटालियन-भाषा की पंडिता थी। यहूदी, काल्डियन तथा अरबी-भाषा को भी वह समझती थी। वह बहुत ही धर्मात्मा और कोमल-स्वभाव थी। माता-पिता की आज्ञा पर चलना वह अपना परम कर्तव्य समझती थी। अपने ससुर तथा पिता का कहना मानकर वह इँगलैंड की रानी बनी। परंतु उन दोनों ड्यूकों का आंग्ल-जनता में आदर न था। यही कारण है कि लोगों ने जेन ग्रे को रानी नहीं माना। वह १० ही दिन राज्य कर सकी। इसके बाद मेरी ट्यूडर आंग्ल-रानी बनी। नार्थंबलैंड जेन ग्रे को रानी बनाने के अपराध में क़ैद कर लिया गया।

रानी मेरी ट्यूडर

(१) कैथलिक मत के प्रचार में मेरी का उद्योग

मेरी कैथलिक थी । अतः वह अपने पिता तथा भाई के धार्मिक सुधारों पर पानी फेरना चाहती थी । राज्य पर बैठते ही उसने नार्फ़ाक, गार्डिनर, बॉनर आदि बिशपों को क़ैद से मुक्त किया। लेडी जेन ग्रे तथा उसके पति को उसने क़ैद में डाल दिया । प्रोटेस्टेंट-बिशपों को इँगलैंड से बाहर

निकाल दिया तथा और भी बहुत-से इसी प्रकार के काम किए, जो इस प्रकार हैं—

(१) बहुत-से पुराने चर्चों में पुरानी रीति-रिवाज के अनुसार पूजा-पाठ शुरू हो गया।

(२) क्रैनमर तथा लैटिमर (Latimer) लंदन-टावर में क़ैद किए गए।

(३) नवंबर में पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। उसमें एडवर्ड षष्ठ तथा हेनरी अष्टम के धार्मिक संशोधन-संबंधी सभी राज्य-नियम हटा दिए गए।

(४) कार्डिनल पोल (Cardinal Pole) पोप के प्रतिनिधि के तौर पर इँगलैंड पहुँचा। क्रैनमर के क़ैद होने पर यही आर्च-बिशप बन गया।

(५) हेनरी अष्टम के समय में पोप के विरुद्ध जो-जो राज्य-नियम बने थे, वे रद कर दिए गए।

मेरी का विवाह—लोक-सभा की इच्छा थी कि मेरी किसी आंग्ल-नोबुल के साथ ही शादी करे। परंतु चार्ल्स पंचम के समझाने पर उसने स्पेन के राजा फ़िलिप से शादी करना मंज़ूर किया। फ़िलिप मेरी से ११ साल छोटा था। वह पक्का कैथलिक था। १५५४ के जनवरी में मेरी ने फ़िलिप के साथ विवाह पक्का कर लिया। इससे आंग्ल लोग चिढ़ गए। सर

टॉमस याट (Wyatt) के नेतृत्व में कैंट (Kent) के लोगों ने विद्रोह कर दिया। बड़ी मुश्किल से मेरी ने इस विद्रोह को शांत किया। उसने लेडी एलिज़बेथ को क़ैद कर दिया और टॉमस याट को फाँसी पर चढ़ा दिया! फाँसी पर चढ़ते समय याट ने स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि एलिज़बेथ का कुछ भी अपराध नहीं है, उसको तो क़ैद से छोड़ देना चाहिए। इस पर मेरी ने एलिज़बेथ को क़ैद से मुक्त कर दिया। इसके अनंतर एलिज़बेथ ने मेरी की ख़ूब सेवा-सुश्रषा करनी शुरू की और उसके साथ चर्च में भी जाने लगी।

(७) मेरी का प्रोटेस्टेंट लोगों को ज़िंदा जलाना

फ़िलिप तथा मेरी ने आपस में मिलकर प्रोटेस्टेंट लोगों को सताना शुरू किया। ४ फ़रवरी, १५५५ से लेकर १० नवंबर, १५५८ तक २८० मनुष्य जलाए गए! इन लोगों के जलाने से भी प्रोटेस्टेंट मत का प्रचार इँगलैंड में नहीं रुका।

रिड्ले तथा लैटिमर—लैटिमर प्रोटेस्टेंट मत में दृढ़ था। इसको योरप में भाग जाने का काफ़ी मौक़ा था। लोग इसका बहुत ही अधिक आदर-सत्कार करते थे। यह लंदन पहुँचा। रिड्ले तथा क्रैनमर भी इसको वहीं पर मिले। १५५५ में तीनों ही ऑक्सफ़ोर्ड में कैथलिक लोगों से शास्त्रार्थ करने के लिये भेजे

गए। बड़ा भारी वाद-विवाद हुआ, परंतु उसका कुछ भी फल न निकला। ऑक्टोबर की पहली तारीख़ को रिड्ले तथा लैटिमर को मृत्यु-दंड दिया गया। इन्होंने बड़ी शांति तथा धैर्य से मृत्यु-दंड को स्वीकार किया और मरते समय तक किसी प्रकार के भी निराशा या दुःख के चिह्न नहीं प्रकट किए।

क्रैनमर—ऑक्सफ़ोर्ड में क्रैनमर पाँच महीने तक लगातार क़ैद रहा। क्रैनमर के अपराध का निर्णय पोप के सिवा और कोई भी नहीं कर सकता था। क्रैनमर के स्थान पर पोप ने पोल को नियत किया और १५५६ में क्रैन-मर को मृत्यु-दंड दिया गया। क्रैनमर भीरु-स्वभाव का था, उसका दिल बहुत ही कमज़ोर था। यही कारण है कि वह कैथलिक धर्म की ओर कुछ-कुछ झुक गया। इस पर भी उसको मृत्यु-दंड दिया गया। उसको क़त्ल करने से पहले एक भारी सभा बुलाई गई। मेरी का ख़याल था कि वह उस भरी-सभा में अपने धर्म-परिवर्तन की बात मान लेगा। परंतु उसने ऐसा नहीं किया। भरी-सभा में उसने ये शब्द कहे कि अमुक 'हाथ ने ही ये सब पाप-कार्य किए हैं, अतः सबसे पहले मैं इसी हाथ को जला डालूँगा। उसने जो कुछ कहा, उसे बड़ी वीरता-पूर्वक करके दिखा दिया। इसका आंग्ल-जनता पर बहुत ही

अच्छा असर हुआ। लोगों की सहानुभूति शहीदों के ही साथ हो गई और वे कैथलिक मत को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

इन ऊपर-लिखी हत्याओं से रानी मेरी तथा उसके सलाहकारों का नाम बदनाम हो गया। इसी से वह (Bloody)—'ख़ूनी मेरी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। असल बात तो यह है कि इस प्रकार की घटनाएँ मध्यकाल में आम तौर पर होती थीं। उन दिनों लोग धार्मिक सहिष्णुता को पाप समझते थे। क्या कैथलिक और क्या प्रोटेस्टेंट, मौक़ा पड़ने पर सभी अपना भयंकर रूप प्रकट करते और अपने से विरुद्ध मतवालों को ज़िंदा जला देते थे। एडवर्ड छठे ने 'अनाबैप्टिस्ट' (Anabaptist) लोगों को इसीलिये जला दिया था कि वे बहुत ही अधिक सुधार चाहते थे।

(३) मेरी की विदेशी नीति

मेरी अभी धार्मिक सुधार कर ही रही थी कि उस पर कई विपत्तियाँ आ पड़ीं। प्रोटेस्टेंट लोगों ने इँगलैंड के किनारों को लूटकर कैथलिक लोगों को सताना शुरू किया। स्पेन का फ़्रांस से झगड़ा था। यही कारण है कि फ़िलिप ने मेरी को भी फ़्रांस से लड़ने के लिये बाधित किया। वह यह नहीं चाहती थी।

फ़्रांस तथा जर्मनी का युद्ध(१५५२-१५५६)—१५५२

में १५५९ तक फ्रांस तथा जर्मनी का युद्ध हुआ। फ्रांस का राजा हेनरी द्वितीय बहुत ही शक्तिशाली था। उसने जर्मनी के प्रोटेस्टेंट लोगों का पक्ष लेकर सम्राट् चार्ल्स को पराजित किया। १५५६ में चार्ल्स ने राजगद्दी छोड़ दी। उसके जर्मन प्रांत तथा सम्राट् का पद उसके भाई फर्दिनंद को मिला। यह हेनरी और बोहीमिया (Bohemia) का राजा था। स्पेन, इंडीज़, इटली तथा नीदरलैंड (Netherland) के प्रांत फिलिप को मिले।

इँगलैंड का फ्रांस से युद्ध—फिलिप द्वितीय फ्रांस को नीचा दिखाना चाहता था। उसने १५५७ में मेरी को अपने साथ मिलाया और फ्रांस में सेंट क्वैंटिन (St Quentin)-नामक स्थान पर बड़ी भारी विजय प्राप्त की। उसने पोप को नीचा दिखाया और अपनी इच्छा के अनुसार चलना शुरू किया। फ्रांसीसियों ने फिलिप से चिढ़कर इँगलैंड को तंग करना शुरू किया। उन्होंने कैले (Calais) पर आक्रमण किया और उसको फतह भी कर लिया। मेरी का स्वास्थ्य पहले से ही ठीक न था। कैले हाथ से निकल जाने पर उसका दिल टूट गया और वह १५५८ की १७ नवंबर को परलोक सिधारी। दैवी घटना से उसके १२ घंटे के बाद ही कार्डिनल पोल की भी मृत्यु हो गई।

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५५३	मेरी का राज्याधिरोहण
१५५४	पोप का इँगलैंड के चर्च पर पुनः प्रभुत्व
१५५६	क्रैनमर की मृत्यु
१५५८	कैले का फ्रांस के हाथ मे जाना और मेरी की मृत्यु

सप्तम परिच्छेद

एलिज़बेथ तथा रानी मेरी (१५५८--१५८७)

(१) एलिजबेथ का राज्याधिरोहण

एलिज़बेथ का स्वभाव तथा नीति—एलिज़बेथ (Elizabeth) २५ वर्ष की उम्र मे इँगलैंड के सिंहासन पर बैठी। वह लंबे क़द की तथा खूबसूरत थी। उसका चेहरा सुडौल तथा उसकी नाक बड़ी और आगे की ओर मुडी हुई थी। वह बहुत ही मिहनती थी और राजनीति को खूब समझती थी। उसमे पिता के बहुत-से गुण मौजूद थे। वह गाँवो मे जाकर ग्राम-वासियो का आतिथ्य प्रेम-पूर्वक ग्रहण करती थी। आंग्ल-जनता को खुश रखने मे ही उसका ध्यान था। इन सब उत्तम गुणों के साथ ही उसमे कुछ दुर्गुण भी थे। सच बोलना तो वह जानती ही न थी। उसका स्त्रियो का-सा स्वभाव और व्यवहार नहीं था। स्वार्थ की वह पुतली थी। अपना मतलब किस तरह पूरा किया जाता है, इसको वह अच्छी तरह जानती थी। आंग्ल-जनता के रुख़ को वह खूब पहचानती थी। यही कारण है कि स्त्री होते हुए भी वह पिता के सदृश ही स्वेच्छाचारिणी बनी रही। आंग्ल-जनता उसके

स्वेच्छाचार को कम न कर सकी। उसको धर्म-कर्म से कुछ भी मतलब न था। यही कारण है कि उसने किसी भी धर्म के प्रति अपनी विशेष रुचि नही प्रकट की। उसी के स्वभाव ने धार्मिक सहिष्णुता को इँगलैंड मे प्रचलित किया।
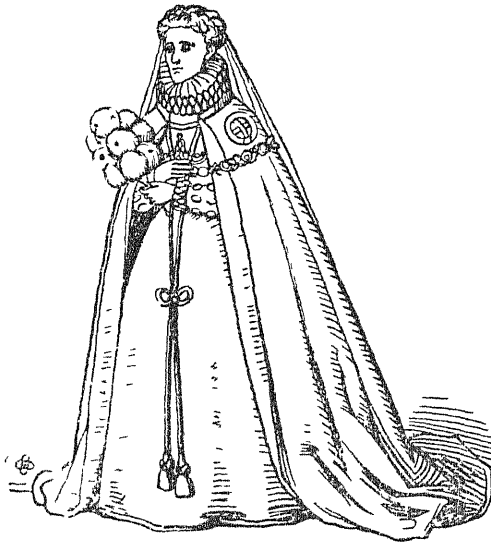
रानी एलिज़बेथ

एलिज़बेथ 'एन बोलीन' की पुत्री थी। बचपन ही मे वह अच्छी तरह से पढ़-लिख गई थी। परंतु उसको विद्या और साहित्य से विशेष प्रेम नही था। उसको शक्ति

और शान की चाह थी। अपनी दूरदर्शिता, धैर्य, उत्साह, साहस तथा अभ्रांत विचार से उसने इन दोनों बातों को पूरे तौर पर प्राप्त किया। उसको शासन करने से कितना प्रेम था, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसने विवाह तक नहीं किया। पिता के सदृश ही कुटिल और शक्तिशाली होने से वह चंचल स्वभाव की हो गई। वह खुशामद को बहुत ही अधिक पसंद करती थी। सजने-धजने में उसका शौक हद दर्जे तक जा पहुँचा था। बुढ़ापे के दिनों में भी वह पाउडर और तेल-फुलेल के सहारे अपने को खूबसूरत और चटकीला-भड़कीला बनाने का यत्न करती थी।

एलिज़बेथ का कोई उच्च उद्देश न था। ४५ वर्षों के राज्य में उसने कोई एक नीति स्थिर रूप से नहीं प्रकट की। वह समय के अनुसार काम करती थी। हजारों तूफ़ानों को उसने चुटकी बजाते शांत कर दिया और अपना बुढ़ापा शान्ति से ही गुज़ारा। उसके राज्य-काल में इँगलैंड पर भयंकर-से-भयंकर विपत्तियाँ आईं, परंतु उसने अपने धैर्य से इँगलैंड की रक्षा की। उसी ने इँगलैंड के महा-शक्ति बनने की नींव डाली। सारांश यह कि एलिज़बेथ ने इँगलैंड में एक नए युग को जन्म दिया। उसी की कृपा

से इँगलैंड नौ-शक्ति-संपन्न बना और स्पेनियों को सामुद्रिक युद्ध में पराजित कर सका।

एलिज़बेथ के मन्त्री—हेनरी अष्टम के सदृश एलिज़-बेथ भी मनमाना काम करती थी। अपना मंत्री वह आप थी। इसमें भी संदेह नहीं कि उसके समय में बहुत-से योग्य पुरुष आंग्ल-राज्य-कार्य में सहायता देने के लिये मौजूद थे। उसने इन सब योग्य मनुष्यों को राज्य-कार्य में रख लिया और अपनी इच्छा के अनुसार चलाया। उसने अपने किसी भी सेवक को फिज़ूल नहीं तंग किया। यही कारण है कि बहुत-से योग्य-योग्य आंग्लों ने उसकी सेवा में ही अपनी उमरें बिताईं। एलिज़बेथ बहुत ही कंजूस थी। वह अपने अच्छे-से-अच्छे काम करनेवालों को बहुत ही कम इनाम देती थी।

रानी का सबसे अधिक निकटस्थ और सलाहकार विलि-यम सेसिल था। इसने रानी की पूर्ण रूप से सेवा की और उसका अंत तक साथ दिया। इस प्रभु-सेवा के बदले रानी ने उसको 'बैरन बर्ले' (Burghley) बनाया। यह पद आंग्ल-लॉर्डों में सबसे नीचा पद था। इसी प्रकार सर निकोलस बेकन ने उसकी अच्छी सेवा की, परंतु रानी की अनुदारता से वह भी चांसलर के पद तक न पहुँच

सका । विलियम सैसिल (William Cecils) के पुत्र राबर्ट सैसिल ने भी रानी की अच्छी सेवा की । सर फ्रांसिस बेकन और सर फ्रांसिस वाल्सिघंम (Sir Francis Walshingham) ने रानी को अनेक बार विपत्तियो से बचाया । वाल्सिघंम ने ही बहुत-से ऐसे षडयंत्रो का पता लगाया, जो रानी को मारने के लिये रचे गए थे । इन सब योग्य सेवको के कारण रानी का राज्य बहुत अच्छी तरह चलता रहा । शांति के कारण इँगलैंड भी समृद्धिशाली हुआ ।

ऊपर-लिखे योग्य राजसेवको के सदृश ही रानी के दरबार मे बहुत-से खुशामदी अयोग्य आदमी भी थे । इनका काम रानी की खूबसूरती तथा बुद्धि की प्रशंसा करना ही था । एक-मात्र इन्ही लोगो के समय रानी की कृपणता दूर हो जाती थी । वह इनको खूब धन तथा पद देती थी । इन खुशामदियो का मुखिया, रानी की बाल्यावस्था का साथी, लॉर्ड राबर्ट डड्ले था । रानी ने इसको लीस्टर का अर्ल (Earl of Leicester) बना दिया । इसके साथ वह विवाह भी कर लेती, परंतु उसको तो शासन तथा शक्ति की बहुत ही अधिक चाह थी । यही कारण है कि उसने विवाह ही नही किया । डड्ले की मृत्यु-पर्यंत रानी ने उसका साथ दिया और उसको बहुत-से ऐसे राजकीय काम भी सौंपे, जिनको वह सफलता-पूर्वक न कर सका ।

(२) एलिजबेथ का धार्मिक परिवर्तन

राजगद्दी पर बैठते ही रानी का सबसे पहला काम धर्म-संबंधी झगड़ों को मिटाना था। एडवर्ड षष्ठ तथा मेरी धार्मिक झगड़ों के सुधारने में क्यों असफल हुए, यह वह अच्छी तरह से जानती थी। उसको यह अच्छी तरह पता था कि अधिक धार्मिक सुधारों के पीछे पड़ने का क्या नतीजा होता है। उसको अपने पिता पर अनन्य भक्ति थी और अपने पिता की नीति को ही वह पसंद करती थी। यही कारण है कि उसने मध्य का मार्ग सँभाला। धार्मिक सुधारों में जहाँ वह पीछे नहीं हटी, वहाँ उसने बहुत धार्मिक सुधार भी नहीं किए। एलिजबेथ के राजगद्दी पर बैठते ही विदेश को भागे हुए प्रोटेस्टेंट लोग इँगलैंड में लौट आए और रानी पर धार्मिक सुधारों के लिये जोर डालने लगे। रानी बड़ी कठिनाई में फँस गई, क्योंकि इँगलैंड में मुख्य-मुख्य पदों पर कैथलिक लोग ही थे। उनको राजपदों से एकदम हटाना सारे देश में गड़बड़ मचा देना था। रानी ने बड़ी बुद्धिमत्ता से इस कठिनाई को दूर किया। उसने १५५९ के जनवरी में आंग्ल-लोकसभा का अधिवेशन किया। लोकसभा ने बिशपों के विरोध करने पर भी निम्न-लिखित दो राज्य-नियम बनाए—

(१) **मुख्यता का राज्य-नियम** (Act of Supre-

धार्मिक परिवर्तन नहीं किए। इसने यही यत्न किया कि प्रजा उपरि-लिखित धार्मिक नियमों पर पूरे तौर से चले। इसका परिणाम यह हुआ कि एक बिशप को छोड़कर रानी मेरी के समय के अन्य बिशपों ने अपने-अपने धार्मिक पदों से इस्तीफे दे दिए। रानी ने भी सभी बिशपों को कैदखाने में डाल दिया और उनके स्थान पर अन्य बिशपों को नियुक्त किया। मैथ्यु पार्कर (Mathew Parker) को उसने कैंटर्बरी का आर्च-बिशप बनाया। यह बहुत ही बुद्धिमान, विचारवान तथा शांत-स्वभाव था। यह भी रानी के सदृश ही धार्मिक सहिष्णुता को पसंद करता था। १५५९ में रानी ने एक धार्मिक कमीशन नियत किया। इसका प्रधान उसने पार्कर को ही बनाया। इस कमीशन का मुख्य उद्देश्य यही था कि उपरि-लिखित धार्मिक राज्य-नियमों पर चलने के लिये प्रजा को बाधित किया जाय।

एलिज़बेथ तथा रोमन कैथलिक—रानी की इच्छा थी कि राज्य-धर्म में सब लोग सम्मिलित हों। जो लोग आंग्ल-चर्च (Anglican Church) में सम्मिलित न हुए, उन पर रानी ने जुर्माना किया और उनको भिन्न-भिन्न प्रकार के दंड दिए। रोमन कैथलिकों को आंग्लों ने पोपिष्ट (Popist) अर्थात् पोप के अनुयायी कहकर पुकारना शुरू किया और उनको सब

कामों में नीचा दिखाया। लाचार होकर बहुत-से छोटे-छोटे पादरियों ने रानी के धर्म को मान लिया। बड़े-बड़े पादरी इतने शक्तिशाली न थे कि रानी का विरोध कर सकते। एलिज़बेथ को उन प्रोटेस्टेंट लोगों से ही डर था, जो उसकी सहिष्णुता की नीति के विरोधी थे। यह होने पर भी उसने अपनी नीति न छोड़ी और आंग्ल-प्रजा को अपनी इच्छाओं के अनुसार ही चलाया।

जिनोआ तथा काल्विनिस्ट (Genoa and the Calvinist)—मेरी ने जिन प्रोटेस्टेंटों को इंगलैंड से बाहर निकाल दिया था, उनमें से बहुतों का विचार योरप में पहुँचकर बदल गया। वे लोग फ्रांसीसी महात्मा जॉन काल्विन (John Calvin) के मत को मानने लगे। जॉन काल्विन १५६४ से मृत्यु-पर्यंत जिनोआ-नगर में रहा। इसने पोप के नियमों का तिरस्कार किया और एक छोटी-सी, वयोवृद्ध पुरुषों की, जो प्रेसबिटर कहलाते थे, सभा बनाई, जिसके सब सभ्य समान अधिकारवाले थे। यह सभा ही चर्च का प्रबंध और लोगों को धार्मिक बनाने का यत्न करती थी। काल्विन का विशेष ध्यान आचार सुधारने की ओर था। वह किसी एक स्थिर प्रार्थना-पुस्तक के पक्ष में न था। ईश्वर की उपासना में उसको सादगी पसंद थी। काल्विन के मत को

प्रेस्बिटेरियानिज्म के नाम से पुकारा जाता है। योरप से जाने से बहुत-से आंग्ल इसी मत के हो गए थे। आंग्ल-इतिहास में उनको प्यूरिटेंस (Puritans) के नाम से भी पुकारा जाता है, क्योंकि ये लोग चाहते थे कि नए मत प्रोटेस्टेंटिज्म में पुराने रोमन कैथलिक मत का कर्म-कांड न रहने पावे। एलिजबेथ के बनाए हुए चर्च में यह बात थी कि रानी ने दोनो मतों के कुछ-कुछ सिद्धांत लेकर एक खिचड़ी मत स्थापित किया था। उसका अभिप्राय यह था कि ऐसा करने से दोनो मतों के अनुयायी उससे संतुष्ट रहेंगे, पर यह उसकी भूल थी। धर्म-संबंधी बातों में ऐसा नहीं होता। क्या यह संभव है कि हिंदुओं से कहा जाय कि ५ दिन मंदिर में पूजन करो और २ दिन नमाज़ पढ़ा करो, और वे मान लें ?

एलिज़बेथ तथा प्यूरिटन संप्रदाय—आंग्ल-चर्च जिनोआ के चर्च के सदृश पक्का प्रोटेस्टेंट मत नहीं था। उसमें कई बातें कैथलिक मत की रक्खी गई थीं। यही कारण है कि जिनोआ से लौटकर आए हुए आंग्ल अपने देश के चर्च से संतुष्ट न थे। उन्होंने शुरू-शुरू में धार्मिक सुधार करने के लिये रानी पर बहुत ही अधिक ज़ोर डाला। परंतु उनका यत्न जब निष्फल हो गया, तब वे रानी से बहुत ही असंतुष्ट हो गए। उन्होंने आंग्ल-चर्च की प्रथाओं तथा संस्कारों को तोड़ना शुरू

किया। वे लोग शक्तिशाली थे। अतः रानी ने उनका बहुत विरोध नहीं किया। रानी की शक्ति ज्यों-ज्यों धीरे-धीरे बढ़ती गई, त्यों-त्यों रानी ने उनको नियम के अनुसार चलने के लिये बाधित किया। १६८५ मे प्यूरिटन लोगों पर सख्ती करना शुरू किया गया। 'आर्च-बिशप पार्क' ने एक विज्ञापन निकाला और पादरियों को धर्म तथा चर्च के समय मे विशेष प्रकार का कपड़ा पहनने के लिये बाधित किया। यह विज्ञापन आंग्ल-इतिहास मे 'पार्कर्स एड्वर्टिज्मट्स' (Parker's Advertisements) के नाम से प्रसिद्ध है। प्यूरिटन लोग इस विज्ञापन के सख्त खिलाफ हो गए। १६६६ मे एक-मात्र लदन मे ही ३० के लगभग पादरियों ने अपने पद छोड़ दिए। इन्होंने शीघ्र ही आंग्ल-चर्च पर आक्षेप करना शुरू किया। इन्होंने आंग्ल-चर्च को भी जिनीवा के चर्च के सदृश प्रेस्बिटेरियन (Presbyterian) चर्च बनाने के लिये जोर दिया। इनका नेता टॉमस कार्टराइट (Thomas Cartwright) था। यह कैंब्रिज मे प्रोफेसर था। इसी के दो मित्रों ने आंग्ल-चर्च के विरुद्ध दो पुस्तकें लिखी, जो बहुत ही उत्तम थी।

डिसेंटर्स (Dissenters) या पृथक् दल—बहुत-से लोगों ने आंग्ल-चर्च मे जाना छोड़ दिया और डिसेंटरों (Dissenters) ने अपनी उपासना अलग करना शुरू किया। इन लोगों

ने अपने को डिसेंटर्स (Dissenters), सेक्टरीज़, सेपरेटिस्ट्स, पृथक् दल आदि नामों से पुकारना शुरू किया। इनके बहुत-से नेताओं में से एक नेता रॉबर्ट ब्राउन (Robert Brown) भी था। इसका सिद्धान्त यह था कि सारे देश के लिये किसी एक चर्च के होने की कुछ भी जरूरत नहीं। लोग अपने-अपने विचारों के अनुसार अपने अलग-अलग चर्च बना लें। यही कारण है कि बहुत-से लोग डिसेंटरों को ब्राउनिस्ट, इंडिपेंडेंट (Independent) तथा स्वतन्त्र दल के नाम से भी पुकारने लगे। पृथक् दल के बहुत से लोग आंग्ल-चर्च में नौकर रहकर उसी पर अपना जीवन-निर्वाह करते रहे, यद्यपि उनका उस चर्च में कुछ भी विश्वास न था। आजकल ये 'नॉन्कॉन्फर्मिस्ट' (Non-conformist) नाम से पुकारे जाते हैं। इनके शत्रु इनको मक्कार तथा छली इत्यादि कहते थे।

हूकर (Hooker) की धार्मिक नीति—एलिजबेथ की धार्मिक सहिष्णुता की नीति का उत्तम फल शताब्दी के अंत में प्रकट हुआ, जब कि हूकर ने अपनी "धार्मिक नीति" (Ecclesiastical Policy १५९३)-नामक पुस्तक को प्रकाशित किया। इसमें इसने उत्तम-उत्तम संस्कारों तथा प्रथाओं का छोड़ना अनुचित ठहराया। इसके अनन्तर बहुत-से आंग्ल-लेखकों ने

देश के लिये एक चर्च का होना अत्यंत आवश्यक प्रकट किया।

जॉन नॉक्स—इँगलैंड में एलिज़बेथ की शक्ति तथा बुद्धि-मत्ता से काल्विन का मत नहीं फैल सका। परंतु स्कॉटलैंड में यह बात न हो सकी। गाइज की मेरी (Mary of Guise) स्कॉटलैंड की रानी थी। यह कैथलिक थी। इसने स्कॉटलैंड के प्रोटेस्टेंटों को देश से बाहर निकाल दिया। इनमें जान नॉक्स (John Knox) भी था। यह बहुत ही उत्तम व्याख्याता तथा बड़ा भारी विद्वान् था। एडवर्ड षष्ठ की मृत्यु होने पर यह जिनोआ गया और काल्विन का चेला बन गया। एलिजबेथ के गद्दी पर बैठते ही इसने इँगलैंड में आने का यत्न किया, परंतु रानी ने इस आधार पर न आने दिया कि उसने 'स्त्री-राज्य' के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी थी। इस पर जॉन नॉक्स बड़े साहस के साथ स्कॉटलैंड में जा पहुँचा। रानी मेरी ऑफ् गाइज ने उसको स्कॉटलैंड में आने से रोकना चाहा, परंतु रोक न सकी। स्कॉटलैंड में पहुँचते ही उसके बहुत-से स्कॉच् लॉर्डों ने उसका साथ दिया। नॉक्स ने वहाँ काल्विन के धर्म को फैलाना शुरू किया। मेरी ने अपने को दुर्बल तथा निःशक्त समझकर फ्रांस से सहायता माँगी। फ्रांस ने अपनी सेनाओं को स्कॉटलैंड में

उतार दिया और नॉक्स के पक्ष-पातियों को दबाना शुरू किया। 'मरता क्या न करता' की कहावत के अनुसार नॉक्स तथा उसके साथी लॉर्डों ने एलिज़बेथ से सहायता माँगी। एलिज़बेथ ने बुद्धिमत्ता करके अपनी सेनाओं को स्कॉटलैंड की ओर रवाना कर दिया।

आंग्लों ने लीथ (Leith)-नामक स्थान पर फ्रांसीसियों पर आक्रमण किया। इसी अवसर में स्कॉटलैंड की रानी मेरी की मृत्यु हो गई। युद्ध निरर्थक समझकर एडिनबरा (Edinborough) में संधि हो गई और संधि के अनुसार फ्रांसीसी तथा आंग्ल-सेनाएँ अपने-अपने देशों को लौटकर चली गईं।

विदेशी सेनाओं से छुटकारा पाते ही स्कॉच-पार्लिमेंट ने जिनोआ के चर्च का अनुकरण करते हुए अपने चर्च को प्रेस्बिटेरियन चर्च के नाम से पुकारना शुरू किया। स्कॉच जनता ने पुराने चर्च को तबाह कर दिया, उसकी संपत्ति को लूट लिया। बड़ी मुश्किल से नॉक्स ने स्कॉच जनता को शांत किया। नॉक्स ने प्रोटेस्टेंट लॉर्डों को समझाया-बुझाया और दरिद्रों के लिये भोजन तथा शिक्षा का प्रबंध करना अत्यंत आवश्यक प्रकट किया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्कॉटलैंड में प्रत्येक 'पैरिश' (Parish) के अंदर एक-एक पाठशाला

खोल दी गई। नॉक्स तथा उसके भाई ने प्रैस्बिटेरियन चर्च की धर्म-सभा स्थापित की और उसको साधारण सभा (General Assembly) के नाम से पुकारना शुरू किया। इस सभा ने स्कॉच पार्लिमेंट से भी अधिक उत्तम ढंग से देश का प्रबंध किया।

मेरी ऑफ् गाइज की मृत्यु पर द्वितीय मेरी स्कॉटलैंड के सिंहासन पर बैठी। यह स्त्रीत्व-प्रधान और धर्म में कैथलिक थी। इसका व्यवहार बहुत ही अच्छा था। अपने पति फ्रांस-नरेश की मृत्यु के बाद फ्रांस से लौटकर जब यह स्कॉटलैंड पहुँची, तब वहाँ का धर्म बिलकुल बदल चुका था। नॉक्स के प्रभाव से वहाँ प्रैस्बिटेरियन धर्म का ही सर्वत्र प्राधान्य था। यही कारण है कि स्कॉच-रानी मेरी का सारा जीवन झगड़े में ही गुजरा। उसको वास्तविक सुख न मिल सका।

(३) योरप में धार्मिक परिवर्तन

एलिज़बेथ के समय में योरप के अंदर धार्मिक विरोध शुरू हुआ और भिन्न-भिन्न धर्मावलंबियों ने आपस में लड़कर खून की नदियाँ बहाईं। योरप के अंदर लूथर का प्रभाव अब घट चुका था और काल्विन का मत दिन-पर-दिन ज़ोर पकड़ रहा था। स्कॉटलैंड प्रैस्बिटेरियन मत का हो ही चुका था, इधर इँगलैंड भी उसी ओर जा रहा था।

नीदरलैंड, हालैंड और बेलजियम तथा फ्रांस में भी काल्विन के मत ने अपना सिक्का जमाया। इसके विपरीत कैथलिक मत का पुनरुद्धार योरप में होना शुरू हुआ। कैथलिक लोगों ने अपने स्कूलों के द्वारा कैथलिक मत का प्रचार करना शुरू किया। १५४० में जेजुइट (Jesuit)-संघ का योरप में उदय हुआ, जिसका मुख्य उद्देश योरप में कैथलिक मत की रक्षा करना था। इस संघ का स्थापक 'इग्नेशियस लायोला' (Ignatious Loyalla)-नामक स्पेनी था। यह बहुत ही उच्च आचार का विद्वान् था। इसकी शिक्षा-पद्धति अनूठी थी। इसने ग्रामों तथा अशिक्षितों पर अपना रोब-दाब जमाया और अशिक्षित जनता को कैथलिक मत पर दृढ़ रहने के लिये उत्तेजित किया। इसकी शिक्षा ने बिजली का काम किया। कैथलिक मत सब ओर बड़ी तेजी से फैलने लगा। इससे स्पष्ट है कि किस तरह काल्विन तथा जेजिट संघ के उपदेशों तथा विचारों से सारा योरप दो भागों में विभक्त हो गया। इसका क्या परिणाम हुआ, इसी पर अब प्रकाश डाला जायगा।

योरप के राष्ट्रों का पारस्परिक झगड़ा एलिजबेथ के राजगद्दी पर बैठने के कुछ ही दिनों बाद शुरू होता है। फिलिप द्वितीय (Phillip II) ने इंगलैंड की सहायता से फ्रांस पर

चढ़ाई की और फ्रांस को बुरी तरह से पराजित किया। १५५९ के एप्रिल में फ्रांस ने स्पेन से संधि की प्रार्थना की। लीकेटियो कैम्ब्रिसिस (Le Cateau Cambresis)-नामक स्थान पर दोनों देशों की संधि हुई और स्पेन का इटली पर प्रभुत्व स्थापित हो गया। स्पेनियों ने कैले फ्रांसीसियों के हाथ में दे दिया। इस संधि से योरप के राष्ट्रों का पुराना राजनीतिक झगड़ा मिटा और नया झगड़ा प्रारंभ हुआ।

लीकेटियो की संधि का एक मुख्य उद्देश यह भी था कि दोनों ही देशों के राजा कैथलिक थे। उनके राज्यों में बड़ी तेज़ी के साथ प्रोटेस्टेंट मत फैलता जाता था। उसको शीघ्र ही रोकना आवश्यक था।। स्पेन तथा फ्रांस यदि आपस में लड़ते रहते, तो यह बहुत ही कठिन था। दोनों ही देशों में प्रोटेस्टेंट मत पूरे तौर पर फैल जाता और उनको घरेलू झगड़ों का सामना करना पड़ता।

संधि के बाद ही फिलिप द्वितीय ने नीदरलैंड में कैथलिक मत फैलाने का प्रयत्न शुरू किया और काल्विन-मत को जड़ से उखाड़ना चाहा। फ्रांस ने भी इसी प्रकार की कोशिश की। फ्रांस में काल्विन के पक्षपाती ह्यूगूनाट्स् (Huguenot) के नाम से पुकारे जाते थे। फ्रांसीसी राजा, फ्रांसिस द्वितीय ने इन लोगों

को जड़ से उखाड़ने का यत्न किया। यह सब होने पर भी फ्रांस तथा स्पेन बहुत समय तक आपस में मिलकर काम न कर सके—उनमें पुराने झगड़े फिर खड़े हो गए।

इससे इँगलैंड को बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा, क्योंकि मेरी स्टुवर्ट (Mary Stuart) फ्रांस के साथ ही स्कॉटलैंड की भी रानी थी। उसने एलिजबेथ को तंग करने के लिये अपने को इँगलैंड की रानी भी पुकारना शुरू किया, क्योंकि वह हेनरी सप्तम की पुत्री मार्गरेट की पौत्री थी। कैथलिक लोग एलिजबेथ को विवाहिता स्त्री-से नहीं समझते थे, क्योंकि पोप ने, हेनरी अष्टम की जो शादी एन बोलीन के साथ हुई थी, उसकी अनुमति न दी थी। इस पर एलिज़बेथ ने मेरी स्टुवर्ट के विरुद्ध स्कॉटलैंड के प्रोटेस्टेंटों को सहायता देना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्कॉटलैंड पर मेरी स्टुवर्ट का कुछ भी प्रभाव न पड़ा। वह नाम-मात्र की ही वहाँ की रानी रही। वास्तव में स्कॉटलैंड के अंदर प्रोटेस्टेंट लोगों का प्रजातन्त्र राज्य ही था।

ली हैव्र (Le Havre) का हाथ से खो देना (१५६३)— कुछ ही महीनों के बाद फ्रांसिस द्वितीय की मृत्यु हो गई। चार्ल्स नवम फ्रांस के सिंहासन पर बैठा। इसकी स्त्री इटैलियन और बहुत ही अधिक चालाक थी। कुछ ही दिनों के बाद फ्रांस

में धार्मिक युद्ध हो गया। बेचारे ह्यूगूनाटों ने तंग आकर एलिज़बेथ से सहायता माँगी। रानी ने उनको सहायता पहुँचाई। इस सहायता के बदले में ह्यूगूनाटों ने रानी को 'ली हैव्र' का बंदरगाह दे दिया। दुर्भाग्य से फ्रांसीसियों का पारस्परिक झगडा शांत हो गया और उन्होंने आपस में मिलकर ली हैव्र से आंग्लों को निकालने का यत्न किया। चार्ल्स नवम शक्तिशाली न था। अतः वह इंगलैंड को कुछ भी नुकसान न पहुँचा सका। स्पेन ने भी फ्रांस के विरुद्ध इंगलैंड से संधि कर ली। इससे इंगलैंड सब तरह सुरक्षित हो गया, क्योंकि यदि कहीं फ्रांस तथा स्पेन आपस में मिल जाते और इंगलैंड पर आक्रमण करते, तो इंगलैंड को बहुत ही अधिक नुकसान पहुँच सकता था।

(४) रानी मेरी तथा रानी एलिज़बेथ

१५६१ में मेरी स्टुवर्ट फ्रांस से स्कॉटलैंड चली आई। पति की मृत्यु होने पर फ्रांस में शक्ति प्राप्त करना उसके लिये असंभव था। वह कट्टर कैथलिक थी। यही कारण था कि स्कॉच्-जनता ने उसका उचित सत्कार नहीं किया। उसने धीरे-धीरे चतुरता से बहुत-से स्कॉच् नोबुल तथा लॉर्डों को अपने पक्ष में कर लिया। उसने अपने भाई जेम्स स्टुवर्ट को खुले तौर पर स्कॉटलैंड का शासन करने दिया। उसने स्कॉटलैंड

का काल्विन-धर्म मान लिया। उसने जनता को स्वयं धार्मिक उपदेश देने की स्कॉच्-लोकसभा से आज्ञा ले ली। इस पर जॉन नॉक्स चिढ गया। उसने स्पष्ट शब्दो मे कहा कि रानी के उपदेश से स्कॉटलैंड को बहुत ही अधिक नुकसान पहुँचेगा।

मेरी ने चार वर्षो तक लगातार यत्न किया, परन्तु स्कॉटलैंड को वह अपने काबू मे न कर सकी। स्कॉटलैंड मे शक्ति प्राप्त करना असभव समझकर उसने अपनी दृष्टि इँगलैंड की ओर डाली। आंग्ल-रोमन कैथलिक एलिजबेथ से सख्त नाराज थे। वे लोग मेरी स्टुवर्ट को अपनी रानी बनाना चाहते थे। मेरी एलिज़बेथ की मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगी। १५६५ मे उसने लॉर्ड डार्नले (Lord Darnley) से शादी करने की इच्छा प्रकट की। एलिज़बेथ के अनतर यह राज्य का उत्तराधिकारी हो सकता था, क्योकि वह भी स्टुवर्ट (Stuart)-वंश का था। एलिजबेथ को यह विवाह पसद न था। अत. उसने मूर तथा स्कॉच्-लॉर्डो को विद्रोह करने के लिये उत्तेजित किया। मेरी ने डार्नले के साथ विवाह कर ही लिया और मूर को पराजित करके स्कॉटलैंड से बाहर निकाल दिया। इससे एलिज़बेथ के दिल को बहुत ही अधिक धक्का पहुँचा। वह मेरी को नीचा दिखाने के अवसर ढूँढ़ने लगा।

रिज़ियो की हत्या (१५६६)—विवाह के अनन्तर मेरी को डार्नले के दुर्गुण दिखाई दिए। वह कठोर-हृदय, धूर्त और बेवकूफ था। मेरी को वह किसी प्रकार की भी सहायता नहीं पहुँचा सकता था। मेरी ने धीरे-धीरे डेविड् रिज़ियो (David Rizzio)-नामक इटैलियन विद्वान् से सलाह-मशविरा करना शुरू किया। डार्नले को यह पसंद न था। उसको किसी कारण से यह संदेह हो गया कि रिजियो के साथ मेरी का अनुचित संबंध है। उसने कुछ प्रोटेस्टेंट लॉर्डों के साथ मिलकर एक रात को मेरी के साथ भोजन करते समय रिजियो को मरवा डाला। इस वध से मेरी के हृदय पर बड़ा आघात पहुँचा। वह उस समय गर्भवती भी थी। उसने हत्यारों को देश-निकाला दे दिया। इस घटना के तीन ही महीने बाद मेरी के जेम्स (James)-नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ, जो पीछे से स्कॉटलैंड का जेम्स षष्ठ और इँगलैंड के सिंहासन पर बैठने पर जेम्स प्रथम कहलाया।

डार्नले का वध (१५६७)—कुछ ही दिनों के बाद मेरी तथा डार्नले का फिर झगड़ा हो गया। पति के निर्दय तथा प्रेम-रहित कठोर व्यवहार से दुःखित होकर उसने किसी दूसरे पुरुष से शादी करने का इरादा किया। दैवी चक्र से बॉथवेल के अर्ल (Earl of Bothwell) जेम्स (James) से उसकी

मैत्री हो गई। मेरी बॉथवेल के कहने के अनुसार चलने लगी। वह जैसे उसको नचाता, वैसे ही वह नाचती। बॉथवेल ने डार्नले को मारने का इरादा किया और एक षड्यन्त्र रचा। एडिनबरा के दक्षिण में 'कर्क ओ'फील्ड' (Kirk O'field)-नामक स्थान पर बॉथवेल रहता था। बॉथवेल के षड्यन्त्रकारियों ने उसके मकान को बारूद से उड़ा दिया। इस दुर्घटना में भी जब वह बच गया, तो कहते हैं कि षड्यन्त्रकारियों ने उसे तलवार से मार डाला। उसकी लाश लोगों को मकान के बाहर पड़ी हुई मिली।

डार्नले के पिता, लैन्नॉक्स (Lennox) ने बॉथवेल पर मुकदमा चलाया। मेरी ने उस मुकदमे का फैसला करने का दिन नियत किया। मेरी से सब लोग डरते थे, अतः किसी की भी बॉथवेल के विरुद्ध गवाही देने की हिम्मत न पड़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि बॉथवेल बेदाग छूट गया। किंतु मेरी बॉथवेल के साथ विवाह करने में हिचकने लगी, क्योंकि सारे स्कॉटलैंड में यह प्रसिद्ध था कि बॉथवेल ने ही मेरी की सलाह से डार्नले को मारा है। ऐसे घातक और पापी आदमी के साथ विवाह करना मेरी के लिये खुद डर की बात थी, क्योंकि इससे स्कॉच-जनता द्वारा विद्रोह करके मेरी को स्कॉटलैंड के बाहर निकाल देने की संभावना थी। कुछ भी हो, "कामान्धा हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु" के अनुसार

मेरी ने बॉथवेल को बलपूर्वक शादी करने की सलाह दी। इस सलाह के अनुसार जब मेरी स्टर्लिंग (Sterling) से एडिनबरा जा रही थी, बॉथवेल ने उस पर आक्रमण कर दिया और उसके साथ बलपूर्वक शादी कर ली। यह भेद सारी स्कॉच-जनता पर खुल गया। सारा स्कॉटलैंड मेरी तथा बॉथवेल के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। इस पर मेरी ने अपने धर्म को छोड दिया और प्रोटेस्टेंट लोगों को प्रसन्न करने के लिये उनके चर्च मे उपदेश सुनने गई। परंतु इसका कुछ भी फल न निकला। उसके सैनिकों ने उसका साथ छोड़ दिया। 'कार्बेरी हिल' (Carvery Hill) की लडाई मे हारने पर विद्रोही लार्डों ने उसको कैद कर लिया। बॉथवेल स्कॉटलैंड से भाग गया और कुछ ही समय के बाद उसकी मृत्यु हो गई। मेरी राज्यच्युत की गई और उसका पुत्र जेम्स षष्ठ के नाम से राजगद्दी पर बिठाया गया। मूर तथा प्रोटेस्टेंट लॉर्ड विदेश से लौट आए और उन्होंने जेम्स के नाम पर स्कॉटलैंड का शासन शुरू किया।

मेरी का इँगलैंड पलायन (१५६८)—एक वर्ष तक रानी मेरी किनरास-शायर (Kinross-shire) के 'लाक लिवेन' (Lock Leven)-दुर्ग मे कैद रही। १५६८ मे स्कॉच-लार्डों का आपस मे झगड़ा हो गया। इस झगड़े से लाभ उठाने के

विचार से मेरी लाक लिवेन-दुर्ग से भाग खड़ी हुई। १३ मई को वह लैंड-साइड-नामक स्थान पर मूर द्वारा पराजित हुई। अब सब ओर से निराश होकर उसने एलिज़बेथ की शरण ली। रानी एलिजबेथ ने उसको कैद कर लिया। इससे उसकी तकलीफ़ बेहद हो गई। एलिजबेथ के बजाय मेरी को आंग्ल-सिंहासन पर बिठाने के इरादे से कैथलिक लोगों ने षड्यंत्र रचने शुरू किए।

मेरी ने एलिजबेथ से प्रार्थना की कि मुझे कैद से छोड़ दो, पर उसको यह मंज़ूर न था। कारण, इससे उसके शत्रु प्रबल हो जाते। यदि मेरी फ्रांस को भाग जाती, तो फ्रांसीसी राजा मेरी को साधन बनाकर आंग्ल-रानी को तकलीफ़ें पहुँचाते। स्कॉच-जनता भी रानी से असंतुष्ट हो जाती, क्योंकि उसको मेरी का छूटना पसंद न था। इसके सिवा एलिज़बेथ मेरी के अद्वितीय रूप-लावण्य से बहुत ईर्षा करती थी।

ऊपर लिखे इन सब झमेलों से एलिजबेथ बहुत ही अधिक परेशान हो गई। उसको यह न सूझता था कि इसका क्या उपाय किया जाय। इधर मेरी को इँगलैंड में रखने से कैथलिक लोग षडयन्त्र रचते और उसकी जान लेने की फिक्र में थे, उधर उसे कैद से छोड़ देने पर स्कॉच-जनता नाराज़ होती थी और फ्रांस इँगलैंड को तंग कर सकता था। लाचार

होकर उसने इँगलैंड में यह घोषणा कर दी कि मेरी के विषय में कुछ भी सोचने से पहले उसके दोषों की जाँच करना आवश्यक है। उसने नार्फोक के ड्यूक के सभापतित्व में एक कमीशन नियुक्त किया और मेरी पर आरोपित अपराधों की जाँच-पड़ताल शुरू कर दी। मूर तथा स्कॉच लॉर्डों ने मेरी पर अभियोग चलाया और उसके सारे अपराधों को कमीशन के सामने रक्खा। मूर ने मेरी के हाथ के लिखे कुछ पत्र कमीशन को दिए। आंग्ल-जनता का खयाल है कि ये पत्र जाली थे। कमीशन कुछ भी अंतिम निर्णय न कर सका। एलिज़बेथ ने मेरी को कैद में रक्खा और मूर तथा स्कॉच-लॉर्डों को सब प्रकार का दिलासा दिया।

उत्तर में विद्रोह (१५६९)—इँगलैंड के उत्तरीय प्रदेशों में कैथलिक मत ही प्रबल था। जो लोग प्रोटेस्टेंट थे, वे भी प्यूरिटनों के समान स्वतंत्र विचार के नहीं थे। एलिज़बेथ ने मेरी का अंतिम निर्णय न किया, इसका परिणाम उसके लिये बहुत ही भयंकर हुआ। नार्थंबरलैंड के अर्ल टॉमस पर्सी (Thomas Percy, Earl of Northumberland) और वेस्ट मोर्लैंड के अर्ल चार्ल्स नेविल (Charles Neville, Earl of West Morland) के नेतृत्व में उत्तरीय प्रदेश के कैथलिक लोगों ने विद्रोह कर

दिया । इस विद्रोह की उपमा १५३६ के 'पिलग्रिमेज ऑफ् ग्रेस' (Pilgrimage of Grace)-नामक विद्रोह से ही दी जा सकती है। इस विद्रोह से यह पता लगता है कि उत्तरीय प्रदेशों की वास्तविक दशा क्या थी ? उक्त विद्रोह का मुख्य उद्देश एलिज़बेथ के स्थान पर मेरी को आंग्ल-रानी बनाना था। विद्रोही लोग सैसिल (Cecil) को भी मंत्री के पद से हटाना चाहते थे। एलिज़बेथ ने शीघ्र ही विद्रोह को शांत कर विद्रोहियों को भयंकर दंड दिया। इससे एलिज़बेथ की स्थिति और भी अधिक दृढ़ हो गई।

एलिज़बेथ का निकाला जाना (१५७०)—एलिज़बेथ के शत्रुओं ने कई अन्य ढंगों से उसे कष्ट पहुँचाने का यत्न किया। १५७० में किसी ने स्कॉच् मूर की हत्या कर डाली। इससे स्कॉटलैंड में भ्रातृ-युद्ध (Civil War) हो गया, जो तीन वर्ष तक जारी रहा। १५७३ में मार्टन के अर्ल ने देश में शांति स्थापित की और मूर के समान ही जेम्स षष्ठ के नाम से वह देश का शासन करने लगा। इन्हीं दिनों में पोप ने मेरी का पक्ष लिया। यह पोप 'पायस पंचम'(Pius V) के नाम से प्रसिद्ध है। यह प्रोटेस्टेंट-मत का बड़ा विरोधी था। १५७० के फ़रवरी महीने में पोप ने एलिज़बेथ को ईसाई चर्च से निकाल दिया (Excommunicated)

और सिंहासन से शीघ्र ही उतार देने की आज्ञा निकाल दी।* मई के महीने मे फैल्टन-नामक व्यक्ति ने पोप का आज्ञा-पत्र लंदन के विशप के घर पर लगा दिया। रानी ने उसको पकड़कर मरवा डाला। लोकसभा को जब इस घटना की खबर मिली, तो उसने पोप की आज्ञा को इँगलैंड मे पहुँचाना देश-द्रोह ठहराया और रोमन कैथलिक लोगो को देश का शत्रु प्रकट किया।

एलिजबेथ की नीति थी कि वह किसी को उसके धर्म के कारण कष्ट न पहुँचावे। परंतु इस नीति मे वह सफलता नहीं पा सकी। पोप ने उसको लोगो के धर्म-विश्वास मे हस्तक्षेप करने के लिये विवश किया। रानी ने भी सावधानी से काम करना शुरू किया। उसने रोमन कैथलिक लोगो पर तीव्र दृष्टि रक्खी। कारण, रोमन कैथ-

---

* पोप का जब पूरा अधिकार था, तो वह जिसको ईसाई चर्च से बहिष्कृत करने की घोषणा करता था, उसे उसके अनुयायी महापापी समझकर त्याग देते थे। उससे किसी प्रकार का व्यवहार नही रक्खा जाता था। न कोई उसे नौकर रखता, न उसकी दूकान से सौदा खरीदता, न कोई उसके हाथ कुछ बेचता। स्त्री, बच्चे, संबंधी आदि, सभी उसे त्याग देते थे। और, यदि वह राजा हुआ, तो पोप दूसरे किसी राजा के द्वारा उसे पदच्युत करा देता था। पर प्रोटेस्टेंट मत के फैलने के बाद से पोप का वह जमाना नहीं रह गया था।

लिक लोगों की प्रबलता का दूसरा अर्थ आंग्लों की जातीयता का विनाश था। कैथलिक लोग विदेशी पोप के अनन्य भक्त थे और उसकी आज्ञा पाकर अपने राजा से भी विरोध करने को तैयार रहते थे। यही सोचकर लोक-सभा ने भी पूरे तौर से रानी का साथ दिया।

रिडोल्फी-षड्यन्त्र (Redolfi Plot)(१५७१)—रिडोल्फी फ्लोरेंस (Florence) का रहनेवाला था। वह बहुत ही अमीर था। रिडोल्फी बहुत दिनों से इँगलैंड में रहता था और फिलिप तथा पोप के साथ उसकी मित्रता थी। उसने नार्फोक के ड्यूक को एलिजबेथ के विरुद्ध उभाड़ा और उसे इस बात के लिये सहमत किया कि इँगलैंड के सिंहासन पर किसी-न-किसी उपाय से मेरी को बिठलाया जाय, जिससे कैथलिक लोगों का राज्य इँगलैंड में हो जाय। नार्फोक पहले से ही रानी से रुष्ट था, क्योंकि उसे राज-दरबार में यथोचित सम्मान नहीं मिलता था। रिडोल्फी ने उसको यह भी प्रलोभन दिखाया कि मेरी के साथ उसका विवाह कर दिया जायगा। महामंत्री लार्ड बर्ले (Lord Burghley) को किसी तरह इस सारी गुप्त मन्त्रणा का पता लग गया—सब भेद मालूम हो गया। उसने दोनों को मरवा डाला। इस तरह रानी एलिजबेथ एक बड़े

भारी संकट से बच गई। पर स्पेन से भिड़ना उसने उचित नहीं समझा।

(५) योरप में धार्मिक युद्ध

पेरिस में सेंट बार्थोलोम्यू (Bortholomew) की हत्या—घरेलू झगड़ों के कारण फ्रांस बहुत ही अधिक शक्तिहीन हो गया था। योरप के शक्तिशाली राज्यों में वह दूसरे दर्जे पर जा पहुँचा। चार्ल्स चतुर्थ की उत्तेजना से सन् १५७२ में, २३ अगस्त को, सेंट बार्थोलोम्यू के मेले पर ह्यूगनाट लोगों की भयंकर हत्या की गई। हत्या-कांड की कथा इस प्रकार है—

सेंट बार्थोलोम्यू के मेले में, पेरिस-नगर में ह्यूगनाटों और कैथलिक लोगों की बड़ी भीड़ होती थी। सारे फ्रांस के लोग अपने बाल-बच्चों-समेत उस मेले को देखने के लिये जाते थे। इस मेले को ह्यूगनाटों के विनाश का अच्छा अवसर समझकर चार्ल्स, उसकी स्त्री और दरबारियों ने यह गुप्त मंत्रणा की कि उस दिन सहसा ह्यूगनाटों पर आक्रमण कर दिया जाय। म्यूनिसिपैलिटी के अधिकारियों को यह सूचना दे दी गई कि मेले के दिन एक भी ह्यूगनाट शहर से बाहर न जाने पावे। ड्यूक ऑफ़ गाइज़ ने इस पाप-कर्म में बहुत बड़ा भाग लिया। उस दिन संपूर्ण ह्यूगनाटों की

हत्या की गई। इस हत्या-कांड का हाल जब योरप में पहुँचा, तो सारा-का-सारा योरप कॉप उठा। इस घटना से बेचारी एलिज़बेथ डर गई। उसने रानी मेरी का अंतिम निर्णय कर डालने का निश्चय कर लिया और स्कॉटलैंड के संरक्षक मार्टन को लिखा कि 'मैं मेरी को तेरे हवाले करती हूँ। तू उसके साथ जैसा व्यवहार करना उचित समझे, वैसा कर। मैं तेरा साथ दूँगा।' अभी यह पत्र-व्यवहार हो ही रहा था कि मार्टन मर गया और मेरी एक नए संकट से बच गई।

नीदरलैंड का विद्रोह—यदि योरप के राजा लोग आंग्ल-कैथलिकों को सहायता पहुँचाते, तो एलिज़बेथ को बहुत ही अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। वह उत्तरीय विद्रोह तथा आंग्ल-कैथलिक लोगों के षड्-यंत्रों को उस आसानी से न दबा सकती, जिस आसानी से उसने उनको दबा दिया।

स्पेन का बादशाह फिलिप आंग्ल-कैथलिकों को जी-जान से सहायता पहुँचाना चाहता था और आंग्ल-सिंहासन पर मेरी का बैठना पसंद करता था। परंतु कुछ भी उसके वश में नहीं था। उसे फ्रांस की बढ़ती हुई शक्ति का भय था। फ्रांस से अपने को बचाने के लिये उसने इँगलैंड के साथ मित्रता का ही व्यवहार किया। १५७२

में नीदरलैंड के भीतर भयंकर विद्रोह हो गया। फिलिप के लिये विद्रोह का दमन करना अत्यंत आवश्यक था। पाँच वर्षों तक फिलिप के सेनापति, राक्षसी प्रकृतिवाले आल्वा (Alva) ने स्पेनी नीदरलैंड के सात प्रांतों पर अत्याचार-पूर्ण शासन किया। उसने वहाँ पर कैथलिक-मत फैलाने का प्रयत्न किया, परंतु इसमें वह सफलता नहीं पा सका। कारण, किसी जाति के धर्म को बलपूर्वक बदलना सहज नहीं है।

आल्वा के अत्याचार और क्रूर व्यवहार से तंग आकर हालैंड और जीलैंड ने विद्रोह कर दिया और वीरता के साथ स्पेन-निवासियों के आक्रमणों का सामना शुरू किया। १५७६ में अन्य प्रांतों ने भी हालैंड का साथ दिया और अपने को हालैंड के साथ 'पैसिफिकेशन ऑफ् घेंट' (Pacification of Ghent) के अनुसार, पूर्ण रूप से संगठित किया।

यह संगठन चिर-काल तक स्थिर न रह सका, क्योंकि फिलिप के कामज भाई, आस्ट्रिया के डान जॉन ने नीदरलैंड के दस दक्षिणी प्रांतों को इस शर्त पर अलग कर दिया कि उनकी राजनीतिक स्वतन्त्रता में फिलिप कभी किसी तरह का हस्त-क्षेप न करेगा। इस पर हालैंड के नेतृत्व में नीदरलैंड के सात

प्रान्त आपस में मिल गए। उन्होंने ऑरंज के विलियम (William of Orange) को अपना शासक नियत किया। डच-प्रजातन्त्र (Republic) की उत्पत्ति इसी समय से है। एलिजबेथ ने हालैंड के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की। इस पर फिलिप उससे अत्यन्त रुष्ट हो गया, पर रुष्ट होने पर भी वह रानी का बाल बाँका नही कर सका। कारण, उसकी सारी शक्ति हालैंड को कुचलने में लगी हुई थी।

(६) इंगलैंड में कैथलिक मत की नई लहर

सैमिनरी पादरी—एलिजबेथ ने अपनी बुद्धिमानी, चतुरता और धर्म-संबधी सहनशीलता की नीति से आंग्ल प्रजा को अपने वश में कर लिया। इंगलैंड में कैथलिक मत की बहुत ही अधिक दुर्गति हो चुकी थी। कैथलिक मत के नेता लोग इँगलैंड में उसके पुनरुद्धार के उपाय सोचने लगे। लंकेशायर के एक पादरी विलियम ऐलन ने स्पेनी नीदरलैंड में एक कॉलेज या सैमिनरी खोला, जिसका मुख्य उद्देश कैथलिक मत के प्रचारक तैयार करना था, जो इँगलैंड के कैथलिक मत का पुनरुद्धार कर सके। पहले यह कॉलेज डोई में था। कई कारणों से यह डोई से हटाकर रीम (Rheims) में स्थापित किया गया। इस कॉलेज ने बहुत उन्नति की और इँगलैंड में अपने सैमिनरी पादरियों को भेजना शुरू किया।

इससे पहले आंग्ल-कैथलिक राजनीति में कुछ भी भाग नहीं लेते थे। सैमिनरी पादरियों ने इस उदासीनता को दूर कर दिया और वे राजनीति में भाग लेने लगे। बेचारी एलिजबेथ ने घबराकर इन्हें दबाने के लिये कठोर-से-कठोर नियम बनाए। १५७७ में इनके नेता कुथबर्ट मेन (Cuthbert Mayne) की हत्या करा डाली गई। लोगों ने इसको शहीद के तौर पर पूजना शुरू किया।

जेजुइटों (Jesuits) का इँगलैंड पर आक्रमण (१५८०)—जेजुइट लोग भी १५८० में इँगलेंड के भीतर जा पहुँचे। इससे आंग्ल-प्रोटेस्टेंट लोग डर गए। इनके नेता राबर्ट पार्सज और एडमंड कैंपियन थे। ये दोनों बहुत चालाक और धार्मिक जोशवाले थे। इनके विरुद्ध नए-नए नियम बनाए गए; इनके चाल-चलन और व्यवहार की पूरी जाँच की गई। इस पर पार्सज तो योरप में भाग गया, और कैंपियन कैद कर लिया गया। एलिजबेथ ने उसको भी मरवा डाला। लोगों ने उसका नाम भी शहीदों में लिख लिया। रानी के राज्य में कैथलिक प्रचारकों को यही दंड मिलता रहा और वे शहीद बनते चले गए।

प्रतिज्ञा-पत्र (१५८४)—कैथलिकों को मरवा डालने का एक मुख्य कारण यह भी था कि वे लोग रानी को मारकर मेरी को उसका पद देने के लिये दिन-रात षड्यंत्र रचा

करते थे। फ़िलिप इन षडयंत्रकारियों को सहायता पहुँचाता था। यही कारण था कि रानी ने तंग आकर स्पेन के राजदूत को स्वदेश भेज दिया। बर्ले (Burghley) और वाशिंघेम ने एक प्रतिज्ञा-पत्र (The bond of Association) तैयार किया और उस पर सब आंग्लों के हस्ताक्षर करवाए। पत्र के अनुसार आंग्लों ने तन-मन-धन से राज्य की रक्षा का प्रबंध करना प्रारंभ किया। १५८५ की लोक-सभा ने भी इस प्रतिज्ञा-पत्र को स्वीकार कर लिया और कैथलिक लोगों के विरुद्ध नए-नए राज्य-नियमों का विधान किया।

रावर्ट डेव्रियो (एसेक्स का अर्ल) — विलियम सीसिल (लार्ड बर्ले) — रावर्ट डड्ले (लीस्टर का अर्ल)

बैबिंग्टन-षड्यंत्र (Babington Conspiracy) (१५८६)—१५८६ मे एक नया षडयंत्र रचा गया। इसका भी मुख्य उद्देश रानी की हत्या करना था। इस षडयंत्र का नेता सैमिनरी पादरी जान बैलर्ड (Ballaid) था। इसने ऐंथनी बैबिंग्टन को अपना साधन बनाया। बैबिंग्टन ने बेवकूफी से किसी से इस गुप्त मंत्रणा का हाल कह दिया। वाशिंघेम ने उसको क़ैद कर लिया। दैव-संयोग से उसके पास मेरी की चिट्ठी मिल गई, जिसमे उसने एलिज़बेथ के मार डालने की आज्ञा दी थी।

इसी चिट्ठी के सहारे मेरी पर मुकद्दमा चलाया गया। फोथरिंगहेम-दुर्ग मे न्यायालय लगा। न्यायालय मे बहुतो ने तो इस आधार पर गवाही ही न दी कि एलिज़बेथ को मेरी के अपराध-निर्णय का अधिकार ही क्या है। मेरी स्वयं एक रानी है, वह एलिज़बेथ की प्रजा नही है। इस पर भी न्यायालय ने १५८६ के ऑक्टोबर मे मेरी को प्राण-दंड दे दिया। एलिज़बेथ ने १५८७ के फरवरी तक न्यायालय के निर्णय पर हस्ताक्षर नही किए और मेरी की हत्या को अनुचित ठहराया। डेवियन ने मेरी को १५८७ मे, ८वीं फरवरी को मरवा डाला। एलिज़बेथ ने मेरी की मृत्यु के कलंक से अपने को बचाया और बेचारे डेवियन का सत्यानाश कर दिया।

लेकिन कुछ भी हो, मेरी की मृत्यु से रानी को ही विशेष लाभ हुआ। वह अब निष्कंटक राज्य करने लगी।

एलिज़बेथ और पार्लिमेंट—१५६६ से १५७१ तक रानी ने लोक-सभा का एक भी अधिवेशन नहीं किया। कारण, इधर उसे रुपयों की कोई जरूरत ही नहीं थी। लोक-सभा के अधिवेशन में सभ्य लोग कैथलिकों के विरुद्ध राज्य-नियम बनाते थे। रानी को यह नापसंद था। वह धार्मिक सहिष्णुता को ही पसंद करती थी। रानी ने १५७१ में लोक-सभा का अधिवेशन किया। इसमें अधिक संख्या प्यूरिटन लोगों की थी। उन्होंने कैथलिकों को सताने के लिये नए नियम बनाने चाहे, पर सफलता नहीं प्राप्त कर सके। कारण, रानी ऐसे नियमों के विरुद्ध थी। प्यूरिटन लोग सादा जीवन व्यतीत करते थे। स्वार्थत्याग, जोश और स्वतंत्र विचार में वे अद्वितीय थे। वे धर्म में नए-नए सुधार करना चाहते थे। पुराने संस्कारों और प्रथाओं के वे विरोधी थे। वे इन बातों को व्यर्थ समझते थे।

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५५८	एलिजबेथ का राज्याधिरोहण
१५५९	मुख्यता एवं एकता के नियम (Acts of Supremacy and Uniformity)

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५६१	मेरी स्टुवर्ट का स्कॉटलैंड में पहुँचना
१५६५	पार्कर का विज्ञापन
१५६८	मेरी स्टुवर्ट का एलिज़बेथ को लज्जित करना
१५६९	उत्तरीय आंग्लों का विद्रोह
१५७०	पोप का एलिज़बेथ को बहिष्कृत करना
१५७२	स्पेन से हालैंड का अलग होना
१५७६	ग्रिंडल कैंटरबरी का आर्च-बिशप बनना
१५७७-१५८०	ड्रेक का सारे संसार का चक्कर लगाना
१५७९	भू-ट्रैक्ट का संगठन
१५८४	प्रतिज्ञा-पत्र, स्पेन से इंगलैंड का विरोध
१५८६	बैबिंग्टन का षड्यंत्र
१५८७	मेरी स्टुवर्ट की हत्या

अष्टम परिच्छेद

एलिज़बेथ के अंतिम वर्ष (१५८७—१६०३)

(१) इंगलैंड का योरप के राष्ट्रों से संबंध

इँगलैंड और स्पेन का पारस्परिक संबंध—स्कॉटलैंड की रानी मेरी जब कैद थी, उन दिनों इँगलैंड और स्पेन का पारस्परिक संबंध दिन-दिन बिगड़ता जा रहा था। फिलिप ने आंग्ल-षड्यंत्रकारियों को बहुत उत्तेजित किया और मेरी को छुड़ाने के प्रयत्न में भी कोई बात उठा नहीं रक्खी। इँगलैंड ने भी स्पेन से इसका बदला लिया। उसने फिलिप के विरुद्ध नीदरलैंड के लोगों को पूरी सहायता पहुँचाई। फिलिप इँगलैंड से और भी अधिक चिढ़ गया। उसने आयर-लैंड में अपनी सेनाओं को उतार दिया और आयरिश कैथ-लिकों को विद्रोह करने पर उतारू किया। इतना ही नहीं, उसने स्कॉटलैंड को भी इँगलैंड से लड़ाने का यत्न किया। जेम्स षष्ठ को उसकी माता की कैद का हाल सुनाया और कैथलिक बनने के लिये पत्र लिख भेजा। किंतु स्कॉटलैंड में फिलिप को कुछ भी सहायता नहीं मिली।

भूमि के समान ही समुद्र पर भी आंग्लों और स्पेनियों के

संबंध अच्छे नहीं थे। दोनो ही देशों के व्यापारी एक दूसरे से हर समय लड़ते थे। स्पेनी लोग आंग्लो का शिकार करते और आंग्ल लोग स्पेनियो के सोने-चाँदी से लदे जहाज लूटते थे। यह झगड़ा २० वर्ष तक लगातार चलता रहा, पर स्पेन और इंगलैंड खुल्लमखुल्ला युद्ध के मैदान मे नही उतरे। इसका मुख्य कारण यह था कि फ़िलिप और एलिजबेथ, दोनों भीरु स्वभाव के थे, और लड़ाई मे पडने से घबराते थे। फ़िलिप को और भी तंगियाँ थी, जिससे वह लड़ाई नही छेड सका। स्पेनी नीदरलैंड के बहुत-से भागो ने विद्रोह कर दिया और अपने को प्रजा-तंत्र राज्य के रूप मे संगठित कर लिया। स्पेन इस प्रजा-तंत्र राज्य के विरुद्ध था। वह नीदरलैंड के विद्रोही भागो पर अपना ही प्रभुत्व स्थापित रखना चाहता था। स्पेन के साथ फ्रांस का भी संबंध अच्छा न था। १५५९ के युद्ध को हुए ३० वर्ष के लगभग गुजर चुके थे, तो भी स्पेन और फ्रांस की शत्रुता पहले की-सी ही बनी हुई थी।

स्पेन यदि इंगलैंड से युद्ध करता, तो फ्रांस स्पेन पर अपने पूरे बल से आक्रमण कर देता। इस झमेले मे पड़कर ही स्पेन ने इँगलैंड से मित्रता नही तोड़ी। फिलिप ने सोचा कि आंग्लो और स्पेनियो का झगड़ा होने दो। राज्य का इन झगड़ों

में पड़ना ठीक नहीं। झगड़े तो आपस में होते ही रहेंगे। वे आप ही शांत भी हो जायँगे। मँझधार में पड़ी नाव आखिर कहीं-न-कहीं जाकर तो लगेगी।

नीदरलैंड में अंग्रेजों और फ़्रांसीसियों का हस्तक्षेप—नीदरलैंड के विद्रोह को शांत करने के लिये फ़िलिप बहुत ही छटपटा रहा था। आस्ट्रिया के डान जॉन (Don John) ने फ़िलिप का बहुत बड़ा उपकार किया। उसने दक्षिणी और मध्य-नीदरलैंड को अपने वश में कर लिया। मगर उत्तरीय नीदरलैंड के लोग उसके काबू में न आए। डान जॉन के मरने पर नीदरलैंड का शासक परमा का ड्यूक एलेग्जेंडर फ़र्नेस बना। यह अपने समय का एक सेनापति था। इसके शासक बनते ही एलिज़बेथ और फ्रांस का सम्राट् हेनरी तृतीय, दोनों बहुत ही डरे। हेनरी तृतीय का छोटा भाई फ्रांसिस था। यह आंजो (Anjou) का ड्यूक था और इसी को चार्ल्स नवम के नाम से फ्रांस के सिंहासन पर बैठना था। १५७४ में फ्रांस और इँगलैंड का पत्र-व्यवहार शुरू हुआ। एलिजबेथ और फ्रांसिस के ब्याह का मामला तय होने लगा। फिलिप को जब यह बात मालूम हुई, तो वह बहुत ही डर गया। कारण, इससे आंजो का प्रांत भी उसके हाथ से निकल जाता।

आंजो-विवाह का विचार (१५८१)—रानी के आंग्ल-राज्य पर अधिकार करने के उपरान्त उसके ब्याह के बारे में इधर-उधर किंवदन्तियाँ उड़ती ही रहती थीं। लोग रानी से ब्याह करने के लिये कहते थे, क्योंकि लोगों की यह इच्छा थी कि रानी का कोई बालक ही आंग्ल-सिंहासन पर बैठे। परन्तु रानी के मन में कुछ और ही था। उसने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि मैं जीवन-भर ब्याह नहीं करूँगी, अकेली ही मनमाने तौर पर शासन करती रहूँगी। जब कोई रानी से विवाह के लिये कहता, तो वह भी कह देती कि मैं इसके बारे में कई जगह बातचीत कर रही हूँ। जब कहीं बातचीत पक्की हो जायगी, तब तुमको बता दूँगी। तुम तैयारियाँ शुरू कर देना।

आंजो के साथ ब्याह के मामले की बात शुरू होने के समय रानी की अवस्था ५० वर्ष की थी। आंजो कुरूप और रानी से २० वर्ष छोटा था। जब वह ब्याह करने के लिये इंगलैंड पहुँचा, तो रानी ने बहुत अच्छी तरह उसका स्वागत किया। रानी ने उसे समझाया कि नीदरलैंड की विपत्ति दूर हो जाय, तब विवाह का विचार किया जायगा। वह भी रानी के कहने पर आंग्लों की ओर से नीदरलैंड में स्पेन के साथ लड़ने को चला गया। रानी ने उसको सेना और रुपयों के द्वारा बहुत ही अधिक सहायता पहुँचाई।

आजों सर्वथा अयोग्य पुरुष था। वह फिलिप का बाल भी बाँका न कर सका। इसका परिणाम यह हुआ कि एलिजबेथ इस विवाह के संकट से न बच सकी। कुछ ही समय के बाद स्पेनियों ने आजों को नीदरलैंड से भगा दिया। वह भागकर फ्रांस पहुँचा और थोड़े ही दिनों बाद मर गया।

नीदरलैंड्स और लीस्टर (१५८६)—आजों-विवाह का मुख्य उद्देश यही था कि किसी-न-किसी उपाय से रानी नीदरलैंड को स्पेन के आक्रमणों से बचावे। आजों की मृत्यु के बाद परमा (The Duke of Parma) की शक्ति दिन-पर-दिन बढ़ती ही गई। उसने बहुत-से प्रांतों को जीत लिया। १५८४ में किसी कैथलिक ने विलियम ऑफ़ ऑरेंज को कत्ल कर डाला। इससे हालैंडवाले बहुत ही अधिक घबरा गए। वे अपनी स्वतंत्रता से निराश हो गए। इन्हीं दिनों में रानी ने स्पेनी दूत को इँगलैंड से निकाल दिया। १५८५ में परमा ने एंटवर्प (Antwerp) को जीत लिया। इस दुर्ग के पतन से दक्षिणी नीदरलैंड अशक्त हो गया।

सब ओर से निराश होकर नीदरलैंड के लोगों ने रानी एलिजबेथ से कहा कि हम तुमको अपनी रानी बनाने के लिये तैयार हैं। तुम किसी तरह हमारी रक्षा करो—हमारी स्वतंत्रता को बचाओ। एलिजबेथ बहुत ही चतुर और समझदार थी। उसने इस प्रलोभन से अपने को बचाया और लीस्टर के अर्ल को एक सेना के साथ

नीदरलैंड को रवाना किया। जुट-फेन (Zut phen) पर एक भयंकर युद्ध हुआ। उसमें प्रसिद्ध आंग्ल-लेखक और सेनापति सर फिलिप सिड्नी (Sır Phılıp Sydney) मारा गया। १५८६ के अंत में हालैंडवालों और लीस्टर में झगड़ा हो गया। वह इंगलैंड को लौट आया। इस घटना के कुछ ही दिनों बाद बैबिंग्टन के षड्यंत्र का भेद खुला और मेरी की हत्या की गई।

लगभग १०० वर्ष में स्पेनियों और आंग्लों के सामुद्रिक युद्ध हो रहे थे। कोलंबस ने अमेरिका का पता लगाया। इससे स्पेनियों का दक्षिण और मध्य अमेरिका पर प्रभुत्व स्थापित हो गया। स्पेनियों ने सामुद्रिक व्यापार, उपनिवेश और साम्राज्य के सहारे समृद्धि बढ़ानी आरंभ की। १५८० में फिलिप ने पुर्तगाल पर विजय प्राप्त की। पुर्तगालवालों के हाथ में भारत-वर्ष का व्यापार था। इस विजय से स्पेनियों की शक्ति बढ़ गई, पूर्वी व्यापार और ब्रेज़ील (Brazıl) पर भी उन्हीं का प्रभुत्व स्थापित हो गया। आरंभ में स्पेनियों और पुर्तगाल-वालों का कोई भी प्रतिस्पर्द्धी नहीं था। इंगलैंड से तो उन्हें कुछ भी भय न था। कारण, उस समय आंग्ल लोग सभ्यता में बहुत पीछे थे। वे व्यापार करने का ढंग नहीं जानते थे। समुद्र की यात्रा करने और नए-नए देशों की खोज

निकालने का उन्हें कुछ भी शौक नहीं था। मध्य-काल (Middle ages) में आंग्ल लोग घर ही में रहना बहुत पसंद करते थे। उनको लड़ने-झगड़ने और खाने-पीने में ही बड़ा आनंद आता था। मतलब यह कि वे व्यापार करके रुपए कमाना नहीं जानते थे। विदेशी लोग उनके यहाँ व्यापार करके लाभ उठाते थे, पर उनको इसकी कुछ भी परवा नहीं थी। लेकिन ट्यूडर-काल में इँगलैंड की दशा बिलकुल ही बदल गई। आंग्ल लोग भी समुद्र-यात्रा और व्यापार की ओर ध्यान देने लगे—इन कामों में हाथ डालने लगे।

(२) एलिजबेथ के समय में समुद्र-यात्रा

ट्यूडर-काल में आंग्लों ने व्यापार और समुद्र-यात्रा की ओर कदम बढ़ाया। कोलंबस और वास्कोडिगामा की खोजों से हेनरी सप्तम की आँखें खुलीं। उसने जान केबा (John Cabot)-नामक वैनीशियन(Venetian) व्यापारी को अमेरिका की ओर रवाना किया। इसने लैब्रेडार का ज्ञान प्राप्त किया। पर इससे फल कुछ भी न निकला। ब्रिस्टल के व्यापारियों ने कुछ मनुष्यों को अमेरिका की ओर फिर भेजा। इन लोगों ने न्यू-फॉउंडलैंड का पता लगाया। आंग्लों ने मछलियों के व्यापार द्वारा इस जगह से लाभ उठाया। उन्होंने पश्चिमी आफ्रिका जाना भी शुरू किया।

सामुद्रिक उत्थान में इन लोगों का बहुत बड़ा भाग है। एलिज़बेथ के समय तक आंग्लों की सामुद्रिक शक्ति कितनी कम थी, इसका अनुमान इसी से किया जा सकता है कि सन् १५४८ में ५३ छोटे जहाज, १५५८ में २६ बड़े जहाज, १५७५ में २४ बड़े जहाज़ और १५८८ में ३४ बड़े जहाज इस राज्य के पास थे। आंग्ल-राज्य जंगी जहाजों की कमी को व्यापारियों के जहाजों से पूरा करता था। आंग्ल-रानी के राज्य-काल में आंग्लों के पास दो प्रकार के जहाज़ थे। एक तो व्यापारी या सामुद्रिक स्थानों और नए-नए प्रदेशों को ढूँढ़नेवालों के पास, दूसरे स्पेन के जहाजों को लूटनेवाले अँगरेज़ों के पास।

समुद्र में स्पेन को लूटनेवाले आंग्लों से इँगलैंड को बहुत ही अधिक लाभ था। आंग्ल-जहाज़ों के नेता बहुत ही उत्साही, चतुर और समुद्र की लड़ाई में दक्ष थे। ये लोग दो-दो जहाज़ों से दस-दस जहाज़ों का मुकाबला करते थे, बीसियों बार स्पेनियों के सोने-चाँदी से भरे हुए जहाजों को लूट चुके थे, उनसे समुद्री लड़ाइयाँ लड़ चुके थे। नए-नए देशों का पता लगानेवाले आंग्लों को भी अनेक बार यही काम करना पड़ता था। उन्हें स्पेनियों से अपने को बचाने के लिये युद्ध करना पड़ता था। अंत में इन्हीं लोगों ने इँगलैंड को समुद्र का स्वामी बनाया।

रानी के राजगद्दी पर बैठने के पहले ही पोप ने स्पेन और पुर्तगाल को योरप के सिवा अन्य सारे महाद्वीप बाँट दिए थे। आंग्लों को पोप का यह फैसला भला कैसे मंजूर हो सकता था? ब्रेज़ील, एशिया तथा आफ्रिका पुर्तगालवालों को और ब्रेज़ील को छोड़कर शेष सारा अमेरिका स्पेनियों को, पहले से ही, मिल चुका था। आंग्ल लोग इन दोनों देशों के राज्य में अपने जहाजों को ले जाते और वहाँ मनमाने तौर पर व्यापार करते थे। इससे स्पेनवाले चिढ़ गए। उन्होंने अँगरेज़-व्यापारियों पर अत्याचार करना शुरू किया। अँगरेज़ भी उनके जहाजों को लूटने लगे। रानी के राज्यकाल में निम्न-लिखित आंग्लों ने समुद्र-यात्रा और सामुद्रिक डाकों के कारण इँगलैंड में प्रसिद्धि प्राप्त की—

१. हाकिंस (Hawkins)

२. ड्रेक (Drake)

३. ऑक्ज़नहम (Oxenhem)

४. फ्रॉबिशर (Frobisher)

५. कैवेंडिश (Cavendish)

६. डेविस (Davis)

७. रैले (Raleigh)

(१) **हाकिंस**—इसने १५६२ से १५६६ तक लगा-

तार सामुद्रिक यात्राएँ की। इसी ने सबसे पहले दास-व्यापार शुरू किया। यह आफ्रिका से निग्रो-दासो को खरीदकर अमेरिका ले जाता और वही बेचता था। स्पेनियो को यह नापसद था। उन्होने हाकिन्स को स्पेनी-प्रदेशों मे व्यापार करने से रोका। हाकिन्स भला कब यो माननेवाला था। अमेरिका के लोग हाकिन्स के पक्ष मे थे। कारण, उन्हे दासो की आवश्यकता थी। अमेरिका की खानो को खोदना और वहाँ खेती करना सहज काम न था। दासो के द्वारा यह काम आसानी से किया जा सकता था। अमेरिका के प्राचीन असभ्य लोग किसी की भी मातहती मे काम करने के आदी न थे। यदि उनसे काम लेने का कोई यत्न करे, तो वे शीघ्र ही बीमार पड़कर मर जाते थे। इसी कारण अमेरिकन स्पेनियो का हाकिन्स से विशेष प्रेम था। यही कारण है कि वह १५६२ से १५६४ तक दो बार दासो से भरे हुए जहाजो को मेक्सिको (Mexico), हिस्पेनियाला (Hispaniala) आदि स्थानो मे ले गया। उसने दासो को बेचकर बहुत ही लाभ उठाया था। वह बहुत ही अमीर होकर इंगलैड लौटा।

फिलिप हाकिन्स की बढ़ती से चिढ़ गया। उसने उसे स्पेन के प्रदेशो मे व्यापार करने से रोका। पर हाकिन्स ने उस निषेध की कुछ परवा नही की और तीसरी बार फिर दास-

व्यापार के लिये चल पड़ा। मेक्सिको के अंदर, वेराक्रूज़ पर, स्पेनी राज्याधिकारियों ने उसको दास-व्यापार करने से रोका। इसी पर उसका स्पेनियों से झगड़ा हो गया। स्पेनियों के बहुत-से जहाजों ने उसको सहसा आकर घेर लिया। हाकिंस समुद्र के युद्ध में चतुर था। उसने अपने जहाजों की कुछ भी परवा नहीं की, केवल दो-तीन जहाजों को लेकर बड़ी सफाई से निकल भागा और इँगलैंड में पहुँच गया। उसकी वीरता और साहस ने आंग्लों के लिये पथ-प्रदर्शक का काम किया। हरएक आंग्ल अपने सौभाग्य और समृद्धि के लिये इन कामों में पड़ना आवश्यक समझने लगा।

हाकिंस से कुछ पहले इँगलैंड में 'साहसी व्यापारियों की कंपनी' (Company of Merchant Adventurers) नाम की एक कंपनी खुल चुकी थी। उसका प्रधान सिवेस्टियन केबो (Sevastian Cabot) था। इस कंपनी ने स्केंडिनेविया (Scandinavia) और बाल्टिक प्रांतों से बहुत ही अच्छी तरह व्यापार किया और उससे खूब लाभ उठाया। शुरू में वह व्यापार हंसों की स्टील यार्ड कंपनी के हाथ में था।

साहसी व्यापारी कंपनी ने, १५५३ में, सर ह्यू विलोबी (Sir Hugh-Willoughby) और रिचर्ड चांसलर (Richard Chanceller) को नए-नए देशों और नए-नए सामुद्रिक

मार्गों का पता लगाने के लिये भेजा। इन्होंने आर्कटिक समुद्र की ओर से चीन में पहुँचने का मार्ग ढूँढ़ना चाहा, पर उनका यह प्रयत्न सफल नहीं हुआ। चान्सलर ने श्वेत-सागर (White sea) का पता लगाया और रूस के साथ सीधे व्यापार करने की राह भी ढूँढ ली। यही कारण है कि इसके कुछ ही दिनों बाद इँगलैंड में 'रशिया-कंपनी' नाम की एक नई कंपनी खुल गई। रानी मेरी के समय में ये सब व्यापारी-कंपनियाँ खुल चुकी थीं।

धार्मिक परिवर्तन तथा धार्मिक सुधारों का ऊपर लिखे गए साहस से संबंध रखनेवाले कामों से बहुत अधिक घनिष्ठ संबंध था। लगभग सभी आंग्ल-व्यापारी प्रोटेस्टेंट थे। उनको पोप से घोर घृणा थी। मेरी के समय में भी आंग्लों ने कैथलिक मतावलंबी समुद्री-यात्रियों को लूटने में कसर नहीं रक्खी। कुछ ही दिनों के बाद हॉलैंड और फ्रांस के लोगों ने भी इस डाके मारने के काम में आंग्लों का अनुकरण किया। सभी लोग स्पेनी जहाज़ों को लूटते थे। इस लूट-मार को ये लोग पवित्र और धर्म का काम समझते थे। कारण, उनके विचार में पोप की प्रजा को लूटना कुछ भी बुरा न था। स्पेनी लोग भी इनको अपने प्रदेशों में व्यापार करने से रोकते थे। परंतु "मरता क्या न करता", इस न्याय के अनुसार अनेक बार स्पेनी औपनिवेशिक लोग (Colonists) इन डाकू और नियम-विरोधी व्यापारी जहाज़ों

का स्वागत करते ही थे और इनसे सामान खरीदकर अपनी जरूरतों को पूरा करने में कुछ भी कसर न करते थे। हाकिन्स ने दास-व्यापार में किस तरह लाभ उठाया, इसका वर्णन किया ही जा चुका है।

(२) ड्रेक तथा (३) ऑक्सनहम—ड्रेक हाकिंस का सहवर्ती था। वह उसके साथ बहुत दफा समुद्र-यात्रा कर चुका और स्पेनियों के जहाजों को लूट चुका था। १५७२ में १११ आदमियों के साथ ड्रेक स्पेनिश-अमेरिका की ओर रवाना हुआ। वह डेरीयन की जलग्रीवा (Straits of Darien) को पारकर नांब्रिदिदाए-नामक बंदरगाह में जा पहुँचा। रात ही को उसने बहुत-से स्पेनी जहाजों पर आक्रमण किया और उनमें लदी हुई चाँदी तथा सोने को लूट लिया। इस आक्रमण में वह स्वयं भी घायल हो गया। उसने एक जहाज़ तो चाँदी से भरकर इँगलैंड की ओर रवाना कर दिया, और दो जहाजों को अपने साथ रक्खा। लूटमार का काम उसने पहले की ही तरह जारी रक्खा।

पनामा की ओर रवाना होते हुए, उसने एक पहाड़ी से पैसिफिक-महासागर को देखा और उसके द्वारा इँगलैंड पहुँचने का इरादा किया। अभी तक पैसिफिक-महासागर में किसी भी आंग्ल ने यात्रा न की थी। स्पेनी लोग ही पीरू (Peru)

से चाँदी प्राप्त कर पैसिफिक-सागर के द्वारा स्पेन पहुँचते थे। १५७७ मे उसने पैसिफिक-सागर की यात्रा की और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का इरादा किया। तीन वर्षों तक वह समुद्र मे इधर-उधर भटकता रहा और इसी बीच मे सारे ससार का चक्कर लगाकर फिर इंगलैंड जा पहुँचा। ड्रेक की ससार-यात्रा से पूर्व ही, १५७५ मे, ऑक्जनहम ने स्पेन की चाँदी को लूटने का यत्न किया। वह अपनी तोपो तथा जहाजो को लेकर नांब्रिदिदाए मे जा पहुँचा और यहाँ से वह पैसिफिक-सागर मे पहुँचा। वहाँ उसने स्पेनियो के चाँदी से भरे हुए दो जहाजों को लूट लिया, पर बेवकूफी से जहाजो पर के स्पेनियो को छोड़ दिया। इन बचे हुए स्पेनियो ने ऑक्जनहम के पीछे बहुत-से स्पेनी जहाजो का रवाना करवा दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि वह स्पेनियो के हाथ मे पडकर मारा गया। इस घटना के कुछ ही दिनो बाद ड्रेक ने, १५७७ मे, ससार-यात्रा का साहस किया। यात्रा करने के पूर्व ड्रेक की इच्छा, मैगेलान की जल-ग्रीवा (Straits of Magellan) से गुजरकर, पैसिफिक-महासागर मे पहुँचने की थी। मैगेलान मे पहुँचते ही भयकर सामुद्रिक तूफान आ गया। इससे उसके पाँचो जहाज एक दूसरे से अलग हो गए। कौन जहाज कहाँ गया, इसका उसको कुछ भी पता न चला। लाचार होकर उसने पैलिकान (Pelican)-नामक अपने

जहाज़ को 'गोल्डेन हाइंड' (Golden Hind) नाम देकर समुद्र-यात्रा शुरू की। मैगेलान से वह वाल्परे (Valparaiso)
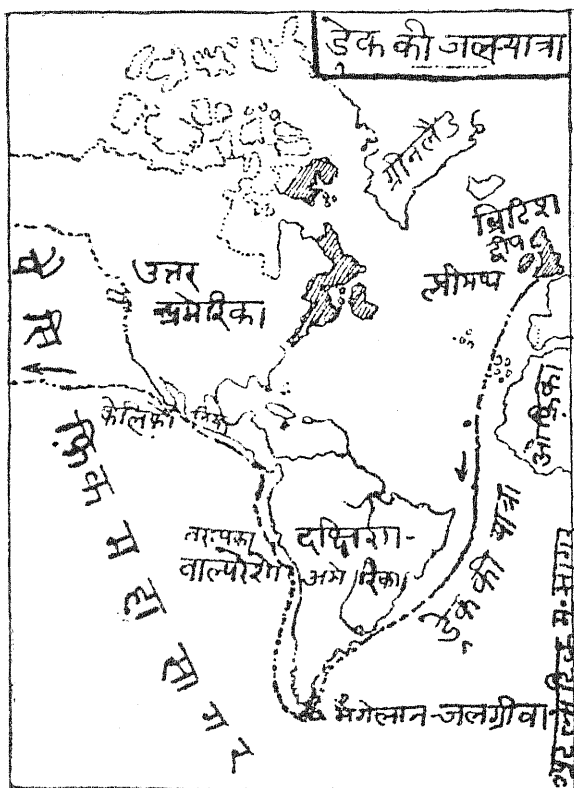
ड्रेक की समुद्र-यात्रा

पर जाकर ठहरा। वहाँ उसने स्पेनियो के चाँदी से भरे हुए जहाजो को लूटा। उसने उनके एक जहाज को अपने साथ लिया और उसके सहारे उनके एक और जहाज को लूटने का यत्न किया, जिसमे खजाना था। इस यत्न मे वह सफल हुआ। वह खजाना लूटकर बडी तेजी से भाग निकला। पीरू से चलकर रास्ते मे स्पेनियो के जहाजो को निर्भय होकर लूटता हुआ वह उत्तरीय अमेरिका के पश्चिमी किनारे पर जा पहुँचा। इस लूट-मार मे उसको बहुत-से सामुद्रिक नक्शे मिल गए। इन नक्शो के सहारे इँगलैंड को आगे चलकर बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा। वह अमेरिका के पश्चिमी-किनारे से लौटकर न्यू ऑरलियन मे पहुँचा और भारतवर्ष की ओर रवाना हुआ। वह भारतवर्ष, मलाका, चीन आदि मे घूमता हुआ, १५८० मे, इँगलैंड के अदर पहुँच गया।

उसकी यात्रा तथा सफलता को सुनकर एलिज़बेथ ने उसे 'नाइट' की उपाधि दी। सारी आंग्ल-जाति ड्रेक को सम्मान की दृष्टि से देखने लगी। उसके बाद उसकी देखादेखी, १५७६ से १५८८ तक, अन्य बहुत-से आंग्लो ने सामुद्रिक यात्राएँ की, जिनके नाम ऊपर दिए जा चुके है।

(४) फ्राबिशर—१५७६ से १५७८ तक फ्राबिशर ने

इँगलैंड के उत्तरीय भागों का पता लगाया। ग्रीनलैंड को खोजने-वाला यही समझा जाता है। यही कारण है कि ग्रीनलैंड के पास की एक खाड़ी का नाम 'फ्राबिशर' है।

(५) **कैवाडिश**—इसने १५८६ से १५८८ तक सामुद्रिक यात्राएँ की। स्पेनी यात्रियों को इसने बहुत ही अधिक लूटा और कई स्थानों पर आग लगा दी। यह स्पेनियों को लूटकर और खूब अमीर होकर इँगलैंड लौट आया।

(६) **जॉन डेविस**—इसने १५८८ मे तीसरी बार समुद्र-यात्रा की। समुद्र के यात्रियों मे ड्रेक से दूसरे नंबर पर इसी की गणना की जाती है। ग्रीनलैंड के पास, इसी के नाम पर, एक 'जॉन डेविस स्ट्रेट' है।

(७) **रैले (Raleigh)**—इसका विचार स्पेनियों के सदृश ही अमेरिका आदि देशों में उपनिवेश बसाना था। इसका वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

(३) इँगलैंड और स्पेन का युद्ध

इँगलैंड और स्पेन का युद्ध (१५८४)—स्पेनी लोग ड्रेक को डाकू से भी बढ़कर बुरा समझते थे। उसने स्पेनी-राज्य के खजानों को लूटा और स्पेनियों की संपत्ति पर डाका मारा था। फिलिप ने ड्रेक को रानी से माँगा।

कारण, वह ड्रेक को उसके अपराधों का दंड देना चाहता था।

इन्ही दिनो जेजुइट लोगो का झुंड इंगलैंड पहुँचा था। आंजो-विवाह का मामला भी इसके कुछ ही दिनो के बाद शुरू हुआ था। रानी ने ड्रेक को 'नाइट' (Knight) बनाया था। वह उसके साहस और उत्साह के कामो को बहुत पसंद करती थी। यही कारण है कि उसने फिलिप का कहा नही माना, ड्रेक को उसके सिपुर्द नही किया।

स्पेनी दूत के इंगलैंड से बाहर निकाले जाने के उपरांत फिलिप ने आंग्लो की संपत्ति को लूटना शुरू किया। उसके साम्राज्य मे जहाँ कही आंग्ल रहते थे, उनके साथ बहुत ही बुरा व्यवहार किया गया।

रानी ने इसका बदला लेने के लिये ड्रेक और फ्राबिशर को तैनात किया। इन दोनो सामुद्रिक वीरो ने, १५८५ मे, वीगो (Vigo)-नामक स्थान को लूटा। ये लोग वेस्ट-इंडीज़ की ओर शीघ्र ही रवाना हुए। १५८७ मे मेरी की हत्या होते ही स्पेन ने इंगलैंड मे खुल्लमखुल्ला लड़ना शुरू कर दिया। फिलिप ने अपने जहाज़ो को एकत्रित किया और इँगलैंड पर हमला करने की पूरी तैयारी की। ड्रेक चुपके-ही-चुपके केडीज़ (Cadiz) मे जा पहुँचा और स्पेन के जहाज़ी बेड़े मे आग

लगाकर बहुत-से जहाज डुबो आया। इससे फिलिप के क्रोध की सीमा न रही। उसने १५८८ में एक और जहाजी बेड़ा (Armada) तैयार किया और इँगलैंड पर हमला करने का मौका देखने लगा।

इँगलैंड पर फ़िलिप के आक्रमण करने का उपाय—फिलिप अपने जहाजी बेड़े को फ्लांडर्स में रवाना करना और वहाँ से ही पारमा की सेना को इँगलैंड के किनारे पर उतारना चाहता था। फिलिप को यह आशा थी कि इँगलैंड में स्पेनियों के पहुँचते ही आंग्ल-कैथलिक लोग विद्रोह कर देंगे और स्पेनियों के साथ आ मिलेंगे। मेरी के मरते ही फिलिप ने इँगलैंड पर आक्रमण करने का अच्छा मौका पाया। उसने आंग्ल-राज्य पर अपना अधिकार प्रकट किया, क्योंकि जॉन ऑफ् गांट की ओर से ट्यूडरों की अपेक्षा वही नजदीकी राजा था। रानी स्थल में स्पेनियों से लड़ने से डरती थी, क्योंकि उसके पास कोई स्थायी सेना न थी। अतः उसने स्पेनियों को इँगलैंड में उतरने से रोकना चाहा। आंग्लों को सामुद्रिक युद्ध में आत्म-विश्वास था। हाकिंस तथा ड्रेक के पास अच्छे-अच्छे लड़ाकू जहाज थे। स्पेनियों और आंग्लों के जहाजी बेड़े में जो भेद था, वह इस प्रकार दिखाया जा सकता है—

स्पेनी बेड़ा	आग्ल-बेड़ा
(१) स्पेनियो के जहाज बहुत बड़े, जल के ऊपर उठे हुए और भारी थे, पर शीघ्रगामी न थे।	(१) आग्लो के जहाज भी काफी बड़े थे, परन्तु स्पेनियो से छोटे ही थे। उनका बहुत-सा भाग जल मे निमग्न रहता था। वे हल्के और तेज़ चलनेवाले थे।
(२) तोपे, बदूके और बारूद थोड़ी थी।	(२) हथियारो से खूब सुसज्जित थे।
(३) स्पेनी जहाज व्यापार तथा बोझ उठाने ही के योग्य थे। वे लंबी यात्रा नही कर सकते थे।	(३) केवल लड़ने के लिये ही बनाए गए थे।
(४) स्पेनियो का प्रधान सामुद्रिक सेनापति था ड्यूक मैडीनासिडोनिया (Medina-Sedonia)। इसके	(४) आग्लो का सामुद्रिक सेनापति लॉर्ड हावर्ड था। इसकी मातहती मे ड्रेक, हाकिस और

मानहन् जो सेनापति थे, वे सामुद्रिक युद्धों को न जानते थे।	फ्रॉबिशर आदि सेना-पति थे। ये लोग बीसियों बार सामुद्रिक युद्धों में स्पेनियों को पराजित कर चुके थे।
(५) इसमें सिपाही बहुत ही अधिक थे और मल्लाह बहुत ही कम।	(५) इनमें सिपाही थोड़े थे और मल्लाह बहुत अधिक। अतः इन्होंने शीघ्रगामी होने के कारण स्पेनियों को तंग करना ही सोचा और बराबरी की लड़ाई से अपने को बचाया।
(६) सिपाही और मल्लाह साधारण योग्यता के थे।	(६) आंग्लों के जहाज सामुद्रिक योद्धाओं से भरे हुए थे।

दोनों ओर के जहाजी बेड़ों को देखने से स्पष्ट है कि आंग्ल अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होने के कारण तथा शीघ्रगामी

जहाजों और ड्रेक, फ्राबिशर आदि के सुप्रबंध तथा साहसी कार्यों से स्पेनियों पर शीघ्र ही विजय प्राप्त कर सकते थे। वास्तव में यही हुआ।

स्पेनी बेड़े का नाम अजेय आर्मडा (The Invincible Armada) था। स्पेनियों को अपने जहाजी बेड़े के बड़े होने का बहुत ही घमंड था। दैवसंयोग से आरंभ से ही इस बेड़े पर विपत्ति-पर-विपत्ति पड़ने लगी। लिसबन (Lesbon) से मे मे यह चला। परंतु तूफान के कारण आगे न बढ़ सका। १६ जुलाई को स्पेनी आर्मडा आंग्ल-चैनेल (English Channel में पहुँचा और सामुद्रिक तूफान के कारण डोवर की ओर बह गया। आंग्लो ने अपने जहाज़ी बेडे के द्वारा स्पेनिश आर्मडा पर पीछे से हमला कर दिया। सप्ताह-भर तक युद्ध होता रहा। आंग्ल वायु के प्रवाह के अनुकूल अपने जहाज़ी बेड़े को रखते और स्पेनी आर्मडा पर बुरी तरह से चोट पहुँचाते थे। आर्मडा के एक-एक जहाज़ को आंग्लों ने काट दिया और बहुत-से जहाज़ों को अपने क़ाबू मे कर लिया। लाचार होकर स्पेनी आर्मडा ने अपना लंगर कैले (Calais) मे डाल दिया। आंग्लो ने बहुत-सी नावों में आग लगा दी और उनको स्पेनी जहाज़ो के बीच

मे छोड़ दिया। इससे स्पेनियों के बहुत-से जहाज जल गए और उनको कैले छोड़कर भागना पड़ा। आंग्लों ने भागते
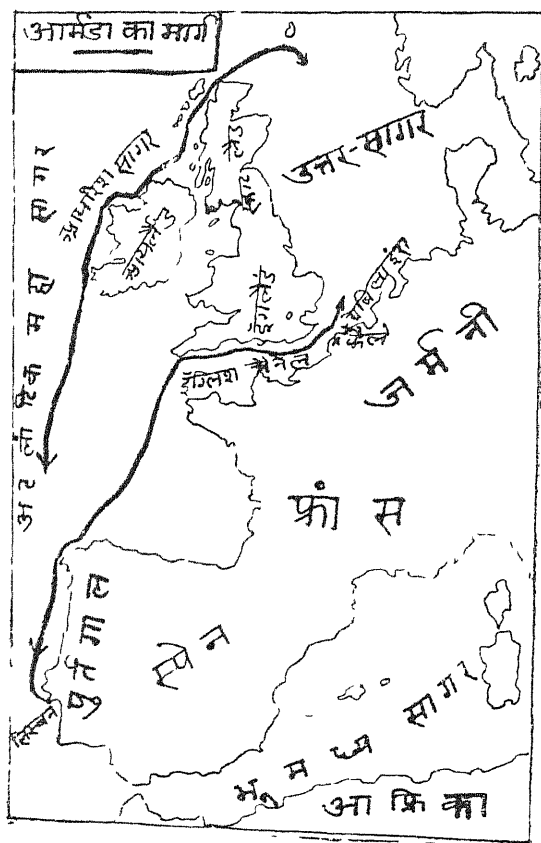
अजेय आर्मडा का मार्ग

हुए आर्मेडा का बुरी तरह पीछा किया। लाचार होकर स्पेनियों ने आंग्लों से भयंकर युद्ध किया। यह युद्ध ग्रेविलाइंस (Gravelines) पर, २९ जुलाई को लगातार ६ घंटे तक होता रहा। इस युद्ध के अनंतर उन्होंने नियम-पूर्वक पीछे हटना शुरू किया और अनुकूल वायु की प्रतीक्षा की। बहुत समय तक प्रतीक्षा करने पर भी जब उन्हें माफिक हवा न मिली, तो उन्होंने स्कॉटलैंड का चक्कर लगाकर, आयर्लैंड के समीप से, लिसबन पहुँचने का विचार किया। इस यत्न में उनके आधे जहाज़ नष्ट हो गए और वे इँगलैंड पर हमला न कर सके।

इँगलैंड की विजय का परिणाम—आर्मेडा की पराजय से इँगलैंड एक भयंकर विपत्ति से बच गया। वहाँ प्रॉटेस्टेंट मत सदा के लिये स्थिर हो गया। इसी युद्ध से इँगलैंड एक नौ-शक्ति-संपन्न राज्य बन गया, उसके व्यापार और उपनिवेशों की नींव पड़ गई। स्कॉटलैंड और इँगलैंड की एकता का बीज भी इसी विजय से उत्पन्न समझा जाता है, क्योंकि यदि फिलिप इँगलैंड का राजा बन जाता, तो जेम्स की मातहती में दोनो देश एक दूसरे से जुड़ न सकते। इस पराजय से स्पेन की शक्ति क्षीण हो गई। योरप में कैथलिक मत का फैलना रुक गया। हॉलैंड सदा के लिये फिलिप

के अत्याचारों से छुटकारा पा गया। योरप के इतिहास और इंगलैंड के जीवन में इस युद्ध का बहुत बड़ा स्थान है। ऐसा समझा जाता है कि नवीन इंगलैंड की नींव इसी विजय से पड़ी।

फ्रांस का हेनरी चतुर्थ (१५८९)—फ्रांस पर इंगलैंड की विजय का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। उस देश के कैथलिकों और काल्विनिस्टों का झगड़ा अंतिम सीमा तक जा पहुँचा। कैथलिक लोगों ने हेनरी तृतीय का सत्यानाश कर दिया और स्पेन के फिलिप को अपना नेता नियत किया। कुछ ही दिनों बाद हेनरी को किसी कैथलिक ने मार डाला। उसकी मृत्यु के बाद बार्बून का ड्यूक हेनरी चतुर्थ के नाम से फ्रांस के सिंहासन पर बैठा। यह बुद्धिमान, चतुर और एलिज़बेथ के समान ही धार्मिक सहिष्णुता का पक्षपाती था। इसने नैंट की उद्घोषणाओं (Edicts of Nantes) के द्वारा फ्रांस में भी धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार किया। धीरे-धीरे योरप के सम्राटों में इसने एक उच्च स्थान प्राप्त कर लिया। इसने रानी एलिज़बेथ से मित्रता का व्यवहार किया और दश वर्षों तक दोनों ही स्पेन की शक्ति को नष्ट करने का यत्न करते रहे। १५९८ में फिलिप ने फ्रांस से संधि की और संधि के बाद ही वह मर भी गया। इसकी मृत्यु के बाद स्पेन की शक्ति सर्वथा नष्ट हो गई।

स्पेन के साथ युद्ध (१५८९-१६०३)—एलिजबेथ की मृत्यु तक इँगलैंड और स्पेन का युद्ध चलता ही रहा। ये सब युद्ध समुद्र पर ही हुए। इन युद्धो मे इँगलैंड ने सफलता नही प्राप्त की, क्योकि स्पेनी लोग भी आंग्लो के समान ही समुद्र-युद्ध मे निपुणता प्राप्त कर चुके थे। १५८९ मे ड्रेक ने लिसबन पर आक्रमण किया, परतु कृतकार्य न हो सका। १५९१ मे लॉर्ड टॉमस हावर्ड ने अज़ोस (Azores) पर आक्रमण किया। स्पेनी बेड़े के शक्तिशाली होने के कारण उसको पीछे लौटना पड़ा। हावर्ड का रिवेंज (Revenge)-नामक एक जहाज़ सर रिचर्ड ग्रैनविल (Sii Rechard Gienville) के पास था। यह स्पेनी जहाजो के बीच मे फँस गया। ग्रैनविल ने स्पेनी जहाजो को चीर-फाड़कर निकल जाने का यत्न किया और कई घटे बहुत ही भयकर युद्ध हुआ। उसने घायल होकर हार मानी। स्पेनी लोग उसे पकडकर अपने एक जहाज़ पर ले गए। थोड़ी ही देर मे यह वीर मर गया। इस युद्ध की कहानियाँ बहुत दिनो तक आंग्लो को उत्तेजित करती रही।

१५९५ मे ड्रेक और हाकिंस ने वेस्ट-इंडीज़ पर धावा मारा। स्पेनी लोग पहले ही से तैयार थे। इसका परिणाम यह हुआ कि इन दोनो को खाली हाथ लौटना पडा। इसके अगले ही साल फ़िलिप ने केडीज़ पर दूसरा 'आर्मेडा' तैयार किया। लॉर्ड हावर्ड

और लॉर्ड डेवरो (Devereux) ने केडीज़ पर हमला किया और दूसरे आर्मेडा को भी नष्ट कर डाला। इन्होंने केडीज पर प्रभुत्व प्राप्त किया। इससे स्पेनियों को शिक्षा मिल गई। उन्होंने इँगलैंड पर चढाई करने का विचार ही छोड दिया। १५९८ में फिलिप की मृत्यु होने पर फिर इस प्रकार तैयारियाँ किसी भी स्पेनी राजा ने नही की।

रानी एलिजबेथ के अंतिम वर्षों में आंग्लो ने अमेरिका में उपनिवेश स्थापित करने का यत्न किया। १५८३ में सर हेनरी हम्फ्री गिल्बर्ट (Sir Humphrey Gilbert) ने न्यू फाउँडलैंड (New-found-land) में आंग्ल-उपनिवेश स्थापित करना चाहा, परंतु सफलता नही हुई। घर को लौटते समय समुद्र में उसकी मृत्यु हो गई। १५८५ से १५९० तक सर वाल्टर रैले (Sir Walter Raleigh) ने वर्जीनिया (Virginia) में तीन बार उपनिवेश स्थापित करने का यत्न किया। एलिजबेथ अविवाहित रानी (Virgin Queen) कहलाती थी। इसी बात के उपलक्ष्य में उसने इस उपनिवेश का नाम 'वर्जीनिया' रक्खा था। वह स्वयं वर्जीनिया नही गया और इसी से उसका यत्न भी व्यर्थ गया। रानी की मृत्यु के समय विदेशो में एक भी आंग्ल-उपनिवेश नहीं था।

(५) एलिज़बेथ और आयर्लैंड

यह पहले ही दिखाया जा चुका है कि हेनरी अष्टम ने आयर्लैंड को इँगलैंड के अधीन रखने के लिये क्या-क्या उपाय किए। हेनरी के बाद मेरी के समय तक इसी प्रकार के उपाय किए गए; परंतु सफलता किसी को भी न प्राप्त हुई। एलिज़बेथ बहुत ही कंजूस थी। वह आयर्लैंड को वश में तो करना चाहती थी, परंतु उसके लिये रुपए नहीं ख़र्च करना चाहती थी। इसलिये उसने औपनिवेशिक शैली ग्रहण की। रानी मेरी ने आयर्लैंड के जो प्रांत जीते थे, उनका नाम किंग्स-काउंटी और क्वीस-काउंटी रक्खा। इन काउंटियों में दो शहर भी बसाए गए। उनमें एक का नाम 'फिलिप्स-टाउन' और दूसरे का नाम 'मेरी-टाउन' रक्खा गया।

रानी एलिज़बेथ कैथलिक मत के विरुद्ध थी। उससे पहले के आंग्ल-राजा लोग आयरिश सरदारों ही के द्वारा आयर्लैंड का शासन करते थे। परंतु १५५८ से १५६७ तक जो-जो घटनाएँ हुईं, उन्होंने रानी को इस बात के लिये विवश किया कि वह आयरिश सरदारों के द्वारा आयर्लैंड का राज्य और शासन करे। उत्तरीय आयर्लैंड के अलस्टर (Ulster) प्रांत में 'ओ'नील' (O'Niel) नाम का एक

प्रसिद्ध कुलीन वंश था। हनरी अष्टम ने इस वंश को अपने काबू मे रखने के लिये अलस्टर के जमींदार ओ'नील को अर्ल की उपाधि दी। जब वह अर्ल बहुत ही बूढ़ा हो गया, तो उसने हेनरी अष्टम से प्रार्थना की कि मेरी अर्ल की उपाधि पुश्तैनी बना दी जाय। उसके सबसे बड़े पुत्र को उसकी नीति पसंद नही थी। वह आंग्ल-राजा की दी हुई उपाधियों को घृणा की दृष्टि से देखता था। उसने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर उसको जमींदारी से निकाल दिया और जिन-जिन भाइयो ने विरोध किया, उन्हे भी यमलोक पहुँचा दिया। ओ'नील-वंशवालो ने उसको अपना नेता बनाया और अलस्टर को स्वतन्त्र कर लिया। एलिज़बेथ ने उस वीर पुरुप को अपने वश मे करना चाहा, परंतु सफल न हो सकी। १५६७ मे सर फिलिप सिडनी के पिता सर हेनरी फिलिप ने उस वीर के साथ युद्ध किया। आयर्लैंड के दुर्भाग्य से ओ'नील को एक विरोध रखनेवाली जाति के सरदार ने मार डाला। इसके बाद अलस्टर इंगलैड के हाथ मे आ गया।

रानी ने अर्ल ऑफ एसेक्स को अलस्टर का शासक नियत किया। उसने वहाँ पर आंग्ल-प्रोटेस्टेंटो को बसाया। परंतु शासन के काम मे वह कृतकार्य नहीं हो सका। अलस्टर

वहाँ की एक असली पुरानी जाति के ही हाथ मे चला गया।

एलिजबेथ के शत्रुओ ने आयर्लैंड को अपना अड्डा बनाना चाहा। फिलिप ने सिपाही और पोप ने पादरी आयर्लैंड भेजे। उन्होने आयरिशो को रानी के विरुद्ध भडका दिया। मन्स्टर (Munster) मे भयंकर विद्रोह हो गया। इस स्थान मे स्कैटस जैरल्ड का वंश रहा करता था। इनके नेता का नाम अर्ल ऑफ डेस्मड (Desmond) था। रानी ने मंस्टर-प्रांत के साथ बड़ी क्रूरता का व्यवहार किया। उसने उस प्रात को उजाड दिया और वहाँ पर अँगरेजो को बसाया। उन्हीं को वहाँ की सारी भूमि बाँट दी। परंतु, फिर भी, बहुत थोड़े आंग्ल आयर्लैंड मे गए। जो वहाँ बसने लगे, उनको आयरिशो ने बहुत अधिक सताया। यह उपनिवेश भी वहाँ असफल ही रहा। यह होने पर भी रानी की क्रूरता और भय से बीस वर्षों तक आयर्लैंड मे शांति रही अर्थात् आयरिशो ने सिर नहीं उठाया। परंतु उसका परिणाम यह हुआ कि इस क्रूरता से तंग आकर उन लोगो ने आपस मे एकता बढ़ानी शुरू कर दी। इस संगठन के कारण १५९८ में आयर्लैंड में फिर विद्रोह हो गया। विद्रोहियो का नेता शान का भतीजा था। अलस्टर और मंस्टर मे भी विद्रोह हो गया, क्योंकि मंस्टर में डेस्मंड पहुँच गया था।

इस विद्रोह का दमन करने के लिये रानी ने अर्ल ऑफ़ एसेक्स को भेजा। यह योग्य पुरुष नहीं था। इसलिये विद्रोह के दमन में इसको सफलता नहीं मिली। यह रानी की आज्ञा के बिना ही इँगलैंड को लौट गया। रानी को इसने अपने खूनी कपड़े दिखाए और अपनी कठिनाइयों तथा कष्टों का वर्णन किया। सब सुनने के बाद रानी ने इसे कैद कर दिया, पर कुछ दिनों के बाद छोड़ भी दिया।

अवधि समाप्त होने पर रानी ने इसे शराब का एकाधिकार (Monopoly) नहीं दिया। इस पर इसने विद्रोह करने का यत्न किया। परंतु किसी भी आंग्ल ने इसका साथ नहीं दिया।

रानी ने एसेक्स के बाद लॉर्ड माउंट ज्वॉय (Lord Mountjoy) को आयर्लैंड भेजा। इसने अपनी शक्ति और निर्दयता से विद्रोह को शांत कर दिया। ओ'नीलों ने चिरकाल तक अलस्टर में आंग्लों का विरोध किया, परंतु रानी की मृत्यु से पहले उनको भी इँगलैंड की अधीनता माननी पड़ी। लॉर्ड माउंटज्वॉय की निर्दयता ने आयरिशों के हृदयों को घायल कर दिया। उन्होंने आंग्लों से घृणा करनी शुरू कर दी और अपने को उनके पंजे से निकालना चाहा।

(५) एलिज़बेथ के अंतिम दिन

आयर्लैंड-विजय के उपरांत आंग्ल-जनता का ध्यान

स्कॉटलैंड और वेल्स को अपने साथ मिलाने की ओर गया। विलियम मार्गन (William Morgan) ने वैल्श (Welsh)-भाषा मे बाइबिल का अनुवाद किया। इससे वेल्स मे भी इँगलैड का प्रोटेस्टेंट मत ही फैलने लगा। स्कॉटलैंड पहले से ही प्रोटेस्टेंट था। अत इन धार्मिक युद्धो के दिनो मे स्वाभाविक रूप से ही आंग्लो से स्कॉच-लोगो की मित्रता हो गई। एलिजबेथ की मृत्यु होने पर लोग स्कॉच राजा जेम्स षष्ठ को ही इँगलैड का भी राजा बनाने के लिये उद्यत हो गए।

सेसिल एसेक्स और रैले—स्पेन-विजय के बाद आंग्लो की समृद्धि दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ने लगी। आयर्लैंड जीता जा चुका था। पोप और जेजुइट लोगो का कुछ भी भय न था। इँगलैड समुद्र का स्वामी था। यही कारण है कि हंसो के समान ही उसने भी योरप के व्यापार को अपने हाथ मे करने का यत्न किया।

एलिजबेथ बुडढी हो गई थी। उसके मित्र और बंधु भी अब जीवित न थे। ऐसी दशा मे शोक के कारण वह एकांत मे ही रहना पसंद करती थी। १५९८ मे बर्ले की भी मृत्यु हो गई। उसने अपने पुत्र सर राबर्ट सेसिल को सब राज-काज सौप दिया। एसेक्स और रैले ने स्पेन से युद्ध

जारी रखने का यत्न किया। मगर रावर्ट सेसिल ने बुद्धिमानी से इस काम को नहीं किया। बुढ़ापे के दिनों में एसेक्स से रानी नाराज हो गई थी। उसने उसे मरवा तो डाला, पर उसके दिल को बड़ा धक्का पहुँचा।

बुढ़ापे के दिनों में प्रजा के प्रति रानी का व्यवहार कठोर एवं क्रूर हो गया था। विट्गिफ्ट ने प्यूरिटन लोगों को व्यर्थ ही सताना शुरू किया। रोमन कैथलिकों पर भी किसी तरह की दया नहीं की गई। कारागार अपराधियों से भर गए।

एलिज़बेथ और पार्लिमेंट—रानी के राज्य-काल में लोक-सभा ने फिर शक्ति प्राप्त करना आरंभ किया। इसका मुख्य कारण यही था कि लोक-सभा के सभ्य धर्मांध और सुधारों के पक्षपाती थे। कैथलिकों को तंग करने के लिये लोक-सभा ने रानी को धन की बहुत ही अधिक सहायता पहुँचाई। बहुत-सी बातों के लिये लोक-सभा ने रानी को तंग भी बहुत ज्यादा किया। वे बातें ये हैं—

(क) विवाह करने के लिये

(ख) प्यूरिटन लोगों को अधिकाधिक अधिकार देने के लिये

(ग) विदेशों में रहनेवाली प्रोटेस्टेंट जातियों को सहायता देने के लिये

रानी इन तीनों बातों से घबराती थी। इसीलिये उसने लोक-सभा के बहुत कम अधिवेशन किए। ४५ वर्षों में केवल १३ बार लोक-सभा के अधिवेशन हुए। सभा को वश में रखने के लिये रानी ने कुछ नए-नए 'बरो' को भी प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया। वह उन 'बरो' से अपनी इच्छा के अनुकूल ही प्रतिनिधि चुनवाती थी। महामंत्री भी लोक-सभा का सभ्य था, इसलिये वह लोक-सभा को रानी के अनुकूल रखता था। जो सभ्य कुछ स्वतंत्रता प्रकट करते थे, उन्हें रानी कैद करवा देती थी।

१५९७ में लोक-सभा ने रानी से प्रार्थना की कि वह एकाधिकारों को हटा दे। एकाधिकार (Monopoly) का अर्थ है किसी चीज के बेचने का अधिकार केवल एक ही मनुष्य को देना। ऐसा होने से एकाधिकार पानेवाला उस चीज़ को मनमाने भाव पर बेचता और जनता को अत्यधिक मूल्य देना पड़ता था। तरह-तरह की चीजों के बेचने के अधिकार दिए जाते थे, जिससे आवश्यक वस्तुओं के दाम बहुत बढ़ गए थे। ऊपर लिखी हुई प्रार्थना पर रानी ने ध्यान नहीं दिया। १६०३ की लोक-सभा ने एकाधिकारों की सूची पढ़ी। एक सभ्य ने

पूछा कि "इन एकाधिकारो मे क्या रोटी का बेचना शामिल नही है ? अगर इसका कुछ प्रतिकार न किया गया, तो इसका भी एकाधिकार हो जायगा ।"

सभ्यो के शोर मचाने पर रानी ने एकाधिकारो को हटाना मजूर कर लिया । इस पर सभा ने रानी को धन्यवाद दिया । १६०३ के मार्च की २४ ता० को रानी की मृत्यु हो गई ।

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१५८८	स्पेनी आर्मडा की पराजय
१५९१	रिवेज की समुद्री लडाई
१५९६	केडीज की विजय
१५९७	एकाधिकारो के विषय मे लोक-सभा का रानी से पहला झगडा
१५९८	आयर्लैंड का विद्रोह
१६०१	एकाधिकारो के विषय मे लोक-सभा का रानी से दूसरा झगड़ा
१६०३	एलिज़बेथ की मृत्यु

नवम परिच्छेद

ट्यूडर-काल मे इँगलैड की सभ्यता

(१) इगलैड की राजनीतिक दशा

ट्यूडर-काल मे ही इँगलैड मध्य-युग (Middle Ages) से नवीन युग मे प्रवेश करता है। सब तरफ परिवर्तन-ही-परिवर्तन हुआ। विद्या-विचार ने नवीन रूप प्राप्त किया और धर्म मे भी नए ढग का परिवर्तन आ गया। एलिज़बेथ ने इँगलैड मे अपनी धार्मिक सहिष्णुता (Religious Toleration) का प्रचार किया। इँगलैड को उसने एक ऊँचे स्थान पर पहुँचा दिया। उसी के राज्य मे विद्या तथा विचार ने स्थिर उन्नति प्राप्त की और उसी ने पुराने इँगलैड को नया इँगलैड बना दिया।

ट्यूडर-एकतन्त्र राज्य—ट्यूडर-राजो ने इँगलैड की शासन-पद्धति को स्थिर रूप दे दिया। उन्होने प्रजा को प्रसन्न करके, अपनी योग्यता से, स्वेच्छाचारी राजा का रूप धारण किया। उनके स्वेच्छाचार से इँगलैड को अच्छी तरह मालूम पड गया कि उसकी शासन-पद्धति मे कहाँ क्या दोष है। इसका मुख्य कारण यह था कि ट्यूडर-राजो ने आंग्ल-शासन-

पद्धति की धाराओं को नहीं तोड़ा। उन्होंने लोक-सभा सरीखे शक्तिशाली एंजिन को अपने काबू में कर लिया और उससे मनमाने ढंग से काम लेना शुरू कर दिया। उनके स्वेच्छाचार का विरोध किया जा सकता था। मगर सवाल तो यही था कि विरोध करता कौन? हेनरी अष्टम ने पुराने चर्च का सत्यानाश कर दिया था। उसने बिशपों की शक्ति को भी मिटा दिया था। लॉर्ड लोग गुलाब-युद्ध में लड़कर पहले ही खत्म हो चुके थे। जो लॉर्ड बच गए थे, उनमें भी वह सामर्थ्य न थी, जिससे वे ट्यूडर-राजों के स्वेच्छाचार को कम कर सकते।

यह सब होने पर भी ट्यूडर-राजों का स्वेच्छाचार हेनरी अष्टम के बाद ही समाप्त हो जाता, यदि आंग्ल-सिंहासन पर एलिजबेथ-सी बुद्धिमती, चतुर और राज-नीति-निपुण स्त्री राज्य करने के लिये न बैठती। एलिजबेथ ने आंग्ल-जनता को अपने विरुद्ध उठने का अवसर ही नहीं दिया। वह उसी धर्म को पसंद करती थी, जिसके प्रचार के लिये आंग्ल-जनता उत्सुक थी। कैथलिक लोगों के विरोधों और षड्यंत्रों से उसकी शक्ति और भी अधिक बढ़ गई। वह आंग्ल-जनता की आँखों का तारा बन गई। उसने स्पेन के आक्रमण से इँगलैंड को बचा दिया। उसको नौशक्ति-संपन्न भी बनाया। इसी से

जनता ने उसको और भी अधिक प्यार करना शुरू किया। सारांश यह कि हेनरी सप्तम ने आंग्ल-प्रजा को गुलाब-युद्धों (Wars of the Roses) के बाद शांति दी और अन्याचारी लॉर्डों के बल को घटाया, जिससे जनता कृतज्ञ हो उसकी स्वेच्छाचारिता की परवा नही करती थी। आगे एलिजबेथ के समय इँगलैंड की असीम उन्नति हुई और जनता समृद्धिशालिनी बनी, जिसमें रानी की स्वेच्छाचारिता चल गई। ऐसी दशा मे रानी अगर लोक-सभा को मनमाने ढग पर चला सकी, तो उसमे आश्चर्य ही क्या है ?

ट्यूडर-राजों के समय में लोक-सभा—अभी लिखा जा चुका है कि ट्यूडर-राजो ने लोक-सभा का विरोध नही किया। उन्होंने लोक-सभा को अपनी इच्छा के अनुसार चलाया। एलिज़बेथ के राज्य के अतिम दिनो तक लोक-सभा ने चूँ तक नही की। रानी ने जैसा कहा, वैसा ही कर दिया। ट्यूडर-काल मे लोक-सभा का पहला रूप नही रहा। वह राजा की दासी बन गई। ट्यूडर-राजो ने पुराने जमाने की लॉर्ड-सभा को भी सर्वथा, सब तरह से, बदल दिया, उसकी उद्दडता और उच्छृखलता को बिलकुल मटियामेट करके उसे एक धार्मिक सभा का रूप दे दिया। इसको धर्म-सशोधन की ही अधिक चाह थी। हेनरी अष्टम के समय मे लोक-सभा के अदर धार्मिक

पादरियों की संख्या कम हो गई और लार्डों की संख्या बढ़ गई। १५३९ में तो बिशपों की संख्या नाम-मात्र को ही रह गई। प्राचीन काल में लॉर्ड-सभा के अंदर पुराने घरों के उद्दंड स्वेच्छाचारी बैरन लोग थे। किंतु ट्यूडर-काल में उनमें के वे ही बैरन सभ्य रह गए, जो चर्च-संपत्ति को लूटकर अमीर बने थे। पुराने घरानों के लार्ड तो गुलाब-युद्ध के समय बहुत कुछ निर्बल हो चुके थे। नए लॉर्डों में वह वीरता और अभिमान न था, जो हावर्ड, नैविल और पर्सी आदि घराने के लॉर्डों में था। रसेल, कैवांडिश और सैसिल आदि ट्यूडर-काल के लॉर्ड नाममात्र को ही लार्ड थे। उनमें शासन और न्याय करने की शक्ति बहुत ही कम थी। राजा की इच्छाओं के अनुसार ही उनको चलना पड़ता था।

हेनरी अष्टम ने लोक-सभा के सभ्यों की संख्या बहुत ही अधिक बढ़ा दी थी। उसने वेल्स, चैशायर तथा अन्य नए-नए बरो (Boroughs) के लोगों को भी लोक-सभा में प्रति-निधि भेजने का अधिकार दे दिया था। इससे राजा की शक्ति कुछ वर्षों के लिये बहुत ही अधिक बढ़ गई।

राजा और लोक-सभा—ट्यूडर-काल में राजा और प्रजा का बहुत कम विरोध हुआ। इसका मुख्य कारण यह था कि दोनो ने ही अपने-अपने कामों को समझ लिया था।

राजा लोक-सभा के कामों में हस्तक्षेप नहीं करता था और लोक-सभा भी राजा के काम में विशेष रूप से हस्तक्षेप नहीं करती थी। लोक-सभा का मुख्य काम नए-नए नियमों का बनाना और राज्य-कर लगाना था। राजा का काम उन नियमों पर प्रजा को चलाना और राज्य-कर एकत्र करना था। इसका परिणाम यह हुआ कि सब तरफ़ राजा की शक्ति बढ़ गई। स्थानीय तथा मुख्य राज्य में राजा का ही दबदबा था, वह जिस प्रकार चाहे, शासन करे। यह राजा पर ही निर्भर था कि कौन से राज्य-नियमों पर चलने के लिये प्रजा को विशेष रूप से बाधित किया अथवा न किया जायगा। इसी शक्ति के सहारे एलिज़बेथ इँगलैंड में धार्मिक सहिष्णुता की नीति को चला सकी और हेनरी तथा मेरी खून की नदियाँ बहाने में सफल हो सके। परंतु प्रजा ने किसी का भी विरोध नहीं किया, क्योंकि जो कुछ वे करते थे, वह लोक-सभा के नियमों के अनुकूल ही होता था।

राजा तथा मंत्री—ट्यूडर-काल में राजा लोग आप अपने मंत्री रहे। उन्होंने राज्य की बागडोर पूर्ण रूप से अपने ही हाथ में रक्खी। कहाँ युद्ध करना है और कहाँ नहीं, इसका निश्चय वही लोग करते थे। जनता इस मामले में कुछ भी दख़ल नहीं देती थी, और न दे ही सकती

थी। यह सब होने पर भी शासन का काम इतना बढ़ चुका था कि उसको प्रत्यक्ष रूप से स्वयं करने में ट्यूडर-राजा असमर्थ थे। यही कारण है कि उन्होंने अपनी नीति के अनुसार मंत्रियों को चुना और देश के शासन का बहुत कुछ भार उनके ऊपर डाल दिया। मन्त्री प्रायः पुराने राजघराने के लोग ही होते थे। वे मौजी होते थे, इसी कारण राजा लोग उन पर अधिक विश्वास नहीं करते थे। वे बहुत सोच-समझकर दो मनुष्यों को चुन लेते और उन्हीं से गुप्त बातों के बारे में सलाह करते थे। एलिज़बेथ के समय में वे दोनों मन्त्री राष्ट्र-सचिव (Secretaries of State) के नाम से पुकारे जाते थे। राष्ट्र-सचिव प्रायः साधारण जनता में से ही चुने हुए होते थे। वे अक्सर नीच वंश के ही हुआ करते थे। अपने परिश्रम, बुद्धिमानी और चतुरता से ही वे उक्त उच्च पद पर पहुँच जाते थे। स्वामी का हित ही उनका मुख्य उद्देश होता था। उन्हीं के क्लर्क तथा अधीन शासकों से इंगलैंड के आधुनिक 'सिविल सर्विस' का उदय समझा जाता है, जिस पर आजकल आंग्ल-साम्राज्य का सारा-का-सारा भार है।

मंत्रणा-सभा (The Council)—विशेष-विशेष अवसरों और कठिनाइयों में राजा अपनी मन्त्रणा-सभा से ही गुप्त परामर्श करता था। राजा की वही गुप्त सभा आजकल प्रिवी-

कौसिल (Privy Council) के नाम से प्रसिद्ध है। बहुत पुराने जमाने मे प्रिवी-कौसिल के स्थान पर कांसिलियम आर्डिनिरियम (Concilium Aidinirium) नाम की सभा ही राजा को सलाह दिया करती थी। यह सभा इस प्रिवी-कौसिल से बडी होती थी, इसीलिये गुप्त मत्रणा के काम के लायक नही थी। ट्यूडर-राजो की गुप्त सभा मे २० से भी कम सभ्य होते थे। वे भिन्न-भिन्न विचार रखते थे और उनकी योग्यता भी भिन्न-भिन्न हुआ करती थी। ऐसा इसलिये होता था कि राजा भिन्न-भिन्न मामलो मे भिन्न-भिन्न व्यक्तियो से सलाह ले और उचित निर्णय पर पहुँच सके। ट्यूडर-काल मे इस सभा की प्रधानता बहुत बढ़ गई थी। सभा के सभ्यो के लिये दिन-भर काम-ही-काम था। इसी कारण बहुत-से राजनीतिज्ञ पुरुप ट्यूडर-काल को गुप्त सभा का काल भी कहते हैं। यहाँ पर यह स्मरण रखना चाहिए कि गुप्त सभा के पास किसी प्रकार की भी शक्ति न थी। उसका मुख्य काम राजा या रानी को सलाह देना ही था। किंतु यह राजा या रानी पर ही निर्भर था कि वे कहाँ तक उनकी सलाह के माफिक काम करे।

राजा की इच्छा के अनुसार कार्य और प्रबध करना भी इसी सभा का कार्य था। सारांश यह कि ट्यूडर-काल मे

इँगलैंड की मुख्य शासक-सभा गुप्त सभा ही थी। गुप्त सभा समय-समय पर राजा की आज्ञाओं को प्रजा के आगे प्रकट करती थी। उन आज्ञाओं को एक प्रकार से नवीन राज्य-नियम कहें, तो कुछ अनुचित न होगा। कभी-कभी लोक-सभा इन आज्ञाओं से चिढ़ भी जाती थी, क्योंकि नए-नए राज्य-नियमों का बनाना लोक-सभा का काम था। अक्सर ऐसा भी होता था कि गुप्त सभा अपने कार्यों से लोक-सभा के अधिकारियों पर भी हस्तक्षेप करती थी।

स्टार-चेंबर तथा स्थानीय सभाएँ (Star Chamber and the Local Councils)—ट्यूडर-राजा लोग बड़े-बड़े अपराधियों का न्याय-निर्णय एक विशेष सभा के द्वारा किया करते थे। इस सभा में बड़े-बड़े जज तथा राज्याधिकारी आते थे। सभा-भवन की छत में तारों के चित्र थे, इसी से इस सभा का नाम स्टार-चेंबर अर्थात् 'तारक-न्यायालय' था। ट्यूडर-काल में शांति तथा राज्य-नियम की स्थापना में, इस सभा ने बड़ा भारी भाग लिया। यही सभा बड़े-बड़े राजद्रोहियों का निर्णय करती थी। स्टार-चेंबर के समान ही भिन्न-भिन्न ज़िलों में राजकीय न्यायालय स्थापित किए गए थे। यार्क-नगर में उत्तरी न्यायालय (Council of the North) और लड्लो

(Ludlow) मे वेल्स-न्यायालय (Council of Wales) बहुत अच्छी तरह से अपना काम करते रहे। इन सभाओं मे पादरियो का निर्णय नही होता था । इसीलिये एलिजबेथ ने हाई कमीशन-न्यायालय (High Commission Court) स्थापित किया और उसी मे पादरियो के अपराधो का फैसला करना शुरू किया। पादरी लोग हाई कमीशन-न्यायालय के कट्टर शत्रु बन गए । वे इसे अपनी स्वतत्रता का नाश करनेवाली समझते थे। ट्यूडर-काल मे उल्लिखित सब न्यायालय बहुत अच्छी तरह से अपना काम करते थे । शांति और नियम की स्थापना करने मे इन्होने बहुत कुछ किया। इसमे कुछ सदेह नही कि इन न्यायालयो के कारण भी ट्यूडर राजो का स्वेच्छाचार पूरी तरह से बढ़ा और प्रजा उस स्वेच्छाचार को नही रोक सकी ।

स्थानीय राज्य—ग्रामो का प्रबंध ग्रामीणो के ही हाथ मे था। ट्यूडर-काल मे प्राचीन ग्राम-सभाएँ सर्वथा बलहीन हो चुकी थी, परतु, फिर भी, राजा ने बहुत-से लोगो को यह अधिकार दे रक्खा था कि छोटे-छोटे झगड़ों का फैसला वे खुद कर लिया करे। प्रबध तथा निर्णय का काम ग्रामीणो के हाथ मे होने से ग्राम-वासियो को बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा। वे शासन, न्याय और राज्य-नियम को कुछ-कुछ समझने लगे। स्टुवर्ट राजो के प्रति जब विद्रोह हुआ, तब इन ग्रामीणो ने

ट्यूडर-राजे इँगलैंड को नौ-शक्तिशाली बनाना चाहते थे। उन्होंने जहाज़ों को बड़ा और अच्छा बनाने का यत्न किया। स्पेनी आर्मेडा के आक्रमण के समय तक इँगलैंड के पास बहुत जहाज नहीं थे। यही कारण है कि राज्य को उस युद्ध में व्यापारी जहाज़ों से बहुत अधिक सहायता लेनी पड़ी।

(२) इँगलैंड की सामाजिक दशा

विद्या और विचारों की उन्नति के साथ-साथ लोगों की सामाजिक उन्नति भी हुई। विहारों, मठों तथा चर्चों की संपत्ति लुटने से इँगलैंड की सामाजिक दशा में क्रांति आ गई। गरीब आदमियों को चर्च के दान और अन्न का सहारा था। चर्च की संपत्ति नष्ट होने से वे लोग अन्न-पानी के लिये निःसहाय हो गए। लोगों में भेद-भाव पहले की ही तरह बना रहा। ग्राम-वासियों का आचार-व्यवहार साधारण आंग्लों से भिन्न था। व्यापारी लोग दिन-दिन अमीर होते जाते थे। वकीलों और डॉक्टरों ने खूब धन कमाना शुरू किया। समाज में इन लोगों की स्थिति भी बहुत ही ऊँची थी। हेनरी अष्टम के डॉक्टरी कॉलेजों (Colleges of Physicians and Surgeons) ने अच्छी उन्नति की। लोग अपने लड़कों को डॉक्टर बनाने के लिये खुशी से हर समय तैयार रहते थे। इसी कारण इन कॉलेजों में विद्यार्थियों की संख्या दिन-

दिन बढती ही चली गई। इस पर अभी प्रकाश डाला ही जा चुका है कि व्यापार दिनोदिन उन्नत हो रहा था। व्यापार की उन्नति मे व्यापारियो की समृद्धि का कुछ ठिकाना नही रहा। समृद्धि के कारण उनको राज-नीतिक अधिकार अधिकाधिक प्राप्त हो गए। आंग्ल-जनता उनको मान्य-दृष्टि से देखने लगी।

एलिजबेथ खुद भी व्यापार मे लाभ उठाती थी। ड्रेक ने जो लूटे की थी, उनमे उसका भी हिस्सा था। जमीनो की कीमत दिन-ब-दिन चढ रही थी। जमीने खरीदने मे लोग बहुत ही अधिक चढ़ाचढी करते थे। पूँजी लगाने का यह एक बहुत अच्छा ढग समझा जाता था। देश मे बेकारी पहले की अपेक्षा बहुत ही कम हो गई। भिखमगो ने भीख माँगने का पेशा छोडकर काम करना शुरू कर दिया। जमीनो पर गेहूँ की खेती की जाने लगी। देश की आबादी पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ गई। लोगो ने योरपियन राष्ट्रो से काश्तकारी का काम सीखा और भूमि पर नई-नई चीजे बोना शुरू किया। आयर्लैंड मे प्रवासियो और रोजगारियो की सख्या दिन-दिन बढ़ने लगी। कारण, वहाँ पर लोगो को धन लगाने का अच्छा मौका था। इसका परिणाम यह हुआ कि आयर्लैंड मे किसानो और रोज़गारियो ने खूब धन कमाया।

एलिज़बेथ की मृत्यु से पहले आयर्लैंड में आलू की खेती शुरू हो गई थी।

ग्रामीणों और नागरिकों के परस्पर मिलने से पुरानी गिल्ड (Guild) की प्रथा टूटने लगी। कारीगर लोगों ने रुपए पाकर ज़मीनें ख़रीदी और कारीगरी का काम छोड़ दिया। अशिक्षित ग्रामीण लोग कारीगरी के कामों को बड़ी तेज़ी से करने लगे। इससे इँगलैंड में उच्च कोटि की कारीगरी का नाश होने लगा। उसे रोकने के लिये रानी ने १५६३ का प्रसिद्ध राज्य-नियम (Act of Apprentices) पास किया। इसके अनुसार उन सब लोगों को व्यापार-व्यवसाय के काम करने से रोक दिया गया, जिन्होंने सात साल तक गिल्डों के नीचे काम न सीखा हो।

इस समृद्धि तथा उन्नति के साथ-साथ छोटे पादरियों की समृद्धि और उन्नति सदा के लिये रुक गई। चर्चों की संपत्ति लुट जाने से उनके लिये अपने परिवार का पालन करना भी कठिन हो गया। कवि ने ठीक कहा है—नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

दरिद्र-संरक्षण-नियम (Poor Law)—१५६३ में ही रानी ने उन ग़रीबों की रक्षा के लिये उपाय किया। उसने १६०१ में 'दरिद्र-संरक्षक' नियमों को पास कराया। इन

नियमों के अनुसार हरएक पैरिश मे एक-एक निरीक्षक नियत किया गया, जिसका मुख्य काम जनता पर राज्य-कर लगाना था। इस राज्य-कर के द्वारा दरिद्र लोगों को सहायता पहुँचाई जाती थी—उनको खाना-पीना और कपड़ा आदि बाँटा जाता था। १८३४ तक इसी प्रकार दरिद्र लोगों की रक्षा की जाती रही। १८३४ के बाद नए नियम बनाए गए, जिनके द्वारा दरिद्रो की दशा और भी सुधारी गई।

भोग-विलास की वृद्धि—इँगलैंड की आर्थिक उन्नति का सबसे बड़ा चिह्न यह भी था कि ट्यूडर-काल मे लोगों की रहन-सहन बहुत ही अधिक उन्नत हो गई। प्राचीन काल मे गरीब लोगों के पास खाने-पीने को काफी था। अमीर, ताल्लु-कदार, लॉर्ड और ड्यूक लोग ही भोग-विलास का जीवन व्यतीत करते थे। किंतु ट्यूडर-काल मे साधारण लोगो को भी भोग-विलास का जीवन व्यतीत करने का अवसर मिला। लोगों के मकान पहले की अपेक्षा बहुत ही अच्छे बन गए। घरों मे धुआँ बाहर निकालने के लिये वेंटिलेटरो (Venti-lateis) और चिमनियो का प्रयोग किया जाने लगा। लोग चम्मच-काँटे से भोजन करने लगे। उँगलियो के सहारे भोजन करना दिन-ब-दिन छूटने लगा। अमेरिका का पता लगने के बाद तमाखू पीना भी इँगलैंड मे बढ़ गया। आंग्ल लोग इतना मांस

खाते थे कि उसे रोकने के लिये राज्य ने शुक्रवार को मांस खाना बंद करा दिया। कपड़ों का तो कहना ही क्या है। उन दिनों लंबे-लंबे कालर लगाने का आम फैशन था। कपडे बहुत ही लंबे-चौड़े होते थे।

(३) साहित्यिक दशा

ट्यूडर-काल में इँगलैंड में शिक्षा की बहुत ही अधिक उन्नति हो गई। पुराने धर्मवालों की जो पाठशालाएँ तोडी गई, उनकी जगह पर नए-नए कॉलेज और स्कूल खोल दिए गए। हरएक सभ्य नागरिक के लिये कुछ-न-कुछ विद्या पढ़ना आवश्यक हो गया। योरप का विद्यापीठ इटली था। जो आंग्ल विद्या-प्रेमी होते थे, वे इटली अवश्य जाते थे। पुराने ढर्रे के लोगों का विश्वास था कि विदेश में जाने से लोगों की फिजूल-खर्ची बढ़ जाती है और वे लोग स्वतंत्र विचार के हो जाते हैं। यह सब होने पर भी लोग दिन-दिन अधिक संख्या में विदेश को जाने लगे। सामुद्रिक पुलिस के स्थापित होने से यात्रियों को लूट-मार का भय बहुत ही कम हो गया। इँगलैंड में पक्की सड़कें बन गई थीं। लोग एक जगह से दूसरी जगह बग्गियों में आने-जाने लगे। ट्यूडर-काल में भी पहले की ही तरह घोड़े की सवारी का फैशन प्रचलित था। लोग घोडे पर चढ़कर इधर-उधर जाना बहुत अधिक पसंद करते थे।

ट्यूडर-काल में गृह-निर्माण की विद्या में भी खूब तरक्की हुई। चर्चों में गान-विद्या की अच्छी उन्नति हो रही थी। काव्य और साहित्य की उन्नति की ओर भी लोगों की रुचि दिन-दिन बढ़ती जाती थी। लेकिन चित्रों के बनाने में अभी तक आंग्ल लोग बहुत पीछे थे। हेनरी अष्टम ने आंग्ल-चित्रकारों को पेंशन देना शुरू किया। उसके समय में इँगलैंड के अंदर अच्छे-अच्छे चित्रों के बनाने का काम विदेशी चित्रकार ही करते थे। दृष्टांत के तौर पर हेनरी अष्टम के राज्य में निम्न-लिखित विदेशी शिल्पकार और चित्रकार थे—

(१) इटैलियन शिल्पकार टारिगिएनो (Tarigiano)

(२) जर्मन चित्रकार हाल्बिन (Halbein)

एलिज़बेथ से पहले आंग्ल-साहित्य की उन्नति बहुत कुछ रुक चुकी थी। हेनरी अष्टम के समय में प्रेस ने कुछ-कुछ उन्नति की और मोर ने 'युटोपिया' (Utopia) नाम की पुस्तक लिखकर अपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त की। लेकिन एलिज़बेथ के राज्य-काल में आंग्ल-साहित्य ने अपूर्व उन्नति की। रानी के समय में निम्न-लिखित लेखकों ने खासी प्रसिद्धि प्राप्त की—

(१) एडमंड स्पेंसर (Edmund Spenser)

(२) शेक्सपियर (इँगलैंड का कालिदास) (Shakespeare)

(३) जेम्स बर्वेज (सबसे प्रसिद्ध नट) (James Burbage)

(४) क्रिस्टोफर मार्लो (नाटक-लेखक) (Christopher Marlowe)

(५) रिचर्ड हूकर (गद्य-लेखक) (Rechard Hooker)

(६) सर फ्रांसिस बेकन (निबंध-लेखक) (Sir Francis Bacon)

(७) हालिशड (राज्य-वृत्तांत-लेखक) (Hollinshed)

(८) हाक्लिट (यात्रा-वृत्तांत-लेखक) (Haclayt)

ट्यूडर-राजों का वंश-वृक्ष

एडवर्ड तृतीय

|

जॉन आव गाट

\+ स्मीस्लिनफोर्ड की कैथराइन

ओवन ट्यूडर + स्त्री, फ्रान्स की कैथराइन चार्ल्स षष्ठ की लड़की और हेनरी पंचम की विधवा स्त्री

जॉन बोफर्ट सॉमर्सेट् का अर्ल

(२) (१)

जास्पर ट्यूडर बैड्फार्ड का अर्ल

एडमंड ट्यूडर रिचमंड का अर्ल + स्त्री, मार्गरैट बोफर्ट

|

हेनरी सप्तम १४८५–१५०६ + स्त्री, यार्क की एलिज़ाबेथ

|

हेनरी अष्टम १५०९-१५४७

आर्थर प्रिन्स ऑव वेल्स मृ० १५०२

मार्गरैट स्त्री, (१) जेम्स चतुर्थ स्टिवर्ट (स्कॉटलैंड का राजा) (२) आंगस का अर्ल।

मेरी स्त्री, (१) फ्रान्स के सम्राट् लूइस १२वें की (२) सफक के ड्यूक चार्ल्स ब्राण्डन

एडवर्ड षष्ठ १५४७-१५५३

मेरी १५५३-१५५८

एलिजबेथ १५५८-१६०३

फ्रांसिस, स्त्री, हेनरी ग्रे सफ़क का ड्यूक

*

†

(1) जेम्स पचम स्कॉटलैंड का राजा
|
कामज पुत्र मोरे का अर्ल जेम्स स्टुवर्ट
|
स्कॉटलैंड की रानी मेरी +
|
जेम्स षष्ठ (स्कॉटलैंड का राजा) या जेम्स प्रथम (इंगलैंड का राजा)

(२) मार्गरैट स्त्री, लेनाक्स का अर्ल
|
हेनरी स्टिवर्ट स्त्री + डार्नले का अर्ल

लेडी जेन ग्रे, स्त्री, लार्ड गिल्फ़र्ड डड्ले

लेडी कैथराइन ग्रे
|
लार्ड बोशाप
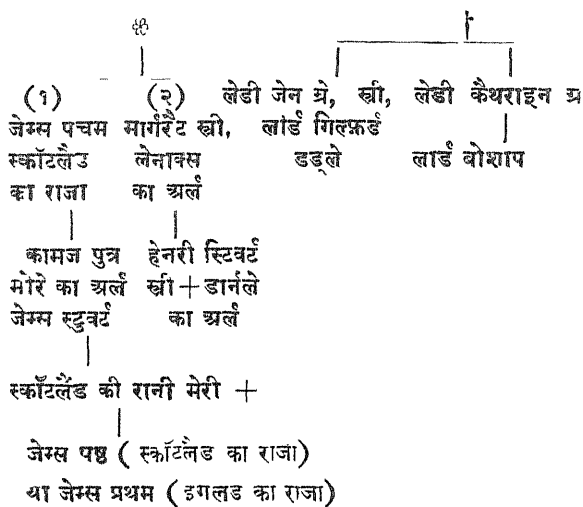
द्वितीय अध्याय

स्टुवर्ट-वंश का राज्य

प्रथम परिच्छेद

जेम्स प्रथम (१६०३—१६२५) और दैवी अधिकार (Divine Right)

(१) उत्पात का स्रोत

स्कॉटलैंड के राजा छठे जेम्स के इँगलिस्तान के राज्य पर आने से इँगलैंड के इतिहास ने नया रूप धारण किया। स्कॉटलैंड का छठा जेम्स इँगलैंड के इतिहास मे प्रथम जेम्स के नाम से लिखा जाता है। जेम्स का यह विश्वास था कि एलिजबेथ के बाद इँगलिस्तान के राज्य का वंश-परंपरागत यथार्थ उत्तराधिकारी मैं ही हूँ। वह राजा का दैवी अधिकार मानता था, अर्थात् कोई जाति किसी व्यक्ति को राजा नहीं बना सकती, राजा तो ईश्वर ही बनाता है। यह ईश्वर-कृत नियम है कि देश के राज-वंश मे उत्पन्न हुआ राजकुमार ही उक्त देश का राजा बने। अँगरेज़-जाति राजा के दैवी अधिकार-संबंधी इस सिद्धांत को अब पूर्ववत नही मानती थी। वह राजा को नियुक्त करना अपना अधिकार समझती थी। इस तरह अँगरेज़-जाति और

जेम्स के बीच ऐसा मत-विरोध होने के कारण दोनो मे झगडा होना स्वाभाविक ही था। यह उत्पात तब तक रुका रहा, जब तक जेम्स पार्लिमेंट के नियमो के अनुसार ही अँगरेजो पर शासन करता रहा। इसमे सदेह नही कि सबसे पहले जेम्स ने ही दैवी अधिकार-रूपी उत्पात का बीज इँगलैंड मे बोया। आगे चलकर इसका भयकर परिणाम यह हुआ कि उसके उत्तराधिकारी प्रथम चार्ल्स को अँगरेज-जाति ने सूली पर चढ़ा दिया और कुछ समय के लिये एक-सत्तात्मक राज्य को उखाडकर प्रजा-सत्तात्मक राज्य स्थापित कर दिया।

सबसे पहले दो बातो मे अँगरेज-जाति और जेम्स की मुठभेड हुई। पहला विषय था धर्म और दूसरा था राज्य-कर। प्यूरिटनिज्म (Puritanism) और कर-सबधी विरोध जेम्स की विदेशी नीति के कारण उत्पन्न हुए। इन दोनो बातो पर लिखने के पहले उस समय की योरप की राजनीति पर कुछ शब्द लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है। एलिजबेथ की मृत्यु के समय स्पेन का राजा फिलिप तृतीय था। फिलिप का पिता एलिजबेथ के प्राणो का ग्राहक शत्रु था। इसी तरह फ्रांस मे हेनरी चतुर्थ का राज्य था, जिसने नैंटे (Nantes) की घोषणा द्वारा, राज्य के कैथलिक होने पर भी, फ्रांस मे

जेम्स प्रथम

धार्मिक सहिष्णुता (Religious toleration) की घोषणा कर दी थी । जर्मनी में भी लगभग आधी सदी से हरएक राजा धर्म-ग्रहण करने के विषय में स्वतंत्र था । जर्मनी का कोई भी सम्राट् प्रोटेस्टेंट न था ; पर उनमें से किसी ने भी धर्म-ग्रहण के मामले में जनता को विवश भी नहीं किया। ऐसे समय में नीदरलैंड स्पेन से अलग होना चाहता था, क्योंकि वहाँ के लोग प्रोटेस्टेंट थे और स्पेन के लोग कैथलिक। योरप के प्रोटेस्टेंट स्पेन से डरते थे, क्योंकि वह कैथलिक मत फैलाने के लिये अत्यंत उत्सुक था । स्पेन की ही तरह

आस्ट्रिया भी कैथलिक मत को पसद करता था और चाहता था कि सपूर्ण योरप मे कैथलिक मत ही रहे । सम्राट् हेनरी चतुर्थ राजनीति मे अत्यत निपुण था, इसी कारण उसे बहुत पहले ही मालूम हो गया था कि योरप को आस्ट्रिया से अधिक डरना चाहिए, न कि स्पेन से । स्पेन शक्ति-रहित था, पर आस्ट्रिया नही ।

सन १६१० मे सम्राट् की मृत्यु हो गई । योरप की राजनीति ने एक नया ढग पकड़ा । सम्राट् का उत्तराधिकारी फर्दिनद (Feidinand) कैथलिक था । वह योरप मे अपने ही मत को फैलाना चाहता था । ऐसे विकट समय मे बोहेमिया (Bohemia) ने फर्दिनद को अपना राजा न माना और प्रोटेस्टेट-मतावलंबी पैलेटाइन फ्रेडरिक* (Frederick Palatine) को अपना राजा चुन लिया । इसका परिणाम यह हुआ कि फर्दिनद ने बोहेमिया पर चढ़ाई कर दी । योरप के कुछ राष्ट्रों ने तो फर्दिनद का साथ दिया और कुछ ने बोहेमिया का । इस तरह प्रायः सपूर्ण योरप मे युद्ध की धूम मच गई । यह युद्ध १६१८ मे शुरू हुआ और ३० साल

* उन दिनो जर्मनी कई छोटे-बड़े रजवाडो मे विभक्त था । इन राजों मे सबसे बड़ा राजा पैलेटाइन (Palatine) अर्थात् प्रधान कहलाता था और उसका राज्य पैलेटिनेट (The Palatinate)

तक जारी रहा। इसी से योरप के इतिहास में इस युद्ध को 'तीससाला युद्ध' कहते हैं। यद्यपि उक्त युद्ध का आरंभ उत्तराधिकार के झगड़े से हुआ था, और उत्तराधिकार का झगड़ा ही इस युद्ध का मूल कारण था, तथापि उसने शीघ्र ही धार्मिक झगड़े का रूप धारण कर लिया। इसी युद्ध में इस बात का निर्णय होना था कि आगे चलकर योरप में कौन-सा धर्म प्रबल रहेगा।

ऐसे भयंकर समय में फ्रांस की दशा विचित्र थी। फ्रांस का राजा लुईस तेरहवाँ बालक था, इसलिये संरक्षक-सभा ही वहाँ शासन का सारा काम करती थी। संरक्षक-सभा के सभ्य परस्पर एक दूसरे की बढ़ती को न देख सकते थे और इसी कारण उनमें सदा झगड़े होते रहते थे। १६२१ में लुईस तेरहवें ने राज्य-शासन की बागडोर अपने हाथ में ली और कार्डिनल रिशल्यू (Cardinal Richelieu) को अपना मुख्य मंत्री बनाया। रिशल्यू ने धीरे-धीरे सब जमींदारों और मांडलिक शासकों को अपने वश में कर लिया। सारांश यह कि तीससाला युद्ध (The thirty years' war) में फ्रांस ने जो भाग लिया, उसका कारण धार्मिक विचार नहीं था। वह अपने सभी प्रांतों में अपना प्रभुत्व मनवाने के लिये ही इस भयानक लड़ाई में शामिल हुआ। तीससाला युद्ध में इँगलैंड की क्या

नीति रही, इस पर कुछ लिखने के पहले अँगरेज़ी-राज्य की आंतरिक दशा पर कुछ लिखना जरूरी जान पड़ता है।

(२) प्यूरिटन और कैथलिक तथा राज्य-कर

जेम्स के राज्यारोहण के बाद दो षड्यन्त्र रचे गए। उनमें एक मुख्य और दूसरा गौण था। गौण षड्यन्त्र का उद्देश यह था कि राजा को कैद करके, उसे कैथलिक मत पर चलने और राज्य में उसी मत का प्रचार करने के लिये विवश किया जाय। किंतु मुख्य षड्यन्त्र का मतलब यह नहीं था। उस षड्यन्त्र की रचना करनेवाले लोग अर्बला स्टुवर्ट (Arbella Stuart) को राजगद्दी पर बिठाना चाहते थे। प्रधान मंत्री राबर्ट सेसिल ने दोनो ही षड्यन्त्रों का पता लगा लिया। अपराधी लोग फाँसी पर लटका दिए गए। सर वाल्टर रैले से सेसिल की शत्रुता थी। इसलिये उसने यह प्रकट किया कि षड्यन्त्र में रैले भी शरीक है। इसका परिणाम यह हुआ कि रैले लंदन-टावर में जन्म-भर के लिये कैद कर दिया गया और सेसिल सदा के लिये राजा का दाहना हाथ हो गया।

सभी दलों ने जेम्स को राजा स्वीकार कर लिया था। कैथलिक लोग समझते थे कि जेम्स प्रोटेस्टेंट होकर भी अपनी माता मेरी पर प्रोटेस्टेंटों के अत्याचार को स्मरण कर उन

कठोर नियमों को हटा देगा, जो उनके विरुद्ध प्रचलित थे। जॉन नॉक्स (John Knox) के प्रैसबिटेरियन सम्प्रदाय मे जेम्स की शिक्षा हुई थी, इसी से प्यूरिटन या डिसेंटर लोगो को विश्वास था कि वह हम लोगो के कष्टो को अवश्य दूर करेगा, क्योंकि जॉन नॉक्स के प्रॉटेस्टेंट अनुयायी, जो प्रैसबिटेरियन कहलाते थे, एक प्रकार के प्यूरिटन ही थे। जेम्स जब स्कॉटलैंड से लदन जा रहा था, तब प्यूरिटन लोगो ने इसी विचार से उसे एक प्रर्थना-पत्र (Millenry Petition) दिया, जिसमे कुछ भ्रम-मूलक प्रथाओ और कर्मकाड (Ritual) को बद करने की बात लिखी थी। उसका परिणाम यह हुआ कि जेम्स ने १६०४ मे हैंपटन-कोर्ट (Hampton Court) के अदर एक सभा की और उसमे प्यूरिटन और कैथलिक, दोनो दल के लोगो को बुलाया। राजकीय चर्च के बड़े-बड़े पादरी नेता भी वहाँ उपस्थित हुए। परतु वहाँ कोई विशेष निर्णय न हुआ; केवल प्रार्थना-पुस्तक मे कुछ थोड़े-से परिवर्तन किए गए। स्कॉटलैंड के प्यूरिटनो के बीच जेम्स प्रथम की शिक्षा-दीक्षा होने से इस सम्प्रदाय के अनुयायियो को बड़ी आशा थी कि वह जब राजा होगा, तो हमारे मतानुसार इँगलैंड के राजकीय चर्च मे सुधार कर देगा, जिससे हमे

उस चर्च से अलग न होना पड़ेगा। हैंपटनकोर्ट के शास्त्रार्थ मे प्यूरिटन पादरियो ने राजा से बहुत बहस की। इससे उसने अपनी विद्वत्ता का अपमान समझा। वह अपने को बड़ा विद्वान समझता था और विद्वान् था भी। योरप के राजो मे उसकी जोड़ का विद्वान दूसरा न था। इसी से वह ईसाई-देशो मे सबसे बड़ा पडित-मूर्ख (The most learned fool in Christiandom) कहलाता भी था। ऐसे अभिमानी के मुँह लगकर प्यूरिटनो-प्रतिनिधियो ने बड़ी मूर्खता की। इनके पक्ष की दृढ़ता को देखकर वह इनसे बहुत बिगड़ा। फिर ये लोग कहते थे कि धर्म की व्यवस्था के लिये इन पादरियो की कोई आवश्यकता नही है। जेम्स इस मत के विरुद्ध था उसका पक्ष था—No Bishops, No Kings अर्थात् धर्म की व्यवस्था मे यदि बिशपो की अनावश्यकता स्वीकार कर ली जाय, तो फिर किसी दिन राज-प्रबध मे राजा की अनावश्यकता का प्रश्न उठेगा। सारांश यह कि जेम्स ने प्यूरिटनो से चिढ़कर और उन्हे अधिकारी-पद का विरोधी समझकर उनकी एक न सुनी। कैथलिको का हित करना तो उसकी सामर्थ्य के बाहर था, क्योकि इँगलैंड के राजकीय चर्च (The established Church of England)

की रक्षा करना उसका कर्तव्य था। राज्याभिषेक के समय उसे इस बात की शपथ-पूर्वक प्रतिज्ञा करनी पडी थी कि मै राजकीय चर्च की रक्षा करूँगा।

प्यूरिटन लोग इससे सतुष्ट न हुए। इस कान्फ्रेंस से और तो कुछ फल न निकला, इतना अवश्य हुआ कि नए ढग मे बाइबिल का अनुवाद करने के लिये आज्ञा दे दी गई। अस्तु, १६११ मे राज्य की ओर से बाइबिल का नया अनुवाद प्रकाशित हुआ और अँगरेज़-प्रोटेस्टेटो ने हृदय से उसका स्वागत किया। यह सस्करण अब तक अँगरेज़ो के यहाँ पढ़ा जाता और प्रामाणिक सस्करण। (Authorised edition) कहलाता है।

रोमन कैथलिक लोग जेम्स से बहुत ही अधिक रुष्ट थे, क्योकि उनके विरुद्ध जो कठोर नियम थे, वे पहले की तरह बने ही रहे। उन कठोर नियमो से तग आकर उन्होने एक भयकर काम करना चाहा। १६०५ के नवबर की ५वी तारीख को पार्लिमेंट का अधिवेशन था। गाइ फाक्स (Guy Fawkes) को नेता बनाकर बहुत-से रोमन कैथलिको ने राजा, राजदरबारी और सारे प्रतिनिधियो के सहित पार्लिमेंट को बारूद से उडा देने का प्रबध किया। दैव-सयोग से सेसिल को इसका भेद मालूम हो गया। ४ नवबर को तलाशी ली गई। गाइ फाक्स पकडा गया।

पर्लिमेंट-भवन के नीचे एक घर से खोदी हुई सुरग मे बहुत-से बारूद के पीपे मिले । इस षड्यत्र का पता लगने से जेम्स कैथलिको से बहुत डर गया । उसने उनको दबाने के लिये और भी कठोर नियम बनाए ।

(३) जेम्स और उसके मत्री

जेम्स प्रथम दयालु, विश्वासी और विद्वान् था । वह शांति-प्रिय भी था । किंतु दुर्भाग्य-वश ऑगरेजो के रीति-रिवाज और स्वभाव को वह ठीक-ठीक नही समझता था । राज्य का काम-काज तो अपने कृपा-पात्रो पर छोड देता था और आप शिकार और अध्ययन मे ही अपना समय बिताना पसद करता था । इसके साथ ही 'राजा के दैवी अधिकार' का भूत भी उसके सिर पर सवार था । इसका परिणाम यह हुआ कि इँगलैड-जैसे स्वतत्रता-प्रिय देश मे वह शासन के काम को सफलता-पूर्वक न कर सका । जेम्स योरप की राजनीति को अच्छी तरह समझता था । पर उसमे वह पूर्ण रूप मे भाग नही ले सका, क्योकि उसे ऑगरेजो के स्वभाव का पूर्ण परिचय प्राप्त न था । इसी कारण वह अक्सर ऐसी बाते कर बैठता था, जिनमे व्यर्थ ही गड़बड मच जाती थी । वह अहमन्य भी बहुत था ।

लॉर्ड सेसिल की मृत्यु होने पर जेम्स ने अपने कृपापात्रो (Favourites) का सहारा लिया । उन सबमे मुख्य राबर्ट कर

(Robert Carr) था। यह जाति का स्कॉच्, बहुत ही सुंदर और वीर था। पर इसमें सबसे बड़ा दोष यह था कि यह मोटी बुद्धि का था—साधारण-से-साधारण बात को भी नहीं समझ पाता था। ऐसी दशा में कर ने सर टॉमस ओवर्बरी का सहारा लिया और उसकी मंत्रणा पर चलने लगा। कर की स्त्री ओवर्बरी से शत्रुता रखती थी। उसने अपने नौकरों से ओवर्बरी को कैद कराया और कैदखाने में मरवा भी डाला। उसकी मृत्यु के दो वर्ष बाद तक दिन-ब-दिन कर की शक्ति बढ़ती गई। इन्हीं दिनों उसने घमंड में आकर और लोगों से अच्छा व्यवहार न किया। यह बात इस दर्जे तक पहुँच गई कि जेम्स भी उससे कुछ-कुछ तंग आ गया। दैव-संयोग से एक दिन ओवर्बरी की मृत्यु का रहस्य सबको मालूम हो गया। लार्ड-सभा में कर तथा उसकी स्त्री पर अभियोग चलाया गया, जिसमें उन दोनों को मृत्यु-दंड की आज्ञा हुई। जेम्स ने दया करके दोनों को क्षमा कर दिया, पर कर को भिन्न-भिन्न राज्य-पदों से सदा के लिये हटा दिया।

कर के अव पतन के उपरांत जेम्स ने जार्ज विलियर्स (George Villiers) को अपना कृपा-पात्र बनाया। यह एक लफंगा स्कॉच था, पर देखने में अच्छा रँगीला-गठीला जवान था। कपड़े उधार लेकर राजा से मिलने गया था। उसके रूप-यौवन को देख-

कर जेम्स ने उसे मुसाहब बना लिया। वह इस सफलता से अभिमान में चूर हो गया और दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करने लगा। कुछ भी हो, जेम्स ने इसको धीरे-धीरे नव सेनापति तथा पहले दर्जे का अर्ल और कुछ ही समय बाद बकिंघम का ड्यूक (Duke of Buckingham) भी बना दिया। अन्य योग्य लोगों ने बकिंघम की कृपा से अपने को उच्च पद पर पहुँचाना शुरू किया। फ्रांसिस बेकन इसी की कृपा से चांसलर के उच्च पद पर पहुँच सका।

(८) जेम्स और परराष्ट्र नीति

जेम्स तथा उसके कृपा-पात्रों का ध्यान विदेशी नीति पर बहुत ही अधिक था। जेम्स को स्पेन से भय था। इसीलिये उसने १६०४ में स्पेन में संधि की और फ्रांस से भी पहले की ही तरह मित्रता कायम रक्खी। १६१० में फ्रांस का हेनरी चतुर्थ मर गया। इसका पुत्र बच्चा था, इसलिये हेनरी चतुर्थ की विधवा स्त्री ही फ्रांस का शासन करने लगी। वह स्पेन और कैथलिक दल के पक्ष में थी।

स्पेन अँगरेजों की सहायता चाहता था। जेम्स ने इस अवसर को अपने हाथ से खोना उचित न समझा। उसने स्पेन के राजा फिलिप की तृतीय पुत्री इन्फैंटा मेरिया (Infanta Maria) से अपने पुत्र चार्ल्स के विवाह का

निश्चय किया। १६१६ मे इस विवाह के लिये पत्र-व्यवहार शुरू हो गया। ऐसे ही समय मे धन की आवश्यकता आ पड़ी, जिसके कारण जेम्स ने एक ऐसा काम कर डाला, जो उसे न करना चाहिए था। सर वाल्टर रैले अपनी यात्राओ के दिनों मे गायना की सैर कर चुका था। कैद के दिनों मे उसकी कल्पना-शक्ति ने उसको यह सुझाया कि गायना मे बहुत ही अधिक सोने की खाने है। उसने जेम्स से प्रार्थना की—"मुझे इस कैद से छोड दीजिए। मै आपको बहुत ही अधिक धन दूँगा।" धन के लोभ मे फँसकर उसने रैले को कैद से छोड़ दिया और दक्षिण-अमेरिका मे जाने की आज्ञा दे दी। साथ ही उससे यह भी कह दिया कि इस महान यात्रा मे वह ऐसा कोई भी काम न करे, जिससे वहाॅ के स्पेनियो से झगड़ा हो पडे और वे हमसे रुष्ट हो जायँ। रैले ने राजा की सब शर्तों को मानकर दक्षिण-अमेरिका की ओर प्रस्थान किया। स्पेनी लोग गायना को अपना प्रांत समझते थे और इसी कारण रैले की इस यात्रा से असतुष्ट थे। रैले ने दक्षिण-अमेरिका पहुॅचते ही पहले की तरह स्पेनियों पर आक्रमण किया, पर अपने साथियो के कायरपन से इस आक्रमण मे वह सफल नही हो सका। उसको इॅगलैंड लौटना पड़ा। स्पेनिश राज्य ने जेम्स से रैले की बहुत ही शिकायत की और उसको दड देने के लिये जेम्स से आग्रह

किया। जेम्स स्पेन को खुश करना चाहता था, इसलिये उसने १६०३ के पुराने दंड के अनुसार रैले को फाँसी पर लटका दिया। रैले को फाँसी दी जाने से अँगरेजों में बहुत ही असन्तोष फैला। वे जातीय नेता या जातीय 'हीरो' (वीर) की तरह उसका सम्मान करने लगे।

जेम्स योरप के कैथलिकों और प्रोटेस्टेंटों से एक-सा व्यवहार करना चाहता था। धर्म के कारण किसी से विरोध करना उसे अभीष्ट न था। यही कारण है कि उसने एक ओर अपनी पुत्री का विवाह जर्मनी के एक प्रिंस के साथ किया, जो एक प्रोटेस्टेंट था और दूसरी ओर वह अपने पुत्र का विवाह एक स्पेनी राजपुत्री के साथ करना चाहता था, जो कैथलिक थी।

इसी समय बोहेमिया में लोगों ने सम्राट् फर्दिनंड के धार्मिक अत्याचारों से असंतुष्ट होकर जेम्स के दामाद फ्रेडरिक को, जो प्रोटेस्टेंट था, अपना राजा चुना। इसका परिणाम यह हुआ कि योरप में एक भीषण युद्ध छिड़ गया, जो 'तीस-साला युद्ध' के नाम से विख्यात है। फ्रेडरिक को यह आशा थी कि जेम्स तीससाला युद्ध में उसका साथ देगा। मगर जेम्स ने ऐसा नहीं किया। कारण, उसे धार्मिक युद्धों से घृणा थी। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रेडरिक अपनी स्थिति को

देर तक स्थिर न रख सका। उसको बोहेमिया के साथ ही अपने प्राचीन राज्य से भी हाथ धोना पड़ा। इससे जर्मनी के लोगों को बहुत ही अधिक चिंता हो गई। अँगरेज़-जनता स्वयंसेवक बनकर जर्मनी को सहायता पहुँचाना शुरू किया, मगर जेम्स के कानों में जूँ तक न रेंगी। इसी अवसर पर स्पेनियों ने स्पेन की राजपुत्री इनफैंटा के साथ इँगलैंड के राजपुत्र के विवाह का बातचित करने के लिये जेम्स को उत्तेजित किया। जेम्स ने भी इस ओर अपना ध्यान दिया। उसका विचार था कि ब्याह का मामला शुरू करके वह किसी उपाय से फ्रेडरिक का उद्धार कर दे। पर स्पेनिश लोग उससे चतुर थे। वे कब जेम्स का कहना मानने लगे। प्रश्न तो यह था कि यदि वे उसका कहा मानकर फ्रेडरिक को बोहेमिया आदि प्रदेश दिलाना भी चाहते, तो जर्मन-कैथलिक लोग कब माननेवाले थे। असल बात यह थी कि स्पेनियों ने जेम्स को धोखा देकर अपना मतलब साधने का ढोंग रचा था। जेम्स अच्छी तरह से बेवकूफ बनाया गया। उसने स्पेनियों से शादी के मामले में जब जल्दी करने को कहा, तो उन्होंने टालमटूल शुरू की। उन्होंने कहा—"तुम अँगरेज कैथलिकों को पहले पूजा-पाठ करने की पूरी स्वतन्त्रता दे दो, तब हम तुम्हारे पुत्र के साथ इनफैंटा का विवाह कर देंगे।" यह ऐसी बात थी,

जो जेम्स की शक्ति के बाहर थी। बकिंघम जेम्स के पुत्र चार्ल्स को इसी मतलब से अपने साथ स्पेन ले गया कि व्याह का मामला पूरे तौर पर तय हो जाय। स्पेन जाने पर चार्ल्स को मालूम हुआ कि स्पेनी मेरे पिता को धोखा दे रहे है। इस पर उसको बहुत ही क्रोध आया। उसने अपने पिता को स्पेन के साथ युद्ध करने के लिये उत्तेजित किया।

जेम्स ने फ्रांस के साथ संधि करके अपने दामाद फ्रेडरिक को बोहेमिया आदि प्रांत दिलाने का यत्न किया, परंतु इसमे वह सफल न हुआ। उसने अपने दामाद को जो सहायता पहुँचाई, उससे भी कुछ फल न निकला।

(५) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि स्कॉटलैंड का ही राजा जेम्स प्रथम के नाम से इँगलैंड के राज्यासन पर बैठा था। जेम्स के कारण इँगलैंड और स्कॉटलैंड परस्पर शांति-पूर्वक मिल गए। जेम्स दोनो ही देशो को स्थिर रूप से सदा के लिये परस्पर मिला देना चाहता था। इसी प्रयोजन से उसने कुछ-कुछ ऍंगरेज़ों के फैशन और रस्म-रिवाजो को ग्रहण कर लिया और स्कॉटलैंड मे भी उनका प्रचार किया। इससे स्कॉच् लोगो का रुष्ट होना स्वाभाविक था। ऍंगरेज़ भी जेम्स के व्यवहार से अधिक संतुष्ट न थे, क्योकि उनको किसी प्रकार का भी नया

परिवर्तन पसन्द नहीं था। अँगरेजों को बडा डर यह था कि कहीं स्कॉच् लोगों के कारण उनकी शासन-पद्धति मे फेर-फार न हो जाय। कुछ भी हो, जेम्स ने यह नियम कर ही दिया कि इँगलैंड मे स्कॉच् और स्कॉटलैंड मे अँगरेज विदेशी न समझे जायँ और दोनो देशों मे परस्पर समान रूप से व्यवहार हो। इस नियम को १६०७ की पार्लिमेंट ने मजूर न किया। इस पर उसने न्यायाधीशों का आश्रय लिया और उनसे यह व्यवस्था ले ली कि उसके अँगरेजी-सिंहासन पर बैठने के अनन्तर जो स्कॉच उत्पन्न हुआ हो, उसे अँगरेज-नागरिकों के सभी अधिकार प्राप्त है। इतना ही नही, उसने अँगरेजी-धार्मिक संस्थाओं के समान ही स्कॉच्-धार्मिक सस्थाओं का निर्माण किया। छुट्टियों के दिन भी वे ही नियत किए, जो ट्वीड के दक्षिण इँगलैंड मे प्रचलित थे। इससे स्कॉच लोग बहुत ही क्रुद्ध हो गए। उनके क्रोध को देखकर उस समय यही मालूम पडता था कि इँगलैंड और स्कॉटलैंड का आपस मे मिलना अभी शताब्दियों की बात है।

(६) अल्स्टर का बसाया जाना

जेम्स के इँगलैंड के सिंहासन पर बैठने के पहले ही ट्युडर-राज-वश ने आयर्लैंड को जीत लिया था। जेम्स को ही सारे आयर्लैंड और ग्रेट ब्रिटेन का पहला राजा

समझना चाहिए, क्योंकि इसके पहले किसी भी अँगरेज़ राजा का स्कॉटलैंड, आयर्लैंड, वेल्स और इँगलैंड पर पूर्ण रूप से एकाधिपत्य न था। आयर्लैंडवाले कैथलिक थे। उन्हे अपने ऊपर अँगरेजो का आधिपत्य बिलकुल पसद न था; वे समय-समय पर विद्रोह मचाकर स्वतत्रता प्राप्त करने का यत्न किया करते थे। १६०७ मे हीरोन के अर्ल ने विद्रोह करके अँगरेज़ो को आयर्लैंड से निकाल देने का यत्न किया, परतु उसे सफलता नही मिली और देश से भागना पड़ा। उसकी रियासत को अँगरेजो ने जब्त कर लिया और उस पर अल्स्टर का प्रसिद्ध उपनिवेश बसाया। इस उपनिवेश ने रोमन सैनिक-उपनिवेश का काम किया और आयरिश लोगो के स्वतत्र होने मे सर्वदा के लिये बाधा डाल दी। इससे जहाँ इँगलैंड को लाभ पहुँचा, वहाँ कुछ विकट समस्याएँ भी उसके सिर पर आ खड़ी हुई।

(७) वर्जीनिया तथा अन्य उपनिवेशो की स्थापना

जेम्स के शासन-काल मे इँगलैंड के राज्य का विस्तार दूर-दूर के देशो तक हो गया। अटलांटिक के पार बहुत-से अँगरेज़-उपनिवेश बस गए। १६०७ मे वर्जीनिया का उपनिवेश अँगरेज़ो ने बसाया और उसके एक नगर का नाम 'जेम्स-टाउन' रक्खा। इस उपनिवेश को शासन-प्रणाली

एक प्रकार से प्रजातन्त्रात्मक थी। कुछ ही वर्षों के बाद लॉर्ड बाल्टिमोर (Lord Baltemore) ने वर्जीनिया के पास ही मेरीलैंड-नामक उपनिवेश बसाया और १६३२ में चार्ल्स प्रथम से अधिकार-पत्र (Charter) प्राप्त कर स्वयं उसका मुख्य स्वामी बन गया। १६२५ में बार्बेडास-नामक अँगरेज-उपनिवेश बसा। इस उपनिवेश के लोगों ने नीग्रो दासों के द्वारा अपने यहाँ खेती का काम आरम्भ किया।

वर्जीनिया के उत्तर में 'न्यू इँगलैंड' नाम का उपनिवेश बसाया गया। प्लमथ-नामक उपनिवेश को उन अँगरेजों ने बसाया, जो इँगलैंड की धार्मिक बाधाओं से तंग आकर देश के बाहर चले गए थे। १६३० में मैसाच्युसैट्स-नामक प्रांत में भी वे लोग बस गए और उन्होंने उसकी राजधानी का नाम 'बोस्टन' रक्खा। अमेरिका के उत्तरीय भाग में जो उपनिवेश बसाए गए, उनके बसानेवाले लोग प्रायः व्यापारी, भठियारे और किसान आदि ही थे। उनमें कोई बड़े जमींदार नहीं थे। परंतु दक्षिणी भाग के उपनिवेशों के बारे में यह बात न थी। उनमें बड़े-बड़े ज़मींदार लोग बसे थे, जो नीग्रो लोगों से ही खेतों का काम कराते थे। इस भेद के होने पर भी समग्र अमेरिका में प्यूरिटन लोग ही अधिक थे। ये कैथलिक मत के विरोधी और प्रजातन्त्र राज्य के पक्षपाती थे।

सत्रहवी सदी के मध्यभाग तक इन अँगरेजो ने खूब उन्नति की और इँगलैड की कीर्ति को दूर-दूर तक फैलाया।

(८) जेम्स और पार्लिमेंट

जेम्स के समय मे अँगरेजो मे बडा भारी परिवर्तन हो गया। अब वे राजा के स्वेच्छाचार को जरा भी नही पसद करते थे। उनको राजा के अनुगत होकर चलना बिलकुल ही नापसद था। इसका कारण क्या था? ट्यूडर-वशी राजा तो इनसे भी बढकर स्वेच्छाचारी थे, पर आग्ल-जनता उन्हे बहुत मानती थी। एलिजबेथ के शासन-काल तक तो जनता ने राजा को मनमानी करने दी; पर जेम्स के तख्त पर बैठते ही उसका रुख बिलकुल बदल गया। बात यह थी कि प्रथम ट्यूडर-राजा हेनरी सप्तम के समय के पूर्व जनता अँगरेज-जमीदारो के द्वारा बहुत पीड़ित रहती थी। इस पर २५ वर्ष तक 'गुलाब-युद्ध' चला, जिससे प्रजा को बडे-बड़े कष्ट उठाने पड़े और वह यही मनाने लगी कि कोई ऐसा राजा हो, जो उसे जमीदारो के अत्याचारो से बचाकर शांति-पूर्वक रहने दे। हेनरी सप्तम ऐसा ही राजा था। इसलिये जनता बहुत काल तक बड़ी राजभक्त रही; पर धीरे-धीरे लोग पुरानी आपत्तियो को भूलते गए और अब उन्हे राजो की निरकुशता असह्य मालूम होने लगी। साथ ही धार्मिक स्वतत्रता प्राप्त

कर लेने के साथ-साथ उन्हे राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने की भी चाट पडी। राजा के ईश्वर-प्रदत्त अधिकार के विषय मे भी उनका विश्वास उठता गया और अत मे जेम्स प्रथम के बाद चार्ल्स प्रथम को उन्होने मार भी डाला। इससे ज्ञान पड़ता है कि पार्लिमेट की शक्ति दिन-दिन बढती ही गई। इन सब परिवर्तनो के कारण राजा और प्रजा का झगडा अनिवार्य हो गया।

जेम्स था विदेशी, उसको अँगरेजो के स्वभाव का ठीक-ठीक ज्ञान न था। शिक्षित, योग्य, दयालु और ईमानदार होने पर भी वह प्रजा-प्रिय न बन सका। उसके स्वभाव मे हठ की मात्रा बहुत ही अधिक थी। अँगरेज लोग भी अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये पूर्ण रूप से दृढ़ थे। इसका परिणाम यह हुआ कि जेम्स से पार्लिमेट की नही पटी। एलिज़बेथ किफायत-पसद थी, परतु जेम्स मे यह बात न थी। उसको बारबार पार्लिमेट से धन माँगना पड़ता था, और धन के बदले मे पार्लिमेट को अधिकार देने पड़ते थे।

जेम्स के समय मे सबसे पहली पार्लिमेट का अधिवेशन १६०४ मे हुआ। १६११ तक उसके प्रतिनिधि नए सिरे से नही चुने गए। पहले अधिवेशन मे ही पार्लिमेट ने जेम्स के प्रति अपने अधिकारो को प्रकट किया और धन देने के बदले बहुत-सा उपदेश दिया। इससे तग आकर जेम्स ने

न्यायाधीशों से सलाह ली और आयात-निर्यात-कर की दर तथा कर लगनेवाली चीजों की संख्या बढ़ा दी। जनता ने १६१० में राजा का विरोध किया और नवीन राज्य-करों को अनुचित ठहराया। इससे राजा और प्रजा में झगड़ा बढ़ गया। जेम्स ने १६११ में पार्लिमेंट को बर्खास्त ही कर दिया।

उसने तीन साल तक पार्लिमेंट से धन नहीं माँगा और राज-काज चलाया। उसकी आर्थिक स्थिति यहाँ तक बिगड़ गई थी कि १,००० पौंड के बदले में ही उसने 'बैरोनेट' की उपाधि लोगों को बाँटना शुरू कर दिया। लाचार होकर उसको पार्लिमेंट की बैठक करनी ही पड़ी। परंतु उसको पार्लिमेंट से पूरी सहायता नहीं मिली और बेकार झगड़ा बढ़ गया। इतिहास में यह पार्लिमेंट 'ऐडेल्ड पार्लिमेंट' (Addled Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है। ऐडेल्ड (Addled)—एग (Egg) का अर्थ सड़ा हुआ अंडा होता है, अर्थात् वह अंडा, जो निकल जाता है। इसीलिये ऐडेल्ड पार्लिमेंट का अर्थ हुआ व्यर्थ जानेवाली पार्लिमेंट, जिससे कुछ मतलब न निकला। उसके बाद सात साल तक जेम्स ने पार्लिमेंट का अधिवेशन ही नहीं किया और चुपचाप काम चलाता रहा।

फ्रेडरिक को सहायता पहुँचाने की इच्छा और तीससाला युद्ध के झमेलों को तय करने के उद्देश से जेम्स ने १६२१ और १६२४

मे पार्लिमेंट की बैठके की। जेम्स ने धन की सहायता माँगी और साथ ही यह भी कहा कि जहाँ तक हो सकेगा, मै युद्ध नही करूँगा। इस पर पार्लिमेंट ने उसको वही पुराना उत्तर दिया कि पहले हमारी शिकायतो को दूर करो, तब हम सहायता देगे। उसके सभ्य पहले खासकर एकाधिकारो (इजारो—Monopolies) को हटाना चाहते थे, क्योकि सर गाइल्ज मापूसन ने राज्य से शराब का इजारा प्राप्त करके लोगो मे मद्यपान की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढा दी थी। इसी प्रकार की अन्य बुराइयाँ भी एकाधिकारो के कारण उत्पन्न हो गई थी। प्रजा इन बुराइयो को दूर करना चाहती थी। बेकन एकाधिकारो के पक्ष मे था, इसलिये उस पर पार्लिमेंट मे रिश्वत लेने का मुकदमा चलाया गया। उसने अपराध स्वीकार कर लिया। इस पर पार्लिमेंट ने उसको पदच्युत करके कैद कर लिया, पर राजा ने उसे शीघ्र ही छोड़ दिया।

लॉर्ड बेकन (Lord Bacon) इॅगलैड का लॉर्ड चांसलर (Chancellor) अर्थात् न्यायविभाग का प्रधान अधिकारी था। वह वादी और प्रतिवादी, दोनो से उपहार (Present) रूप मे अच्छी रकम तो ले लेता था, पर न्याय ठीक-ठीक करता था। इससे देनेवाले बडी शिकायत किया करते थे। बेकन ने रुपया लेना तो स्वीकार किया, पर उसका कहना था कि मै न्याय ठीक-ठीक करता और यह रुपया विद्योन्नति

के कार्य मे लगाता हूँ, इसे अपने उपयोग मे नही लाता। एक दिन बेकन गाडी मे बैठा जा रहा था, बर्फ की वर्षा हो रही थी। उसके मन मे आया कि शीत से मांस आदि भोज्य पदार्थों के सड़ने पर कुछ असर होता है, या नही। उसने तुरंत एक मुर्गी का पेट चीरा, बाहर से बर्फ लाकर भरा और सी दिया। बर्फ गिरते समय बाहर जाने से उसे ऐसी शीत समाई कि वह बीमार होकर मर ही गया। बेकन अपने समय का दर्शन-शास्त्र का मौलिक एव अद्वितीय विद्वान् था (Experimental philosophy) अपने मौलिक विचारो के कारण यह दर्शन-शास्त्र के इतिहास मे अमर रहेगा। उक्त घटना के पॉच वर्ष बाद ही बेकन की मृत्यु हुई थी।

बेकन और इजारो के मामले मे जेम्स ने लोक-सभा का कहना मान लिया। इस पर पार्लिमेट ने जेम्स को धन की सहायता दे दी। कुछ ही महीनों के बाद पार्लिमेट का फिर अधिवेशन हुआ। सभ्यो ने जेम्स को यह सलाह दी कि वह अपने लड़के की शादी किसी प्रोटेस्टेट-मत को माननेवाली कन्या से करे। इस पर जेम्स को क्रोध आ गया। उसने पार्लिमेट को बर्खास्त कर दिया। १६२४ मे फिर पार्लिमेट का अधिवेशन हुआ। इजारो को राज्य-नियम (कानून) के विरुद्ध ठहराया गया। कोषाध्यक्ष पर मुकदमा चलाया गया। इसी

बीच में वृद्ध राजा जेम्स २७ मार्च, १६२५ को परलोक सिधारा।

(९) इंगलैंड की आर्थिक दशा

जेम्स प्रथम के समय में ऑगरेजों का व्यापार पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गया था। फिलिप द्वितीय की मृत्यु के उपरांत हॉलैंडवालों ने सिर उठाया और पुर्तगालवालों का व्यापार अपने हाथ में कर लिया। उनकी सफलता देखकर ऑगरेजों ने भी अपनी एक ईस्ट-इंडिया-कंपनी (The East India Company) बनाई। इस कंपनी ने सन १६०० में एलिजबेथ से प्रमाण-पत्र प्राप्त किया और भारत आदि देशों से व्यापार शुरू किया।

हॉलैंड से कब यह सहा जा सकता था। भारत में ऑगरेजों और डचों (Dutches) में घोर शत्रुता हो गई। एक दूसरे का जानी दुश्मन हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि १६२३ में अम्बॉयना (Amboyna) के छोटे-से द्वीप में डचों ने ऑगरेजों का कत्लआम कर दिया। पर भारत में ऑगरेजों के पैर जम गए। उन्होंने मुगल-सम्राट् से कोठी (Factory) खोलने का अधिकार-पत्र (फर्मान) प्राप्त किया। १६१२ में सूरत में और १६३९ में मदरास में ऑगरेजों की व्यापारी कोठियाँ खुल गईं। डचों ने 'केप ऑफ् गुडहोप' (Cape of

Goodhope) पर प्रभुत्व प्राप्त किया और उसे बंदरगाह बनाया। सेंट हेलेना (St. Helena)-द्वीप को अँगरेजों ने अपने ठहरने का स्थान बनाया । धीरे-धीरे ईस्ट-इंडिया-कंपनी (E. I. Company) का व्यापार और शक्ति बढ़ती गई, जिसका उल्लेख आगे चलकर किया जायगा ।

जेम्स के राज्य-काल की मुख्य-मुख्य घटनाएँ निम्न लिखित हैं—

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६०३	जेम्स प्रथम का राज्याभिषेक
१६०५	बारूद-षड्यन्त्र (Gunpowder Plot)
१६०७	वर्जीनिया में अँगरेज़ी-उपनिवेशों की स्थापना
१६१०	अल्स्टर में अँगरेजों का उपनिवेश और जेम्स प्रथम का पार्लिमेंट-विसर्जन
१६१४	एडिल्ड पार्लिमेंट (The Addled Parliament)
१६१८	रैले को फाँसी और तीस साल का युद्ध
१६२१	बेकन का अधःपतन
१६२४	स्पेन के साथ युद्ध
१६२५	जेम्स प्रथम की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

चार्ल्स प्रथम (Charles I) (१६२५-१६४९)

(१) चार्ल्स प्रथम का राज्याधिरोहण और स्वभाव

जेम्स प्रथम का पुत्र चार्ल्स 'चार्ल्स प्रथम' के नाम से इँगलैंड की राजगद्दी पर बैठा। उस समय उसकी अवस्था पचीस वर्ष

चार्ल्स प्रथम

की थी। सुंदर, प्रभावशाली और गंभीर होने पर भी उसमे ज्ञान और दूरदर्शिता की कमी थी। वह शर्मीला, घमंडी, संसार से अनभिज्ञ, रूखा और शक्की मिजाज का था। यद्यपि वह जान-बूझकर झूठ नही बोलता था, तथापि सत्य भी शायद ही कभी बोला हो। इसी कारण मित्र और शत्रु, कोई कभी उस पर किसी तरह का विश्वास न रखता था। वह बहुत ही अधिक गंभीर था, और यह गंभीरता इस हद तक जा पहुँची थी कि मानो हँसना उसने छोड़ ही दिया हो। वह न तो किसी की बात को ठीक-ठीक समझता था और न खुद ही ठीक तौर से बोल पाता था। वह अपनी कल्पनाओ मे ही मस्त रहता था। हठी तो वह परले सिरे का था। विद्या-प्रेम, पवित्र आचार तथा गंभीरता आदि गुणो को देखकर कुछ लोग उसके अनन्य भक्त थे। परंतु अँगरेज़-जनता के साथ उसका संबंध सर्वदा खींच-तान का ही रहा। इसका एक मुख्य कारण यह भी था कि जनता के साथ उसकी तिल-भर भी सहानुभूति नही थी। वह लोक-मत की रत्ती-भर परवा नही करता था। बकिंघम से (Duke of Buckingham) उसे विशेष अनुराग था। मंत्रियो को हमेशा यह शिकायत बनी रही कि वह अपने जी की बात नही बताता। इसलिये राजा की स्थिर नीति क्या थी, यह बताना कठिन था। उसकी स्त्री हैनिरिटा (Henrietta) कैथलिक

और धूर्त थी। उसका चार्ल्स पर बहुत ही अधिक प्रभाव था।

(२) इंगलैंड में राजनीतिक परिवर्तन

चार्ल्स के राजसिंहासन पर बैठने के समय इंगलैंड और स्पेन में लड़ाई हो रही थी। चार्ल्स अपने बहनोई फ्रेडरिक का फिर से उद्धार करना और स्पेनियों से लड़ना चाहता था। इसी मतलब से उसने डेन्मार्क के राजा क्रिश्चियन को इस शर्त पर सहायता देने का वचन दिया कि वह जर्मनी के प्रोटेस्टेंटों का पक्ष लेकर सम्राट् तथा कैथलिक-लीग पर आक्रमण कर दे। चार्ल्स को पार्लिमेंट से धन मिलने की बहुत अधिक आशा थी। कारण, वह कैथलिकों के विरुद्ध लड़ना चाहता था।

१६२५ में प्रथम पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। पार्लिमेंट ने इस शर्त पर राजा को धन देना मंजूर किया कि वह बकिंघम को सारे राज्य के पदों से अलग कर दे। इस पर चार्ल्स बहुत ही कुपित हो गया। उसने पार्लिमेंट की बैठक बर्खास्त कर दी। वह बिना किसी प्रकार की आर्थिक सहायता के ही योरप के युद्ध को चलाने के लिये तैयार हो गया।

चार्ल्स तथा बकिंघम ने अँगरेजी-व्यापारी जहाजों से लड़ाई के जहाजों का काम लेना शुरू कर दिया; बहुत-से

आदमियों को ज़बरदस्ती सैनिक बनाया । सेसिल उस सेना का सेनापति बनाया गया । उसे स्पेनियों के सोने-चाँदी से लदे हुए जहाज पकड़ने की आज्ञा दी गई। साथ ही यह आज्ञा भी दी गई कि वह स्पेन के कुछ नगरों को भी जीत ले । उसने केडीज़ (Cadiz) के प्रसिद्ध क़िले को शीघ्र ही जीत लिया और खाद्य सामग्री पास न रहने पर भी स्पेन-विजय के लिये रवाना हो गया । राह में अँगरेज-सैनिकों को बहुत-सी शराब की बोतलें मिल गईं । भूखे तो वे पहले ही से थे, इसलिये उन्होंने शराब पीकर ही अपना पेट भरा। आखिरकार सेसिल भी हैरान हो गया और उन बेहोश, बदमस्त सैनिकों को लेकर जहाज़ पर लौट आया। इस घटना के बाद उसने स्पेन-विजय का विचार बिलकुल ही छोड़ दिया और चुपचाप इँगलैंड को लौट पड़ा। इस युद्ध के कारण चार्ल्स ऋणी हो गया । उसने जो मूर्खता की थी, उसका फल उसको मिला। पार्लिमेंट और स्पेन, दोनों से एक साथ ही झगड़ा करने की योग्यता और शक्ति न होने पर भी उसने इसी को पसंद किया। यही कारण है कि न तो वह स्पेन को ही जीत सका और न पार्लिमेंट को ही अपनी इच्छा के अनुसार चला सका ।

१६२६ में उसने फिर दूसरी बार पार्लिमेंट का अधिवेशन किया। इस बैठक के बुलाने में उसने चतुरता से काम लिया। प्रथम अधिवेशन में जो लोग विरोधी दल के नेता थे, उनको उसने 'शेरिफ' या मंडल-शासक बना दिया। यह इसीलिये कि ये प्रतिनिधि बनकर पार्लिमेंट में न आ सकें। किंतु इस चतुरता में भी वह सफल न हुआ। अधिवेशन के आरंभ ही में सर जॉन इलियट (Sir John Eliot) ने कहा—"राज्य के कुप्रबंध की जाँच की जाय और बकिंघम पर अभियोग चलाया जाय, क्योंकि उसने इँगलैंड का सत्यानाश और शाही खजाने को खाली कर दिया है। उसकी फ़िज़ूलखर्ची, उसकी फ़िज़ूल दावतें, उसके शानदार मकान और भोग-विलास के सामान में राज्य की सारी आमदनी खर्च हो गई है। उसी के कारण इँगलैंड पर अगणित कष्टों का भार आ पड़ा है। इस कारण उस पर अभियोग चलाना अत्यंत आवश्यक है।" इस पर चार्ल्स ने इलियट को कैद कर लिया। परंतु जब पार्लिमेंट ने इलियट के बिना अधिवेशन करना स्वीकार न किया, तो चार्ल्स ने विवश होकर उसे छोड़ दिया। इसके बाद पार्लिमेंट ने बकिंघम को राज्य के पद से हटाने के लिये भी चार्ल्स से अनुरोध किया। इस पर चार्ल्स ने क्रुद्ध होकर पार्लिमेंट को ही बर्खास्त कर दिया।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि चार्ल्स धन के अभाव से विदेशी नीति में सफल नहीं हो सका। स्पेन ज्यों-का-त्यों शक्तिशाली बना रहा। चार्ल्स उसका कुछ न बिगाड़ सका। डेन्मार्क के राजा क्रिश्चियन ने, १६२६ में, जर्मन-कैथलिकों पर आक्रमण किया। मगर चार्ल्स की सहायता न पाने के कारण बुरी तरह से उसकी हार हुई। बेचारा चार्ल्स भी क्या करता? जब उसको पार्लिमेंट-सभा ने सहायता ही नहीं दी, तो वह उसको कहाँ से सहायता पहुँचाता। इन सब घटनाओं से दुःखित होकर उसने 'ला रोशेल' (La Rochelle) के ह्यूगनो लोगों के विद्रोह करते ही फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। इस काम में धन की ज़रूरत थी, इससे विवश होकर उसने अँगरेज़ी-प्रजा से धन लेना शुरू किया। अँगरेज़ी-कानून के अनुसार राजा प्रजा को, धन देने के लिये, विवश नहीं कर सकता था। रिचर्ड तृतीय के समय से ही यह कानून था कि राजा किसी से भी ज़बरदस्ती धन नहीं ले सकता। चार्ल्स ने जजों से सलाह ली। जजों ने उससे कहा—"लोगों को बाधित करके ऋण लेने में कुछ भी बुराई नहीं है।" इस पर चार्ल्स ने धनाढ्य अँगरेज़ों से बलात् ऋण (Forced Loans) लेना शुरू कर दिया। अस्सी आदमियों ने ऋण देना अस्वीकार किया। इस पर उसने उनको जंगी

कानून (मार्शल लॉ) के अनुसार कैद में डाल दिया। इलियट भी इन्हीं कैदियों में था। जो अँगरेज निर्धनता के कारण ऋण न दे सकते थे, उनको सैनिक बनने के लिये विवश किया गया। वे योरप में युद्ध करने के लिये भेज दिए गए।

इन कैदियों में पाँच नाइट भी थे, जिन्होंने राजा की इस आज्ञा को अँगरेजी-क़ानून के विरुद्ध बतलाया। उन्होंने अपने तई न्यायाधीश के सामने उपस्थित करने का यत्न किया। इस यत्न में उन्हें सफलता भी हुई। राजा ने उनमें से केवल डार्नेल-नामक व्यक्ति को न्यायाधीशों के निकट नहीं भेजा। न्यायाधीश भी राजा से डर गए, इसी से उन्होंने डार्नेल के छुटकारे के लिये राजा पर कुछ ज्यादा जोर नहीं डाला। अस्तु। इस सपूर्ण घटना का फल बहुत ही अच्छा हुआ। राजा को यह मालूम पड़ गया कि पार्लिमेंट का सहारा मिले बिना विदेशी राष्ट्रों से लड़ना बहुत ही कठिन है। राजा ने पाँचों नाइटों को छोड़ दिया और पार्लिमेंट को तीसरी बार बुलाया।

सन् १६२८ में पार्लिमेंट का तीसरा अधिवेशन बड़े समारोह के साथ हुआ। सर टॉमस वैंटवर्थ (Sir Thomas Wentworth) ने इलियट के ही समान लोक-सभा में बड़ा जोश

दिखलाया। इन दोनों के नेतृत्व में अँगरेज़ों ने यह प्रण किया कि हम लोग अपनी स्वतंत्रता और संपत्ति की रक्षा करेंगे और राजा को स्वेच्छाचार अर्थात् मनमानी नहीं करने देंगे। वैटवर्थ बकिंघेम से बहुत ही असंतुष्ट था और इसी कारण उसको राज्य के सभी पदों से हटाना चहता था। इसके साथ ही उसने पार्लिमेंट के सामने यह प्रस्ताव रक्खा कि आगे से किसी भी अँगरेज़ को विना वारंट के नहीं पकड़ा जा सकता और न किसी अँगरेज़ से, उसको विवश करके, ऋण ही लिया जा सकता है। इलियट इससे भी कुछ आगे बढ गया। उसने एक अधिकार-पत्र (Petition of Rights) का मसविदा तैयार किया और उसमें चार्ल्स के निम्न-लिखित कार्यों को गैरकानूनी ठहराया—

(१) पार्लिमेंट की आज्ञा या मंज़ूरी के विना धन लेना
(२) लोगों को विवश करके उनसे ऋण लेना
(३) व्यापारी जहाज़ों को सैनिक बेड़े का रूप देना
(४) नए-नए राज्य-कर को लगाना
(५) विना कारण लोगों को कैद करना
(६) ग़रीब अँगरेज़ों को सैनिक बनने के लिये बाध्य करना
(७) देश में मार्शल लॉ जारी करना

अँगरेज़ी-इतिहास में यह अधिकार-पत्र बहुत ही अधिक

प्रसिद्ध है। आरभ मे चार्ल्स ने टालमटूल की, लेकिन अत को हारकर उसे उक्त अधिकार-पत्र पर हस्ताक्षर करने ही पडे। हस्ताक्षर करते ही लोक-सभा ने उसे बहुत ही अधिक धन दे दिया। अधिकार-पत्र प्राप्त करने की प्रसन्नता मे सारे इँगलैड के भीतर छुट्टी मनाई गई। गिरजो मे घटे बजाए गए। सब ओर खेल-तमाशो की धूम मच गई। इन्ही बातो से मालूम पडता है कि उस समय लोग स्वतत्रता के कितने भूखे थे।

पार्लिमेंट से धन प्राप्त करके चार्ल्स ने अपनी सेना ला रोशेल की ओर भेजी। उस समय फ्रांस के राजा लुईस १३वे की शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ गई थी। उसने प्रोटेस्टेट लोगो के बडे-से-बडे किले को घेर लिया था। सारे प्रोटेस्टेट अँगरेजी-सेना की प्रतीक्षा कर रहे थे। दैवसयोग से पोर्टस्मथ की ओर जाते समय बकिंघम को फैल्टन (Felton)-नामक एक अँगरेज ने मार डाला। अँगरेज फैल्टन से बहुत प्रसन्न हुए। इस पर चार्ल्स के क्रोध की आग भडक उठी। अँगरेजो से उसका सबध और भी खींच-तान का हो गया। राजा ने फिर पुरानी नीति का अनुसरण और प्रजा की स्वतत्रता का अप-हरण करना शुरू किया।

सन् १६२९ मे चार्ल्स की तीसरी पार्लिमेंट का दूसरा अधिवेशन हुआ। पार्लिमेंट ने अधिकार-पत्र के झगड़े को

उठाकर राजा को बहुत भला-बुरा कहा। उसका कहना था कि राजा ने कुछ कानून-विरुद्ध चुगी (Custom Duties) लगाई है। इस पर राजा ने पार्लिमेंट के एक सदस्य को क़ैदखाने मे डाल दिया। कारण, उस सदस्य ने राज्य-कर देना अस्वीकार किया था। पार्लिमेंट ने राजा के इस कार्य को अपनी स्वतंत्रता मे हस्तक्षेप करना समझा और उस सभ्य को कैद से छुड़ाना चाहा। उसी समय चार्ल्स ने आर्मीनियन दल के कुछ पादरियो को बिशप बना दिया। प्यूरिटन लोग इससे बहुत ही ख़फा हो गए। यह झगड़ा यहाँ तक बढ़ा कि राजा ने पार्लिमेंट का अधिवेशन बंद करना चाहा। मगर हॉलैंड और वैलटाइन ने पार्लिमेंट-भवन के द्वार बंद कर दिए, राजकर्मचारी को बाहर ही से लौटा दिया। सदस्यो ने अध्यक्ष को कुर्सी से नीचे उतारकर बिठा दिया, क्योकि वह डर के मारे सभा-विसर्जन कर देना चाहता था। इलियट ने प्रस्ताव उपस्थित किए और लोक-सभा ने उनको पास किया। इन प्रस्तावो के अनुसार वे सब लोग देश-द्रोही ठहराए गए, जिन्होने धर्म मे ऐरियन (Arrian) लोगो को दाखिल किया और राजा को व्यापार का कर दिया था। इसके उपरांत पार्लिमेंट का विसर्जन कर दिया गया। चार्ल्स ने इलियट से नाराज़ होकर उसे टावर मे क़ैद करके, उसके साथ कठोर

व्यवहार किया। इसका परिणाम यह हुआ कि वह तीन साल के बाद अंत को क्षय-रोग से मर गया।

तीसरी पार्लिमेंट के विसर्जन (Prorogation) के साथ ही चार्ल्स के राज्य की प्रथम यवनिका गिरी और दूसरी उठी, जिसने १६२९ से १६४० तक नित्य नवीन दृश्य दिखाए। उसके पतन के साथ ही इँगलैंड ने एक भयंकर नए युग में प्रवेश किया, जिसका वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

(३) चार्ल्स का स्वेच्छाचारी राज्य (Rule without Parliament)

सन १६२९ से १६४० तक चार्ल्स ने पूर्ण रूप से स्वेच्छाचारी राज्य किया। पार्लिमेंट भी अपने अधिकारों की रक्षा का पूर्ण प्रयत्न करती रही। पार्लिमेंट में ट्यूडर-काल की अपेक्षा बहुत ही अधिक परिवर्तन हो गया था। उसके सभ्यों की यह इच्छा थी कि पार्लिमेंट की इच्छा के अनुकूल काम करनेवाले व्यक्ति ही राजा के मंत्री बनें। किंतु राजा को यह पसन्द न था। जब कभी पार्लिमेंट राजा से किसी मंत्री को हटाने के लिये कहती थी, तभी राजा क्रुद्ध हो जाता और इस बात को अपने अधिकारों में हस्तक्षेप करना समझता था। उसका ख़याल था कि पार्लिमेंट अब देश के शासन की क्षमता भी अपने ही हाथ में लेना चाहती

है—उसका इरादा है कि राजा को एक कठपुतली बना दे। इसका परिणाम यह हुआ कि राजा और प्रजा का झगड़ा चरम सीमा तक पहुँच गया। किसी को भी यह खयाल नहीं था कि यह झगड़ा देश को कहाँ ले जायगा। इसमें संदेह नहीं कि इस झगड़े के दो ही परिणाम हो सकते थे—या तो चार्ल्स लुईस १३वें की तरह स्वेच्छाचारी राजा बन जाता, या अँगरेजी-पार्लिमेंट की शक्ति अनंत सीमा तक बढ़ जाती और राजा एक खिलौना-मात्र रह जाता। चार्ल्स ने इन ग्यारह वर्षों में जिस तरह स्वेछाचारी राज्य किया और अपने अधिकारों को लोक-सभा के हस्तक्षेप से बचाया, उसका वर्णन आगे दिया जाता है।

पार्लिमेंट को धता बताकर चार्ल्स ने सबसे पहले धन एकत्र करने का उपाय सोचा। इस उद्देश से उसने संपूर्ण राज्य के व्यय को घटा दिया। फ़्रांस और स्पेन से युद्ध बंद कर दिया और उनसे संधि कर ली। परतु जर्मनी से तीस वर्ष चलनेवाला युद्ध जारी ही रहा। दैवसंयोग से स्वीडन के राजा गस्टॉवस अडल्फस (Gustavus Adolphus) ने, और उसकी मृत्यु के बाद लुईस १३वें (Louis XIII) के मंत्री रिशल्यू ने प्रोटेस्टेंट-मत के उद्धार का यत्न पहले की ही तरह जारी रक्खा।

सन्धि करने के बाद भी चार्ल्स को राज्य-कर से इतना धन नहीं मिला, जिससे वह ठीक ढंग पर राज-काज चला सकता। उसने किसी-न-किसी प्रकार राज्य-नियमों को तोड़ना शुरू किया और उन नियमों के नए-नए अर्थ निकालकर धन प्राप्त किया। उसने व्यापार के करों को बढ़ा दिया। शाही ज़मीन और नए जंगल बढ़ाने में भी उसने किसी तरह की कमी नहीं की।

इँगलैंड में, प्राचीन समय में, एक प्रथा यह थी कि एक निश्चित आमदनी से अधिक आमदनीवाले ज़मींदार को 'नाइट' (Knight) की उपाधि लेनी पड़ती थी, जिसके लिये कुछ फीस भी देनी पड़ती थी। यदि उपर्युक्त व्यक्ति नाइटों की उपाधि न ले, तो उस पर जुर्माना होता था। जब लोगों में नाइटों की अधिक क़दर न रह गई, तब ज़मींदारों ने नाइट बनना छोड़ दिया। इनमें बहुत-से ऐसे ज़मींदार भी थे, जो नाइट बनने के उपयुक्त होने पर भी नाइट न बने थे। अपनी आय बढ़ाने के लिये चार्ल्स ने उन पर जुर्माना कर दिया। इतना ही नहीं, उसने बहुत पुराना जहाज़ी कर (Ship Money) फिर से बाँध दिया और इस तरह समुद्र-तट-वासियों से धन लेना शुरू कर दिया। इन उपायों से जो धन प्राप्त होता था, वह सब जहाज़ों के बढ़ाने में ही खर्च होता था,

जिससे इँगलैड के व्यापार को धक्का न पहुँचे। जहाजी कर वसूल करने मे उसने पूर्ण सफलता प्राप्त की। आगे यह कर केवल तट-वासियो से लिया जाता था। इस सफलता मे उत्साहित होकर उसने देश के भीतरी भाग पर भी यही राज्य-कर लगा दिया। किंतु समुद्र-तट पर न रहनेवालो ने जहाजी कर देने से इनकार किया। राजा उसे ज़बरदस्ती वसूल करने लगा।

चार्ल्स के इन ऊपर लिखे कामो से जनता बहुत ही अधिक असंतुष्ट थी। सारे इँगलैड पर जहाजी कर लगते ही देश-भर मे खलबली मच गई। इलियट के परम मित्र और पार्लिमेंट के सभ्य हैंपडन (Hampden) ने जहाजी कर को, कानून के विरुद्ध कहकर, देने से इनकार कर दिया। १६३८ मे उस पर राज्य की ओर से मुकदमा चलाया गया। न्यायाधीशो ने डर के मारे राजा के पक्ष मे फैसला दिया और जहाजी कर को कानून के अनुकूल ठहराया। कुछ हो, जनता पर इस निर्णय का बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा। राजा और राजकर्मचारियो से असंतुष्ट जनता जहाजी कर के वसूल होने मे बाधाएँ डालने लगी।

चार्ल्स ने धन एकत्र करने के समान ही धर्म मे भी पूरे तौर से स्वेच्छाचारिता से काम लेना शुरू किया। प्यूरिटन

लोग पार्लिमेंट के पक्ष में थे। इस कारण चार्ल्स उनका जानी दुश्मन हो गया। वह लॉड (Laud) का शिष्य था, इस कारण ऐरियन (Arrian) दल पर पूर्ण श्रद्धा रखता था। इसी से प्यूरिटन लोग उमसे और भी अधिक चिढ़ गए। ऐरियन लोग राजा के दैवी अधिकार मानते थे। यही कारण है कि चार्ल्स ने १६२८ में लॉड को लदन का विशप बनाया और १६३३ में आर्चबिशप ऐबट (Abbot) के मरने पर उसको कैंटबरी का आर्चबिशप बना दिया। लॉड ने भी राजा का साथ अच्छी तरह से दिया और समय-समय पर उसको उचित सलाह देता रहा।

लॉड बहुत ही विद्वान् था। उसके आचार-विचार उच्च और शक्ति अपरिमित थी। वह धार्मिक संस्था की हालत को सुधारना चाहता था। उसमें एक ही कमी थी और वह यह कि वह दुनियादारी नहीं जानता था। इसी कारण वह जनता के स्वभाव को न पहचान सका और चार्ल्स ही की तरह भूलें करता गया। प्यूरिटन लोग स्वतंत्र विचार के थे। वे पुराने रस्म-रिवाज और संस्कारों में शिथिलता चाहते थे। लॉड को कब यह स्वीकार हो सकता था। इसका परिणाम यह हुआ कि प्यूरिटन लोगों को धार्मिक बातों के लिये मज-बूर किया गया। भला प्यूरिटन लोग कब इसे मंजूर कर सकते

थे ? इसके साथ ही उन्हें यह भी संदेह हो गया कि शायद प्रोटेस्टेंट-मत के नाम पर वह कैथलिक मत का ही प्रचार न करता हो। रानी के कैथलिक होने के कारण उनका यह संदेह पक्का हो गया। कुछ समय तक देश मे भीतर-ही-भीतर आग सुलगती रही। लॉड ने चर्च की शक्ति को बढ़ाना शुरू कर दिया। उसने अपराधियो को कठोर दंड भी दिया। स्टार-चेंबर ने भी राजा की इच्छाओ के अनुकूल ही निर्णय किया। एलेग्जेंडर लेटन (Alexander Leyton) नाम के एक डॉक्टर ने बिशपो के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी थी, इसलिये उसे कोड़े लगवाए गए, उसके कान कटवा लिए गए और वह कैद कर लिया गया। इसी तरह विलियम प्रीनन (William Prynne) को तत्कालीन नाटको के विरुद्ध पुस्तक लिखने के कारण कारावास-दंड दिया गया। यह क्यो ? इसलिये कि रानी को नाटको का बड़ा शौक था और वह खुद कभी-कभी खेल मे पार्ट लिया करती थी। अधिकार-पत्र (Petition of Rights) लेते समय सर टॉमस वैंटवर्थ (Sir Thomas-Wentworth) ने जो वीरता प्रकट की थी और लोक-सभा का साथ दिया था, उसका विस्तार के साथ वर्णन किया जा चुका है। बकिंघम के मरने के बाद उसमे आकाश-पाताल का अंतर हो गया। लॉड के साथ रहने से राजा मे

उसकी भक्ति हो गई। बेकन की तरह उसका भी यह विचार हो गया कि अशिक्षित पार्लिमेंट से देश की वह उन्नति नहीं हो सकती, जो एक शिक्षित और स्वेच्छाचारी राजा से हो सकती है। चार्ल्स ने भी वैटवर्थ को अपनाया। शुरू मे उसने उसको उत्तरीय सभा (The Council of the North) का प्रधान और उसके बाद आयर्लैंड का शासक बना दिया। वैटवर्थ ने दृढ़ता से आयर्लैंड का शासन और साथ ही देश के व्यापार-व्यवसाय एवं कृषि की उन्नति करने का यत्न भी किया। उसने लॉड के सिद्धांतो और विचारो को आयर्लैंड मे फैलाया।

आयर्लैंड की ही तरह स्कॉटलैंड पर भी अँगरेज़ी-राज्य का प्रभाव पड़ा। चार्ल्स ने स्कॉटलैंड के चर्च को अँगरेज़ी-चर्च के साथ मिलाने का यत्न किया और स्कॉटलैंड को पूर्ण रूप से इँगलैंड बनाना चाहा। परंतु यह काम बहुत कठिन था। १६३३ मे चार्ल्स एडिनबरा पहुँचा और वहाँ उसने अपना राज्याभिषेक करवाया। लॉड भी राजा के साथ था। उसने एडिनबरा मे एक नई बिशपरिक (Bishopric) स्थापित की। १६३७ मे स्कॉटलैंड के प्रैसबिटेरियन धर्म मे सुधार करवाने अर्थात् उस देश मे भी आंग्ल-धर्म (Church of England) चलाने का यत्न किया

गया। उन्हे भी अँगरेजो की प्रार्थना-पुस्तक स्वीकार करने के लिये विवश किया गया। स्कॉच लोग इस प्रार्थना-पुस्तक को रोमन कैथलिक मत की पुस्तक समझते और उसे बहुत ही घृणा की दृष्टि से देखते थे।

उक्त नवीन प्रार्थना-पुस्तक का पढ़ना अनिवार्य किए जाने के कारण सारे स्कॉटलैंड मे क्रोध की आग भडक उठी। वहाँ के निवासी विद्रोह करने के लिये तैयार हो गए। एडिनबरा के 'सेंट गाइल' नाम के चर्च मे पादरी ने ज्यो ही नवीन प्रार्थना-पुस्तक पढी, त्यो ही लोग शोर-गुल और दंगा करने लगे। स्कॉच् जनता और सरदार राजा के विरुद्ध उठ खड़े हुए। ग्रामीणो, पादरियो, नागरिको और सरदारो की भिन्न-भिन्न चार सभाएँ बन गई। वही स्कॉटलैंड का शासन करने लगी। ग्लॉसगो मे स्कॉच् लोगो ने एक बड़ी भारी जातीय सभा की। राजा ने जब इस सभा को बर्खास्त करना चाहा, तो सभा के सभ्यो ने उसकी आज्ञा नही मानी। उन्होने राजा से कह दिया कि तुम्हे हमारे धार्मिक मामलो मे हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नही है।

चार्ल्स इस कठिन समस्या को न हल कर सका। न तो उसके पास सेना ही थी और न धन, जिसके बल पर वह स्कॉट-लैंड की स्वतन्त्रता को मिटाता। अतएव उसने अँगरेजो

को स्कॉचो के विरुद्ध भड़काने का यत्न किया। परन्तु अँगरेज बिलकुल न भडके। उन्होंने स्कॉच् लोगो का पूरे तौर पर साथ दिया। लाचार होकर चार्ल्स ने इधर-उधर के गँवार तथा अशिक्षित लोगो को इकट्ठा किया और स्कॉच् लोगो से लड़ने के लिये यात्रा कर दी। स्कॉचो की सेना बहुत सुशिक्षित थी और उसमे एलेग्जेंडर लैस्ले-जैसे योग्य आदमी थे, जो युद्ध-कौशल मे अपने समय मे एक ही माने जाते थे। परिणाम यह हुआ कि १६३९ के युद्ध मे चार्ल्स बुरी तरह पराजित हुआ। यह युद्ध इतिहास मे प्रथम "बिशप-युद्ध" के नाम से प्रख्यात है। चार्ल्स ने स्कॉच् लोगो से सधि कर ली [यह सधि वारिक (Warwick) की सधि के नाम से प्रसिद्ध है] और स्कॉच् लोगो की शिकायतो को उन्ही लोगो के द्वारा दूर करने का प्रण किया।

इस सधि के बाद ही चार्ल्स ने वैटवर्थ को आयर्लेंड से बुला लिया। उसको 'स्टैफोर्ड का अर्ल' (Earl of Strafford) बनाया और सारी कठिनाइयाँ उसके सामने रक्खी। वैटवर्थ बहुत ही समझदार तथा नीति-निपुण आदमी था। उसने चार्ल्स को सलाह दी कि विना पार्लिमेंट की सहायता के स्कॉच् लोग न दबाए जा सकेगे। इस पर उसने एप्रिल, १६४० मे पार्लिमेंट का अधिवेशन किया। हैपडन तथा जान पिम (John Pym)

के नेतृत्व मे लोक-सभा ने राजा से स्पष्ट शब्दो मे कह दिया कि हम सहायता देने के लिये तैयार है, बशर्ते कि आप हमारी शिकायतो को दूर कर दे। राजा को यह मजूर न था, अतः उसने इस चतुर्थ पार्लिमेट को भी बर्खास्त कर दिया। इतिहास मे यह 'क्षणिक पार्लिमेट' (Short Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है।

पार्लिमेट से सहायता न पा सकने पर चार्ल्स ने फिर सेना एकत्रित की और स्कॉटलैड पर चढ़ाई करने की तरकीब सोची। ज्यो ही यह समाचार स्कॉच् लोगो को मालूम पड़ा, उन्होने इँगलैड पर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स प्रत्येक स्थान पर उनसे पराजित हुआ। लाचार होकर उसने उनसे सधि कर ली। यह सधि 'रिपन की सधि' (The Treaty of Ripon) के नाम से पुकारी जाती है। रिपन की सधि के अनुसार राजा ने स्कॉच् लोगो को पूरे तौर पर धार्मिक स्वतत्रता दे दी। इससे स्पष्ट है कि यह द्वितीय बिशप-युद्ध राजा चार्ल्स के लिये प्रथम बिशप-युद्ध की अपेक्षा भी अधिक भयकर सिद्ध हुआ। रिपन की सधि मे चार्ल्स ने यह प्रण किया था कि मै स्कॉच्-सेना को पूरी तनख्वाहे दे दूँगा। इससे उसकी आर्थिक दशा और भी बिगड़ गई। लोक-सभा से डरकर उसने यार्क-नगर मे लार्ड लोगो की एक महासभा की। लार्डो ने उसको पार्लिमेट

का अधिवेशन करने की सलाह दी। "करता क्या न करता"—इस न्याय के अनुसार ३ नवबर, १६४० को उसने पाँचवी पार्लिमेंट बुलाई, जो इतिहास मे 'लॉग पार्लिमेंट' (Long Parliament) के नाम से प्रख्यात है।

(४) लांग पार्लिमेंट का अधिवेशन

ऊपर लिखा जा चुका है कि ३ नवबर, १६४० को वेस्टमिन्स्टर मे सब पार्लिमेंट के सभ्य एकत्र हुए। उन्होंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि राजा के शासन मे जब तक पूरे तौर पर सुधार न कर लेंगे, तब तक इस सभा को विसर्जित न होने देंगे।

सभा ने सबसे पहले राजा के मन्त्रियो पर आक्रमण किया और उनको दोषी ठहराया। वैटवर्थ तथा लॉड पर अभियोग चलाए गए। वैटवर्थ का कोई भी अपराध सिद्ध न हुआ, क्योंकि उसने जो कुछ किया था, राजा की आज्ञा से किया था, और राज्य के मामलो मे राजा की आज्ञा पालन करने से उन दिनो किसी को दड नहीं मिल सकता था। जब पार्लिमेंट ने देखा कि कानूनी रीति से उसको दड देना असभव है, तो उसने वैटवर्थ के विरुद्ध यह प्रस्ताव पास किया कि वह देशद्रोही है और इसे फाँसी दी जाय। राजा को भी लाचार होकर फाँसी की आज्ञा पर सही करनी पड़ी। लॉड को भी

उसने कुछ समय के लिये लंदन-टावर में कैद कर दिया। इसके अनंतर 'लॉग पार्लिमेंट' ने राजा के संपूर्ण ढंग को ही बदलने का यत्न किया। उसने हाई कमीशन का न्यायालय, कोर्ट ऑफ् स्टार चेंबर तथा अन्य स्वच्छंद न्यायालयों को बंद कर दिया और उन्हें ग़ैरकानूनी ठहराया। पिम को कैद से छुड़ाया। डार्नैल तथा हैंपडन आदि के विषय में न्यायाधीशों ने जो निर्णय किया था, उसको ग़ैरकानूनी कहकर पलट दिया। पार्लिमेंट ने त्रैवार्षिक नियम (Triennial Act) पास किया। अभी तक पार्लिमेंट का अधिवेशन राजा की इच्छा पर निर्भर था। अब इसके अनुसार तीन वर्षों के बीच में कम-से-कम एक बार उसका अधिवेशन होना आवश्यक हो गया। साथ ही यह भी नियम बनाया कि लॉंग पार्लिमेंट तब तक विसर्जित (Dissolved) नहीं की जा सकती, जब तक वह स्वयं ही विसर्जित होना न मंज़ूर करे।

इन ऊपर-लिखे कानूनों के बनाने के बाद लोक-सभा ने चर्च की ओर अपना ध्यान दिया तथा हैंपडन की सलाह से 'रूट एंड ब्रांच बिल' (Root and Branch Bill)-नामक प्रस्ताव पेश किया गया। इसके अनुसार पादरियों की शक्ति का सर्वथा चकनाचूर हो जाना और पादरियों को साधारण लोगों

के कमीशन के अधीन रहना निश्चित होता, किंतु इस प्रस्ताव पर लोक-सभा के सभ्य दो दलो मे बँट गए। अत यह प्रस्ताव अभी पास नही हुआ था कि लोक-सभा के सभ्य छुट्टी पर चले गए।

पार्लिमेंट के सभ्यो के तितर-बितर होते ही चार्ल्स स्कॉटलैंड जा पहुँचा। दैवी घटना से स्कॉचो को एक षड्यंत्र का पता लगा, जो इसलिये रचा गया था कि स्कॉच् नेताओ को किसी-न-किसी तरीके से मार डाला जाय। स्कॉचो ने राजा को ही इस षड्यंत्र का मूल समझा। परतु उसने स्पष्ट शब्दो मे यह कह दिया कि मुझको इस षड्यंत्र का कुछ भी ज्ञान नही है। जो कुछ हो, इस षड्यंत्र के कारण राजा की बहुत ही अधिक बदनामी फैल गई। लोगो का उस पर से बिलकुल ही विश्वास उठ गया।

इसी समय आयर्लंड मे विद्रोह की आग भडक उठी। वेंटवर्थ की सख्ती से लोग बहुत ही तग थे। उसके वहाँ से हटते ही उन्होने अँगरेजी-राज्य की कठोरता से अपने को बचाना चाहा। आयरिश लोगो ने अँगरेजो पर खूब अत्याचार किए। हजारो अँगरेज नवयुवको को उन्होने जान से मार डाला। इस विद्रोह मे भी लोगो ने चार्ल्स का हाथ समझा। परतु उनको इसका कोई दृढ़ प्रमाण नहीं मिला।

१६४१ ई० में पुनः पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। राजा के विरुद्ध जो-जो किंवदंतियाँ उड़ी थी, पार्लिमेंट ने उनसे लाभ उठाने का यत्न किया। उसने एक दस्तावेज़, जिसका नाम Grand Remonstrance था, तैयार किया और उसमे चार्ल्स के सारे अत्याचार लिखे तथा चार्ल्स को इस बात पर विवश किया कि उसके सब मंत्री लोक-सभा के विश्वास-पात्र व्यक्ति ही होने चाहिए। बहुत विवाद के अनंतर पिम तथा हैंपडन ने लोक-सभा से इसे पास करवा लिया।

ऊपर लिखा जा चुका है कि धर्म-विषयक प्रश्न पर लोक-सभा के अंदर दो दल हो गए थे। उक्त लेख के प्रश्न पर तो दोनो दल एक दूसरे से लड़ ही पड़े। यही कारण है कि यह बहुत थोड़ी ही सम्मतियो से पास हुआ।

चार्ल्स ने इस झगड़े से लाभ उठाया। उसने ३ जनवरी, १६४२ को लॉर्ड किंबोल्टन तथा पार्लिमेंट के पॉच सभ्यो पर देश-द्रोह का अपराध लगाया। इन पॉच सभ्यो मे पिम तथा हैंपडन भी सम्मिलित थे। यही पर न रुककर वह स्वयं लोक-सभा के भवन मे गया और सभा से कहा कि पाँचो सभ्यो को मेरे सिपुर्द करो, क्योकि उन्होंने देश-द्रोह किया है। पाँचो को राजा की शैतानी पहले से ही

मालूम थी, अतः वे लदन-नगर मे छिप गए थे। पार्लिमेट के काम मे राजा का हस्तक्षेप करना पार्लिमेट की स्वतंत्रता और अधिकार के विरुद्ध है, अतएव राजा के बाहर निकलते ही सभ्यो ने "अधिकार, अधिकार" की पुकार से सभा-भवन को गुंजा दिया और पॉचो सभ्यो को राजा के हाथ मे देने से इनकार कर दिया। सभ्यो ने वेस्टमिस्टर से हटकर लदन-नगर मे शरण ली और वहीं पर सभा का अधिवेशन करना शुरू किया। लंदन-निवासी सभा के पक्ष मे थे, अत सभ्यो को राजा के स्वेच्छाचार से कुछ भी भय न था।

राजा ने बहुत ही अधिक यत्न किया कि वह पॉचो सभ्यो को किसी तरीके से पकड़ ले, परंतु वह अंत तक सफल न हो सका। लंदन-निवासी बहुत ही शक्तिशाली थे। उन्होने पॉचो सभ्यो को केवल सुरक्षित ही नहीं रक्खा, बल्कि वे उनको पार्लिमेट की उपसमितियो मे भी प्रतिदिन भेजते रहे। एक सप्ताह के बाद वे लोक-सभा मे आकर बैठे। जब यह बात चार्ल्स को मालूम हुई, तो उसने यह समझ लिया कि लदन-निवासी उसको अपना राजा नही मानते। इस अपमान से क्रुद्ध होकर वह हैपटन-कोर्ट मे चला गया और रत्नादि सपत्ति लेकर रानी नीदरलैंड को चल दी, जिससे वह वहाँ से अपने पति को सहायता पहुँचा सके।

(५) राजा तथा प्रजा का युद्ध

चार्ल्स प्रजा तथा पार्लिमेंट से युद्ध करने के लिये तैयार था और वे अपने-आपको बचाना चाहती थीं। यही कारण है कि १६४२ के पहले छः महीनो मे कोई भी युद्ध नहीं छिड़ा। "लॉर्ड-सभा से पादरियो को अलग कर देना चाहिए"—लोक-सभा के इस प्रस्ताव को भी बड़ी ही कठिनता से चार्ल्स ने मंजूर किया। कुछ ही समय के बाद सभा का मिलीशिया बिल (Militia Bill) नामक दूसरा प्रस्ताव राजा के सामने आया। इसका मतलब यह था कि जल तथा स्थल के सेना-पतियो को आगे से पार्लिमेंट स्वयं ही चुनेगी। जब राजा ने इस प्रस्ताव को मंजूर न किया, तो सभा ने सारे देश मे यह घोषणा कर दी कि अब आगे इस प्रस्ताव को सभा की आज्ञा के अनुसार राज्य-नियम ही समझा जाय। इतने ही पर सभा ने संतोष नहीं किया। उसने राजा की स्वीकृति के लिये 'नाइंटीन प्रॉपोज़िशंस' (Nineteen Propositions) अर्थात् उन्नीस प्रस्ताव भेजे, जिनके अनुसार राजा की सारी शक्ति प्रजा के हाथ मे चली जाती और राजा एक कठ-पुतली के सदृश पार्लिमेंट का खिलौना बन जाता। किंतु उसने इन प्रस्तावों को मंजूर न किया और स्वयं धन तथा सेना इकट्ठी करना शुरू किया। २१ अगस्त को नार्टिंघम (Nott-

ingham)-शहर मे अपना शाही झंडा खड़ा करके वह अपने पक्ष के लोगो को बड़ी शीघ्रता से एकत्र करने लगा।

राजा तथा प्रजा के इस गृह-युद्ध (Civil War) मे सारी अँगरेज़-जाति दो समान भागो मे विभक्त हो गई। चार्ल्स को यह देखकर बहुत ही खुशी हुई कि जनता के एक बड़े भाग ने पूरे तौर पर हमारा साथ दिया है। हाइड (Hyde) एवं फॉकलैंड (Falkland) के निवासियो तथा लोक-सभा के एक तिहाई और लॉर्ड-सभा के आधे के लगभग सभ्यो ने राजा का पक्ष लिया। ये लोग 'कॅवेलियर' (Cavalier) अर्थात् अश्वारोही के नाम से प्रसिद्ध हुए, क्योकि ये प्राय अमीर थे और अश्वो पर चढ़कर लडते थे। पार्लिमेट के पक्ष प्यूरिटन के बहुत छोटे-छोटे बाल रखते थे, इसलिये वे 'राउंडहेड' (Round-head) या गोल सिरवाले कहलाए। दोनो ही दलो के लोग यह कहते थे कि हम प्राचीन शासन-पद्धति के पक्ष मे है। पादरी लोग तो खुल्लमखुल्ला पार्लिमेट के विरुद्ध थे। एक-मात्र प्यूरिटन लोग ही पार्लिमेट के लिये जान देने को तैयार थे। कौन-कौन लोग राज-दल मे थे और कौन-कौन प्रजा-दल मे, इसका वर्गीकरण करना कठिन है। पर इसमे संदेह नहीं कि ग्रामीणो तथा लॉर्डो का अधिक अंश राज्य-दल मे और मध्य-श्रेणी के अँगरेज़ तथा व्यापारी और व्यवसायी पार्लि-

मेंट-दल में सम्मिलित थे । भौगोलिक विचार से यदि राज-दल तथा प्रजा-दल का वर्गीकरण किया जाय, तो यह साफ ही है । दक्षिण-पश्चिम के प्रांत, वेल्स तथा उत्तरीय प्रांत राजा के और लंदन तथा उसके आसपास के मंडल पार्लिमेंट के पक्ष में थे । जो कुछ हो, लोक-सभा के पास धन था, किंतु राजा के पास धन की कमी थी । वैसे ही राजा के पास शिक्षित सैनिक तथा अश्वारोही थे, परंतु लोक-सभा के पास ये बहुत कम थे ।

१६४२ का पहला युद्ध—मिड्लैंड में चार्ल्स के अनुयायियों की संख्या बहुत थी । उसने लिंडसे के अर्ल (Earl of Lindsey) को मुख्य सेनापति नियत किया और प्रिंस रूपर्ट (Prince Rupert) को अश्वारोहियों का सेनापति बनाया । राजा का विचार था कि लंदन के दक्षिणी भाग पर सबसे पहले आक्रमण करूँ, परंतु पार्लिमेंट के सेनापति एसेक्स (Essex) की चतुरता से उसको ऑक्सफोर्डशायर (Oxford Shire) तथा वारिकशायर (Warwick Shire) की सीमा पर स्थित 'एजहिल' (Edgehill)-नामक स्थान पर ही लड़ाई करनी पड़ी । प्रिंस रूपर्ट ने पार्लिमेंट की अश्वारोही सेना पर पूर्ण विजय प्राप्त की, परंतु पार्लिमेंट की पैदल सेना ने हार न खाई । उसने राजा की पैदल सेना को पूरी

तरह से नीचा दिखाया। रात होते ही एसेक्स पीछे हट गया। इससे ऑक्सफोर्ड पर राजा का प्रभुत्व स्थापित हो गया। इसको अपना मुख्य स्थान बनाकर राजा रेडिंग (Reading) होते हुए लंदन (London) की ओर रवाना हुआ। ब्रेंटफोर्ड में पहुँचते ही उसे लंदन-निवासियों की सेना लड़ने को तैयार मिली। किंतु उसे उस सेना से लड़ने की हिम्मत न हुई, इसी से वह ऑक्सफोर्ड में फिर लौट आया।

१६४३ का दूसरा युद्ध—१६४३ के दूसरे युद्ध में पहले-पहल राजा की जीत हुई। ऑक्सफोर्ड तथा लंदन के मध्य-स्थित 'शालग्रो' (Chalgrow) और फील्ड में दोनो दलों का युद्ध हुआ। इस युद्ध में हैंपडन घायल हुआ और मारा गया। इसकी मृत्यु से पार्लिमेंट-दल को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा, क्योंकि पिम पहले ही मर चुका था। ऐसे ही कष्टमय समय में राजा के सेनापति अर्ल न्यूकासिल (New Castle) ने लॉर्ड फ़ेयरफैक्स (Fairfax) तथा उसके पुत्र सर टॉमस फेयरफैक्स को 'एडवाल्टनमूर' (Edwalton Moor) में पराजित किया। स्ट्राटन-(Stratton)-नामक स्थान पर जो युद्ध हुआ, उसमें भी राज-दल ही विजयी रहा। इस प्रकार हल (Hull)-नगर को छोड़कर सारे यार्कशायर (Yorkshire), कार्नवाल (Cornwall), डेवन

Devon), सॉमरसेट (Somerset) तथा विल्टशायर (Wiltshire) के प्रदेश राजा के हाथ में आ गए । ग्लॉस्टर (Gloucestor) को छोड़कर सैवर्न (Severne)-घाटी के सब नगर भी राजा के ही कब्ज़े में आ गए । ब्रिस्टल (Bristol) ने राज-दलवालों के लिये अपने दरवाज़े खोल दिए । पश्चिम में समथ ने लोक-दल का अभी तक साथ न छोड़ा था ।

गृहयुद्ध

राज-दलवालों ने समर्थ, हल तथा ग्लॉस्टर की विजय में अपना सारा जोर लगा दिया। ग्लॉस्टर के घेरे में राजा स्वयं ही उपस्थित था। इधर पार्लिमेंटवालों ने ग्लॉस्टर को सहायता पहुँचाने के लिये एसेक्स को ससैन्य भेजा। एसेक्स का आना सुनते ही राजा भाग गया और ग्लॉस्टर-नगर राजा की क्रोधाग्नि में पड़ने से बच गया। एसेक्स लंदन की ओर लौट रहा था, राह में उसको न्यूबरी (Newbury)-नामक स्थान पर राज-दल से लड़ना पड़ा। यह युद्ध २० सितंबर (१६४३) को हुआ। इसमें राज-दल का नेता फॉकलैंड मारा गया और लंदन-निवासियों की पूरी जीत हुई। यह युद्ध इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है, क्योंकि इसी युद्ध के अनंतर राज-दल कमजोर पड़ गया और लोक-दल की शक्ति बढ़ गई।

न्यूबरी तथा ग्लॉस्टर के युद्ध के बाद, साल के अंत तक, कोई नया युद्ध नहीं हुआ। इंगलैंड के पूर्वी प्रदेश में प्यूरिटन लोगों का जोर था। युद्ध छिड़ते ही पूर्वी प्रदेश के सारे ज़िलों का एक सम्मेलन बन गया, जो 'पूर्वी सम्मेलन' के नाम से पुकारा जाता है। पूर्वी सम्मेलन ने प्यूरिटन लोगों की एक सेना बनाई, जिसके नेता ऑलिवर क्रांवैल (Oliver Cromwell), लॉर्ड किंबोल्टन तथा प्रलंब-पार्लिमेंट (Long Parliament) के कुछ सदस्य थे। वास्तव में पूर्वी सम्मेलन तथा

उसकी सेना का मुख्य नेता ऑलिवर क्रॉवैल ही था। उसकी सेना ने विस्बी-युद्ध मे उसी दिन लिंकनशायर को फतह किया, जिस दिन न्यूकासिल को हल-नगर का घेरा छोडने के लिये विवश होना पडा।

दो वर्ष के युद्धो के अनतर पार्लिमेंट तथा राजा ने बाहर के लोगो से सहायता मॉगने का यत्न किया। सौभाग्य से योरप के राष्ट्र 'तीससाला युद्ध' मे फॅसे हुए थे। इसी से कोई भी इॅगलैंड मे अपनी सेना न भेज सका। इस दशा मे चार्ल्स ने आयर्लैंड से और पार्लिमेंट ने स्कॉटलैंड से सहायता मॉगी। दोनो ही देशो ने कुछ खास-खास शर्तें मान लेने पर अपने-अपने पक्ष-वालो को सहायता पहुॅचाई।

१६४४ का तीसरा युद्ध—सन् १६४४ के शुरू होते ही दोनो दलो ने फिर नए सिरे से लडना शुरू किया। आयर्लैंड ने जो सेना राजा के पास भेजी, वह राजा तक नही पहुॅच सकी। पार्लिमेंट ने उसको इधर-उधर ही तितर-बितर कर दिया। स्कॉट-लैंड की सेना बहुत ही शिक्षित थी। वह किसी-न-किसी उपाय से पार्लिमेंट-दल के पास पहुॅच ही गई। उस सहायता के पहुॅचते ही प्यूरिटन सेनाओ ने यार्क मे न्यूकासिल तथा उसकी सेना को चारों तरफ से घेर लिया। मचेस्टर (Manchester) तथा क्रॉवैल भी पार्लिमेंट-दल की सहायता के लिये पहुॅच गए।

इधर चार्ल्स ने न्यूकासिल की सहायता के लिये प्रिंस रूपर्ट को भेजा। २ जुलाई (१६४४) को मार्स्टनमूर (Marston Moor) का प्रसिद्ध युद्ध हुआ। इसमें राज-दल पराजित हुआ और सारा उत्तरीय इँगलैंड पार्लिमेंट-दल के प्रभुत्व में आ गया।

ऐसे उत्तम समय में एसेक्स ने कार्नवाल पर आक्रमण कर दिया। इस प्रयत्न में उसकी सारी सेना नष्ट हो गई। क्राँवेल तथा मँचेस्टर को न्यूबरी के दूसरे युद्ध में एसेक्स की सुस्ती के कारण पूरी सहायता नहीं पहुँची, इससे उनको इस युद्ध में भी सफलता न प्राप्त हुई। दैव-संयोग से स्कॉटलैंड में मांट्रोज (Montrose) के अर्ल जेम्स ग्राहम (James Graham) ने राजा का पक्ष लिया और उत्तरीय स्कॉटलैंड से बहुत-सी सेना इकट्ठी कर ली। इसने लोक-दल के पक्षपाती कैंबल लोगों (Campbells) को बुरी तरह से हराया।

इस घटना से पार्लिमेंट-दल घबरा गया, क्योंकि उत्तरीय स्कॉटलैंड के लोग लड़ाई तथा वीरता में अपना सानी न रखते थे। परिणाम यह हुआ कि सभी लोक-दल के पक्षपाती एकत्रित हुए। उन्होंने असंगठन को ही अपनी पराजय का मुख्य कारण समझकर सर टॉमस फेयरफैक्स को सारी सेना का मुख्य सेनापति नियत किया और ऑलिवर क्राँवेल को उसका सहायक सेनापति तथा अश्वारोहियों का मुख्य सेनापति बनाया।

१६४५ का चौथा युद्ध—१६४५ के युद्ध मे इस संगठन का महत्त्व प्रकट हुआ। नेसबी (Naseby)-नामक स्थान पर १४ जून को पार्लिमेट-दल के साथ राज-दल का भयंकर युद्ध हुआ। इसमे क्रांवैल की सेना जीती। सितंबर (१६४५) मे मांट्रोज़ का अर्ल भी पराजित हुआ और वह योरप को भाग गया। इससे चार्ल्स बिलकुल निराश हो गया। वह स्कॉटलैंड पहुँचा, परंतु वहाँ उसको कुछ भी सहायता न मिली। स्कॉच् लोगो ने उसको कैद कर लिया। इन्हीं दिनो पार्लिमेट के भीतर फूट पड़ गई। धार्मिक मामलो मे पार्लिमेट के सभ्य दो दलो मे विभक्त हो गए। जो स्कॉच्-चर्च के पक्ष मे थे, वे प्रैसबिटेरियन, और जो इसके विरुद्ध थे वे इंडिपेडेट के नाम से पुकारे जाने लगे। क्रांवैल तथा उसके सैनिक प्रैसबिटेरियन-मत के विरुद्ध थे। इसका परिणाम यह हुआ कि पार्लिमेट-दल मे झगड़ा तथा युद्ध आरभ हो गया।

१६४८ का गृह-युद्ध—१६४८ मे अँगरेज़-प्रैसबिटेरियन लोगो ने स्कॉचो से मित्रता की। इनकी सेना लकेशायर तथा कंबरलैड की ओर से आगे बढ़ी और उसने राजा को कैद करने का यत्न किया। परंतु क्रांवैल ने प्रेस्टन (Preston) तथा वारिंगटन (Warrington)-नामक स्थानो पर स्कॉचो तथा अँगरेज़ो की सम्मिलित सेना को बुरी तरह से परास्त किया।

इससे सारा इँगलैंड प्यूरिटन लोगों के अधिकार में आ गया।

सेना के लोग धर्म के संबंध में सहिष्णुता (Toleration) चाहते थे और इसीलिये वे प्रलंब-पार्लिमेंट के असहिष्णु सदस्यों से नाराज थे। इसी से ६ दिसंबर, १६४८ के दिन कर्नल प्राइड (Col Pride) नाम का एक फौजी अफ़सर पार्लिमेंट-भवन में पहुँचा और उसने लोक-सभा के सारे प्रैसबिटेरियन सभ्यों को बाहर निकाल दिया। यह घटना इतिहास में Pride's Purge (प्राइड का रेचक) के नाम से प्रसिद्ध है। क्रांवैल तथा उसके सैनिकों ने चार्ल्स पर मुक़दमा चलाया। लोक-सभा के ५३ सभ्यों ने मिलकर १३५ सभ्यों की एक न्याय-समिति बनाई और ब्रैडशॉ (Bradshaw) को उसका प्रधान चुना। इस न्याय-समिति का एक सभ्य क्रांवैल भी था। विचार के समय १३५ में से केवल ६३ ही सभ्य आए। इन सभ्यों के सामने २० जनवरी (१६४९) को चार्ल्स पर मुकदमा चलाया गया। उस पर अत्याचारी, देश-द्रोही तथा घातक होने के अपराध लगाए गए। चार्ल्स ने उत्तर देने में अपना अपमान समझा और वह चुपचाप शांत भाव से खड़ा रहा।

न्यायालय ने उसको फाँसी का दंड दिया। अपनी स्त्री और बाल-बच्चों से प्रेम-पूर्वक मिल लेने के बाद, ३०वीं

जनवरी को, राजा चार्ल्स ह्वाइटहॉल-पैलेस (The White-hall palace)-नामक महल मे मार डाला गया। मृत्यु के समय लोगो के सामने उसके सारे गुण प्रकट हुए। उसके धैर्य, उसकी शांति और पवित्रता को देखकर लोगो ने रोना शुरू कर दिया। चर्च तथा शासन-पद्धति के लिये जो-जो आदमी शहीद हुए है, उनमे उसका नाम भी लिखा गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६२५	चार्ल्स प्रथम का राज्याधिरोहण
१६२८	अधिकार-पत्र (The Petition of Right)
१६२९	चार्ल्स का तृतीय पार्लिमेंट को विसर्जित करना
१६३३	लॉड को कैंटबरी का आर्चबिशप बनाना
१६३८	हैंपडन का अभियोग
१६४०	प्रलंब-पार्लिमेंट का अधिवेशन
१६४१	स्ट्रैफोर्ड को फाँसी
१६४२	एजहिल का युद्ध
१६४३	न्यूबरी का युद्ध
१६४४	मार्स्टनमूर का युद्ध
१६४५	नेस्बी का युद्ध
१६४८	द्वितीय गृह-युद्ध (Civil War)
१६४९	चार्ल्स प्रथम को फाँसी

तृतीय परिच्छेद

इँगलैंड मे प्रजा-तंत्र तथा सरक्षित राज्य (Common wealth and the Protectorate)

(१६४६-१६६०)

चार्ल्स की फाँसी के बाद हाउस ऑफ् कामंस ने लॉर्ड-सभा तथा राजा, दोनो को ही जनता की स्वतत्रता का नाशक ठहराकर अकेले आप ही राज-काज चलाने का इरादा किया। किंतु प्रबध का कार्य बहुत ही अधिक अनुभव के विना सुगमता से नहीं हो सकता, यह विचार कर हाउस ऑफ् कामन्स ने उक्त कार्य ४१ सभ्यो की एक स्थायी राष्ट्र-सभा (Council of State) को सौप दिया। उक्त राष्ट्र-सभा को प्राचीन प्रिवी-कौंसिल (Privy Council) का स्थानापन्न कहा जा सकता है। क्रॉवेल के चित्त मे शुरू से ही वेनिश तथा हॉलैंड के सदृश ही इँगलैंड मे भी कुलीन-तत्र राज्य (Oligarchy) स्थापित करने की इच्छा थी। इसके साथ ही वह प्यूरिटनो के लिये धार्मिक सहिष्णुता (Religious toleration) तथा देश मे शांति स्थापना का इच्छुक था। चार वर्ष तक इँगलैंड मे एक-मात्र प्रतिनिधि-

सभा ही शासन का काम करती रही। इन वर्षों में शत्रुओं ने इँगलैंड को किस प्रकार घेरे रक्खा और इँगलैंड ने भी संपूर्ण शत्रुओं को किस प्रकार परास्त किया, इसका इतिहास अति रोचक है। अतएव अब उसी पर कुछ प्रकाश डालने का यत्न किया जायगा

(१) युद्ध

चार्ल्स के वध से सारे योरप में आतंक छा गया था। रूस, फ़्रांस तथा डच-प्रतिनिधि-राज्य (Republic) ने इँगलैंड के प्रतिनिधि-तंत्र राज्य (Common wealth) को अनुचित ठहराया और उसके राजदूत अपने यहाँ रखने से इनकार कर दिया। स्कॉटलैंडवालों ने भी अँगरेज़ प्रतिनिधि-तन्त्र राज्य का साथ नहीं दिया और चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को अपना राजा मान लिया। आयर्लैंड के राज-पक्षपाती दल ने स्कॉचों का साथ दिया और डच-प्रतिनिधि-तंत्र राज्य ने चार्ल्स द्वितीय को, अपने पिता के वध का अँगरेज़ों से बदला लेने के लिये, सेना आदि के द्वारा सहायता पहुँचाई।

इन ऊपर-लिखी बाह्य विपत्तियों के सदृश ही अँगरेज़-प्रतिनिधि-तंत्र राज्य आंतरिक विपत्तियों से त्रस्त था। चार्ल्स के वध के अनंतर राज-पक्षपाती दल की सहानुभूति प्रतिनिधि-तंत्र राज्य में नहीं रही। अँगरेज़-जनता का पूर्व राजा के

प्रति जो भाव हो गया था, उसका अनुमान तत्कालीन 'राजकीय मूर्ति' (Kingly Image)-नामक पुस्तक में किया जा सकता है। यह किंवदंती थी कि मारे जाने के पहले चार्ल्स की बनाई हुई कविताएँ इस पुस्तक में मौजूद हैं। लेवलर्स (Levellers)-नामक आदर्शवादियों के एक संप्रदाय ने प्रतिनिधि-तंत्र राज्य के विरुद्ध सेना तथा जनता को भयंकर रूप से भड़काया। इन सब विपत्तियों के बादल चारों तरफ से घिरते हुए देखकर क्रॉवैल ने राष्ट्र-सभा में स्पष्ट रूप से यह कह दिया—"इनके शीघ्रही टुकड़े-टुकड़े कर दो। यदि तुम इनके टुकड़े-टुकड़े न कर दोगे, तो ये तुम्हारे ही टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।" क्रॉवैल ने लेवलर्स को शीघ्र ही दबाया और सेना में बढ़ रहे विद्रोह को भी शीघ्र ही शांत कर दिया।

(क) आयर्लंड की विजय

१६४९ से १६५० तक

आयर्लंड का बहुत-सा भाग कैथलिकों के हाथ में था। वे लोग राज-दलवालों के साथ मिल गए। १६४९ में क्रॉवैल ने सेना लेकर आयर्लंड पर चढ़ाई की। पहले-पहल उसने ड्रॉगेडा (Drogheda) तथा वैक्सफोर्ड (Wexford)-नामक नगरों को फतह किया। संपूर्ण आयर्लंड पर अपना प्रभाव स्थापित करने के लिये उसने ३,००० सिपाहियों को मरवा

उत्तम-उत्तम जमीनें छीन ली और अँगरेजों तथा स्कॉचों को बाँट दी। कैथलिक-धर्म का प्रचार रोकने का यत्न किया गया। आयरिश जमीदारों की जायदादें नीलाम की गई। इन अत्याचारों का परिणाम यह हुआ कि आयरिश लोगों को अँगरेजों के प्रति हार्दिक घृणा हो गई।

(ख) स्कॉटलैंड से युद्ध
१६५० से १६५१ तक

स्कॉटलैंड में प्रैसबिटेरियन लोग राजा के पक्षपाती थे। उन्होंने चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को अपना राजा मान लिया था। चार्ल्स द्वितीय भी प्रैसबिटेरियन लोगों की शर्तें मानकर जनवरी, १६५१ में राज-सिंहासन पर बैठा। अँगरेजों की राष्ट्र-सभा ने स्कॉचों को शीघ्र ही दबाना चाहा, क्योंकि ऐसा किए बिना स्कॉच्-आक्रमण से उनको स्वयं दबना पड़ता। १६५० की गर्मियों में क्रॉवैल ने स्कॉटलैंड पर चढ़ाई कर दी। ३ सितंबर को उसने डनबर (Dunbar)-नामक स्थान में स्कॉच्-सेना पर एक अपूर्व विजय प्राप्त की। इस घटना से भयभीत होकर स्कॉचों ने भी इँगलैंड पर चढ़ाई करने का इरादा किया। उनका खयाल था कि राज-दलवाले अँगरेज उनका साथ देंगे, इँगलैंड में आंतरिक विप्लव हो जायगा और क्रॉवैल को स्कॉटलैंड छोड़कर इँगलैंड

लौटना पड़ेगा। किंतु चढाई करने पर से स्कॉचो को मालूम पडा कि उनका खयाल गलत है, क्योकि अँगरेजो ने उनका साथ नही दिया। इसका कारण यह था कि वे पहले ही युद्ध से तग आ चुके थे। क्रांवैल ने स्कॉच्-सेना का पीछा न छोडा, और ३ सितंबर, १६५१ को 'उरस्टर' (Worcestor)-नामक स्थान पर उसको पराजित किया। इस विजय से स्कॉटलैड मे भी इँगलैड के सदृश ही प्रतिनिधि-सभा के राज्य की स्थापना हो गई। चार्ल्स द्वितीय बहुत कठिनाइयाँ झेलकर योरप को भाग गया।

(ग) डचो के साथ युद्ध

१६५२ से १६५४ तक

ब्रिटिश-द्वीपो की विजय के अनतर प्रतिनिधि-तंत्र राज्य ने अपना ध्यान विदेशी शत्रुओ की ओर फेरा। परस्पर व्यापारिक स्पर्द्धा के कारण डच तथा अँगरेजो मे द्वेष था। १६५१ मे प्रतिनिधि-तत्र राज्य ने नाविक कानून (Navigation Act) पास किया। इस कानून का मतलब यह था कि इँगलैड मे आनेवाला सामान या तो इँगलैड के जहाजो द्वारा आवे, या उस देश के जहाजो द्वारा आवे, जिस देश मे वह सामान बना या पैदा हुआ है। इस नियम के विरुद्ध आनेवाला सामान जब्त कर लिया जायगा। चूँकि सामान ढोने का काम डच लोगों के ही हाथ मे था, इससे उन्हे बड़ी हानि हुई। इस कानून का

अंतिम परिणाम यह हुआ कि डचों तथा अँगरेज़ों में एक भयंकर सामुद्रिक युद्ध हुआ। आरंभ में डच ही विजयी रहे। इसका कारण यह था कि उन दिनों योरप में डच ही नौ-शक्ति में प्रधान थे। ईश्वर के अनुग्रह से इस कठिन समय में अँग-रेज़ों को राबर्ट ब्लेक (Robert Blake) नाम के पुरुष ने बचा लिया। राबर्ट ब्लेक ने प्रथम युद्ध में डचों से पराजित होकर, १६५३ में, पोर्टलैंड पर एक अपूर्व विजय प्राप्त की। इस विजय से डच तथा अँगरेज़ नौ-शक्ति में एक दूसरे के बराबर हो गए। इससे प्रतिनिधि-तंत्र राज्य शत्रुओं से निश्चित हो गया। उसने इँगलैंड के आंतरिक प्रबंध पर फिर ध्यान दिया।

(२) इँगलैंड में राजनीतिक परिवर्तन

चार्ल्स की मृत्यु होने पर प्रतिनिधि-सभा में ८० सभ्य थे। नियमानुसार सभा का विसर्जन करके नए सभ्यों का निर्वाचन होना चाहिए था। परंतु ऐसा नहीं किया गया। अतः इसको प्रतिनिधि-सभा कहना कुछ कठिन ही प्रतीत होता है। यही नहीं, इसके सभ्य न्याय-परायण तथा सत्य-प्रिय भी न थे। प्रायः संपूर्ण शासन में गड़बड़ थी। सभ्यों के मित्र भिन्न-भिन्न राज्य-पदों पर विराजमान थे। राज-पक्षपातियों तथा धर्म पर अंध-विश्वास रखनेवालों पर अकारण ही अत्याचार किए जाते थे।

क्रांवेल इस अवस्था को न देख सका। वह प्रतिनिधि-सभा

का नया निर्वाचन करवाना चाहता था। परंतु उससे प्रतिनिधि-सभा सहमत न थी। लाचार होकर क्रांवैल ने ये शब्द कहकर कि "मैं तुम्हारे बकवाद को बंद करूँगा, यहाँ से निकल जाओ, उत्तम सभ्यों को अपना स्थान दो, तुम जनता के प्रतिनिधि नहीं हो, ईश्वर को तुम्हारा अंत अभीष्ट है।" प्रतिनिधि-सभा को जबर्दस्ती बरखास्त कर दिया। प्रजा प्रतिनिधि-सभा से पहले से ही क्रुद्ध थी, अतः किसी ने भी क्रांवैल के विरुद्ध शस्त्र नहीं उठाए।

दिसंबर, १६५३ में राज्याधिकारियों की सभा ने इँगलैंड के भावी शासन के लिये 'राज्य का साधन' (The Instrument of Government) नाम की एक योजना तैयार की, जिसकी मुख्य-मुख्य बातें निम्न-लिखित थीं—

१—इँगलैंड, स्कॉटलैंड तथा आयर्लैंड एक ही राष्ट्र के भिन्न-भिन्न भाग हैं, अत. इन तीनों की एक ही प्रतिनिधि-सभा तथा एक ही शासक-सभा होनी चाहिए।

२—इस प्रतिनिधि-तंत्र राज्य का शासन एक ही सभा के द्वारा होगा, अर्थात् इसमें 'सभा-उपविधि' के सिद्धांत पर काम न किया जायगा।

३—तीनों देशों के प्रतिनिधियों की कुल संख्या ४०० होगी। सभ्यों का निर्वाचन धन तथा पद के अनुसार होगा। २०० पौंड से कम संपत्तिवाले व्यक्ति को 'प्रतिनिधि' चुनने का अधिकार न होगा।

४—प्रतिनिधि-सभा के ही हाथ में राष्ट्र की नियामक शक्ति (Legislative power) रहेगी।

५—प्रतिनिधि-सभा किसी एक व्यक्ति को राष्ट्र का सरक्षक (Lord protector) नियुक्त करेगी, जो राष्ट्र-सभा (Council of State) की सहायता से सपूर्ण राष्ट्र का शासन करेगा।

क्रांवैल ब्रिटिश-राष्ट्र का सरक्षक नियुक्त किया गया। उसने बहुत बुद्धिमत्ता से शासन का काम प्रारभ किया। नवीन प्रतिनिधि-सभा ने अपनी पहली बैठक में ही सबसे पहले निर्वाचन की नवीन विधियों की आलोचना शुरू की। इस पर क्रांवैल ने प्रतिनिधि-सभा से कहा कि तुमको राज्य-साधन (Instrument of Government) के मुख्य सिद्धात स्वीकृत करने ही पड़ेंगे। जो व्यक्ति इन सिद्धांतों को स्वीकृत न कर सके, उसको इस सभा से निकल जाना चाहिए। इस पर भी प्रतिनिधि-सभा ने जब अकारण ही क्रांवैल को तग करना शुरू किया, तो उसने प्रतिनिधि-सभा को सदा के लिये बरखास्त कर दिया और एक-मात्र आप ही इँगलैंड का शासन करने लगा।

प्रतिनिधि-सभा को बरखास्त करके क्रांवैल ने स्वेच्छा-पूर्ण शासन शुरू किया। देश पर उसने नए-नए कर लगाए। उसने उन लोगों को पदच्युत कर दिया, जो उसकी शासन-प्रणाली की समालोचना करते थे। उसने इँगलैंड को दस ज़िलों में

बाँटकर उन पर अपने ही सैनिकों को, मेजर-जनरल (Major-General) का पद देकर, शासक के तौर पर नियुक्त किया। धर्म के मामले में क्रांवैल ने सहिष्णुता का प्रचार किया। चर्च के भिन्न-भिन्न मतवादियों को उसने स्वतंत्रता-पूर्वक राज्य के ओहदे दिए। एडवर्ड प्रथम के बाद यह पहला ही अवसर था कि उसने यहूदियों को इँगलैंड में बसने की आज्ञा दी। धार्मिक नीति के सदृश ही विदेशी नीति में भी क्रांवैल ने अपूर्व चातुरी प्रकट की। सारे योरप में उसने अपने को प्रोटेस्टेंट-मतवादियों का संरक्षक घोषित किया। इसी उद्देश से उसने, १६५४ में, डचों से संधि कर ली और प्रोटेस्टेंट-राष्ट्रों का एक संघ बनाने का यत्न किया। स्पेन तथा फ्रांस की शत्रुता थी। क्रांवैल ने फ्रांस से मित्रता करके स्पेन के सोने तथा चाँदी से भरे जहाजों को लूटने का इरादा किया। १६५५ में अँगरेजों ने स्पेनियों से जमैका-द्वीप छीन लिया। फ्लांडर्स (Flanders) की लड़ाई में अँगरेजों को डंकर्क (Dunkirk) का प्रसिद्ध बंदरगाह मिल गया। इस प्रकार क्रांवैल की विदेशी नीति से योरप में इँगलैंड का दबदबा छा गया।

प्रथम प्रयत्न में एक बार असफल होकर भी क्रांवैल ने, १६५६ में, फिर एक द्वितीय प्रतिनिधि-सभा बुलाई, क्योंकि

वह प्रजा-प्रतिनिधियों की सलाह से राज-कार्य करना चाहता था। इसने १६५७ में शासन की एक नई योजना तैयार की, जिसका नाम "विनीत सलाह तथा प्रार्थना" (Humble Petition and Advice) रक्खा गया। इसने शासन में ये परिवर्तन किए—

१—क्रांवैल को इँगलैंड का संरक्षक नियुक्त किया और उसको अपना उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार दिया।

२—प्रतिनिधि-सभा के साथ लॉर्ड-सभा को फिर से स्थापित किया।

इस नवीन परिवर्तन को चिरकाल तक देखने का अवसर क्रांवैल को न मिला। कार्य अधिक होने से उसका स्वास्थ्य खराब हो चुका था। ३ सितंबर (१६५८) को उसका देहांत हो गया। यह वही दिन था, जिस दिन उसने डनबर तथा उरस्टर पर अपूर्व विजय प्राप्त की थी।

(३) क्रांवैल के पुत्र रिचर्ड का इँगलैंड पर शासन

क्रांवैल की मृत्यु होने पर उसका पुत्र रिचर्ड इँगलैंड का संरक्षक बना। प्रतिनिधि-सभा ने रिचर्ड का साथ नहीं दिया। सैनिकों के साथ झगड़ा हो जाने पर रिचर्ड ने २५ मई, १६५९ को इँगलैंड के संरक्षक-पद से इस्तीफा दे दिया।

रिचर्ड के राज्य त्याग कर चले जाने पर इँगलैंड में बहुत

ही अधिक विक्षोभ हुआ। सैनिकों ने शासन-कार्य को कई प्रकार से सुधारने का प्रयत्न किया, परंतु जब सफलता न प्राप्त हुई, तो प्रतिनिधि-सभा बुलाई गई। प्रतिनिधि-सभा ने यह नियम पास किया कि "आगे से राजा, लॉर्ड लोगों तथा प्रतिनिधि-सभा के द्वारा इँगलैंड का राज्य-कार्य चलाया जायगा।" २६ मई को चार्ल्स द्वितीय इँगलैंड का राजा नियत किया गया और संपूर्ण शासन फिर पूर्ववत् चलने लगा।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६४६	प्रजा-तंत्र राज्य की स्थापना, क्रांवैल का आयर्लैंड को जीतना
१६५०	डनबर का युद्ध
१६५१	नेवीगेशन ऐक्ट
१६५२	डचों के साथ युद्ध
१६५३	राज्य का साधन
१६५५	जमैका का युद्ध
१६५७	विनीत सलाह तथा प्रार्थना
१६५८	क्रांवैल की मृत्यु
१६५६	रिचर्ड क्रांवैल का पद-त्याग

चतुर्थ परिच्छेद

चार्ल्स द्वितीय (१६६० १६८५)

(१) चार्ल्स द्वितीय का राज्याधिरोहण (Restoration)

चार्ल्स द्वितीय का पुनरुद्धार करने के अनंतर इँगलैंड को बहुत-से झगड़े तय करने पड़े। प्रेसबिटेरियन-मत के लोगों ने राजा को बाहर से बुलाया था। राजा के इँगलैंड में पहुँचते ही राज-दल के लोग भी आ गए। सब लोगों ने मिल-कर इँगलैंड में बहुत खुशी मनाई।

चार्ल्स द्वितीय को जिस लोक सभा ने बुलाया था, वह कन्वेंशन (Convention)-पार्लिमेंट के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। इँगलैंड को विपत्ति में पड़ा हुआ देखकर जॉर्ज मांक (Monk) नाम के सेनापति ने लोक-सभा के सभ्यों को नए सिरे से एकत्र होने के लिये आज्ञा दी। कर्नल प्राइड ने जिन-जिन सभ्यों को लोकसभा-भवन से निकाल दिया था, वे भी बुलाए गए। कन्वेंशन ने बैठते ही यह प्रस्ताव पास किया कि इस समय प्रलंब-पार्लिमेंट को विसर्जित समझा जाय। इस प्रस्ताव के बाद कन्वेंशन ने चार्ल्स से ब्रेडा की घोषणा (Proclamation of Breda) प्रकाशित करवाई, जिसके अनुसार प्रत्येक

धर्म तथा विश्वास के व्यक्ति को क्षमा दी गई। कुछ ही सप्ताहों के बाद कन्वैशन का फिर अधिवेशन हुआ। इसमे यह पास किया गया कि आगे से राजा, प्रजा तथा लॉर्डों के द्वारा इँगलैंड का शासन हुआ करेगा। साथ ही इसने 'एक्ट ऑफ् इंडेमनिटी' (Act of Indemnity) नाम का क़ानून भी पास किया, जिसके अनुसार उन सब ऍगरेज़ो के अपराध क्षमा किए गए, जो चार्ल्स प्रथम से लड़े थे। फिर भी, इनमे से १३ मनुष्यो को फाँसी पर चढ़ाया ही गया। ऑलिवर क्रांवैल, ब्रैड्शॉ (Bradshaw) तथा आइरटन (Ireton) आदि के शव कबरो से निकालकर फाँसी पर लटकाए गए।

माक की सेना को तनख्वाह दी गई और केवल ५,००० सैनिक ही स्थायी रूप से रक्खे गए। इँगलैंड की स्थायी सेना (Standing Army) का आरंभ इसी सेना से समझा जाता है। त्रैवार्षिक नियम हलका कर दिया गया और बिशपो को फिर वे ही पुराने अधिकार दिए गए। प्रलंब-पार्लिमेंट की कुछ काररवाइयों को छोड़कर शेष सब काररवाइयाँ नाजायज़ ठहराई गई। संरक्षित राज्य के जो नियम उचित तथा अच्छे मालूम पड़े, वे नए सिरे से पास किए गए। इन नियमो मे नाविक नियम ही मुख्य था, क्योंकि इससे ऍगरेज़ो की नौ-शक्ति बढ़नी थी। यही कारण है कि इसको कन्वैशन

ने भी फिर से मंज़ूर किया। सभा ने चार्ल्स को जीवन-भर के लिये १२ लाख पौंड वार्षिक धन देना मंज़ूर कर लिया और उसको कुछ और भी अधिक धन दिया।

(२) इंगलैंड में धार्मिक सुधार

कन्वैशन के कार्यों के विरुद्ध लोगों में आवाज उठने लगी। राज-दलवालों ने सभा के कार्यों से अपना मत-भेद प्रकट किया। उनको यह पसंद न था कि एक प्यूरिटन-सभा लोगों के भाग्य का निर्णय करे। इसका परिणाम यह हुआ कि राजा ने दिसंबर में कन्वैशन का विसर्जन कर दिया। १६६१ में नई पार्लिमेंट चुनी गई। इसने सबसे पहला काम यह किया कि चर्च का नए सिरे से सुधार कर डाला। प्रार्थना-पुस्तक तथा विषयों को नियम के अनुकूल ठहराया। जो-जो बिशप अपने-अपने पदों से हटा दिए गए थे, उनको उन-उन पदों पर पहुँचा दिया गया। बिशपों के जो स्थान खाली थे, उनमें नए बिशप नियुक्त किए गए। इस काम में पार्लिमेंट को कठिनता यह पड़ी कि छोटे-छोटे मंडलों के पादरी प्रायः प्यूरिटन लोग थे, जो प्रार्थना-पुस्तक को घृणा की दृष्टि से देखते और उसे पोपों की पुस्तक समझते थे।

इस ऊपर लिखी विकट समस्या को हल करने के लिये १६६१ में स्ट्रैंड के सेवाय (Savoy)-पैलेस के अंदर एक धर्म-

महासभा की गई। इसमें बिशप तथा प्रैसबिटेरियन-धर्म के नेता ही मुख्य रूप से बुलाए गए थे। सभा में बिशपों तथा प्रैसबिटेरियन लोगों का भयंकर झगड़ा हो गया और किसी भी तरीके से उनमें समझौता न कराया जा सका। इस सभा का जो मुख्य परिणाम कहा जा सकता है, वह यही था कि प्रार्थना-पुस्तक में कुछ ऐसे परिवर्तन कर दिए गए, जो प्यूरिटन लोगों को बिलकुल ही पसंद न थे।

पार्लिमेंट ने बहुत-से राज-नियम पास किए, जिनसे चर्च का पुनरुद्धार हुआ। उसने १६६१ में 'कार्पोरेशन ऐक्ट' (Corporation Act) पास किया, जिसके अनुसार म्युनिसिपिल कार्पोरेशन के सभ्यों के लिये प्रचलित चर्च के रस्म-रिवाज़ मान लेना आवश्यक ठहराया गया। १६६२ में ऐक्ट ऑफ् युनिफार्मिटी (Act of Uniformity) पास किया गया, जिसके अनुसार संशोधित प्रार्थना-पुस्तक का प्रयोग करने के लिये सब लोग बाध्य किए गए। जब ये राज-नियम काम में लाए गए, तो लगभग एक हजार पादरियों ने अपने-अपने पदों से इस्तीफा दे दिया। ये लोग इतिहास में डिसेंटर्स के नाम से प्रसिद्ध हैं। १६६४ में 'कन्वैंटिकल ऐक्ट' (Conventicle Act) पास किया गया। इसके अनुसार धार्मिक मामलों के लिये कोई भी सभा नहीं की जा सकती

थी और पाँच डिसेंटर एक जगह इकट्ठे नहीं हो सकते थे। १६६५ में 'फाइव माइल्स ऐक्ट' (Five Miles Act) पास किया गया, जिसके अनुसार स्कूलों में पढाने के लिये डिसेंटरों का जाना बन्द कर दिया गया और उन शहरों में उनका घुसना रोक दिया गया, जिनमें वे पहले रहा करते थे। इन नियमों का परिणाम यह हुआ कि डिसेंटर लोगों से इँगलैंड के कैदखाने भर गए। जॉन बनियन (John Bunyan)-जैसे व्यक्ति बेडफोर्ड की जेल में १२ वर्ष तक कैद रहे। यह 'पिल्ग्रिम्स प्रोग्रैस' (Pilgrim's Progress)-नामक पुस्तक का प्रसिद्ध लेखक था। यह पुस्तक इसने कैदखाने में ही लिखी थी।

स्पष्ट है कि इस प्रकार इँगलैंड में लॉड तथा चार्ल्स प्रथम का जमाना फिर आ गया। सबसे बडी बात तो यह है कि ये सारे धार्मिक संशोधन पार्लिमेंट ने स्वयं ही किए। लॉड के धार्मिक विचारों के फैलने से लोगों में राजा का महत्त्व बढ गया। नए-नए चर्चों ने चार्ल्स प्रथम को शहीद-बादशाह माना और उसकी तसवीर अन्य साधु-संतों के चित्रों के बीच में रक्खी जाने लगी। पादरियों ने राजा के दैवी अधिकार (Divine right) का प्रचार करना शुरू किया।

इँगलैंड के सदृश ही स्कॉटलैंड तथा आयर्लैंड के धर्म में भी परिवर्तन किया गया। रैसिसरी ऐक्ट के द्वारा वे सब

राजनियम अनुचित ठहराए गए, जो सन् १६३३ के बाद बने थे। प्रैसबिटेरियन-धर्म का नेता आर्गाइल चार्ल्स प्रथम की हत्या के अपराध में फाँसी पर चढ़ा दिया गया। इससे स्कॉटलैंड में विक्षोभ उत्पन्न हो गया और छोटे-छोटे विद्रोहों का होना शुरू हो गया। आयर्लैंड को स्वतन्त्रता देने का किसी के जी में खयाल भी न था। इस देश को प्यूरिटन लोगों के उपनिवेश ने इँगलैंड के अधीन रक्खा था। अतएव वहाँ धार्मिक सुधार करना बहुत भयंकर था, क्योंकि इससे आयर्लैंड सदा के लिये इँगलैंड के हाथ से निकल जाता। इस उद्देश्य से, १६६१ में, ऐक्ट ऑफ सेटिलमेंट (Act of Settlement) पास किया गया, जिसके अनुसार प्यूरिटन लोगों से उनकी जमीनें न छीनी गईं और उन संपूर्ण आयरिशों और अँगरेज़ों को सांत्वना दी गई, जिनकी जमीनें चार्ल्स प्रथम का साथ देने के कारण छीन ली गई थीं। ऐक्ट ऑफ् ऐक्सप्लैनेशन (Act of Explanation) के द्वारा संपूर्ण राज-पक्षपातियों को ज़मीनें बाँट दी गईं।

(३) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

चार्ल्स द्वितीय ने इँगलैंड की वैदेशिक नीति वही, रक्खी, जो क्रांवैल के समय में थी। उसमें उसने किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन नहीं किया। उसने लुईस चौदहवें के साथ

मित्रता कायम रक्खी। इस मित्रता में जो कुछ दोष था, वह यही कि इससे योरप में शक्ति-सामंजस्य (Balance of Power) नष्ट होता था, क्योंकि लुईस चौदहवें की शक्ति पहले ही अधिक थी। और भेद यह था कि क्रांवैल उससे प्रोटेस्टेंट लोगों को सुविधाएँ दिलाने के लिये उसे दबाया करता था, किंतु चार्ल्स लुईस के दबाव में स्वयं आ जाता और अपने ही देश में कैथलिक लोगों को सुविधाएँ कर देता था।

फ्रांसीसियों के साथ अँगरेजों की संधि होने से दो फल हुए—

१—चार्ल्स ने १६६२ में डकर्क को फ्रांसीसियों के हाथ बेच दिया। इससे अँगरेज बहुत ही असंतुष्ट हो गए। लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि चार्ल्स लुईस को खुश करना चाहता है।

२—इसी वर्ष चार्ल्स ने पुर्तगाल के राजा की बहन—ब्रागंजा (Braganza) की राजपुत्री—कैथराइन (Catherine) से विवाह कर लिया। यह प्रदेश १६४० में स्पेन से जुदा हो गया था और फ्रांसीसियों के सहारे ही अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कर रहा था। इससे स्पेन बहुत ही क्रुद्ध हो गया, क्योंकि उसको यह विश्वास हो गया कि पुर्तगाल अब उसके हाथ

मे कभी भी न आवेगा। जो कुछ हो, इँगलैंड को इस विवाह से अप्रत्यक्ष लाभ बहुत ही अधिक हुआ, क्योंकि पुर्तगाल ने विवाह मे चार्ल्स को जहाँ बहुत-सा धन दिया, वहाँ जिब्राल्टर के पास टंजियर तथा भारत मे बंबई भी अँगरेजो को दे दिए। चार्ल्स ने बंबई-नगर को, जो उस समय एक गाँव था, ईस्ट इंडिया-कंपनी को किराए पर दे दिया, जिसके सहारे कंपनी ने मरहठा-साम्राज्य मे प्रवेश किया और शनैः-शनैः उस पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

चार्ल्स इँगलैंड के व्यापार को बढ़ाना चाहता था। इसने सबसे पहला जो युद्ध किया, उसका मुख्य उद्देश्य व्यापार का बढ़ाना ही था। इन दिनो अँगरेजो तथा डचो का व्यापारिक संबंध दिन-पर-दिन बिगड़ रहा था। नाविक नियमो (नेविगेशन ऐक्ट) को फिर से प्रचलित करने के कारण हॉलैंड के लोग क्रुद्ध थे। आफ्रिका तथा उत्तर-अमेरिका मे अँगरेजो तथा डचो का वैसे भी सदा ही झगड़ा होता रहता था। अंत को, १६६५ मे, अँगरेज़-व्यापारियो की शिकायतो के कारण इँगलैंड ने हालैंड से युद्ध ठान दिया।

डचो के नौ-सेनापति रीटर (Ruyter) और अँगरेजों के नौ-सेनापति प्रिंस रूपर्ट तथा मांक और चार्ल्स के छोटे भाई जेम्स ड्यूक ऑफ यार्क थे। दो वर्ष तक लगातार युद्ध

होने के बाद अँगरेजों ने अपने जहाज़ अपने ही बंदरगाह मे खड़े कर दिए। इससे सारे समुद्र पर डचो का ही प्रभुत्व हो गया। डचो ने लंदन का संबंध सब ओर से तोड़ दिया। इँगलैंड मे बहुत ही अधिक घबराहट फैल गई। ठीक इसी समय लुईस चौदहवें ने डचो को सहायता देना शुरू किया। इस पर अँगरेज़ो ने डचो से ब्रेडा (Breda)-नामक स्थान पर संधि कर ली। संधि के अनुसार 'न्यू अमस्टर्डम' नाम के डच-उपनिवेश पर अँगरेजो का प्रभुत्व स्थापित हो गया। आजकल यही शहर न्यूयार्क के नाम से प्रसिद्ध है। इसके मिलने से अँग-रेजो को बहुत ही अधिक लाभ पहुँचा।

इन्हीं दिनों अँगरेजो के बहुत-से उपनिवेश (Colonies) अमेरिका मे स्थापित हुए। इन उपनिवेशो के कारण अँगरेजो का व्यापार-व्यवसाय पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गया। उपनिवेशो मे खेती का काम प्रायः आफ्रिकन नीग्रो-दासो के द्वारा करवाया जाता था। उत्तरीय अमेरिका मे फ्रांसीसियो के उपनिवेश भी स्थापित होने लगे। १६६३ मे लूसियाना का उपनिवेश इन्हीं लोगो ने बसाया था। पैसिल्वेनिया, न्यू-जर्सी आदि उपनिशो को अँगरेज़ो ने बसाया। इस प्रकार अमेरिका के बहुत-से भाग मे योरपियन जातियो के उपनिवेश स्थापित हो गए।

इन्हीं दिनों लंदन-नगर पर दो बडी भारी विपत्तियाँ आईं। १६६५ में लंदन के भीतर पहलेपहल प्लेग ने प्रवेश किया, जिससे बहुत-से लोग मरे। १६६६ में, शहर में, आग लग गई। इसमें भी लंदन-नगर को बहुत अधिक हानि पहुँची। इन दुर्घटनाओं से क्रुद्ध होकर लोगों ने क्लैरेंडन (Clarendon) से बदला लिया। यह राजा का कोषाध्यक्ष (Chancellor of the Exchequer) था। जब इस पर लॉर्ड-सभा में अभियोग चला, तो किसी ने इसका साथ न दिया। परिणाम यह हुआ कि इसको देश छोडकर बाहर चला जाना पडा। यह फ्रांस पहुँचा। राजा ने इसकी जायदाद जब्त कर ली। चार्ल्स के राज्य का पहला युग यहीं पर समाप्त होता है।

क्लैरेंडन के निकाले जाने के बाद अँगरेज-शासन में पाँच व्यक्तियों ने जोर पकडा, जिनके नाम ये हैं—

१. क्लिफर्ड (Clifford) इसके नाम के आरंभ का अक्षर = C
२. आर्लिंगटन (Arlington) ,, ,, ,, = A
३. बकिंघम (Buckingham) ,, ,, = B
४. आश्ले (Ashley) ,, ,, ,, = A
५. लाडर डेल (Lauderdale) ,, ,, = L

शुरू के सब अक्षर मिलाकर नाम बना Cabal=कैबैल

इस कैबल-मंत्रिमंडल ने संपूर्ण राज्य का कार्य बडी बुद्धि

मानों में चलाना शुरू किया। इसने लुईस चौदहवें की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना चाहा और इसी कारण स्वीडन तथा हालैंड से संधि कर ली। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रांस की गति रुक गई। लुईस ने इस संधि की जड़ हॉलैंड को समझा, अतएव उसने इँगलैंड से डोवर की गुप्त संधि (The Secret Treaty of Dover) की। इसके अनुसार उसने चार्ल्स को प्रतिवर्ष तीन लाख पौंड देना स्वीकार किया और उससे वचन लिया कि इँगलैंड में कैथलिक मत का प्रचार करे।

१६७२ में लुईस तथा चार्ल्स ने हॉलैंड पर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स के पास धन की यहाँ तक कमी हो गई कि उसने राज-कोष का वह सब धन भी खर्च करना शुरू कर दिया, जिसे अन्य सेठ-साहूकारों ने वहाँ जमा किया था। लोग जब अपना धन माँगने आते, तो निराश होकर लौट जाते।

लुईस ने अपनी सेना से हॉलैंड को इस प्रकार घेरा कि उसकी स्वतंत्रता संकट में पड़ गई। इस पर योरपियन जातियों ने मिल-कर हॉलैंड को बचाने का यत्न किया। प्रोटस्टेंट होने के कारण अँगरेज़-जनता की सहानुभूति भी हॉलैंड के साथ ही हो गई। इन्हीं दिनों हॉलैंड के ऑरेंज-प्रदेश के स्वामी विलियम (Will-

iam of Orange) ने हालैंड का नेतृत्व ग्रहण किया। यह बहुत ही वीर, बुद्धिमान् तथा प्रजा का हितैषी था। इसने अपने जीवन का यह उद्देश बना लिया कि किसी-न-किसी तरह लुईस चौदहवें को अवश्य ही नीचा दिखाना चाहिए। इसने सारे योरप को अपने साथ मिलाने का यत्न किया।

दैव-संयोग से डोवर की गुप्त संधि का हाल जनता को कुछ-कुछ ज्ञात हो गया। अँगरेज़-जनता अपने धर्म तथा स्वतंत्रता को बचाने के लिये कटिबद्ध हो गई। फलतः केबैल मंत्रि-मंडल पर आक्षेप-पर-आक्षेप होने लगे। इन आक्षेपों से अपने को बचाने के लिये उन लोगों ने धार्मिक स्वतंत्रता देना आरंभ किया। इससे डिसेंटरों को प्रत्यक्ष और कैथलिकों को परोक्ष-रूप से लाभ होने लगा। डिसेंटर लोग समझदार थे। वे भली भाँति जानते थे कि यह स्वतंत्रता देने में राजा की धूर्तता है, वह इस स्वतंत्रता की आड़ में कैथलिक लोगों की शक्ति बढ़ाना चाहता है।

पड़े। केबैल मन्त्रि-मडल शक्ति-रहित कर दिया गया। राज्य की सारी शक्ति डैन्बी के अर्ल सर टॉमस अस्वार्न (Sir Thomas Osborne, Earl of Danby) के हाथ मे चली गई।

(८)

(क) डैन्बी का सचिव तत्र राज्य

(ख) पहले ह्विग (Whig) तथा टोरी दल (Tory Party)-का उदय

पार्लिमेंट डैन्बी का बहुत अधिक विश्वास करती थी। डैन्बी ने शक्ति प्राप्त करते ही अँगरेज़ो की वैदेशिक नीति को बदलना चाहा, परतु चार्ल्स ने उसको ऐसा न करने दिया। चार्ल्स ने लुईस से एक और गुप्त सधि की, जिसके अनुसार उसने प्रतिज्ञा की कि मैं फ्रांस के विरुद्ध किसी भी योरपियन राष्ट्र से सधि न करूँगा। चार्ल्स तथा उसके दरबारियों ने लुईस से घूस लेना शुरू किया और देश के हित की हत्या कर डाली। डैन्बी को यह मजूर न था। इसलिये उसने अँगरेज-सेना जमा करके फ्रांस के विरुद्ध लड़ने का यत्न किया। यार्क की राजकुमारी मेरी का ऑरेंज के विलियम के साथ, जो प्रोटेस्टेंटो की ओर से फ्रांस के साथ लड रहा था, विवाह कर दिया।

चार्ल्स को डैन्बी की नीति पसद न थी। उसने फ्रांस

से, १६७८ में, निमूजेन (Nymgen) की संधि की। इन सब संधियों से भी जब फ्रांस को इँगलैंड का सहारा न मिला, तो लुईस ने क्रोध में आकर चार्ल्स तथा उसके दरबारियों की सारी कारखाइयाँ और गुप्त संधियाँ अँगरेज़-जनता के आगे प्रकट कर दीं।

लोगों ने सारा क्रोध क्लेरडन के सदृश डैन्बी पर निकालना चाहा। इस पर चार्ल्स ने, १६७९ में, पार्लिमेंट विसर्जित कर दी। इन्हीं दिनों टाइटस ओट्स (Titus Oates) नाम के पादरी ने लोगों को यह खबर दी कि कैथलिक लोग राजा को मार डालने के लिये एक षड्यंत्र की रचना कर रहे हैं। यह पादरी बड़ी दुष्ट-प्रकृति का मनुष्य था। अतएव इसकी बात पर किसी को विश्वास न हुआ। यह चुप हो गया। किंतु थोड़े दिनों बाद इसने फिर ऐसी ही बात फैलाना आरंभ किया और इस बार यह सफल हुआ। इसकी सफलता देखकर बहुत-से अन्य लोगों ने भी इस प्रकार की बातों का फैलाना अपना पेशा-सा बना लिया। बेचारे निरपराध कैथलिक फाँसी पर चढ़ाए जाने लगे।

१६७९ में नवीन पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। शैफ्ट्सबरी (Earl of Shaftesbury) ने इस सभा का नेतृत्व ग्रहण किया। दो राज-नियम पास किए गए—

१ हेबियस कार्पस एक्ट (Habeas Corpus Act)—इस एक्ट के अनुसार राजा किसी भी अँगरेज़ को बिना सम्मन के नहीं पकड़ सकता था।

२ एक्सक्लूज़न-बिल (Exclusion Bill)—इस नियम के अनुसार चार्ल्स के भाई यार्क के ड्यूक को राज्याधिकार पाने से च्युत करने का प्रस्ताव किया गया, क्योंकि वह कैथलिक था।

आरंभ में 'एक्सक्लूज़न-बिल' नहीं पास हुआ। राजा ने अपने भाई को बचाने के लिये जुलाई, १६७९ में पार्लिमेंट को विसर्जित कर दिया। कुछ समय पीछे नई पार्लिमेंट का संगठन हुआ। यह भी पुरानी पार्लिमेंट की तरह ही बिल को पास करना चाहती थी, इसलिये राजा ने इसका अधिवेशन ही करना उचित न समझा। बिल के पक्षपातियों ने राजा के पास एक प्रार्थना-पत्र भेजा कि वह पार्लिमेंट का अधिवेशन करे। अँगरेज़ी-इतिहास में ये लोग प्रार्थी या 'पिटीशनर' (Petitioners) के नाम से प्रसिद्ध हुए। बहुत-से लोग इस बिल को पास करने से डरते थे और राजा के अनन्य भक्त थे। ये इतिहास में 'एभोरर्स' (Abhorers) के नाम से पुकारे गए हैं। पहलेवालों को ह्विग (Whig) तथा पिछलों को टोरी (Tory) नाम

दिया गया।* इसी प्रकार का भेद चर्च मे भी कर दिया गया। इँगलैंड-चर्च के पक्षपातियो को 'हाई चर्चमैन' और प्यूरिटन लोगो को 'लो चर्चमैन' नाम दिया गया।

१६७६ मे स्कॉटलैंड के प्रैसबिटेरियन लोगो ने आर्च-बिशप शार्प की हत्या कर डाली और वे राजा तथा बिशपो के विरुद्ध विद्रोही बन गए। शैफ्टसबरी के कहने से मन्मथ का ड्यूक जेम्स (James, Duke of Monmouth) विद्रोह को शांत करने के लिये गया और उसने बॉथवैल-ब्रिग (Bothwell-brigg) पर विद्रोहियो को परास्त किया। चार्ल्स ने ड्यूक ऑफ् यार्क को विद्रोह-दमन के लिये भेजा था। उसने आर्गाईल के ड्यूक को स्कॉटलैंड से भगा दिया और फिर मार डाला। यह घटना १६६१ मे हुई।

१६८० के ऑक्टोबर मे पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। सभा ने एक्सक्लूशन-बिल पास कर दिया। परंतु लॉर्ड-सभा ने उसे मंज़ूर नहीं किया। तब चार्ल्स ने पार्लिमेंट विसर्जित कर दी। १६८१ के मार्च मे, ऑक्सफोर्ड मे, पार्लिमेंट का फिर अधिवेशन हुआ। परंतु इसको भी राजा ने विसर्जित कर दिया,

---

* ह्विग और टोरी, इन दोनो शब्दो का अर्थ पहले डाकू था। दोनो पक्ष एक दूसरे को इन नामो से पुकारते थे। धीरे-धीरे ये नाम अच्छे अर्थ मे आने लगे, जैसे कि हिंदू-शब्द का हाल हुआ।

क्योंकि राजा अपने भाई यार्क के ड्यूक को ही अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था, पर एक्सक्ल्यूज़न-बिल के अनुसार मन्मथ का ड्यूक उत्तराधिकारी होता। यह प्रोटेस्टेंट था, इसी लिये लोग उसे उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। किंतु वह चार्ल्स की विवाहिता स्त्री से न था और चार्ल्स इँगलैंड के सिंहासन पर एक दोगले को बैठाने के लिये राज़ी न होता था।

चार्ल्स ने धीरे-धीरे टोरी लोगों को संगठित किया और इस संगठन से शैफ्ट्सबरी को नीचा दिखाया। शैफ्ट्सबरी तथा मन्मथ डर के मारे हॉलैंड भाग गए। ह्विगों ने बेवक़ूफ़ी से एक षड्यंत्र रचा और राई-नामक मकान के सामने राजा को मार डालने का निश्चय किया। टोरी लोगों को इस षड्यंत्र का पता लग गया। इसमें जो-जो लोग सम्मिलित थे, उनको कत्ल करवाया गया। इतिहास में यह षड्यंत्र 'राई-हाउस-षड्यंत्र' (Rye House Plot) के नाम से प्रसिद्ध है।

चार्ल्स के अंतिम दिनों तक टोरी लोगों की शक्ति बढ़ी रही। फ़रवरी, १६८५ में चार्ल्स की मृत्यु हो गई। अँगरेज़-जनता ने इसकी मृत्यु पर बहुत ही अधिक शोक मनाया, क्योंकि यह अच्छे स्वभाव का मनुष्य था। इसमें जो कुछ दोष था, वह यही कि यह असदाचारी, स्वार्थी, अपव्ययी और अदूरदर्शी था। एक प्रकार से इसने इँगलैंड को लुईस चौदहवें के हाथ बेच ही दिया

था। इसने लुईस के धन पर अपने देश का धर्म बेच दिया और हर्ष के साथ इँगलैंड में कैथलिक मत फैलाना मंजूर कर लिया था। फिर भी यह प्रजा की सम्मति पर ध्यान देता और भरसक देश के राजनीतिक संगठन के अनुसार इँगलैंड का राज्य करता था। इसके राज्य की मुख्य-मुख्य घटनाएँ निम्न-लिखित हैं—

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६६०	चार्ल्स द्वितीय का राज्याधिरोहण
१६६२	ऐक्ट ऑफ़ युनिफार्मिटी
१६६३	कैरोलीना की स्थापना
१६६५	डच-युद्ध, महासंग
१६६६	लंदन में आग लगना
१६६७	बेडा की संधि, क्लैरंडन का अधःपतन
१६७०	डोवर की संधि
१६७९	डैन्बी का अधःपतन, हेबियस कार्पस ऐक्ट
१६८०	एक्सक्लूज़न-बिल का न पास होना
१६८१	पैंसिल्वेनिया को बसाना
१६८२	राई-हाउस-षड्यंत्र
१६८५	चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु

पंचम परिच्छेद

जेम्स द्वितीय

(१६८५-१६८८)

चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के अनंतर इँगलैंड में टोरी-दल ही प्रधान था। इसलिये यार्क का ड्यूक जेम्स द्वितीय के नाम से इँगलैंड का राजा बनाया गया। यद्यपि यह अपने भाई के समान योग्य न था, तथापि सावधान-प्रकृति का सुशासक था।

जेम्स द्वितीय

कैथलिक होने पर भी इसने प्रोटेस्टेंट मत के अनुसार अपना राज्याभिषेक-संस्कार करवाया। इसने पहलेपहल टोरी-मंत्रियों को ही राज-काज चलाने के लिये नियुक्त किया।

जेम्स प्रजा-मत से डरता न था। उसने एकदम स्कॉचों तथा अँगरेजों के प्रतिनिधियों को बुलाकर पार्लिमेंट का अधि-वेशन किया और उनसे यथेष्ट सहायता प्राप्त की। उसके टोरी-सभ्यों ने अपनी बहुसम्मति से जेम्स को १९,००,००० पौंड वार्षिक वृत्ति आजीवन देना स्वीकृत किया। प्रतिनिधि-सभा ने डैन्बी को कैद से छुटकारा दिया।

(१) राज-विद्रोह

जब ह्विग-दल ने देखा कि जेम्स के राज्यारोहण पर किसी प्रकार का झगड़ा नहीं हुआ, तो उसे बड़ी निराशा हुई। शांतिमय साधनों से नवीन राजा को वश में करना असंभव समझकर उन्होंने कुटिल मार्ग का सहारा लिया। १६८५ की गर्मियों में ह्विगों के दो दल ब्रिटेन में आए। इन दलों को सरकार ने विद्रोही करार दिया था। उन्होंने इँगलैंड में विद्रोहाग्नि प्रज्वलित करने का प्रयत्न किया। इन संघों में से एक संघ का नेता आर्गाइल का ड्यूक था। इसने विद्रोह खड़ा करने में पूर्ण रूप से सफलता नहीं प्राप्त की। कुछ ही समय के बाद यह राजा के आदमियों के

हाथ कैद हो गया और अपने पिता के समान ही फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

जून-महीने में मन्मथ के ड्यूक ने इँगलैंड में पदार्पण किया और अपने को इँगलैंड का वास्तविक राजा प्रकट किया। जो कुछ हो, सॉमरसेट-ज़िले में कुछ अधिकार प्राप्त करने पर भी वह ब्रिस्टल (Bristol) तथा बाथ (Bath) नाम के नगरों को अपने वश में न कर सका। परिणाम यह हुआ कि वह राजा की सेना से पराजित होकर पकड़ा गया, और १५ जुलाई को उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। इसके अनंतर चीफ़ जस्टिस जेफ़रीज़ (Jeffreys) ने सारे इँगलैंड में भ्रमण किया और उसको जो-जो लोग राजद्रोही जान पड़े, उन सबको उसने कठोर दंड दिया। इस काम से प्रसन्न होकर जेम्स ने जेफ़रीज़ को 'पीयर' (Peer—लॉर्ड) बना दिया और लॉर्ड-चांसलर के पद पर नियत किया। जेफ़रीज़ ने अपना काम इस निर्दयता से किया—और कुछ लोगों की सम्मति है कि इतने अन्याय से किया—कि वह इतिहास में बहुत ही बदनाम है। उसकी अदालत को लोग 'खूनी अदालत' कहते थे।

(२) धार्मिक क्रांति के लिये जेम्स का अंतिम प्रयत्न

इन दो विद्रोहों को थोड़े ही समय में सहज ही नष्ट कर

देने के कारण जेम्स समझने लगा कि मुझमें इतनी शक्ति आ गई है कि मैं लोगों की इच्छाओं का ध्यान न करके मनमाना काम कर सकता हूँ। अतएव उसने अपनी शक्ति का अनुचित लाभ उठाना आरंभ किया। वह हृदय से कैथलिक-मतावलंबी था और उसके लिये यह असह्य था कि उसके धर्म-भाई कैथलिक लोगों को राज्य का एक छोटे-से-छोटा पद भी न मिल सके, जब कि वह स्वयं इँगलैंड का राजा हो। उसने पार्लिमेंट से प्रार्थना की कि वह 'टैस्टऐक्ट' (Test Act) को हटा दे। पर उसने इसे स्वीकार न किया। निराश होकर जेम्स ने प्रतिनिधि-सभा को बरखास्त कर दिया, और संपूर्ण टोरी-मंत्रियों को राज-पदों से हटा दिया।

ऊपर लिखे गए कार्य करने के अनंतर जेम्स ने रॉबर्ट स्पेंसर (Spencer) को अपना सलाहकार बनाया। यह बुद्धिमान तथा राजनीतिज्ञ होने पर भी अत्यंत स्वार्थी था। राजा को खुश करने के इरादे से इसने इँगलैंड में कैथलिक-मत फैलाने की कोशिश शुरू कर दी।

चॉर्ल्स द्वितीय के राज्य-काल में ही इँगलैंड में इस विषय पर विशेष विवाद छिड़ा था कि किसी राजनियम को कुछ समय के लिये काम में न लाने की शक्ति (Dispensing power) राजा में है या नहीं? इसी शक्ति से काम लेकर चार्ल्स द्वितीय ने

डिसेंटरों (अर्थात् इँगलैंड के चर्च को न माननेवालों) को धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी थी ।

जेम्स ने कैथलिक-धर्मावलंबी एडवर्ड हेल्स (Edward Hales) को अपनी सेना का सेनापति नियुक्त किया । धीरे-धीरे उसने अन्य राज-पदों पर भी कैथलिकों को रखना शुरू कर दिया । इतना ही नहीं, जेम्स ने केंब्रिज-विश्वविद्यालय को लिखा कि तुम फ्रांसिस-नामक बैनिडिक्टाइन (Benedictine) भिक्षु को एम० ए० की उपाधि दे दो । उसने ऑक्सफोर्ड के मेग्डलीन कॉलेज (Magdalen College) के प्रबंध-कर्ताओं को भी इस बात के लिये विवश किया कि वे अपनी प्रबंध-कारिणी सभा का प्रधान एक कैथलिक को चुनें । आयर्लेंड का शासक भी एक कैथलिक नियत किया गया । इस प्रकार शिक्षा, सेना और शासन, सभी विभागों में जेम्स अपने सह-धर्मियों (कैथलिकों) को भरने लगा ।

इन सब घटनाओं का परिणाम यह हुआ कि १६८८ में सात बड़े-बड़े बिशपों ने राजा के पास प्रार्थना भेजी कि पादरियों को पुराने नियम तोड़ने के लिये लाचार न किया जाय । जेम्स ने क्रुद्ध होकर उन पादरियों पर मुकदमा चलाया । जजों ने बिशपों को निरपराध मानकर छोड़ दिया । यह मुकदमा चल ही रहा था कि जेम्स के पुत्र उत्पन्न हुआ । इस घटना से

ऑगरेजों का चित्त क्षुब्ध हो गया, क्योंकि उनको यह भय था कि जेम्स की मृत्यु होने पर उसका पुत्र भी कैथलिक मत का ही प्रचार करेगा। अभी तक जेम्स के कोई पुत्र न था। इससे लोगो को इस बात की आशा थी कि उसके मरने पर कोई प्रोटेस्टेट राजा होगा और शीघ्र ही उनके दुःख दूर होंगे। किंतु जब जेम्स के पुत्र उत्पन्न हुआ, तो उन्हे इस बात का भय हुआ कि अब कैथलिक-धर्म राज-वंश का परपरागत धर्म हो जायगा। कुछ लोगो का यह भी विश्वास था कि राजा के लडका हुआ ही नही, षड्यंत्र करके बाहर से एक लडका महल मे पहुँचा दिया गया है। इसलिये इँगलैड के बड़े-बडे व्यक्तियो ने जेम्स के दामाद विलियम ऑफ् ऑरेंज को, जो प्रोटेस्टेट था, इँगलैड मे राज्य करने के लिये बुलाया। विलियम ने ऑगरेजों की इच्छा के अनुसार ५ नवबर को इँगलैड मे प्रवेश किया और एग्जीटर मे लंदन की ओर धीरे-धीरे बढ़ना शुरू किया। इसी अवसर पर जेम्स के साथियो ने उसका साथ छोड़ दिया। उसकी कन्या एन तथा प्रसिद्ध सैनिक लॉर्ड चर्चिल (Churchill) ने भी जब उसका साथ न दिया, तो जेम्स फ्रांस भाग गया। २२ जनवरी (१६८६) को पार्लिमेंट-सभा का अधिवेशन हुआ। उसमे जेम्स की प्रवर्तित आज्ञाओ को रद करके विलियम को इँगलैड का राज्य सौंप दिया गया।

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६८५	जेम्स का राज्याधिरोहण, आर्गाईल तथा मन्मथ का विद्रोह
१६८८	जेम्स द्वितीय का अध पतन

षष्ठ परिच्छेद

विलियम तृतीय (१६८९-१७०२)

और

मेरी (१६८९—१६९४)

विलियम तृतीय

१३ फ़रवरी, १६८९को विलियम तृतीय तथा मेरी (William III & Mary) राज्य-सिंहासन पर बिठाए गए। जेम्स द्वितीय के भागने के कारण राज्य-नियमों में बहुत परिवर्तन

की जरूरत थी। २२ जनवरी (१६८६) की प्रतिनिधि-सभा को राज्य-नियमानुसार वास्तव मे प्रतिनिधि-सभा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि विलियम ने ही कुछ सभासदों को एकत्र करके इसका निर्माण किया था। वास्तव मे वे सभासद् जनता के प्रतिनिधि नहीं कहे जा सकते थे। जो हो, इसी प्रतिनिधि-सभा (Convention) ने वास्तविक प्रतिनिधि-सभा का रूप धारण कर लिया और बहुत-से राज्य-नियम पास किए, जो इस प्रकार हैं—

(१) राज्य-नियम

१. जेम्स के बहुत-से शासन-पद्धति-विरोधी कार्यों को अनुचित ठहराने के लिये 'अधिकारो का पत्र' (Bill of Rights) फिर पास किया गया। इसके अनुसार पार्लिमेंट की आज्ञा के बिना राजा के बहुत-से कार्य—जैसे स्थायी सेना रखना, प्रजा पर कर लगाना आदि—ग़ैर-क़ानूनी ठहराए गए। इसी की एक शर्त यह भी थी कि "आगे से वह व्यक्ति इँगलैंड का राजा न बन सकेगा, जो प्रोटेस्टेंट-मत का न होगा या जिसने ऐसी स्त्री से विवाह किया होगा, जो प्रोटेस्टेंट-मत को न मानती हो।"

२. अधिकार-पत्र (Petition of Rights) के द्वारा कोर्ट-मार्शल (Court-Matial—जंगी न्यायालय से) बागी

सिपाहियों का विचार करना बंद कर दिया गया था। जब सिपाहियों पर शासन की कठिनाइयाँ दिखलाई पड़ने लगी, तो पार्लिमेंट ने 'म्यूटिनी ऐक्ट' (Mutiny Act—विद्रोह के विरुद्ध कानून) पास किया। इस कानून के अनुसार छः महीने तक फौजी अदालतो द्वारा सिपाहियो पर शासन किया जा सकता था। इसके बाद यह कानून हर साल पास किया जाने लगा। यदि किसी साल यह पास न होता, तो राजा के पास सिपाहियो को शासन मे रखने का कोई कानूनी अस्त्र न रह जाता।

३ स्थायी सेना देश मे रखने से अँगरेज़-जनता डरती थी। इसी विचार से 'एप्रोप्रिएशन ऐक्ट' (Appropriation Act) पास किया गया, जिसके अनुसार पार्लिमेंट मे प्रतिवर्ष यह घोपणा की जाती थी कि "शांति के समय इँगलैंड मे स्थायी सेना रखना राज्य-नियम के विरुद्ध है, इँगलैंड मे शांति स्थापित करने के लिये स्थायी सेना नही रक्खी गई है। योरपियन जातियों मे शक्ति-सामंजस्य (Balance of Power) करने के लिये ही पार्लिमेंट ने स्थायी सेना का रखना आवश्यक समझा है। अतः सेना रखने के व्यय के लिये प्रतिवर्ष पार्लिमेंट धन देना स्वीकृत करे। यदि पार्लिमेंट धन देना मंजूर न करे, तो स्थायी सेना बर्खास्त कर दी जाय।"

पार्लिमेंट ने, १६९० मे, चार वर्ष के लिये एकमुश्त धन दे

दिया। तदनंतर प्रतिवर्ष यह रकम मंजूर करना ही पार्लिमेंट ने उचित समझा।

४. राजद्रोही लोग अपने मुकदमों मे, अपनी ओर से, वकील खड़ा कर सके, इसके लिये १६९६ मे 'राजद्रोही नियम' (Treason Act) पास किया गया। इसके पहले राजद्रोह के अभियुक्तो को वकील करने की आज्ञा नही थी।

५. ह्विग-दल के लोग बहुत-से लोगो को राज-कर्मचारी बनाकर उनसे अपने लिये सम्मतियाँ (Votes) ले लेते थे। इससे ह्विग-दल की शक्ति का बढ़ना स्वाभाविक ही था। इसको रोकने के लिये 'स्थान-प्रस्ताव' (Place Bill) पार्लिमेंट के सम्मुख उपस्थित हुआ। परंतु यह पास नही हुआ। यदि पास हो जाता, तो किसी भी राज-कर्मचारी को—चाहे वह मंत्री या कोषाध्यक्ष ही क्यो न होता—वोट देने का अधिकार न रहता।

६. विलियम की शक्ति कम करने के लिये त्रैवार्षिक नियम (Triennial Act) पास किया गया। इसके अनुसार तीन-तीन वर्ष बाद पार्लिमेंट का नवीन निर्वाचन होना आवश्यक ठहराया गया। यह राज्य-नियम जॉर्ज प्रथम का 'सप्तवार्षिक नियम' (Septennial Act) बनने के पहले तक इँगलैंड मे प्रचलित रहा।

७. त्रित्व (Trinity) का सिद्धांत माननेवाले प्रोटेस्टेट डिसेटर लोगों को पूजा-पाठ मे स्वतंत्रता देने के लिये 'सहिष्णुता-नियम' (Toleration Act) पास किया गया। हाई चर्च-दल (High Church Party) सहिष्णुता-नियम के विरुद्ध था। इसके कुछ नेता राजा के दैवी अधिकारो को न मानते थे और इस प्रकार विलियम को अपना राजा मानने को तैयार न थे। विलियम ने जब इन लोगों से राजभक्ति की शपथ लेने को कहा, तो इन्होंने शपथ न ली। इस पर उसने इन लोगों से सब राजकीय पद छीन लिए। इतिहास में ये लोग 'नानज्यूरर्स' (Non-jurors) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्हीं का एक दल विलियम से क्रुद्ध होकर जेम्स द्वितीय का पक्ष-पाती हो गया था। इस दल को हम आगे चलकर 'जैको-बाइट्स'* (Jacobites) के नाम से लिखेंगे। इन लोगों ने जेम्स से मिलकर विलियम को बहुत ही तंग किया।

ये सब कानून विलियम ने इस लिये स्वीकृत कर लिए कि वह पार्लिमेंट का बुलाया हुआ था, उसके विरुद्ध नहीं जा सकता था। अधिकार-पत्र के स्वीकार कर लेने से इँगलैंड के राज्य-शासन मे मानो क्रांति हो गई। राजा

* (Jacobite)—जैकोबस अर्थात् जेम्स के पक्षपाती। लेटिन-भाषा में जेम्स का रूप जेकोबस है।

का बहुत कुछ अधिकार छिनकर प्रजा के हाथ मे चला गया। इसी से सन् १६८८ के परिवर्तन 'इँगलैड की क्रांति' (The English Revolution) के नाम से प्रसिद्ध है। राज्य-शासन मे विशेष परिवर्तन होना ही क्रांति (Revolution) होना कहलाता है।

(२) युद्ध

आयलैंड-निवासी जेम्स द्वितीय के पक्षपाती थे। अपने राज्य-काल मे जेम्स ने आयरिश कैथलिको को कोई विशेष सहायता नहीं दी। कारण, वह नही चाहता था कि आयलैंड इँगलैड से सर्वथा स्वतत्र हो जाय। इँगलैड से भाग जाने के बाद जेम्स ने आयरिश कैथलिको को अपने साथ मिला लेने का यत्न किया। थोड़े-से फ्रांसीसी सैनिको के साथ वह मार्च, १६८९ मे आयलैंड आया।।

(क) आयलैंड से युद्ध

बहुत-से आयरिश प्रोटेस्टेट जेम्स की आज्ञा पर चलने के लिये विवश किए गए। इस पर अल्स्टर (Ulster) के प्रोटेस्टेट-निवासियो ने जेम्स के विरुद्ध हथियार उठा लिए। इस विरोध मे अल्स्टर के लंडनडेरी (Londonderry) तथा एन्निस-किलेन (Ennis Killen)-नामक दो नगरो ने बहुत अधिक भाग लिया। जेम्स की सेनाओ ने दोनों नगरों को चारो ओर से घेर लिया। दोनों नगरों की चहार-

दीवारी कमज़ोर थी और उनमे भोजन-सामग्री भी बहुत अधिक न थी। इँगलैड से अन्न-भरे जहाज़ भेजे गए। परतु वे उन नगरों तक न पहुँच सके, क्योंकि जेम्स ने नदी मे एक बाँध बँधवा दिया था, जिसको पार करना जहाज़ो के लिये कठिन था। लंडनडेरी मे घिरे हुए लोग चमड़े को उबालकर अपना पेट भरने लगे, पर उन्होंने आत्म-समर्पण नही किया। अत मे, ३० जुलाई को, एक व्यापारी जाहाज़ बाँध तोड़कर पार हो गया। इससे नगरो मे भोजन पहुँच गया और जेम्स के सैनिको मे नगर-विजय का कुछ भी साहस न रहा। इसी घटना के तीन दिन बाद न्यूटन-बटलर (Newton Butler) के युद्ध मे एन्निस-किलेन के प्रोटेस्टेटो ने जेम्स की सेना को बुरी तरह से हरा दिया।

ऊपर की घटना होने के कुछ ही दिनो पीछे शांबर्ग (Schombeig) के नेतृत्व मे विलियम की भेजी हुई अँगरेज़-सेना आयर्लैंड पहुँच गई। किंतु रोग फैल जाने के कारण यह सेना जेम्स के विरुद्ध कोई विशेष काम न कर सकी। १६९० में विलियम स्वयं आयर्लैंड मे आया और उसने पहली जुलाई को बॉइन (Boyne)-नदी पर जेम्स को परास्त किया। इसी युद्ध मे शांबर्ग मारा गया। धीरे-धीरे कैथलिकों पर विजय प्राप्त करता हुआ विलियम आयर्लैंड की राजधानी डब्लिन पहुँच गया। जेम्स भागकर फ़्रांस चला गया। आयरिश कैथ-

लिकों ने विलियम का विरोध नहीं छोड़ा और वे बड़े धैर्य के साथ लिमरिक (Limeric) पर लड़ते रहे। विलियम लाचार होकर इँगलैंड लौट आया। इँगलैंड लौटकर उसने अपने डच-सेनापति गिकल को आयर्लैंड-विजय के लिये भेजा। गिकल ने आयरिश लोगों से लिमरिक पर संधि कर ली। संधि की शर्तें ये थीं—

१ जो आयरिश सैनिक फ्रांस आदि देशों में जाना चाहते हैं, वे जा सकते हैं।

२. जो आयरिश कैथलिक विलियम का साथ देने की कसम खायँगे, उनको धार्मिक स्वतंत्रता दे दी जायगी।

बड़े खेद की बात है कि अँगरेज़ों ने इस संधि के बंधन को पूर्ण रूप से तोड़ डाला और आयरिश कैथलिकों पर अत्याचार करने में कुछ उठा न रक्खा। उन्होंने आयरिश पार्लिमेंट में अँगरेज़-प्रोटेस्टेंटों की संख्या अधिक करके लिमरिक की संधि की शर्तों को रद करवा दिया, कैथलिक अध्यापकों को पढ़ाने से रोक दिया और संपत्ति-संबंधी कठोर नियमों को पहले की अपेक्षा और भी अधिक कठोर बना दिया। कैथलिक लोग अपने बच्चों को पढ़ाने के लिये फ्रांस नहीं भेज सकते थे। इतना ही नहीं, उनसे हथियार भी छीन लिए गए। कैथलिक-पुरोहितों को देश-निकाला दे दिया गया

और प्रोटेस्टेंटों का विवाह कैथलिको के साथ होना बद कर दिया गया। आयरिश व्यापार को नष्ट करने मे भी अँगरेजो ने कोई कसर न की।

(ख) स्कॉटलैंड से युद्ध

इँगलैंड के समान ही स्कॉटलैंड में भी अशांति फैल गई। जेम्स के भाग जाने से स्कॉच्-जनता अत्यत प्रसन्न थी। स्कॉच्
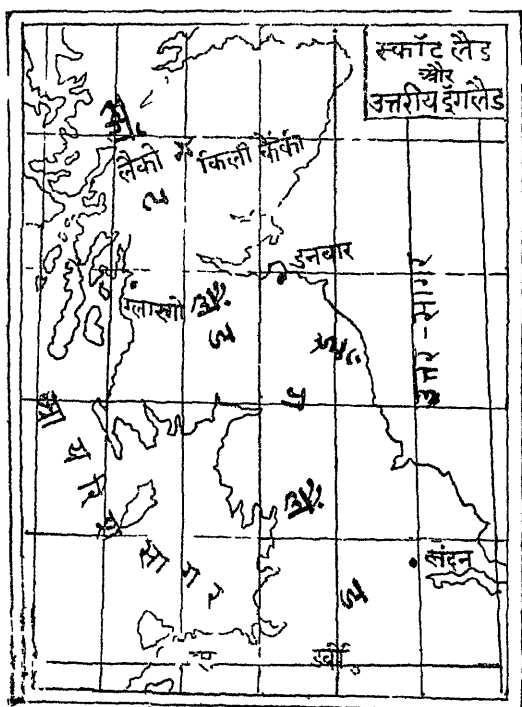
(जैकोबाइट-युद्ध)

पार्लिमेंट ने विलियम तथा मेरी को अपना राजा स्वीकार किया। कुछ सरदार इस परिवर्तन के विरुद्ध थे। उन्होंने विलियम के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। विलियम ने इनको किलीक्रैंकी (Killicrankie) के युद्ध मे हराया । जो सरदार युद्ध से भाग गए थे, उनको १६९१ के अत तक राजभक्ति की शपथ लेने पर अभय-दान की घोषणा की गई । दैव-सयोग से ग्लेंको (Glencoe) की घाटी मे रहनेवाले मैक-आइन (Mac Iann)-नामक वश के लोगो ने इस बात मे अपना गौरव समझा कि वे सबके अत मे राजभक्ति की शपथ ले। इसका परिणाम यह हुआ कि वे नियत तिथि तक राजभक्ति की शपथ लेने के लिये न पहुँच सके। इस पर जॉन डालरिपल (Dalrymple) ने विलियम के "राष्ट्र की रक्षा के लिये चोरो के दल का नाश करना अच्छा है" इन शब्दो का अर्थ ग्लेको-निवासियो की हत्या के अनुकूल करके १३ फरवरी, १६९२ को, रात मे सोते हुए ग्लेको-निवासियो को मरवा डाला। इस भयकर घटना से सपूर्ण स्कॉटलैड मे तहलका मच गया। लाचार होकर अपने को सुरक्षित करने के उद्देश से विलियम ने जॉन डालरिपल को अपनी सेना से अलग कर दिया।

(ग) फ्रास से युद्ध

विलियम के इँगलैड का राज्य सँभालने के कुछ ही समय बाद

योरप में युद्ध शुरू हो गया। १६७८ में 'निमजन' (Nymegen) की संधि हुई थी। उसके अनंतर लुईस चौदहवें ने समीपवर्ती योरपियन राष्ट्रों को अपने आक्रमणों से तंग कर दिया था। विलियम लुईस चौदहवें का दुश्मन था। उसने इँगलैंड का राजा होना भी इसीलिये स्वीकार किया था कि उसको लुईस के विरुद्ध अँगरेज़ों से सहायता मिल सकेगी। अँगरेज़-जनता भी लुईस से क्रुद्ध थी, क्योंकि उसने जेम्स को सहायता पहुँचाई थी। अस्तु, १६८९ से १६९७ तक फ्रांस के साथ युद्ध होता रहा। हालैंड, ब्रैंडनबर्ग, स्पेन तथा इँगलैंड के सम्मिलित यत्न से भी लुईस पीछे न हटा और बराबर युद्ध करता ही चला गया।

नीदरलैंड में फ्रांसीसियों ने सभी युद्ध जीते। सामुद्रिक युद्ध में भी फ्रांसीसियों ने मित्र-राष्ट्रों को बहुत ही तंग किया। फ्रांसीसी सामुद्रिक सेनापति टूरविल (Tourville) ने, ३० जून, (१६९०) को बीची-हेड (Beachy Head) के पास, मित्र-राष्ट्रों का सामुद्रिक बेड़ा नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। इसी विजय से सफलता प्राप्त करके लुईस ने आयर्लैंड के कैथलिकों को सहायता पहुँचाई। उसने देश-द्रोही अँगरेज़-मंत्रियों तथा जैकोबाइट् लोगों की प्रेरणा से इँगलैंड पर आक्रमण करने का इरादा किया। सौभाग्य से १९ मई, १६९२ को सामुद्रिक सेनापति

रसेल ने 'ला होग' (La-Hongue)-नामक स्थान पर फ्रांसीसी बेड़े को परास्त किया। इसके बाद योरप में हॉलैंड और इँगलैंड के पास ही सामुद्रिक शक्तियाँ प्रबल रह गईं। स्थल पर लुईस चिरकाल तक विजय पाता रहा। विलियम प्रत्येक सम्मुख-युद्ध में फ्रांसीसियों से हारा, परंतु हारने पर भी उसने धैर्य न छोड़ा। वह अपनी सेना को बड़ी बुद्धिमानी के साथ एकत्र करता रहा। १६९५ में विलियम का भाग्य चमका। उसने

नामूर (Namur) का प्रसिद्ध दुर्ग फ्रांसीसियों से छीन लिया। इस विजय से फ्रांस तथा मित्र-राष्ट्रों की शक्ति बराबर हो गई और किसी को भी किसी पर विजय प्राप्त करने की आशा न रही। अंत मे, १६९७ में, हेग के समीप रिज़विक (Ryswick)-नामक स्थान पर दोनों दलों की संधि हो गई। संधि के अनुसार लुईस ने विलियम को इँगलैंड का राजा मान लिया ; जो-जो इलाके फतह किए थे, उन्हे वापस कर दिए; और हॉलैंड के साथ व्यापारिक संबंध, पहले की अपेक्षा, अच्छे कर दिए।

(घ) ऊपर लिखे युद्धों का परिणाम

ऊपर जिन युद्धो का उल्लेख किया गया है, उनका व्यय अपने ऊपर लादना इँगलैंड के लिये असंभव हो गया। उसके लिये देश मे नवीन कर बढ़ाने पड़े। उनमें एक कर भूमि-कर (Land-tax) भी था। इससे कृषक अत्यंत असंतुष्ट हो गए। किंतु इस कर-वृद्धि से भी युद्धों का खर्च पूरा न हुआ। तब चार्ल्स मांटेगू ने जातीय ऋण (National debt) की प्रथा डाली। इसके अनुसार रुपया स्थायी रूप से उधार लिया गया और उसके बदले मे इँगलैंड ने प्रतिवर्ष ब्याज देना मंज़ूर किया। आरंभ में कुछ व्यापारियो के एक संघ ने बहुत-सा धन दिया। धीरे-धीरे इसी संघ ने बैंक ऑफ़ इँगलैंड (Bank of England)

का रूप धारण कर लिया। राज्य ने इस बैंक को बहुत-से नवीन अधिकार दिए, जो अन्य बैंको को नही प्राप्त थे। यह जातीय ऋण (National Debt) लेने से राज्य मे विलियम की जड़ जम गई, क्योकि जिन-जिन अँगरेज़ो ने विलियम को धन उधार दिया था, वे रकम मारी जाने के भय से जेम्स का राजा होना न चाहते थे।

विलियम का स्वास्थ्य ठीक न था। दैवयोग से १६९४ मे रानी मेरी की मृत्यु हो गई। इससे विलियम को बहुत ही धक्का लगा और उसकी कठिनाइयाँ पूर्वापेक्षा अधिक बढ़ गई, क्योकि मेरी की छोटी बहन एन विलियम से रुष्ट थी। विलियम की मृत्यु होने पर वही रानी बनाई जाने को थी। इँगलैंड मे विलियम के विरुद्ध षड्यत्र-पर-षड्यत्र रचे जाने ल । इन षड्यत्रो से डरकर पार्लिमेट ने यह निश्चय किया कि वह विलियम के बाद प्रोटेस्टेट-मत के व्यक्ति को राजा बनावेगी। और, यदि विलियम को किसी के कारण कुछ भी हानि पहुँची, तो उसका पूरा बदला लिया जायगा।

(३) राजनीतिक परिवर्तन

विलियम बहुत ही चालाक तथा दूरदर्शी था। आरभ मे उसने पार्लिमेट मे ह्विग तथा टोरी, इन दोनो ही दलो मे से मत्री चुने। यही से वर्तमान कालीन अँगरेज़ी-सचिव-तत्र राज्य

(Cabinet Govt.) की नींव पड़ी। जिसका वर्णन इस प्रकार है—

(क) ह्विग तथा टोरी-दलो का सम्मिलित मचिव-तत्र राज्य

१६८६ से १६६६ तक

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, विलियम ने अपने राज्य के आरंभ मे ह्विग तथा टोरी, दोनों ही दलों से मत्री चुने थे। ह्विग तथा टोरी-दलों का यह सम्मिलित मन्त्रि-मडल १६८९ से १६९६ तक रहा। दोनो ही दलो के मत्री परस्पर मिल-जुलकर काम करने को तैयार न थे। टोरी-दल के लोग फ्रांसीसी युद्ध के बरखिलाफ थे। इससे दोनों दलों के लोगो का मिलकर काम करना और भी कठिन हो गया। टोरी लोग योरपियन राजनीति से अँगरेजो को पृथक् रखना चाहते थे। वे स्थायी सेना का रखना अँगरेजो की स्वतत्रता के लिये भयानक समझते थे। इन्हीं दिनों सडरलैंड (Sunderland) ने विलियम को यह सलाह दी कि वह एक ही दल से सब मत्री चुने। राजा को यह सलाह पसंद आई। उसने धीरे-धीरे टोरियों को सभी राजकीय पदों से हटा दिया और उनके स्थान पर ह्विगों को चुन लिया।

(ख) ह्विगो का सचिव-तत्र राज्य

१६९६ से १७०१ तक

विलियम ने जो राजनीतिक परिवर्तन आरभ किया, वह १६९६

मे पूर्णता को प्राप्त हुआ । १६९६ मे ह्विग-दल का मत्रि-मडल स्थापित हुआ । यह 'ह्विग जटो' (Whig Junto) के नाम से प्रसिद्ध है । इस दल के नेता लॉर्ड सौमर्स (Somers) सामुद्रिक सेनापति रसेल (Russel—ला-होग का विजेता), सडरलैंड, श्रूज़बरी (Shrewsbury)-मांटेगू (Montague) आदि थे । विलियम ने ह्विग-मत्रि-मडल की सलाह के अनुसार सपूर्ण राज-काज करना शुरू किया। १६९४ मे विलियम त्रैवार्षिक नियम स्वीकृत कर ही चुका था और अब उसने १६९५ मे प्रेस-ऐक्ट को भी हटा दिया । इससे सपूर्ण अँगरेज़ो को विचार-सबधी स्वतत्रता प्राप्त हो गई । इँगलैंड के इतिहास मे यह एक अत्यत आवश्यक घटना है, क्योकि इसके अनतर इँगलैंड मे बड़ी शीघ्रता के साथ उन्नति होने लगी ।

इन्ही दिनो "स्पेन-राज्य का उत्तराधिकारी कौन होगा" इस प्रश्न पर योरपीयन राजो मे बड़ा भारी आंदोलन उठ खडा हुआ । स्पेन का राजा चार्ल्स द्वितीय निस्सतान था । उसके दो बहने थी । उनमे से एक आस्ट्रिया के सम्राट् लियोपोल्ड (Leopold) को और दूसरी फ्रांस के चौदहवे लुईस को ब्याही थी। लुईस की रानी कसम खा चुकी थी कि मै स्पेन के उत्तराधिकारी होने का अपना अधिकार छोड़ती हूँ ।

लियोपोल्ड की माता चार्ल्स द्वितीय की बुआ थी। इस दशा मे बुआ के रिश्ते से लियोपोल्ड स्पेन का राज्याधिकारी था, क्योंकि उसकी माता ने कोई ऐसी कसम नहीं खाई थी कि वह स्पेन के राज्य पर दावा न करेगी। फिर भी फ्रांस का राजा स्पेन-जैसे प्रदेश को छोड़ने के लिये तैयार न था। आस्ट्रिया के लियोपोल्ड का तो स्पेन पर वास्तविक अधिकार ही था। इंगलैंड को कठिनता यह थी कि आस्ट्रिया या फ्रांस, किसी के अधिकार मे स्पेन का राज्य जाने से योरप का शक्ति-सामंजस्य (Balance of Powers) नष्ट होता था। इस कठिनता को दूर करने के लिये विलियम ने फ्रांस के राजा को लियोपोल्ड से लड़ने से रोका।

यह निश्चय हुआ कि स्पेन का राज्य लियोपोल्ड के नाती बैवेरिया के एलेक्टर प्रिंस को दिया जाय। यह एक छोटा राजा था और इसके पास स्पेन का राज्य जाने से शक्ति-सामंजस्य नष्ट होने का भय न था। फ्रांस और आस्ट्रिया को भी स्पेन के वैदेशिक राज्य से कुछ हिस्से मिलने की बात तय हुई। किंतु एलेक्टर प्रिंस के मर जाने से यह संधि रद हो गई। अस्तु, फिर दूसरी संधि की गई। इसके अनुसार लियोपोल्ड के दूसरे लड़के आर्च ड्यूक चार्ल्स को स्पेन का राजा बनाने की बात तय हुई। किंतु स्पेनवालों को इन गुप्त संधियों की ख़बर न हुई।

दैव-सयोग से यह सारी गुप्त मन्त्रणा स्पेनियो के कानो तक पहुँच गई । वे लोग अपने देश को कई भागो मे विभक्त करने के लिये तैयार न थे। ऐसे भयकर समय मे चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु हो गई । मृत्यु के पहले उसने अपने राज्य को आंजो के ड्यूक फिलिप के नाम लिख दिया। यह फिलिप लुईस चौदहवे का नाती था। नाती को स्पेन का राज्य मिलते देखकर लुईस ने सन् १७०० की द्वितीय विभाग-सधि की अवहेलना की। विलियम इस अवसर पर कुछ भी न कर सका, क्योकि स्पेन के राजा ने स्वय ही लुईस के पोते को अपना राज्य सौप दिया था।

प्रथम विभाग-सधि तथा द्वितीय विभाग-सधि (Partition Treaty) की असफलता से ह्विग लोगो का पार्लिमेंट मे ज़ोर घट गया। लॉर्ड-सभा मे तो ह्विग लोगो की बहुत संख्या स्थायी रूप से थी, परतु प्रनिनिधि-सभा मे अब टोरी-दल की सख्या अधिक हो गई। सन १७०० मे विलियम ने रॉकेस्टर (Roche-stor) के अर्ल तथा लॉर्ड गाडाल्फिन (Godolphin) के नेतृत्त्व मे टोरी-मत्रि-मडल को इँगलैड का शासक नियत किया।

(ग) टोरियो का सचिव-तंत्र राज्य

(१७०१-१७०८)

टोरियो का मत्रि-मंडल नियत करने मे विलियम को किसी

तरह की भी खुशी नहीं हुई, क्योंकि टोरी लोग योरप की राज-नीति मे दखल नहीं देना चाहते थे और उनको इसकी कुछ भी चिंता न थी कि स्पेन का राजा कौन हो या कौन न हो। सन् १७०१ मे प्रतिनिधि-सभा का पुनर्निर्वाचन हुआ; परन्तु टोरी-दल ही प्रधान रहा। उन्होंने उत्तराधिकारित्व का क़ानून (Act of Settlement) पास किया, जिसके अनुसार विलियम तथा एन की मृत्यु पर इँगलिस्तान के राज्य का राजा कौन बने, इसका निर्णय किया गया। यह नियम पास करके टोरियों ने राजा के दैवी अधिकार के सिद्धांत का परि-त्याग और जाति को ही राजा नियत करने का सिद्धांत स्वीकृत कर लिया। टोरी लोग विलियम से असंतुष्ट थे, अतः वे राजा की शक्ति को बहुत ही परिमित करना चाहते थे। इसी कारण उत्तराधिकारित्व के नियम के साथ उन्होंने निम्न-लिखित बाते और जोड़ दीं—

(१) विलियम तथा एन के बाद सोफिया (जर्मनी के हनोवर की रानी) की संतान इँगलैंड के राज्य पर हुकूमत करेगी।

(२) हनोवर का राजा इँगलैंड के चर्च मे शामिल होगा।

(३) इँगलैंड का राजा, अपने योरप के इलाकों की रक्षा

के लिये, पार्लिमेंट की आज्ञा लिए विना, किसी पर-राष्ट्र से युद्ध न करेगा।

(४) पार्लिमेंट की स्वीकृति के विना इँगलैंड का राजा किसी अन्य देश मे भ्रमण के लिये न जा सकेगा।

(५) कोई भी व्यक्ति, जो विदेश मे अँगरेज माता-पिता से या इँगलैंड मे उत्पन्न न हुआ हो, गुप्त सभा (Privy Council) या पार्लिमेंट मे न बैठ सकेगा और न उसे जागीर ही मिल सकेगी।

(६) राजा न्यायाधिकारियो (Judges) को पदच्युत न कर सकेगा।

(७) गुप्त सभा मे जो प्रस्ताव पास हो, उनसे सहानुभूति रखनेवाले लोग उन पर हस्ताक्षर करे। परतु यह नियम एन्न के समय मे हटा दिया गया।

(८) राज्य-पदाधिकारी या राज्य से पेंशन पानेवाले व्यक्ति हाउस ऑफ् कामस मे नही बैठ सकते।

इस नियम को भी एन के समय मे कुछ-कुछ बदल दिया गया। यदि यह नियम ब्रिटिश-शासन-पद्धति मे विद्यमान रहता, तो इँगलैंड से सचिव-तत्र राज्य कभी न उठ सकता।

विलियम का स्वास्थ्य दिन-दिन बिगड़ता जाता था। अपनी शक्ति के परिमित होने से वह अपने मनोरथों को भी पूर्ण करने

मे सर्वथा असमर्थ था। जेम्स द्वितीय १७०१ में मर गया। लुईस चौदहवें ने जेम्स के पुत्र को इँगलैंड का वास्तविक राजा घोषित कर दिया। ऐसा करना रिज़विक-संधि की शर्तों का तोड़ना था। कुछ भी हो, लुईस की इस कार्यवाही से इँगलैंड की जनता क्रुद्ध हो गई। टोरी-दल भी फ्रांस से लड़ने के पक्ष में हो गया। तब विलियम ने फ्रांस तथा स्पेन के विरुद्ध बहुत-से राष्ट्रों को खड़ा कर दिया और महासम्मेलन (Grand Alliance) बनाया। प्रतिनिधि-सभा का नए सिरे से निर्वाचन हुआ और सख्याधिक्य के कारण उसमें ह्विग-दल का बहुमत हो गया। ह्विग लोगों का ही मंत्रि-मंडल चुना गया। ऐसे सुअवसर पर विलियम ८ मार्च, १७०२ को अ चानक घोड़े से गिरकर मर गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६८९	विलियम तथा मेरी का राज्याभिषेक; बिल ऑफ् राइट्स तथा टालरेशन बिल
१६९०	बयोन का युद्ध
१६९२	ला-होग का युद्ध तथा ग्लेको की हत्या
१६९४	रानी मेरी की मृत्यु
१६९६	प्रथम ह्विग सचिव-तन्त्र राज्य
१६९७	रिज़विक-सधि

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१६९८	प्रथम विभाग-संधि
१७००	द्वितीय विभाग-संधि
१७०१	उत्तराधिकारित्व का नियम
१७०१	महासम्मेलन
१७०२	विलियम तृतीय की मृत्यु

सप्तम परिच्छेद

एन (Anne) (१७०२-१७१४)

(१) एन का राज्याधिरोहण

रानी एन धर्मात्मा थी। उसका आचार-व्यवहार पवित्र था ; स्वभाव मधुर तथा हृदय भी कोमल था। टोरी और हाई चर्च के दलो से उसे सहानुभूति थी। विश्वासघात से उसे घृणा थी। इन सब गुणों के साथ ही उसमे कुछ दोष भी थे। स्टुवर्ट-वश के समान उसका स्वभाव हठीला था। विचारो की स्वतन्त्रता उसमे न थी। उसकी मित्रता मार्लबरा (Marlborough) की स्त्री सारा (Sarah) से थी। सारा बहुत ही चालाक, समझदार तथा प्रतिभाशालिनी स्त्री थी। मार्लबरा का उस पर अधिक प्रभाव था। इन सब पारस्परिक सबधो का परिणाम यह हुआ कि एन के समय मे इँगलैड के राज्य की बागडोर मार्लबरा के हाथ मे आ गई। यह बहुत ही स्वार्थी तथा कठोर-हृदय का आदमी था। जेम्स द्वितीय तथा विलियम के साथ इसने विश्वास-घात किया था। परतु इसमे भी संदेह नहीं कि यह अपने समय का अद्वितीय साहसी और चतुर सेनापति

था। सारे योरप मे इसके युद्ध-कौशल का आतक छाया हुआ था।

मार्लबरा टोरी-दल का था। यही कारण है कि रानो मेरी के राज्य के आरभ मे टोरियो का ही सचिव-तत्र राज्य शुरू हुआ। नवीन सचिव-मडल का मुखिया गॉडाल्फिन था। यह मार्लबरा का परम मित्र था। आय-व्यय के ऊपर दृष्टि रखने मे यह बहुत ही चतुर था। गॉडाल्फिन ने मार्लबरा को धन को पूरी सहायता दो और उसने भी योरप को जीतने मे किसी प्रकार की कमी न की।

(२) स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध (१७०२-१७१३)

(The war of the Spanish Succession)

एन के राजगद्दी पर बैठने के कुछ ही सप्ताहो के बाद योरप मे स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। महा-सम्मेलन मे हॉलैड और इॅगलैड का ही मुख्य भाग था। इनका साथ जर्मनी (आस्ट्रिया) के सम्राट् ने दिया, क्योकि वह अपने छोटे लड़के अर्च ड्यूक चार्ल्स को स्पेन का बादशाह बनाना चाहता था। सम्राट् की देखादेखी ब्रांडनबर्ग के एलेक्टर ने फ्रांस का विरोध किया। सम्राट् ने इस युद्ध मे उसकी सहा-यता पाने की आशा से उसे प्रशिया के राजा की उपाधि दे दी थी। लुईस की शक्ति भी कुछ कम न थी। फ्रांस बहुत ही

समृद्ध था। उसका शासन बहुत उत्तम रीति से होता था। फ़्रांसीसी सेना अपनी वीरता तथा युद्ध-कौशल के लिये योरप-भर में प्रसिद्ध थी। उसके सेनापति तथा राजनीतिज्ञ अपने समय मे अनुपम थे। इसी से लुईस चौदहवे का राजत्व-काल फ़्रांस के इतिहास का 'ऑगस्टेन काल' (Augustain Age) कहलाता है। रोमन सम्राट् ऑगस्टेस के समय में, रोम-साम्राज्य में, जिस तरह बड़े-बड़े वीर, धीर, राजनीतिज्ञ, साहित्य-सेवी आदि विद्यमान थे, उसी तरह इस काल मे फ्रांस मे भी थे। स्पेनिश नीदरलैंड पर लुईस का आतक जमा हुआ था। यही कारण है कि हॉलैंड पर वह बेरोक-टोक आक्रमण कर सकता था। स्पेन फ्रांस का मित्र था। कोलोन तथा बवेरिया के राजा लुईस के पक्ष मे थे। इटली भी फ्रांस की ओर से लड़ने को तैयार था। इस प्रकार स्पष्ट है कि योरप के लिये यह कितना भयकर युद्ध था।

प्रारंभिक युद्ध (१७०२-१७०३)

शुरू-शुरू की लड़ाइयों मे कुछ भी ध्यान देने की बात नहीं है। १७०२ से १७०३ तक मार्लबरा ने हॉलैंड को आक्रमण से ही बचाया ; साथ ही बर्न तथा लाईज (Liege) को जीता भी और कोलोन के एलेक्टर को उठने से रोका भी। उत्तरीय जर्मनी मे फ़्रांसीसी और बवेरियन सेनाओं ने आस्ट्रिया पर आक्रमण

किया। हगरी मे विद्रोह हो गया। अतः जर्मन-सम्राट् आस्ट्रिया की सहायता के लिये न पहुँच सका। स्पेन तथा इटली पर फ्रांसीसियो का इस कदर ज़ोर था कि बेचारा पुर्तगाल घबरा गया। उसने इँगलैंड के साथ मैथ्यून-सधि कर ली। इसी सधि के अनुसार पुर्तगाल ने अँगरेज़ो का व्यावसायिक (ऊनी) माल अपने यहाँ खुले तौर पर आने दिया और अपनी शराब इँगलैंड मे भेजनी शुरू कर दी। अँगरेज़ो ने इस शराब पर फ्रांसीसी शराब की अपेक्षा केवल दो-तिहाई चुगी रक्खी। यह सधि बहुत ही प्रसिद्ध है, क्योकि इस सधि के कारण पुर्तगाल के सारे-के-सारे व्यवसाय नष्ट हो गए तथा उसको इँगलैंड के व्यावसायिक पदार्थ ख़रीदने पड़े।

ब्लैनहम (Blenheim) की लडाई (१७०४)

१७०४ मे मित्र-मडल की दशा बहुत नाज़ुक हो गई। हगरी तथा बवेरिया की सेनाएँ वियना पर आ चढ़ी थी। जर्मन-सम्राट् को यह न सूझता था कि वह वियना की रक्षा किस प्रकार करे। एक-मात्र मार्लबरा ही उसको सहायता पहुँचाता था, परतु वह कोसो दूर था। डच लोग अपने बचाव की चिता मे थे, अतः उसको अपने देश से बाहर न जाने देना चाहते थे। फिर भी मार्लबरा ने जर्मन-सम्राट् को सहायता पहुँचाने का पूरे तौर पर इरादा

कर लिया था। उसने शीघ्र ही राइन (Rhine) की ओर अपनी सेना के साथ बढ़ना शुरू कर दिया और बवेरिया पर आक्रमण कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रांसीसी तथा बवेरियन सेनाएं बवेरिया की रक्षा के लिये पीछे लौटी। ब्लैनहम-नामक स्थान पर १३ अगस्त, १७०४ को भयकर सग्राम हुआ। मार्लबरा ने विजय प्राप्त की। इस विजय से उसकी कीर्ति सारे योरप मे फैल गई।

मित्र-मडल की विजय

(१७०४-१७०६)

मार्लबरा ने नीदरलैंड मे रैमिलीज का युद्ध (The battle of Ramilies) जीता। इससे सारे-के-सारे नीदरलैंड पर उसका प्रभुत्व स्थापित हो गया। आस्ट्रियन सेनापति प्रिंस यूजीन (Prince Eugene) ने ट्यूरिन का युद्ध (The battle of Turin) जीता और फ्रांसीसियों को इटली से निकाल दिया। अँगरेज नौ-सेनापति रुक (Rooke), ने १७०४, में जिबराल्टर और १७०५ मे बार्सिलोना को फतह किया।

आल्मजा का युद्ध (Battle of Almanza)

(१७०७)

ऊपर लिखी सब पराजयो से भी लुईस तथा उसका पोता

हताश नही हुआ। उन्होंने युद्ध की फिर तैयारी की। दैव-सयोग से स्पेनवालों ने आस्ट्रिया के विरुद्ध विद्रोह और फ्रांसीसियो का स्वागत किया। १७०७ मे इंगलैड का मित्र-मडल स्पेन मे, आल्मजा के युद्ध (Almanza) मे, भयकर रूप से परास्त हुआ। इससे फिलिप पचम फिर मैड्रिड का स्वामी बन गया। नीदरलैड के बहुत से दुर्गों को फ्रांसीसियो ने फिर जीत लिया। उडनार्ड की लड़ाई (Oudenarde) (१७०८) मे अँगरेज़ो ने नीदरलैड के खोए हुए दुर्गों को फिर जीत लिया। मार्लबरा तथा प्रिस यूज़ीन ने ऊडनार्ड का प्रसिद्ध युद्ध जीता। लाईल के फतह करने से इन दोनो सेनापतियो को लुईस के राज्य पर आक्रमण करने का अच्छा अवसर मिला। इस पर लुईस ने सधि की प्रार्थना की, परतु अँगरेज़ मत्रि-मडल ने न माना। "मरता क्या न करता" के अनुसार उसने वीरता-पूर्वक युद्ध करने के लिये फिर तैयारियाँ करना शुरू कर दिया।

मालप्लैकट का युद्ध (१७०९)

१७०९ मे मार्लबरा ने मालप्लैकट (Malplaquet) की लडाई जीती। इसमे अँगरेजो को बहुत-सा नुकसान उठाना पड़ा। १७०८ मे सेनापति स्टैनहोप (Stanhope) ने माइनार्का का प्रसिद्ध द्वीप जीता और १७१० मे मैड्रिड पर फिर प्रभुत्व प्राप्त किया। इसी वर्ष के अत मे व्रिह्यूग पर स्टैनहोप

बुरी तरह से परास्त हुआ। नीदरलैंड पर अँगरेजों का प्रभुत्व पहले की ही तरह बना रहा। तीन ही दिनों मे इँगलैंड में कुछ ऐसे राजनीतिक परिवर्तन हो गए, जिनसे उसको कुछ ही वर्षों मे युद्ध बंद करना पड़ा।

(३) इँगलैंड की राजनीतिक दशा

एन के राज्याधिरोहण के कई वर्षों बाद तक गॉडाल्फिन तथा मार्लबरा इँगलैंड का शासन करते रहे। ये टोरी-दल के होने पर भी युद्ध के पक्ष मे थे। यही कारण है कि इन्होंने ह्विग-दल के नेताओं से मेलजोल बनाए रक्खा। इन्होंने डिसेंटर लोगो के साथ भी बुरा व्यवहार नहीं किया और ह्विग-दल के लोगो को राज्यपदो पर नियुक्त किया। संडरलैंड-जैसे कट्टर ह्विग राष्ट्र-सचिव के पद पर नियुक्त हो गए और सचिव-मंडल मे ह्विग-दल की प्रधानता हो गई। इससे टोरी-दल के लोग निराश हो गए। उन्होने राजदरबारियो से मेलजोल बढ़ाकर मार्लबरा को एन से जुदा करने का यत्न किया। मिसेज़ मैशेम (Masham) ने एन पर अपना प्रेम प्रकट किया और उसको ह्विग-दल के लोगों से अलग कर दिया।

मार्लबरा ने रानी को समझाया-बुझाया और टोरियों के नेता हार्ले (Harley) को राजदरबार से निकलवा दिया। राबर्ट वालपोल (Robert Walpole) तथा अन्य कुछ ह्विगों

को उसने अपने सचिव-मडल मे मिला लिया। १७०८ से १७१० तक गोडाल्फिन तथा मार्लबरा ही राजकाज चलाते रहे। योरप के युद्धो से जनता घबरा गई थी। १७१० मे पार्लिमेंट का जो चुनाव हुआ, उसमे टॉरी-दल का बहुपक्ष था। परिणाम यह हुआ कि एन ने हार्ले से सलाह ली और सारे-के-सारे ह्विगो को राज्य के पदो से अलग कर दिया। राबर्ट हार्ले बहुत ही चालाक तथा दुनियादार आदमी था। उसमे जो कुछ कमी थी, वह यही कि वह डरपोक था और उसे व्याख्यान देने की आदत न थी। राष्ट्र-सचिव के पद पर उसने हैब्ली-सैंट जॉन को नियत किया। शीघ्र ही यह वाईकाउट बालिंब्रोक (Vis Count Bolingbroke) बना दिया गया। यह अपने समय का प्रसिद्ध लेखक और व्याख्यानदाता था। राजनीति को यह एक खेल समझता था। इसको उसमे विश्वास न था। इन दोनो ने किसी-न-किसी तरीके से, १७१३ मे, योरप के युद्ध को बद किया और स्पेन तथा फ्रांस के साथ यूट्रैक्ट (Utrecht) की सधि की, जिसकी शर्ते निम्न-लिखित थी—

(१) एन के पश्चात् इँगलैंड का राजा हनोवर-वश का ही कोई व्यक्ति हो।

(२) स्पेन के राजा फिलिप ने यह प्रण किया कि मै फ्रांस के राज्य पर अपना अधिकार न प्रकट करूँगा।

(३) स्पेनी-अमेरिका मे अँगरेज ३० वर्षों तक नीग्रो बेचने का काम कर सकते हैं। फ्रांसीसियों को यह अधिकार नहीं दिया गया।

(४) दक्षिणी अमेरिका के तट पर, वर्ष में एक बार, अँगरेज़ अपना एक जहाज़ व्यापार के लिये भेज सकते हैं।

(५) स्पेन ने जिबराल्टर तथा माइनार्का और फ्रांस ने नोवा-स्कोशिया (Novascoshia) तथा न्यूफाउडलैंड अँगरेजो को दे दिए। सिसली का प्रदेश ड्यूक ऑफ् सेवाय (Savoy) को मिला।

(६) फ्रांस ने डकर्क-नामक नगर के दुर्गों को गिराना स्वीकार किया।

(७) जेम्स को फ्रांस मे रहने से रोक दिया गया।

(८) नीदरलैंड आस्ट्रिया को दिया गया। हालैंडवालों को, दक्षिण के दुर्गों की रक्षा के लिये, उनमे अपनी सेना रखने की आज्ञा दी गई।

योरप तथा इँगलैंड के इतिहास मे यूट्रैक्ट की संधि इसीलिये बहुत प्रसिद्ध है कि (१) इसी संधि से लुईस की शक्ति नष्ट कर दी गई, (२) ब्रैंडनबर्ग (प्रशिया) और सिसली (सेवाय)-नामक दो राज्यों का योरप में उदय हुआ, (३) इँगलैंड का मध्यसागर पर प्रभुत्व हो गया; उसको बहुत-से उपनिवेश मिल गए। संसार मे वह नौ-शक्ति बन गया।

हार्ले (जो अब ऑक्सफोर्ड का अर्ल हो गया था) तथा बालिंब्रोक की शक्ति एन के अंतिम दिनो तक स्थिर रही। यूट्रैक्ट की संधि को अँगरेजो ने बहुत ही पसंद किया। इँगलैंड दिन-पर-दिन समृद्ध हो रहा था। १७११ के ऐक्ट 'अगेंस्ट ऑकेज़नल कानूफर मिटी' (Act against occassional confoımity) के साथ, १७१४ मे, 'स्कीम ऐक्ट' (Scheme Act) और जोड़ दिया गया। उसके अनुसार डिसेंटर लोगो का स्कूल-मास्टर होना बंद कर दिया गया।

एन का स्वास्थ्य दिन-पर-दिन खराब हो रहा था। इन्ही दिनो हनोवर की सोफ़िया (Sophia) की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र जॉर्ज (George) था। बालिंब्रोक की इच्छा थी कि जॉर्ज राज्य पर न बैठे, क्योकि इससे ह्विग लोगो की प्रधानता हो जाने की संभावना थी। और, ऐक्ट ऑफ सेटिलमेंट या उत्तराधिकार-कानून के अनुसार जेम्स राज्य पर न बैठ सकता था, क्योकि वह कैथलिक था।

बालिंब्रोक ने धीरे-धीरे अपने अन्य साथियो को जेम्स के पक्ष मे करना शुरू किया। ऑक्सफोर्ड के साथ-साथ सीमांतो मे उसका झगड़ा हो गया। एन ने बालिंब्रोक का पक्ष लिया और ऑक्सफ़ोर्ड को पदच्युत कर दिया। दैवी घटना से पहली अगस्त को एन की मृत्यु हो गई।

आर्गाईल तथा सॉमर्स के ह्विग-दल के ड्यूकों के प्रबल प्रयत्न से मंत्रणा-सभा (Privy Council) ने जॉर्ज प्रथम को इँगलैंड का राजा माना और उसको हनोवर-प्रांत से बुला लिया। रानी एन के आधिपत्य में स्कॉटलैंडवालों को रहना मंजूर था, परंतु वे अँगरेज़ों के धर्म, व्यापार तथा स्वभाव से असंतुष्ट थे। अतः उन्होंने एंड्र्यू फ्लेचर (Andrew Fletcher) के नेतृत्व में इँगलैंड से जुदा होने का प्रयत्न किया। १७०३ मे स्कॉच लोगो ने 'ऐक्ट ऑफ सिक्योरिटी' (Act of Security) पास किया। इसके अनुसार उन्होंने मेरी की मृत्यु के बाद अँगरेज़ों से भिन्न किसी दूसरे अन्य प्रोटेस्टेंट राजा को अपना राजा बनाना निश्चित किया। अँगरेज राजा तभी उनका राजा बन सकता था, जब वह स्कॉच-समिति द्वारा स्कॉटलैंड का शासन करे। १७०४ मे इस नियम को रानी ने स्वीकृत कर लिया और उस पर अपने हस्ताक्षर कर दिए।

इन्ही दिनों स्कॉटलैंड के अदर एक फ्लाइंग स्क्वैड्रन (Flying Squadion)-नामक नया दल उत्पन्न हो गया, जो इँगलैंड-स्कॉटलैंड का मेल करवाना चाहता था। अस्तु, १७०७ में ऐक्ट आफ् यूनियन (Act of Union) पास किया गया। उसके अनुसार स्कॉटलैंड तथा इँगलैंड सदा के लिये परस्पर मिल गए। जेम्स प्रथम के आने पर दोनों देशों का राजा एक हो गया था; पर पार्लि-

प्रेट-सभाएँ भिन्न-भिन्न थी। ये संयुक्त-राज्य 'ग्रेट-ब्रिटेन' के नाम से पुकारे जाने लगे। दोनों जातियों के झंडों को परस्पर मिलाकर ग्रेट-ब्रिटेन का एक झंडा बन गया। स्कॉटलैंड ने १६ लार्डों तथा ४५ प्रतिनिधियों को पार्लिमेंट में भेजने का अधिकार प्राप्त किया। दोनों ही देशों को एक-से व्यापारिक अधिकार मिले। स्कॉचों को अँगरेज-उपनिवेशों के साथ बिना किसी प्रकार की रुकावट के व्यापार करने का अधिकार मिला।

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७०२	एन का राज्याधिरोहण
१७०४	ब्लैनहम की लड़ाई, ऐक्ट ऑफ़ सिक्योरिटी
१७०६	रैमिलीज़ की लड़ाई
१७०७	स्कॉटलैंड का इँगलैंड के साथ मेल
१७०८	आल्मज़ा और ऊडनार्ड की लड़ाइयाँ
१७०९	मालप्लैकट की लड़ाई
१७१०	ह्विगों का अधःपतन
१७१३	यूट्रैक्ट की संधि
१७१४	एन की मृत्यु

अष्टम परिच्छेद

स्टुवर्ट-राजो के समय मे ग्रेट-ब्रिटेन की सभ्यता

(१) इगलैंड की आर्थिक उन्नति

स्टुवर्ट-राजों के समय में इँगलैड के उपनिवेश दूर-दूर तक जा बसे। उसका व्यापार बहुत ही अधिक बढ़ गया। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि भारतवर्ष, उत्तरीय अमेरिका, वेस्ट-इंडीज़ तथा आफ्रिका आदि देशो में उसकी व्यापारिक कोठियाँ तथा बंदरगाह विद्यमान थे। हालैंड तथा पोर्चुगाल को उसने व्यापार में नीचा दिखाया। फ्रांस पर भी कई अपूर्व विजय प्राप्त की। लुईस चौदहवें ने जो उपनिवेश बड़ी ही मिहनत से बसाए थे, इँगलैंड ने बड़ी ही चतुरता से उन सबको अपने हाथ मे कर लिया। व्यापार-व्यवसाय को उन्नति से इँगलैड में मध्यश्रेणी के लोग प्रबल हो गए। जमींदारों को शक्ति पूर्वापेक्षा कम हो गई। राज्य ने आर्थिक प्रश्नो की ओर विशेष ध्यान देना शुरू किया। अधिक क्या कहें, राजनोति का झुकाव देश की आर्थिक उन्नति की ओर हो गया। राज्य की आमदनी पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गई। नौ-सेना की वृद्धि मे बहुत-सा धन खर्च किया

जाने लगा। बैंक ऑफ् इँगलैंड की स्थापना से देश में बैंकों की वृद्धि दिन-पर-दिन होने लगी। राज्य को धन रखने तथा प्राप्त करने में पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक सुगमता हो गई। संपत्ति-शास्त्र के अध्ययन में लोग दत्तचित्त हो गए। व्यावसायिक प्रणाली (Mercantile System) के सिद्धांतों की सचाई का लोगों को ज्ञान हो गया। व्यापार-व्यवसाय की उन्नति में ही देश की समृद्धि है, इस सूत्र को सम्मुख रखकर अँगरेज़-जनता ने पग बढ़ाना शुरू किया। प्रत्येक अँगरेज़ को सोना-चाँदी प्राप्त करने की चाह थी। राज्य देश के सर्वाङ्गीय व्यापार-संतुलन को विशेष गौर से देखता था। यदि व्यापारिक संतुलन (Balance of Trade) पर चोट होने लगती, तो उसका शीघ्र ही उपाय करता था।

व्यापार तथा कृषि-प्रधान होने पर भी इँगलैंड का मुख्य उद्देश उद्योग-प्रधान होना ही था। भारतवर्ष से उत्तम-उत्तम कपड़े इँगलैंड में पहुँचते थे। इधर लुईस चौदहवें ने अपने देश के प्रोटेस्टेंट कारीगरों को देश छोड़ने की आज्ञा दे दी। उन बेचारों ने इँगलैंड की शरण ली। इँगलैंड ने उनका स्वागत किया और उनके सहारे व्यावसायिक देश बनने का प्रयत्न करने लगा। हॉलैंड के इंजीनियरों ने इँगलैंड की दलदलों को

सुखाया और उसको कृषि-योग्य बना दिया। इससे इँगलैंड की कृषि मे बहुत ही अधिक उन्नति हो गई।

किसान लोग अमीर हो गए। भिखमगो तथा दरिद्रों की सख्या देश मे पहले की अपेक्षा बहुत ही कम हो गई। १६६२ मे ऐक्ट ऑफ् सेटिलमेंट पास किया गया। इसके अनुसार प्रत्येक जिले के राज-कर्मचारी को यह आज्ञा दी गई कि वह किसी दूसरे जिले (Parish) के अँगरेजो को अपने यहाँ न बसने दे। इस नियम का यह प्रभाव हुआ कि प्रत्येक जिले मे जन-सख्या परिमित रही। इससे किसी भी जिले पर औरों के सँभालने का अधिक भार नही पड़ा। यह नियम बनने के पहले भिखमगे, बेकार, दरिद्र लोग जिस जिले मे इकट्ठे हो गए, उसी जिले पर खर्च का भार बढ़ जाता था। स्टुवर्ट-राजों के समय मे इँगलैंड की आबादी पहले से बढ़ गई। इँगलैंड तथा वेल्स मे ५० लाख की आबादी थी। एक-मात्र लंदन की आबादी ५ लाख के लगभग थी। इससे दूसरे नबर पर ब्रिस्टल तथा नॉरिच (Norwich) के नगर थे, जिनकी आबादी ३० हजार से अधिक न थी।

देश के फैशन, राजनीति तथा रीति-रिवाज आदि पर लंदन का बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ा। देश के सारे छापेखाने तथा योग्य मनुष्य लदन में ही रहते थे। लोगों को लदन मे बीमारी फैल जाने का बहुत ही अधिक डर था। सहर के पश्चिम ओर

राजा तथा अमीर लोगो के मकान थे और पूर्व को ओर व्यापारिक कोठियाँ तथा कारखाने । पानी का प्रबध कठिन था। लोग टेम्स-नदी या कुओं का पानी पीते थे। जेम्स के समय मे एक न्यूरिवर-नामक कपनी स्थापित हुई, जो हर्ट-फोर्डशायर से नहर बनाकर स्वच्छ पानी ले आई। प्लेग और आग लगने के बाद भी नगर को ठीक ढग पर न बनाया गया। गलियाँ पहले ही की तरह तग बनी रही। पुलिस के ठीक न होने से शहर मे डाके, चोरियाँ तथा हत्याएँ आम तौर पर होती रही। कुछ गुंडो के जत्थे चलते-चलते लोगों को अकारण ही तग किया करते थे।

(२) इँगलैड की सामाजिक उन्नति

इँगलैड ने स्टुअर्ट-काल मे आर्थिक उन्नति के सदृश ही सामाजिक उन्नति भी यथेष्ट से अधिक की। १६४२ मे थिएटरों से सारा इँगलैड भरा हुआ था। नाचने-गाने मे लोगो की रुचि बहुत अधिक थी। थिएटरो मे स्त्रियाँ भी पात्र बनने लगी। टेनिस, घुड़-सवारी आदि मे लोग अपने फुरसत का समय बिताते थे। जुआ, घुड़-दौड़ और मुर्गे लडाने मे भी बहुत-से लोगो को आनद आता था। मुक्केबाजी तथा तलवार के युद्ध मे इनाम बँटते थे। फिर भी योरपियन लोग अँगरेजो को उजड्ड ही समझते थे।

सड़कों के ठीक न होने पर भी लोग लंदन मे आया-जाया करते थे। अमीर लोग छुट्टी के दिन ऐसे मकानों मे बिताते थे, जो पानी के नीचे बने हुए थे। राज्य की ओर से चिट्ठी भेजने का प्रबंध भी हो गया था। सवारी की गाड़ियाँ प्रतिदिन ५० मील चलती थी।

कपड़ो मे भी लोगो ने यथेष्ट उन्नति की थी। उनको काट-छाँट की ओर लोगों का ज्यादा ध्यान था।

(३) इंगलेंड की साहित्यिक उन्नति

पढ़ाई-लिखाई की ओर लोगो का ध्यान पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक होता गया। अख़बार, पैंफ्लेट तथा पुस्तकों की छपाई मे बहुत ही अधिक उन्नति हो गई थी। लोग बहुत शौक से अख़बारो को पढ़ते थे। बेकन ने दर्शन-शास्त्र मे उन्नति की और वैज्ञानिक चीज़ो के अध्ययन तथा अन्वेषण मे ऐतिहासिक शैली (Inductive Method) का प्रयोग किया। विलियम हार्वे (William Harvey) ने रक्त की गति का पता लगाया। १६६२ मे रॉयल सोसाइटी की नींव रक्खी गई। इसी का एक सभ्य आइज़क न्यूटन था।

विज्ञान के सदृश ही गृह-निर्माण (Architecture) मे भी अँगरेज़ों ने उन्नति की। शिल्प-कला (Art) तथा चित्र-कला (Painting) की ओर तो लोगों का बहुत ही अधिक

ध्यान था। चार्ल्स प्रथम ने बहुत-से चित्र इधर-उधर मे जमा किए। प्यूरिटन लोग इन सब बातो के विरुद्ध थे। अतएव अपने शासन-काल मे उन्होने इन विद्याओ को बहुत ही अधिक नुकसान पहुँचाया। एलिजबेथ के बाद नाटक लिखने की ओर अँगरेजो की रुचि दिन-पर-दिन कम होती गई। पर इसमे सदेह नही कि कविता मे उन्होने अच्छी उन्नति की। राबर्ट हैरिक (Robert Herrick) तथा जॉन मिल्टन स्टुवर्ट-काल के ही फल है, जिन पर इँगलैंड को विशेष अभिमान है। इस समय ड्राइडन (Dryden) ने अँगरेजी पद्य मे बड़ी भारी उन्नति की। जॉन बनियन (John Bunyan) ने गद्य की निराली शैली निकाली। इसकी लेख-शैली बहुत ही उत्तम थी। स्टुवर्ट-काल मे ही अँगरेजी-गद्य का पुनरुद्धार होता है। पत्र आदि के निकलने और छापेखानो के जगह-जगह पर होने से पुस्तके तथा लेख बहुत जल्दी-जल्दी प्रकाशित होते थे। इससे भाषा मे सरलता आ जाना स्वाभाविक ही था। ड्राइडन ने अपने लेखों के द्वारा अँगरेजी-गद्य को अच्छी स्थिति पर पहुँचा दिया।

---

७. रानी एलिज़बेथ का शासन-काल इँगलैंड के इतिहास में "स्वर्ण-जोग" के नाम से क्यों प्रसिद्ध है ? इस काल मे इँगलैंड की जो समाजिक, धार्मिक, व्यापारिक, नाविक, औपनिवेशिक और साहित्यिक उन्नति हुई, उस पर संक्षेप में लिखकर इसे स्पष्ट करो।

८. कार्डिनल वूल्ज़े, सर टॉमस मूर, सामर्सेट्, अर्ल ऑफ् एसेक्स और स्कॉटलैंड की रानी मेरी पर छोटे-छोटे नोट लिखो।

९. स्टुवर्ट-वंश के प्रथम दो राजों और पार्लिमेंट में पारस्परिक विरोध के क्या कारण हुए उन्हे विस्तार-पूर्वक लिखो।

१०. चार्ल्स प्रथम के समय मे, इँगलैंड मे, जो गृह-युद्ध हुआ था, उसका सकारण वर्णन करो। एक मान-चित्र खींचकर उसमें मुख्य-मुख्य युद्धस्थल बतलाओ।

११. चार्ल्स प्रथम के राजत्व-काल मे अँगरेज़-जाति ने अपने शासकों की निरकुशता को मिटाने और प्रजा के स्वत्वों के बढ़ाने के कौन-कौन-से प्रयत्न किए ? जिन वीरों ने इस राष्ट्रीय संघर्ष मे उल्लेखनीय कार्य किया, उनके विषय में लिखो।

१२. टॉमस क्रॉवैल का इँगलैंड के इतिहास मे क्या

महत्त्व है ? उसके विषय मे जो कुछ जानते हो, सक्षेप मे लिखो । उसकी धार्मिक नीति, विदेशी नीति, शासन-व्यवस्था और पार्लिमेट के साथ उसके संबध पर विशेष रूप से प्रकाश डालो ।

१३. चार्ल्स द्वितीय की नीति क्या थी ? उसके समय मे, इँगलैड मे, मुख्य-मुख्य कौन-कौन-से कानून पास हुए और उस देश मे दलबदी का आरभ कैसे हुआ ?

१४. जेम्स द्वितीय राजसिहासन से क्यो अलग किया गया ? इँगलैड को 'महान् राज्यक्राति' का तुम क्या अर्थ समझते हो ? इँगलैड के इतिहास मे उसका क्या महत्त्व है ?

१५. 'अधिकार-घोषणा' (Declarations of Rights) के विषय मे जो कुछ जानते हो, लिखो ।

१६. विलियम तृतीय की देशी और विदेशी नीति क्या थी ? उसके शासन-काल मे इँगलैड ने जिन-जिन लड़ाइयो मे भाग लिया, उनका उल्लेख करो ।

१७. 'ग्लेको' के जन-सहार के विषय मे तुम क्या जानते हो ?

१८. स्पेनी उत्तराधिकार-युद्ध और मार्लबरा के विषय मे जो कुछ जानते हो, लिखो ।

१९. सन् १७०१ के 'उत्तराधिकार-निर्णय' (Act of Set-

tlement) और १७०६ के ऐक्ट ऑफ़् यूनियन (Act of Union) पर नोट लिखो।

२०. स्टुवर्ट-कालीन इँगलैंड पर एक लेख लिखो।

इँगलैंड का इतिहास

संपादक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
(सुधा-संपादक)

इंगलैंड का इतिहास

प्रणेता

प्राणनाथ विद्यालंकार

जिससे होता चित्त में स्वाधीनता विकास

पढ़िए-सुनिए धन्य वह देशोन्नति-इतिहास

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

द्वितीय संशोधित और संवर्द्धित संस्करण

सजिल्द १॥)] संवत् १९८९ वि० [सादी १।)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

तृतीय खंड

तृतीय परिच्छेद

द्वितीय अध्याय

इँगलैंड का इतिहास

प्रथम अध्याय

हनोवर-वंश तथा कुलीन-तंत्र राज्य

(The House of Hanover & Oligarchical Govt.)

प्रथम परिच्छेद

जॉर्ज प्रथम (GEORGE I)

(१७१४-१७२७)

जॉर्ज प्रथम पचास वर्ष की उम्र मे इॅगलैंड के सिहासन पर बैठा। वह आलसी, प्रमादी तथा अस्थिर-स्वभाव का था। अपने हनोवर-प्रांत को ही नज़र के सामने रखकर वह परराष्ट्र-नीति (Foreign Policy) मे हस्तक्षेप करता था। उसको ऍगरेज़ी-भाषा का ज्ञान न था और उसने उसे सीखने का प्रयत्न भी नही किया। इसी कारण वह ह्विगो का अत्यधिक विश्वास करता था, क्योकि ऍंगरेज़ी-सिहासन भी उसे उन्ही की कृपा से मिला था। टोरी-दल के मन्त्रियो को उसने समस्त राजकीय पदो से अलग कर दिया। आक्सफोर्ड को टावर मे कैद कर दिया। बालिंब्रोक तथा ऑर्मा ड (Ormond) फ्रांस भाग गए। टोरी-

जॉर्ज प्रथम

दल अपने नेताओं के देश-द्रोह के कारण शनैः-शनैः नष्टप्राय हो गया और ह्विग-दल बहुत दिनों तक प्रधान रहा। जनता में यह धारणा फैल गई कि टोरी-दल के लोग इँगलैंड में स्वेच्छाचारी राज्य (Autocracy) का युग लाना चाहते हैं। यही कारण है कि १७१४ से १७६१ तक ह्विग-दल ही संपूर्ण राजकाज करता रहा।

(१) राजनीतिक अवस्था

(क) सचिव-तंत्र राज्य की स्थिरता

इँगलैंड में, विलियम तथा एन के जमाने में, किस प्रकार सचिव-तंत्र राज्य (Cabinet Govt. की स्थापना हुई, यह पहले

ही लिखा जा चुका है। ह्विग-दल की प्रधानता मे हनोवर-वश के राजों के समय मे सचिव-तन्त्र राज्य स्थिर हो गया। प्राचीन शासन-पद्धति-सबधी नियम ज्यो-के-त्यो बने रहने पर भी नवीन शासन-पद्धति मे बहुत कुछ रद्दोबदल हो गया। सारांश यह कि अँगरेजी-शासन-पद्धति अब देश-प्रथा के अनुसार चलने लगी। पहले के बने हुए नियम के अनुसार तो शासन की बागडोर राजा तथा उसके सहायक दरबारियो के ही हाथ मे होनी चाहिए थी, परतु विलियम के समय से आरभ हुई देश-प्रथा के अनुसार शासन का कार्य पार्लिमेंट के प्रधान-दल के नेता के हाथ मे चला गया और राजा को भी ऐसा ही करने के लिये बाध्य होना पड़ा। इस प्रकार सचिव-तत्र राज्य के दो आवश्यक परिणाम हुए, जिनका स्मरण रखना आवश्यक है।

(१) राजा के बहुतेरे अधिकार बेकार हो गए। उदाहरण-स्वरूप पहले पार्लिमेंट के हाउस ऑफ् कामस के पास किए हुए नियमों को स्वीकृत तथा अस्वीकृत करना राजा के हाथ में था। परतु सचिव-तत्र राज्य के कारण यह राजा का अधिकार जाता रहा। इससे राजा की शक्ति बहुत अधिक घट गई।

(२) इँगलैड का शासन हाउस ऑफ् कामस के हाथ मे आ गया, क्योकि आर्थिक मामलों मे एक-मात्र प्रतिनिधि-सभा का ही प्रभुत्व हो गया था। इसी प्रभुत्व के बल पर लॉर्ड-सभा

तथा राजा की शक्ति को भी उसने अपने हाथ में कर लिया। अब लॉर्ड-सभा के पास प्रस्तावों के संशोधन तथा निरीक्षण का ही काम रह गया।

प्रतिनिधि-सभा की शक्ति बढ़ जाने पर भी इँगलैंड मे प्रतिनिधि-तंत्र राज्य (Representative Govt.) की प्रधानता तथा मुख्यता प्रकट करना ठीक नहीं। इस समय के इँगलैंड के राज्य को केवल कुलीन-तंत्र के नाम से पुकारा जा सकता है। इसके मुख्य दो कारण हैं। एक तो तत्कालीन जनता का स्वभाव ही ऐसा था कि वह प्रतिनिधि-तंत्र या प्रजा-तंत्र राज्य को ठीक-ठीक चला नहीं सकती थी; दूसरे, इँगलैंड में प्रतिनिधि-निर्वाचन (Election) का ढंग ही कुछ ऐसा था, जिससे वहाँ कुलीन-तंत्र राज्य स्थापित हो गया। अँगरेज़-जनता साधारणतः राजनीति में बहुत भाग न लेती थी। लॉर्ड लोग (ज़मींदार) तथा व्यापारी ही राजनीति की बातों में दिलचस्पी रखते और शरीक होते थे। क्रांवैल ने प्रतिनिधि-निर्वाचन की विधि को सुधारना चाहा था, परंतु वह सफलता नहीं पा सका। उसकी असफलता के बाद इँगलैंड का निर्वाचन उसी विधि से होता रहा, जो मध्य-काल (Middle Ages) में प्रचलित थी। प्रतिनिधि-निर्वाचन में प्रत्यक्ष रूप से जनता का संपर्क बहुत ही कम था।

काउंटियों (Counties) से दो प्रतिनिधि निर्वाचित होते थे, परंतु वास्तव मे उनका निर्वाचन लॉर्ड लोग ही करते थे। यही नहीं, पार्लिमेंट मे बड़े-बडे नगरों का कोई भी प्रतिनिधि नहीं था; पर छोटे-छोटे उजड़े ग्रामों को दो-दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्राप्त था। बड़े-बड़े लॉर्ड तथा धनिक लोग ऐसे उजड़े ग्रामो को खरीद लेते और इस प्रकार बहुत से प्रतिनिधि राज्य मे भेजकर देश के शासन मे बहुत कुछ अपना हाथ रखते थे। बड़ी-बड़ी काउंटियो तथा ग्रामों में भी प्रतिनिधि-निर्वाचन उचित रीति से नहीं हो पाता था। राज-कर्मचारी तथा धनाढ्य लोग निर्वाचको को घूस देकर अपने ही मतलब के प्रतिनिधि चुनवाते थे। ह्विग-दल के लोगो ने इन प्रतिनिधियो को अपने पक्ष में और हाथ में रखने की खूब कोशिश की। इसी उपाय से उन्होने देश का शासन केवल अपने ही हाथ मे कर लिया था। इस प्रकार ५० वर्षों तक इँगलैंड मे ह्विग लोगो का कुलीन-तंत्र राज्य रहा। प्रतिनिधि-सभा तथा राजा उन्ही की इच्छा के अनुसार चलते रहे। इस काल में ह्विग-दल शनैः-शनैः उदार से अनुदार बनता गया। फिर भी ह्विगों ने इँगलैंड को बहुत कुछ लाभ पहुँचाया। उन्होने देश की समृद्धि बढ़ाई तथा शांति स्थापित की।

ह्विगों की प्रधानता के दिनों में टोरी-दल अपने नेताओं की बेवकूफ़ी से जनता को बहुत ही अधिक अप्रिय हो गया। जेम्स के पक्षपातियों ने, १७१५ में, इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड में विद्रोह फैलाने का प्रयत्न किया। पर उनको पग-पग पर असफलता ही हुई। विद्रोह की चेष्टा के समय में ही लुईस चौदहवाँ मृत्यु को प्राप्त हुआ। इससे जेम्स के पक्षपातियों को बहुत ही अधिक सहायता प्राप्त होने की आशा थी। लुईस की मृत्यु होने पर उसके उत्तराधिकारी, आर्लियंस के ड्यूक फ़िलिप (Philip, Duke of Orlians) ने जॉर्ज प्रथम से मित्रता कर ली और जेम्स के पक्ष-पातियों को कुछ भी सहायता न दी।

१७१५ में पार्लिमेंट ने विद्रोह-नियम (The Riot Act) पास किया। इससे अँगरेज़ी-मंत्रि-मंडल को विद्रोह शांत करने के लिये विशेष शक्ति मिल गई। मंत्रियों ने शीघ्र ही देश-द्रोह और षड्यंत्र करनेवालों को पकड़ा और उन्हें यथोचित दंड दिया। इस प्रकार सारे इँगलैंड में विद्रोह न फैल सका। सिर्फ़ नार्थंबरलैंड-प्रांत में कुछ-कुछ हलचल हुई थी; पर इस उत्तेजना से अँगरेज़-राज्य को कुछ भी भय न था। जेम्स के पक्षपातियों ने स्कॉटलैंड में भी विद्रोह खड़ा करने का

यत्न किया और वहाँ वे कुछ सफल भी हुए । इसका कारण यह था कि उत्तरीय स्कॉच् लोगों की सभ्यता अभी बहुत पिछड़ी हुई थी । उनके विश्वास और विचार पहले ही-जैसे भ्रांत और अपरिमार्जित बने हुए थे । दरिद्र जीवन व्यतीत करने से उनका जीवन कठोरता-पूर्ण हो गया था । जॉन अर्स्किन (John Erskine, Earl of Mar) ने स्कॉच्-विद्रोहियों को उभाड़ा और जॉर्ज की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया । शेरिफ़ म्योर (Sheriff Muir)-नामक स्थान पर जान अर्स्किन और जार्ज का सहायक आर्गाईल (Argyle) का ड्यूक, दोनों भिड़ गए । इस समर मे दोनो पक्ष समान रहे; युद्ध का कोई नतीजा न निकला । अगले साल फिर युद्ध हुआ । उसमे स्कॉच्-सेना हारी और जॉन अर्स्किन फ्रांस भाग गया ।

ऊपर लिखे हुए विद्रोह से ऑंगरेज़-सचिव-मंडल डरता था । उसे यह डर था कि कही नए निर्वाचन मे टोरी-दल फिर प्रधान न हो जाय । अतः उसने निर्वाचन का त्रैवार्षिक नियम (Triennial Act) हटाकर सप्तवार्षिक नियम (The Septennial Act) पास किया । इससे पार्लिमेंट के पुनर्निर्वाचन (General Election) की अवधि सात वर्ष की हो गई ।

(ख) छठे टाउनशैंड का सचिव-तंत्र राज्य (The Townshand Ministry) (१७१४-१७१६)

जॉर्ज प्रथम का राज्याधिरोहण होने के बाद १७१७ तक ऑँगरेज़ों के सचिव-तंत्र राज्य में कोई नई घटना नहीं हुई। पुराने ह्विग राजनीतिज्ञ मर चुके थे। केवल मार्लबरा बच रहा था। परंतु उस पर कोई विश्वास न करता था। उसकी जगह पर वाईकाउंट टाउनशैंड प्रधान मंत्री का काम करता था। इसकी मातहती में राबर्ट वाल्पोल (Robert Walpole) चांसलर था, संडरलैंड आयर्लैंड का शासक था और भूतपूर्व सेनापति जेनरल स्टैनहोप राज्य के शासन का काम करता था। स्टैनहोप तथा संडरलैंड जॉर्ज की परराष्ट्र-नीति के पक्षपाती और समर्थक थे।

स्टैनहोप १७१६ मे जॉर्ज के साथ हनोवर को गया। वहाँ जाकर फ्रांस और हालैंड के साथ संधि की। टाउनशैंड ने प्रधान मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया और स्टैनहोप प्रधान मत्री बना।

(ग) सातवॉ स्टैनहोप का सचिव-तंत्र राज्य

(The Stanhope Ministry)

टाउनशैंड की अपेक्षा स्टैनहोप अधिक कर्मपरायणता के साथ राज्य का काम करने लगा। इसके समय में ऑँगरेज़ी-राज्य ने पूर्ण रूप से कुलीन-तंत्र राज्य बनने का प्रयत्न किया।

लॉर्ड-सभा मे ह्विगो का बहुमत स्थिर करने के मतलब से 'पियरेज-बिल' (Peerage Bill) पेश किया गया, जिसके अनुसार एक समय मे केवल ६ ही नए लॉर्ड लॉर्ड-सभा मे सभ्य बनाकर रक्खे जा सकते थे। इस बिल के पेश करने का एक यह भी मतलब था कि राजा लॉर्ड-सभा मे अपना बहुमत करने के लिये, मनमानी सख्या मे, नए लॉर्ड बनाकर लॉर्ड-सभा मे न भेज सके। इसके पास हो जाने से लॉर्ड-सभा राजा की शक्ति के प्रभाव से मुक्त हो जाती और विना क्रांति किए उसकी शक्ति घटाई न जा सकती। अस्तु। लॉर्ड-सभा मे यह बिल पास हो जाने के बाद वाल्पोल तथा टोरी-दल ने प्रतिनिधि-सभा मे इसे न पास होने दिया।

स्टैनहोप के सचिव-दल की परराष्ट्र-नीति अकर्मण्य नहीं थी। पहले ही लिखा जा चुका है कि १७१६ मे हॉलैंड तथा फ्रांस से मित्रता और संधि करने की सफलता से ही स्टैनहोप को प्रधान मत्री का पद मिला था। यूट्रैक्ट की संधि के आधार पर योरप मे शांति स्थापित करने के लिये ही इँगलैंड, हॉलैंड तथा फ्रांस का यह राष्ट्रीय तिगुट बना था। इस मित्र-दल के विरुद्ध स्पेन, स्वीडन तथा रूस ने अपना एक नया गुट बनाया। इस नए गुट ने आस्ट्रिया तथा इटली पर आक्रमण किया। स्पेन ने सार्डीनिया तथा सिसली को जीत लिया। यदि जल-सेना के

सेनापति बिंग (Byng) ने सिसली में (१७१७) भूमध्य-सागर के बीच सामुद्रिक विजय न प्राप्त कर ली होती, तो यह विजय यहीं पर न रुकती। इसी समय में सम्राट् चार्ल्स छठे ने स्पेन के विरुद्ध अँगरेज़ों का साथ दिया, जिससे अँगरेज़ों का पक्ष प्रबल हो गया। इस युद्ध का परिणाम यह हुआ कि सम्राट् ने सिसली-प्रदेश को हस्तगत कर लिया। तभी से सेवाय (Savoy) का ड्यूक सार्डीनिया का राजा कहा जाने लगा।

(२). आर्थिक अवस्था

अँगरेज़-जनता व्यापार-व्यवसाय में बहुत ही अधिक उन्नति कर रही थी। नए-नए साहस के कामों मे हाथ डालना अँगरेज़ों के लिये साधारण-सी बात थी। यूट्रैक्ट की संधि के बाद वे अपने बचे हुए धन को किसी लाभदायक व्यवसाय में लगाने की फ़िक्र में थे। नित्य ही सम्मिलित पूँजी की कंपनियाँ खड़ी होती थीं और अँगरेज़ उनके हिस्से ख़रीद लेते थे। ऐसे उत्साह के समय मे, १७११ मे, हार्ले ने दक्षिण-सागर-कंपनी (South Sea Company) खड़ी की और लोगों को बहुत अधिक लाभ की आशा दिलाई। साधारणतः यह कंपनी अपना काम अच्छी तरह करने लगी। परंतु स्पेनिश लोगों की डाली हुई बाधाओं या रुकावटों के कारण उक्त कंपनी स्पेनी अमेरिका में उस सफलता के साथ काम न चला सकी, जिसकी उससे

आशा की जाती थी। ऐसे कठिन समय मे इस कपनी ने यह बेऌ-कूफी की कि बैंक ऑफ् इँगलैड के साथ उसकी लाग-डॉट हो गई और उसने राज्य को रुपए उधार देना शुरू किया। स्टैनहोप के मत्रि-मडल ने भी यह मूर्खता की कि कपनी से ऋण ले लिया। तब तो कपनी ने सर्वसाधारण के बीच अपने हिस्सो को और भी अधिक लाभदायक प्रकट करके गवर्नमेट-बांड के साथ एक्स-चेंज शुरू कर दिया। जनता ने कपनी के हिस्सो को अतीव लाभदायक समझकर उन्हे खरीदने की ओर अधिक उत्सुकता प्रकट की। इससे कपनी के हिस्सो की दर दसगुनी तक बढ़ गई। यह देखकर इँगलैंड मे और नई-नई कपनियाँ खड़ी होने लगी। उनमे से बहुत-सी तो देश के रुपए लूटने के लिये ही खुली थी। किंतु समय पर ढोल की पोल खुल गई, झूठी कंपनियाँ टूटने लगीं। इससे अच्छी कपनियो के हिस्सो की दर भी गिर चली। दक्षिण-सागर-कपनी पर भी विपत्ति आ पड़ी। उसके डाइरेक्टरो की सपत्ति छीन ली गई। इसी समय जनता को यह भी पता लगा कि इस कंपनी में कई मत्रियों का भी हाथ है और उन्होने कपनी के ज़रिए बहुत-सी रकम जेबो मे भर ली है। फिर क्या था, पार्लिमेट मे मत्रियो पर आक्षेप-पर-आक्षेप होने लगे। ऐसी विपत्ति के समय ही स्टैनहोप की तो मृत्यु हो गई और एक मंत्री ने आत्महत्या

कर ली। सडरलैंड पर मुकदमा चला। मुकदमे से छुटकारा पाने के बाद वह भी मर गया।

इस दुर्घटना के बाद टाउनशैंड तथा वाल्पोल फिर मंत्रि-मडल में प्रविष्ट हुए। १७२१ मे वाल्पोल प्रधान मत्री बना।

(३) आठवाँ वाल्पोल का सचिव-तत्र राज्य (Ministery) (१७२१-१७४२)

वाल्पोल बहुत ही योग्य आदमी था। उसने देश की आर्थिक अवस्था को बहुत कुछ सुधार लिया। १७२० की दुर्घटना के बाद १७२६ तक देश मे शांति रही। १७२७ मे जॉर्ज प्रथम की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र जॉर्ज द्वितीय इँगलैंड की गद्दी पर बैठा।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७१४	जॉर्ज प्रथम का राज्याधिरोहण
१७१५	जेम्स के पक्षपातियों का विद्रोह (Jacobite Rebellion)
१७१६	राष्ट्र-त्रयी सम्मिलन (Triple Alliance)
१७२०	दक्षिण-सागर की दुर्घटना (The South Sea Bubble)
१७२१	वाल्पोल का सचिव-तंत्र राज्य
१७२७	जॉर्ज प्रथम की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

जॉर्ज द्वितीय

(१७२७-१७६०)

जॉर्ज द्वितीय चालीस वर्ष की उम्र में इँगलैंड के सिंहासन पर बैठा । वह पिता के सदृश ही अपने व्यवहार तथा चाल-चलन में जर्मन था। इसमें संदेह नहीं कि उसे पिता की अपेक्षा अँगरेज़ी-भाषा और अँगरेज़ी-रस्मरिवाज़ों का अधिक ज्ञान था । उसका जीवन नियम-पूर्ण और व्यवहार सरल था । वैदेशिक राजनीति को वह पूर्ण रूप से समझता था । साथ ही उसमें बहुत-से दोष भी थे । वह ओछी-प्रकृति का, स्वार्थी, क्रोधी, विद्या-द्वेषी तथा लोभी था। उस पर उसकी स्त्री का पूरा प्रभाव था। लेकिन स्त्री के कहने से उसने रॉबर्ट वाल्पोल को प्रधान मंत्री के पद से नहीं हटाया। इसी कारण वाल्पोल २० वर्ष से कुछ अधिक समय तक अपने पद पर क़ायम रह सका ।

राजनीतिक दशा

वालूपोल का सचिव-तंत्र राज्य (१७२१-१७४२)

रावर्ट वालूपोल, १६७६ में, एक मध्यवित्त-श्रेणी (Middle

class) के घराने में उत्पन्न हुआ था। पिता की मृत्यु होने पर वह १७०० मे, २४ वर्ष की उम्र में, पार्लिमेंट का मेंबर बना। शुरू से ही वह ह्विग-दल का था। वह चतुर, सावधान, उद्यमी, धैर्यशाली, उत्साही, हाज़िर-जवाब तथा महत्त्वाकांक्षी था। इन गुणों के सहारे वह शीघ्र-शीघ्र उन्नति करने लगा। १७१२ में टोरी-दल पर उसने खूब आक्षेप और आक्रमण किए। इन आक्षेपों के कारण ही वह कुछ वर्षों तक राज्य के किसी भी पद पर न पहुँच सका। १७२१ में दक्षिण-सागर की दुर्घटना होने पर उसका सितारा चमका और वह चांसलर के पद पर नियुक्त हुआ।

इँगलैंड में वाल्पोल का सचिव-तंत्र राज्य बहुत दिनों तक रहा। इसी से यह अनुमान किया जा सकता है कि वह कितना योग्य था और ह्विग-दल के कुलीन-तंत्र राज्य में भीतरी क्या त्रुटि थी। वाल्पोल बहुत अच्छा वक्ता न था, हाँ, वह वाद-विवाद में विशेष निपुणता रखता था। इसी के सहारे वह प्रतिनिधि-सभा को अपने वश में रखता था। योग्य शासन के साथ ही वह अर्थ-सचिव के कार्य में भी अति चतुर था। वृथा के झगड़े बढ़ाकर अपने शत्रुओं की संख्या बढ़ाना उसे पसंद न था, बल्कि वह भिन्न-भिन्न स्वार्थ रखनेवाले जुदे-जुदे दलों को बड़ी चतुरता से अपने अनकूल

कर लेता था। इसमे संदेह नहीं कि डिसेंटरों को कठोर दंडों से, जो कानून-भंग करने के कारण उन्हें दिए जा सकते थे, इंडेमनिटी ऐक्ट (Indemnity Act) के द्वारा वह बचाता रहा। १७२७ से १८२८ तक डिसेंटरों की रक्षा इसी प्रकार की जाती रही। परंतु उनके विरुद्ध जो नियम बने थे, वे न हटाए गए। प्रतिनिधि-सभा अर्थात् पार्लिमेंट मे अपने ही प्रतिनिधि जायँ, इस पर वालपोल ने बहुत अधिक

जॉर्ज द्वितीय

ध्यान रक्खा। अपने इस उद्देश की पूर्ति के लिये वह घूस तक देने में नहीं हिचकता था। अधिक क्या, इसी के समय में, प्रतिनिधि-निर्वाचन के अवसर पर, रिश्वत के उपयोग ने एक असाधारण रूप धारण कर लिया। जो, कुछ हो, वाल्पोल अत्यंत देश-भक्त था। उसने देहाती जनता को जेम्स के पक्ष से हटाकर जॉर्ज का भक्त बना दिया। अपनी व्यापारिक तथा व्यावसायिक नीति से उसने अँगरेज-व्यापारियों और व्यावसायियों को ह्विग-दल के पक्ष में कर लिया। बड़े-बड़े योग्य राजनीतिज्ञों ने भी शायद ही अपने देश को उतना लाभ पहुँचाया होगा, जितना वाल्पोल ने इँगलैंड को पहुँचाया। वाल्पोल से पहले इँगलैंड में प्रधान मंत्री (Prime Minister) का पद नियत न हुआ था, क्योंकि अँगरेज-जनता प्रधान मंत्री के नाम से डरती थी। पूर्व परिच्छेदों में जहाँ-जहाँ प्रधान मंत्री तथा प्रधान सचिव का उल्लेख किया भी गया है, वहाँ-वहाँ उसका मतलब मुख्य नेता ही था। उसका भाव वह न था, जो आजकल इँगलैंड का प्रधान मंत्री कहने से व्यक्त हो जाता है। वर्तमान समय के प्रधान मंत्री का स्वरूप राबर्ट वाल्पोल से शुरू होता है। अँगरेज-जनता के डर से वाल्पोल ने कभी मुख्य मंत्री (Prime Minister) की उपाधि का उल्लेख अपने

नाम के साथ स्वय नही किया। किंतु वह मुख्य मत्री के सभी काम करता था।

वाल्पोल से पहले मत्रि-मडल के अतर्गत सभी व्यक्ति अधिकार तथा पद में बहुत कुछ बराबर ही होते थे। वाल्-पोल ने शनैः-शनैः मत्रि-मडल पर अपना प्रभुत्व प्रकट करना शुरू किया। उसने अपनी ही नीति स्वीकृत करने के लिये सभी मत्रियो को बाध्य किया। परिणाम यह हुआ कि बहुत-से मत्रियों के साथ झगडा हो गया, जिससे उनको उसके मत्रि-मडल से अलग होना पड़ा। वाल्पोल ने, १७२४ मे, राजा के कृपापात्र लार्ड कार्टरट को अपने मत्रि-मडल से निकाल दिया, क्योकि वह उसको फ्रांस के साथ सधि करने से रोकना चाहता था। इसी प्रकार टाउनशैंड के सबधी प्रसिद्ध वक्ता पुल्टने (Pultney) से भी वाल्पोल की भिड़त हो गई। पर इसका परिणाम उसके लिये अच्छा न हुआ। वाल्पोल के विरोधी लोगो ने एक दल बना लिया और अपने को देश-भक्त ह्विग (The Patriot Whigs) के नाम से प्रसिद्ध किया।

समय के फेर से अँगरेज़-नवयुवको का समूह वाल्पोल का साथ देने के बजाय देश-भक्त ह्विगो का साथ देने लगा। इन नवयुवकों मे विलियम पिट भी था। विलियम पिट बहुत

ही योग्य, उच्च आचारवाला तथा सच्चा देश-भक्त था। उसको प्रतिनिधि-निर्वाचन मे घूस देना-लेना बिलकुल नापसंद था। बालिब्रोक का अधःपतन होने के बाद पार्लिमेंट मे टोरी-दल के आदमी बहुत थोड़े रह गए थे। बालिंब्रोक, १७२३ मे, जॉर्ज की आज्ञा से इँगलैंड को लौट आया, क्योंकि उसकी भक्ति जेम्स के ऊपर से हटकर जॉर्ज के ऊपर हो गई थी। इँगलैंड में आते ही उसने टोरी-दल के लोगों को जमा करना शुरू किया। जॉर्ज का पुत्र फ्रेडरिक (Fiedric) बहुत ही ओछी-प्रकृति का आदमी था। अपने पिता को तग करने में ही उसको प्रसन्नता होती थी। इसी उद्देश से उसने बालिब्रोक से दोस्ती कर ली। जॉर्ज द्वितीय को उस पर बहुत विश्वास न था। बालिब्रोक तथा टोरी-दल के लोग फ्रेडरिक के अनुयायी होने लगे।

सभी के विरोधी होने पर भी वाल्पोल लोक-सभा मे बहुमत पाता रहा और अपने पद पर कायम रहा। १७३७ मे रानी कैरोलाइन (Caroline) के मरने पर उसे बहुत धक्का पहुँचा। राज्य के कार्य करने में रानी का उसको बड़ा भारी सहारा था।

१७३३ मे विरोधियों ने वाल्पोल की 'एक्साइज़ स्कीम' (Excise Scheme) न पास होने दी। इस स्कीम के

बनाने मे उसको बहुत ही अधिक समय लगाना पड़ा था। इसके अनुसार वह पहले तमाखू और शराब के व्यवसाय पर एक नई रीति से कर लगाना चाहता था। वाल्पोल इन पदार्थों पर से चुगी हटाना चाहता था, क्योकि लोग चोरी से माल निकाल ले जाते थे। इस स्कोम के बनाने मे उसका दूसरा उद्देश यह था कि इंगलैड किसी-न-किसी तरीके से इन पदार्थों के लिये ससार का बाज़ार बन जाय। सामुद्रिक कर हटाने से ही यह बात सभव थी। इस स्कीम के सहारे राज्य की आय बढ़ जाती और गरीब किसानो पर से भूमि-कर की मात्रा भी कम की जा सकती। खैर, विरोधी लोगो ने यह कहकर जनता को भड़का दिया कि एक्साइज़ स्कीम का प्रयोग धीरे-धीरे सभी पदार्थों पर होने लगेगा और इस तरह राज्य का हस्तक्षेप जनता के घरो तक जा पहुँचेगा। लोग बहुत ही अधिक भड़क गए। अतः वाल्पोल ने इस स्कीम को पार्लिमेट मे नही पेश किया। १७३७ मे एडिन्बरा के लोग पोर्च्युअस (Porteous)-नामक राजकर्मचारी से तग होकर खीझ उठे। उन्होने टाल्बूथ-नामक कैदखाने को तोड़ डाला और पोर्च्युअस को फाँसी पर लटका दिया। इस घटना से वाल्पोल को क्रोध चढ़ आया। वह एडिन्बरा का चार्टर इस अपराध पर छीनना चाहता था परंतु

विरोधियो ने यहाँ पर भी उसका विरोध किया। वालपाल ने लाचार होकर इस मामले को ठंढा कर दिया। केवल पोर्च्युअस की विधवा स्त्री को पार्लिमेंट से कुछ रुपए दिलवा दिए।

वालपोल की परराष्ट्र-नीति

वालपोल की परराष्ट्र-नीति पर भी विरोधियो ने पूर्ण रूप से आक्रमण किया। वालपोल योरप के मामलों में बहुत अधिक हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था। फिलिप पंचम ने वारंवार यूट्रैक्ट की संधि तोड़ने का यत्न किया। इससे योरप को हर घड़ी लड़ाई का खौफ बना रहता था। इँगलैंड तथा हालैंड से चार्ल्स छठे का व्यवहार अच्छा न था। १७२५ में एक साहसी डच ने चार्ल्स को यह समझाया कि शांति से रहने में ही उसका भला और हित है। १७२५ में वियना की प्रथम संधि (First Treaty of Vienna) हुई। इसी के एक साल बाद, १७२६ में, हालैंड तथा इँगलैंड ने फ्रांस के साथ संधि कर ली। इस संधि का मुख्य उद्देश यह था कि स्पेन तथा आस्ट्रिया यूट्रैक्ट की संधि को तोड़ने न पावे। इस पर स्पेन तथा इँगलैंड के बीच १७२७ मे युद्ध छिड़ गया। १७२६ में सैविल (Saville)-नामक स्थान पर दोनों देशो में मेल हो गया। १७३१ में

वियना की द्वितीय संधि हुई, जिससे योरप मे फिर युद्ध छिड़ने का डर कुछ-कुछ कम हो गया।

वियना की तृतीय संधि (१७३८)—पर दो वर्ष के बाद ही योरप मे पोलैंड के उत्तराधिकार (War of the Polish Succession) का युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध का मुख्य उद्देश आस्ट्रियन लोगो को निकालकर नेपिल्स के राज्यासन पर फिलिप पंचम के पुत्र डान चार्ल्स (Don-Charles) को बिठाना था। फ्रांस तथा स्पेन ने परस्पर मेल कर लिया। स्पेनी नेताओं ने चार्ल्स छठे को सिसली तथा नेपिल्स के बाहर कर दिया। इससे यूट्रैक्ट की संधि टूट गई, क्योंकि यह काम उसकी शर्तों के खिलाफ था। वाल्पोल योरप के युद्ध मे शामिल नही हुआ चाहता था। उसने एक बार घमंड के साथ यह कहा था कि इस वर्ष १०,००० मनुष्य योरप मे मारे-काटे गए और खुशी की बात यह है कि उनमे एक भी अँगरेज़ न था। इँगलैंड के युद्ध (१७३८) में न शामिल होने से आस्ट्रिया हार गया और उसने डान चार्ल्स को नेपिल्स का राजा मान लिया। यह सधि वियना की तृतीय संधि (The Third Treaty Vienna) कही जाती है।

वाल्पोल का स्पेन से न लड़ना उसके पतन का एक

कारण बन गया। बहुत-से अँगरेज़ इसी कारण उससे असंतुष्ट हो गए। स्पेन ने शक्ति-संचय करते ही अँगरेज़ों के साथ बुरा व्यवहार शुरू कर दिया। उसने अँगरेज़ों के व्यापार में तरह-तरह की बाधाएँ डालीं। स्पेनी राज्य अँगरेज़-जहाज़ों को बहुत बुरी दृष्टि से देखता था। उसके उपनिवेश में जब अँगरेज़-जहाज़ माल लाते थे, तो जहाज़ी अफसर उनकी तलाशी लेता था कि वे कहीं उन पदार्थों को तो नहीं ले आए हैं, जिनके लाने की मनाही है। इससे अँगरेज़-व्यापारी चिढ़ गए। १७३६ में उन्होंने स्पेन से युद्ध की घोषणा कर दी। यह युद्ध 'जैन्किन्स के कान' (Jenkin's ear)-युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। जैन्किन्स-नामक एक जहाज़ी कप्तान ने यह कहा था कि स्पेनियो ने मेरे कान काट डाले हैं। उसने अपने कटे हुए कानों को एक बोतल में भरकर पार्लिमेंट के सामने रक्खा, तब लोगों में बड़ा क्रोध और जोश पैदा हुआ। १७४० में सम्राट् चार्ल्स छठे की मृत्यु हो गई। योरप के राजा लोग चार्ल्स की कन्या मेरिया थैरेसा (Maria Ther-eras) को साम्राज्ञी के आसन पर बैठने नहीं देना चाहते थे। वालूपोल ने इसमें भी हाथ डालना ठीक न समझा। इस पर तो अँगरेज़-जनता और राजा, दोनों ही उससे नाराज़ हो गए। १७४२ मे राजा ने उसको इस्तीफा देने के लिये बाध्य किया।

कार्टरेट और पैल्हम का साचिव तन्त्र राज्य
(The Carteret and Pelhem Ministry)
(१७४३-१७५४)

वाल्पोल का अधःपतन होने के बाद भी अँगरेजों की नीति ज्यों-की-त्यों बनी रही। राज्य-शासन मे ह्विगो की ही प्रधानता रही। विरोधी-दल के लोग किसी भी राजकीय पद पर अपना अधिकार नहीं जमा पाए। वाल्पोल के मित्र पैल्हम के घराने की शक्ति का परिमाण राज्य मे पूर्ववत् ही बना रहा। राजा ने वाल्पोल का स्थान लॉर्ड विलमिंडाटन को दिया; परतु वह काम ठीक तौर से न चला पाया। १७४३ में उसकी मृत्यु हो गई और पैल्हम प्रधान मंत्री बनाया गया। लॉर्ड कार्टरेट राष्ट्र-साचिव (Secretary of State) था। वह परराष्ट्र-नीति मे बहुत ही चतुर और राजा का कृपापात्र भी था, क्योंकि जर्मन-भाषा पर उसका पूरा दख़ल था, उसे वह बहुत अच्छी तरह बोल सकता था। वह नियम की पाबंदी का क़ायल न था, इसी से राज्य का काम ठीक ढंग से नहीं चला सका। इस कारण पैल्हम की शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ गई। उसने वाल्पोल की नीति के अनुसार ही इँगलैंड का शासन शुरू किया; परंतु इसके साथ ही यह उन ग़लतियों से बचा रहा, जो वाल्पोल ने की

थीं। उसने राज्य के निवासी योग्य-योग्य व्यक्तियों को एकत्र कर उनको अपने पक्ष मे मिला लिया। आश्चर्य तो यह है कि एक या दो टोरियो को भी उसने अपने मंत्रि-मंडल मे रख लिया। इन्हीं दिनों विलियम पिट (William Pitt) ने राजनीतिक क्षेत्र में नाम पैदा करना शुरू किया। परंतु राजा के नाराज़ होने के कारण वह प्रधान मंत्री न बन सका। १७५४ तक पैल्हम का सचिव-तंत्र शासन रहा। इस बीच में उसको किसी तरह के किसी विरोधी का सामना नहीं करना पड़ा।

आस्ट्रियन उत्तराधिकार का युद्ध
(The War of Austrian Succession)
(१७४०-१७४८)

योरप मे आस्ट्रियन उत्तराधिकार का भयंकर युद्ध छिड़ गया। अतः इँगलैंड में भीतरी शांति का होना आवश्यक हो गया। यह प्रथम ही लिखा जा चुका है कि १७३९ में इँग-लैंड तथा स्पेन की लड़ाई ('जैन्किन्स के कान' की लड़ाई) छिड़ गई थी। १७४३ में जॉर्ज और कार्टरेट ने आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध में इँगलैंड को भी घसीट लिया। योरप में आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध का बीज इस तरह बोया गया—

१७४० में सम्राट् चार्ल्स छठे की मृत्यु हो गई। इसके कोई भी पुत्र न था। अतः इसने अपना सारा साम्राज्य अपनी कन्या मेरिया थैरेसा को दे दिया। उसने जो वसीयत लिखी, वह प्रैग्मैटिक् सैंकशन (Pragmatic Sanction) के नाम से प्रसिद्ध है। योरप-खंड के राजों को यह् वसीयत-नामा पसंद न था। वे स्वयं उसके साम्राज्य को हड़पना चाहते थे। इन राजों का नेता प्रशिया का राजा फ्रेडरिक (द्वितीय) दि ग्रेट था। इसने सबसे पहले (१७४० में चार्ल्स छठे की मृत्यु के बाद ही) आस्ट्रिया के एक प्रांत साइलीसिया ही पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। इसकी देखादेखी बवेरिया तथा सैक्सनी ने बोहीमिया पर आक्रमण किया, स्पेन तथा सार्डीनिया ने मिलान (Milan) को जीतने का प्रयत्न किया। बेचारी मेरिया थैरेसा पर सब ओर से विपत्ति ही फट पड़ने लगी।

इँगलैंड ने, १७४३ में, मेरिया थैरेसा को बड़ी भारी सहायता पहुँचाई। जॉर्ज द्वितीय ने हेनोवर तथा इँगलैंड की सेनाओं को योरप में भेजा और मेरिया थैरेसा के राज्य को बचाने का प्रयत्न किया। २७ जून को जॉर्ज ने डैटिंजन (Dettingen) का युद्ध जीता। इसका बहुत ही अच्छा असर हुआ। इँगलैंड से फ्रांस भिड़ गया। इँगलैंड ने मेरिया थैरेसा को इसके

लिये लाचार किया कि वह साइलीसिया-प्रांत फ्रेडरिक दि ग्रेट को देकर उसे अपना सहायक बना ले। उसने लाचार होकर अँगरेज़ों की यह सलाह मान ली और फ्रेडरिक को अपना सहायक बना लिया। अँगरेज़ों की इस चाल से आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध का रूप बिलकुल ही बदल गया। एक तरह से यह युद्ध इँगलैंड, स्पेन तथा फ्रांस मे व्यापार और उपनिवेशों के लिये हुआ। फ्रांस तथा स्पेन ने मिलकर, १७४५ मे, नीदरलैंड के अदर फांटनाय (Fontenoy) पर अँगरेज़ों तथा डचों पर आक्रमण किया और वे विजयी हुए। इस विजय से प्रसन्न होकर उन्होंने इँगलैंड पर आक्रमण करने की चेष्टा की। दैव-संयोग से उनका जहाजी बेड़ा समुद्री तूफ़ान से नष्ट हो गया और इँगलैंड इस आफ़त से बच गया। निर्वासित जेम्स का पुत्र चार्ल्स एडवर्ड बहुत ही वीर पुरुष था। उसने बड़े साहस से चुपके-चुपके दो जहाज़ो को मोल ले लिया। फिर कुछ साथियों को लेकर वह स्कॉटलैंड मे जा धमका। स्काच् कैथलिक लोगो ने उसका साथ दिया। परिणाम यह हुआ कि उसने स्कॉटलैंड को फ़तह किया। एडिन्बरा, मंचेस्टर तथा डर्बी तक सारा प्रदेश उसके हाथ में आ गया। फिर भी अँगरेज़ों ने उसका साथ न दिया। इससे वह फिर स्कॉटलैंड को लौट गया। १७ जनवरी, १७४६ को अँगरेज़ो के साथ

फाल्कर्क (Falkrik)-नामक स्थान पर उसका युद्ध हुआ, जिसमे वह जीत गया। परतु इसके कुछ ही समय बाद वह 'कलोडनमूर' (Cullodenmoor) के युद्ध मे अँगरेज़ो से बुरी तरह परास्त भी हुआ और फ्रांस को भाग गया। इस असफलता से वह निराश हो गया और शराब के नशे मे चूर रहकर अपनी बेचैनी दूर करने लगा। उसका भाई बहुत ही ग़रीब था। वह इँगलैंड पर आक्रमण करने के बदले जॉर्ज तृतीय से पेशन लेकर अपना निर्वाह करने लगा।

जॉर्ज ने इस घटना से पूरी शिक्षा ग्रहण की। उसने उत्तरीय स्कॉचो (Highlanders) को शस्त्र-रहित कर दिया, वहाँ के कैथलिक लोगो को बहुत ही तग किया, बड़ी-बड़ी सड़के बनवाईं और उन सड़को का सबध सीधा छावनियो के साथ कर दिया। स्कॉच् ज़मीदारो की शक्ति बहुत ही कम कर असामियो के साथ उनका सबध शिथिल कर दिया। इन सब उपायो का परिणाम यह हुआ कि उत्तरीय स्कॉच् भी 'लोलैंड' के स्कॉचो (Lowlanders) तथा अँगरेज़ो के समान शांतिप्रिय हो गए।

योरप मे अभी लड़ाई जारी ही थी। अँगरेज़ों के ऊपर लिखे आंतरिक विक्षोभ से फ्रांसीसियो ने पूरा लाभ उठाया।

उन्होंने नीदरलैंड का बहुत-सा भाग जीत लिया ; पर अन्य स्थलो मे वे अँगरेजों से हारे भी। परिणाम यह हुआ कि दोनो ही ने, १७४८ में, (ए-ला-शेपिल) की सधि (Treaty of Aix-la-chappelle) कर ली और मेरिया थैरेसा को भी यह सधि मानने के लिये विवश किया। इस सधि के अनुसार मिलान का कुछ बढ़िया भू-भाग सार्डीनिया को दे दिया गया। परमा (Parma) फिलिप पचम के पुत्र फिलिप को मिला। बेचारी मेरिया थैरेसा की बात किसी ने भी न पूछी। किंवदती है कि वह जिदगी-भर यही कहती रही कि "अँगरेजो से बढ़कर स्वार्थी कोई भी नही है। अपने स्वार्थ के आगे सत्य, न्याय तथा धर्म को भी ये लोग तिलांजलि दे देते है।"

इँगलैंड का भीतरी सुधार

ए-ला-शेपिल की सधि के बाद अँगरेजों की समृद्धि दिन-दिन बढ़ती ही गई। हेनरी पैल्हम ने बहुत ही दूरदर्शिता तथा बुद्धिमत्ता से देश का शासन किया। वह वालपोल की तरह बहुत-से परिवर्तनों को नापसद करता था; साथ ही विरोधियों के साथ मेलजोल भी बनाए रखता था।

उसने इँगलैंड की आंतरिक दशा सुधारने का यत्न किया। उसने नई जत्री (Calendar) बनवाई, भिन्न-भिन्न जातीय

ऋण-पत्रों को मिलाकर एक ही पत्र बना दिया और ३% ब्याज देना शुरू किया। १७१४ मे बडी शांति के साथ वह परलोक सिधारा। उसकी मृत्यु होने पर जॉर्ज द्वितीय ने यह कहा था—"अब मुझको शांति की आशा नही है।" उसके ये शब्द किसी हद तक ठीक भी थे, क्योकि हेनरी पैल्हम के समान शांतिप्रिय, तथा योग्य मनुष्य उस समय इॅगलैंड मे दूसरा नही देख पड़ता था।

पैल्हम के बाद उसके भाई न्यूकासल का ड्यूक (Duke of New Castle) महामत्री बना। यह झगड़ालू था। इसको शक्ति-शाली बनने की बहुत ही अभिलाषा थी। अतएव यह किसी दूसरे के ऊपर विश्वास न करता था। धूर्तता तथा चालाकी मे इसका कोई सानी न था। इसने अपने भाई को पार्लिमेंट का प्रधान बनाया। परतु उसको इसकी कुछ शर्ते नामजूर थी, अतः उसने उस पद को छोड़ दिया। उसके बाद कुछ समय तक सर टॉमस राबिसन (Sir Thomas Robinson) ने पार्लिमेंट के प्रधान का काम किया। राबिसन पार्लिमेंट का नियत्रण न कर सका, अतः उसको यह पद स्वय ही छोड़ देना पड़ा। लाचार होकर न्यूकासल ने चार्ल्स जेम्स फॉक्स (Charles James Fox) को प्रधान के पद पर नियुक्त किया। फॉक्स की विलियम पिट (William Pitt) से

कुछ भी समता न थी। विलियम पिट दृढ़ तथा सदाचारी था। उसको घूस देकर पद प्राप्त करना पसंद न था। वालपोल तथा कार्टरेट के दोषो को उसी ने प्रजा के सम्मुख प्रकट किया था। वह उन महात्माओं मे से था, जो बहुत समय बाद कभी-कभी देश मे उत्पन्न हुआ करते हैं। न्यूकासल ने ऐसे मनुष्य को अपने मंत्रि-मडल में नहीं लिया। इससे उसका मंत्रि-मडल बहुत कुछ शक्तिहीन हो गया।

सभव था कि न्यूकासल का सचिव-तंत्र (Ministry) राज्य कुछ समय तक और बना रहता; परंतु इन्हीं दिनों इँगलैड किसी एक और नए युद्ध की तैयारी कर रहा था, और न्यूकासल इस भयकर भावी युद्ध को सँभालने मे सर्वथा असमर्थ था। अतएव उसके विरुद्ध सर्व-साधारण जनता की आवाज़ें उठने लगी। १७५६ मे न्यूकासल ने इस्तीफा दे दिया। इसके स्थान पर डेवनशायर का ड्यूक (The Duke of Devon Shire) महामत्री बना। इसने पिट को बहुत उच्च पद दिया। किंतु पिट तथा डेवनशायर का सचिव-तत्र राज्य भी कुछ ही समय तक रहा, क्योंकि न्यूकासल ने अपने वोट (Vote) इन्हें नहीं दिए। १७५७ मे पिट और डेवनशायर ने इस्तीफ़ा दे दिया। लाचार होकर लोगों ने पिट तथा न्यूकासल से काम सँभालने को कहा, क्योंकि इँगलैड

पर सब ओर से विपत्तियाँ पडनेवाली थी। न्यूकासिल तथा पिट ने जनता की आवाज सुनी और राज्य-कार्य अपने हाथ मे ले लिया। न्यूकासिल इधर-उधर की चालाकियो तथा धूर्तताओ मे लगा रहा। पिट को इन बातो से घृणा थी, अतः वह इस ओर से सर्वथा उदासीन रहा। उसने अपनी सारी शक्ति उस युद्ध मे लगाई, जिस पर इंगलैड का भविष्य निर्भर था। पिट के पहले इँगलैड की बहुत बुरी दशा थी। योरप मे जो युद्ध हो रहे थे, उनमे उसकी स्थिति बहुत शोचनीय थी। धन्य है पिट को, जिसने इंगलैड को ऐसे भयानक सकट के समय बचाया।

सप्तवार्षिक युद्ध (The Seven Years' War)

आस्ट्रियन अधिकार-युद्ध के सदृश ही सप्तवार्षिक युद्ध भी भयकर था। इसके मुख्य कारण दो थे—

(१) फ्रांस व्यापारिक, व्यावसायिक तथा औपनिवेशिक राष्ट्र बनना और इँगलैड को नीचा दिखाना चाहता था।

(२) इंगलैड यदि लड़ाई मे न शामिल होता, तो योरप में शक्ति-साम्य (Balance of Power) का सिद्धांत नष्ट होता था।

घरू क्रांति (Civil war) के अनंतर इँगलैड वैदेशिक व्यापार से प्रतिदिन समृद्ध हो रहा था। दूर-दूर के देशो में

उसका व्यापार फैला था और सब ओर उसके उपनिवेश मौजूद थे। १७वीं शताब्दी मे हालैंड उन्नति करना चाहता था, परंतु इँगलैड ने उसको ऊपर न उठने दिया। इन सब बातो को फ्रांस तीक्ष्ण दृष्टि से देख रहा था। उसको इँगलैड की समृद्धि से ईषा थी। यही कारण है कि १८१५ के वाटर्लू के युद्ध (Battle of Waterloo) तक इँगलैंड और फ्रांस मे परस्पर युद्ध होता रहा। इस युद्ध का क्षेत्र भारतवर्ष, अमेरिका, योरप तथा समुद्र था।

भारतवर्ष में योरप के व्यापारी तथा उनकी विजय—१६वीं शताब्दी के आरंभ से ही भारतवर्ष की ओर योरप के व्यापारियों का ध्यान लगा था, क्योंकि उस जमाने मे भारतवर्ष व्यापार-व्यवसाय से संपन्न तथा कृषि-प्रधान देश था। उसकी समृद्धि जगद्विख्यात थी। स्पेन, पुर्तगाल और हालैंड की देखादेखी इँगलैंड ने भी भारतवर्ष में व्यापार करना चाहा और अपनी ईस्ट-इंडिया-कंपनी (East India Company) बनाई। कंपनी की मुख्य-मुख्य कोठियाँ (Factories) निम्न-लिखित तीन स्थानों पर थीं—

(१) फोर्ट विलियम (Fort William) (कलकत्ता)

(२) फ़ोर्ट सेंट जॉर्ज (मदरास) (Fort St George)

(३) बंबई (Bombay)

लुईस चौदहवें के बाद फ्रांसीसियों ने भी अपनी ईस्ट-इंडिया-कंपनी बनाई। इससे अँगरेजों तथा फ्रांसीसियों की दुश्मनी का बढ़ जाना स्वाभाविक ही था। फ्रांसीसियों की मुख्य कोठी पांडिचेरी में थी। १६वीं शताब्दी में, भारतवर्ष में, मुगल-बादशाहों का आधिपत्य था। उनकी शक्ति बहुत थी। यदि वे चाहते, तो इन योरपियन व्यापारियों की जड़ ही उखाड़ डालते। परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। भारतीयों ने भी उनको अपने देश में शरण दी।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद भारतवर्ष भिन्न-भिन्न प्रांतों में बँट गया। स्थान-स्थान पर भिन्न-भिन्न नवाब शासन करने लगे। कोई किसी का प्रभुत्व मानने को तैयार न था। इस अराजकता से योरप के व्यापारियों ने लाभ उठाने का प्रयत्न किया।

अभी लिखा जा चुका है कि फ्रांस की मुख्य कोठी मदरास के पास पांडिचेरी में थी। पांडिचेरी का शासक (Governor) डूप्ले था। वह बहुत ही बुद्धिमान् तथा राजनीतिज्ञ था। उसने भारतीयों के राजनीतिक असंघटन से लाभ उठाने का प्रयत्न किया। उसने एक नवाब को दूसरे नवाब से लड़ाना चाहा और उसी तरह शक्ति प्राप्त करने का यत्न किया, जिस तरह अँगरेज योरप के राष्ट्रों को शक्ति-सामंजस्य (Balance of

Power) के नाम पर परस्पर लड़ाकर स्वयं शक्तिशाली बनते थे। धर्म, भाषा तथा देशाचार भिन्न-भिन्न होने के कारण भारतीयों मे एकता न थी। लोग शत्रु-मित्र नहीं पहचानते थे। उनको इस बात का ज्ञान न था कि जातीयता किस चिड़िया का नाम है। रुपयों के लिये वे अपने भाइयों से लड़ने के आदी थे। चिरकाल से अराजकता तथा नवाबी देखते-देखते उनके वैयक्तिक स्वातंत्र्य, देशप्रेम तथा स्वराज्य के भाव नष्ट हो चुके थे। लोगों को शासन की विधि नहीं मालूम थी; और प्रतिनिधि-तंत्र शासन (Representative-Govt) से तो वे सर्वथा अपरिचित थे। यही नहीं, युद्ध-कौशल में भी वे योरपियनों का मुक़ाबला न कर सकते थे।

इन सारी बातो को सोचकर फ़्रांसीसी शासक डूले (Dupleix) ने मदरास को जीतने का साहस किया। १७४६ में उसने मदरास को फतह किया। ए-ला-शेपिल की संधि के अनुसार उसे वह नगर अँगरेज़ों को फिर से लौटा देना पड़ा। परंतु उसकी धाक मदरासी नवाबों के दिल में बैठ गई। इस संधि के बाद डूले ने भिन्न-भिन्न नवाबों की लड़ाई से लाभ उठाने का यत्न किया। अँगरेज़ भला कब चूकनेवाले थे।

मदरास में अँगरेज़ क्लर्कों की स्थिति में थे, परंतु फ़्रांसीसियों

की यह स्थिति न थी। डूले सेनापति तथा राजनीतिज्ञ था। उसके पास पांडिचेरी का प्रांत था। फिर भी अँगरेज़ो मे राबर्ट क्लाइव (Robert Clive) नाम के एक मनुष्य ने साहस करके फ्रांसीसियो को नीचा दिखाने का यत्न किया। क्लाइव ने चालाकी से कुछ ही मनुष्यो के सहारे कर्नाटक की राजधानी अर्काट को अपने हाथ मे कर लिया और अत तक उसको अपने हाथ से न जाने दिया। डूले अर्काट को क्लाइव के हाथ से न छुड़ा सका। इस पर फ्रांसीसी घबरा गए और उन्होने उसको बेइज्ज़त करके फ्रांस मे बुला लिया। इस जल्द-बाज़ी का परिणाम फ्रांसीसियो के लिये अच्छा न हुआ। उनके हाथ से भारतवर्ष सदा के लिये निकल गया।

कुछ ही वर्षो के बाद अँगरेज़ो ने डूले की नीति का बगाल मे प्रयोग करके, नवाब सिराजुद्दौला को कठपुतली बनाने का प्रयत्न किया। दैवसयोग से नवाब ने कुछ अँगरेज़ो को एक कोठरी मे बद कर दिया। किवदती है कि इस कालकोठरी (Blackhole) मे कुछ अँगरेज, जून-महीने की गरमी होने और हवा न मिलने के कारण, मर गए। अँगरेज़ो ने सिराजु-द्दौला के दरबारियो को उससे फोड़ लिया और उनमे से किसी एक को नवाब बना देने का प्रयत्न किया। इस नीति का परिणाम यह हुआ कि नवाब सिराजुद्दौला २३ जून,

१७५७ को पलासी (Plassey) के युद्ध मे पराजित हुआ। यह विजय प्राप्त करके अँगरेज़ों ने बगाल का राज्य करना आरभ किया और एक मुसलमान (मीर जाफर) को नाम-मात्र के लिये नवाब बना दिया।

पलासी के युद्ध के तीन वर्ष बाद उन्होने वाँदेवाश (Wandewash) के प्रसिद्ध युद्ध मे (१७६०) विजय प्राप्त की और कर्नाटक के स्वामी ही बन बैठे। १७६१ मे उन्होंने फ्रांसीसियों का पांडिचेरी पर से भी प्रभाव हटा दिया। इस प्रकार कर्नल कूट (Col. Eric Coot) तथा राबर्ट क्लाइव ने भारतवर्ष मे इँगलैंड का राज्य स्थापित कर दिया।

नॉर्थ अमेरिका में फ्रांस तथा इँगलैंड—उत्तरीय अमेरिका मे भी फ्रांस और इँगलैंड के बहुत-से युद्ध हुए। यूट्रैक्ट की सधि के बाद सेंट लॉरेंस (St. Lawrence) से लेकर कैरोलीना (Carolina) तक सारे अमेरिकन उपनिवेश इँगलैंड के ही पास थे। १७३१ मे अँगरेज़ों ने जॉर्जिया-नामक अपना एक और उपनिवेश (Colony) बसाया, जो स्पेनिश उपनिवेशों के पास था। कनाडा मे मुख्यतः फ्रांसीसियों के ही उपनिवेश थे। सेंट जॉन (प्रिंस एडवर्ड का द्वीप)-नामक फ्रांसीसी द्वीप के पास केपब्रिटन-नामक द्वीप अँगरेज़ों के कब्ज़े में था। लूसीनिया का फ्रांसीसी द्वीप बहुत

ही शक्तिशाली था । इसी प्रकार एलीघानी-पर्वत पर (Alleghany Mountain) डुकिस्ने-नामक फ्रांसीसी किला था । इसकी शक्ति से वर्जीनिया-उपनिवेश के अँगरेज डरते थे । यही कारण है कि १७५४ मे जॉर्ज वाशिंगटन (George Washington)-नामक व्यक्ति ने डुकिस्ने के किले पर आक्रमण कर दिया । परतु इस आक्रमण मे वह फ्रांसीसियो से बहुत बुरी तरह से हारा ।

इन्हीं दिनो योरप मे सप्तवार्षिक युद्ध (Seven Years' War) का प्रारभ हो गया । इस युद्ध का मुख्य कारण यही था कि भारतवर्ष तथा अमेरिका पर फ्रांस और इँगलैड, दोनो ही अपना-अपना राज्य स्थापित करना चाहते थे । प्रशिया तथा इँगलैड के विरुद्ध योरप के राष्ट्र आपस मे मिल गए । मेरिया थैरेसा अँगरेजो की बेईमानी तथा स्वार्थ से तग थी ही, अतः वह फ्रांस से मिल गई । लाचार होकर अँगरेजो ने, १७५६ मे, हनोवर तथा प्रशिया के साथ संधि (Treaty of Versailles) कर ली । १७५६ मे फ्रेडरिक दि ग्रेट ने खतरा जानकर स्वय ही अपने शत्रुओ पर आक्रमण कर दिया । इसी वर्ष से योरप मे सप्तवार्षिक युद्ध का प्रारभ हो गया ।

सप्तवार्षिक युद्ध के शुरू मे इँगलैड के अदर फूट थी । मत्री लोग आपस मे लडते रहते थे । इन्ही दिनो इँगलैड मे कलकत्ते

की कालकोठरी की और ओहायो (Ohio) तथा सेंट लारेंस की दुर्घटनाओं की ख़बरें पहुँचीं। फ्रेडरिक दि ग्रेट अपने राज्य को बड़ी मुश्किल से बचा रहा था। ड्यूक ऑफ् कंबरलैंड (Duke of Cumberland) फ्रांसीसियों से बुरी तरह पराजित हुआ। ड्यूक को फ्रांसीसियों से कैपिच्युलेशन ऑफ़् क्लोस्टर ज़ेवन (Capitulation of Kloster Zeven)-नामक संधि करनी पड़ी। उसके अनुसार उसने हनोवर-प्रदेश फ्रांसीसियों को दे दिया। माइनार्का में फ्रांसीसियों ने अँगरेज़-सेनापति बिंग (Byng) पर विजय प्राप्त की। अँगरेज़ों ने बिंग से क्रुद्ध होकर उसको (१७५७) प्राण-दंड दे दिया।

इस भयंकर विपत्ति से घबराकर अँगरेज़-जनता ने पिट तथा न्यूकासिल को मिलने के लिये विवश किया। पिट ने सप्तवार्षिक युद्ध का अच्छी तरह से संचालन किया। उसने एंसन (Anson) को नौ-सेनापति बनाया। पिट को यह विश्वास था कि इस विपत्ति के समय में इँगलैंड को बचानेवाला एक-मात्र मैं ही हूँ। उसने युद्ध का नक़्शा बनाया।

भारतवर्ष इँगलैंड से बहुत दूर था, अतः उसने उसको ईश्वर के भरोसे छोड़ा और राबर्ट क्लाइव को शाबाशी-पर-शाबाशी देता रहा। उसने युद्ध का सारा बल हनोवर-प्रांत में ही लगा दिया। दैवसंयोग से मिंडन (Minden)-नामक स्थान पर

कनाडा-विजय
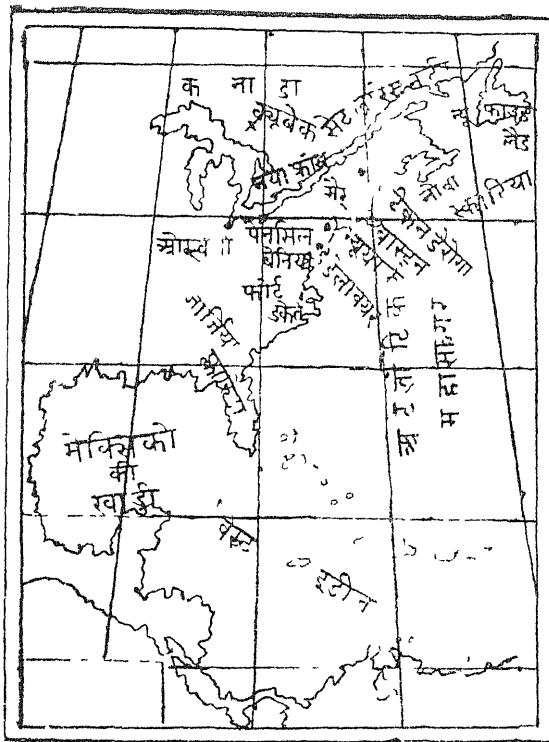
अँगरेजों की विजय हुई। इससे हनोवर-प्रांत अँगरेजों के हाथ में आ गया। हनोवर पर प्रभुत्व प्राप्त करके अँगरेज़ों ने फ़्रेडरिक दि ग्रेट को सहायता पहुँचाई। इन सब सहायताओं को देते हुए भी पिट का ध्यान अपने देश के व्यापार-व्यवसाय को

बढ़ाने की ओर ही था। जब कोई अँगरेज़ पिट से युद्ध के विषय में पूछता, तो वह यही उत्तर देता था कि अमेरिका की फ़िक्र मत करो; अमेरिका की विजय जर्मनी में होगी। उसने अच्छे-अच्छे स्थानों पर योग्य मनुष्यों को ही चुना था। १७३६ में उसके कृपापात्र नौ-सेनापति हो (Howe) ने क्विबेरान के युद्ध मे फ़्रांसीसी बेड़े को नष्ट कर दिया। इससे सारे समुद्र पर इँगलैंड का प्रभुत्व स्थापित हो गया। उसने इस प्रभुत्व के द्वारा फ़्रांसीसियो के भिन्न-भिन्न द्वीपों तथा उपनिवेशों को अपने क़ब्ज़े मे कर लिया। पिट के तीन सेनापतियों—उल्फ़ (Wolfe), अम्हर्स्ट तथा हो (Howe)—ने उत्तरीय अमेरिका को, जो अब कनाडा (Canada) देश कहलाता है, फ़तह किया और फ़्रांसीसियो का प्रभुत्व वहाँ से सदा के लिये हटा दिया।

इतना ही नहीं, अमेरिका के अँगरेज़ी-उपनिवेशों ने परस्पर मिलकर कनाडा से भी फ़्रांस का प्रभुत्व नष्ट कर दिया। इन सफलताओं की ख़ुशी में ही जॉर्ज द्वितीय ऑक्टोबर, १७६० में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७२७	जॉर्ज द्वितीय का राज्याधिरोहण
१७३१	वियना की द्वितीय संधि

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७३७	पोर्च्युअस-विद्रोह
१७३८	वियना की तृतीय संधि
१७३८	स्पेन से युद्ध (जैनकिन्स के कान का युद्ध)
१७४२	वालपोल का अधःपतन
१७४३	डैटिजन का युद्ध, आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध मे इँगलैंड का सम्मिलित होना
१७४५	फांटनाय का युद्ध
१७४६	कुल्लोडन का युद्ध
१७४८	ए-ला-शेपिल्ल की संधि
१७५४	हेनरी पैल्हम की मृत्यु
१७५६	सप्तवार्षिक युद्ध का आरंभ
१७५७	पिट का सचिव-तंत्र राज्य, पलासी का युद्ध
१७५८	मिंडन का युद्ध
१७६०	जॉर्ज द्वितीय की मृत्यु

तृतीय परिच्छेद

जॉर्ज तृतीय तथा अमेरिका की स्वतंत्रता का युद्ध

(The War of American Independence)

(१७६०-१७८९)

(१) जॉर्ज तृतीय का राज्याधिरोहण

१७६० में जॉर्ज द्वितीय की मृत्यु हो जाने पर उसका पोता जॉर्ज तृतीय के नाम से इँगलैंड की

जार्ज तृतीय

गद्दी पर बैठा। राजगद्दी पर बैठने के समय नवीन राजा की उम्र २२ वर्ष की थी। इसका राज्य ६० वर्षों तक रहा। महारानी विक्टोरिया के सिवा किसी दूसरे राजा ने इससे अधिक काल तक राज्य नही किया। इन वर्षों मे सारे भूमडल पर बड़े भारी-भारी परिवर्तन हुए। इँगलैंड मे राजा की शक्ति सर्वथा लुप्त हो चुकी थी। इसने उस लुप्त शक्ति को पुनः प्राप्त करने का यत्न किया। उसकी माता ने उसको यह शिक्षा दी थी कि "इँगलैंड मे राजा स्त्री के तुल्य होता है। जॉर्ज, तू राजा बनकर दिखाना।" उसने जॉर्ज को लार्ड लोगो से बहुत कम मिलने-जुलने दिया, क्योकि लार्डों का आचार भ्रष्ट था। जॉर्ज का परम मित्र लार्ड ब्यूट [illegible] ह उसका शिक्षक भी रह चुका था। चापलूसी करना भी यह बहुत अच्छी तरह जानता था। इसने जॉर्ज को स्वेच्छाचारी बनने के लिये उत्साहित किया।

जॉर्ज इँगलैंड मे पला था। वह अँगरेज़ी अच्छी तरह से बोल सकता था। प्रजा को मीठे शब्दो के द्वारा मोहित करने की कला मे वह चतुर था। मन्त्रियों को चुनने मे उसने पूरी स्वेच्छाचारिता दिखाई। उसको यह अच्छी तरह से पता था कि मेरी शक्ति को बढ़ने से रोकनेवाले कौन-कौन-से ह्विग लोगों के घराने है। इसी उद्देश से उसने ह्विग-घरानो से सबसे पहले अपना नाता तोड डाला। बालिब्रोक के नवीन टोरी-

दल को उसने अपनाया, यद्यपि दिल से वह किसी भी दल के साथ नही था। उसने अपने को यथासभव सब दलों के झगड़ो से पृथक् रक्खा। इसमे सदेह नही कि अपनी इच्छाएँ पूर्ण करने मे उसने दलो को अपना साधन बनाया। उसने अपना ऐसा एक नया दल बनाने का यत्न किया, जो उसकी इच्छाओ के अनुसार ही पार्लिमेट मे सम्मति दिया करे। उसने राज्यासन पर बैठते ही चर्च तथा प्रजा के दुराचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाई। प्रजा ने भी शुरू-शुरू मे उसका बड़ा सत्कार किया।

जॉर्ज तृतीय ने अपने जीवन मे समय-समय पर बहुत अधिक वीरता दिखाई। विल्कीज़-विद्रोह (Wilkies Riots) (१७६६) मे उसके महल पर हमला किया गया और गार्डन-विद्रोह (Gordon Riots) (१७८०) में कुछ लोगों ने लदन को लूटने का इरादा किया। किंतु इसकी वीरता ने ही लदन को बचाया और राजमहल तक शत्रुओं को न पहुँचने दिया। १७८६ मे एक पागल स्त्री ने इस पर खजर का वार किया; पर इसने बड़ी चतुरता से अपने को बचा लिया। १७६५ तथा १८०० में भी इसके मारने का यत्न किया गया, परतु अपनी वीरता से ही इसने अपने को बचाया।

वीरता, धैर्य तथा पवित्र आचार का होने पर भी जॉर्ज ने इँगलैंड को बहुत ही अधिक हानि पहुँचाई । यह तंग-दिल तथा स्वेच्छाचारी था। इसको अपनी बुद्धिमत्ता पर बहुत ही अधिक विश्वास था। जो मंत्री इसकी इच्छा के विरुद्ध काम करते थे, उनको यह हटा देता था। इन दुर्गुणों का परिणाम यह हुआ—

(१) इसकी जिद तथा स्वेच्छाचार के कारण अमेरिका इँगलैंड से सदा के लिये जुदा होकर एक पृथक् राष्ट्र बन गया।

(२) विल्कीज़ के मामले को इसी ने अधिक बढ़ा दिया।

(३) आयर्लेंड की दशा को इसने बिलकुल ही सुधरने न दिया।

(४) कैथलिकों के विरुद्ध जो राज्य-नियम बने हुए थे, उनको इसने हटने न दिया, कैथलिक-मतावलंबियों को सरकारी नौकरियाँ नहीं दीं।

(५) लॉर्ड-सभा में टोरी-लॉर्डों की संख्या बहुत ही अधिक बढ़ा दी।

उपर्युक्त हानिकारक बातों का मुख्य कारण यह था कि जॉर्ज स्वेच्छाचारी बनना चाहता था। योरप के सारे राजे मनमाने तौर पर प्रजा पर शासन करते थे। एक-मात्र जॉर्ज ही पार्लिमेंट के अधीन था। उसको यह कब पसंद हो सकता था ? इस मुख्य

कारण के अतिरिक्त कुछ और गौण कारण भी हैं, जिनको भुलाना न चाहिए—

(१) बहुत वर्षों से इँगलैंड मे ह्विग लोगों की ही प्रधानता थी, टोरियों को कोई पूछता तक न था। इससे इँगलैंड में ह्विग-कुलीन-तंत्र राज्य हो गया था और यह जॉर्ज को पसंद न था।

(२) जैकोबाइट् लोगों (Jacobites) का समूह नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था। विदेशी राजा के विरुद्ध जनता में कुछ भी भाव न था, क्रांति को हुए कुछ समय गुज़र चुका था, अतः राजा को राजगद्दी से उतारना सहज काम न था। टोरी-दल के लोग जॉर्ज के पृष्ठ-पोषक थे। इससे भी उसकी शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ गई थी।

(३) ह्विग-दल के लोग आपस में लड़ते रहते थे, राजा ने इन झगड़ों से ख़ूब लाभ उठाया।

(४) ह्विग-दल के मुख्य मंत्री अपने साथियों को ही राज्य के उच्च-से-उच्च पद देते थे। इससे टोरी लोग बहुत ही असंतुष्ट थे। जॉर्ज ने टोरियों की पीठ ठोंकी और उनको राज्य के ऊँचे-ऊँचे पद दिए।

शुरू में जॉर्ज को ख़ूब कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। पिट तथा न्यूकासिल के सचिव-तंत्र राज्य ने नाविक तथा सैनिक विजयों के द्वारा अपूर्व कीर्ति प्राप्त की। जॉर्ज ने ह्विग-दल में

फूट के बीज बोने शुरू किए। वह युद्ध समाप्त करने के लिये भी यत्न करने लगा। यह क्यो ? इसलिये कि वह धीरे-धीरे अपने उद्देश को प्राप्त कर सके। उसके पास धन कम था और युद्ध बंद होने पर ही उसके पास धन अधिक हो सकता तथा वह राज्य मे शक्ति प्राप्त कर सकता था। उसको प्रजा-प्रिय लोगो मे भयकर द्वेष था। ईश्वर की कृपा से पिट से छुटकारा पाने का उसको शीघ्र ही मौका मिला।

नेपिल्स का डान कार्लो (Don Carlo), १७५६ मे, चार्ल्स तृतीय के नाम से स्पेन का राजा बना। उसने, १७६१ मे, इँगलैंड के विरुद्ध फ्रास, स्पेन तथा इटली को अपने साथ मिला लिया। पिट इस सगठन की आशंका पहले से ही करता था। यही कारण था कि वह स्पेन पर शीघ्र ही आक्रमण करना चाहता था, परंतु ब्यूट ने धूर्तता से सचिव-मंडल को पिट के विरुद्ध कर दिया। यह स्थिति यहाँ तक पहुँची कि न्यूकासिल ने भी पिट का साथ छोड़ दिया। इस पर पिट ने इस्तीफा दे दिया। पिट के साथही न्यूकासिल को भी राज्य-पद छोड़ना ही पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि लॉर्ड ब्यूट (Bute) राजा का मंत्री बना।

(२) ब्यूट का सचिव-तंत्र राज्य तथा पेरिस की संधि

(१७६२-१७६३)

ब्यूट ने पिट को प्रजा का अप्रिय बनाने के लिये उसको पेंशन देना शुरू किया और उसकी स्त्री को चैथैम (Chatham की स्वामिनी बना दिया। शांति की इच्छा रखते हुए भी उसे पिट की ही नीति का अनुसरण करना पड़ा। उसने स्पेन पर आक्रमण किया और स्पेनियो से मनीला तथा वाना-नामक स्थान छीन लिए। १७६३ मे उसने फ्रांस से पेरिस की संधि (Peace of Paris) कर ली, जिससे इँगलैंड को बहुत लाभ हुआ। इस संधि के अनुसार फ्रांस ने कनाडा तथा केप-ब्रिटेन को इँगलैंड के हाथ मे दे दिया, और न्यूफ़ाउंडलैंड मे मछलियाँ पकड़ने की आज्ञा दे दी। लूसियाना तथा ब्रिटिश-उत्तरीय अमेरिका की सीमा मिसीसिपी-नदी नियत की गई। फ्रांस ने माइनार्का भी अँगरेज़ो को दे दिया और पांडिचेरी, चंद्रनगर आदि स्थान इन्होने फ्रांसीसियों को लौटा दिए। इँगलैंड ने स्पेन को हवाना (Havana) तथा मनीला लौटा दिए।

इस संधि से प्रुशिया का राजा फ्रेडरिक इँगलैंड से बहुत ही अधिक चिढ़ गया। उसने रूस के ज़ार पीटर तृतीय से मित्रता कर ली। इस मित्रता के अनंतर उसने भी युद्ध से

अपना हाथ खींचा और साइलीसिया को अपने कब्जे में कर लिया। इस युद्ध की समाप्ति होने पर जॉर्ज तृतीय ने अपना ध्यान योरप की राजनीति से हटा लिया और वह इंगलैंड में शक्ति प्राप्त करने का यत्न करने लगा। योरप में प्रुशिया, रूस तथा आस्ट्रिया ने धीरे-धीरे शक्ति प्राप्त करने का यत्न किया। ये इंगलैंड को ईर्षा की दृष्टि से देखने लगे।

पेरिस की संधि के बाद ब्यूट ने हैलीफॉक्स के सहारे ह्विग लोगों की शक्ति को नष्ट करने का यत्न किया, पर इस यत्न से वह स्वयं ही जनता में अप्रिय हो गया। लाचार होकर उसने, १७६३ में, महामंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया।

(३) ग्रनविल (Grenville) का सचिव-तंत्र राज्य (१७६३-१७६५)

पिट तथा न्यूकासिल के अधःपतन के बाद ह्विग-दल अनेक विभागों में विभक्त हो गया था। जॉर्ज ने इन्हीं दलों में से एक दल के नेता जॉर्ज ग्रैनविल को महामंत्री बनाया। यह बहुत ही चालाक और लोक-सभा का नेता बनने के योग्य था। इसमें सबसे बड़ा दोष यह था कि यह अनुदार विचार का था। इसके व्यवहार से शीघ्र ही जनता असंतुष्ट हो गई और अमेरिकन

उपनिवेश विद्रोह करने को तैयार हो गए। जॉर्ज तृतीय के राज-गद्दी पर बैठने के अनंतर ब्यूट तथा जॉर्ज पर पत्र-संपादकों ने खूब आक्षेप किए थे। जॉन विल्कीज़ ने राजा तथा दरबारियों पर जो आक्षेप किए, उनसे प्रजा में खूब शोर मचा। ग्रैनविल ने विल्कीज़ को क़ैद कर लिया और उस पर मुकदमा चलाया। मुकदमे में विल्कीज़ छूट गया। जनता ने उसको अपना प्रिय-पात्र 'हीरो' बना लिया।

१७६५ में ग्रैनविल ने 'स्टांप-ऐक्ट' (Stamp Act) पास किया। इसके अनुसार अमेरिकन लोगों को पार-स्परिक लेन-देन के दस्तावेज़ पर राज्य का स्टांप या टिकट लगाने के लिये विवश किया गया। इस राज-नियम के हानिकर परिणाम अभी प्रकट ही हुए थे कि जॉर्ज ने ग्रैनविल को महा-मंत्री के पद से हटा दिया और रार्किघेम (Marquis Rockingham) के मार्किस को उसके स्थान पर नियत किया। राकिंघेम बहुत योग्य आदमी न था। अतः इसने एडमंड बर्क (Edmund Burke) से सहायता ली। बर्क बहुत ही बुद्धि-मान् तथा विद्वान् वागीश था। इसी के दिमाग़ से राकिंघेम का राज्य कुछ समय तक सफलता-पूर्वक चला। इसने स्टांप-ऐक्ट को हटा दिया, और विल्कीज़ की गड़बड़ को भी मिटा दिया। जॉर्ज को यह पसंद न था। उसने इसे अपनी शान के विरुद्ध

समझा, अतः उसने पुनः पिट को महामत्री बनाया और राकिघेम को उस पद से पृथक् कर दिया।

(४) पिट तथा ग्राफ्टन (Graftan) का सचिव-तत्र राज्य

पिट ने अपना सचिव-मडल बनाया, परतु स्वास्थ्य ठीक न होने से वह ठीक ढग पर काम न कर सका। उसने सभी दलो के लोगो से सहायता ली। पिट का मुख्य विचार यह था कि भारत का राज्य कपनी से लेकर पार्लिमेंट को दे दिया जाय। उसने रूस तथा प्रुशिया से सधि की और आयर्लैंड के कष्टो को दूर करने का यत्न किया। पर उसके स्वास्थ्य ने उसका साथ न दिया, अतः वह राज्य-कार्य से पृथक् रहने लगा। उसकी अनु-पस्थिति मे चार्ल्स टाउनशैंड ने अमेरिका पर नए-नए राज्य-कर लगाए। विल्कीज़ को उसने जेल मे डाल दिया। इससे १७६८ मे जेल के बाहर लोगो ने दगा कर दिया और विल्कीज़ को स्वतंत्र करने का यत्न किया। एडमंड बर्क तथा अज्ञातनामा जूनियस (Junius) ने मंत्रिमंडल पर बहुत ही आक्रमण किए, इस पर पिट ने राज्य का कार्य बिलकुल छोड दिया। ग्राफ्टन ने किसी-न-किसी तरह काम चलाया, परतु जब वह भी काम चलाने मे असमर्थ हो गया, तो उसने भी १७७० मे इस्तीफ़ा दे दिया।

(५) लॉर्ड नॉर्थ का सचिव-तंत्र राज्य

(१७७०-१७८२)

राजा का स्वेच्छाचार

जॉर्ज ने ग्राफटन के पद-त्याग करने पर लॉर्ड नॉर्थ को महा-मंत्री बनाया। यह बहुत ही चालाक था। अपनी चालाकी ही से यह १२ वर्ष तक लगातार महामंत्री बना रहा। वह राजा का परम मित्र था और राजा के कहने के अनुसार ही काम करता था। पिट ने इस पर बहुत ही शोर मचाया और कहा कि पार्लिमेंट तो राजा की दासी हो गई है, परंतु उसके कहने पर किसी ने नहीं ध्यान दिया। जॉर्ज अपनी चालाकी से जनता में भी सर्वप्रिय बन गया और मनमाने तौर पर राज्य-कार्य चलाने लगा। इससे ह्विग लोगो को भी अच्छी तरह शिक्षा मिल गई। उन्होंने अपनी बुराइयाँ दूर करनी शुरू कीं। फिर भी वे आपस मे लड़ते रहते थे। अतएव राजा तथा लॉर्ड नॉर्थ की शक्ति दिन-दिन बढ़ती ही चली गई। राजा ने शक्ति का दुरुपयोग किया और इँगलैंड को बहुत ही अधिक हानि पहुँचाई। उसी की बेवकूफी से इँगलैंड के योरपियन शत्रु प्रबल हो गए और अमेरिका इँगलैंड के हाथ से सदा के लिये निकल गया। इस कथन को स्पष्ट करने के लिये अब हम पहले अमेरिका की स्वतंत्रता

अमेरिकन क्रांति (१७७०-१७८३)

(War of American Independant)

प्रत्येक बडी घटना के प्रेरक कारण बहुत ही पेचीदा हुआ करते है। इस क्रांति के कारण बताने मे ऐतिहासिक लोग साधारणत: तात्कालिक कारणो पर बडा जोर देते है, परंतु दूर के कारणो पर दृष्टि नही डालते। किंतु वास्तव मे दूर के कारण ही आवश्यक होते है। उनके ज्ञात न होने से तात्कालिक कारण समझ मे आ ही नही सकते। अत: पहले दूर के कारणो का वर्णन करके फिर तात्कालिक कारणो की व्याख्या करना अच्छा होगा।

(१) अमेरिका की आबादियो (Colonies) मे से प्रत्येक राज्य की रीतियाँ, व्यापारिक संबंध, स्वार्थ तथा धार्मिक मत भिन्न-भिन्न थे और प्राय: सभी रियासत आपस मे द्वेष रखती थीं। ऐसी दशा मे वे कैसे एक हो सकती थी ? न्यू ऐम्सडर्म मे (जिसको अब न्यूयार्क New York कहते है) डच रहते थे। पैंसिल्वानिया और डिलावारे (Dilaware) मे प्रोटेस्टेंटो की अधिकता थी। मेरीलैंड मे कैथलिक लोग और वर्जीनिया के निवासी राज्य के बड़े भक्त थे। ऐसी दशा मे स्पष्ट है कि इँगलैंड की ओर से कुछ अतिप्रेरक कारण उत्पन्न हुए होंगे, जिन्होंने

उपर्युक्त व्यापारिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय भेदभाव और स्वदेश के स्वाभाविक प्रेम तथा सम्मान का नाश किया और इन औपनिवेशिको को अपने स्वजातीयों के रक्त का प्यासा बना दिया। ये कारण कई प्रकार के प्रतीत होते हैं। शुरू से ही औपनिवेशिक लोग राज्य-प्रबंध में स्वतंत्र थे। कई उपनिवेशों मे वे अपने तथा अन्य कर्मचारी स्वयं चुना करते थे, राजा या पार्लिमेंट किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करती थी। इन उपनिवेशों को उन अँगरेजों ने बसाया था, जो इँगलैंड को १६०३ तथा १६८८ के बीच छोड़ आए थे। यह समय जिस प्रकार राज्य के बल को घटाने, पार्लिमेंट तथा राजा के परस्पर गृहयुद्ध (Civil War) मे प्रवृत्त होने, राजों के सिर काटे जाने, प्रजातन्त्र राज्य पर क्रांवैल की शक्ति के बढ़ने, जेम्स द्वितीय का अधिकारों से निकलकर प्रजा को सताने और उस पर उसके राज्य त्यागने के लिये प्रसिद्ध है, वह पाठकों को ज्ञात ही है। औपनिवेशिको में स्वतन्त्रता, वीरता, धर्मपरायणता तथा अपने बल पर खड़े होने के भाव कूट-कूटकर भरे हुए थे और ये भाव अमेरिका मे आकर अधिक दृढ़ हो गए थे। यहाँ उनकी स्वतन्त्रता के कारण ये कहे जा सकते हैं—(१) विशेष पक्का धर्म, (२) सर्वसाधारण में शिक्षा-प्रचार, (३) राज्य-नियम का अनुशीलन, (४) स्वतन्त्र राज्य, (५)

इँगलैंड से ३,००० मील दूर होना, (६) आपस मे प्रत्येक व्यक्ति की समानता, (७) प्रत्येक के पास अधिक भूमि का होना, (८) सादा जीवन और (९) इँगलैंड के राज्य का थोड़ा दख़ल।

(२) इस प्रकार के स्वतन्त्रतारूढ़ पुरुष स्वाधिकारो का कुचला जाना देखकर सह नही सकते थे। इँगलैंड और स्कॉटलैंड मे धार्मिक स्वतत्रता न रहने से ही तो वे देश छोड़ अमेरिका के जगलो मे आ बसे थे, जिससे अपने विश्वास के अनुसार अपना धर्म-कर्म कर सके। फिर ऐसे स्वतन्त्रता-प्रेमी लोग जॉर्ज तृतीय और उसके मत्रियो के द्वारा अपनी स्वतन्त्रता मे बाधा डालना कब सह सकते थे। अतएव जब से उनके व्यापार पर इगलैंड ने आक्रमण आरभ किया था, तभी से उनके क्रोध की आग भड़कती जाती थी। १६५१-१६६० के नाविक राज्य-नियमो तथा अन्य नियमो के कारण अमेरिका की यह दशा थी कि वहाँ जो पदार्थ बनाए जाते तथा उत्पन्न होते थे, उन्हे अमेरिकन लोग इँगलैंड तथा उसके अधीन देशो के अतिरिक्त अन्य किसी देश को नही भेज सकते थे। समय-समय पर नए-नए पदार्थो के विक्रय मे उपर्युक्त बाधा डाली जा रही थी। अमेरिका का व्यवसाय-व्यापार इसीलिये नष्ट किया जा रहा था कि इँगलैंड समृद्ध हो। इस

पर तुर्रा यह कि अमेरिका के जगल मे जितने वृक्ष थे, वे राज्य की सपत्ति ठहराए गए! एक वृक्ष काटनेवाले को १०० पौंड जुर्माना देना पड़ता था! मतलब यह कि जिन वस्तुओं को औपनिवेशिको ने स्वय उपन्न किया था, उनका उपयोग करने के लिये भी, ३,०००मील दूर पर स्थित मातृ-देश इँगलैंड की आज्ञा लेने की आवश्यकता पड़ती थी। इँगलैंड ने यहाँ तक अपने अधिकार का दुरुपयोग किया कि एक उपनिवेश (Colony) दूसरे उपनिवेश की बनी वस्तु को नहीं ख़रीद सकता था। वह वस्तु पहले इँगलैंड जाती थी, वहाँ से अँगरेज़-व्यापारी दूसरी बस्तियो मे भेजते थे और तब जाकर कहीं वे उपनिवेश उसे पा सकते थे। इस प्रकार के अस्वाभाविक नियमों से जब काम लिया जाता था, तो कब तक प्रकृति-माता इसका बदला न लेती।

(३) यदि उपर्युक्त अस्वाभाविक सख़्ती न होती, तो भी एक स्वाभाविक कारण मौजूद था, जिससे अमेरिकन जुदा हो जाते। टर्गो (Turgot) ने सत्य कहा था कि उपनिवेश फलों की तरह हैं; वे स्वदेश के साथ तभी तक जुड़े रहते है, जब तक पक नहीं जाते। जब तक बच्चे मे स्वय अपनी रक्षा की शक्ति नहीं है, तभी तक उसे माता-पिता की सहायता की आवश्यकता है। ज्यो-ज्यो शक्ति बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों सहायता की आव-

श्यकता घटती जाती है। अतः प्रश्न यह उठता है कि क्या अमेरिकन उपनिवेश इतने शक्तिशाली हो गए थे कि उन्हे बाह्य
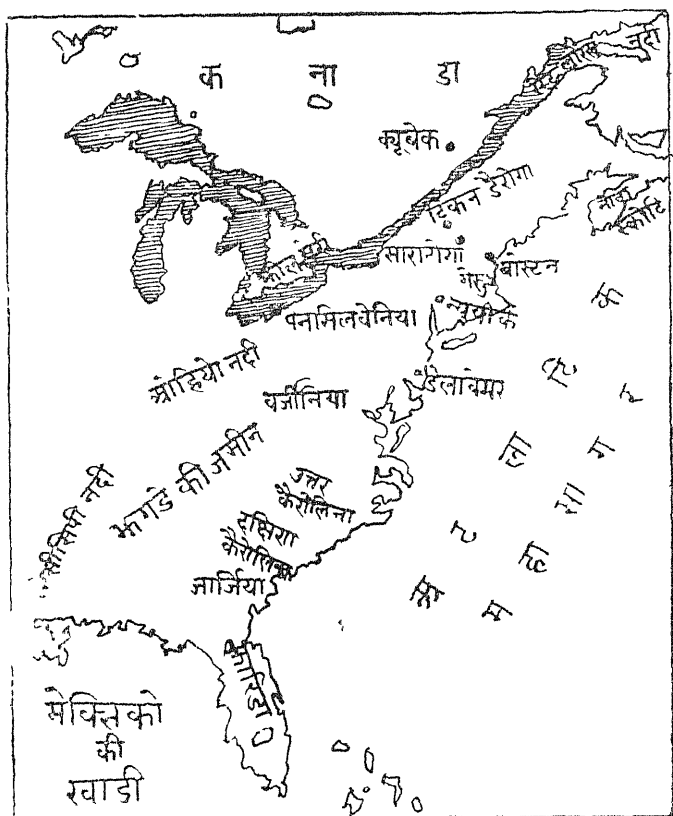
उत्तरीय अमेरिका मे आँग्ल-उपनिवेश

(१७६०-१७८३)

सहायता की आवश्यकता नहीं थी ? उत्तर इसका यही है कि यह शक्ति स्वतंत्रता देकर देखी जा सकती है, और जब अमेरिका की स्वतंत्रता देखी गई, तो किसी ने उसे छीना नहीं। हाँ, यह संभव नहीं था कि अन्य कारणों के न होने पर अमेरिकन इतने शीघ्र मातृ-देश की सहायता का तिरस्कार करते। कई घटनाओं से प्रतीत होता है कि अमेरिकन इँगलैंड से पृथक् होने को तैयार नहीं थे। इंगलैंड ने ही अपनी ग़लतियों से उनमें विरोध उत्पन्न किया।

(क) स्टांप(Stamp)-ऐक्ट के हटने पर इंगलैंड के प्रति अमेरिकनों का फिर से प्रेम हो गया—बाज़ारों में रोशनी की गई, और उस दिन खुशी मनाई गई। (ख) जब चैथेम ने पार्लिमेंट में ज़ोरदार वक्तृताओं से सबको समझाया कि अमेरिकनों को अधिकार देकर जीतना चाहिए, नहीं तो उसको जीतना असंभव होगा, तो उसकी मूर्ति अमेरिकनों ने बनवाई। (ग) १७७५ में जब द्वितीय कांग्रेस (Congress) बैठी, तो उसने राजा, पार्लिमेंट तथा अँगरेज़ी-प्रजा के नाम, अत्याचार हटाने के लिये, अपील की। इन तीन घटनाओं से पता लगता है कि अमेरिकन इसका पूरा उद्योग कर रहे थे कि उनके साथ इँगलैंड का न्याय-पूर्ण संबंध बना रहे और वे उससे पृथक् न हों। परंतु जब इँगलैंड को न्याय करते न देखा, तो उनको,

१७७६ मे, स्वतन्त्रता की घोषणा (Declaration of Indep-endence) करनी पड़ी।

अमेरिकन क्रांति के तात्कालिक कारण

अब हम उन कारणो का वर्णन करते है, जिनमे क्रांति और भी शीघ्र हो गई—

१—कनाडा मे फ्रांसीसियो के साथ युद्ध करने के लिये, सप्तवार्षिक युद्ध के समय, इंगलैड ने जो सैनिक तथा आर्थिक सहायता अमेरिकनो से माँगी, उसे उन्होने नही दिया।

२—कनाडा के युद्ध मे दोनो दलो ने एक दूसरे के अवगुण पूर्ण रूप से देख लिए। अमेरिकन साधारण योद्धा थे और वे साधारण युद्ध मे सम्मिलित न हुए थे। अँगरेज-सैनिको ने उन पर अन्याय किए—और उनके अफसरो को यहाँ तक कि वाशिंगटन को भी—योग्य पद न दिए। इससे भी अमेरिकन नाराज़ थे। अँगरेज़ो की सुस्ती तथा गर्व को स्पष्ट रूप से उन्होने देखा था और यद्यपि अँगरेज सप्तवार्षिक युद्ध मे भूमडल के एक बड़े भाग के स्वामी बन गए थे, तथापि अमेरिकन उनसे डरते न थे।

३—१७६५ मे उपनिवेशो से आय बढ़ाने के लिये ग्रैनविल ने स्टांप-ऐक्ट पास कराया, जिसके अनुसार दस्तावेजो पर स्टांप लगाना अनिवार्य किया गया और

इँगलैंड जो सेना उपनिवेशो की रक्षा के लिये रक्खे हुए था, उसके ख़र्च मे यह आमदनी लगाने का निश्चय किया गया। इस नियम पर उपनिवेशो मे कोलाहल मच गया। कुछ लोग कहते थे कि इँगलैंड को कर लगाने का अधिकार नहीं और बहुतो की यह सम्मति थी कि इँगलैंड कर तो लगा सकता है, पर तभी, जब पार्लिमेंट मे हमारे प्रतिनिधि हों। यही मत प्रबल हो गया। चारो ओर से "No taxation without representation" अर्थात् "उत्तरदायी राज्य को ही राज्य-कर लेने का अधिकार है।" याने जिस अधीन देश के प्रतिनिधि पार्लिमेंट-सभा मे नहीं जाते, उस पर उसका कर लगाना अनुचित है, इस प्रकार के शब्द सुनाई देने लगे। वर्जीनिया (Virginia)-उपनिवेश ने तो यह प्रस्ताव पास कर दिया कि "कर लगाने का अधिकार केवल उपनिवेशो के प्रतिनिधि-राज्य को ही है।" फिर न्यूयार्क मे एक जातीय महासभा (Congress) हुई, जिसमे शिकायतो की एक अपील बनाकर इँगलैंड को भेजी गई।

४—इँगलैंड ने इस कोलाहल से भयभीत होकर, १७७५ मे, स्टांप-ऐक्ट तो वापस ले लिया, परतु यह बात दिखाने के लिये कि इँगलैंड को उपनिवेशों पर कर लगाने का अधि-

कार है, 'डिक्लेरेटरी ऐक्ट' (Declaratory Act) पास किया गया। अर्थात् कर लगाने का अधिकार इंगलैड को है या नहीं, इसका फैसला इंगलैड ने यही किया कि अवश्य है, पर अमेरिका ने यह व्यवस्था अस्वीकार की। अमेरिका के क्रोध को बढ़ाने के लिये मूर्खता से उस पर भी 'म्यूटिनी-ऐक्ट' (Mutiny Act) लगाया गया। इसके अनुसार राजा की सेना का खर्च अमेरिकन उपनिवेशों को देना पडता था। इन दो कार्यों के भयकर परिणाम होने लगे। थोड़े-से स्टांपो के अतिरिक्त सब स्टांप नष्ट कर दिए गए और उपनिवेशों के राज्यों ने स्टांप का नियम हटा दिया। व्यापारियों ने जो माल मँगाया था, उसे भी न भेजने के लिये लिख दिया गया। और नया माल नही मँगाया गया। स्वदेशी का प्रचार होने लगा। धनियों ने भी पुरानी-पुरानी चीजे बर्तना शुरू किया। अमेरिका के ही बने वस्त्र पहनना और कई प्रकार की वस्तुए बनाना शुरू कर दिया गया।

५—आयात कर (Customs Duties)—१७६७ मे टाउन-शैंड ने एक कानून पास करवाया, जिसके अनुसार अमेरिका जानेवाले शीशे, रग कागज तथा चा पर कर लगाया जाना तय हुआ। उसकी आय सेना के खर्च के लिये नही, प्रत्युत राज-कर्मचारियों का वेतन देने के लिये थी। अंग-

रेज़ों की सम्मति यह थी कि अमेरिकन विद्रोही हैं, उनको राजभक्त बनाए रखने के लिये राजा के अफसर प्रयत्न करें। अमेरिकनो को अब निश्चय हो गया कि इँगलैंड उन्हे अपने लाभ के लिये अधीन रखना चाहता है। उन्होंने उपर्युक्त वस्तुओं का व्यवहार करना ही छोड़ दिया और उन वस्तुओं पर कर लेनेवाले कर्मचारियो को वे दड देने लगे।

६—१७७० मे बोस्टन के निवासियो से राज्य के सिपाहियो का झगड़ा हो गया। सिपाहियो ने तीन नागरिको को गोली से मार डाला। इसको अमेरिका मे भारी 'कत्लेआम' कहकर प्रसिद्ध किया गया और प्रतिवर्ष वे लोग उसकी वर्षगाँठ मनाने लगे।

७—१७७३ मे यह बिल पास किया गया कि ईस्ट-इडिया-कपनी (East India Company) हिंदुस्थान से सीधे अमेरिका को चा रवाना कर सकती है। उसे १ पौंड चा पर केवल ३ पेंस कर अमेरिका मे देना पड़ेगा। इँगलैंड मे चा के ऊपर फी पौंड एक शिलिंग चुगी थी; पर इस रियायत से भी अमेरिकन संतुष्ट नही हुए, बल्कि उन्हे यह विश्वास हुआ कि चा सस्ती करके अमेरिकनो को विदेशी चा ख़रीदने के लिये लालच दिया गया है। बोस्टन-नगर के बंदरगाह पर चा उतारना निषिद्ध कर दिया गया। जब इस

विरोध पर भी जहाज बदरगाह पर आए, तो रात के समय पुरुषो का एक दल आदिम अमेरिकनो के वेश मे जहाज पर चढ़ गया और उस आई हुई चा को समुद्र मे फेक दिया। यह घटना Boston Tea Party के नाम से प्रसिद्ध है। जब इस घटना की सूचना इँगलैंड पहुँची, तो इस विद्रोह-दमन के लिये निम्न-लिखित बडे कडे नियम पास किए गए—

(क) बोस्टन के बदरगाह की सनद (Charter) रद्द कर दी गई।

(ख) मेसाचुसेट्स-उपनिवेश मे जिसमे (बोस्टन स्थित है) राज-कर्मचारियो की नियुक्ति का कार्य इँगलैंड ने अपने अधिकार मे कर लिया।

(ग) गर्वनर को इस बात का अधिकार दिया गया कि वह जिन अपराधियो के मुकदमो को चाहे, इँगलैंड या अन्य किसी उपनिवेश मे भेज दे।

उपर्युक्त तीनो नियम ऐसे पास किए गए, जैसे सारे अमेरिका ने नही, केवल बोस्टन ने विद्रोह किया हो। परतु सभी उपनिवेश-राज्यो (States) ने, १७७४ मे, एक सभा की, जिसमे युद्ध के लिये धन, सामान और रसद लाने की विधि सोची और अमेरिका के आदिम निवासी रक्तवर्ण इडियनो (Red Indians) से भी सहायता लेने का विचार किया।

८—१७७५ मे मेसाचुसेट्स के गवर्नर ने सलेम-नामक स्थान की तोपो पर कब्जा करना चाहा। उसने वहाँ थोड़ी-सी सेना भेजी; परंतु वहाँ के निवासियो ने मुकाबला करके उन्हे वे तोपें न लेने दी।

बोस्टन के समीप कांकर्ड-स्थान की बारूद और हथियार लेने के लिये जो सेना भेजी गई, वह यद्यपि सफल हुई, तथापि लौटते समय उसके इतने सैनिक मारे गए कि जीत अमेरिकनो की ही हुई।

इस पर अमेरिकनों ने टिकनडैरोगा (Ticonderoga) और क्राउन पाइंट (Crown Point)-नामक दो किले जीत लिए और इस प्रकार कनाडा की चाबी मानो उनके हाथ मे आ गई।

बकर-हिल (Bunker's Hill) को, बोस्टन के समीप होने से, अँगरेज लोग बोस्टन को जीतने के लिये अपने हाथ मे करना चाहते थे। बारूद कम हो जाने से अमेरिकनों को वह स्थान छोड़ना पड़ा।

कनाडा पर आक्रमण—अमेरिका ने कनाडा को जीतना चाहा; परतु कृतकार्य न हुआ, क्योंकि रास्ता जंगली होने से मार्ग मे रसद न मिल सकती थी। इसके सिवा अमेरिकावालों के दूत इडियन थे। ये दूत अमेरिकनों के भेजे हुए पत्र अँगरेज

अधिकारियो को दिखा देते थे। इस प्रकार सब बाते अँगरेजों को ज्ञात होने से कनाडा-विजय के सबध मे कुछ न हो सका।

१७७६ मे इँगलैंड ने अमेरिका का विद्रोह शांत करने के लिये भाडे की जर्मन-सेनाएँ भेजी। इस पर अमेरिकन अत्यत क्रुद्ध हुए। जर्मनो ने जो अत्याचार किए, उनसे अमेरिकनो को बहुत ही बुरा लगा। १७७६ मे अमेरिकन उपनिवेशो की कांग्रेस ने अपनी स्वतत्रता की घोषणा की और यह राज्य-नियम बनाया कि सभी अमेरिकन उपनिवेश स्वतत्र है, न्याय भी यही है कि वे स्वतत्र रहे। आज से इन अमेरिकन उपनिवेशो का ग्रेट-ब्रिटेन से कोई भी राजनीतिक सबध न रहेगा और इन उपनिवेशो को वे सब राजनीतिक अधिकार प्राप्त है, जो एक स्वतत्र राष्ट्र को प्राप्त होने चाहिए।

अमेरिकन स्वतत्रता का युद्ध (१७७६-१७८१)

(The War of American Independence)

१७७६ से १७८१ तक जो लडाइयाँ अमेरिका मे होती रही, उनका वर्णन सामान्य पाठको को शिक्षा-प्रद न होगा। जो बडी लडाइयाँ हुई, उनका स्थान ऐतिहासिक हो जाने से सूचना के लिये उनके नाम लिखे जाते है। जिसके नीचे एक

रेखा है, वहाँ अमेरिकन हारे थे, और जिसके नीचे दो है, वहाँ जीते थे—

१—ट्रेंटन (Trenton) १७७६—एक हज़ार सिपाही तथा बहुत-सी तोपे पकड़कर वाशिगटन ले आए।

२—ब्रांडिवाइन (Brandywine) १७७७—अँगरेज़-सेनापति कार्नवालिस जीता।

३—जर्मन टाउन (German Town) १७७७—सेनापति 'हो' जीता।

४—प्रिंस्टन (Princeton) १७७७—उपर्युक्त दो पराजयो का असर जाता रहा और न्यूजर्सी (New Jersey) को वाशिगटन ने जीत लिया।

५—साराटोगा (Saratoga) १७७७—ऑक्टोबर मे सेनापति बर्गोयन (Burgoyne) की सारी सेना ने अमेरिकनों के आगे शस्त्र रख दिए।

६—सवाना (Savannah) १७७८—फ्रेन्च बेड़े की सहायता होने से अमेरिकन अँगरेजो से हारे।

७—कैंपडन (Campdon) १७७९—कॉर्नवालिस ने युद्ध जीता। आशा थी कि उपर्युक्त दो युद्धों से दक्षिण-अमेरिका जीता जायगा, पर यह न हो सका।

(६) योरप के युद्ध तथा राकिंघम और शेल्बर्न का सचिव तन्त्र राज्य (१७७८-१७८३)

ऊपर लिखी विजयों का योरप पर बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ा। योरप के राष्ट्रों ने इँगलैंड की शक्ति को नष्ट करने का दृढ़ निश्चय किया। सप्तवर्षीय युद्ध में कनाडा आदि के छिन जाने से फ्रांस अँगरेजों पर जला-भुना बैठा ही था। इसलिये इस घरू युद्ध में उनकी शक्ति का ह्रास देखकर फ्रांसीसियों ने अमेरिका को सहायता दे बदला भँजाया। फ्रांस ने, १७७८ में, इँगलैंड से युद्ध आरंभ किया। उसकी देखादेखी स्पेन के राजा चार्ल्स तृतीय ने भी इँगलैंड का साथ छोड़ दिया और उलटे लड़ना शुरू किया। १७८० में हॉलैंड ने भी इँगलैंड से पूरा बदला चुकाने के लिये फ्रांस तथा स्पेन से मित्रता करके, इँगलैंड के ऊपर हमला कर दिया। १७८० में ही रूस तथा प्रुशिया ने भी इँगलैंड के साथ मित्रता का व्यवहार नहीं किया।

ऐसी विपत्ति के समय अँगरेज़-जनता ने पिट की ओर दृष्टि डाली। पिट अमेरिका के साथ युद्ध करना नहीं चाहता था, बरन् उसको इँगलैंड से मिलाए रखना चाहता था। अमेरिका पर जो राज्य-कर लगाए गए थे, उनका उसने विरोध किया। जॉर्ज को पिट के विचार पसंद न थे। पिट का स्वास्थ्य भी ठीक न था। अतः वह मई, १७७८ में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

उसकी मृत्यु से इँगलैड अमेरिका की ओर से हताश हो गया। योरप के युद्ध से इँगलैड का प्रभुत्व समुद्र के ऊपर से उठ गया। फ्रांस के लोगो ने अमेरिका को सहायता पहुँचाने का यत्न किया। हजारो की सख्या मे फ्रांसीसो स्वयसेवक अमेरिका मे जा पहुँचे। जॉर्ज ने भी अमेरिकन युद्ध के लिये पूरी तरह से तैयारी की। लॉर्ड कॉर्नवालिस ने जॉर्जिया तथा कैरोलाइना को फतह कर लिया। १७८१ मे उसने वर्जीनिया को फतह करने का यत्न किया, पर सफल न हुआ। लाचार होकर उसको यार्कटाउन की ओर लौटना पडा, लेकिन यार्कटाउन पर उसको अँगरेजी-बेड़े की सहायता (Navy) न मिली।

फ्रांसीसियो ने समुद्र की ओर से और अमेरिकनो ने भूमि की ओर से उसको घेर लिया। "मरता क्या न करता" की कहावत के अनुसार कॉर्नवालिस (Cornwallis) ने हथियार रख दिए। इसके अनंतर अमेरिकन लोगो ने दक्षिणी रिसालों को भी अपने हाथ मे कर लिया और अमेरिका से इँगलैड का प्रभुत्व सदा के लिये हटा दिया।

इँगलैड ने समुद्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिये बहुत ही अधिक यत्न किया। शुरू-शुरू मे इँगलैड कितना अरक्षित था, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि एक अमेरिकन जहाज़ ने ब्रिटेन के समुद्र-तट को खूब लूटा

और उसके व्यापार को बहुत ही अधिक नुकसान पहुँचाया। योरप के राष्ट्रों ने माइनार्का तथा जिब्राल्टर (Gibralter) को घेर लिया और बहुत-से उपनिवेशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। यार्कटाउन की विजय के अनंतर फ्रेंच एडमिरल डि 'ग्रास' (Admiral De-grass) ने जमैका (Jamaica) जीतने का यत्न किया। १७८२ में जल-सेना-पति रॉड्नी (Admiral Rodney) ने डामिनीको के समीप 'ग्रास' पर विजय प्राप्त की। माइनार्का पर शत्रुओं का अधिकार हो गया।

फ्रांस ने भारतवर्ष को जीतने के लिये भी प्रयत्न किया। फ्रांसीसियों ने हैदरअली से दोस्ती गाँठी। हैदरअली ने मदरास जीत लिया। मरहठों ने बंबई पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। फ्रांसीसियों के सेनापति सैफरन (Saffron) ने भारतीय समुद्र पर कब्जा कर लिया। अँगरेजों को बंगाल के शासक वारन हेस्टिंग्स (Warren Hastings) ने इन सब विपत्तियों से बचाया। उसने एक सेना-दल भेजकर मरहठों को पराजित किया। १७८१ में वांदेवाश के विजेता सर आयर कूट ने हैदरअली को पराजित किया।

आयर्लैंड ने भी अमेरिका की नकल करनी चाही। इसका मुख्य कारण यह था कि आयर्लैंड को अँगरेजों ने अपने स्वार्थ

का साधन बना लिया था, इँगलैंड के व्यवसायो को उन्नत करने के लिये आयरिश व्यवसायों को नष्ट कर दिया था। उच्च-उच्च राज्य-पदों पर अँगरेज़ ही विद्यमान थे। आयरिश पार्लिमेंट को नियम-निर्माण की पूर्ण स्वतत्रता न थी। इन सब कष्टो से छुटकारा पाने के लिये आयरिश लोगों ने डब्लिन मे एक सभा करके, १७८२ मे, अपनी नियामक स्वतत्रता (Legislative Independence) की घोषणा कर दी।

ऊपर लिखी सारी विपत्तियों से अपने को बचाने मे इँगलैड ने अमेरिका को खो दिया। लॉर्ड नार्थ ने मार्च, १८८२ मे सहसा इस्तीफा दे दिया। जॉर्ज को यह कब पसंद हो सकता था? उसी के सहारे तो वह स्वेच्छाचारी बना था। लाचार होकर उसने राकिंघेम को अपना मुख्य मंत्री बनाया। राकिघेम ने अपने सचिव-मडल में राजा के बहुत-से मित्रो को रक्खा और शैल्बर्न के अर्ल को राष्ट्र-सचिव के पद पर नियुक्त किया। राकिंघेम ने आर्थिक सुधार किए और प्रतिनिधि-निर्वाचन में घूस आदि के प्रयोग को कम करने का यत्न किया। इसी बीच में फॉक्स से शैल्बर्न का झगड़ा हो गया। इस झगड़े के कुछ ही दिनों बाद राकिंघेम मृत्यु को प्राप्त हुआ और शैल्बर्न प्रधान मंत्री बना। फलतः फॉक्स तथा उसके मित्रों ने राज्य-पदों को छोड़ दिया।

दैव-संयोग से पिट के पुत्र विलियम पिट ने शैल्बर्न का साथ दिया। यह अपने पिता के सदृश ही योग्य तथा नीति-निपुण था। नवंबर, १७८२ मे शैल्बर्न ने अमेरिका से संधि कर ली। इस संधि के अनुसार इँगलैंड ने अमेरिका की स्वतन्त्रता को मान लिया। उसने स्पेन, फ्रांस तथा हालैंड से भी संधि करने का यत्न किया। १७८३ मे वर्सेलीज की प्रसिद्ध संधि (Treaty of Versailles) हुई, जिसकी मुख्य-मुख्य शर्तें निम्न-लिखित है—

(१) फ्रांस को डंकर्क (Dunkirk) मे दुर्ग बनाने की आज्ञा मिली। यूट्रैक्ट की संधि मे यही बात रोकी गई थी। वर्सेलीज़ की संधि के बाद पुन. यह अधिकार मिल गया।

(२) स्पेन को माइनार्का मिला और आफ्रिका, भारत तथा वेस्ट-इंडीज़ के इलाको मे कुछ परिवर्तन किए गए। स्पेन को फ्लॉरिडा (Florida) दे दिया गया।

(३) संयुक्त-राज्य अमेरिका को स्वतन्त्र माना गया और उसकी पश्चिमी सीमा स्पेनी लूसियाना (Louisiana) तक रक्खी गई।

(४) हालैंड से नीगापट्टम लेकर अँगरेज़ो को दिया गया। इस प्रकार एक भारी क्रांति सफल हुई, जिसने इँग-

लैंड की कीर्ति पर काली छाया डाल दी। कुछ काल के लिये इँगलैंड योरप के राष्ट्रों की दृष्टि में अत्याचारी और निकृष्ट रहा। फ़्रांस ने अमेरिकनो को इँगलैंड के विरुद्ध सहाय देकर अपना बदला लिया।

इँगलैंड ने १७६४ से १७७४ तक जो विचित्र नियम अमेरिकनो के विरुद्ध पास किए थे, उनकी तह मे निम्न-लिखित राजनीतिक सिद्धांत काम कर रहे थे—

(१) अँगरेज़ समझते थे कि मातृभूमि को ही उपनिवेशों पर राज्य करना चाहिए। कर लगाने का अधिकार मातृभूमि को ही है। इँगलैंड का खयाल था कि फ़्रांसीसियो के हाथ से कनाडा लेकर हमने अमेरिकनों को बचाया है, अतः उनको इँगलैंड का आजीवन कृतज्ञ तथा भक्त रहना चाहिए।

(२) उस समय संपत्ति-शास्त्र (Political Economy) का निर्माण नहीं हुआ था, इसीलिये अँगरेज़ो को राज्य-कर लगाने का तरीक़ा मालूम न था।

(३) अँगरेज लोग कर देने से अपने को बचाना चाहते थे, क्योकि वे समझते थे कि अमेरिका से करों द्वारा जितनी अधिक आय हो जायगी, उतने ही थोड़े कर इँगलैंड में लिए जाँयगे।

(४) फ़्रांसीसियों को जीतकर अँगरेज़-जाति गर्व से फूल

गई थी, इसलिये वह समझती थी कि गँवार अमेरिकन हमारा क्या सामना करेंगे।

(५) राजनीति की विद्या ने उन्नति नहीं की थी और जॉर्ज अपने अधिकारों को स्वेच्छानुसार काम में लाना चाहता था।

(६) अमेरिका इँगलैंड से बहुत दूर था। सात सप्ताहें समुद्र-यात्रा में लगते थे। अतः गवर्नरों की तजवीज़ों पर शीघ्र और पूरा अमल नहीं हो सकता था।

(७) इसी दूरी के कारण उपनिवेशों के विषय में बहुत कुछ मालूम न था, यह भी विचार था कि यदि उन्हें काबू में न रक्खा जायगा, तो वे इँगलैंड से भी धनादि में बढ़ जायँगे।

(८) मंत्रियों को अमेरिका में स्थित राज-कर्मचारियों की सूचनाओं पर काम करना पड़ता था। ये अफसर अमेरिकनों को असभ्य समझते और उनके शोर मचाने पर अत्युक्ति करके सूचनाएँ देते थे, अतः उचित नीति का बर्ता जाना नितांत असंभव था।

अमेरिकन तथा अँगरेज़ों को युद्ध करने में कठिनाइयाँ—ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिकन बिना कठिनाइयों का अंदाज़ा लगाए ही एक शक्ति-शाली राज्य के

साथ युद्ध करने को उद्यत हो गए थे। उनके पास न तो कोई स्थायी स्थल-सेना तथा जल-सेना थी और न कोई दुर्ग या प्रबल जातीय सेना ही। फिर वे कैसे लड़कर स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकते थे? उन्हे क्या मालूम था कि युद्ध कब तक चलता रहेगा? उनकी जातीय महासभा (कांग्रेस) रेतीली नींव पर उठाए हुए एक भवन के समान थी। भिन्न-भिन्न रियासतों से कर तथा सेना एकत्र करने का अधिकार प्राप्त नहीं हुआ था। ये अधिकार भिन्न-भिन्न उपनिवेशो के हाथ मे थे, पर इन्हीं उपनिवेशों से धन तथा सेना मिलने की आशा थी। अस्तु, जीत होने पर तो सब ठीक होता, पर यदि हार होती, तो क्या आशा थी कि सेना और धन मिलता ही जाता। अमेरिका के सेनापति वाशिंगटन को भी बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। यथा—

(१) बारूद की अत्यत कमी थी और यह कमी बंकर-हिल की लड़ाई मे ही मालूम पड़ गई थी।

(२) युद्ध बहुत विस्तृत स्थान पर हो रहा था। इन सब स्थानों को शत्रु-सेना से बचाना था।

(३) धन, इंजीनियर तथा शिक्षित अफसरों की भी कमी थी।

(४) मिलीशिया (Militia) का नियत काल व्यतीत

हो जाने पर युद्ध जारी रखने का विश्वास नही हो सकता था ।

(५) सेनापति वाशिंगटन के विरुद्ध गुप्त मंत्रणाएँ (Secret Plots) हो रही थीं । सेनाओं के अफसर विदेशी होने के कारण कार्य-नाशक थे । जातीय महासभा स्वयं वाशिंगटन के विरुद्ध थी और उसकी शक्ति नही बढने देना चाहती थी ।

इस युद्ध में अँगरेजों की कठिनाइयाँ भी कम न थीं। जैसे—

(१) उन्हे योग्य सेनापति तथा अफसर नही मिले ।

(२) रसद और वस्त्रादि की भी कमी थी । उनके यहाँ सैनिक नियंत्रण भी काफी न था ।

(३) सैनिकों के वस्त्र भारी थे । तोपे और गाड़ियाँ जंगलों में चलने योग्य न थी ।

(४) जंगलों के रास्ते अज्ञात थे, इसलिये घने जंगलों को पार करने में बहुत कठिनाइयाँ उपस्थित होती थीं ।

(५) देश की दशा भी उनको ज्ञात न थी । अतः सामुद्रिक किनारों पर वे कब्जा कर सकते थे । परंतु वह इतना बड़ा था कि उसके सँभालने के लिये बहुत बड़ी सेना तथा बहुत धन की आवश्यकता थी ।

(६) सारे अमेरिका-निवासी इनके विरोधी थे, इसलिये इनके सिपाही पृथक्-पृथक् जहाँ जाते थे, वहीं मारे जाते थे। और, एक दुर्ग को जीत लेने से वही स्थान जीता जा सकता था, उससे अगला इलाक़ा विना युद्ध किए काबू मे न आ सकता था।

(७) रसद की यहाँ इतनी कमी थी कि घास, लकड़ी तथा कोयला तक इँगलैंड से लाना पड़ता था।

(८) मत्री सेनापतियों के कथनानुसार नहीं चलते थे।

(९) छिपकर छापा मारना (Guerrilla wars) अमेरिकनों को खूब आता था; पर अँगरेज़ी सेना इसमे निपुण न थी।

(१०) १७८० मे, फ्रांस ने खुल्लमखुल्ला अपने बेड़े से अमेरिका को सहायता दी। जो द्वीप वेस्ट-इडीज़ (west Indies) मे, सप्तवार्षिक युद्ध के समय, इँगलैंड ने जीते थे, उन पर फ्रांस ने हमला किया। उनके बचाने के लिये जब सेना भेजी गई, तो अमेरिका के किनारों को घेरनेवाली सेना मे कमी पड़ी। कुछ महीनों के बाद सारे योरपियन राज्य इँगलैंड के विरुद्ध युद्ध करने पर उतारू हो गए। ऐसी दशा मे अकेला इँगलैंड क्या करता?

संक्षिप्त परिणाम—

(१) इस क्रांति ने योरप से भी अधिक समृद्ध एक साम्राज्य उत्पन्न कर दिया। इस राज्य में स्वतंत्रता-प्रिय समृद्ध लोग रहते थे, अत उनकी जन-वृद्धि में कोई संदेह नहीं था। १७९० में जन-संख्या ३९,२९,२१४ थी। १९०५ में वही ८,२५,७४,१९५ हो गई।

(२) संयुक्त-राज्य के (राष्ट्रात्मक) राज्यों ने अच्छी तरह यह सिद्ध कर दिया कि किस प्रकार समानता तथा भ्रातृभाव रखते हुए भिन्न-भिन्न प्रांत एक हो सकते हैं। साथ ही यह भी प्रकट किया कि भविष्य में वही राज्य प्रसिद्ध तथा उन्नत होंगे, जिनका क्षेत्रफल बड़ा होगा। छोटे-छोटे देशवालों को कोई न पूछेगा, जैसे आजकल पुर्तगाल, डेन्मार्क आदि को कोई नहीं पूछता।

(३) व्यावसायिक प्रणाली (Mercantile System) को इस क्रांति ने कड़ी चोट पहुँचाई।

(४) इँगलैंड को यह शिक्षा मिली कि भविष्य में अपने उपनिवेशों तथा अधीन देशों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए, नहीं तो पक्के फल जैसे शीघ्र ही वृक्ष से पृथक हो जाते हैं, वैसे ही वे भी पृथक हो जायँगे।

(५) इस क्रांति ने प्रजा-तंत्र राज्य की नींव डाली। यह एक

प्रकार का अच्छा दृष्टांत है कि यदि मनुष्य को उत्तम-से-उत्तम दशा मे रक्खा जाय और बाहर से उस पर कोई जोर न डाला जाय, तो वह क्या-क्या उन्नति कर सकता है ।

(६) इसी क्रांति ने योरप मे फ्रेच-क्रांति पैदा की। यदि यह सफल न होती, तो उपर्युक्त घटना भी कदाचित् न होती।

क्रांति से शिक्षा—

यह क्रांति कुछ बातो मे बहुत शिक्षा-प्रद है। यथा—

(१) राज्य को प्रजा पर अत्याचार न करना चाहिए; नहीं तो कभी-न-कभी सताए हुए लोग अवश्य उठेगे और अपने शत्रु का नाश करेगे, जैसे प्राचीन काल मे प्लीबियन (Plebian) लोगो ने स्वेच्छाचारी रोमन-कुलीनो का नाश किया था ।

(२) राज्य को अत्याचारी न होना चाहिए।

(३) प्रजा-तंत्र राष्ट्र की प्रजा अपने ही राजात्मक राज्य तक को शक्ति देने से डरती है ।

(४) शक्ति न देने से केद्र का कमजोर होना और कम-जोर राज्य से जो हानियाँ होती है, उनका होना संभव है ।

(७) लॉर्ड नॉर्थ तथा हेनरी फॉक्स का सम्मिलित सचिव-तंत्र

(The Coalition Ministry) (१७८३)

वर्सेलीज़ की संधि समाप्त होने के पूर्व ही शैल्बर्न महामंत्री के पद से हट गया। इसका मुख्य कारण फॉक्स तथा नॉर्थ का

विरोध ही था। १७८३ मे ये दोनो आपस मे मिल गए और इन्होने शैल्बर्न को महामत्री के पद से हटा दिया। जॉर्ज तृतीय को यह पसद न था कि नॉर्थ तथा फॉक्स मुख्य मंत्री बने। परतु इसके सिवा और उपाय ही क्या था? १७८३ मे फॉक्स ने पार्लिमेट मे इडिया-बिल (India Bill) पेश किया। इस बिल का उद्देश था भारत का राज्य पार्लिमेट के हाथ मे देना। ईस्ट-इंडिया-कंपनी को यह पसंद न था, इसलिये वह इस बिल के विरुद्ध थी। परतु फॉक्स ने किसी की भी परवा न की। उसने पार्लिमेट से इस बिल को पास ही करा लिया। परतु लॉर्ड-सभा ने न माना। जॉर्ज ने नार्थ तथा फॉक्स को राज्य के पदो से हटा दिया।

(८) विलियम पिट का सचिव-तत्र राज्य (१७८३-१८०१)

नॉर्थ तथा फॉक्स ने राजा का अत्यंत विरोध करने के साथ ही सारे आदमियो को मंत्रि-मंडल बनाने से रोकने का प्रयत्न किया। इससे तग आकर राजा ने विलियम पिट का सहारा लिया। पिट को शुरू-शुरू मे बहुत-सी तकलीफे उठानी पडीं, परतु उसने उन तकलीफो की कुछ भी परवा न की। अपने विचारो पर वह पत्थर की चट्टान की तरह दृढ़ रहा। मार्च, १७८४ मे उसने पार्लिमेट का नए सिरे मे निर्वाचन कराया। इस निर्वाचन से पार्लिमेट मे उसके पक्ष के लोग बड़ी संख्या मे आ गए।

२५ ही वर्ष की उम्र में पिट ने महामंत्री के पद को ग्रहण किया। वह दुर्बल तथा लंबे शरीर का और बहुत ही अधिक मिहनती था, अतएव उसने राज्य-कार्य मे राजा का सहारा नहीं लिया।

१७८४ मे पिट ने इंडिया-बिल पास किया और कंपनी की शक्ति को बहुत अधिक बढ़ने से रोका। फॉक्स तथा शैरिडन ने हेस्टिंग्ज़ पर मुकदमा चलाया। १० वर्ष तक मुक़दमा चला। अंत मे हेस्टिंग्ज़ छोड़ दिया गया। १७८८ मे राजा बीमार पड़ गया। पिट ने उसका पूरी तरह से साथ दिया। अच्छे होने पर राजा पिट को बहुत ही अधिक चाहने लगा।

पिट का आर्थिक सुधार

जिस समय पिट महामंत्री बना, उस समय ३० लाख पाउंड का व्यय राज्य की वार्षिक आय से अधिक होता था। जाति मे राज्य की साख इतनी कम थी कि ३% के बांडों (Bonds) की क़ीमत केवल ५० थी। परंतु ३ वर्ष मे पिट ने सब कठिनाइयाँ दूर कर उत्साह, बल तथा धन-वृद्धि के मार्ग पर जाति को आगे बढ़ाया। उसने यह आश्चर्य-जनक परिवर्तन निम्न-लिखित भिन्न-भिन्न उपायों से किया—

(१) आयात चा पर ५०% कर लिया जाता था। यह

भारी कर देने से व्यापारी घबराते थे। उस समय लोगों के आचार अच्छे न थे और कर न देकर चोरी से (Smuggling) माल लाने में जो खतरा था, उससे वह कर अधिक था। ४०,००० आदमी बिना कर दिए इँगलैंड में माल लाया करते थे। देखा गया था कि इँगलैंड में खर्च होनेवाली चाय का $\frac{2}{3}$ भाग और मद्य का $\frac{1}{2}$ भाग बिना कर दिए चोरी से आता था। इस प्रकार की चोरी तथा आय की कमी को रोकने के लिये पिट ने केवल १२$\frac{1}{2}$ सैकड़ा कर रक्खा। मद्य पर भी उसी प्रकार कर कम कर दिया। आय की कमी पूरी करने के लिये 'खिड़की' (Window)-कर लगाया गया।

(२) उसने राज्य के लिये मुक़ाबले में ऋण लेने की रीति चलाई। पहली पार्लिमेंट के धनाढ्य सदस्य स्वयं या उनके मित्र बहुत ब्याज लेकर ऋण देते थे। परंतु पिट ने यह व्यवस्था की कि ऋण देने में जो कम-से-कम ब्याज लेगा, उसी से रुपया लिया जायगा। इससे एक तो ब्याज थोड़ा देना पड़ता था, दूसरे, पार्लिमेंट का इस उपाय से जितना संशोधन हुआ, उतना उस संशोधन-बिल से न होता।

(३) उसने कर देने के पदार्थों की सूची बढ़ा दी और विशेष सुखदायक तथा भोग्य पदार्थों पर कर लगाए। वर्तमान समय में उन पदार्थों में से कुछ पर कर लगाना उचित नहीं

समझा जाता। किंतु इसमें सदेह नहीं कि उसने यह बड़ी अच्छी रीति चलाई थी।

(४) आय के लिये जो कर लिए जाते थे, उनमे बहुत गड़बड़ थी। सब पदार्थों के लिये भिन्न-भिन्न परिमाण नियत थे, जो ठीक तौर से ज्ञात भी न थे। इन राज्य-करो की बुराइयो का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि इनको प्राप्त करने के लिये बहुत-से छोटे-छोटे राज्य-नियम बनाने पड़े, जो संख्या मे ३,००० से कम न होंगे।

(५) पिट अबाध व्यापार (Free Trade) का पक्ष-पाती था। उसने पहले की व्यावसायिक प्रणाली उठाकर अबाध व्यापार की नींव रक्खी। फ्रांस के साथ उसने व्यापारिक संधि की, जिसमे आयात पदार्थों (Imports) पर दोनों देशों से कम कर लेना निश्चित किया गया। इससे खूब व्यापार बढ़ गया। सन् १७८६ और १७८९ के बीच मे पुराने शत्रु के साथ इतने संबंध रहे कि वे फिर केवल एडवर्ड सप्तम के समय में ही देखे गए। अमेरिका के साथ भी वह अबाध व्यापार करना चाहता था, परंतु यह स्वीकृत न हो सका। पिट अबाध व्यापार के द्वारा आयर्लैंड के व्यापार को बढ़ाना चाहता था, ताकि उसकी चीजे उपनिवेशोमे इँगलैंड की चीजों की तरह खुल्लमखुल्ला जा सकें। उसके ये उपाय स्वीकृत (Pass)

न हो सके । आयलैंड को बहुत वर्षों तक दुःख उठाना पड़ा और उसी दुःख से प्रेरित होकर, १७९८ मे, उसने विद्रोह कर दिया ।

(६) जातीय ऋण को चुकाने के लिये सहायक स्थायी कोष (Sinking Fund) की दशा इस प्रकार सुधार दी कि उसमे, १० लाख पाउंड अवश्य ही ऋण चुकाने के लिये, जमा रहते थे । उस धन-राशि को व्यय करने का अधिकार राज्य के हाथ मे नहीं दिया गया । जिन ऋणो का समय समाप्त हो जाय, वे उसमे से चुका दिए जायँ, यह तय किया गया था । उसने ८ वर्षों मे १३५ लाख से अधिक ऋण चुका दिया। परंतु फिर युद्ध के कारण अधिक ऋण लेना पड़ा और उसका परिमाण यह हुआ कि राज्य १२% सूद की दर से ऋण लेता और ६% के हिसाब से ऋण देता था । घाटे अथवा जाति पर करो का अधिक भार बढ़ाने के सिवा युद्ध के समय सहायक स्थायी कोष रखना मुनासिब न था । पिट पर जो लोग उपर्युक्त आक्षेप करते है, वे विशेष दशा को भूल जाते है । पिट का अनुमान यह था कि युद्ध शीघ्र ही समाप्त हो जायगा । १५ वर्षों के अनुभव को वह थोड़े समय के युद्ध के लिये कैसे छोड़ देता ? उस कोष-फंड के रहने से जाति का विश्वास बना रहता था

और उसके हटाने से राज्य की साख बहुत कम हो जाती थी। इसलिये सहायक स्थायी कोष रखना अवश्यक था। अतएव पिट को अबाध व्यापार का पक्षपाती (Free Trader) और जो वर्तमान उच्च सिद्धांत, व्यापारिक कर तथा सामुद्रिक कर के विषय मे बनाए गए है, उन पर, १८वीं शताब्दी मे, अमल करनेवाला कहना चाहिए।

१७८५ में पार्लिमेंट की दशा—महामंत्री पिट के संशोधित बिल का महत्त्व समझाने के लिये इस समय यह आवश्यक है कि अठारहवीं शताब्दी की प्रतिनिधि-सभा (House of Commons) मे जो रिश्वतखोरी फैली हुई थी और जिसके कारण उस सभा को जाति का पूर्ण प्रतिनिधि नहीं कह सकते थे, वह ज्ञात हो जाय। उस बुराई को हटाने के लिये, उस गिरे हुए समय में भी, यत्न किए गए। परंतु १८३२तक कामयाबी नहीं हुई। एक मोटा सिद्धांत यह है कि नगरों, oroughs) तथा प्रांतों का (County) को अपनी पाद्धि तथा शिक्षा के अनुसार मेंबर चुनने का हक़ द्वितीय से पहले राजा बीरान स्थानों से भेजने का अधिकार लेकर योग्य स्थानों यद्यपि यह भी पूर्ण रूप से जा चार्ल्स को यह अधिकार का

गया। तब से समृद्ध नगरो को स
अधिकार न था और उन पुराने
केवल एक ही घर रह गया था, एक-दो
था। लीडस, बर्मिंघम, मांचेस्टर आ
नही भेजते थे, परंतु ओल्ड सेरम (Old
कोई चुननेवाला नही था, प्रतिनिधि चैथ
लुक आदि पार्लिमेंट मे बैठते थे।
मित्र-सभा (जो कामस के संशोधनार्थ नाई ग
यह दिखाया—

(१) इंगलैंड मे ३५ स्थान ऐसे थे, जो ७०
निधि भेजते थे, परतु उनमे चुननेवाला कोई
था। अर्थात् भूमिपतियो या धनाढ्यो के हाथ मे
रो थीं,

(२) ४६ स्थानो मे केवल ५० चुनने वाले थे और उनको
से ६० प्रतिनिधि आते थे।

३) १६ स्थानो मे १००
७ प्रतिनिधि थे।
के कुछ ५.. सदस्यो
केवल धनाढ्यो।

और उसके हटाने से राज्य की साख बहुत कम हो जाती थी। इसलिये सहायक स्थायी कोष रखना अवश्यक था। अतएव पिट को अबाध व्यापार का पक्षपाती (Free Trader) और जो वर्तमान उच्च सिद्धांत, व्यापारिक कर तथा सामुद्रिक कर के विषय मे बनाए गए है, उन पर, १८वीं शताब्दी में, अमल करनेवाला कहना चाहिए।

१७८५ में पार्लिमेंट की दशा—महामंत्री पिट के संशोधित बिल का महत्त्व समझाने के लिये इस समय यह आवश्यक है कि अठारहवीं शताब्दी की प्रतिनिधि-सभा (House of Commons) मे जो रिश्वतखोरी फैली हुई थी और जिसके कारण उस सभा को जाति का पूर्ण प्रतिनिधि नहीं कह सकते थे, वह ज्ञात हो जाय। उस बुराई को हटाने के लिये, उस गिरे हुए समय में भी, यत्न किए गए। परंतु १८३२ तक कामयाबी नहीं हुई। एक मोटा सिद्धांत यह है कि नगरों, बरों (Boroughs) तथा प्रांतों का (County) को अपनी जन-संख्या, समृद्धि तथा शिक्षा के अनुसार मेंबर चुनने का हक़ होना चाहिए। चार्ल्स द्वितीय से पहले राजा बीरान स्थानों से पार्लिमेंट में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार लेकर योग्य स्थानों को दे देता था। यद्यपि यह भी पूर्ण रूप से नहीं किया जाता था, तो भी चार्ल्स को यह अधिकार कार्य-रूप में परिणत नहीं करने दिया

गया। तब से समृद्ध नगरो को सदस्य भेजने का कोई अधिकार न था और उन पुराने स्थानो को, जहाँ केवल एक ही घर रह गया था, एक-दो सदस्य भेजने का हक था। लीडस, बर्मिंघम, मांचेस्टर आदि नगर कोई सदस्य नही भेजते थे, परंतु ओल्ड सैरम (Old Serum) के, जिसमे कोई चुननेवाला नही था, प्रतिनिधि चैथम, बर्क, जॉन, ह्यूम, लुक आदि पार्लिमेंट मे बैठते थे। १७९३ मे प्रजा की मित्र-सभा (जो कामस के संशोधनार्थ बनाई गई थी) ने यह दिखाया—

(१) इँगलैड मे ३५ स्थान ऐसे थे, जो ७० प्रतिनिधि भेजते थे, परतु उनमे चुननेवाला कोई नहीं था। अर्थात् भूमिपतियो या धनाढ्यो के हाथ मे वे बरो थीं,

(२) ४६ स्थानो मे केवल ५० चुननेवाले थे और उनकी ओर से ९० प्रतिनिधि आते थे।

(३) १९ स्थानो मे १०० सदस्य चुननेवाले थे और उनके ३७ प्रतिनिधि थे।

उपर्युक्त कुछएक सदस्यो (Members) को भेजना (Return) केवल धनाढ्यो (Lords) के हाथ मे था। ड्यूक आफ् नार्फाक ११ सभासद् भेज सकता था; (लॉर्ड)

लांस्डेल (Lonsdale) ९ तथा लार्ड उलिंगटन (Worlington) ७ मेंबर भेज सकते थे।

इस प्रकार ⅓ भाग हाउस ऑफ् कामंस (Commons) का भूमि-पतियो (लॉर्ड) के हाथ मे था। स्पष्ट है कि जाति के हित के लिये यह सभासदो का ⅓ भाग कुछ न कर सकता था। वे सभा बनानेवालो के कथनानुसार चलते थे। उपर्युक्त स्थान उजड़े हुए बरो (Nomination or Rotten Boroughs) के नाम से पुकारे जाते थे। ७० लाख की आबादी मे केवल ३ लाख ही मनुष्य चुनने का अधिकार नहीं रखते थे, बरन् इन चुननेवालों की स्थिति मे भी भेद थे। कहीं घरो के मालिकों को और कहीं किराए पर रहनेवालो को भी, कहीं रिवाज के अनुसार और कहीं राजा की विशेष आज्ञा से चुनने का अधिकार मिला हुआ था। सारे देश में ऐसा एक नियम नहीं था कि अमुक स्थिति के पुरुष को सदस्य चुनने का अधिकार होगा।

रिश्वत देने की भिन्न-भिन्न विधियाँ थीं। जहाँ साधारण लोगों को सदस्य चुनने का अधिकार था, वहाँ उनको महीनों शराब-कबाब खिला-पिलाकर और नकद रुपए देकर उनसे मेंबरी के उम्मीदवार अपने लिये मत (Vote) दिलाते थे। जब किसी को रिश्वत लेनी ही होती थी, तो जो

अधिक देता था, उसी को वह मत देता था। इसका फल यह होता था कि एक-एक उम्मीदवार को हज़ारों पाउंड खर्च करने पड़ते थे। परंतु इतने धनाढ्य भी मौजूद थे, क्योंकि उन्होंने भारतवर्ष से खूब धन लूटा था। ये अँगरेज इँगलैंड में 'नवाब' के नाम से पुकारे जाते थे और पार्लिमेंट के मेंबर बनने से उनकी स्थिति उच्च होती थी। अतः ये 'नवाब' अपने चुनाव में बहुत रुपए खर्च करते थे। १७८२ में पिट ने इनके विरुद्ध आवाज़ उठाई और दिखाया कि यही नहीं कि ये नवाब रिश्वत देकर सभासद हुए हैं, बल्कि कर्नाटक-नवाब के, 'प्रतिनिधि' भी इस समय लोक-सभा में मौजूद हैं। क्या यह संभव नहीं कि कोई शत्रु-राजा सभासदों को रिश्वत देकर, अपनी ओर करके, इँगलैंड की समृद्धि और स्थिति पर कुल्हाड़ा चलावे? किंतु उस समय तक लोग इस रस्म के विरुद्ध कुछ सुनने को तैयार न थे, इस कारण पिट कुछ न कर सका। कई नगरों की समितियों (Corporations) को सभ्य भेजने का अधिकार था। वे मेंबरशिप बेचती और उससे नगर का खर्च चलाती थीं।

बंदरगाहों तथा अन्य अच्छे-अच्छे नगरों में कर उगाहने-वाले अफसर और कर्मचारी लोग राजा के कृपा-पात्र को आप वोट देते थे और दूसरों से भी यथाशक्ति दिलाते थे। ज्यों-ज्यों

युद्धो के कारण कर बढ़ते गए, त्यों-त्यों इन राज-कर्मचारियों का प्रभाव भी राजा के अनुकूल मनुष्यों को चुनवाने मे अधिक होता गया। ११,५०० कर्मचारी मेबर चुनने के अधिकारी थे और ७० मेबर उनकी सम्मतियों पर निर्भर थे। इस पर पार्लिमेट ने इन लोगो से चुनने के अधिकार छीन लिए। पर बड़ी कठिनाई से यह संशोधन हो सका।

प्रजा के स्वतत्र मेबर का पार्लिमेट मे आना बड़ा कठिन था। ४० दिन तक वोट देने के दफ्तर (Polls) खुले रहते थे। आजकल तो एक-दो दिन मे ही आफ़त आ जाती है। उस समय राजा की गुप्त सहायता से मदोन्मत्त होकर गुडे लोग क्या-क्या न करते होगे ! दिए हुए वोटों के गिननेवाले कार्यालय भी बेई-मानी करते थे, जैसा कि १७८४ मे फ़ॉक्स के चुनाव से स्पष्ट है।

इससे बढ़कर स्वयं लोक-सभा (House of Commons) अन्याय करती थी। जब किसी स्थान के चुने हुए दो-तीन मेंबरों के वोट एक-से होते या कोई अन्य झगड़ा होता, तो वह न्याय से फैसला न करती थी। पर १७६२ के पश्चात् पार्लिमेट ने यह अन्याय मिटाना शुरू किया। निर्णय होना जब वोटों पर निर्भर था, तो जब पार्लिमेट मे मामला पेश होता, तब जिस पार्टी की संख्या अधिक होती, वही अपने दलवाले व्यक्ति को सदस्य क़रार देती। यदि पार्टी में एक मेबर बढ़ता है, तो

न्याय को पद-दलित करने मे कोई असमजस्य नहीं। उस समय का आचार (Morality) इसी प्रकार का था।

उपर्युक्त उपाय वास्तव मे कुछ भी न थे। राजा तथा मत्री के हाथ मे बड़े-बड़े उपाय थे, जिनके द्वारा अधिक सभासद् उनकी ओर होते थे। वे उपाय थे राज्य के ओहदे, गुप्त तथा स्पष्ट पेंशनें और भिन्न-भिन्न प्रकार का उपाधि-दान। किसी को लॉर्ड बनाना, ब्याज पर राज्य का नकद धन देना, अधिक ब्याज पर ऋण लेना, अधिक धन देने पर युद्ध आदि के सामान देने के ठेके देना, लॉटरी डालने का अधिकार-प्रदान इत्यादि। प्रत्येक उपाय के भी कई तरीके थे। इतने ही से पता लग सकता है कि किस प्रकार लोक-सभा के सभ्य प्रजा के प्रतिनिधि नहीं थे और इसीलिये प्रजा का सशोधन अत्यावश्यक था।

उन दिनो इँगलैंड मे कुलीन लोगों का राज्य कहना चाहिए, न कि प्रजा का, क्योंकि कुलीनो का ही लोक-सभा मे मुख्य भाग था। परतु कहा जाता है कि १६८८ की क्रांति (Glorious Revolution) से लोग स्वतत्र हुए। यह कैसे ? उस समय इँगलैंड मे अन्य देशो की अपेक्षा अधिक स्वतत्रता थी और वह होनी भी चाहिए थी। उसी के कारण चैथेम, नॉर्थ, ग्रैनविल और पिट आदि सशोधन करने के लिये यत्न कर रहे थे।

परंतु पिट या उसके साथी मि० ग्रे (Mr. Grey) का यत्न १७९२-१७९३ और १७९७ मे यो ही निष्फल गया, क्योंकि फ्रेंच-क्रांति से लोगो का सपूर्ण बल उसके बुरे असरो को इँगलैड से हटाने मे लगा हुआ था। क्रांति के कारण यह सशोधन ३० वर्ष पीछे पड़ गया। परतु १७९५ तक इँगलैड के राज्य को कुलीन-तत्र (Oligarchy) इस कारण नहीं कह सकते कि—

(१) साधारण स्थिति के मनुष्य भी मत्री-पद तक को प्राप्त कर सकते और पार्लिमेट मे अपनी बुद्धिमत्ता तथा वक्तृता से प्रजा का पक्ष पुष्ट करते थे। उदाहरणार्थ वाल्पोल, चैथेम, बर्क, पिट आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

(२) लोक-सभा प्रजा के प्रति जिम्मेदार थी, पर प्रजा की सम्मति के लिये काम नहीं करती थी।

(३) पार्टियाँ दो थीं। वे एक दूसरे के दोष ढूँढ़ती थीं, इसी से प्रजा के विरुद्ध कोई बात न हो सकती थी। परंतु अधिकार पाई हुई पार्टी प्रजा का हृदय जीतने के लिये, उसके लाभार्थ, कई नियम स्वीकार किया करती थी, ताकि दूसरे चुनाव पर भी उस पार्टी का राज्य रहे।

(४) प्रेस (Press) का—समाचार-पत्रो का—बल दिन-पर-दिन बढ़ता जाता था।

पिट का रिफ़ार्म्स-बिल—१७८५ मे पिट ने जो बिल पार्लिमेट मे पेश किया, उसमे तीन मुख्य बाते थी —

(१) ३६ उजड़ हुए बरो (Rotten Boroughs) से ७२ सभासदो के भेजने का अधिकार लेकर बढ़ हुए नगरो और लदन को दे दिया जाय।

(२) उपर्युक्त बरो उनके मालिको को रुपए देकर खरीदे जायँ। उनके लिये १० लाख पाउड राज्य-कोष से देने होंगे। ७२ सभ्य इनकी ओर से आते थे। अब प्रश्न यह था कि अपराध किए बिना राज्य किसी की जायदाद कैसे छीन सकता है। दूसरे, वे मालिक बड़े बलवान् थे। वे हरजाना दिए बिना उस बिल को स्वीकृत कैसे होने देते। इन्ही कारणो से पिट ने उन बरो के मालिको को रुपए देना आवश्यक समझा।

(३) ज़मीदारो तथा काश्तकारो को भी चुनाव का अधिकार दिया जाय।

इन एक या दो तजवीज़ो से ९९ हज़ार चुननेवाले बढ़ जाते थे। परतु राज्य और मत्री-सभा के बहुत-से सभासद् इसके विरुद्ध थे और प्रजा भी तीसरे सशोधन की पूरी आवश्यकता नही समझती थी। इसीलिये यह सशोधन स्वीकृत न हो सका और जाति ३० वर्षों तक सशोधन के नाम से, क्राति के हो जाने के भय से, घबराती रही।

राजा की बीमारी में राज्य का प्रबंध—जॉर्ज तृतीय अपने ६० वर्षों के राज्य मे ५ बार सख्त बीमार पड़ा। उसकी बीमारी मे राज्य का कार्य कौन चलावे, इस प्रश्न से राजा, राज-वश तथा पार्लिमेट के अधिकारियो मे शासन-पद्धति-सबधी (Constitutional) कई झगड़े उठे। पहले इस प्रकार की दशा कभी नही उपस्थित हुई थी, अतः कोई विशेप नियम नही बना हुआ था। यहाँ हमे एक बार फिर इसका उदाहरण मिलता है कि पार्लिमेट ने क्रमशः किस प्रकार दिन-पर-दिन उन्नति की है।

१७६५ मे जॉर्ज बीमार हुआ। दिल धड़कने (हौल-दिल) की बीमारी थी। यद्यपि राजा शीघ्र स्वस्थ हो गया, तथापि उसने यह सोचकर कि कहीं मेरी अचानक मृत्यु हो गई, तो युवराज के नाबालिग़ होने के कारण राज्य अव्यवस्थित हो जायगा, युवराज के संरक्षक नियत करना आवश्यक समझा। अस्तु, राजा ने सरक्षक नियत करना अपना कर्तव्य समझा और पार्लिमेट ने अपना। परतु रिश्वत के कारण पार्लिमेट मे राजा का ही पक्ष प्रबल रहा और यह फैसला हुआ कि सरक्षक परिमित हों। लॉर्ड ब्यूट (Lord Bute) को, जिसके सरक्षक होने की आशका थी, संरक्षक बनने से रोकने के लिये यह बिल स्वीकृत किया गया कि रानी तथा इँगलैंड मे रहने-

वाले राज-वश के लोगो को ही राजा के बीमार होने या मरने पर सरक्षक बनाया जाय और युवराज के बालिग होने तक संरक्षक को सब राज्याधिकार प्राप्त हो। राजा ने उक्त मनुष्यो मे से जिसे सरक्षक नियत किया, उसका नाम पृथक्-पृथक् तीन पत्रो पर लिखकर तीन स्थानो मे रक्खा गया। उन पत्रो को मृत्यु होने पर गुप्त सभा (Privy Council) के सामने ही खोलना तय हुआ था। उपर्युक्त बिल मे तो यही झगडा था कि सरक्षक (Regent) नियत करने का अधिकार राजा को है, या पार्लिमेंट को? इसका निर्णय यह हुआ कि यह अधिकार दोनो को ही है।

१७८० मे दूसरी बार राजा बहुत बीमार हो गया। उसका दिमाग भी बिगड़ गया। पार्लिमेंट की बैठक २० नवबर को होनेवाली थी। परतु जब तक राजा की वक्तृता से पार्लिमेंट का कार्य आरभ न हो, तब तक वह कोई कार्य नही कर सकती थी। मगर यह इतना आवश्यक समय था कि उस रिवाज को तोडकर भी पार्लिमेंट की बैठक होने की आवश्यकता थी। राजा के सरक्षक और उसके स्थान पर कार्य करने के लिये सरक्षक (Regent) नियत करने के विषम प्रश्न सामने थे। युवराज के अन्यतम मित्र फॉक्स ने उसके अधिकार बढ़ाकर उसका मामला खराब कर दिया। फॉक्स ने

कहा—"राजा के रुग्ण होने के समय युवराज को राज्य करने का उतना ही अधिकार है, जितना कि राजा की मृत्यु के पश्चात्। पार्लिमेंट को केवल यह निश्चित करना चाहिए कि वह कब से अपने अधिकार का प्रयोग करे।"

इस पर पिट ने जाँघ पर हाथ पटककर कहा—"मैं फ़ॉक्स से यह झगड़ा उठाने का बदला लूँगा।" पिट का मत था कि पार्लिमेंट को अधिकार है कि वह जिसको चाहे, संरक्षक बनावे और जिसको न चाहे, न बनावे। हाँ, अच्छा हो कि पार्लिमेंट अपनी उदारता से युवराज को ही अधिकार दे दे। प्रथम तो फ़ॉक्स का कहना ठीक न था। उसके कथनानुसार तो कोई मनुष्य ज़रा भी बीमार हुआ नहीं कि उसका पुत्र बिना उसकी आज्ञा के जायदाद का स्वामी बन बैठता, जो सब शास्त्रों तथा रीति-रिवाजों के बिलकुल विरुद्ध था। दूसरे, यह कि इससे पार्लिमेंट का अधिकार छिनता था और फिर इस कथन के अनुसार तो राजा के हाथ से गद्दी ही छिनी जाती थी। इस पर युवराज ने स्वयं मान लिया कि संरक्षक बनने का मुझे अधिकार नहीं है। अब दूसरा प्रश्न यह था कि युवराज तथा उसके मित्रों की इच्छा के अनुकूल बिना शर्तों (Restrictions) के उसे संरक्षक बनाया जाय, या शर्तें लगाई जायँ। पिट ने बहुत-सी शर्तें लगाईं। जैसे—

राजा के तथा अपने लिये प्रजा के हृदय मे स्थान कर लिया था। राजा के स्वस्थ होने पर प्रजा ने बड़ी भारी खुशी मनाई। जॉर्ज तृतीय के हृदय मे भी पिट ने स्थान कर लिया।

१८०१ मे फिर उसी रोग ने राजा को आ घेरा। इसके तीन कारण थे—(१) पिट का कैथलिकों की स्वतंत्रता पर झगड़ा करना, (२) स्वतत्रता स्वीकार न करना और (३) पिट का त्याग-पत्र देना। एक मास के अदर-अदर वह फिर आराम हो गया। पर १८०४ मे फिर हालत बिगड़ गई। इस बार भी आराम होने मे महीना-भर लग गया। इस अर्से मे उसके मत्री उसके नाम से काम चलाते रहे। प्रथम प्रश्न यह उठ रहा था कि एक वृद्ध और बिगड़े दिमागवाले राजा से ठीक नियम-बद्ध कार्य की आशा कैसे की जा सकती है। इसलिये सरक्षक-सभा बनानी ही चाहिए। मत्री यह दिखाते थे कि राजा आवश्यक कार्य कर सकता है। परतु १८१० मे राजा की दशा ऐसी बिगड़ी कि वह फिर राज्य न कर सका। उस समय भी १७८८ की-जैसी कररवाई की गई और लगभग वही शर्तें युवराज के सरक्षक बनाने मे लगाई गईं। ये शर्तें केवल एक वर्ष के लिये थीं। उतना समय बीतने पर राजा के समग्र अधिकार उसे दे दिए गए।

पिट और थर्लो—पिट ने थर्लो (Thurlow) को, जो

चांसलर ऑफ् एक्सचेकर था, १७९२ मे उसके पद से हटा दिया गया। १७८८ मे थर्लो इस पद पर नियुक्त हुआ था और भिन्न भिन्न मत्रियो ने अपने मन्त्रित्व-काल मे उसे चासलर के पद पर बना रहने दिया था। केवल सम्मिलित मत्रि-मडल के समय वह इस पद पर न था। राजा का परम मित्र होने के कारण उसकी यह धारणा थी कि चाहे वह महामत्री तथा पार्लिमेंट के विरुद्ध कुछ भी क्यो न कह दे, उसे उसके पद से कोई नही हटा सकता। सरक्षकता के मामले मे थर्लो ने युवराज के साथ पिट के सबध की कुछ गुप्त बातचीत प्रकट की था, ताकि युवराज के सरक्षक बनने पर उसे कहीं उसके पद से अलग न कर दिया जाय। पिट को यह सब ज्ञात हो गया। उसने थर्लो पर विश्वास करना छोड दिया और १७९२ मे राजा की अनुमति लेकर उसे निकाल बाहर किया। इस घटना के दो आवश्यक परिणाम हुए—

(१) १७९२ मे महामत्री ही राजकाज मे सबसे ऊँचा हो गया, क्योकि कोई मत्री भी—चाहे वह राजा का परम मित्र ही क्यो न हो—यदि महामत्री की आज्ञा तथा नीति का उल्लघन करता है, तो फिर उसे मत्रीसभा मे स्थान नही मिल सकता।

(२) राजा के मित्रो की पार्टी की शक्ति भी कम हुई। तब तो पिट विश्वास-पूर्वक अधिक स्वतत्रा मे काम करने लगा।

पिट और लॉर्ड लोग—पिट ने अपने समय मे जितने लॉर्ड बनाए, इतिहास मे देखा जाता है, उतने अन्य किसी भी राजा या मत्री ने नहीं बनाए।

गुलाब-युद्ध के पीछे	साधारण लॉर्ड	५२
एलिज़बेथ	,,	६०
स्टुवर्ट-समय मे	,,	१७६
१७०० से १७८० तक	लॉर्ड बनाए गए	२७९
१७८० से १८२९ तक	,,	३८८

पिट ने अपने समय मे ३८८ लॉर्डों मे से १४० लॉर्ड बनाए। प्रथम पाँच वर्षों में ही ५० लॉर्ड बनाकर उसने उस समय अपने साहाय्य के लिये लॉर्डों की अधिकता कर ली। किंतु संरक्षक को नए लॉर्ड बनाने की आज्ञा इसलिये नहीं दी कि वह इस उपाय को काम मे लाकर अपनी ओर लॉर्डों की सख्या अधिक कर लेगा। इससे स्पष्ट है कि राजा अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिये और मंत्री अपने सहायकों को सम्मान देने के लिये लॉर्ड बनाना चाहते थे। जॉर्ज ने तो पहले-पहल ह्विग (Whig)-पार्टी की शक्ति तोड़ने के लिये बहुत-से टोरी-लॉर्ड बनाए थे, परतु पिट उस उद्देश के अतिरिक्त लॉर्डों को तंग पार्टी या श्रेणी मे मिलाना भी चाहता था। साथ ही राजा ने स्वय अपने राज्य मे लॉर्डों की संख्या दुगनी करके, अपने राज्य मे बड़े-बड़े परिवर्तन किए—

(१) पहले तो वह एक पृथक् श्रेणी की छोटी-सी सभा थी, परन्तु अब वकीलो, व्यवसायियो, व्यापारियो, बैंकरो, लेखको, संपादको और राजा के उत्तम-उत्तम सेवको की सभा बन गई है। इस कारण प्रजा के साथ उसका संबंध अब बहुत बढ गया है और वह भी एक प्रकार की प्रतिनिधि-सभा (Representative body) बन गई है। उसमे स्कॉटलैंड, आयर्लैंड तथा वेल्स के प्रतिनिधि भी है और तीनो मिलकर सभा का भाग बनते हैं।

(२) टोरियो की शक्ति बढ़ी हुई समझनी चाहिए। परतु फिर टोरियो की शक्ति कैसे कम हो गई, इस पर आगे प्रकाश डाला जायगा।

(३) अब लॉर्डो की संख्या अधिक हो जाने से, जब तक राजा बहुत अधिक लॉर्ड न बनावे, तब तक उसकी पार्टियो का परिवर्तन नही कर सकता। १७८० मे यह ह्विग (Whig)-सभा थी। पिट के पश्चात् टोरी हुई। परतु ऐसी टोरी बनने भी ३० वर्ष लग गए थे। इसलिये अब परिवर्तन करना अत्यत कठिन हो गया है। सभा का जो भाग टोरी है, उसका निर्माण जॉर्ज का काम समझना चाहिए।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७६०	जॉर्ज तृतीय का सिंहासनारोहण
१७६१	पिट का त्याग-पत्र

१७६३	पेरिस की सधि
१७६५	स्टांप-ऐक्ट
१७६८	विल्कीज़-विद्रोह
१७७०	नॉर्थ का सचिव-तत्र राज्य
१७७५	लैक्सिगटन तथा बकर-हिल का युद्ध
१७७७	साराटोगा का युद्ध
१७८२	जर्मन की विजय, आयर्लैंड की नियामक स्वतत्रता
१७८३	वर्सेलीज़ की संधि, पिट का सचिव-तत्र राज्य

चतुर्थ परिच्छेद

जॉर्ज तृतीय (१७८९-१८०२)

फ्रांस की क्रांति तथा आयर्लैंड का इँगलैंड से मिलना

फ्रांस की क्रांति (French Revolution)

योरप के इतिहास मे फ्रांस की क्रांति-जैसी घटनाएँ बहुत ही कम होगी। लुईस चौदहवे के दिनो मे फ्रांस की अदरूनी हालत अच्छी न थी। राजा स्वेच्छा-पूर्वक प्रजा का शासन करता था। जमीदार (उच्च-कुलवाले) तथा पादरी लोग राज्य-कर से मुक्त थे। इससे सारे कर का भार साधारण प्रजा तथा किसानो पर जाकर पडता था। बडे-बडे ताल्लुकेदार लोग साधारण असामियो से बेगार लिया करते थे। गरीब किसानो को ताल्लुकेदारो से किसी प्रकार का भी लाभ नहीं था। बड़े-बडे पादरी लोग चर्चो की सपत्ति से खूब लाभ उठाते थे। छोटे-छोटे उपदेशक तथा पादरी दिन-भर काम करते थे, परतु उनको अपने काम का उचित भाग भी न मिलता था। इस प्रकार सारा फ्रांस बड़े-बड़े ताल्लुकेदार तथा पादरी और ग़रीब रैयत तथा छोटे-छोटे गरीब उपदेशको मे विभक्त था।

लुईस चौदहवे के समय मे फ्रांसीसी राज्य की स्वेच्छाचारिता

अंतिम सीमा तक जा पहुँची। लुईस पद्रहवे ने उस स्वेच्छा-चारिता को और भी भयकर रूप दे दिया। उसके समय मे उसकी प्रिय-पात्र वारांगनाएँ देश पर हुकूमत करती और ज़ेवर आदि में ग़रीब जनता से आया हुआ धन नष्ट करती थी। यद्यपि चौदहवे लुईस का राजत्व-काल फ्रांस की वीर-कीर्ति तथा विद्वत्ता का शिरोमणि काल (Augustan Age) समझा जाता है, तथापि फ्रांस की दीनता का आरभ उसी से हुआ। चौदहवे लुईस का सारा समय बड़े-बड़े युद्ध चलाने तथा विजय प्राप्त करने मे बीता। कहते हैं, वह किसी युद्ध में हारा नहीं, पर इन युद्धों मे फ्रांस की धन-सपत्ति चौपट हो गई और दीन प्रजा पर नए-नए टैक्स लगाए गए, जिससे वह भूखों मरने लगी।

पंद्रहवाँ लुईस विषय-वासनाओ का दास था। भला वह इस गिरी दशा को कैसे संभाल पाता। सोलहवे लुईस में ऐसे कोई दोष तो न थे और वह प्रजा-वत्सल भी था; पर ऐसे समय में राज्य करने के योग्य वह कदापि नहीं था। इस पर तुर्रा यह कि उसकी रानी आस्ट्रिया की राजकुमारी थी और फ्रांसीसी प्रजा के प्रति सहानुभूति-शून्य थी। प्रजा उससे बहुत असं-तुष्ट थी। उसने राज्य की बुराइयो से स्वयं ही अपने को छुड़ाने का संकल्प कर लिया। बड़े-बड़े लेखको ने भी चौद-

हवे लुईस के समय से ही राजनीतिक प्रश्नो पर पुस्तके लिखना आरंभ कर दिया था। निम्न-लिखित लेखको के नाम बहुत प्रसिद्ध है—

वॉल्टेयर (Voltaire) तथा उसके सम्प्रदाय ने विचार की स्वतंत्रता पर जोर दिया। उन्होने ईसाई-मत पर आक्रमण-पर-आक्रमण करना शुरू किया। रूसो (Rousseou) ने समानता, स्वतंत्रता तथा बधु-भाव का उपदेश करना शुरू किया। उसने जनता के सम्मुख यह रक्खा कि वह राज्य राज्य ही नही है, जो जनता का प्रतिनिधि न हो।

इन विचारको के विचार सारे योरप मे फैलने लगे। फ्रांस मे तो इन विचारो के कारण आग ही भड़क गई। इस आग को बुझाने के लिये लुईस सोलहवे ने, १७८९ की ५ मई को, जनता के प्रतिनिधियो की एक सभा बुलाई। यह तिथि ससार के इतिहास मे बहुत ही महत्त्व-पूर्ण है, क्योकि इसी तिथि से फ्रांस की क्रांति का आरम्भ समझा जाता है।

फ्रांसीसी प्रतिनिधि-सभा ने अपने को जातीय सभा (National Assembly) के नाम से पुकारना शुरू किया। इसने देश की एक नई शासन-पद्धति तैयार की। सभा के सभ्य बहुत ही उदार तथा विचारशील थे। उन पर रूसो के विचारो का सिक्का जमा हुआ था। उनमे दोष केवल यही

था कि वे आदर्शवादी (Idealists) थे और शासन के कार्य को नहीं जानते थे। इन्होंने नवीन शासन-पद्धति के अनुसार सारे फ़्रांसीसियों को समान अधिकार दे दिए और देश में राजा की शक्ति को बहुत ही कम कर दिया। इन्होंने लोगों को धार्मिक मामले में स्वतंत्रता दी और सबके लिये एक-से ही राज्य-नियम बनाए। धर्म के मामले में इन्होंने रोम से बिलकुल ही संबंध तोड़ लिया।

लुईस सोलहवें को यह कब पसंद था! अतः वह इस शासन से अपने को बचाने का यत्न करने लगा। फ़्रांसीसी लोग भी बहुत अधिक सावधान थे। उन्होंने राजा की एक भी चाल न चलने दी। इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि राजकाज में जनता का हाथ बहुत ही अधिक बढ़ गया और जनता ने राजा के स्थान पर स्वेच्छाचारी का रूप धारण किया।

पेरिस के लोगों ने बैस्टिल (Bastile)-नामक प्रसिद्ध एवं अत्यंत सुदृढ़ जेल को, जो एक ख़ास क़िला था, एक ही रात्रि के भीतर तोड़ डाला और राजनीतिक अपराधियों को छुड़ा लिया। जनता ने राजा तथा सभा को पेरिस में रहने के लिये बाध्य किया। १७९३ में इस नवीन शासन-पद्धति को भी लोगों ने न माना और कुछ स्वतंत्रता-प्रिय लोगों ने

एक नए ढग की शासन-पद्धति बनाई । ये लोग जैकोबिन (Jacobins) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्होंने राजा तथा रानी पर अभियोग चलाया और उनको मृत्यु-दड दिया। बड़े-बड़े पादरी तथा तल्लुकेदारों को ढूँढ़-ढूँढ़कर मारा गया। ईसाई-मत यही समझा गया कि एक ईश्वर की उपासना की जाय, और जो बुद्धि कहे, वही ठीक है । बाद को तो ईश्वर को भी पदच्युत करने का जलसा बड़े समारोह से किया गया। फ्रांस का बालक राजकुमार टेंपिल-नामक स्थान की एक कालकोठरी में बंद कर दिया गया। बाद उसका पता तक न लगा । इसके बाद एक वर्ष तक फ्रांस में भयकरता का राज्य (Reign of Terror) रहा । जो लोग फ्रांसीसी क्रांति के विरुद्ध थे, वे बुरी तरह से मारे गए। यह सब होने पर राज-दल के लोग अपने-अपने प्राण लेकर योरप की अन्य रियासतों में भाग गए और उन रियासतों को क्रांति बंद करने के लिये प्रेरित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सारे योरप में लडाई छिड गई ।

जर्मनी ने सारे योरप में यह घोषणा कर दी कि वह फ्रांस में राजतंत्र स्थापित करने के लिये तैयार है, पर शर्त यह है कि योरप के अन्य राष्ट्र उसको सहायता दें। जो लोग फ्रांस की क्रांति के पक्ष में थे, उन्होंने अन्य योरपियन राष्ट्रों की

प्रजा को भी क्रांति करने के लिये भड़काना शुरू किया। १७९२ मे फ्रांस ने आस्ट्रेलिया तथा प्रशिया से लड़ाई शुरू कर दी। मित्र-दल (The Allies) ने फ्रांस पर आक्रमण शुरू कर दिया। जैकोबिन लोगो ने राजा की हत्या करके प्रतिनिधि-तत्र राज्य की रक्षा के लिये मित्र-दल से लड़ना शुरू किया। ये ऐसी वीरता से लड़े कि मित्र-दल के छक्के छूट गए। राइन (Rhine)-नदी तथा अल्प्स (Alps)-पहाड़ तक फ्रांसीसी प्रतिनिधि-सभा का राज्य फैल गया।

इँगलैड तथा फ्रांसीसी क्रांति

शुरू-शुरू में इँगलैंडवालो को फ्रांसीसी क्रांति से सहानुभूति थी, क्योकि वे स्वय भी प्रतिनिधि-तत्र राज्य द्वारा शासित होते थे। उन्हे यह प्रसन्नता हुई कि फ्रांस भी स्वतत्र हो जायगा। महा-मत्री पिट फ्रांसीसी क्रांति के पक्ष मे था। फॉक्स ने बैस्टिल के पतन पर ये शब्द कहे थे कि "ससार में कितना बड़ा तथा अच्छा काम हुआ है।" स्थान-स्थान पर इँगलैड मे ऐसी सभाएँ स्थापित हो गईं, जो क्रांति-सबधी समाचार जनता मे फैलाने लगीं। बहुत-से अँगरेजों ने अपनी पार्लिमेंट मे सशोधन करना चाहा और बहुतों ने तो उसको फ्रांसीसी प्रतिनिधि-सभा के ढग पर ही बदलना चाहा। इससे इँगलैंड मे भी क्रांति हो जाने की सभावना हो गई। इस क्रांति से डरकर एडमड बर्क (Edmund Burke) ने

फ्रांसीसी क्रांति के विरुद्ध लिखना शुरू किया। उसका इसी मामले मे अपने पुराने मित्र फॉक्स से झगड़ा हो गया। इन्ही दिनो इस क्राति के बुरे फल लोगो के सामने आने लगे। जातीय सभा ने जो-जो अत्याचार फ्रांस मे किए, उनको सुनकर अँगरेज-जनता का हृदय काँप उठा। लोगो ने बर्क का साथ देना शुरू कर दिया। इस पर पिट ने, १७९४ मे, बर्क के कुछ साथियो को अपने सचिव-मडल मे ले लिया। पिट ने भी इँगलैड मे क्रांति के भावो का फैलना रोकना शुरू किया। बेचारा फॉक्स अपने विचारो मे अकेला पड गया। अँगरेज़-जनता ने उसका साथ न दिया।

पिट ने धीरे-धीरे अपनी विदेशी नीति को बदलना शुरू किया। उसने घर मे सशोधन करना कतई बद कर दिया। उसी ने हीब्रियस कार्पस ऐक्ट (Habius Corpus Act) को स्थगित कर दिया। एलियन (Aliens) ऐक्ट द्वारा उसने विदेशियो पर कड़ी नजर रखनी शुरू की। यह इसलिये कि कही वे इगलैड मे क्राति के भाव न फैला दे। बहुत-से ऐसे अँगरेज़-नेताओ को उसने कैद मे डाल दिया, जो फ्रांसीसी क्रांति के भावो को इँगलैड मे फैलाना चाहते थे और जिन्होने इसी उद्देश से नई-नई सभाएँ स्थापित की थी। यही पर इति न करके पिट ने एक कानून के द्वारा राजा के विरुद्ध कोई बात कहने तक को राजद्रोह ठहराया। जो चूँ भी करता था, उसको वह कड़ा दड देता था।

इँगलैंड का फ्रांस से युद्ध

क्रांति से डरते हुए भी इँगलैंड ने फ्रांस से युद्ध करने का कुछ समय तक इरादा न किया। बर्क ने फ्रांस से युद्ध शुरू करने के लिये पिट को बहुत ही अधिक समझाया-बुझाया, पर उसने कहना न माना। किंतु अपने विचार पर वह भी देर तक स्थिर न रह सका। फ्रांस के हस्तक्षेप से तंग आकर उसने, १७९३ में, फ्रांस से युद्ध छेड़ दिया। पिट का खयाल था कि यह युद्ध शीघ्र ही समाप्त हो जायगा। परंतु ऐसा न हुआ। बर्क सदा यही कहता था कि यह युद्ध बड़ा भयंकर होगा और बहुत दिनों तक चलेगा। दैवी घटना से बर्क का कहना अक्षरशः ठीक निकला।

पिट योरप की रियासतों को, फ्रांस के विरुद्ध, आर्थिक सहायता देता रहा। उसने अपने सैनिकों की शिक्षा में वह धन नहीं खर्च किया। इँगलैंड के युद्ध में पड़ने से जैकोबिन लोगों को कुछ भी हानि न पहुँची। वे पहले की ही तरह विजय प्राप्त करते रहे। उन्होंने जॉर्ज तृतीय के पुत्र फ्रेडरिक को बुरी तरह से हरा दिया और सारा हॉलैंड जीत लिया। पिट ने जैकोबिन लोगों के विरुद्ध जो सहायता पहुँचाई, उस सहायता को नेपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) (सेनापति) ने फ्रांस तक नहीं पहुँचने दिया।

१७९५ में ब्रिटनी के अंदर अँगरेज़ों की जो सेनाएँ पहुँचीं,

वे भी सफलता न प्राप्त कर सकी। १७९५ में फ्रांस से जैकोबिन लोगों का राज्य उठ गया और वहाँ डाइरक्टरी (Directory) का राज्य शुरू हुआ। फ्रासीसी प्रतिनिधि-सभा से प्रशिया, स्पेन तथा अन्य योरप के राष्ट्र डर गए। हॉलैंड तथा स्पेन ने मिलकर इँगलैंड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। १७९६ में नेपोलियन बोनापार्ट ने मुख्य सेनापति का पद ग्रहण किया और इटली से आस्ट्रिया को निकालकर उसे फ्रांस के साथ मिला लिया। प्रशिया पहले ही युद्ध से अलग हो चुका था। इससे अब इँगलैंड अकेला पड गया। योरप का एक भी राष्ट्र उसका साथी न रहा। इँगलैंड अपने सभी प्रयत्नों में असफल होता रहा। उसके पास सिर्फ जहाज़ और रुपए ही थे। पिट ने योरप की रियासतों को फ्रांस के विरुद्ध लडाने के लिये इतना सोना दिया कि इँगलैंड में सोने की बहुत कमी हो गई। इस कारण पार्लिमेंट की आज्ञा प्राप्त करके बैंक ऑफ् इँगलैंड ने लोगों को नकद रुपए देना बद कर दिया। सारे इँगलैंड में बैंक-नोट चलने लगे। आश्चर्य तो यह था कि बैंक-नोटों का दाम नाम-मात्र को ही गिरा।

शुरू-शुरू में, सामुद्रिक युद्धों (Naval Actions) में, इँगलैंड ही विजयी रहा। फ्रांस ने समुद्र के ऊपर से भी इँगलैंड का प्रभुत्व हटाने के लिये हॉलैंड तथा स्पेन के जहाज़ी बेडे से सहायता ली और इँगलैंड पर

आक्रमण करने का इरादा किया। १७९७ की फरवरी में नेल्सन ने फ्रांसीसी बेड़े को बुरी तरह से परास्त किया और इँगलैंड को बचा लिया। तब फ्रांस ने आस्ट्रिया का सहारा लिया और इँगलैंड को कुचलने की तदबीर सोचने लगा। उसने एक सेना आयर्लैंड में भेजने के लिये और नेपोलियन की सेना को इँगलैंड पर आक्रमण करने के लिये तैयार किया। १७९८ मे मिसर में विद्रोह हो गया। बोनापार्ट ने माल्टा-द्वीप को अपने क़ब्ज़े मे कर लिया और मिसर (Egypt) में जा धमका। सर होरेशियो नेल्सन (Sir Horatius Nelson) ने अबूकीर की खाड़ी मे फ्रांसीसियों के बेड़े को नष्ट कर दिया। यह युद्ध नील-नदी के युद्ध (The battle of the Nile) के नाम से प्रसिद्ध है। इसी युद्ध से मध्यसागर पर इँगलैंड का प्रभुत्व स्थापित हो गया और ऐसा मालूम पड़ने लगा कि नेपोलियन मिसर ही में अवरुद्ध रहेगा। १७९९ में मैसूर के राजा टीपू सुल्तान को मार्क्विस वैलेस्ली ने परास्त किया। टीपू नेपोलियन का मित्र था। अतः उसकी पराजय के कारण भारतवर्ष सदा के लिये फ्रांस के हाथ से निकल गया।

१७९९ मे योरप के अंदर फिर लड़ाई छिड़ गई। पिट ने आस्ट्रिया, रूस तथा अन्य कुछ रियासतों को अपने साथ मिला लिया और फ्रांस के विरुद्ध लड़ना शुरू किया। एक ही वर्ष

की लड़ाई मे फ्रांस ने उन सब रियासतो को खो दिया, जिनको उसने पहले जीत लिया था। ठीक इसी समय नेपोलियन बोना-पार्ट फिर फ्रांस मे पहुँच गया। १७६६ मे उसने डाइरेक्टरी के राज्य का अंत कर दिया और एक नए ढग की शासन-पद्धति बनाई, जिसके अनुसार जनता की शक्ति नाम-मात्र को ही रह गई। जनता क्रांति से ऊब उठी थी। अतएव उसने खुशी-खुशी नेपोलियन का शासनाधिकार स्वीकर कर लिया। नेपोलियन ने रूस के ज़ार को इँगलैड से जुदा हो जाने के लिये प्रेरित किया। उसने अल्प्स को नाँघकर आस्ट्रिया को मारेगो (Marengo) के युद्ध (१८०० की १४ जून) मे बुरी तरह से परास्त किया और इटली को स्वाधीन कर दिया। आस्ट्रिया ने फ्रांस से लूनेविल की संधि की और नीदरलैड तथा राइन पर फ्रांसीसियो का प्रभुत्व मान लिया।

इस समय इँगलैड को फिर अकेले ही रहना पड़ा। रूस के ज़ार (Czar of Russia) ने बोनापार्ट के कहने पर स्वीडन तथा डेन्मार्क को भी इँगलैड के विरुद्ध भडका दिया। इस पर इँगलैड ने बाल्टिक-समुद्र की ओर अपना जहाजी बेड़ा रवाना किया और कोपेन हेगन (Copen Hagen) को फतह करके डेन्मार्क-वासियो को संधि के लिये बाध्य किया। ठीक इसी अवसर पर रूस का ज़ार मारा गया। तब

एलेग्जेंडर प्रथम (Alexandei I) रूस का ज़ार बनकर गद्दी पर बैठा। इसने फ्रांस का साथ छोड़ दिया। इसके साथ छोड़ते ही नेपोलियन अँगरेज़ों को नीचा दिखाने से निराश हो गया। उसको यह विश्वास हो गया कि अब वह अँगरेज़ों के जहाज़ी बेड़े को नष्ट न कर सकेगा।

एडिंगटन का सचिव-तत्र (Addington's Ministry) राज्य और आमींस (Amiens) की सधि (१८०१-१८०२)

नेपोलियन बोनापार्ट सारे योरप का प्रभु था और इँगलैंड समुद्र का। दोनो ही एक दूसरे को हानि पहुँचाने में असमर्थ थे, दोनों ही लड़ाई करते-करते थक चुके थे। इँगलैंड तथा फ्रांस संधि के लिये कुछ समय तक पत्र-व्यवहार करते रहे। १८०१ में पिट ने इस्तीफ़ा दिया। पिट के साथ ही सभी योग्य तथा बुद्धिमान् अँगरेज़ो ने राज्य-पद छोड़ दिए। एडिंगटन ने बडी मुश्किल से राज्य-कार्य सँभाला। उसने टोरी-दल के लोगों को ही अपने सचिव-मंडल में स्थान दिया। १८०२ में आमींस की संधि (Treaty of Amiens) हुई। इस सधि के अनुसार माल्टा सेट जान के नाइट्स (The Knights of St. John) को दे दिया गया। हॉलैंड ने लंका-द्वीप अँगरेज़ों के सिपुर्द किया। अँगरेज़ों ने जो-जो

फ्रांसीसी प्रदेश जीते थे, वे सब फ्रांस को लौटा दिए गए।

फ्रांसीसी क्रांति के समय, युद्ध के दिनो मे, आयर्लैंड ने इॅगलैंड को बहुत ही तग किया। १७८२ मे आयर्लैंड की अपनी पार्लिमेंट थी। इस पार्लिमेंट पर अँगरेजो का नियत्रण न था। इसके सदस्य प्रोटेस्टेंट लोग ही थे। इससे आयर्लैंड के कैथलिक नाराज थे। उनको इस सभा से कुछ भी सहानुभूति न थी। सभा मे रिश्वत के जोर से राजा के मित्र ही प्रतिनिधि बनकर पहुँचते थे। इस कारण यह सभा जनता की प्रतिनिधि न थी।

फ्रासीसी क्रांति का आयर्लैंड पर बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ा। १७८१ मे वहाँ थियोबाल्ड उल्फ टोन (Theobold Wolfe Tone) ने 'सम्मिलित आयरिश समिति' (United Irishmen) नाम की एक सभा स्थापित की। इस सभा के सदस्यो ने अपने को इॅगलैंड से छुडाने के लिये फ्रांसीसी क्रांति के तरीके काम मे लाना शुरू किया। जो लोग इस सभा के विरुद्ध थे, उन्होंने ऑरेंज-समिति नाम की एक सभा बनाई और 'सम्मिलित आयरिश समिति' का विरोध करना शुरू किया। इन सब विरोधों के होने पर भी सम्मिलित आयरिश समिति की ओर आयरिश लोगो का झुकाव अधिक था। पिट के व्यवहारो से यह झुकाव और भी बढ़ गया।

उल्फ टोन तथा उसके साथियों ने फ्रांस से सहायता प्राप्त करनी चाही। नेल्सन की सामुद्रिक विजयो के कारण फ्रांसीसी राज्य उनको सहायता न पहुँचा सका। सहायता न मिलने पर भी, १७९९ मे, आयलैंड मे गृह-युद्ध हो गया। अँगरेज़ो ने विद्रोहियो को बड़ी मुश्किल से वाइन्गर् (Vineger) हिल के युद्ध मे पराजित किया। पिट ने लॉर्ड कार्नवालिस को आयलैंड भेजा। उसने पिट को सलाह दी कि आयलैंड की पार्लिमेंट तोड़ दो, और अपने यहाँ की पार्लिमेंट मे वहाँ के कुछ सभ्यों को स्थान दे दो। पिट को यह सलाह पसद आई। उसने आयलैंड के कैथलिको को मिलाने के लिये उन्हे प्रतिनिधि-निर्वाचन के अधिकार दे देने का प्रण किया। आयरिश प्रोटे-स्टेंटों को घूस, पेंशन आदि अनुचित साधनो के द्वारा पिट ने वश मे किया और १८०० मे आयरिश पार्लिमेंट को सदा के लिये तोड़ दिया।

ऐक्ट ऑफ यूनियन (Act of Union) के अनुसार ४ आयरिश पादरी और २८ आयरिश लार्ड लार्ड-सभा के सभ्य बनाए गए और १०० आयरिश सभ्यो को पार्लिमेंट में बैठने का अधिकार मिला।

पिट ने कैथलिक लोगो के ऊपर से कड़े नियम हटाने का प्रयत्न किया, परंतु इसमें वह सफल न हो सका। उनको प्रतिनिधि-

निर्वाचन का अधिकार नही मिला। इसी झगड़े मे पिट ने इस्तीफा दे दिया और एडिंगटन को प्रधान मत्री बनने का अवसर मिला।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१७८९	फ्रांसीसी क्रांति का आरभ
१७९३	इँगलैड का फ्रांस से युद्ध
१७९८	नील का युद्ध; आयरिश विद्रोह
१७९९	नेपोलियन का प्रथम कांसल बनना
१८००	आयर्लैंड का इँगलैड से जुड़ना
१८०१	पिट का इस्तीफा देना
१८०२	आमीस की सधि

पंचम परिच्छेद

जॉर्ज तृतीय तथा नेपोलियन

(१८०२-१८२०)

नेपोलियानिक युद्ध का आरभ

(Napolianic Wars)

आमींस की संधि बहुत दिनों तक कायम न रह सकी। नेपोलियन अँगरेजों का शत्रु था। वह सिर्फ तैयारी के लिये कुछ दम लेना चाहता था। सधि के कुछ ही दिनो के बाद उसने स्वेच्छाचारी बनने का प्रयत्न शुरू कर दिया। पोप से संधि करके उसने फ्रांस मे रोमन कैथलिक मत फैलाने का यत्न किया, पीडमांट तथा परमा को अपने हाथ मे किया और स्विजरलैंड को फतह करने के लिये अपनी सेनाओं को रवाना किया। उस समय योरप का कोई भी राष्ट्र उसकी प्रबल शक्ति का सामना न कर सकता था। रूस का ज़ार एलेग्ज़ैंडर उसका परम मित्र था। जर्मनी मे भीतरी गड़बड़ थी। लूनेविल की सधि करके जर्मनी का नए सिरे से संगठन किया गया। आस्ट्रिया तथा जर्मनी मे परस्पर झगड़ा था। सारांश यह कि नेपोलियन को योरप के राष्ट्रों से कुछ भी भय न था।
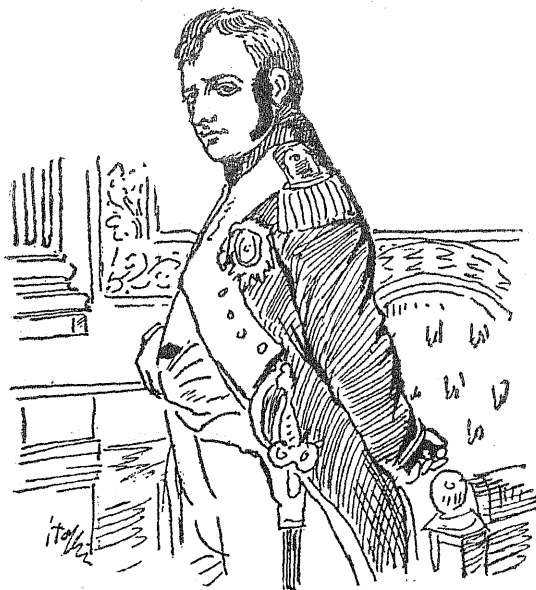
नेपोलियन बोनापार्ट

योरप से निश्चिंत होकर नेपोलियन ने अँगरेज़ों से मिसर छीन लेना चाहा और भारत के ऊपर से अँगरेज़ों का प्रभुत्व हटाने के लिये उसने मरहठों को भी भड़काया। इँगलैंड पर आक्रमण करने के लिये वह ख़ूब ज़ोर-शोर से तैयारी करने लगा। उसने इँगलैंड से माल्टा-द्वीप ख़ाली कर देने के लिये कहा; पर अँगरेज़ों ने यह न माना। इस पर उसने अँगरेज़ों को अन्य उपायों से तंग करना शुरू किया। १८०३ के मई-महीने में ब्रिटेन ने फ़्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

यह युद्ध १८०३ से १८१४ तक चलता रहा। अँगरेज़ों ने योरप के राष्ट्रों को नेपोलियन से लड़ाने की बहुत। कुछ कोशिश की; परंतु वे इसमें सफलता नहीं पा सके। इसमें संदेह नहीं कि नेपोलियन भी अँगरेज़ों को परास्त नहीं कर सका, क्योंकि इँगलैंड मे जातीयता का भाव उत्पन्न हो चुका था।

नेपोलियन ने एंटवर्प (Antwerp) से लीहैव्र (Le-havre) तक जहाज़-ही-जहाज़ जमा कर दिए। बोलोन (Bolougne) मे उसने अपनी छावनी डाली और फिर वह इँगलैंड पर आक्रमण करने का अवसर देखने लगा। उसने आयर्लैंड में विद्रोह खड़ा करने का यत्न भी किया; परंतु पूर्ण रूप से सफलता नही प्राप्त कर सका। भारत में भी वह अँगरेज़ो को नीचा नही दिखा सका। १८०३ में लॉर्ड वैलेस्ली (Wellesly) ने मरहठों को, असाई तथा अरगाँव के युद्धो में, बुरी तरह से हराया। दिल्ली को उसने अपने हाथ मे कर लिया। उसने सब्सिडरी (Subsdiary) (सहायक) संधियों के द्वारा भारतीय राजो को इस प्रकार जकड़ लिया कि वे अशक्त हो गए। उनमें अँगरेज़ों के विरुद्ध सिर उठाने की ताकत ही न रह गई। अँगरेज़ लोग नेपोलियन के आक्रमण से अपने को बचाने मे ही पूर्ण रूप

से दत्त-चित्त थे। एडिगटन का सचिव-तत्र राज्य बहुत ही कमजोर था। लोगो ने पिट को महामत्री बनाने के लिये शोर मचाना शुरू किया। मे, १८०४ मे पिट ने फिर राजकाज सँभाला, और इँगलैड की स्वतत्रता को बचाने के उपाय सोचने लगा।

विलियम पिट का द्वितीय सचिव-तत्र राज्य
(१८०४-१८०६)

पिट ने अपने मत्रि-मडल मे सभी तरह की योग्यता रखने-वाले आदमियो को शामिल कर लिया। लॉर्ड एडिगटन ने भी उसका पूरा साथ दिया। उसने पिट की मातहती मे कार्य करना स्वीकार किया। पिट के राजकाज सँभालते ही अँग-रेज़ो ने तैयारी करनी शुरू की।

अगरेज़ो के इतिहास से स्पष्ट मालूम होता है कि यद्यपि उनमे दलबदी का रूप उग्र रहता है, तथापि जब कभी वे अपने देश तथा उसकी स्वतत्रता को खटाई मे पड़ते देखते है, तो तुरत दलबंदी के भेद-भाव को भूलकर एक हो जाते है और देश-प्रेम के सामने अन्य भावों को अपने हृदय मे स्थान नही देते। देश को जोखिम मे देखकर न तो कोई ह्विग रहा और न टोरी, न प्रोटेस्टेट और न रोमन कैथलिक। सारे देश की जनता उसकी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के लिये एकचित्त हो गई।

यही कारण था कि जिस वीर नेपोलियन ने सारे योरप को नाच नचाया और अपने अँगूठे के नीचे दबा दिया, उसके दाँत अँगरेज़ों ने ही खट्टे किए। लगभग ३ लाख अँगरेज़ों ने अपने को युद्ध के काम मे अर्पण कर दिया और अपने को युद्धा-स्वयसेवक (Volunteers) के नाम से प्रसिद्ध किया।

नेपोलियन ने, १८०४ में, अपने को फ्रांस का सम्राट् घोषित कर दिया। वह एक साल तक अँगरेज़ों पर आक्रमण करने का अवसर देखता रहा; परतु उसको ऐसा अवसर नही मिला। लाचार होकर उसने अँगरेज़ो के जहाज़ी बेड़े पर आक्रमण करने का इरादा किया। उसने स्पेन के राजा चॉर्ल्स चतुर्थ को जहाज़ी बेड़ा तैयार करने के लिये विवश किया। चार्ल्स ने भी यह मजूर कर लिया। इस पर अँगरेज़ों ने दिसबर, १८०४ मे स्पेन से युद्ध छेड़ दिया। १८०५ मे संसार-प्रसिद्ध ट्राफल्गर (Trafalger) की समुद्री लड़ाई हुई और उसमें नेल्सन ने स्पेन के जहाज़ी बेड़े को तहस-नहस कर दिया। इस सामुद्रिक विजय के बाद अँगरेज़ निश्चित हो गए और उनका समुद्र पर एकछत्र आधिपत्य स्थापित हो गया। तब से अब तक सारे समुद्र के मालिक वही हैं। १८०५ मे पिट ने पुनः योरपियन राष्ट्रों को नेपोलियन का विरोधी बना दिया। रूस, आस्ट्रिया, नेपिल्स

तथा स्वीडन, ये सभी देश फ्रांस के विरुद्ध होकर इंगलैंड से मिल गए। २ दिसबर, १८०५ को नेपोलियन ने आस्ट्रिया और रूस की सम्मिलित सेनाओ को आस्टर्लिज (Austerlitz)-नामक स्थान पर बुरी तरह से शिकस्त दी और 'प्रैसबर्ग' की सधि करने के लिये लाचार किया। इटली, हॉलैंड आदि देशो मे उसने अपने परिवार के लोगो को शासक बना दिया। जर्मनी की छोटी-छोटी रियासतो को राइन के सगठन (Confederation of Rhine) मे सगठित करके, उनका शासन वह स्वय करने लगा। आस्ट्रिया के राजा ने भी अपने को रोमन सम्राट् की जगह अब आस्ट्रिया का सम्राट् कहना शुरू किया।

योरपियन राष्ट्रो के नेपोलियन के अधीन हो जाने से पिट को बहुत बडा धक्का पहुँचा। आस्टर्लिज-युद्ध के समाचार ने उसे सर्वथा निराश कर दिया। २३ जनवरी, १८०६ को पिट ये शब्द कहता हुआ मर गया—"हा मातृभूमि! मै तुझे किस अवस्था मे छोड़े जा रहा हूँ।" पिट की मृत्यु ने इंगलैंड को पूरी शिक्षा दी। अब मत्रियो ने आपस मे मिलकर काम करना शुरू किया। फॉक्स महामत्री बना। उसने इंगलैंड के सभी योग्य व्यक्तियो को मत्रि-मडल मे शामिल किया। इसी कारण फॉक्स के इस मत्रि-मडल को, 'सर्व-योग्यता का मत्रि-मडल' के नाम से पुकारा जाता है।

सर्वयोग्यता का मंत्रि-मंडल (१८०६-१८०७)
(Ministry of All the Talents)

फ़ॉक्स नेपोलियन का भक्त था, अतएव उसने नेपोलियन से संधि करने का यत्न किया; परंतु वह इस यत्न में कृतकार्य नहीं हो सका। दैव-संयोग से १२ सितंबर को फ़ॉक्स की मृत्यु हो गई। १८०७ में दास-व्यापार (Slave Trade) को रोकने के लिये क़ानून पास किया गया। इसी वर्ष ग्रैनविल ने इस्तीफ़ा दे दिया, क्योंकि वह आयर्लैंड में कैथलिकों के सदृश ही अँगरेज़-कैथलिकों को सेना में स्थान देना चाहता था; पर जॉर्ज को यह पसंद न था। इसी कारण ग्रैनविल को मंत्री का पद छोड़ना पड़ा। इस घटना के अनुसार जॉर्ज ने टोरी-दल के लोगों को ही राज्याधिकार दिया और ह्विग-लार्डों को संपूर्ण उच्च राजकीय सेवाओं से पृथक् कर दिया।

टोरियों का सचिव-तंत्र राज्य (१८०७-१८३०)

१८०७ से १८०९ तक पोर्टलैंड का ड्यूक मुख्य मंत्री के पद पर रहा। इसकी मातहती में पिट के शिष्य कैनिंग (Canning) तथा कासलरे (Castlereagh) मुख्य-मुख्य पदों पर नियुक्त रहे। १८०९ में कैनिंग तथा कासलरे आपस में लड़ पड़े और पोर्टलैंड भी मर गया। इस पर जॉर्ज ने स्पेंसर पर्सीवल (Spencer Perceval) को मुख्य मंत्री

बनाया। १८१२ तक यही मुख्य मत्री के तौर पर काम करता रहा । इसके बाद लॉर्ड लिवरपूल (Lord Livei Pool) सन् १८२७ तक मुख्य मत्री के पद पर काम करता रहा । १८२७ मे जॉर्ज पागल हो गया । उसके स्थान पर प्रिस ऑफ् वेल्स काम करने लगा। इसने अपने पिता को तग करने मे कुछ उठा नही रक्खा ।

इन इतने वर्षों मे जनता का ध्यान लडाई की ओर ही था । टोरी-मत्रियो ने बहुत समय तक नेपोलियन से कोई बड़ी लडाई नहीं छेड़ी । नेपोलियन ने (१४ ऑक्टोबर, १८०६) प्रशियन सेनाओ को जीता और रूस को फ्रीड-लैड के युद्ध मे बुरी तरह से परास्त किया । १८०७ मे रूस के ज़ार ने नेपोलियन से टिलसिट की सधि (Tieaty of Tilsit) की और इँगलैड का साथ छोड दिया। १८०७ से १८१२ तक नेपोलियन तथा एलेग्जैडर की मित्रता एक-सी ही बनी रही।

इन विजयो के अनतर नेपोलियन ने सारे योरप मे इँगलैड का माल जाना रोक दिया । उसकी यह काररवाई इतिहास मे 'कांटिनेंटल सिस्टम' (Continental System) के नाम से प्रसिद्ध है । इससे सारे योरप मे खाने-पीने की चीज़ो का मूल्य बहुत अधिक बढ़ गया । इँगलैड ने भी नेपोलियन

से परेशान होकर सारे योरपियन राष्ट्रों के उपनिवेशों को अपने कब्ज़े मे कर लिया और इस प्रकार अमेरिका के हाथ से निकल जाने का घाटा पूरा किया।

किंतु टिलसिट की संधि के बाद भी पुर्तगाल ने इँगलैंड का साथ नही छोड़ा। उसने नेपोलियन के कांटिनेंटल सिस्टम को नहीं माना। इस पर नेपोलियन ने उसको जीतकर फ्रांस मे शामिल कर लिया। पुर्तगाल को फ्रांस के साथ मिलाने के कुछ समय बाद स्पेन के राजा और उसके लड़के मे झगड़ा हो गया। दोनो ने नेपोलियन को फैसला करने के लिये बुलाया। नेपोलियन ने दोनों ही को गद्दी से उतारकर अपने भाई जोज़ेफ़ (Joseph) को स्पेन का राजा बना दिया। इस पर सारा स्पेन उसके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। फ्रांसीसी सेनाएँ स्पेन की जनता से बुरी तरह हारी। अँगरेजो को भी नेपोलियन से बदला लेने का मौका मिल गया। वे उस पर स्थल तथा जल, दोनो ओर से आक्रमण करने लगे। सर आर्थर वैलेस्ली ने पुर्तगाल में प्रवेश किया और 'वाइमीरा' (Vimeira) के युद्ध मे फ्रांसीसी सेनापति को बुरी तरह नीचा दिखाया। इसी बीच मे अँगरेज़ी-सेना का मुख्य सेनापति हेरी वार्रार्ड बनाया गया। यह बिलकुल ही नालायक था। इसने सिंट्रा (Cintia) की संधि की और पुर्त-

पेनिनसुलर युद्ध
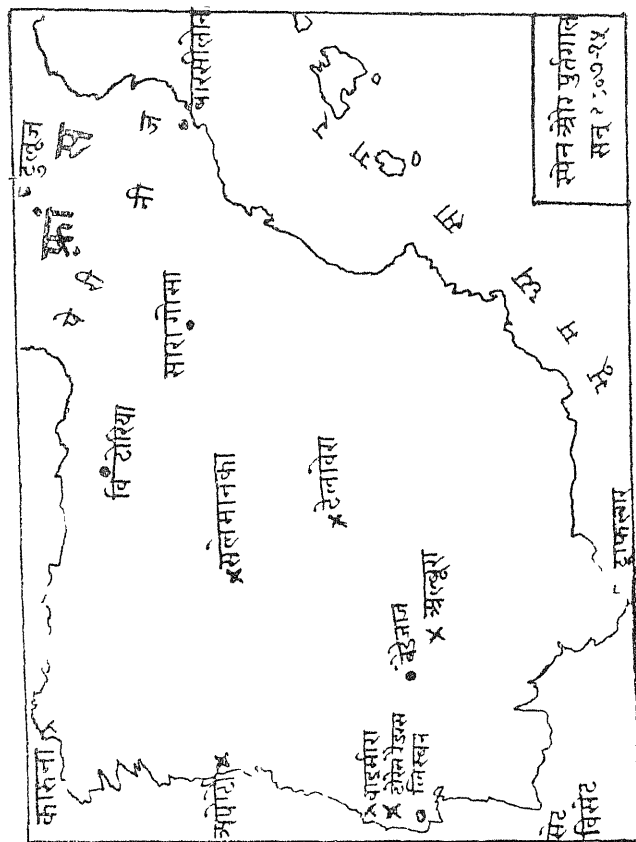
गाल से फ्रांसीसी सेना को बाहर निकाल दिया । १८०८ मे अँगरेजो ने सर जॉन मूर(Sir John Moore)को एकबड़ी सेना के साथ स्पेन भेजा। तब नेपोलियन ने स्वय आकर स्पेन पर

आक्रमण किया और फतह कर लिया। फ्रांसीसियो ने मूर का पीछा किया। कॉरूना के युद्ध (Battle of Corunna) मे मूर की मृत्यु हो गई। ॲगरेज़ी-सेना बड़ी कठिनाई से अपने जहाज़ों पर पहुॅच सकी।

नेपोलियन स्पेन को छोड़कर आस्ट्रिया को ओर बढ़ा, क्योंकि आस्ट्रिया ने भी फ्रांस के विरुद्ध हथियार उठा लिए थे। इँगलैंड ने उसे भी सहायता पहुॅचाने का प्रयत्न किया। दो लाख के लगभग ॲगरेज़ी-सेना युद्ध के लिये तैयार हुई। एंटवर्प पर आक्रमण किया गया। परतु वहाँ सफलता न मिली। नेपोलियन ने आस्ट्रिया पर विजय प्राप्त की और उसको सधि करने के लिये लाचार किया।

ॲगरेज़ी-मत्रिमडल ने, १८०९ मे, आर्थर वैलेस्ली को प्रधान सेनापति बनाया। वह बहुत ही योग्य था तथा बहुत-से युद्ध जीत चुका था। उसने २० हज़ार सेना लेकर स्पेन मे प्रवेश किया और टेलावेरा (Talavaia) के युद्ध मे फ्रांसीसियों को हराया। इस विजय के इनाम में 'वैलेस्ली वेलिंगटन का वाइकाउंट' (Vis Connt Wellington) बना दिया गया। वेलिंगटन १८१० तक स्पेन मे ही रहा और बड़ी सावधानी से अपने को फ्रांसीसियों के आक्रमण से बचाता रहा। १८११ मे उसने सेना-सहित

फ्रांसीसी सेनापति को परास्त किया। इसी साल मार्शल बी० डेशफ़ोर्ड ने अल्बूरा-नामक स्थान पर फ्रांसीसियों को नीचा दिखाया। इन विजयों का परिणाम यह हुआ कि अँगरेज़ स्पेन तथा पुर्तगाल में टिके रहे।

१८१२ में फ्रांस तथा रूस की संधि टूट गई। नेपोलियन ने ५ लाख फ़ौज लेकर रूस पर आक्रमण किया। वह मास्को (Moscow) तक जा पहुँचा; परंतु अंत में उसको लौटना पड़ा। रूसियों ने मास्को के आसपास मुट्ठी-भर अनाज या किसी प्रकार का अन्य खाद्य-पदार्थ न छोड़ा। विशाल मास्को

ड्यूक ऑफ़ वेलिंगटन

नगर मे आग लगा दी। बर्फ़ खूब पड़ रही थी। मैदान-ही-मैदान दिखाई देता था, कहीं छाया न थी। ऐसी दशा मे लौटने से फ़्रांसीसी योद्धा मर मिटे। वे शीत के मारे भूखे सफर करते, उस पर रूसियो के कज्ज़ाक सवार उन पर आक्रमण करते और मारते थे। रात को जो लोग मैदान मे सोते थे, वे प्रातःकाल शीत से ऐंठे और मरे मिलते। इस तरह नेपोलियन की विशाल सेना नष्ट हुई। इतनी बड़ी सेना मे से केवल हज़ार बचकर लौटे। इसी दिन से नेपोलियन के भाग्य ने पलटा खाया।

वेलिंगटन ने शीघ्र ही स्पेन तथा पुर्तगाल को फ़्रांसीसियो के पंजे से छुड़ा दिया। नेपोलियन की सेनाएँ लिपज़िग (Leipzig) के युद्ध मे जर्मनी से पराजित हुई। १८१४ मे फ़्रांस पर रूस, जर्मनी तथा इँगलैंड ने मिलकर चढ़ाई कर दी और पेरिस को फतह कर लिया। नेपोलियन कैद हुआ और ऐल्बा (Elba) के द्वीप मे भेज दिया गया। पेरिस की प्रथम संधि की शर्तें तैयार की गईं।

इन्हीं दिनो अमेरिका ने इँगलैंड से असंतुष्ट होकर उससे युद्ध की घोषणा कर दी। युद्ध का मुख्य कारण यह था कि इँगलैंड ने अमेरिकन जहाज़ों को फ़्रांस मे जाने से रोक दिया था। अमेरिका ने कनाडा पर आक्रमण किया, परंतु जीत न सका। रूस के ज़ार ने अँगरेज़ों तथा अमेरिकनों की लड़ाई

को बंद करा दिया और दोनो जातियो मे समझौता करा दिया ।

मार्च, १८१५ मे नेपोलियन मित्र पहरुओ की ऑखो मे धूल डालकर एक सडी हुई नाव पर एल्बा से निकलकर फ्रांस पहुँच गया। फ्रांस ने उसका हृदय से स्वागत किया। नेपोलियन ने बहुत ही जल्दी, फुर्ती के साथ, तैयारी और चढ़ाई करके प्रशिया की सेनाओ को लिग्नी (Ligny) पर परास्त किया। वेलिंगटन को भी क्वैट्राब्रास-नामक स्थान मे पीछे हटना पड़ा। १८ जून, रविवार के दिन वाटर्लू (Waterloo) की जगत्-प्रसिद्ध लड़ाई हुई। नेपोलियन को कैद करके सेट-हेलिना (St Helena) भेज दिया गया। पेरिस की द्वितीय संधि हुई। लुईस १८वॉ फ्रांस का राजा बनाया गया। १७९२ मे फ्रांस का जितना राज्य था, उतना ही रह गया। इंगलैड ने हॉलैड से सीलोन तथा केप ऑफ गुडहोप ले लिया। मिलान तथा वेनिस (Venice) पर आस्ट्रिया का राज्य हो गया। प्रशिया को राइन-नदी के बाऍ किनारे की बहुत-सी जमीन दे दी गई। हनो-वर-प्रदेश जॉर्ज चतुर्थ को मिला। पोलैड को जार ने सॅभाल लिया। हॉलैड तथा आस्ट्रियन नीदरलैड आपस मे मिला दिए गए। यह सारा योरपियन राष्ट्रो का बटवारा वियना-नगर मे किया गया। इस विभाग से योरप की दशा स्थिर न

रही, क्योंकि राजो को अपने-अपने स्थानो की चिता थी ।

इस युद्ध मे इँगलैड की बहुत ही अधिक क्षति हुई । सारे देश में राज्य-कर बढ़ गए । जातीय ऋण की कोई हद न रही । अन्न के नियमों (Coin Laws) के कारण नाज बहुत ही महँगा था। फ्रांसीसी क्रांति से अँगरेज इतने डर गए थे कि वे पार्लिमेंट के सुधारों के नाम से काँपते थे। राज्य ने छः नियम बनाए, जिनके जोर से सभा-समितियों को बिलकुल बंद कर दिया गया । १८२० मे जॉर्ज तृतीय की मृत्यु हो गई ।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८०३	फ्रांस से इँगलैड का युद्ध
१८०४	पिट का द्वितीय सचिव-तंत्र राज्य
१८०५	ट्राफल्गर का युद्ध
१८०६	पिट तथा फॉक्स की मृत्यु
१८०७	टिलसिट की संधि ; टोरियो का सचिव-तंत्र राज्य
१८०८	वाइमीरा का युद्ध
१८०९	टैलावेरा का युद्ध
१८११	अल्बूरा का युद्ध

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८१२	रूस को नेपोलियन न जीत सका ; अमेरिका मे युद्ध
१८१४	नेपोलियन का प्रथम अधःपतन
१८१५	वाटर्लू का युद्ध , पेरिस की सधि , वियना की कांग्रेस
१८२०	जॉर्ज तृतीय की मृत्यु

षष्ठ परिच्छेद

अठारहवीं सदी मे इँगलैंड की व्यावसायिक क्रांति

आर्थिक उन्नति

जॉर्ज तृतीय के राज्याधिरोहण-काल मे इँगलैंड एक-मात्र कृषि-व्यापार-प्रधान देश था। जॉर्ज प्रथम के राज्य-काल में इँगलैंड ने ससार का सारा व्यापार अपने हाथ मे कर लिया। यूट्रैक्ट तथा अन्य दो-एक सधियो से इँगलैंड का व्यापार बहुत ही अधिक बढ़ गया। ब्रिस्टल-नगर के व्यापारियो ने दास-व्यापार से बहुत ही अधिक धन कमाया। धन के लोभ से इस व्यापार को किसी ने बुरा भी नहीं कहा। ईस्ट-इडिया-कपनी की विजय से इँगलैंड के व्यापारियो और सौदागरो को धन कमाने का और अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। लदन, ब्रिस्टल तथा ग्लॉसगो, ये बहुत बड़े नगर व्यापार ही की बदौलत बन गए। ब्रिटेन की व्यापारिक तथा व्यावसायिक उन्नति का आधार शांति या स्वतंत्रता न थी। उसने युद्धों तथा एकाधिकारो (Monopolies) के ही द्वारा अपना व्यवसाय बढ़ाया। अमेरिका की स्वतत्रता के समय यह व्यापार इतना अधिक बढ़ चुका था, इतना बद्धमूल होकर फैल चुका था कि अमेरिका

के स्वतत्र होने पर भी इसकी स्थिति मे किसी तरह का अतर नही पडा।

अठारहवी शताब्दी के पूर्व भाग मे इँगलैंड का कपडे का रोजगार क्रमशः चमकने और उन्नत होने लगा। पुराने जमाने के सदृश ही पुराने औजारो तथा पुराने ढगो से अँगरेज-जुलाहे कपडे बुनते थे। जॉर्ज तृतीय के राज्य-काल मे सामान की उत्पत्ति के नए तरीके खोज निकाले गए। चार बडे-बडे आविष्कारो के सहारे अँगरेजी-वस्त्र-व्यवसाय बहुत ही उन्नति कर गया। इसी समय जेम्स वॉट ने भाप से चलनेवाले एजिन मे बहुत-से सुधार किए। अतएव एजिन के जरिए ज्यो ही कपडे वगैरह बुनने मे इँगलैंड ने उन्नति की, त्यो ही इँगलैंड का वस्त्र-व्यवसाय बहुत तेजी से आगे बढने लगा। जॉन रोवक के आविष्कार से इँगलैंड ने लौह व्यवसाय को बढाया और चारकोल के द्वारा लोहे को पिघलाना शुरू किया। इसी प्रकार जोशिया वेजउड के प्रयत्न से नॉर्थ स्टैफोर्डशायर (Stafford Shire) मे बर्तनो का व्यवसाय चमक उठा। इन सब आविष्कारो के सहारे इँगलैंड ने कम खर्च पर अच्छी चीजे बनाना शुरू कर दिया।

व्यापार-व्यवसाय की उन्नति का सडको के साथ घनिष्ठ सबध हुआ करता है। यही कारण है कि उल्लिखित आवि-

ष्कारो के बाद इंगलैड मे पक्की सड़के तथा पक्के पुल अधिक बनाए जाने लगे। स्थान-स्थान पर डाकखाने खुल गए और बहुत-से नगरो मे प्रतिदिन डाक आने-जाने लगी।

पक्की सडको के द्वारा भारी सामान इधर-उधर ले जाना कठिन था। अतः लकडी की पटरियो पर घोड़ा-गाड़ियाँ चलाई जाने लगीं। यह आविष्कार सबसे पहले नार्थबरलैंड तथा डर्हेम (Durham) में हुआ। यहाँ कोयले की खानें थी। साधारण सड़को के द्वारा कोयले का समुद्र तक पहुँचना कठिन था। धीरे-धीरे लकडी की पटरियों के स्थान पर लोहे की पटरियों का प्रयोग किया जाने लगा। उन पर भारी-से-भारी सामान इधर-उधर ले जाया जाने लगा। इँगलैंड में लोहे की पटरियों का प्रयोग सबसे पहले १७७६ मे हुआ था।

लोहे की पटरियाँ या रेले (Rails) बनाना, उन पर घोड़ा-गाड़ी चलाना और इधर-उधर सामान ले जाना बहुत ही सुगम था; परंतु इस कार्य मे खर्च अधिक पड़ता था। यही काम नहरों (Canals) के द्वारा भी हो सकता था। नहरों के बनाने मे एक तो खर्च कम था, दूसरे नौकाओ द्वारा पदार्थों के इधर-उधर ले जाने में देश का नौ-व्यवसाय उन्नत होने की आशा थी। नहरों के सहारे देश शीघ्र ही नौ-शक्ति-

सपन्न बन सकता था। इसी कारण, १७२० मे, एक राज्य-नियम बनाकर उसके द्वारा मचेस्टर तथा इर्वल-नदी की नहरे बनाया जाना स्वीकार किया गया। इसी प्रकार एयर तथा कैल्डर के द्वारा नौ-व्यापार शुरू करने से यार्कशायर के वेस्ट-राइडिग का व्यापार बहुत ही अधिक उन्नत हो गया। इतना ही नही, मचेस्टर (Manchester) और लिवरपूल (Leverpool) के बीच मे भी एक नहर बनाई गई और उसके द्वारा इधर-उधर सामान भेजा जाने लगा। १७५८ से १८०३ तक व्यापारी नहरो के सबध मे १६१ के लगभग नियम बने और ३,००० मील की व्यापारी नहरे इॅगलेड मे बन गई। टेम्स (Thames), ट्रैट (Trent), सैवर्न (Severne) तथा मर्से (Mersey) नाम की चारो नदियो को नहरो द्वारा एक दूसरे से मिला दिया गया। ग्लॉस्टर (सैवर्न) से समुद्र तक एक नहर बनाई गई। ग्लॉसगो तथा एडिनबरा, इनवर्नेस तथा फोर्ट विलियम, ये स्थान भी भिन्न-भिन्न नहरो के द्वारा मिला दिए गए। नहरो द्वारा सामान तथा यात्री एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने-जाने लगे। सारा इॅगलेड व्यापारी नहरो के जाल से घिर गया।

नहर तथा रेल के सहारे इॅगलैड शीघ्र ही एक व्यापारी

या रोजगारी देश बन गया। बंदरगाहो और लोहे तथा कोयले की खानो के पास इँगलैड के नए-नए व्यवसाय खुल गए। लंकेशायर कपड़े के कारखानो के लिये प्रसिद्ध हो गया। वेस्ट-राइडिंग के छोटे-छोटे नगर भी वस्त्र-व्यवसाय के द्वारा अत्यंत अधिक समृद्ध हो गए। ग्लॉसगो के आस-पास स्थान-स्थान पर लोहे के कारखाने खुल गए। इस व्यावसायिक उन्नति का परिणाम यह हुआ कि इँगलैड की आबादी बहुत ही बढ़ गई। १७५० मे उसकी आबादी ६० लाख थी, परतु १८०१ मे ९० लाख हो गई।

पदार्थों की उन्नति मे किस प्रकार भाप के एंजिन का उपयोग किया गया, इस पर अभी पीछे लिखा जा चुका है। व्यवसायी एंजिनो के द्वारा कलें चलाने और माल पैदा करने से पुतलीघरो मे श्रम-विभाग ने अपना रूप प्रकट किया। इसका परिणाम यह हुआ कि पहले की अपेक्षा कारखानो में माल बहुत अधिक बनने लगा। इसी को व्यावसायिक क्रांति (Industrial Revolution) कहते है।

व्यावसायिक क्रांति से इँगलैड के छोटे-छोटे कस्बों ने नगरों का रूप धारण कर लिया। एक-एक कारखाने में सैकड़ों मजदूर काम करने लगे। पूँजीपति लोग (Capitalists) इन मजदूरों को वेतन (Wages) देते थे और इनके द्वारा अपनी

जेबे भरते थे। बहुत-से कारखानेवाले पूँजीपतियो का अपने मज़दूरो के साथ अच्छा व्यवहार न था। उनकी रुखाई, कठोरता तथा सख्ती से मज़दूर तंग थे। मालिको ने मजदूरो को रहने के लिये जो झोपडियाँ दी थी, वे बहुत ही बुरी, गदी और तंग थी। जिन मकानो मे अधिकतर कपड़ा बुनवाया जाता था, वे बहुत ही गदे, स्वास्थ्य नाशक तथा अधकार-पूर्ण थे। राज्य को मजदूरो की बुरी हालत का कुछ भी खयाल न था। पूँजीपति अपने लाभ की धुन मे मस्त थे। उनको मजदूरो के कष्टो की कुछ भी परवा न थी। मर्दो के ही बराबर वे औरतो और बच्चो से भी काम कराते थे। इनके साथ भी उनका कुछ भी नरमी या दया का बर्ताव न था। भिखमगो और आवारा लडको को बाध्य करके, कारखानो मे काम करने के लिये भेज दिया जाता था। मजदूर-पेशा लोग अपढ़ और गरीब थे, उनको यह ज्ञान नही था कि हम अपनी तकलीफो को कैसे दूर करें। उधर राज्य को उनकी तकलीफे दूर करने की कुछ भी चिंता न थी। जब कभी कोई कारखाना टूटता और कोई व्यापार का काम असफल हो जाता, तो उस समय मजदूरो की जो दशा होती, वह अकथनीय है। वे भूख से तडपते हुए इधर-उधर मारे-मारे फिरते थे। ऐसे दुःख के समय मे उनको जो जिधर बहका देता था, उधर ही वे बहक जाते थे।

कभी-कभी वे लोग सांघातिक साहस के काम करने पर भी उतारू हो जाया करते थे। पार्लिमेंट मे अपने प्रतिनिधि भेजने का उनको कुछ भी सुबीता न था। इस कारण उनको पार्लिमेंट से कुछ भी सहायता न मिलती थी। इन्हीं दिनो ज़मींदारों तथा समृद्ध व्यवसाय-पतियों के बीच झगड़ा उठ खड़ा हुआ। ज़मींदार लोग टोरी-दल के थे, अतः व्यवसाय-पति तथा व्यापारी उदार-दल (Liberal Party) के हो गए। उदार-दल के वे लोग, जो बहुत ही गर्म थे, रेडिकल (Radical) कहलाए।

इँगलैंड मे व्यावसायिक क्रांति की तरह कृषक (Agrarian Revolution)-क्रांति भी उपस्थित हुई। १७६० तक प्रत्येक ग्राम मे कुछ ज़मीनें ऐसी थीं, जिन पर किसी भी ग्रामवासी का अलग-अलग कब्ज़ा न था। सभी ग्रामीण उन पर अपने-अपने पशु चराया करते थे। व्यावसायिक क्रांति से इँगलैंड की जन-संख्या बढ़ गई और नाज महँगा हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि ज़मींदार लोगों ने उन भूमियों को भी जोतना शुरू कर दिया, जिन पर समष्टि-रूप से ग्रामवासियो का अधिकार था। इतना ही नही, उन्होंने छोटे-छोटे किसानों को बे-दख़ल करके, बड़े-बड़े खेत बनाए और उन पर मज़दूरों की सहायता से खुद ही खेती करना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ

कि सभी छोटे-छोटे किसान बे-घर-बार के हो गए और मज़-दूर लोग जमीदारो की ज़मीन को मज़दूरी लेकर जोतने-बोने लगे। इस महा परिवर्तन के उपस्थित करने मे राज्य के नियमो ने भी बड़ा भारी भाग लिया। ये सब राज्य-नियम 'इनक्लो-जर-ऐक्ट्स' (Enclosure Acts) के नाम से प्रसिद्ध है।

बे-घर-बार के होने से किसानो को बहुत ही तकलीफ उठानी पडी। नित्य रोज-की-रोज़ मजदूरी मिलने का कोई भरोसा नही था। 'कॉर्न'-कानून के कारण उनकी हालत और भी बिगड़ गई। इन सब राज्य-नियमो से छोटे-बड़े ज़मीदारो को ही विशेष लाभ पहुँचा। मज़दूरो की हालत तो सभी जगह शोचनीय थी। पुराने ज़माने के बहादुर तथा शक्तिशाली छोटे-छोटे जमीदार भी सख्या मे घटने लगे। उनकी जगह बडे-बड़े ज़मीदारो ने ले ली। इसका मुख्य कारण राजनीतिक था। १६८८ के बाद ज़मीदारो का राजनीतिक महत्त्व बढ़ गया था। लोग राज्य मे शक्ति प्राप्त करने के लिये ज़मीदार बनने का प्रयत्न करते थे। इससे ज़मीनो की कीमत पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक बढ़ गई। छोटे-छोटे पूँजीपति ज़मीने खरीदने मे असमर्थ होकर और-और कामो मे अपना धन लगाने लगे। इन सब परिवर्तनो से इँगलैड मे दरिद्र भिखमगों की सख्या बढ़ गई। जहाँ कुछ अमीर अपनी शान-

शौकत मे मस्त थे, वहाँ जनता का बहुत बड़ा भाग पेट-भर रोटियो के लिये तरसने और कारखानों तथा खेतो मे मजदूरी करके ही जीवन-निर्वाह करने लगा। इस भयकर दशा का अनुमान इतने ही से किया जा सकता है कि उन्नीसवीं सदी मे इँगलैंड की सारी आबादी का सातवाँ भाग दरिद्र-सरक्षण-फंड (Poor Relief Fund) से सहायता प्राप्त करता था। सारांश यह कि अठारहवीं सदी मे इँगलैंड का व्यापार-व्यवसाय तथा आबादी बहुत ही अधिक बढ़ गई। पहले की अपेक्षा वह बहुत ही अधिक समृद्ध हो गया। परतु वहाँ दुःख, कष्ट और असतोष ज्यो-का-त्यो बना रहा। फ्रांस की क्रांति से तथा नेपोलियन-युद्ध के समय कीमतो के चढ़ने से मजदूरो और ग़रीब भिखमगो को जो तकलीफे उठानी पड़ी, उनका वर्णन करना कठिन है।

धार्मिक उन्नति

अठारहवी शताब्दी मे लोगो के धार्मिक विचार बिलकुल बदल गए। उनमे धार्मिक बातो के लिये वह जोश नही रहा, जो पहले था। यद्यपि भिन्न-भिन्न प्रभावशाली मनुष्यों ने जनता मे धार्मिक विचारों के लिये जोश पैदा करना चाहा; पर वे सफल-प्रयत्न न हो सके। इन विचारो का प्रभाव समाज पर अवश्य ही पड़ना चाहिए था। जॉन हावर्ड (John Howard)

ने कैदियो की दशा सुधारने का यत्न किया। टॉमस क्लार्कसन, (Thomas Clarkson) विलियम विल्बरफोर्स (William Wilberforce) तथा कुछ अन्य मनुष्यो ने, १७८७ मे, एक सभा स्थापित की और नियम-पूर्वक दास-व्यापार का विरोध करना शुरू किया। पिट पर इस सभा का बहुत ही अधिक प्रभाव पडा और वह भी दास-व्यापार के विरुद्ध हो गया। १८०७ मे पार्लिमेंट ने दास-व्यवसाय के विरुद्ध एक कानून पास किया और उसे बद करना अपना कर्तव्य समझा। इसी समय राज्य ने फैक्टरी-नियमो (Factory Laws) के द्वारा श्रमिको के कष्ट दूर करने का प्रयत्न किया और उनकी हालत बहुत कुछ सुधारी।

सामाजिक उन्नति

अठारहवी शताब्दी तक अँगरेजो की सामाजिक दशा बहुत उन्नत नही कही जा सकती। जुए तथा शराब का घर-घर प्रचार था। जॉर्ज तृतीय के भोग-विलास ने जनता की सामाजिक उन्नति बिलकुल ही रोक दी थी। यह सब होने पर भी लोगो मे पारस्परिक भेद दिन-दिन कम होता गया। ग्रामीणो ने नागरिको की बहुत-सी अच्छी बाते सीख लीं। व्यापारी लोगो तथा ग्रमीणो मे पूर्ववत् भेद नही रह गया। जनता की प्रवृत्ति आडबर की ओर बढ़ रही थी।

चटक-मटक और भड़कीली चीज़ो की ओर लोग अधिक झुक रहे थे। यह होने पर भी रूसो के विचारों का प्रभाव मध्यम-श्रेणी के लोगो पर इतना अधिक पडा कि उन्होने अधिक मूल्यवाले भड़कीले कपड़ो की जगह साधारण कपड़े पहनना शुरू कर दिया। किंतु उच्च श्रेणी के धनाढ्यो पर इन विचारो का असर नही हुआ, वे पहले की ही तरह कीमती कपड़े पहनते थे। पतलून और फुलबूट का प्रचार आम तौर से था। तलवार बॉधने तथा लबे ॲगरखे पहनने का फैशन नहीं रह गया था। जॉर्ज तृतीय ने बेमथ (Beymouth)-नामक स्थान को सर्वप्रिय बना दिया और उसके बड़े लड़के ने ब्राइटन (Bııghton)-नामक गॉव को एक बड़े शहर का रूप दे डाला। इन्हीं दिनो घरो के भीतर भी अच्छी उन्नति हुई। साहित्य भी इस उन्नति के साथ-साथ उन्नत हो गया। ॲगरेजी-भाषा मे मधुरता तथा सरलता ने प्रवेश किया। ऑलिवर गोल्डस्मिथ (Olıver Goldsmıth) तथा रिचर्ड ब्रिस्ले शैरिडन (Rechaıd Bıınsley Sheııden) आदि लेखको ने पुरानी लेखन-शैली मे बहुत ही अधिक उन्नति की। डेविड गैरिक (Davıd Garııc) (११७६-१७७९) ने नाटकों के खेलने मे कई सुधार किए। स्टील (Steele) तथा एडिसन (Addıson) ने ॲगरेज़ी गद्य को बहुत अधिक उन्नत किया। डॉक्टर सैमुएल जॉनसन

(Dr Samuel Johnson)ने अपनी अनुपम लेखन-शैली के कारण अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त की। बडे-बडे लेखको ने अखबारो मे राजनीति-सबधी लेख लिखने शुरू किए। जोनाथन स्विफ्ट (Jonathan Swift) तथा एडिसन ने यूट्रैक्ट की सधि के विषय मे एक दूसरे के विरुद्ध बहुत ही उत्तम लेख लिखे। इसी समय की रचना स्विफ्ट का गैलिवर्स ट्रैवल्स (Gulliver's Travels)-नामक ग्रथ (१७२६) अति प्रसिद्ध है।

अठारहवी शताब्दी के मध्य-भाग मे अँगरेजी-साहित्य ने और भी अधिक उन्नति की। उसकी सरलता एव मधुरता और भी अधिक बढ़ गई। लेखको ने प्राकृतिक तथा ग्राम्य सौंदर्य का वर्णन करना शुरू किया और लोगो के हृदयो से नागरिक जीवन की श्रद्धा हटा दी। टॉमसन (Thompson), विलियम वर्ड्सवर्थ (William Wordsworth), सर वाल्टर स्कॉट (Sir Walter Scott), विलियम काउपर (William Cowper), बाइरन (Byron), शैली (Shelley), कीट्स (Keats) तथा राबर्ट बर्न्स (Robert Burns) आदि इस युग के प्रसिद्ध कवि तथा लेखक माने जाते है।

द्वितीय अध्याय

आधुनिक इंगलैंड का निर्माण

प्रथम परिच्छेद

जॉर्ज चतुर्थ (१८२०-१८३०)

जॉर्ज चतुर्थ का सिंहासनारोहण

जॉर्ज तृतीय की मृत्यु से इंगलैंड मे कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। राजकुमार (Prince of Wales) ही जॉर्ज चतुर्थ के नाम से सिंहासन पर बैठा। वह स्वार्थी, भोगी, विलासी तथा अतिशय तुच्छ-प्रकृति का मनुष्य था। राजगद्दी पर बैठने के बाद उसने सर्व-प्रिय बनने का यत्न किया और इसी उद्देश से उसने स्कॉटलैंड, आयर्लैंड तथा हनोवर-प्रदेश मे दौरा किया। साधारण लोगो ने उसका बहुत ही अच्छी तरह से स्वागत किया, पर विचारशील राजनीतिज्ञो को आँखों में यह बात खटक गई। कुछ ही समय के बाद जॉर्ज चतुर्थ का स्वास्थ्य कुछ-कुछ खराब होने लगा। स्वास्थ्य खराब होते ही वह कुछ इष्ट-मित्रो को लेकर विंडसर (Windsor) तथा ब्राइटन-नामक स्थान मे चला गया और एकांतवास करनेलगा।

१७९५ मे जॉर्ज ने ब्रजविक (Brunswick) की स्वा-

मिनी कैरोलाइन (Caroline) से शादी कर ली। परंतु दोनों की आपस में अनबन हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि दोनों अलग-अलग रहने लगे। इन दोनों का एक-मात्र पुत्र १८१७ में मृत्यु को प्राप्त हुआ। तब क्लेरैंस के ड्यूक विलि-यम (William Duke of Clarence) को राज्य का उत्तरा-धिकारी नियत किया गया। जॉर्ज के सिंहासनारोहण के कुछ समय उपरांत कैरोलाइन इँगलैंड आई और अपने को वहाँ की रानी बनाने का प्रयत्न करने लगी। इस पर जॉर्ज ने उसे

जार्ज चतुर्थ

तलाक (Divorce) देना चाहा। यह झगड़ा पार्लिमेंट मे पेश हुआ। लोग जॉर्ज के चलन-व्यवहार से बहुत ही असंतुष्ट थे। अतः उनको कैरोलाइन की बेइज्जती पसद न आई। कैरोलाइन जनता की दृष्टि मे सर्व-प्रिय हो गई। मगर राजा के मंत्रियो ने किसी-न-किसी तरीके से, लॉर्ड-सभा से, तलाक की मजूरी ले ही ली। परतु लोक-सभा के सामने यह प्रस्ताव रखने का साहस उसको न हुआ। अगले वर्ष कैरोलाइन मर गई। इसका परिणाम यह हुआ कि लोग राजा से बहुत ही अधिक असतुष्ट हो गए।

इगलैंड की राजनीतिक स्थिति

पहले ही की तरह शासन मे टोरी-मन्त्रियो की प्रधानता बनी रही। जॉर्ज के गद्दी पर बैठने के कुछ ही समय बाद आर्थर थिसिल उड (Thistle Wood) ने सारे सचिव-मडल को मार डालने के लिये एक षड्यत्र रचा। यह षड्यत्र ब्रिटिश-इतिहास मे 'केटो-मार्ग-षड्यंत्र' (Cato Street Conspiracy) के नाम से प्रसिद्ध है। थिसिल उड के एक साथी ने इसकी खबर मन्त्रि-मडल को दे दी। सब कुचक्री (Conspirators) पकड़े गए। षड्यन्त्र रचनेवाले लोगो को यह अच्छी तरह से मालूम हो गया कि टोरी सचिव-मडल जनता मे कितना अप्रिय है। मन्त्रि-मडल के बीच आपस मे भी मेल

न था। लिवरपूल ने सबको सगठित करने का बहुत ही यत्न किया, परन्तु वह सफल न हो सका । कैरोलाइन के तलाक के प्रश्न पर जॉर्ज कैनिग ने सचिव-मडल का साथ नही दिया । इसी मौके पर टोरी-सचिव-मडल के स्तभ-स्वरूप लॉर्ड लंदनडरी ने, १८२२ मे, आत्महत्या कर ली। इससे टोरी-मडल बिलकुल शक्तिहीन हो गया। इँगलैड के इतिहास मे लॉर्ड लंदनडरी लॉर्ड कैसलरं (Lord Castlereagh) के नाम मे विख्यात है। यह फ्रांसीसी क्राति के विरुद्ध था और उसके प्रभाव को इँगलैड मे न आने देना चाहता था। इसी डर से यह अँगरेज़ी-कानून मे किसी प्रकार का भी सशोधन न करना चाहता था। परतु कैनिग को यह पसद न था। वह कैथलिको को स्वतत्रता देना चाहता था। वह उनके ऊपर से सब कठोर नियमो का बधन हटाना चाहता था। फिर भी वह ह्विग-दल के विरुद्ध था, क्योकि ह्विग-दल के लोग पार्लिमेट का ही सशोधन करना चाहते थे। ह्विग-दल के लोग शक्तिहीन थे। उनका नेता अर्ल ग्रे था, जो जनता मे पूर्ण रूप से अप्रिय था। पार्लिमेट मे दो व्यक्ति ऐसे थे, जो शक्तिशाली और ह्विग लोगो से सहमत थे। उनमे से एक का नाम हेनरी ब्रूहम और दूसरे का लॉर्ड जॉन रसेल (Lord John Russel) था । इँगलैड

के अगले इतिहास मे इन दोनो व्यक्तियों का यथेष्ट भाग है ।

लंदनडरो की मृत्यु के अनतर लिवरपूल ने कैनिग तथा उसके मित्रो को अपने सचिव-मडल मे ले लिया । कैनिग पर राष्ट्र-सचिव के पद पर नियुक्त हुआ और पार्लिमेंट मे नेता का काम करने लगा । हस्किसन (Huskisson) व्यापारिक समिति का प्रधान और मार्किस वैलेस्ली आयर्लैंड का लॉर्ड लेफ्टिनेंट नियत हुआ । इसी समय रॉबर्ट पील गृह-सचिव (Home Secretary) के पद पर नियुक्त किया गया । इन सुयोग्य व्यक्तियो के सचिव-मडल मे आ जाने से ही, १८२२ से १८२७ तक, इँगलैंड मे नए-नए सुधार हुए । ऐसा मालूम पड़ता था कि इँगलैंड मे पिट का जमाना फिर आ गया ।

कैनिग ने परराष्ट्र-नीति मे अपूर्व सफलता प्राप्त की । १८१५ के अनतर योरप के कुछ शक्तिशाली सम्राटो तथा राजा ने अपने को पवित्र राजसघ (Holy Alliance) के रूप मे सगठित किया और फ्रांसीसी क्रांति को अन्य देशों मे फैलने से रोका । इन सम्राटो तथा राजो मे रूस, आस्ट्रिया और प्रशिया के शासक ही मुख्य थे । परतु योरप की जनता को पवित्र राजसघ की नीति बिलकुल पसद न थी । यही कारण है कि इसके विरुद्ध लोगो ने स्थान-स्थान पर

सिर उठाना शुरू कर दिया। स्पेन, पुर्तगाल तथा नेपिल्स मे लोग विद्रोही हो गए और उन्होंने प्रतिनिधि-तन्त्र राज्य की घोषणा कर दी। दक्षिणी अमेरिका के स्पेनिश तथा पोर्चुगीज-उपनिवेश भी बिगड खडे हुए और उन्होंने मातृभूमि के कठोर नियमो के बधनो से अपने को छुड़ाने का प्रयत्न किया। यूनान ने तुर्कों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

पवित्र राजसघ के सदस्यो को जनता का सिर उठाना पसद न था। अत. उन्होंने नेपिल्स मे आस्ट्रिया की और स्पेन मे फ्रास की सेना को जनता के दबाने के लिये भेजा। इॅगलैड पवित्र राजसघ के विरुद्ध था। उसको योरप के सम्राटो का मेल तथा उनकी स्वेच्छाचारिता पसद न थी। उसके विचार मे नेपिल्स आदि राष्ट्रो की स्वतन्त्रता नष्ट कर देना अनुचित था। कैनिग ने पवित्र राजसघ के प्रति अपना विरोध प्रकट किया। अमेरिका ने इॅगलैड का साथ दिया। इसका फल यह हुआ कि स्पेन ने पुर्तगाल मे हस्तक्षेप करना छोड़ दिया। इससे इॅगलैड का दबदबा योरप मे और भी अधिक बढ़ गया।

यूनानी लोगो के साथ केनिग की बहुत ही अधिक सहानुभूति थी। यूनानी लोग तुर्कों से लडकर अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहते थे। बहुत-से अॅगरेजो ने यूनानियो का

साथ दिया और तुर्कों के विरुद्ध लडते-लडते मर गए। आश्चर्य तो यह है कि प्रसिद्ध कवि लॉर्ड बाइरन भी तुर्कों से लड़ा। १८२४ मे बुख़ार से उसकी मृत्यु हो गई।

रूस के लोग भी यूनान के पक्ष मे थे और वे तुर्कों की बढ़ती हुई शक्ति को कुचल देना चाहते थे। चाहे जो हो, अँगरेज़ों को रूस की ईमानदारी मे सदेह था। उनका विश्वास था कि रूस तुर्कों के साम्राज्य को नष्ट करके अपनी शक्ति बढ़ाना चाहता है। इसी कारण अँगरेज़ लोग रूस के बहुत ही विरुद्ध थे। परतु कैनिग ने अँगरेज़ी-जनता की इच्छाओ तथा विचारों का कुछ भी ख़याल नही किया। वह रूस से मिल गया। उसने १८२७ मे निकोलस प्रथम (Necholas I) के साथ संधि कर ली। इस सधि के द्वारा रूस, इँगलैंड तथा फ़ास ने तुर्कों तथा यूनानियो के बीच मे पडने का इरादा किया और शीघ्र ही उनके झगड़े को निपटा देने की ठान ली। १८२७ मे नैवोरिनो (Navorino)-नामक स्थान पर तुर्कों की अँगरेज़ों से मुठभेड हो गई। तुर्क भला अँगरेज़ो से क्या जीत पाते। फल यह हुआ कि अँगरेज़ों ने यूनान की स्वतत्रता की रक्षा करके योरप मे प्रसिद्धि प्राप्त कर ली।

रॉबर्ट पील विचित्र प्रकृति का मनुष्य था। १८१९ मे बैंक ऑफ़ इँगलैंड के विषय में उसने जो कानून पास किया था,

उससे उसकी प्रसिद्धि बहुत अधिक हो गई थी। अब उसने इँगलैंड के फौजदारी कानून की कठोरता को दूर करने का यत्न किया और उसमे सशोधन करना चाहा। लगभग २०० अपराध ऐसे थे, जिनमे फाँसी के सिवा और कोई दड न था। फौजदारी नियमो की कठोरता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि वेस्ट-मिस्टर के पुल मे यदि कोई गलती से कुछ गडबड़ कर बैठता था, तो उसको फाँसी दे दी जाती थी। अतः बहुधा जूरी लोग अपराधी को मृत्यु-दड के भय से निर-पराध कहकर छोड़ देते थे। पील ने इन कठोर नियमो को हटाने का यत्न किया और वह पूर्ण रूप से इसमे कृतकार्य हुआ। सौ से अधिक अपराधो से मृत्यु-दड हटाकर अन्य दड नियत किए गए। जो सबसे बडी बात पील ने इँगलैंड के इतिहास मे की, वह यह थी कि शासन-कार्य मे ईमानदारी को बढ़ाया। उसने स्वय शासन किया और सब तरह की बेईमानियो से अपने को अलग रक्खा। इससे राज्य पर लोगो का विश्वास बढ़ गया।

व्यापारी-समिति के प्रधान हस्किसन को एक-मात्र आय-व्यय तथा आर्थिक विषयो (Economic Subjects) मे ही दिलचस्पी थी। उसने कई सामग्रियो पर से राज्य-कर उठा दिया। श्रम-समितियो (Labour Union) के

बनाने में जो कानूनी बाधाएँ थीं, उनको भी उसने हटा दिया। नाविक-नियमों (Navigation Acts) को भी उसने बदला। कारण, चार्ल्स द्वितीय के समय से इँगलैंड का यह एक मुख्य नियम था कि इँगलैंड मे सामान का आना-जाना अँगरेजी जहाजो के ही द्वारा हो। नौ-शक्ति बनने के लिये पहले सभी देशों को इस नियम का सहारा लेना पड़ता है। इँगलैंड भी इसी नियम और शक्ति के सहारे नौ-शक्ति (Naval Power) बना। अब इस नियम की इँगलैंड को उतनी जरूरत नहीं थी। अतः हस्किसन ने इस नियम मे भी परिवर्तन किया। इसका मुख्य कारण एक यह भी था कि प्रशिया तथा अमेरिका, ये दोनो राष्ट्र इँगलैंड के जहाजो को अपने समुद्र मे न आने देते थे, क्योकि इँगलैंड उनके जहाजो को अपने देश मे न घुसने देता था। इस कठिनता को दूर करने के लिये हस्किसन ने योरप के भिन्न-भिन्न देशो से व्यापारिक संधियाँ करना शुरू कर दिया और कुछ व्यापारिक सुविधाएँ दूसरों से लेकर, उनके बदले मे, कुछ व्यापारिक सुविधाएँ उनको भी दे दी। अँगरेजी मे इस नीति को 'रेसिप्रॉसिटी' (Reciprocity)-नीति कहते है।

१८२७ मे लॉर्ड लिवरपूल बीमार पड़ गया, अतएव मुख्य मंत्री के पद पर काम करने में सर्वथा असमर्थ हो

गया। राजा ने कैनिंग को मुख्य मंत्री (Premier or Prime Minister) के पद पर नियत किया। वैलिंगटन, पील तथा पुराने टोरी लोग कैनिंग से असंतुष्ट थे, अतः उन्होंने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया। कैनिंग ने इन लोगों की कुछ भी परवा न की। वह बहुत ही अच्छे ढंग से इँगलैंड का शासन करने लगा। वह अपने समय का अद्वितीय राजनीतिज्ञ था। उसमें जो कुछ कमी थी, वह यही कि उसमें गंभीरता न थी। किंतु छः महीने के बाद ही उसकी मृत्यु हो गई, जिससे, इसमें शक नहीं, इँगलैंड की बहुत बड़ी हानि हुई।

कैनिंग के बाद लॉर्ड गोडिच (Lord Goderich) मुख्य मंत्री बना। यह अत्यंत दुर्बल तथा अशक्त था। जब नैवेरिनो के युद्ध का समाचार इँगलैंड में पहुँचा, तो वह बिलकुल घबरा गया। उसको यह न सूझा कि अब क्या किया जाय। वह मंत्रियों को ठीक ढंग पर न चला सका। जब मंत्रियों में आपस में ही वैमनस्य बढ़ने और झगड़ा होने लगा, तो उसने जनवरी, १८२८ में अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इससे राज्य-शासन में पुराने टोरियों की शक्ति बढ़ गई। वेलिंगटन का ड्यूक प्रधान मंत्री बना। पील पार्लिमेंट का नेता बन बैठा। गृह-सचिव (Home Secretary) के पद पर भी वह ज्यों-का-त्यों बना रहा। कैनिंग के मित्रों ने वेलिंग-

टन का साथ दिया, परंतु उससे विचार न मिलने के कारण कुछ ही समय के उपरांत, इन्होंने अपने-अपने पद छोड़ दिए।

इँगलैंड मे धार्मिक सशोधन (Church Reform)

पुराने विचार के टोरियो (High Tories को छोड़कर सभी राजनीतिज्ञ कैथलिक लोगो के ऊपर से कठोर नियमो का बंधन हटाना चाहते थे। बहुत-से धार्मिक स्वतंत्रता-सबधी प्रस्ताव पार्लिमेंट के द्वारा पास किए गए, परंतु लॉर्ड-सभा ने उनको मंजूर न किया। १८२३ मे आयर्लैंड के भीतर एक प्रबल आंदोलन की लहर उठ खड़ी हुई। इसका नेता डैनियल ओ'कॉनल (Daniel O' connel) था। वह श्रेष्ठ और अपूर्व व्याख्यान देने की शक्ति रखता था और प्रजा-प्रिय भी था। उसने कैथलिकों की एक समिति बनाई। इस सभा ने शीघ्र ही अच्छी शक्ति प्राप्त कर ली। इसने सारे अत्याचारो तथा कठोर नियमों का नियम-पूर्वक विरोध करना शुरू किया। पार्लिमेंट इस सभा की शक्ति से डर गई, अतएव उसने १८२५ में इस सभा को तोड़ दिया। इस सभा को तोड़ते ही, इसके स्थान पर, एक नई सभा बन गई और कार्य फिर उसी तरह चलने लगा।

ओ'कॉनल के कहने तथा समझाने से आयरिश वोटरों ने अपने पक्षवालों के लिये वोट देना शुरू किया। १८२८ में

लोगो ने ओ'कानल को प्रतिनिधि चुना, परतु वह कैथलिक होने के कारण पार्लिमेट मे न जा सका। इसका परिणाम यह हुआ कि आयर्लैंड मे कैथलिको तथा प्रोटेस्टेटो का झगडा चरम सीमा तक पहुँच गया। पार्लिमेट को यह डर हो गया कि कही आयर्लैंड मे गृह-युद्ध (Civil war) न छिड़ जाय।

कैनिग के साथियो के राजकीय पद छोडने के बाद मंत्रि-मंडल मे वही टोरी लोग रह गए थे, जो कैथलिको को स्वतंत्रता नही देना चाहते थे। मन्त्रि-मडल मे केवल वेलिगटन तथा पील, ये दो व्यक्ति ऐसे थे, जो कैथलिको से सहानुभूति रखते थे। आयर्लैंड की घटनाओ से ये लोग सावधान हो गए। १८२९ मे वेलिगटन तथा पील ने एक प्रस्ताव पेश किया, जिसके अनुसार कैथलिक भी पार्लिमेट के सभ्य हो सकते थे। बड़ी-बड़ी कठिनाइयो का सामना करने के बाद यह प्रस्ताव पास हुआ। ओ'कानल भी अब पार्लिमेट मे बैठ सकता था, बशर्ते कि लोग उसको फिर प्रतिनिधि चुन ले। अस्तु, उसने अपने एक उद्देश मे सफलता प्राप्त की और इस सफलता से उत्तेजित होकर सम्मेलन (Union) को हटाने के लिये प्रयत्न शुरू कर दिया।

वेलिगटन ने विदेशी नीति मे परिवर्तन किया। योरप के

झगड़ो मे न पड़ना ही उसने उचित समझा। इस उदासीनता का परिणाम यह हुआ कि रूस ने टर्की तथा ग्रीस का बहुत-सा भाग दबा लिया। वेलिंगटन तथा पील ने घरेलू शासन मे सुधार किए। १८२६ मे पील ने पुलीस-विभाग का नए सिरे से सगठन किया और उसमे शिक्षित लोगों को ही भरती किया। पील तथा वेलिगटन की इंगलैड मे प्रधानत होने के जमाने मे ही जून (१८३०) में जॉर्ज चतुर्थ मर गया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८२०	जॉर्ज चतुर्थ का सिंहासनारोहण
१८२२	कैनिग का राज्य-पद पर आना
१८२७	नैवोरिनो का युद्ध और कैनिग की मृत्यु
१८२६	कैथलिको को राजनीतिक स्वतंत्रता मिलना
१८३०	जॉर्ज चतुर्थ की मृत्यु

द्वितीय परिच्छेद

विलियम चतुर्थ (१८३०-१८३७)

विलियम का सिंहासनारोहण

उन्नीसवीं शताब्दी में, योरप के अंदर, सभी जातियों में प्रजा-तन्त्र राज्य (Representative Govt) तथा जातीयता के भाव (Nationalism) उत्पन्न हो गए। फ्रांसीसी क्रांति ने प्रजा-तन्त्र को जन्म दिया और नेपोलियन के सार्वभौमिक एकसत्तात्मक विचारों ने जातीयता के भावों को प्रकट किया। पवित्र राजसंघ के सम्राटों से यह कब सहा जा सकता था। उन्होंने इन दोनों ही विचारों को शांति, नियम तथा धर्म के विरुद्ध ठहराया। परंतु इन सम्राटों से इँगलैंड की कुछ भी सहानुभूति न थी, यद्यपि समय-समय पर भिन्न-भिन्न स्वार्थों से प्रभावित होकर उसने इनका साथ अवश्य दिया। कैनिंग ने जातीयता के भावों को उत्तम बतलाया और पील तथा वेलिंगटन ने प्रजा-तंत्र राज्य को ही सबसे उत्तम राज्य कहकर अपनी राय जाहिर की। जॉर्ज चतुर्थ के राज्य-काल में इँगलैंड ने बहुत ही अधिक उन्नति की। उसने कैथलिकों को स्वतन्त्रता दी और

यिक क्रांति के कारण इँगलैंड के बहुत-से गांव बड़े-बड़े कस्बे तथा नगर बन गए थे। उधर बहुत-से पुराने कस्बे तथा नगर खँडहरो के ढेर ही हो रहे थे। हरएक जिला (County) अपने दो-दो प्रतिनिधि पार्लिमेंट मे भेज सकता था। किंतु आश्चर्य तो यह है कि लंकाशायर तथा यार्कशायर-जैसे समृद्ध जिलों को एक भी प्रतिनिधि भेजने का अधिकार न था। मंचेस्टर, शेफील्ड, लीड्स तथा बर्मिंघेम-जैसे बड़े नगरो का भी कोई प्रतिनिधि पार्लिमेंट मे नही पहुँचता था। लंदन का समृद्ध भाग तक अपना एक भी प्रतिनिधि पार्लिमेंट मे नही भेज सकता था! इसका कारण यह था कि जिस समय मिलो तथा नगरो को अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला था, उस समय इन स्थानो की जन-संख्या बहुत ही थोड़ी थी। यह जन-संख्या पीछे-पीछे कल-कारखानों के खुलने से, समृद्धि बढ़ने के कारण, बहुत बढ़ गई; पर बहुत समय तक अधिकार-शून्य रही। किंतु दूसरी ओर ऐसे भी बहुत-से नगर थे, जिनमें अब खँडहर ही देख पड़ते थे। मनुष्य बहुत थोड़े रह गए थे, पर उन्हें दो-दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्राप्त था। स्कॉटलैंड की भी यही दशा थी। इसका परिणाम यह होता था कि पार्लिमेंट मे ज़मीदारों की ही तूती बोलती थी। उजाड़-वीरान नगरों पर जिन ज़मीदारों का प्रभुत्व था, वही अपनी ओर से पार्लिमेंट में प्रतिनिधि भेज देते थे।

इससे पूँजीपति, व्यापारी तथा साधारण लोग बहुत ही असंतुष्ट थे।

जॉर्ज चतुर्थ के समय मे ह्विग-दल के लोगो ने प्रतिनिधि-निर्वाचन (Election) के नियमो मे संशोधन करने का यत्न किया। दो छोटे-छोटे बरो से प्रतिनिधि-निर्वाचन का अधिकार छीन लिया गया; परन्तु यह अधिकार टोरी लोगों ने लीड्स तथा बर्मिंघेम-शहर को न देने दिया। इस पर बर्मिंघेम के नागरिकों ने चिल्लाना शुरू किया। इस शोर का ही यह फल था कि अर्ल ग्रे महामंत्री के पद पर नियुक्त हुआ।

मार्च, १८३१ मे लार्ड जॉन रसेल ने लोक-सभा मे रिफार्म-बिल (Reform Bill) पेश किया। कामंस-सभा मे दो बार पास किए जाने पर भी, तीसरी बार लार्ड-सभा मे यह न पास हो सका। इस पर उसने पार्लिमेंट का निर्वाचन फिर से करवाया, इस बार पार्लिमेंट मे उसके पक्ष के बहुत-से लोग आ गए और बिना किसी कठिनाई के रिफार्म-बिल पास हो गया। ऑक्टोबर, १८३१ मे लार्ड-सभा ने किसी एक दूसरे बिल को न पास किया। इस पर इँगलैंड मे हलचल मच गई। लोगों ने विद्रोह शुरू कर दिया। इससे लॉर्ड लोग डर गए। उन्होंने मे, १८३२ मे वही बिल पास कर दिया। पर उसके साथ ही

यह शर्त भी लगा दी कि जिन जिलों से प्रतिनिधि-निर्वाचन का अधिकार छीन लिया गया है, उनके बारे में फिर विचार किया जाय। यह शर्त ग्रे को मंजूर न थी। अतः उसने विलियम चतुर्थ को यह सलाह दी कि कुछ नए लॉर्ड बना दिए जायँ। वे लॉर्ड-सभा के सभ्य हो जायँगे। ये नए लॉर्ड हमारे पक्ष में मत देकर पुराने लॉर्डों को हरा देंगे, जिससे बिल बिना किसी शर्त के पास किया जा सकेगा। राजा ने यह सलाह न मानी। ग्रे ने इस्तीफा दे दिया। वेलिंगटन ने नया मंत्रि-मंडल बनाना चाहा, परंतु वह सफल न हो सका। फल यह हुआ कि ग्रे का सचिव-तंत्र राज्य पूर्ववत् बना रहा, और रिफार्म-बिल पूर्ण रूप से पास हो गया।

१८३२ के रिफार्म-ऐक्ट द्वारा जिन बरो की आबादी २,००० से कम थी, उनसे प्रतिनिधि-निर्वाचन का अधिकार छीन लिया गया। जिनकी आबादी २,००० से ४,००० तक थी, उनको एक प्रतिनिधि और इससे अधिक आबादीवालों को दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया गया।

मंचेस्टर, बर्मिंघम, शेफील्ड, लीड्स, नया लंदन और बरो इत्यादि स्थानों को दो-दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला। इतना ही नहीं, ग्रामीणों के वोट देने की शर्तें भी नर्म कर दी गईं। टोरी लोगों को ये संशोधन पसंद न थे। उनकी राय में इन

संशोधनों से अँगरेजों की प्राचीन शासन-पद्धति बिलकुल बदल गई-सी मालूम होती थी। यह सच भी था, क्योंकि इस एक बिल में ही लॉर्डों तथा ताल्लुकदारों की शक्ति एवं अधिकार बहुत संकुचित हो गए थे। पश्चात्तर में व्यापारियों, व्यवसायियों, तथा सर्व-साधारण की शक्ति, शासन में, बहुत अधिक बढ़ गई।

१८३३ में संशोधित पार्लिमेंट का प्रथम अधिवेशन हुआ। उसमें टोरियों की संख्या बहुत कम थी। सब-के-सब आयरिश सदस्य ओ' कॉनल के पक्षपाती थे। इसी समय आयर्लैंड के किसानों ने प्रोटस्टेंट-चर्च को सहायता के तौर पर धन देना बंद कर दिया। इस पर पार्लिमेंट ने एक ऐक्ट बनाकर पार्लिमेंट को धन देना आवश्यक ठहराया और उस सहायता को एक तरह के लगान का रूप दे दिया। संशोधित पार्लिमेंट गुलामी के सख्त खिलाफ थी। अतः इसने, १८३३ में, 'इमैंसिपेशन ऐक्ट' (Emancipation Act) पास किया और ब्रिटिश-साम्राज्य में गुलामी का रखना नियम-विरुद्ध ठहराया। जिन लोगों के पास दास थे, उनको २,००,००,००० पाउंड हर्जाने के तौर पर दे देना मंजूर किया गया। इसी पार्लिमेंट ने, १८३४ में, 'न्यू पुअर-लॉ' (New Poor Law) कानून पास किया और गरीबों को सहायता के लिये मुना-

सिव ढग पर प्रबध कर दिया। १८३५ मे म्युनिसिपल कार्पोरेशस रिफार्म-ऐक्ट (Municipal Corporations Reform Act) पास किया गया। इस ऐक्ट से नगरो की म्युनिस्पैलिटी के प्रतिनिधि-निर्वाचन का सुधार किया गया।

पामर्स्टन परराष्ट्र-सचिव (Foreign Secretary) था। इसने स्वतत्रता तथा जातीयता का पक्ष लिया। योरपियन राष्ट्रों को सहायता पहुँचाने में इसने इसी लक्ष्य को सामने रक्खा। इसने लुईस फिलिप का समर्थन न करके बेलजियम को स्वतत्र करा दिया। पुर्तगाल मे, वहाँ की शासन-प्रद्धति के अनुसार, एक स्त्री को गद्दी पर बिठाया। स्पेन मे भी इसने रानी इजेबेला (Isabella) को ही सहायता पहुँचाई, क्योकि वही वहाँ की यथार्थ राज्याधिकारिणी थी।

ह्विग लोगों ने राज्य मे सुधार तो किया, पर प्रबध में सफल न हो सके। अर्ल ग्रे ने कुछ ही समय के बाद इस्तीफा दे दिया, क्योकि ह्विग लोगो के बीच आपस मे ही झगड़ा चल रहा था। १८३४ मे राजा ने लॉर्ड मेलबोर्न को महामत्री बनाया। यह भी ह्विग-दल का था। इसने सब मत्रियों को अपने साथ मिलाए रक्खा। यह बहुत ही विद्वान्, चतुर तथा उदार विचारोंवाला था। इसमें जो कुछ कमी थी, वह यही कि दृढ़ता तथा गंभीरता का अभाव था।

ह्विग लोगो की शक्ति क्षीण होते ही टोरियों ने अपनी शक्ति बढाना शुरू किया। सर रावर्ट पील बहुत ही योग्य व्यक्ति था। वह कभी की उन्नति कर चुका होता, यदि उसमे लज्जा और जोश की कमी न होती। वह ईमानदार, विचारशील तथा देश का परम भक्त था। बुद्धिमान्, विचारशील अँगरेजों को उस पर बहुत ही अधिक विश्वास था। पील ने मध्यम-श्रेणी के लोगो से मेल-जोल बढाना शुरू किया। उसका यह विश्वास था कि ये लोग अब बहुत परिवर्तनों को पसंद नहीं करते। इन सब बातों का खयाल करके, उसने अपने शासन मे आय-व्यय-संबधी विचारों को लोगों के सामने उपस्थित किया। उसने अपने को टोरी न कहकर 'कंजरवेटिव' कहना शुरू किया। वह शीघ्र ही सर्वप्रिय बन गया। विलियम चतुर्थ भी ह्विग लोगों से परेशान हो चुका था। नवबर, १८३४ मे उसने मेलबोर्न को पदच्युत कर दिया और पील को नवीन मंत्रि-मंडल बनाने की आज्ञा दे दी। पील ने बड़े साहस के साथ राजा की आज्ञा शिरोधार्य की। पार्लिमेंट में उसके पक्ष के लोग बहुत ही थोडे थे, अतः उसने नए सिरे से पार्लिमेंट का चुनाव कराया। पार्लिमेंट मे वे पुराने टोरी, जो अब कंजरवेटिव (Conservative) कहलाते थे, इतने अधिक न थे कि वह उनके समर्थन से अपना काम निर्विघ्न

चला सकता। अतएव पील ने, १८३५ मे, इस्तीफा दे दिया। मेलबोर्न फिर महामत्री बना और १८३७ तक राज्य का काम करता रहा। इसी साल विलियम चतुर्थ की मृत्यु हो गई।

सन	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८३०	विलियम चतुर्थ का सिहासनारोहण
१८३२	रिफार्म-ऐक्ट
१८३३	दासता का उच्छेद
१८३५	म्युनिसिपल कार्पोरेशस रिफार्म-ऐक्ट
१८३७	विलियम चतुर्थ की मृत्यु

तृतीय परिच्छेद

विक्टोरिया—पील तथा पामर्स्टन

(१८३७-१८६५)

विक्टोरिया का सिंहासनारोहण

विलियम चतुर्थ के कोई पुत्र न था, अत. उसकी भतीजी विक्टोरिया को, केवल १८ वर्ष की अवस्था मे. इँगलैंड का राज्य मिला। इस पर हनोवर-प्रांत इँगलैंड के हाथ से निकल गया, क्योंकि योरप के एक कानून (Salic Law) के अनुसार हनोवर का शासन किसी स्त्री को नही दिया जा सकता था। जॉर्ज तृतीय का पुत्र, कबर्लैंड का ड्यूक, अर्नेस्ट (Earnest, Duke of Cumberland) हनोवर का शासक बना। १८६६ मे यह प्रात प्रशिया के साथ मिलकर जर्मन साम्राज्य का एक भाग हो गया।

विक्टोरिया की शिक्षा का प्रबध उसकी माता के ही हाथ मे था। माता ने उसको बहुत ही गुणवती, विदुषी, शांत-प्रकृति तथा साहसी लडकी बनाने का यत्न किया था। राज्य-भार ग्रहण करने के समय विक्टोरिया की आयु १८ वर्ष की थी। अतः उसने शासन-भार लॉर्ड मेलबोर्न के ही हाथ

में रक्खा। १८४० में विक्टोरिया ने प्रिंस अल्बर्ट (Prince Albert) से विवाह कर लिया। अल्बर्ट बहुत ही दूरदर्शी, राजनीतिज्ञ तथा ईमानदार राजकुमार था। उसने रानी को किसी भी मंत्री के ऊपर विशेष रूप से निर्भर न होने दिया।

रानी विक्टोरिया अपने पति की सलाह लेकर राज-काज चलाती रही। अलबर्ट ने रानी को यह मंत्र दिया कि

महारानी विक्टोरिया

एकसत्तात्मक राज्य (Limited Monarchy) तभी सर्व-प्रिय हो सकता है, जब राजा उत्तम जीवन व्यतीत करे और दलो के झगडो से अपने को सर्वथा अलग रक्खे। उसने एकसत्तात्मक राज्य के लिये वही काम किया, जो वेलिंगटन ने लॉर्डों के लिये किया था। प्रिंस अल्बर्ट ने रानी को यह शिक्षा दी कि राजकीय अधिकारो के लिये लडना व्यर्थ है, क्योंकि जनता मे स्वतन्त्रता के भाव दिन-पर-दिन बढ़ते जा रहे है। अतः उचित यही है कि जनता के विचारो और कार्यों को रोकने के बजाय उनके वेग को बहुत न बढ़ने दिया जाय। इसी मे जाति तथा राजा का हित है। दलो की स्वेच्छाचारिता तथा झगड़ो को चरम सीमा तक न बढने देना ही राजा का काम है। इसी मे जाति की उन्नति का बीज है।

इस ऊपर-लिखी शिक्षा का बहुत ही अच्छा नतीजा हुआ। रानी का राज्य सर्वप्रिय हो गया। रिफार्म-बिलो के कारण सारी जनता ने राजकीय कार्यों मे भाग लेना शुरू किया। इस प्रकार इँगलैंड ने धीरे धीरे स्वतन्त्रता तथा लोकसत्तात्मक राज्य की पूर्णता के लिये आगे पग बढाना शुरू किया।

इंगलैंड की सामाजिक दशा

रानी के गद्दी पर बैठने के समय इँगलैंड की सामाजिक

दशा शोचनीय हो रही थी। आयर्लैंड इँगलैंड से अलग होना चाहता था। वह अपने गृह-शासन मे संपूर्ण रूप से स्वतंत्र होने का इच्छुक था। पर ह्विग-राज्य को यह पसंद न था। लेकिन "मरता क्या न करता" के अनुसार वह इसके लिये लाचार था, क्योकि इसके बिना ओ' कॉनल की बहुमूल्य सम्मतियाँ उसको न मिल सकती थी। आयर्लैंड के शासन मे बहुत-से सुधार किए गए। आयर्लैंड के लिये दरिद्र-संरक्षण का कानून (Poor Law) पास किया गया। उसके अनुसार दरिद्रो को धन की सहायता देना आवश्यक ठहराया गया। रिफार्म-बिल पास होने पर भी श्रमिको को कुछ भी संतोष न हुआ, क्योंकि उनकी दशा पहले ही की-सी बनी रही। कॉर्न लॉ के कारण अन्न का मूल्य अधिक था, पर उनका वेतन पहले के समान ही थोड़ा था। इन्हीं दिनों रावर्ट ओवेन (Robert Owen) के समष्टिवाद के आधार पर चार्टिस्ट आंदोलन (Chartist Movement) उठ खड़ा हुआ। इसका आरंभ १८३८ मे हुआ। फियर्गस ओ'कॉनार (Fear-gus O'Connor) नाम के एक आयरिश ने एक चार्टर तैयार किया, जिसमे पाँच बाते हासिल करना आवश्यक ठहराया—

(१) सबको वोट देने का अधिकार (Universal Suffrage) होना चाहिए।

(२) पर्चों या गोलियों के द्वारा वोट (Vote by ballot) दिए जायँ।

(३) प्रतिवर्ष पार्लिमेंट का अधिवेशन हो।

(४) पार्लिमेंट का मेंबर बनने के लिये जायदाद तथा संपत्ति की बाधा हटा दी जाय।

(५) मेंबरों को वेतन मिला करे।

१८३९ में चार्टिस्ट दल के लोगों ने अपने को शारीरिक शक्ति-दल (Physical Force Party) के नाम से प्रसिद्ध किया। उन्होंने कवायद शुरू की, सैनिक कार्यों को जारी कर दिया और विद्रोह करने के लिये एक दल भी बना लिया। मन्मथशायर (Monmouthshire) में न्यूपार्ट (New Port)-नामक स्थान पर इनका दल था। पार्लिमेंट ने इस जत्थे को नष्ट कर दिया। फिर भी बहुत दिनों तक राज्य को इनका डर बना ही रहा। वह ऐसा नाज़ुक समय था कि जॉर्जों के दुश्शासन और दुश्चरित्रों से अँगरेज़-जाति में बहुतेरे राज-सत्ता को ही उठाकर फ्रांस और अमेरिका के समान लोक-सत्तात्मक शासन (Republic) स्थापित करना चाहते थे। उन दिनों राजवंश बहुत बदनाम हो रहा था। पर रानी विक्टोरिया के उज्ज्वल चरित्र और सुशासन से, थोड़े ही काल में, प्रजा मुग्ध हो गई और उसके लंबे शासन-काल में राज-सत्ता की जड़ बहुत गहरी

पैठ गई। आजकल की उथल-पुथल मे जब अनेक देश अपने-अपने राज्यवशों का नाश कर स्वतत्र राष्ट्र बन बैठे है, अँगरेज-जाति की राज-भक्ति एक विचित्र बात समझी जाती है। यह रानी की तथा उनके उत्तराधिकारियो की परम बुद्धिमानी का फल है।

घर की तरह ही बाहर भी बहुत-सी गड़बड थी। अफ़गानिस्तान के अमीर के साथ भारत का युद्ध छिडा था। कनाडा मे अँगरेज और फ्रांसीसी-उपनिवेशों का आपस मे झगडा ठना हुआ था। इन झगड़ों को तय करने मे मेलबोर्न बिलकुल असमर्थ था। फिर भी, उसने साम्राज्य मे कुछ आवश्यक सुधार अवश्य किए, जिनको न भुलाना चाहिए। इँगलैंड मे चिट्ठी-पत्री भेजने के लिये एक पेनी का टिकट लगाना ही काफी समझे जाने का नियम इसी ने बनाया। १८३९ मे पार्लिमेंट का बहुमत अच्छी तरह न मिलने के कारण इसने इस्तीफा दे दिया। पील ने सचिव-तत्र राज्य का संगठन करना नामजूर किया। अतः दो वर्ष तक फिर मेलबोर्न ने राज्य-काज सँभाला। १८४१ के चुनाव मे कञ्जरवेटिव लोगों का बहुमत हो गया। इससे पील ने महामत्री का पद स्वीकार कर लिया। इसका सचिव-तंत्र शासन १८४६ तक क़ायम रहा। रानी ने इसके साथ अच्छा व्यवहार किया और अपने को दलों के दलदल से दूर रक्खा।

पील का सचिव-तन्त्र राज्य

पील अपने समय का एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ था। मध्यम-श्रेणी के अँगरेज़ उसको बहुत ही अधिक मानते थे। आय-व्यय का निश्चय तथा देश का प्रबंध करने में वह अद्वितीय था। उसकी वैदेशिक नीति का झुकाव शांति तथा सम्मिलन की ओर ही था। पामर्स्टन तथा मेलबोर्न के वैदेशिक सचिवों ने अनेक बार ऐसी बातें की थीं, जिनके कारण इंगलैंड किसी-न-किसी लड़ाई में फँस जाता। १८४० में पामर्स्टन फ्रांस से इस बात पर लड़ने के लिये उद्यत हो गया था कि फ्रांस ने मिसर में अपना आतंक जमाना चाहा और मिसर के अरबी पाशा को सीरिया (Syria) फतह करने के लिये उद्यत किया था। फ्रांस के इस कार्य से रूस, प्रशिया तथा आस्ट्रिया, सभी चौकन्ने हो गए थे। १८४० में इंगलैंड से उल्लिखित तीनों राष्ट्र मिल गए और उन्होंने सीरिया पर तुर्कों का ही कब्ज़ा कायम रक्खा। पामर्स्टन का खयाल था कि तुर्क अपने शासन का सुधार कर लेंगे। इससे फ्रांस चिढ़ गया। पील का वैदेशिक सचिव लॉर्ड एबर्डीन संधि और शांति के पक्ष में था। उसने फ्रांस से मित्रता का व्यवहार किया। रानी ने भी उसको इस कार्य में पूर्ण सहायता पहुँचाई। १८४४ तथा १८४६ में फिर फ्रांस और इंगलैंड में झगड़ा उठ खड़ा हुआ और बड़ी मुश्किल से युद्ध होते-होते बचा। १८४२ में इंगलैंड

को अमेरिका से सधि हुई। इसके अनुसार कनाडा की सीमाएँ नियत की गईं। इँगलैंड तथा अमेरिका के बीच फिर इसी प्रकार का झगडा उठ खडा हुआ, जिसका निर्णय १८४६ की सधि के अनुसार हो गया।

ह्विग-दल के पतन के पीछे ओ'कॉनल ने फिर लोगो को भड़काना शुरू किया। इन्ही दिनो आयर्लैंड मे कुछ नवयुवको ने 'नवीन आयर्लैंड' (Young Ireland) नाम का एक दल बनाया और शक्ति तथा युद्ध के जरिए अपनी इच्छाओ को पूर्ण करने का प्रयत्न किया। जगह-जगह पर अधिवेशन किए गए और जोशीली वक्तृताएँ दी गईं। टारा-नामक स्थान पर ओ'कॉनल ने यह भविष्यवाणी की कि कोई वह दिन अवश्य आवेगा, जब डब्लिन मे आयर्लैंड की पार्लिमेट बैठेगी। ऐसी भविष्यवाणियों तथा वक्तृताओं से अँगरेज़ डर गए। उन्होने ओ'कॉनल को कैद कर दिया और राजनीतिक सभा करना रोक दिया। ओ'कॉनल पर षड्यत्र (Conspiracy) रचने का अपराध लगाया गया। लॉर्ड-सभा ने उसको कैद से छुटकारा दे दिया। इस घटना के तीन वर्ष बाद उसकी मृत्यु हो गई।

पाल ने आयर्लैंड के मामले मे अपनी वही पुरानी नीति रक्खी, जो उसके पूर्ववर्तियों की थी। हत्याओं को रोकने के लिये उसने शस्त्र-सबधी क़ानून (Arms Act) पास किया,

जिसके अनुसार विना प्रमाण-पत्र (License) के हथियारों का रखना गैरकानूनी ठहराया गया । डवन-कमीशन के आधार पर, जमीदारों के अत्याचार से कृषकों को बचाने के लिये, एक प्रस्ताव पेश किया गया, जिसके अनुसार कृषक लोग ज़मीन की जो कुछ उन्नति करें, उसका खर्च भूमि छोड़ने के समय उनको दे दिया जाना तय हुआ । लॉर्ड-सभा ने इस प्रस्ताव को पास नहीं किया । किसानों की दुर्गति पूर्ववत् बनी रही ।

पील ने आयरिशों को प्रसन्न करने के लिये आयर्लैंड में कई कॉलेज खोले, परंतु उनको राजनीतिक अधिकार नहीं दिए।

१८४५ में आयर्लैंड पर एक बड़ी भारी विपत्ति पड़ी । देश-भर के आलुओं में एक ख़ास तरह का कीड़ा लग गया और आलू की फसल बिलकुल ही नष्ट हो गई । शूकर-मांस और आलू ही आयरिश जाति का प्रधान आहार है । आधे से अधिक आयरिश दरिद्रता के कारण एक-मात्र आलू पर ही जीवन-निर्वाह करते थे । अब वहाँ की आबादी भी पहले की अपेक्षा बहुत ही अधिक बढ़ चुकी थी । अस्तु, आलू की फसल खराब होते ही हजारों आयरिश कराल काल के ग्रास बन गए । बड़ी मुश्किल से जहाजों द्वारा गेहूँ भेजकर बहुत-से गरीबों की जान बचाई गई ।

मेलबोर्न के समय इँगलैंड की आमदनी खर्च से कम थी। उसके सचिव-तन्त्र राज्य के अधःपतन का एक मुख्य कारण यह भी था। पील ने उस कमी को दूर करने के लिये (१८४२ मे) तीन वर्ष तक, परीक्षा के तौर पर, आय-कर (Income Tax) लगाया और बहुत-से स्थानों से आयात-करों को हटा दिया। गेहूँ पर राज्य-कर पूर्ववत् ज्यों-का-त्यो बना रहा। इस परीक्षा से उसको बहुत अधिक शिक्षा मिली। आयात-कर कम कर देने से इँगलैंड का व्यापार पहले से बहुत अधिक बढ गया। १८४५ के बजट (Budget) मे, पील ने फिर तीन वर्ष के लिये आय-कर लगाया। कुछ नियत पदार्थों पर से उसने सब प्रकार के राज्य-कर हटा दिए। इससे उसके दल के बहुत-से लोग नाराज़ हो गए।

पील के समय मे मज़दूरो की दशा पहले की-सी ही शोचनीय थी। छोटे-छोटे लड़कों से बारह-बारह घंटे तक काम कराया जाता था! खानो मे काम करनेवाले मज़दूरों (Miners) की हालत तो बहुत ही बुरी थी। इन सब दुःखजनक दृश्यों को कम करने के लिये पील ने, १८४२ मे, फैक्टरीज़-ऐक्ट (Factories Act) पास किया। उसके अनुसार १० वर्ष से कम उम्र के लड़के-लड़कियो को मजदूरी करने से रोक दिया गया। १० से लेकर १३ वर्ष तक के लड़कों और लड़-

स्त्रियो से सप्ताह मे केवल तीन दिन ही काम लेना उचित ठहराया गया। १८४४ के फैक्टरी-नियमो के अनुसार ९ वर्ष से कम उम्र के बालक को रुई तथा रेशम के कारखानों मे काम करने से रोक दिया गया। १८४७ मे स्त्रियो तथा बच्चो से १० घटे से अधिक काम लेना राज्य-नियम के विरुद्ध ठहराया गया। ये नियम पास करने का मुख्य कारण यह था कि जाति का आचार तथा स्वास्थ्य दिन-दिन गिरता जाता था।

पहले ही लिखा जा चुका है कि मध्यम श्रेणी के ऑंगरेजों से पील का घनिष्ठ सबध था। उसको यदि उनका प्रतिनिधि भी कहा जाय, तो कुछ अत्युक्ति न होगी। उसने ऑंगरेजों की व्यावसायिक उन्नति के लिये सभी प्रकार के यत्न किए। पील स्वतत्र व्यापार (Free Trade) के पक्ष मे था। हाँ, केवल गेहूँ पर ही वह आयात-कर (Import Duties) नहीं हटाना चाहता था। कारण, उन दिनो मे बहुतो का खयाल था कि गेहूँ पर आयात-कर हटाने मे इँगलैड की खेती को हानि पहुँचेगी और इस कारण इँगलैड को दूसरो के अन्न पर भरोसा करना पड़ेगा। लॉर्ड-सभा के सदस्य अपने-अपने स्वार्थो को अपूर्ण रखकर गेहूँ पर आयात-कर हटाने को तैयार न थे, क्योंकि वे समझते थे कि इससे

हमारी ज़मीनो की कुछ भी क़ीमत न रह जायगी, और आमदनी पहले की अपेक्षा कम हो जायगी। किसान लोग भी ज़मींदारो के ही पक्ष मे थे; गेहूँ पर आयात-कर हटाते ही उनको कारखानों मे काम करना पड़ेगा, जो उन्हे नापसद था।

किंतु गेहूँ पर आयात-कर हटाने से अँगरेज़-व्यवसायियो को विशेष रूप से लाभ था। देश मे गेहूँ सस्ता होने से उनको श्रमिको को मज़दूरी या वेतन नहीं बढ़ाना पड़ता था और कच्चे माल (Raw material) के सस्ते हो जाने से व्यावसायिक वस्तुएँ तैयार करने मे उनका खर्च पहले से बहुत कम हो जाता था। इसी से वे ससार के बाज़ार मे एकाधिकारी (Monopolist) बनकर अन्य देशो के व्यावसायिक बनने मे बाधा डाल सकते थे। यही सब बातें विचारकर १८३९ मे, मचेस्टर के व्यवसायियों ने कच्चे माल के ऊपर से आयात-कर हटाने के लिये एक सघ बनाया। इस सघ का नाम 'ऐंटी-कॉर्न-लॉ-लीग' (Anti-Corn-Law-League) रक्खा गया। इस आदोलन का प्रधान या नेता रिचर्ड काब्डन (Richard Cobden) था। जॉन ब्राइट (John Bright) उसका पक्ष-पोषक था। इस सघ ने सारे इँगलैंड मे शोर मचाया, और इँगलैंड की भावी समृद्धि का उज्ज्वल चित्र जनता के आगे रक्खा।

इस संघ ने पील के विचारों को भी बदल दिया । परंतु वह गेहूँ का आयात कर हटाने में असमर्थ था, क्योंकि बड़े-बड़े जमींदार और ताल्लुकेदार उसका साथ देने को तैयार न थे । इन्हीं दिनों बेंजमिन डिज़रेली (Benjamin Disraeli) ने जोर पकड़ा । वह अपने ढंग का एक ही आदमी था । इसने पील का विरोध करना शुरू किया ।

१८४५ के आलुओं के अकाल से लोगों की आँखें खुलीं । उनको यह मालूम हो गया कि ग्रेट-ब्रिटेन की जमीन अपनी बढ़ी हुई जन-संख्या के पालन-पोषण में असमर्थ है । दुर्भिक्ष के समय विदेशों से अन्न आए बिना काम नहीं चलने का । यदि आयर्लैंड में विदेशों से अन्न आने में बाधाएँ न होतीं, तो इतने आयरिश प्राण न खो बैठते । पील ने आयरिश दुर्भिक्ष के बहाने गेहूँ पर आयात-कर हटाने के लिये लोक-सभा से प्रार्थना की, किंतु यह प्रार्थना न मानी गई । इसका परिणाम यह हुआ कि पील ने इस्तीफ़ा दे दिया । लॉर्ड जॉन रसेल ने अपना मंत्रि-मंडल बनाने का प्रयत्न किया, परंतु वह सफल न हुआ । अतएव पील फिर अपने पद पर लौट आया और शासन-कार्य चलाने लगा । १८४६ में उसने गेहूँ पर आयात-कर हटाने का प्रस्ताव फिर पेश किया, परंतु फिर भी किसी ने उसे स्वीकार न किया । इस प्रश्न पर इँगलैंड में कई दल हो गए ।

कञरवेटिव अथवा टोरी-दल
- (१) पील का दल या पीलाइट्स (Peelites)
- (२) बाधित व्यापारिक दल या प्रोटैक्शनिस्ट (Protectionists)

ह्विग-दल के लोग
- (३) उदार-दल या लिबरल (Liberals)
- (४) अतिउदार-दल या रेडिकल (Radicals)
- (५) मचेस्टर का स्वतत्र व्यापारी-दल या मचेस्टर-दल (Manchester School)

पील के पक्षपाती लोगो की सख्या बहुत कम थी। १८५० मे पील की मृत्यु हो गई। उसके बाद लॉर्ड एबर्डीन (Lord Aberdeen) उक्त दल का नेता बन गया। इस दल का प्रसिद्ध व्यक्ति विलियम एवर्ट ग्लैडस्टन (William Ewart Gladstone) था।

बाधित व्यापारिक दल (Protectionists) के नेता बेंटिक तथा डिजरेली थे। इनका साथी लॉर्ड स्टैनले (Stanley) था। उसने, १८४५ में, पील का साथ छोड़ दिया था। इस प्रकार कञरवेटिव दल के पील तथा बाधित व्यापारिक नाम के दो दलों मे बँट जाने से ह्विग लोगों की शक्ति बढ़ गई। उन्होने अपने को 'लिबरल' के नाम से प्रसिद्ध किया, जिसको हम स्थान-स्थान पर उदार-दल के

नाम से भी लिखेंगे। उदार-दल भी आपस में बँटा हुआ था उनमें एक तो 'रेडिकल' दल था और दूसरा मंचेस्टर-दल। मंचेस्टर-दल के मुखिया ब्राइट तथा कॉब्डन थे। इन्होंने व्यापारियों और व्यवसायियों के स्वार्थ पूरे करवाने में राज्य को साधन बनाया। रेडिकलों ने भी प्रायः इनका साथ दिया। इँगलैंड में पील के पीछे, बहुत समय तक, इन्हीं लोगों को प्रधानता रही। इनकी प्रधानता से इँगलैंड का व्यापार बहुत ही अधिक बढ़ गया और इँगलैंड बहुत ही अधिक समृद्धिशाली बन गया।

लार्ड जॉन रसल का सचिव-तन्त्र राज्य

(१८४६-१८५२)

पील के पतन के पीछे लॉर्ड जॉन रसेल महामंत्री बना। उसने अपना वैदेशिक या परराष्ट्र-सचिव पामर्स्टन को बनाया। पामर्स्टन ने अपना कर्तव्य बड़ी योग्यता के साथ निबाहा। उसने इँगलैंड की शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ा दी।

आलू की फसल मारी जाने से आयर्लैंड के लोग भूखों मर रहे थे। गेहूँ पर आयात कर कुछ-कुछ कम करने से भी उनके कष्ट नहीं दूर हुए। अँगरेज लोग आयरिशों के कष्ट सुनकर उन्हें सहायता पहुँचाने को उत्सुक थे। लोगों ने चंदा जमा किया। परंतु व्यापारियों की धूर्तता के कारण उस धन

से आयर्लैंड के दुर्भिक्ष-पीड़ितों को सहायता नही पहुँच सकी। आयरिश जमींदारो की आमदनी कम हो गई थी, अतः उन्होंने बड़े-बड़े खेतों पर मजदूरों से खेती कराना शुरू कर दिया और छोटे-छोटे काश्तकारों को अपनी जमीनों से अलग कर दिया। काश्तकार लोग आयर्लैंड छोडकर अमेरिका आदि देशों मे चले गए। इसका फल यह हुआ कि ५० ही वर्षों के बीच आयर्लैंड की जन-सख्या ८० लाख की जगह ५० लाख रह गई। जिन आयरिशो को जन्मभूमि छोड़ विदेशों मे जाकर बसना पडा, उन्हें अँगरेजों के प्रति भयकर घृणा हो गई और उन्होने अपने बाल-बच्चा को भी यही शिक्षा दी। इससे पहले भी, जेम्स प्रथम, कांवैल आदि के समय से, रोमन कैथलिक आयरिश इँगलैंड से असतुष्ट रहते थे और यही अवसर ताकते रहते थे कि कब इँगलैंड आपत्ति मे पड़े और हमे बदला लेने का अवसर मिले (England's Difficulty is Ireland's opportunity)

१८४८ मे योरप-भर मे राज्य-क्रांति हो गई। फ्रांसीसियों ने लुईस फिलिप को सिहासन से उतार दिया और देश मे प्रतिनिधि-तत्र राज्य (Republic) की स्थापना की। जर्मनी तथा इटली ने भी लोक-तत्र की ओर अपने कदम बढ़ाए और लोक-सभाएँ स्थापित कीं।

आस्ट्रिया की अधीनता से छुटकारा पाने के लिये इटली ने बहुत कोशिश की। सार्डीनिया के राजा चार्लस अलबर्ट (Albert) ने अपने को समग्र इटली का राजा घोषित कर दिया। जर्मनी ने फ्रैंकफार्ट में जातीय प्रतिनिध-सभा की नीव डाली। इस क्रांति की लहर इँगलैंड में भी पहुँची।

चार्टिस्ट आंदोलन के लोगों ने इँगलेंड में शोर मचाना शुरू किया। नवीन आयर्लैंड-दल के लोगों ने विद्रोह करने की तैयारियाँ की। चार्टिस्ट लोगों ने, १८४८ में, कैनिंगटन कामन में, एक सभा की। इस से सभा अँगरेज़ राज-कर्म-चारी डर गए। दैव-संयोग से सभा में थोड़े ही लोग पहुँचे। नवीन आयर्लैंड-दल के लोग भी अपने प्रयत्न में असफल सिद्ध हुए। १८५१ में, हाइड पार्क में, एक महा प्रदर्शिनी की गई। इसमें संसार-भर के सभी देशों के कारीगरों की चीजें इकट्ठी की गईं।

१८४८ की इस योरप की राज्य-क्रांति को पामर्स्टन बुरा न समझता था। वह दुःखी प्रजा का साथी था। आधे योरप के बीच, हर गली, हर कूचे में, मार काट मची हुई थी। राज-पक्ष तथा प्रजादल के लोग एक दूसरे के खून के प्यासे थे। फ्रांस में लुईस नेपोलियन फ्रांस के लोकतंत्र का राष्ट्र-पति चुना गया

था; पर उसने शक्ति-सचय करके, अपने को फ्रांसीसी साम्राज्य का सम्राट् कहकर उसको घोषणा कर दी और नेपोलियन तृतोय के नाम से राज्य करने लगा।

पामर्स्टन ने नेपोलियन तृतीय को सम्राट् मान लिया और रानी अथवा मत्रि-मडल से इस बारे मे पूछा तक नही। अतएव उसे परराष्ट्र-मत्री के पद से हटा दिया गया। पामर्स्टन ने भी अगले एक प्रस्ताव पर रसेल का विरोध करके, उसको इस्तोफा देने के लिये विवश किया।

रसेल का पतन होते ही इँगलैड मे वाधित व्यापारी-दल (Piotectionist Party) की प्रधानता हो गई। डर्बी के अर्ल स्टैनले तथा डिज़रेली ने राज्य को बागडोर अपने हाथ मे ली और पामर्स्टन को अपने साथ रक्खा। पील तथा ह्विग के विरोध करते रहने के कारण, १६ दिसबर से, ह्विग-दल तथा पील-दल का सम्मिलित सचिव-तत्र (Coalition Ministry) इँगलैड का शासन करने लगा। एबर्डीन महामन्त्री बना। पामर्स्टन गृह-सचिव और रसेल पार्लिमेट का नेता नियत हुआ। ग्लैडस्टन को कोष-सचिव (Chancellar of tne Evchequer) का पद किया गया। यह पोल ही के समान आय-व्यय का निश्चय करने तथा बजट के बनाने निपुण था।

एबर्डीन का सचिव-तन्त्र राज्य (१८५३-१८५५) तथा
क्रीमियन युद्ध (१८५४-१८५६)

उस समय रूस का सम्राट् निकोलस प्रथम था। यह बहुत ही शक्तिशाली राजा था और टर्की को हड़प लेने की फिक्र मे था, क्योंकि व्यापार के लिये रूस को भूमध्य-सागर मे आने-जाने के लिये कोई जल-मार्ग न था। उत्तर मे आर्केंजेल आदि बंदरस्थान महीने बर्फ से ढके रहते थे। यही कारण है कि रूस कुस्तुनतुनियाँ लेना चाहता था और फ्रांस, इँगलैंड आदि उसके विरुद्ध हो टर्की का पक्ष करते थे।

इसने कई बार टर्की के लिये ये शब्द कहे थे—"हमारे बीच मे एक बीमार आदमी है, वह शीघ्र ही मरनेवाला है। उसके मरने के बाद उसकी जायदाद का बँटवारा करने का प्रयत्न अभी से करना चाहिए।" उसकी नीति से इँगलैंड शक्ति को बड़ा धक्का पहुँचता था। पामर्स्टन ने सारी ब्रिटिश-जनता को बहुत कुछ ऊँच-नीच समझाया और रूस की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना आवश्यक प्रकट किया। फ्रांस का नेपोलियन तृतीय अपने राजासन पर सुस्थिर तथा सर्वप्रिय बनना चाहता था, इसी से वह भी रूस के विरुद्ध था।

इन्ही दिनो दैवसयोग-वश जेरूस्सेलम मे लैटिन-क्लर्जी तथा ग्रीक-क्लर्जी (Clergy—पादरी) के बीच झगड़ा हो गया।

निकोलस ने ग्रीक-पादरियों का और फ्रांस ने लैटिन-पादरियों का पक्ष लिया। बेचारे तुर्कों ने लैटिन-पादरियों का साथ दिया, क्योंकि उनको रूस का भय था। इसका परिणाम यह हुआ कि रूस ने मॉल्डेविया तथा वालेशिया पर आक्रमण कर दिया।

यह देखकर इँगलैंड तथा फ्रांस ने भी अपने जहाज़ी बेड़े डर्रेदानियल (Dardenelles) मे भेज दिए। जनवरी, १८५४ मे अँगरेजों के मित्र-दल का बेड़ा काले सागर मे जा पहुँचा। रूस तथा अँगरेजो के मित्र-मडल का यह युद्ध योरप-इतिहास मे 'क्रीमियन वार' (Creman War) के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि अधिकांश युद्ध क्रीमिया-नामक रूस के दक्षिणी प्रायद्वीप मे हुआ था। यह युद्ध सन् १८५४ से १८५६ तक होता रहा।

लड़ाई का आरभ डैन्यूब-नदी से हुआ। डैन्यूब के किनारे तुर्कों के बहुत-से सुदृढ़ दुर्ग थे। उन दुर्गों के बल से तुर्कों ने रूसी सेना का अगे बढ़ना रोक दिया। अँगरेज़ी-मित्र-मंडल ने वर्ना-नामक स्थान को जीत लिया। इस पर रूस ने मॉल्डेविया तथा वालेशिया से अपनी फौजे हटा लीं। वर्ना-विजय के अनन्तर मित्र-दल के जहाजो ने क्रीमिया पर आक्रमण किया। मित्र-मडल की जहाजी सेना बीमार थी। उसकी रसद का भी प्रबध

क्रीमिया का युद्ध
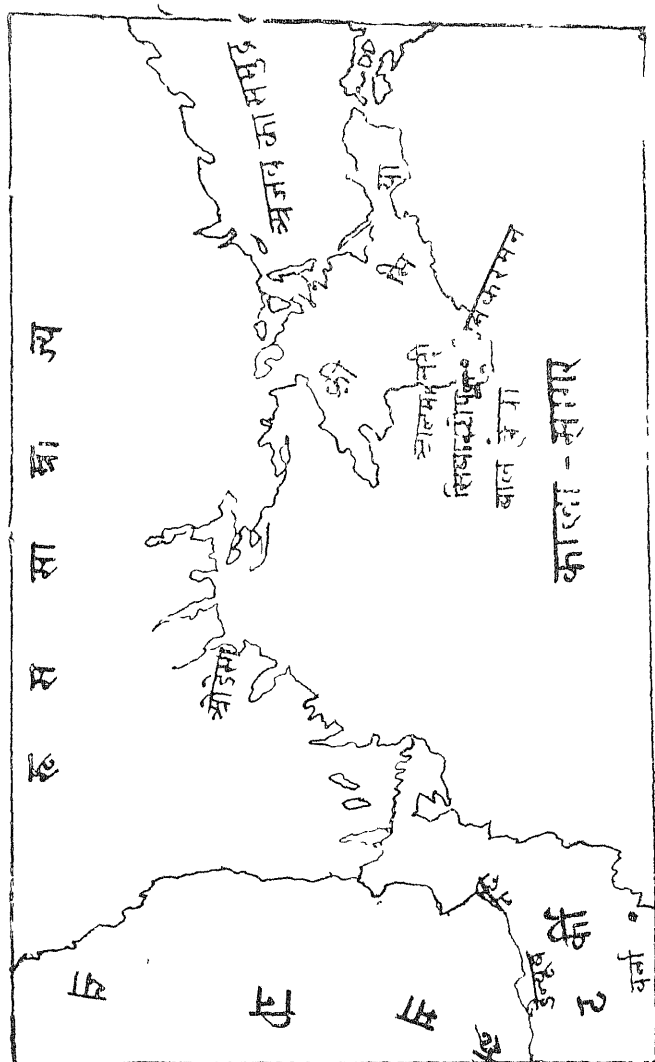
ठीक न था, फिर भी सिवास्टोपल (Sevastopol) नामक स्थान उसने घेर लिया। रूसियों से कई युद्ध हुए, जिनमे मित्र-मंडल की ही विजय हुई। १८५५ के सितबर मे क्रीमियन प्राय-द्वीप अँगरेजो के कब्जे मे आ गया। दोनो ही दलों के लोग थके हुए थे, अतः मार्च, १८५६ मे पेरिस की सधि (Treaty of Paris) होकर क्रीमियन युद्ध समाप्त हो गया। सधि की एक मुख्य शर्त यह थी कि रूस काले सागर मे अपने जहाजी बेड़े को नहीं रख सकता।

अभी लिखा जा चुका है कि क्रीमियन युद्ध के समय मित्र-दल की सेना मे रसद आदि का प्रबध अच्छा नही था। न तो रसद का ही ठीक प्रबध था और न दवा ही का। योधाओ के पैर मे जूते न थे, उस पर रूस का जाड़ा। जूते भी भी पहुँचे, तो एक ही पैर को। बीमारों की सेवा न होने से वे बेमौत मरने लगे। यह खबर पाकर फ्लॉरेंस नाइटिंगेल नाम की एक अँगरेज-युवती ने अन्य युवतियों को ले जाकर युद्ध-स्थल मे घायलों तथा रोगियों की सेवा-सुश्रूषा की। तभी से शिक्षित नर्सें (Nurses) रक्खी जाने लगीं। अब प्रत्येक अस्पताल मे तथा युद्ध के समय सैकड़ों नर्सें काम करती है। जगह-जगह इनको रेडक्रास (Red-cross) समितियाँ बन गई हैं और रुपया भी अच्छा हो गया है। इसी रुपए से नर्सें शिक्षा पाती हैं और उनके वेतन का प्रबध

होता है। इस युद्ध के इतने दिनों तक चलने के कारण ब्रिटिश-जनता एबर्डीन के शासन से बहुत असंतुष्ट हो गई। इसका नतीजा यह हुआ कि पामर्स्टन महा-मंत्री बनाया गया और लॉर्ड रसेल ने उसका साथ दिया।

पामर्स्टन का सचिव-तंत्र राज्य (१८५५-१८५८)

१८५७ में पामर्स्टन ने अलग से अकेले ही चीन से युद्ध छेड़ दिया और जनता ने उसका साथ दिया। १८५८ में उसने नेपोलियन तृतीय को खुश करने लिये पार्लिमेंट में एक प्रस्ताव पेश किया, जिसका आशय यह था कि नेपोलियन के विरोधी लोग इंगलैंड में न रह सकें और न उसके विरुद्ध घातक-षड्यंत्र रच सकें। पार्लिमेंट ने इस प्रस्ताव (Conspiracy to Murder Bill) को नहीं पास किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि पामर्स्टन ने अपना पद त्याग दिया। डर्बी तथा डिजरेली ने अपना मंत्रि-मंडल बनाना चाहा; पर वे सफल न हो सके। अतएव पामर्स्टन फिर महामंत्री हुआ।

इन दिनों योरप के बीच भयंकर और भारी परिवर्तन हो रहा था। इटली और जर्मनी संगठित राष्ट्र बन रहे थे। १८४९ में सार्डीनिया का राजा विक्टर इमैनुएल (Victor Emmanuel) समग्र इटली का राजा बन बैठा। कूटनीति-निपुण

प्रिंस बिस्मार्क ने प्रशिया की शक्ति बहुत अधिक बढ़ाकर जर्मन-साम्राज्य की नीव डाली।

१८६१ मे अमेरिका मे गृह-युद्ध ठन गया। इँगलैड के लोगों ने अमेरिका की दक्षिणी रियासतों को सहायता पहुँचाई। इससे उत्तरीय अमेरिका के लोग इँगलैड से नाराज हो गए। उन्होंने उत्तरीय रियासतों को फतह किया और वहाँ से इँगलैड मे रुई का जाना बद कर दिया। इससे लंकाशायर के कारखाने बद हो चले। इँगलैड पर विपत्ति का पहाड टूट पड़ा। पर पामर्स्टन ने यह सारी समस्या बहुत ही चतुरता से हल कर कर ली। १८६० मे कॉब्डन ने फ्रांस के साथ व्यापारिक सधि की। इस सधि के अनुसार फ्रांस ने भी स्वतत्र व्यवसाय के क्षेत्र मे क़दम रक्खा। ग्लैडस्टन ने आय-व्यय का बहुत ही उत्तम प्रबध किया। इँगलैंड दिन-दिन समृद्ध होता जा रहा था, अतएव नवीन राज्य-कर लगाए विना ही राज्य की आय दिन-ब-दिन बढ़ रही थी। ऑक्टोबर, १८६५ को ८० वर्ष की आयु मे, पामर्स्टन परलोक सिधारा। पामर्स्टन की इच्छा-शक्ति बहुत ही प्रबल थी। अपने ही साहस तथा उत्साह से उसने उन्नति की। दयालुता तथा प्रेम-पूर्ण व्यवहार से वह सर्व-प्रिय बना। उसकी मृत्यु से इँगलैड का एक शानदार आदमी उठ गया, क्योंकि वह अपने समय का अद्वितीय व्यक्ति था।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८३७	विक्टोरिया का सिंहासनारोहण
१८३९	एक पेनी (इकन्नी) के टिकट चलाना (Penny Postage)
१८४१	पील का सचिव-तंत्र राज्य
१८४६	कार्न-लॉ (विदेशी गल्ले पर कर) को हटाना; रसेल का सचिव-तंत्र राज्य
१८४७	आयर्लैंड का दुर्भिक्ष
१८४८	यारप में राज्य-क्रांति, चार्टिस्टों की असफलता
१८५२	डर्बी-डिज़रेलो का सचिव-तंत्र राज्य
१८५३	एबर्डीन का सम्मिलित सचिव-तंत्र राज्य
१८५४	क्रीमियन युद्ध का आरंभ
१८५५	पामर्स्टन का सचिव-तंत्र राज्य
१८५६	पेरिस की संधि
१८५७	चीन-युद्ध
१८५९	पामर्स्टन का द्वितीय सचिव-तंत्र राज्य
१८६१	अमेरिका का गृह-युद्ध
१८६५	पामर्स्टन की मृत्यु

चतुर्थ परिच्छेद

विक्टोरिया—ग्लैडस्टन तथा डिज़रेली

(१८६५-१८८६)

रसेल का सचिव-तंत्र राज्य

(१८६५-१८६६)

पामर्स्टन की मृत्यु होने पर रसेल प्रधान मत्री बना। उसने ग्लैडस्टन को पार्लिमेंट का नेता चुना। ग्लैडस्टन के चुने जाने का एक यह भी मतलब था कि अब इंगलैंड मे राजनीतिक सुधार किए जानेवाले थे। राज्य मे दिन-दिन मध्यम-श्रेणी के लोगों की शक्ति कम हो रही थी। शासन अधिकाधिक लोक-तत्र का रूप ले रहा था। इस कार्य मे पूरे २० साल लगे।

पार्लिमेंट-सबधी सशोधनों पर लोग बड़ी गंभीरता के साथ, ग़ौर से, विचार कर रहे थे। १८३२ के कानून से रेडिकल लोग (गरम उदार-दल) बहुत ही असंतुष्ट थे। इस पर भी जनता का झुकाव सुधारों की ही ओर था। यही कारण है कि रसेल ने बहुत-से सुधार किए और डिज़रेली ने उन सुधारों को, १८५६ में, निश्चित रूप दे दिया। ग्लैडस्टन ने, १८६६ में, एक

रिफ़ार्म-बिल पेश किया। पामर्स्टन के साथियों ने इस बिल का विरोध किया और वह पास न हो सका। फल यह हुआ कि रसेल ने प्रधान मन्त्री के पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

डर्बी और डिज़रेली का तृतीय सचिव-तन्त्र राज्य

(१८६६-१८६८)

पार्लिमेंट या लोक-सभा मे अपना बहुमत न होने पर भी डर्बी और डिज़रेली ने अपना सचिव-मंडल बनाने की चेष्टा की। पामर्स्टन के साथियों ने इसमें भी साथ न दिया।

डिज़रेली

(बेकन्स-फ़ील्ड का अर्ल)

इस पर ब्राइट ने इस दल के लोगों को 'ऐडुलम' (Adullam) की गुफा मे रहनेवाले दाऊद के साथियों की उपमा देते हुए, गुफा-निवासी-दल (Adullamites) के नाम से पुकारना शुरू किया।

गुफा-निवासियों के विरोध के अलावा उसके सामने कुछ और भी कठिनाइयाँ थी, जो भुलाई नहीं जा सकती थीं। उन कठिनाइयों मे से कुछ ये थी—

(१) योरप मे आस्ट्रिया तथा प्रशिया का युद्ध हो गया था।

(२) खेती की हालत दिन-दिन खराब हो रही थी, क्योंकि पशुओं मे प्लेग फैल गया था।

(३) १८६६ की दुर्घटना से व्यापार ढीला हो रहा था।

(४) श्रमिकों को फैक्टरी मे काम करने से संतोष न था। ये कानून के द्वारा अपने कष्टों को दूर करवाना चाहते थे।

(५) जमैका के आदिम निवासियों ने विद्रोह कर दिया था।

(६) जनता पार्लिमेंट का सुधार करवाना चाहती थी।

ऊपर लिखी अवस्थाओं को सामने रखकर डर्बी और डिजरेली ने, १८६७ में, एक नवीन सुधार-कानून का प्रस्ताव (A New Reform Bill) पेश किया। इस सुधार के नियमों को देखते ही उसके बहुत-से साथियों ने उसका साथ छोड़ दिया। सुधार-नियम के अनुसार इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड

के कस्बो मे छोटे-छोटे घरों के मालिकों को भी प्रतिनिधि निर्वाचन का अधिकार मिल जाता था। १० पाउन्ड किराया और १२ पाउन्ड लगान देनेवाला भी प्रतिनिधि चुन सकता था। भिन्न-भिन्न नगरों के प्रतिनिधि नियत किए गए थे। १० हजार से कम आबादीवाले शहरों को एक ही प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला। सुधार-नियम के अनुसार लीड्स, लिवरपूल, मन्चेस्टर, बर्मिघम और ग्लॉसगो की शक्ति पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई, क्योंकि इन नगरों को लोक-सभा के एक-तिहाई प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिल गया। लॉर्ड साल्सबरी (Lord Sallisbury) के विरोध करने पर भी ये सुधार-नियम पास हो गए।

इन्ही दिनो आयर्लैंड के अदर फिर हलचल शुरू हुई। १८६३ मे आयरिश तथा आयरिश-अमेरिकनों ने फेनियन (Fenian) नाम की एक गुप्त समिति (Secret Society) स्थापित की। उसका मुख्य उद्देश आयर्लैंड मे प्रतिनिधि-तन्त्र राज्य स्थापित करना था। १८६७ मे, आयर्लैंड मे, एक विद्रोह हो गया। लदन की क्लार्कनवेल (Klarkenwel)-नामक जेल की इमारत जला दी गई। इस पर ग्लैडस्टन ने आयरिश सुधारों के लिये प्रयत्न शुरू किया और किसी-न-किसी तरह विद्रोह को शांत किया। डर्बी बीमारी तथा बुड्ढा था। सारा

काम डिज़रेली ही करता था। ग्लैडस्टन ने जब आयरिश सुधार का प्रश्न अपने हाथ में लिया, तो डिज़रेली को पार्लिमेंट का बहुतमत न मिल सका। फिर पार्लिमेंट के मेंबरों का निर्वाचन किया गया; परंतु उसको सफलता न मिली। इस पर उसने इस्तीफ़ा दे दिया।

माहामंत्री ग्लैडस्टन

ग्लैडस्टन का प्रथम सचिव-तन्त्र राज्य

(१८६८-१८७४)

ग्लैडस्टन लिबरल दल का था, अत. उसके सचिव-तन्त्र राज्य मे रेडिकल दल के लोग भी सम्मिलित हो गए। जॉन ब्राइट ने पूरे तौर से ग्लैडस्टन का साथ दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि छः वर्षों तक लगातार निम्न-लिखित सुधार किए गए—

(१) आयर्लैंड मे जनता का अधिक भाग कैथलिक था; फिर भी उसको धार्मिक स्वतत्रता नहीं थी। १८६९ मे एक नियम पास किया गया, जिसके अनुसार उसे भी कुछ-कुछ धार्मिक स्वतत्रता दी गई।

(२) आयर्लैंड-निवासियों को अँगरेज़ो के बनाए हुए ज़मीन के कानूनो से बहुत ही कम सतोष था। लगान न देने मे उतरा चढ़ो प्रचलित थी। स्पर्द्धा (Competition) मे आकर दरिद्र किसान उपज से भी अधिक लगान देना मजूर कर लेते थे। कारण, ऐसा करने के सिवा उनके जीवन-निर्वाह का और सहारा ही क्या था? आलू-दुर्भिक्ष (Potato Famine) के बाद तो किसानो तथा ज़मीदारो के सबध भी खराब हो गए। दोनो मे दिन-रात झगडा होता रहता था। इन दोषों को दूर करने के लिये, १८७० मे, ग्लैडस्टन ने आयरिश भूमि-कानून

(Irish Land Act) पास किया। इसके अनुसार जमींदार को किसानों के तई भूमि पर से हटाते समय वह सब रकम देनी पड़ती थी, जिसे वे भूमि की उन्नति करने मे खर्च करते थे। इस नियम से किसानो की कुछ-कुछ रक्षा हुई।

(३) सन् १८७० मे मत्रि-मडल ने प्रारंभिक शिक्षा-नियम (Elementary Education Act) पास किया इसके अनुसार बालकों की प्रारभिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। जि़लो की स्थानीय सस्थाओं को शिक्षा-कर लगाने की आज्ञा दी गई। इसी शिक्षा-कर के सहारे प्रारभिक स्कूल चलाए गए।

(४) युद्ध-सचिव कार्डवैल (Cardwell) ने, १८७१ मे, बहुत-से सैनिक सुधार किए। इन सुधारो के अनुसार स्थायी सेना के साथ-साथ कुछ स्वयसेवको की सेना तथा मिलीशिया (Militia) फौज रखना आवश्यक हो गया। १८७२ मे 'बैलट-ऐक्ट' (Ballot Act) पास किया गया। इसके अनुसार लोक-सभा के सदस्यो का चुनाव पर्चियों के द्वारा किया जाने लगा। १८७३ मे लॉर्ड सेलबोर्न (Lord Selbourne) ने 'जुडीकेचर-ऐक्ट' (Judicature Act) पास किया। इसके अनुसार इँगलैंड मे हाईकोर्ट स्थापित किया गया।

फ्रांस तथा जर्मनी का युद्ध—जर्मनी की शक्ति दिन-दिन बढ़ती ही जाती थी। बिस्मार्क (Prince Bismark)-जैसे राजनीतिज्ञ के नेतृत्व मे उसने आस्ट्रिया को नीचा दिखाया। दैवसयोग-वश फ्रांस ने, १८७० मे, जर्मनी से अचानक युद्ध ठान दिया। सीडान (Sedan) की लडाई मे फ्रांस का सम्राट् नेपोलियन अपनी सारी सेना के साथ कैद हो गया। इस पर फ्रांस ने अपने को प्रतिनिध-तंत्र राष्ट्र के रूप मे घोषित किया और युद्ध पहले की तरह जारी रक्खा। इसका परिणाम यह हुआ कि जर्मन सेनाएँ पेरिस मे जा पहुँची। फ्रांस की बहुत ही दुर्गति हुई। फ्रांस को अलसास और लोरन (Alsace and Lorraine) के प्रात जर्मनी को देने पड़े। युद्ध का सारा खर्च जर्मनी ने वसूल किया। इससे फ्रांस की शक्ति बहुत ही क्षीण हो गई।

इस युद्ध मे इँगलैड ने भाग नही लिया। इस तटस्थता का परिणाम इँगलैड के हक मे अच्छा नही हुआ। रूस ने क्रीमिया-युद्ध की शर्ते तोडकर काले सागर मे अपने जहाजों को रखना शुरू किया। १८७२ मे सयुक्त-राज्य अमेरिका ने अलबामा (Albama)-जहाज का पूरा हर्जाना उससे ले लिया इन सब ऊपर लिखी घटनाओ से लोग ग्लैडस्टन के शासन

से असंतुष्ट हो गए। अब ये सुधारों से बहुत घबराने लगे। इत्तिफाक से ग्लैडस्टन ने आयर्लैंड में एक विश्व-विद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव का समर्थन जब उसके साथियों तक ने न किया, तो उसने इस्तीफा दे दिया। डिज़रेली ने अपना मंत्रि-मंडल बनाया। इस पर ग्लैड-स्टन ने फिर काम करना शुरू किया, परंतु काम सफलता-पूर्वक न चला। जनवरी, १८७० मे उसने पार्लिमेंट के संगठन को तोड़ दिया और नए निर्वाचन के लिये कहा। नवीन निर्वाचन (General Election) मे अनुदार-दल के लोगों का बहु-मत हुआ। इस कारण ग्लैडस्टन ने पूर्ण रूप से इस्तीफा दे दिया।

डिज़रेली (Earl of Beaconsfield) का सचिव-तंत्र राज्य
(१८७४-१८८०)

डिज़रेली ने बहुत सावधानी से शासन का काम चलाया। १८७४ मे वह बेकंस-फील्ड का अर्ल बनाया गया और पार्लिमेंट का नेता सर स्टैफर्ड नार्थकोट (Stafford Northcote) नियत किया गया। इसने आयर्लैंड की कठिनाइयों को दूर करने का यत्न किया। आयरिश लोग स्वराज्य चाहते थे। चार्ल्स स्टुवर्ट पार्नेल (Charles Stuart Parnell) ने लोगों को बुलाकर जमा किया और

स्वराज्य प्राप्त करके के लिये उत्साह दिया। इससे आयर्लैंड में स्वराज्यवादियों (Irish Nationalists) का एक दल बन गया, जिसके सभ्यों ने आपस मे काम करना शुरू कर दिया। इन लोगो ने पार्लिमेंट की नाक मे दम कर दिया। पुरानी प्रथाओं को तोडकर इन लोगो ने पार्लिमेंट को रात-रात-भर काम करने के लिये विवश किया और कुछ भी काम न करने दिया। पार्नेल ने लैंड-लीग (Land-League) नाम की एक और संस्था खडी की और जमीन पर केवल कृपकों का ही स्वत्व स्थापित करने का प्रयत्न करना शुरू किया। किसानो को खूब भडकाया गया। इससे आयर्लैंड मे स्थान-स्थान पर भयंकर उत्पात होने लगे। परन्तु अँगरेज़ी राजकर्मचारियों ने इधर कुछ भी ध्यान नही दिया।

रूस-टर्की का युद्ध (The Turko-Russian War) (१८७७-१८७८)—टर्की के कुप्रबंध से फिर योरप के राष्ट्रों मे विरोध उठ खडा हुआ। टर्की ने अपने राज्य की बलगेरिया आदि ईसाई-रियासतों के अंदर अत्याचार शुरू किया। इससे वे विद्रोही बन गई। रूस ने इन रियासतों को खुल्लमखुल्ला सहायता पहुँचाई। शुरू मे बलगेरिया (Bulgaria) ने विद्रोह किया, परतु टर्की ने इस विद्रोह को शीघ्र ही दबा दिया। फिर सर्बिया (Sarbia) मांटीनिग्रो (Montenegro) ने

सुलतान के विरुद्ध अपने हथियार उठाए; परन्तु वे भी सफल न हुए। १८७८ मे रूस ने ईसाई-रियासतों को सहायता पहुँचाई। बलगेरिया ने टर्की को परास्त करके कुस्तुनतुनियाँ पर अपनी सेनाओ को चढ़ा दिया।

कुस्तुनतुनियाँ पर रूस का प्रभुत्व अँगरेजों को पसद न था। बेकसफील्ड ने शीघ्र ही अपना जहाजी बेडा मारमोरा-समुद्र की ओर रवाना किया और माल्टा की ओर भारतीय सेना भेजी। इस पर रूस ने सैन्स्टिफैनो (Sanstephanno) मे टर्की से सधि कर ली। लॉर्ड साल्सबरी ने इस सधि को न मानने के लिये ब्रिटेन को प्रेरित किया। उसने कहा कि सधि योरप के राष्ट्रों की कांग्रेस के सामने होनी चाहिए। इसका परिणाम यह हुआ कि बर्लिन में योरप के राष्ट्रो को महासभा (Berlin Conference) हुई। इसमे बेकसफील्ड तथा साल्सबरी इँगलड के प्रतिनिधि होकर पहुँचे। बर्लिन की सधि के अनुसार 'बालकन रियासते' (Balkan) के झमेलो को कुछ समय के लिये बद कर दिया गया। बलगेरिया सर्वथा स्वतत्र हो गया। पूर्वी रूमेलिया को भी कुछ-कुछ स्वतत्रता दे दी गई। मांटीनिग्रो, सर्बिया तथा रोमानिया बिल्कुल स्वतत्र कर दिए गए। आस्ट्रिया को बासनिया (Bosnio) मिला और कई भू-खड रूस तथा ग्रीस के हाथ आए। साइप्रस (Syprus) द्वीप को

अँगरेजों ने हथिया लिया। इससे लघु एशिया (Asiaminor) पर अँगरेजो का दबदबा जम गया।

मिसर (Egypt) पर दो राष्ट्रों की हुकूमत (१८७९)—१८७९ मे बेकसफील्ड ने फ्रांस से संधि की और दोनो ही ने आपस मे मिलकर मिसर के ऊपर हुकूमत करने का निश्चय किया। मिसर का असली राजा खदीव फ़िज़ूलखर्च था। उसको अपने देश के हित की कुछ भी परवा न थी। उसने बेवकूफी से स्वेज-नहर के अपने सारे हिस्से अँगरेजो के हाथ बेच डाले। इससे अँगरेज़ो का स्वेज पर अखड प्रभुत्व स्थापित हो गया।

बेकसफील्ड विदेशी झगड़ों मे ऐसा डूब गया क -
घर का कुछ भी खयाल न किया। ग्लैडस्टन ने उसकी वैदेशिक नीति को देश के लिये हानिकर बतलाया। इसका परिणाम यह हुआ कि १८८० मे पार्लिमेंट का नया निर्वाचन हुआ, जिसमे बेकसफील्ड का बहुमत न था। इस पर उसने इस्तीफा दे दिया और ग्लैडस्टन ने शासन-भार अपने हाथ मे लिया।

ग्लेडस्टन का सचिव-तन्त्र राज्य (१८८०-१८८६)

ग्लैडस्टन ने राज्य का काम सँभालते ही अपना ध्यान आयर्लैंड की ओर लगाया। उसने १८७० की तरह ही १८८१ मे फिर से आयरिश लैंड-ऐक्ट पास किया। लगान का निश्चय करने के लिये भौतिक न्यायालय स्थापित किए। फिर भी आय

रिश स्वराज्यवादियों ने लोक-सभा को पहले ही की तरह तंग करना शुरू किया। इससे परेशान होकर अँगरेज़-राजकर्मचारियों ने पार्नेल तथा उसके साथियों को कैद किया, पर कुछ ही समय के बाद छोड़ दिया। इन्हीं दिनों आयर्लैंड के सचिव लॉर्ड फ्रेडरिक कैवाडिश (Fredrick Cavandish) और सेक्रेटरी टी० एच० बर्क को डब्लिन मे किसी ने मार डाला। इन हत्याओं को रोकने के लिये 'हत्या-प्रतिरोधक नियम-(Prevention of Crime Bill) पास किया गया। आयरिश सभ्यों का वाद-विवाद रोकने के लिये एक नया नियम पास किया गया। इसके अनुसार पार्लिमेंट का बहुमत चाहे जब वाद-विवाद को बद कर सकता था। इस नियम से आयरिश सदस्य चिढ़ गए और उन्होंने राज्य का खुले तौर पर विरोध करना शुरू किया।

वैदेशिक हलचल ने फिर ग्लैडस्टन के मन्त्रि-मडल को परेशान कर डाला। भारत और अफग़ानिस्तान का युद्ध छिड़ चुका था, जिसमें अँगरेजो को अफ़ग़ानिस्तान से पीछे हटना पड़ा, दक्षिण-आफ्रिका मे बहुत-आंदोलन हुए। ट्रांसवाल (Transval) ने अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा बड़ी ही मुश्किल से की। अरबी पाशा मिसर में विद्रोही हो गया। १८८२ मे इँगलैंड ने मिसर को सेनाएँ भेजीं और अरबी पाशा को बुरा

तरह से शिकस्त दी। इससे मिस्र पर अँगरेजों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। दैव-संयोग से मेहदी के साथियों में आपस मे ही फूट पड गई, और इससे सूडान की गड़बड़ भयंकर रूप न धारण कर सकी। इन्ही दिनों रूस ने, अफगानिस्तान के रास्ते, भारत पर चढ़ाई करने की तैयारी की। १८७८ मे रूस और अँगरेजों की लड़ाई छिड हो जाती, पर बड़ी मुश-किल से मामला तय हो गया।

१८८४ मे ग्लैडस्टन ने अन्य दरिद्र लोगों को निर्वाचन का अधिकार देने के लिये एक प्रस्ताव पेश किया; परंतु लॉर्ड-सभा ने अस्वीकार कर दिया। ग्लैडस्टन ने कुछ समय के बाद फिर उसी प्रस्ताव को पेश किया और अबकी बार बड़ी मुशकिल से पास हो करवा लिया। इस कानून के अनु-सार आबादी देखकर नगरों को प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया। लंदन-नगर के २२ की जगह ६० और लिवर-पूल तथा मचेस्टर के ९-९ प्रतिनिधि हो गए। ग्लॉसगो तथा बर्मिंघम को सात-सात प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया। इस सुधार-कानून से इँगलैंड मे बहुत कुछ प्रजा-तंत्र राज्य स्थापित हो गया।

कंजरवेटिव लोग ऊपर लिखे सुधार के विरुद्ध थे। उन्होने आयरिश सभ्यों को अपनी ओर मिला लिया। इसका परि-

खास यह हुआ कि जून, १८८५ मे ग्लेडस्टन को इस्तीफा देना पड़ा। नवबर मे लोक-सभा का नया निर्वाचन हुआ। आयरिश सभ्यों ने अपने वोट उदार-दल को दिए। इससे ग्लैडस्टन ने फिर राज्य का काम सँभाला। बहुत-से अँगरेजों ने ग्लैडस्टन का साथ नहीं दिया। जोज़फ चेबरलेन (Joseph Chamberlain) ग्लैडस्टन आयरिश नीति के विरुद्ध था, अतः उसने अपना एक नया दल बना लिया।

एप्रिल, १८८६ मे ग्लैडस्टन ने आयर्लैंड को स्वराज्य दे देने के लिये पार्लिमेंट मे प्रस्ताव पेश किया। उदार-दल के ९३ सभ्यों ने अपने को 'लिबरल यूनियनिस्ट' (Liberal Unionists) के नाम से प्रसिद्ध किया। ये लोग थे तो उदार-दल के, पर आयर्लैंड को स्वराज्य नही देना चाहते थे। ग्लैडस्टन ने पार्लिमेंट को तोड़ दिया और नए सिरे से निर्वाचन करवाया।

जुलाई, १८८६ मे पार्लिमेंट का फिर निर्वाचन हुआ। इँगलैंड ने पामर्स्टन के युग से निकलकर ग्लैडस्टन के युग मे प्रवेश किया था और इसके बाद अब उसने एक और नया रूप धारण किया। राजनीतिकों के नए-नए दल बनते जाते थे, जिनके अपने-अपने ढग के नए-नए विचार थे। औपनिवेशिक तथा वैदेशिक नीति ने मुख्य रूप धारण किया, क्योंकि इँगलैंड

का साम्राज्य बहुत अधिक बढ़ गया था। नई लोक-सभा में ग्लैडस्टन के दल के सदस्य न थे। अतः उसने इस्तीफा दे दिया।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८६६	डर्बी-डिज़रली का तृतीय सचिव-तन्त्र राज्य
१८६७	द्वितीय रिफार्म-ऐक्ट
१८६८	ग्लैडस्टन का प्रथम सचिव-तन्त्र राज्य
१८७०-७१	फ्रैंको-जर्मन युद्ध
१८७४	डिज़रेली का सचिव-तन्त्र राज्य
१८७८	बर्लिन की संधि; अफगान-युद्ध
१८८०	ग्लैडस्टन का द्वितीय सचिव-तन्त्र राज्य
१८८२	मिसर पर अँगरेज़ों का आधिपत्य
१८८४	तृतीय रिफार्म-ऐक्ट
१८८६	आयरिश स्वराज्य को पास करवाने में ग्लैडस्टन की असफलता

पंचम परिच्छेद

विक्टोरिया—स्वराज्य तथा साम्राज्य (१८८६-१९०१)

(१) साल्सबरी का यूनियनिस्ट सचिव तंत्र राज्य

(१८८६-१८९२)

विक्टोरिया के अंतिम १५ वर्षों तक, १८९२ तथा १८९५ को छोड़कर ब्रिटिश-शासन मे 'यूनियनिस्ट दल' की ही प्रधानता रही। १८८६ तथा १८९२ के बीच मे सचिव-मडल के अधिकांश सभ्य 'अनुदार-दल' के यूनियनिस्टों मे से ही थे। केवल हार्टिं गटन तथा चेंबरलेन ही उदार-दल के यूनियनिस्टों मे से थे। प्रधान मत्री लॉर्ड साल्सबरी ने स्वय हो परराष्ट्र-सचिव का काम करना शुरू किया। आयरिश सचिव जे० बाल्फोर (J. Balfour) था। जी० जे० गोशन (G. J Gos- (chen ने चांसलर का पद ग्रहण किया। आयर्लैंड मे पहले ही को-सी अशांति विद्यमान थी। पार्नेल ने जमीन के लगाने को अधिकता के विषय में शोर मचाना शुरू किया। उसके साथियों ने युद्ध का उपाय (Plan of Compaign)-नामक एक सगठन बनाया और जमींदारों का लगान न देने के लिये असामियों को उत्तेजित किया। जमीदारों ने भी असामियों

को अपनी जमीनो से निकालना शुरू किया। इससे सारे आयर्लैंड मे स्थान-स्थान पर विद्रोह शुरू हो गया। बाल्फोर ने बडी चतुराई से परिस्थति सँभाली और आयर्लैंड को पूर्ण रूप से ठढा कर दिया। पार्नेल के सिर 'टाइम्स'-पत्र ने बहुत-से दोष मढ़े और आयर्लैंड की हत्याओ का एक-मात्र कारण उसी को बतलाया। जाँच के लिये पार्नेल के सबध मे कमीशन बिठाया गया। विचार मे पार्नेल बेदाग छूट गया।

इस घटना के कुछ ही दिनो बाद पार्नेल से एक घृणित पाप-कर्म हो गया। फिर भी, १८६० मे, आयरिश निर्वाचको ने उसी को पार्लिमेट के लिये अपना प्रतिनिधि चुना। यह ग्लैडस्टन आदि अँगरेजो को बहुत बुरा लगा। उन्होने आयरिश दल से कहा कि हम पार्नेल-सदृश व्यभिचारी से कोई सबध न रक्खेगे, तुम किसी दूसरे को अपना नेता चुनो। आयरिश लोग भी धीरे-धीरे अँगरेजो के कहने मे आ गए और पार्नेल के विरुद्ध होने लगे। उसने भी इन विघ्नो का अपूर्व वीरता के साथ सामना किया। सन् १८९१ मे वह परलोक सिधारा। उसकी मृत्यु के बाद ही आयर्लैंड दो भागो मे विभक्त हो गया। कुछ लोग पार्नेल के पक्ष मे थे और कुछ उसके विरुद्ध। बड़ी कठिनता से जॉन रेडमड (John Redmond) ने आयरिश लोगो को लडने से रोका। इस

घटना का यह परिणाम हुआ कि स्वराज्य का आंदोलन कुछ समय तक धीमा पड गया।

वैदेशिक नीति (१८८६-१८९२)—साल्सबरी का ध्यान वैदेशिक नीति पर बहुत अधिक था। मिसर के कारण इँगलैंड तथा फ्रांस के संबध दिन-दिन खिच रहे थे। जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली ने आपस में एक सगठन बना लिया और फ्रांस रूस से मिल गया। इँगलैंड योरप के झगड़ो से सर्वथा अलग ही रहना चाहता था, क्योंकि उसको दिन-रात अपने बढ़े हुए भारी साम्राज्य के छिन्न-भिन्न हो जाने का भय बना रहता था। इँगलैंड मिसर के झगड़े के कारण फ्रांस से और भारतवर्ष की रक्षा के लिये रूस से दोस्ती नहीं कर सकता था। १८९० में इँगलैंड ने जर्मनी से सधि कर ली, जिससे आफ्रिका-संबधी झगड़ो का निपटारा हो गया। 'जजीबार' नाम का प्रदेश जर्मनी ने इँगलैंड को दे दिया और इँगलैंड से हैलीगोलैंड नाम का द्वीप ले लिया। इससे जर्मनी तथा इँगलैंड के झगड़े कुछ कम हो गए।

गृह-नीति (Home Policy)—साल्सबरी ने बहुत-से घरेलू सुधार (Domestic Refoms) किए। १८८७ मे उसने रानी विक्टोरिया की जुबिली (Jubilee) की। १८८८ में एक राजनियम बनाकर स्थानीय संस्थाओं मे जनता के अधिकार

बढ़ा दिए। गोशन ने जातीय ऋण पर २½ सैकड़ा व्याज की दूर कर दी। १८८६ मे एक योजना तैयार की गई, जिसके अनुसार अँगरेजो का जहाजी बेड़ा और भी अधिक बढ़ा दिया गया।

सालसबरी के शासन के प्रति लोगो का विरोध दिन-दिन बढ़ने लगा। ग्लैडस्टन ८० वर्ष का बुड्ढा हो चुका था। फिर भी उसने आयर्लैंड को स्वराज्य देने का प्रबल प्रयत्न किया। सन् १८९२ के नए निर्वाचन मे उसने बड़ी भारी कोशिश की। उसको ४० सदस्य अधिक मिल गए, इस कारण सालसबरी ने इस्तीफा दे दिया।

(२) ग्लैडस्टन का चतुर्थ सचिव-तन्त्र शासन (१८९२-१८९४)

बहुमत के अधिक न होने पर भी ग्लैडस्टन ने बहुत ही सावधानी तथा धीरता से काम चलाया। १८९३ मे उसने एक नया ही आयरिश स्वराज्य-संबधी प्रस्ताव पार्लिमेंट के आगे रक्खा और वहाँ पास कराकर लॉर्ड-सभा मे भेज दिया। लार्ड-सभा ने इस प्रस्ताव को नामज़ूर किया। ग्लैडस्टन के मन्त्रि-मंडल ने लॉर्ड सभा के विरुद्ध आंदोलन करना शुरू किया और यह शोहरत कर दी कि इस सभा को जनता की इच्छा का कुछ भी ख़याल नही है। १८९४ मे ग्लैडस्टन ने इस्तीफा दे दिया और इसके तीन वर्ष बाद ही उसकी मृत्यु भी हो गई। इँगलैंड के एक देदी-

प्यमान नक्षत्र का अस्त हो गया। रानी ने रोजबरी (Rosebery) को महामंत्री चुना। इसका सचिव-तंत्र शासन केवल एक ही वर्ष तक रहा। इसने इस एक वर्ष मे ही बहुत-से प्रस्ताव पेश किए; परंतु बहुत ही थोड़े पास हुए। सर विलियम हार्कोर्ट (Sir William Harcourt) ने बहुत ही सफलता से बजट बनाया और रोजबरी ने वैदेशिक नीति मे अपूर्व चतुरता प्रकट की। इसने आयरिश स्वराज्य का प्रस्ताव पार्लिमेंट मे नही पेश किया। आयरिश सभ्यो ने चिढ़कर इसका साथ नही दिया। जून, १८९५ मे इसको भी इस्तीफ़ा देना पड़ा। लॉर्ड साल्सबरी तीसरी बार महामंत्री बना।

साल्सबरी का तृतीय सचिव-तंत्र शासन

(१८६५-१६०१)

अनुदार तथा यूनियनिस्ट दल के लोग धीरे-धीरे एक ही विचार के होते जाते थे और इस प्रकार वे एक ही दल में परिणत हो रहे थे। लॉर्ड साल्सबरी महामंत्री होने के साथ ही परराष्ट्र-सचिव भी बना और बाल्फोर को पार्लिमेंट का नेता (Leader) नियत किया। चैंबरलेन उपनिवेश-सचिव (Secretary of State for the Colonies) के पद पर नियुक्त हुए। रानी की मृत्यु होने तक साल्सबरी ही राज्य-कार्य चलाता रहा। इन्हीं दिनों

सर हेनरी कैंबल बैनरमैन (Sır Henıy Campbell Ba-nnerman) ने धीरे-धीरे ऊपर उठना शुरू किया ।

वैदेशिक समस्याओं ने फिर प्रबल रूप धारण किया । तुर्कों ने आर्मीनिया मे भयकर अत्याचार किए । इससे अँगरेज़ो का ख़ून उबल उठा । जनता ने इसमे राज्य के हस्तक्षेप करने के लिये पुकार मचाई । परतु अन्य कोई भी इँगलैंड को सहायता देने के लिये तैयार न था । रूस तुर्कों से मित्रता का भाव दिखा रहा था । और जर्मनी इँगलैंड को सहायता न देना चाहता था । क्रीट-द्वीप ने भी तुर्कों से अपने को छुड़ाना चाहा , परतु छुडा न सका । इस पर यूनान ने क्रीट को सहारा दिया , परतु वह भी तुर्कों से पराजित हुआ । तब योरपियन जातियो ने हस्तक्षेप किया और क्रीट को तुर्कों के पजे से छुटकारा मिल गया ।

१८९५ मे इँगलैंड तथा वैनजुला (Venezuela) के बीच सीमा-सबधी झगडा उठ खडा हुआ । अमेरिका ने झगड़ा निपटाना चाहा । इस पर इँगलैंड और अमेरिका की भी अनबन हो गई । बडी मुशकिल से झगड़ा तय हुआ और इँगलैंड को बहुत-सी भूमि मिली । दक्षिणी आफ्रिका मे, ट्रासवाल के अंदर, गड़बड़ मच गई । जर्मनी ने ट्रांसवाल को सहायता पहुँचाने का यत्न किया । इस पर ब्रिटिश-जनता भड़क उठी ।

फ्रांस के साथ भी इँगलैंड का संबंध दिन-दिन बिगड़ा रहा था।

मिसर मे लॉर्ड क्रोमर ने शांति स्थापित की। लॉर्ड किचनर (Lord Kitchener) ने वहाँ के लोगों की एक अच्छी सेना तैयार की। १८९८ में अँगरेजों ने सूडान (Soudan) को जीतने का इरादा किया और उसे शीघ्र ही जीत भी लिया। इस पर फ्रांस का क्रोध बहुत अधिक बढ़ गया। यदि कहीं रूस फ्रांस का साथ देने के लिये तैयार हो जाता, तो दोनों देशों मे शीघ्र ही लड़ाई छिड़ जाती। फ्रांस ने लाचार होकर, १८९९ मे, इँगलैंड से संधि कर ली और मिसर पर अँगरेजों का आधिपत्य स्वीकार किया।

१८९४ तथा १८९५ मे चीन और जापान के बीच युद्ध छिड़ गया। जापान ने चीन को शीघ्र ही परास्त किया और यह प्रमाणित कर दिया कि जापान भी एक महाशक्ति (Great Power) है, जो योरप के राष्ट्रों से किसी तरह भी कम नहीं। योरपियन जातियों की भी दृष्टि चीन की ओर गई और सभी ने चीन को हड़प जाने का इरादा किया। रूस, फ्रांस तथा जर्मनी ने चीन से व्यापार का अधिकार प्राप्त किया। इँगलैंड ने भी चीन में योरपियन जातियों को बेरोक-टोक खुल्लमखुल्ला आने दिया। रूस ने मंचूरिया को हथिया लिया और ब्रिटेन तथा जर्मनी ने कुछ चीनी बंदरगाह अपने कब्जे में कर लिए।

१९०० मे चीनियों ने योरपियनो पर आक्रमण कर दिया और अपने देश से उनको बाहर निकालने की चेष्टा की। लेकिन योरपियन जातियों की विजय हुई और चीन को पेकिन (Pekin) मे सधि करनी पड़ी।

१८९७ मे रानी की डायमड-जुबिली (Diamond-Jubilee) मनाई गई। बोअर (Boer)-युद्ध समाप्त होने-वाला ही था कि १९०१ मे रानो की मृत्यु हो गई। तब रानी का बड़ा पुत्र, एडवर्ड सप्तम के नाम से, राजगद्दी पर बैठा।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१८८६	साल्सबरी का यूनियनिस्ट सचिव-तन्त्र राज्य
१८८७	रानी की जुबिली
१८८८	पार्नल के सबध मे कमीशन का बैठना
१८९२	ग्लैडस्टन का चतुर्थ सचिव-तन्त्र राज्य
१८९४	ग्लैडस्टन का इस्तीफा, लॉर्ड रोजबरी का सचिव-तन्त्र राज्य
१८९५	साल्सबरी का तृतीय सचिव तन्त्र-राज्य
१८९८	सूडान की विजय
१८९९	बोअर-युद्ध का आरभ
१९०१	रानी की मृत्यु

षष्ठ परिच्छेद

एडवर्ड सप्तम (१९०१-१९१०)

देश-स्थिति

विक्टोरिया के राज्यारोहण के समय इँगलैंड का राज-वश बहुत कुछ अप्रिय हो रहा था और चार्टिस्ट (Chartist) आदि श्रमजीवी अपनी दशा से असतुष्ट होकर आंदोलन उठाए हुए थे। बहुतेरे विचारशील अँगरेज, फ्रास और अमेरिका के समान इँगलैंड मे भी प्रजा-तत्र स्थापित करने के पक्ष मे थे; पर महारानी विक्टोरिया के रानी बनते ही धीरे-धीरे जनता का मत बहुत कुछ बदल गया और अधिकांश अँगरेज राज-सत्ता को अपने देश की एक परम आवश्यक राजनीतिक तथा सामाजिक सस्था समझने लगे, जैसा अब भी समझते जाते है। गत महा-युद्ध के समय में बड़े-बड़े राज-सिहासन ढहा दिए; पर अँगरेजी-सिहासन पहले से भी मजबूत हो गया।

इस विचित्र घटना का कारण यही जान पड़ता है कि विक्टोरिया के समय से इँगलैंड का राजवश जनता के हितों को ही सब कुछ समझता है और इस बात को नहीं मानता कि राज-वंश के हित जनता के हितों से कोई दूसरे हैं।

एडवर्ड सप्तम

विक्टोरिया की मृत्यु के बाद जब महाराज एडवर्ड सप्तम इँगलैंड के राजा हुए, तो उस समय तक उस देश का राजपद ऐसा नियम-बद्ध हो गया था कि राजा को प्रजा के मत का विरोध करने की कोई आवश्यकता ही न रह गई थी। यद्यपि महाराज गद्दी पाते-पाते बहुत बूढ़े हो गए थे, तथापि शासन-प्रबंध आदि, सभी बातों में आपने अद्वितीय अनुभव प्राप्त कर लिया था और बहुत काल से सामाजिक कार्यों में आप अौ

रानी एलेक्ज़ेंड्रा

रानी एलेग्ज़ेंड्रा (Queen Alexandra) ही प्रधान भाग लिया करते थे। विधवा हो जाने पर महारानी विक्टोरिया को एकांत-वास बहुत प्रिय हो गया था, जिससे उन्होंने अपना सामाजिक कार्य-भार अपने ज्येष्ठ पुत्र को ही सौंप दिया था।

योरप का स्थिति

उस समय योरप मे जर्मनी आस्ट्रिया, इटली आदि देश तो सधि द्वारा सबद्ध थे और रूस तथा फ्रांस का बड़ा मेल था, पर इँगलैंड सबसे अलग पड़ा था। उस समय भी कैसर के रग ढग इँगलैंड के विरुद्ध ही देख पडने लगे थे। बोअर-युद्ध (Boer War) के समय तटस्थ न रहकर उन्होने राष्ट्र-पति क्रूगर (President Krugger) को तार भेजा था। एडवर्ड सप्तम को अपने भांजे कैसर का भीतरी बर्ताव भी पसद न आया। इन सब बातो से उन्होने यही निश्चय किया कि इँगलैंड को भी एक मित्र-सघ तैयार करना चाहिए। इसीलिये आप देश-देश फिरे, राजो तथा राष्ट्र-पतियो से गुप्त सलाह की और इस प्रयत्न मे लग गए कि जहाँ तक सभव हो, योरप मे शांति स्थापित रहे और आपके प्रयत्न से वह रही भी। योरप के शासको पर आपका अच्छा प्रभाव पड़ता था, वे आपकी बात मानते भी थे। १० वर्ष के राजत्व-काल मे इसी शांति-रक्षा के लिये लगातार उद्योग करने के कारण इतिहास मे आपका नाम शांति-प्रिय एडवर्ड (Edward the Peace Maker) पड़ा है।

नए नए मित्र और नई-नई संधियाँ

मिसर (Egypt) मे इँगलैंड और दोनो के स्वत्व

थे, अतएव इन दोनो देशों के बीच बड़ा मन-मुटाव हो रहा था। लोग समझने लगे थे कि एक-न-एक दिन इन दोनो देशो के बीच युद्ध छिड़ जाना अनिवार्य है। परतु शांति-प्रिय एडवर्ड की बात-चीत से यह मन मुटाव शीघ्र ही दूर हो गया और सन् १९०४ में सधि होकर इन देशो मे मित्रता हो गई। इस मैत्री की जड जमाना महाराज एडवर्ड की सूझ और बुद्धिमानो का प्रमाण है। यदि यह न हुआ होता, तो सन् १९१४ मे जर्मन लोग फ्रास और बेलजियम को क्षण-भर मे नष्ट कर डालते और फिर अँगरेजों को इस वीर जाति से अकेले हो लड़ना पड़ता। आश्चर्य हो क्या, यदि वे इँगलैंड मे घुसकर देश को बडी हानि पहुँचाते, जैसा कि फ्रांस और बेलजियम को सहनी पड़ी। इसी प्रकार, सन् १९०७ में, रूस के साथ सधि हो गई और रूसियों के इस देश की ओर बढ़ने की शका का कुछ समय के लिये समाधान हो गया। रूस ने अफग़ानिस्तान को स्वतत्र मान लिया। अँगरेजो ने ईरान के उत्तरीय भाग में रूसियों के अपनी नीति चलाने का पूर्ण अधिकार स्वीकार कर लिया।

बोअर-युद्ध की समाप्ति महाराज एडवर्ड के समय मे सबसे पहले हुई। सन् १९०९ मे केप-कालोनी, नेटाल, ट्रांसवाल (Transval) और ऑरेंज-देश मिलकर 'दक्षिण

आफ्रिका-संघ' (The Union of South Africa) कहलाए ।

रूस जापान-युद्ध (The Russo-Japanese War)
(१६०४-१६०५)

सन् १९०२ मे जापान के साथ संधि हो जाने से भी दोनो देशों को लाभ हुआ। सन् १९०६ मे, मंचूरिया के कारण, रूस और जापान मे जो युद्ध हुआ, उसमे इँगलैंड तटस्थ रहा। अंत मे जापान की जीत होने पर उसे चीन के किनारे का रूसियो का मज़बूत बंदर-स्थान पोर्ट-आर्थर (Port Arthur) मिल गया ।

राजनीतिक घटनाएँ

सन् १९०८ मे उदार-दल (Liberal Party) के नेता तथा लिबरल गवर्नमेंट के प्रधान मंत्री सर हेनरी कैंबल बैनरमैन (Sir Henry Campbell Bannerman) की मृत्यु हो गई। आप ही ने दक्षिण-आफ्रिका के उपनिवेशो का विश्वास कर उन्हे शासन की स्वतंत्रता देकर दक्षिण-आफ्रिका-संघ (The Union Govt-South Africa) की जड़ जमाई और यह नया देश, जिसमे थोडे ही समय पूर्व भयंकर युद्ध हुआ था, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि के समान अँगरेजी-साम्राज्य का एक प्रबल तथा राज-भक्त अंग बन गया और गत महायुद्ध मे उसने

साम्राज्य का अच्छा साथ दिया। जनरल बोथा तथा स्मट्स (General Botha and General Smuts) आदि शत्रु से मित्र बन गए। यह सब सर हेनरी कैंबल बैनरमैन की राजनीतिक दूरदर्शिता और उदार-दल के सिद्धांतो पर दृढ़ विश्वास का फल था।

सर हेनरी की मृत्यु हो जाने पर उनका स्थान मिस्टर एस्किथ (अब लॉर्ड आक्सफोर्ड और एस्किथ—Now Lord Oxford and Asquith) ने ग्रहण किया।

मिंटो मॉर्ले-रिफार्म

(The Minto-Morley Reforms) (१६०६)

इन्हो दिनों लॉर्ड मिंटो (Lord Minto) भारत के वाइसराय और लार्ड मॉर्ले (Lord Morley) भारत-सचिव थे। लॉर्ड मॉर्ले उदार-दल के बड़े विद्वान् राजनीतिज्ञ तथा सिद्धांतवादी समझे जाते थे। लॉर्ड मिंटो भी उसी उदार-दल के थे। दक्षिण-आफ्रिका के देशों को राजनीतिज्ञ स्वतन्त्रता पाते देख इस देश के राजनीतिज्ञों को भी कुछ आशा हुई, जिसे उचित समझकर इन दोनो उदार नेताओं ने इस देश के लोगों को कुछ राजनीतिक अधिकार देने का निश्चय किया और पार्लिमेंट में एक नया कानून उपस्थित करके पास करा लिया।

इस नए ऐक्ट के अनुसार इस देश में गवर्नर-जनरल की तथा बबई, बगाल, मद्रास, संयुक्त-प्रदेश और पजाब की कौंसिलो मे मेम्बरो की सख्या तथा उनके कुछ अधिकार बढ़ा दिए गए।

टैरिफ-रिफार्म (Tariff Reform)

जोजेफ चैबरलेन इँगलैंड की स्वतत्र व्यापारिक नीति के विरुद्ध हो गए। उनका कहना था कि आयात-निर्यात माल पर महसूल न लगाने से इँगलैंड की बहुत हानि हो रही है। अतएव प्रत्येक माल पर महसूल का दर निश्चित कर दिया जाय और उसी के अनुसार महसूल लिया जाय। विदेशो से लाकर माल सस्ता बेचा जाता है, जिससे स्वदेशी माल महँगा पड़ने से कोई नही लेता। इसी से उनका मत था कि बने हुए विदेशी माल पर महसूल लिया जाया करे।

साम्राज्य के देशो के माल पर वे कुछ कम महसूल रखना चाहते थे। उन्हे विश्वास था कि यह रियायत पारस्परिक (Preferential) होगी।

इँगलैंड उदार-दल (Liberal Party) बहुत काल से स्वतत्र-व्यापार-नीति (Free Trade Policy) के पक्ष में रहा है; भला वह चैम्बरलेन के कहने पर अपना पुराना मत कैसे बदल दे। निदान उसने तो विरोध किया ही; साथ ही

यूनियनिस्ट (Unionist)-दल के नेताओं ने भी चेंबरलेन का साथ नहीं दिया। वे जानते थे कि ऐसे विषय पर इँगलैंड में जनता का मत बदल सकना बहुत ही कठिन बात है।

यह देख जोजेफ चैंबरलेन ने अपना सचिव-पद त्याग कर, सन् १९०३ मे, इसी आंदोलन मे भिड़ जाने के लिये कमर कस ली। क्रमशः उसका दल पढ़ने लगा। यूनियनिस्ट दल के कई नेता अपना-अपना पद छोड़कर इस आंदोलन मे मिल गए। प्रधान मंत्री आर्थर बालफोर (Arthur Balfour) ने भी चैंबरलेन का मत ग्रहण किया और अपने दल के ही स्वतन्त्र व्यापार-वादियों का विरोध देख उन्होंने प्रधान मन्त्रित्व से हाथ धोया। बस, कंजरवेटिव (Conservative)-दल इस प्रकार तीन-तेरह हो गया।

लिबरल-दल का शासन (१९०६)

शासन की लगाम फिर उदार-दल के हाथ मे आई। सर हेनरी कैंबल बेनरमैन प्रधान-मन्त्री हुए। एस्किथ और लॉयड जार्ज मन्त्रि-मंडल में नियुक्त हुए।

सन् १९०६ मे, नए चुनाव के समय, उदार-दल की संख्या अच्छी रही। जहाँ यूनियनिस्ट-दल के १५७ सदस्य चुने गए, वहाँ उदार-दल के ३७९। कुछ काल से पार्लिमेंट में एक

नया दल दिखाई देने लगा था। यह लेबर-पार्टी (Labour Party) या श्रमजीवी दल था। यह धीरे-धीरे बढ़ रहा था; पर सन् १९०६ के चुनाव मे इसकी सख्या एकदम ५० हो गई। ये लोग अकेले तो कुछ कर नही सकते थे, इसलिये उदार-दल से मिलकर काम किया करते थे।

एस्क्विथ—प्रधान मन्त्री (१९०८)

सन् १९०८ मे सर हेनरी कैबेल बेनरमैन का स्वास्थ्य बिगड जाने से, उन्होने प्रधान मन्त्रित्व से इस्तीफा दे दिया और उनके स्थान पर मिस्टर एस्किथ प्रधान-मन्त्री बने। मिस्टर लॉयड जॉर्ज कोषाध्यक्ष (Chancellor of the Exchequer) बनाए गए। सर हनरी कैबल बेनरमैन की मृत्यु हो गई।

पार्लिमेंट-ऐक्ट और लॉर्ड तथा कामन्स मे झगड़ा (१९१०-१९११)

सन् १९०६ मे मन्त्रि मडल (Cabinet) ने पर-राष्ट्र-नीति (Foreign Policy) मे किसी प्रकार का परिवर्तन न करके, फ्रास, जर्मन आदि शक्तियों से पीछे-जैसे हेल-मेल रक्खा और दक्षिण-आफ्रिका मे सयुक्तराज्य स्थापित हो गया, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है। पर घरू बातो मे उस तरह की शाति न रह सकी। इसका कारण मिस्टर लॉयड जॉर्ज का पेश किया हुआ आय-व्यय का चिट्ठा (Budget) था।

मिस्टर लॉयड जॉर्ज ने बजट बनाया, उसमे बड़े आद-मियों पर कर अधिक लगा दिया। कामस-सभा मे तो यह बजट बहुमत से स्वीकृत हो गया; पर जब वह लॉर्ड-सभा मे भेजा गया, तो अस्वीकृत कर दिया गया। यह एक असा-धारण घटना थी, क्योंकि बहुत समय से यह नियम-सा हो गया था कि आय-व्यय-सबधी विषयों मे कामस-सभा को पूर्ण अधिकार है, अतएव लॉर्ड-सभा उनमे हस्तक्षेप न करे। लॉर्ड लोगों का कहना था कि यह निरा आय-व्यय का प्रश्न नहीं है, प्रश्न है लोगों पर कम-बढ़ कर लगाने के सिद्धात का। अत-एव हमारा हस्तक्षेप करना उचित है। लॉर्ड लोग समझे थे कि देश के अन्य धनी, जो लॉर्ड नही है, इस बजट का अनु-मोदन कदापि न करेंगे। निदान बहुत आंदोलन होने के बाद, देश की सम्मति मालूम करने के अभिप्राय से, सन् १९१० मे चुनाव हुआ।

सन् १९१० का चुनाव

इस चुनाव में लिबरल-दल के कई सदस्यो को हार माननी पड़ी; पर अत मे लिबरल, लेबर (मजदूर) और आयर्लैंड के प्रतिनिधियों के सम्मिलित योग से कजारवेटिव दल की सख्या कम रही। अतएव शासन फिर भी लिबरल दल के हाथों आया।

बजट पास

अब तो बहुमत अपने पक्ष मे देख लिबरल गवर्नमेंट ने मि० लॉयड जार्ज का बजट फिर से कामस-सभा मे पेश कर स्वीकृत करा लिया। यह देख लार्ड-सभा ने भी उसे चुपचाप पास कर दिया। यदि वे कुछ खटपट करते, तो मानो देश के मत के विरुद्ध जाते, उधर गवर्नमेंट राजा से निवेदन कर इतने नए लॉर्ड बनवा देती कि लॉर्ड-सभा मे भी विरोधी लॉर्डों का पक्ष हीन होने पर बजट का मसविदा (Bill) पास हो जाता।

इस समय जो प्रस्ताव पास हुए, उनसे आर्थिक बातों पर लॉर्ड-सभा का कुछ भो अधिकार न रह गया। सिद्धांत यह है कि गवर्नमेंट की अधिकांश आमदनी जनता के दिए हुए करों से ही हुआ करती है। अतएव सरकारी खर्च भी जनता के प्रतिनिधियों की राय से ही होना न्याय है। उसमे लॉर्डों का हस्तक्षेप करना उचित नही। यह सिद्धांत तो पहले भी माना जाता था, पर सन् १९११ की कार्यवाही से वह और भी पक्का हो गया। सरकारी कोष की कुजी पूरे तौर से कामस-सभा अर्थात् जनता के प्रतिनिधियों के हाथ मे रही।

लॉर्डों को अपना और भी अधिकार खो देना पड़ा। कामस-सभा ने यह प्रस्ताव भी पास कर दिया कि यदि कोई नियम कामस-सभा मे तीन बार लगातार पास होता जाय, पर तो

भी लॉर्ड-सभा उसे रद् कर दे, तो गवर्नमेंट उस पर राजा के हस्ताक्षर लेकर उसे पार्लिमेंट का ऐक्ट मान ले। सारांश यह कि उस समय साधारण जनता लॉर्ड-सभा के विरुद्ध बहुत भड़क उठी थी। बात यहाँ तक आ गई थी कि बहुतेरे लॉर्ड-सभा के तोड़ देने तक का निश्चय कर बैठे थे। उन दिनों यह विवाद बहुत जोरों से चला और ऐसा मालूम होने लगा कि लॉर्ड-सभा की रचना मे कोई बड़ा परिवर्तन होता ही है। पर दूसरी-दूसरी महत्त्व-पूर्ण घटनाओ के कारण लोगो का ध्यान दूसरी ओर चला गया। और यह प्रश्न उस समय स्थगित-सा हो गया।

एक यह नियम भी बनाया गया कि साधारण रीति से पार्लिमेंट-सभा की अवधि ७ से ५ वर्ष की हो।

सप्तम एडवर्ड की मृत्यु (मे, सन् १९१०)

महाराज सप्तम एडवर्ड इसी आंदोलन के समय, सन १९१० के मे-महीने मे, स्वर्गवासी हुए और सारे ब्रिटिश-साम्राज्य में शोक छा गया।

शांति-प्रिय महाराज एडवर्ड ने जिस प्रकार अपने राजत्व-काल के आरभ मे योरप की अन्य शक्तियों के साथ मैत्री स्थापित की, उसी तरह साम्राज्य के भिन्न-भिन्न अगो के बीच अधिक हेल-मेल और सहयोग स्थापित करने का प्रयत्न किया।

सन् १९०२ में औपनिवेशिक मंत्री जोज़ेफ चैंबरलेन ने भिन्न-भिन्न उपनिवेशों के प्रधान मन्त्रियों (Premiers) को एकत्र कर इंपीरियल कान्फ्रेंस (Imperial Conference) की प्रथम बैठक कराई। इस साम्राज्य-सम्मेलन में कई महत्त्व-पूर्ण प्रश्नों पर विचार किए गए और यह निश्चय हुआ कि यह कान्फ्रेंस प्रति चौथे वर्ष बुलाई जाया करे।

सन्	मुख्य-मुख्य घटनाएँ
१९०१	एडवर्ड सप्तम का राज्याधिरोहण
१९०४	इँगलैंड और फ्रांस की संधि
१९०४-०५	रूस और जापान का युद्ध
१९०७	इँगलैंड और रूस की संधि
१९०९	दक्षिण-आफ्रिका-संघ ; मिंटो-मॉर्ले-रिफॉर्म्स
१९०९-१०	पार्लिमेंट-ऐक्ट
१९१०	एडवर्ड सप्तम की मृत्यु

सप्तम परिच्छेद

जॉर्ज पचम

(१६१०)

एडवर्ड सप्तम की शोकमय मृत्यु हो जाने पर हमारे वर्तमान सम्राट् महाराज जॉर्ज पचम को इँगलैड का राज्य मिला । जबसे आपके ज्येष्ठ भ्राता अल्बर्ट विक्टर (Albert Victor) का देहांत हो गया था, तबसे आप युवराज के पद पर थे। पहले तो आपकी शिक्षा राजबंश के एक राजकुमार की तरह हुई थी और अपने नौ-विभाग (Navy) में कई वर्ष नौकरी की ; पर बड़े भाई की आकस्मात् मृत्यु हो जाने के पश्चात् आपके जीवन का स्रोत एक नई दिशा में बदल गया। आप ब्रिटिश-साम्राज्य के युव-राज और पिता के मरने पर अधीश्वर हुए। लिबरल पार्लिमेंट ने लॉर्डों को नीचा दिखाकर निम्न-लिखित और उपयोगी राज्य-नियम (Acts) पास किए।

राष्ट्रीय बीमा आदि बिल

(The National Insurance Bill)

इस बिल के स्वीकृत होने पर मजदूरों को बीमार पड़ने
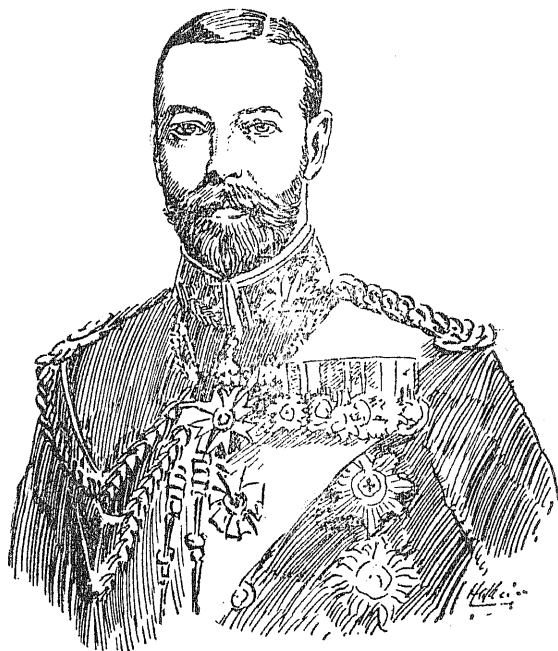
जॉर्ज पंचम

तथा काम करने के योग्य न रहने पर, सरकार से सहायता मिलना आरंभ हुआ। साथ ही एक दूसरे राज्य-नियम के स्वीकृत होने पर बालकों को डॉक्टर लोग जाकर देखने लगे।

मज़दूरों और पूँजीपतियों के बीच जो संबंध था, उसके विषय में भी राज्य-नियम बना दिए गए।

वेल्स में सरकारी चर्च का उठाना

(Disestablishment of Welsh Church)

वेल्स के निवासी अधिकांश नान-कानफर्मिस्ट (Non-confirmist) थे, अर्थात् वे सरकारी चर्च के अनुयायी नहीं थे। वे अपने-अपने सम्प्रदाय का खर्च अलग चलाते थे, तो भी उन्हें सरकारी चर्च का खर्च पूरा करना पड़ता था। वे इसे घोर अन्याय समझते थे और बहुत समय से इसके विरुद्ध आंदोलन उठा रहे थे। उनका कहना था कि आयर्लैंड मे जिस प्रकार सरकारी चर्च नहीं है, उसी तरह वह वेल्स से भी उठा दिया जाय। निदान कामस-सभा मे यह मसविदा स्वीकृत हो गया।

तीसरा होमरूल-बिल

(The third Home Rule Bill)

आयर्लैंड के रोमन कैथलिक तो बहुत समय से "होम-रूल" अर्थात् स्वराज्य चाहते थे और ग्लैडस्टन के मन्त्रित्व में दूसरी बार पेश होकर, होमरूल-बिल कामस-सभा में पास भी हो चुका था; पर लॉर्ड-सभा ने उसे रद कर दिया था। इस बार फिर तीसरा होमरूल-बिल कामस-सभा में पेश हुआ और पास हो गया। पर जब ये दोनो उपर्युक्त बिल लॉर्ड-सभा में पेश हुए, तो लॉर्ड लोगो ने उन्होंने रद कर दिया। इप पर कामस-सभा ने इन्हे बार-बार

महारानी मेरी

पास तो किया, पर अनेक कारणों से ये राज्य नियम (Act) न बन सके। होमरूल-बिल का घोर विरोध आयर्लैंड के अल्स्टर प्रांत ने किया। स्मरण रहे कि आयर्लैंड के तीन प्रांत मस्टर (Munster), लीस्टर

और कनॉट (Connought) रोमन कैथलिक थे; पर अल्स्टर प्रोटेस्टेंट था। अल्स्टरवाले अधिकांश इँगलैंड और स्कॉटलैंड से जाकर वहाँ बसनेवालो की सतान थे और इन्होंने रोमन कैथलिको पर बहुत अत्याचार किए थे। इसलिये इन्हे भय था कि एक-सा अधिकार पाने पर अब रोमन कैथलिक भी हमे तग करेंगे। इसी से अल्स्टर-निवासी आयर्लैंड की पार्लिमेंट मे नहीं मिलना चाहते थे। बात यहाँ तक बढ़ी कि ये लोग खुल्लमखुल्ला लडाई की तैयारियाँ करने लगे।

उपद्रव बढ़ता देख एस्क्विथ की गवर्नमेंट ने एक सशोधक नियम (Amending Bill) पास कराके, यह निश्चय कर लेना चाहा कि अल्स्टर आयर्लैंड के अन्य तीन प्रांतो के साथ शासन-कार्य मे सम्मिलित हो, अथवा न हो। गवर्नमेंट के इस प्रस्ताव का भी घोर विरोध हुआ। किसी भी दल का उससे सतोष न हुआ। इस पर यह प्रस्ताव पार्लिमेंट मे पेश न होकर हाल में विचाराधीन रक्खा गया।

मताभिलाषी स्त्री-दल

इन्ही दिनो विलायती स्त्रियो ने भी पुरुषों के समान; पार्लिमेंट के समान मेंबर चुनने का अधिकार प्राप्त कर लेने के लिये, बड़ा आंदोलन उठाया, यहाँ तक उनके मारे बड़े-बड़े मन्त्रियों

को सभाओं मे बोलना कठिन हो गया। इन लोगो ने दगे करने भी आरभ कर दिया और धडाधड़ जेल जाने लगो।

योरपीय महायुद्ध और उसके कारण

इतने मे योरप का महायुद्ध छिड गया। यह कैसे हुआ, इसके होने के क्या-क्या कारण थे, इन सब प्रश्नो का सतोष-दायक उत्तर अभी तक नही मिला। जर्मन लोग अब भी नही मानते कि हमी लोग इस युद्ध के मूल कारण है, हमी ने वह चिनगारी फेकी थी, जिससे यह दवार लग गई। पर यह तो साधारण तौर से मान लिया गया है कि जर्मनो ने युद्ध के लिये कमर कस ली थी। वे चहते थे कि योरप मे ही क्या, सारे ससार मे हमारी धाक जम जाय और हमारी उन्नति मे बाधा डालने-वाला कोई दूसरा राष्ट्र न रह जाय।

फ्रांस पर पूर्ण विजय पाने के बाद जर्मनो की इस साम्राज्य-लिप्सा का आरभ सन् १८७१ से हुआ। इसी समय से सारा जर्मन देश एक होकर अपनी उन्नति के मार्ग मे अग्र-सर हुआ। वैसे तो जर्मन-सेना पहले भी बहुत प्रबल थी, पर सन् १८७१ के बाद से उसकी वृद्धि और उन्नति उत्तरोत्तर होती गई। बालको और वृद्धो को छोड़कर प्रत्येक जर्मन युद्ध कला मे शिक्षित होने लगा।

पहले जर्मन-जाति के पास जहाज न थे, पर कैसर विलियम

ने इस त्रुटि की पूर्ति की और एक अच्छा जहाजी बेड़ा तैयार कर डाला। उसे इँगलैंड से विशेष स्पर्द्धा थी और, इँगलैंड अपनी जल-सेना के लिये सदा से प्रसिद्ध है, इसीलिये उसने यह जहाजी बेड़ा तैयार किया था। उसे इस बात का खयाल न था कि केवल नौ-सेना बना लेने से कुछ नहीं होता, बल्कि इन सैनिकों को सफलता प्राप्त करने के लिये पीढ़ी-दर-पीढ़ी का अभ्यास और अनुभव भी तो चाहिए। अपने जहाजों की संख्या को अँगरेजी-जहाजों की संख्या के बराबर कर देने में ही कैसर सब कुछ समझते थे।

इसमें संदेह नहीं कि आधी शताब्दी के भीतर-भीतर जर्मनों ने शिक्षा, व्यापार, कला-कौशल, विज्ञान आदि सभी बातों में आशातीत उन्नति कर दिखाई और साथ ही उनमें राष्ट्रीय भावों का भी उत्कर्ष हुआ। नए-नए आविष्कार कर वे तरह-तरह का माल पैदा करने लगे, जिससे उन्हें व्यापार के एक बहुत बड़े क्षेत्र की आवश्यकता देख पड़ने लगी। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये उन्हें अपने समीप के फ्रांस, बेलजियम आदि देशों को अपने अधिकार में लाने की सूझी। एशिया में भी अपना सिक्का जमाने की इच्छा से, उन लोगों ने टर्की को मिलाकर बगदाद-रेलवे खोलने का निश्चय कर डाला और कार्य का आरंभ भी कर दिया।

इधर स्कूलों मे बालकों को हर तरह से यह शिक्षा दी जाने लगी कि इस ससार मे जर्मन-जाति के समान योग्य और श्रेष्ठ जाति दूसरी नही है, इसलिये ससार की पूर्ण उन्नति तभी हो सकती है, जब अन्य सब जातियां जर्मनों के अधिकार मे आ जायॅ । यह शिक्षा भी दी जाने लगी कि ससार का इतना उपकार करने के लिये युद्ध की आवश्यकता है, अतएव ऐसे अच्छे कार्य के लिये युद्ध करना प्रत्येक जर्मन का कर्तव्य है । नीटशे (Neitsche) आदि दार्शनिकों ने ऐसे ही विचार जर्मनों के मस्तिष्क मे भर दिए और दया, धर्म आदि पुरानी शिक्षाओ को गुलामो की शिक्षा बतलाया । ऐतिहासिक घटनाओ तक को वह रूप दिया, जिससे उनके इन नए सिद्धांतों की पुष्टि हो ।

जर्मनी और अन्य योरोपीय राष्ट्र

जर्मनी की इस असीम उन्नति को देख फ्रांस आदि अन्य राष्ट्रों को बड़ी चिता मे पड़ना पड़ा । निदान आस्ट्रिया भी जर्मनी के साथ मिल गया और सन् १८८२ मे इटली ने भी उस के साथ इसी प्रकार की सधि कर ली । इसी मेल का नाम 'त्रिविध मेल' (Triple Alliance) हुआ । अपने शत्रु जर्मनी को इस तरह प्रबल होते देख और अपने नाश को अवश्य-भावी समझकर फ्रास न भी रूससे इसी प्रकार का सबध

जोड़ लिया और इँगलैंड को भी अपने साथ लेने का प्रयत्न करने लगा। एडवर्ड सप्तम के उद्योग से, अंत मे इँगलैंड ने अपने हितों के ख़याल से इन पुराने शत्रुओं से मित्रता कर लेना ही उचित समझा।

सिरायेवो (Serayevo) मे आस्ट्रिया के युवराज का वध

बास्निया किसी समय तुर्कों का प्रांत था। सन् १९०८ मे वह आस्ट्रिया का हो गया। बस्नियावालों को यह बात अच्छी न लगी। वे स्लैव (Slav) जाति के थे और आस्ट्रियावाले भिन्न जर्मन और माडयार-जाति के अतएव, बास्निया-वाले उनसे नहीं रूस, सर्बिया आदि स्लैव-जातियों से मिलकर रहना चाहते थे। इस बात मे बास्निया से सर्बिया की स्वाभाविक सहानुभूति थी। बस यही कारण था कि आस्ट्रिया सर्बिया को भी हड़पना चाहता था, और इस बात का मौका ही ढूँढ़ रहा था। निदान उसे मौका मिल गया। सन् १९१४ के जून महीने में आस्ट्रिया का युवराज फ्रैंज़फर्डिनड बास्निया में घूमने गया था ; २८ जून को राज-धानी सिरायवो मे वह गोली से मार डाला गया। आस्ट्रिया ने इस दुर्घटना का सारा दोष सर्बिया के मत्थे मढ़ना चाहा। २८ जून को सर्बिया की सरकार के पास आस्ट्रिया का पत्र पहुँचा, जिसमें १० ऐसी कड़ी तथा अपमान-पूर्ण शर्तें थीं, जिन्हें कोई

भी स्वतत्र देश स्वीकार नही कर सकता। ४२ घटो के भीतर जवाब माँगा गया। सर्बिया एक छोटा-सा देश था, आस्ट्रिया से लोहा लेना उसके लिये असम्भव था। इसलिये उसने १० मे से ८ शर्ते तो स्वीकार कर ली, पर आस्ट्रिया कब माननेवाला था, वह तो सर्बिया को नष्ट करने पर तुला था। निदान ४८ घटे पूरे होते ही आस्ट्रिया की सेना सर्बिया की सीमा पार कर गई।

यह देख रूस ने अपने सजातीय सर्बिया को सहायता देने के उद्देश से अपनी सेना बढाई और आस्ट्रिया के पास रण-घोषणा का का पत्र भेज दिया। यह देख जर्मनी ने आस्ट्रिया के पक्ष मे होकर फ्रांस और रूस, दोनो मित्र-राष्ट्रो के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। अब रहा इँगलैड, सो उसकी नीति यही थी कि जहाँ तक बन सके, युद्ध बरकाया जाय। इस उद्देश में उसने जर्मनी, सर्बिया, आस्ट्रिया आदि को समझाना चाहा कि युद्ध से नाश होगा, इसलिये शांतिपूर्वक समझौता करके प्रश्न हल किया जाय।

यह सब हो ही रहा था कि जर्मनी निरपराध बेलजियम मे अपनी सेना ले घुस पड़ा। उसका कहना था कि फ्रांस पर हमला करने के लिये और कोई दूसरा सुलभ मार्ग नहीं है, इसलिये हमे रास्ता दो। बेलजियम इस तरह जर्मन-सेना को

अपने देश मे नहीं आने देना चाहता था। सन् १८३९ मे एक ऐसी संधि भी हो चुकी थी कि यदि बेलजियम पर कोई देश हमला करे, तो इँगलैंड और जर्मनी उसे ऐसा न करने दे। इँगलैंड की ओर से जर्मनी के प्रधान मंत्री (Chancellor) को जब इस संधि का स्मरण कराया गया, तो उसने झुँझलाकर कहा कि आवश्यकता के समय कोई नियम नहीं चलता। ऐसे समय उस निरे कागज के चिथड़े (A mere scrap of paper) अर्थात् संधि-पत्र का कोई मूल्य नहीं है।

पश्चिमी रण-क्षेत्र (Western Front)

जब जर्मनी ने इँगलैंड की एक न मानी और बेलजियम मे उसकी सेना घुस ही गई, तो १९१४ की चौथी अगस्त को इँगलैंड ने भी जर्मनी के विरुद्ध रण-घोषणा कर दी। जर्मनों ने सोचा था कि बेलजियम को तो इतना साहस होगा ही नहीं कि वह हमसे मुठभेड ले और अपना सर्वनाश करवा डाले। इसलिये हम जाकर शीघ्र ही फ्रांस की राजधानी पेरिस को ले लेंगे और समुद्र-तट तक पहुँचकर इँगलैंड की खबर लेंगे। फिर वह हमसे लड़ने के लायक सेना पावेगा ही कहाँ से, शीघ्र हमारे वश मे आ जायगा। रूस से फिर समझ ली जायगी। जर्मनी ने तो सोची खूब; पर वैसा हो, तब न ? बेलजियम ने अतुल साहस दिखलाकर, दिल खोलकर लड़ाई की। वह अधिक समय तक तो

न भिड सका, पर इॅगलैड और फ्रास को तैयार होने के लिये उतना समय अवश्य मिल गया, जिससे बात ही दूसरी हो गई।

बेलजियम को पटककर जर्मन-सेना उत्तरीय फ्रांस मे जा घुसी। उसके प्रवाह को फ्रांसवाले न रोक सके। बढ़ते-बढ़ते अब पेरिस केवल ४० मील रह गया। ऐसा मालूम होने लगा कि अब फ्रांस नही बच सकता, जर्मनो की जीत मे सदेह नही। इसी समय फ्रास के बहादुर सेनापति जिआफ्रे (Joffrey) ने फ्रांसीसी सेना को उत्साहित कर जर्मन-सेना के प्रवाह को रोक लिया और दोनो ओर सैनिक खाइयाँ (Trenches) खोद-खोदकर उनमे जा घुसे। खाई-लडाई शुरू हो गई। मौके पर एक दूसरे के धावे होने लगे। आस-पास के वृक्षो तथा टीलो पर बदूकवाले छिपकर बैठ गए और खाइयां मे जिसने सिर निकाला या हाथ उठाया, उसी को दन से गोली मारी जाने लगी।

निदान अँगरेजी-सेना भी रण-क्षेत्र पर पहुँच गई और हिदुस्तानी वीर भी जाकर डट गए। धीरे-धीरे ये खाइयाँ सैकडो मील लबी फैल गई। फ्लैडर्स (Flanders) से वर्डून (Verdoon) तक इधर तो बेलजियम, फ्रांस और अँगरेजो के सैनिक डटे थे, और उस तरफ जर्मनी के।

यह बहुत ही विचित्र तथा अभूतपूर्व युद्ध था। शत्रु को

शत्रु देखता नहो था, पर तोप बंदूक आदि चलती ही रहती थी। ऊपर से वायुयानों द्वारा बम बरसते और नीचे से सुरग द्वारा सैनिक उड़ा दिए जाते थे। जर्मन लोग विषैले गैस छोड़ कर शत्रुओं के प्राण लेते थे और अँगरेज लोग टैंक (Tank)-नामक एक प्रकार की मोटर-गाड़ियों को तोपों से सुसज्जित कर शत्रुओं मे घुस जाते और उन्हे मारते थे। ये टैंक अँगरेज-वैज्ञानिको ने युद्ध के समय आविष्कृत किए थे। ये पहाड़ियों पर चढ़ जाते, खाइयो को पार कर सकते और तोप के गोलों तक को झेल लेते थे। इनके आ जाने पर भागते ही बनता था। जर्मनो के हवाई जहाज़ जे पलिन (Zappeline) आदि लदन, पेरिस प्रभृति नगरो पर बम बरसाते थे। जर्मनों ने ऐसी भी तोपे बनाई थो, जिनके गोले ७२ मील तक की ख़बर लेते थे !

पहला पूर्वी रण-क्षेत्र (Eastern front)

पूर्व की ओर आस्ट्रिया और जर्मनी, रूस और इटली से लड़ रहे थे। पहले तो रूसी सेना का बेलन (The Russian Steam Roller) आस्ट्रिया की सेना को कुचलता हुआ बहुत दूर तक निकल गया ; पर अवसर पाकर जर्मन-सेना आस्ट्रिया की सहायता के लिये पहुँच गई और दोनो ने मिलकर रूसियों को अपने देश ही से नहीं निकाल दिया, बल्कि

रूस मे जा घुसी। वहाँ भी घमासान युद्ध होने लगा। रूस का बहुत-सा भाग जर्मनों ने ले लिया। रूस की इस हार से भी पश्चिमी रण-क्षेत्र मे मित्र-राष्ट्रो को कुछ आराम मिला और लॉर्ड किचनर को एक नई अँगरेज़ी-सेना तैयार करने का अवकाश मिला।

सन् १९१७ मे रूमी बहुत ढीले पड गए। सेना-भर मे जर्मनों के उद्योग से राज-भक्ति की मात्रा घटने लगी। सैनिकों मे यह विचार फैलाया गया कि तुम इस अत्याचारी शासन के लिये अपने प्राण क्यो दे रहे हो। रूस मे राज-क्रांति के बीज पहले से ही बो दिए गऐ थे; वे अब उग उठे और दिनो-दिन लहलहे हो चले। क्रांतिकारियों ने भी खूब उद्योग किया। निदान १९१७ के मार्च-महीने मे जार निकोलस द्वितीय (Nicholas II) पदच्युत किया गया और रूसी बोलशेविक (गर्म)-दल ने प्रजा-तन्त्र स्थापित कर जर्मनी से सधि कर लेने की बातचीत चलाई। मार्च, सन् १९१८ मे ब्रेस्ट लिटोव्स्क (Brest Litovsk) की सधि होकर रूस और जर्मनी मे मेल हो गया।

दक्षिण पूर्वी रण-क्षेत्र

तुर्कों को कैसर ने पहले से ही मिला रक्खा था, नही तो बगदाद-रेलवे कैसे बनती और युद्ध के समय वे काम कैसे

आते ? सारांश यह कि तुर्क जर्मनो से ही मिले और उन्होंने मित्र-राष्ट्रो से सन् १९१४ मे ही, लड़ना आरम्भ कर दिया। इस मेल को देखकर मित्र-राष्ट्रों—खासकर अँगरेजों—को इस बात की आशका हुई कि शत्रु-दल ईजिप्ट (मिसर) को अपने वश मे करके भारत तक की खबर लेने का प्रयत्न करेगा। अतएव उन्होंने तुर्कों का रास्ता रोकने के लिये, सन् १९१५ में, दर्रेदानयाल (Dardanelles) को कब्जे मे कर लेने का प्रयत्न शुरू कर दिया। पर अत मे ४० हजार के लगभग सैनिक खोकर निष्फलता ही हाथ लगी।

बलगेरिया (Bulgaria) और यूनान (Greece)

दर्रेदानयाल की इस निष्फलता को देख बलगेरिया भी इस अग्नि मे कूद पडा और उसने आस्ट्रिया की सहायता से सर्बिया का गला धर दबाया। स्मरण रहे, बलगेरिया का राजा स्वय एक जर्मन राज-कुमार था, इसलिये उसकी सहानुभूति जर्मनों से होना स्वाभाविक था। यही हाल यूनान का भी था। वहाँ का राजा कान्स्टैनटाइन (Constantine) कैसर का बहनोई होता था, इसलिये वह बहुत चाहता था कि जर्मनों का पक्ष लिया जाय। पर उसका मंत्री वेनिज़ेलस (Venezuelus) मित्र-राष्ट्रों के पक्ष में था। इस घरू-झगड़े का फल यह हुआ कि यूनानी प्रजा ने क्रांति कर दी और राजा कांस्टैनटाइन को देश छोड़-

कर भागना पड़ा। यह तो हुआ, पर यूनानियों ने सर्विया को मन से सहायता न दी। देते कैसे? सर्विया, बलगेरिया, रूमानिया, यूनान आदि बालकन राज्यों में कभी मित्रता रही ही नहीं। जब मौका लगा, एक ने दूसरे का घर दबाया। निदान वेनिज़ेलस के उद्योग से, सन १९१७ में, यूनानियों ने भी मित्र राष्ट्रों के पक्ष में जर्मनों से युद्ध की भेरी बजा दी। इटली तो पहले से ही आस्ट्रिया से भिड़ा था। रूमानिया-राज्य न तो स्लैव था, न जर्मन। वह फ्रांस, इटली आदि के समान लैटिन-जाति का था, इसलिए पहले से ही मित्र-राष्ट्रों के पक्ष में हो गया था।

इराक रण-क्षेत्र

ईजिप्ट (Egypt) और हिंदुस्तान की रक्षा के लिए अँगरेज़ इराक (Mesopotamia) में तुर्कों से लड़ रहे थे और अरब लोग इनसे मिले हुए थे। उन्हें तुर्कों से बगावत कर स्वतंत्र राज्य स्थापित करने का हौसला था। इस रण-क्षेत्र में एक दुर्घटना हो गई। 'कुत्ल-अमारा' (Kut-Amara) के मैदान में तुर्कों ने अँगरेज़ों की बहुत-सी सेना क़ैद कर ली।

आफ्रिका का रण-क्षेत्र

मध्य आफ्रिका में जर्मनों के कुछ उपनिवेश थे। वहाँ के जर्मनों तथा अँगरेज़ों के बीच भी लड़ाई चली।

रेंजो—को बडी हानि पहुँचाई। तटस्थ देशों के जहाज भी डुबाए जाने लगे। जिससे सारे ससार मे हाय-हाय मच गई। फलतः उनका यह काम अमानुषिक समझा गया और सारा ससार जर्मनी के विरुद्ध हो गया।

अमेरिका की युद्ध-घोषणा (फरवरी, १९१७)

अमेरिका के एक यात्रियों से भरे जहाज को डुबोकर जर्मनी ने सैकड़ों स्त्री पुरुष और अबोध बच्चो के प्राण लिए। इस पर युनाइटेड स्टेट्स (United States) के राष्ट्रपति विलसन ने इस कार्य की निंदा करते हुए जर्मनी को सचेत करना चाहा, पर उनकी भी एक न सुनी गई। यह हत्या-कांड जारी ही रहा। युद्ध का यह समय मित्र-राष्ट्रों के लिये बड़ा भयकर था। ऐसा मालूम होने लगा था कि जर्मन और उनके मित्रो की ही जीत रहे, तो आश्चर्य नही। पर ठीक इसी कठिनाई के समय अमेरिकावालों ने फरवरी, सन् १९१७ मे जर्मनी के विरुद्ध युद्ध छेड दिया।

इधर तो अमेरिका से सैनिकों के जहाज-पर-जहाज आ आकर पश्चिमी रण-क्षेत्र मे लड़ने लगे और २ वर्षों के भीतर इनकी सख्या २० लाख तक पहुँची, उधर अँगरेजो ने भी भगीरथ प्रयत्न किया। पहले तो प्रसिद्ध सेनापति लॉर्ड किचनर युद्ध-मत्री बनाए गए, दूसरे रण-सामग्री प्रस्तुत

करने के लिये एक नया मुहकमा (Munitions Board) स्थापित किया गया और महाउद्योगी मि० लॉयड जॉर्ज इस मुहकमे के मंत्री नियत हुए । तीसरी मे, सन् १९१६ मे १८ से ४१ वर्ष की अवस्था तक के प्रत्येक व्यक्ति को सैनिक-शिक्षा प्राप्त कर युद्ध मे जाना कानून द्वारा अनिवार्य ठहराया गया । वैसे तो ऐसा कानून जर्मनी, फ्रांस आदि देशों मे पहले से ही जारी था ; पर इँगलैंडवाले अनिवार्य सैनिक-शिक्षा (Conscription) के कानून को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नाशक समझकर उससे घृणा करते थे । धन्य है इतना स्वदेश-प्रेम कि ऐसे अवसर पर थोड़े-से झक्कियों को छोड़कर शेष ने किसी प्रकार का आक्षेप नही किया और इस राज्य-नियम को शिरोधार्य कर लिया ।

निदान लॉर्ड किचनर की योजना के अनुसार इँगलैंड मे एक नई सेना बडी मुस्तैदी से तैयार होने लगी । पर एक ही मास के बाद लॉर्ड किचनर का जहाज़ डुबो दिया गया । हाँ, उनकी मृत्यु तो हो गई, पर उनकी बनाई हुई योजना बनी रही, जिसके अनुसार कार्य करने से वह सेना बनी, जिसने अन्य देशों की सेनाओं के साथ इस युद्ध का अंत ही कर डाला ।

मिस्टर लायड जार्ज का प्रधान मंत्रित्व

मि० लायड जॉज ने इस युद्ध मे अच्छा नाम कमा लिया। आपके प्रगाढ़ प्रयत्न से रण-सामग्री की कमी ही पूरी नहीं हुई, बल्कि उसका ढेर लग गया। युद्ध मे सफलता पाने के लिये, पुराने मत्रियों के सबध मे, लोगो का विश्वास-सा घट गया। मि० लॉयड जॉर्ज का बर्ताव देखकर मि० एस्क्विथ ने इस्तीफा दे दिया। बस, जनता के लाडले मि० लॉयड जॉर्ज प्रधान मत्री बनाए गए। सबसे बढ़कर बात यह हुई कि इस आपत्ति के समय मे मत्रि-मडल दल-बदी की प्रथा को स्थगित कर नए रूप से बनाया गया, अर्थात् उदार, अनुदार, श्रमजीवी आदि सभी भिन्न-भिन्न दलो के योग्य-से-योग्य नेताओ को मत्रि-मडल मे स्थान दिया गया। इस मत्रि-मडल का नाम 'सम्मिलित मत्रि-मडल' (Coalition Ministry) रक्खा गया। इसके सिवा कई नए-नए शासन-विभाग या मुहकमे भी स्थापित किए गए और देश के वाणिज्य-व्यापार पर भी सरकार ने अपना अधिकार जमा लिया, यहाँ तक कि प्रत्येक स्त्री-पुरुष को नियमित तौल के अनुसार भोजन-सामग्री दी जाने लगी, जिससे न तो रसद कम हो और न दुर्भिक्ष ही पड़ने पावे। इस प्रबध मे महँगी तो नही रुक सकी, पर सामग्री का नितांत अकाल

नही पड़ने पाया और न सेनाओ की रसद मे ही कमी हुई। इस प्रकार स्वतत्रता के सच्चे भक्त अँगरेजो ने देश के कल्याणार्थ व्यक्ति-गत स्वतत्रता पर जोर न देकर त्याग का उच्च-भाव प्रदर्शित किया। जनता ने भी कुछ समय के लिये अपना मत-भेद भुला दिया और सब-के-सब एक-दिल हो विजय पाने के उद्योग मे लग गए।

नया सैनिक प्रबंध—अभी तक भिन्न-भिन्न मित्र-राष्ट्रो की सेनाएँ अपने-अपने सेनापतियों द्वारा सचालित की जाती थी। इस प्रकार के प्रबध से बड़ी खटपट रहती थी और ठीक समय पर काम होना कठिन था। यह देख मि० लॉयड जार्ज ने फ्रांसीसी सेनापति मार्शल फॉश को मित्र-राष्ट्रों की सब सेनाओं का प्रधान सेनापति बनाकर सारी जिम्मेदारी तथा अधिकार उनके हाथ में दे दिए।

नए सेनापति (General) मार्शल फाश
(Marshal Foch) (१६१८)

युद्ध का चतुर्थ वर्ष तो लग गया, पर मित्र-राष्ट्रों की विजय अब भी वैसी ही सदिग्ध थी, जैसी युद्ध के आरभ सन् १९१४ में। एक तरह से जर्मन और भी प्रबल हो गए थे, क्योंकि पूर्वी रण-क्षेत्र मे रूसियो से छुट्टी पा उस ओर की जर्मन-सेना को पश्चिमी रण-क्षेत्र को पहुँचा सके थे।

भाग ही व युद्ध-क्षेत्र मे लड रहे थे कि अमेरिका-से सेनाएँ आने-आते तब मित्र-राष्ट्रो का नाश कर डाले। बस, फिर क्या था। जर्मन-सेना बढते-बढ़ते पेरिस (Paris) से ५० मील दूरी पर आ पहुँची और शीघ्र ही उस नगर पर अधिकार कर लेने की आशा करने लगी। लेकिन मार्शल फॉश ने उन्हे बढ़ने दो दिया, किंतु उस समय की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब एक तो उनके पक्ष की परी-पूरी तैयारी हो जाय और दूसरे अमेरिका की सेना पर्याप्त रूप मे एकत्र हो जाय। निदान जुलाई, सन् १९१८ मे वीर सेनापति फॉश ने जर्मनों पर भयकर आक्रमण करने की आज्ञा निकाल दी। इस प्रकार मार्न (Marne)-नदी पर इस युद्ध का आरभ हुआ। फ्रांसीसी, ब्रिटिश, बेलजियम और अमेरिकन सेनाओ ने जर्मन-सेना पर जोरों से धावा किया। जर्मन-सेना बराबर पीछे हटने लगी। वह खाइयो की एक श्रेणी को छोड दूसरी श्रेणी मे जा घुसती और बराबर लडती, पर मित्र-राष्ट्रों की सेना अत मे उसे उस श्रेणी से भी निकाल भगाती और वह दूसरी श्रेणी का आश्रय लेती था। इस तरह पश्चिमी रण-क्षेत्र का बहुत-सा भाग, जिसे जर्मनो ने छीन लिया था, मित्र-राष्ट्रो ने ले लिया।

तुर्को की हार

तुर्की-रण-क्षेत्र मे भी अँगरेजी-सेना ने जोर पकडा। इस

सेना में अधिकांश भारतीय वीर ही थे और सेनापति टाउनशेंड के कुछ सेना-सहित कैद हो जाने के बाद सेनापति मॉड (Maud) उनके स्थान में नियत हुए। सन् १९१७ में तो बगदाद-नगर को अँगरेज़ों ने छीन लिया। सन् १९१८ में पूरा ईराक तुर्कों के हाथ से निकल गया। वहाँ मिस्र के रास्ते से सेनापति एलेनबी (Allenby) ने पैलेस्टाइन (Palestine) पर हमला किया। तुर्क बराबर हारते गए और जेरूसलम दमिश्क (Demascus) आदि नगरों पर अँगरेज़ों का निशान यूनियन जैक (Union Jack) फहराने लगा। निदान पूरे पूरे शाम (Syria) और पैलेस्टाइन-प्रांत इनके अधिकार में आ गए। इस तरह ईराक, शाम और पैलेस्टाइन खोने से तुर्कों का अरबी-राज्य उनके हाथ से निकल गया। इस विजय में भारतीय सैनिकों का भाग बहुत कुछ था।

महायुद्ध के पिछले दिन (बलगेरिया और आस्ट्रिया की हार)

वहाँ यूनान आदि देशों ने मिलकर बलगेरिया को हराया और यहाँ अँगरेज़ों ने तुर्कों को। अब शत्रु-राष्ट्र में से केवल जर्मनी और आस्ट्रिया रह गए। आस्ट्रिया ने इटली का जो उत्तरीय भाग छीन लिया था, उसे १९१८ के आरंभ में ही, अँगरेज़ी और फ्रांसीसी-सेनाओं की सहायता से, इटली ने वापस पाया था। ऑक्टोबर-महीने तक आस्ट्रिया बहुत निर्बल पड़ गया। नवंबर